प्रकाशकः
श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय
भेलसा (म० प्र०)



मुद्रक—
ज्योतिषप्रकाश प्रेस,
वाराणसी।

THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALĪ

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. XV

Nibandhan-Prakram-Upakram-Udya Anuyogadwaras

Edited

with translation, notes and indexes

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt.

Director, Prakrit Jain Institute, Vaishali

Assisted by

Pandit Phoolchandra, Siddhanta Shastri. ★ **Pandit Balchandra,** Siddhanta Shastri.

With the cooperation of

Dr. A. N. Upadhye, M. A., D. Litt.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sahitya Uddharak Fund Karyalaya.

Bhilsa (M. P.)

1957

Price rupees twelve only.

Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,
Bhilsa (M. P.).



Printed by—
Jyotish Prakasha Prees,
Varanasi.

प्राक् कथन

यह षट्खंडागमका पन्द्रहवाँ भाग प्रस्तुत है। इसके पश्चात् शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले सोलहवें भागमें इस ग्रन्थराजकी परिसमाप्ति हो जावेगी।

इन दोनों भागों की रचना ध्यान देने योग्य है। अग्रायणीय पूर्वके चयनलब्धि अधिकारके अन्तर्गत कर्मप्रकृतिप्राभृतके कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें से प्रथम छहपर ही भूतबलि स्वामी कृत सूत्र पाये जाते हैं। शेष अठारह अधिकारोंपर सूत्र-रचना नहीं पाई जाती। इसकी पूर्ति धवलाकार श्री वीरसेन स्वामीने की है। इन शेष अठारह अनुयोगद्वारोंमें से प्रथम चार अर्थात् निबन्धन, प्रक्रम उपक्रम और उदय की प्ररूपणा प्रस्तुत भागमें की गई है। शेष मोक्ष, संक्रम आदि चौदह अनुयोगद्वारोंका प्ररूपण अन्तिम भागमें प्रकाशित होगा।

इन चौबीस अनुयोगद्वारोंके मूल स्रोतका जो उल्लेख धवलाकारने किया है उससे हमें महावीर भगवान्के गणधरों द्वारा रचित द्वादशांगके भीतर पूर्वों के विषय व विस्तारका कुछ सुस्पष्ट परिचय प्राप्त होता है। चौदह पूर्वोंमें द्वितीय पूर्वका नाम था आग्रायणीय, जिसके पूर्वान्त, अपरान्त आदि १४ अधिकारों में से पाँचवें अधिकारका नाम था चयनलब्धि। इसके बीस पाहुड थे जिनमें चतुर्थ पाहुडका नाम था कर्मप्रकृति। इसी कर्मप्रकृतिके कृति, वेदना आदि अल्पबहुत्व पर्यन्त वे चौबीस अनुयोगद्वार थे जिनकी संक्षेप प्ररूपणा षट्खण्डागमके वेदना, वर्गणा, खुद्दाबंध और महाबंध इन चार खंडोंमें पाई जाती है (देखिये प्रथम भागकी प्रस्तावना पृ० ७२)। इन अनुयोगद्वारोंके मूल पाठका ज्ञान परम्परानुसार तो अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहुके पश्चात् नष्ट हो गया था। तथापि उसके कुछ खंडोंका ज्ञान तो धरसेन स्वामीको भी था जिसका उपदेश उन्होंने पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंको दिया था। किन्तु धवला टीकाके रचयिता स्वामी वीरसेनने कहीं कहीं ऐसे उल्लेख किये हैं जिनसे प्रतीत होता है कि उनके समय तक भी पूर्वोंके मूल पाठ सर्वथा नष्ट नहीं हुए थे। उदाहरणार्थ, प्रस्तुत भागमें ही अकरणोपशामनाकी प्ररूपणा करते हुए उन्होंने कहा है कि "कर्मप्रवाद नामक आठवें पूर्वमें सब कर्मोंकी मूल व उत्तर प्रकृतियोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार विपाक और अविपाक पर्यायोंका वर्णन खूब विस्तारसे किया गया है, वहाँ उसे देख लेना चाहिये" (पृ० २७५)। यदि आचार्यके समयमें उक्त मूल रचना उपलब्ध न होती तो 'इस प्रकरणको वहाँ देख लेना चाहिये' यह कहनेका कोई अर्थ नहीं रहता। दूसरे, भूतबलि आचार्यके सूत्र न रहनेपर भी जो उन्होंने शेष अठारह अधिकारोंकी प्ररूपणा की है उसका कुछ आधार तो उनके सन्मुख रहा ही होगा। जिस विषयपर उन्हें कोई आधार नहीं मिला वहाँ उन्होंने स्पष्ट कह दिया है कि इसका कोई उपदेश प्राप्त नहीं है (देखिये पृ० ८१, २१६ आदि)।

इस भागके साथ प्रस्तुत चार अनुयोगद्वारोंपर जो 'पंजिका' नामक टीका प्राप्त हुई है वह भी प्रकाशित की जा रही है। उसकी उत्थानिकासे ऐसा प्रतीत होता है कि वह समस्त शेष अठारह अनुयोगद्वारों-

पर लिखी गई है। किन्तु जो प्रति मूडविद्रीसे महाबंधकी प्रतिके साथ प्राप्त हुई है वह केवल इन्हीं चार अनुयोगद्वारोंपर है। शेषकी खोज करना आवश्यक प्रतीत होता है।

ग्रंथ सम्पादन व प्रकाशनमें श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी, उनके सुपुत्र राजेन्द्रकुमार जी, पं० नाथूरामजी प्रेमी, श्री रतनचंदजी, नेमचंद जी तथा मेरे सहयोगियोंका साहाय्य पूर्ववत् चला आ रहा है जिसके लिये मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

प्राकृत जैन विद्यापीठ,
मुजफ्फरपुर, विहार, १८-४-५७

हीरालाल जैन
(डायरेक्टर प्राकृत जैन विद्यापीठ वैशाली)

विषयपरिचय

अग्रायणीय पूर्वके १४ अधिकारोंमें पांचवाँ चयनलब्धि नामका अधिकार है। उसमें २० प्राभृत हैं। इनमें चतुर्थ प्राभृत कर्मप्रकृतिप्राभृत है। उसमें निम्न २४ अधिकार हैं—१ कृति, २ वेदना, ३ स्पर्श, ४ कर्म, ५ प्रकृति, ६ वन्धन, ७ निवन्धन, ८ प्रक्रम, ९ उपक्रम, १० उदय, ११ मोक्ष, १२ संक्रम, १३ लेश्या, १४ लेश्याकर्म, १५ लेश्यापरिणाम, १६ सातासात, १७ दीर्घ-ह्रस्व, १८ भवधारणीय, १९ पुद्गलात्त (पुद्गलात्म), २० निधत्त-अनिधत्त, २१ निकाचित-अनिकाचित, २२ कर्मस्थिति, २३ पश्चिमस्कन्ध और २४ अल्पवहुत्व। इन २४ अधिकारोंमेंसे प्रस्तुत पट्खण्डागम (मूल सूत्र) के वेदना नामक चतुर्थ खण्डमें कृति (पु. ९) और वेदनाकी (पु. १०-१२) तथा वर्गणा नामक पांचवें खण्डमें स्पर्श, कर्म और प्रकृति (पु. १३) अधिकारोंकी प्ररूपणा की गयी है।

वन्धन अनुयोगद्वार वन्ध, वन्धनीय, वन्धक और वन्धविधान इन ४ अवान्तर अनुयोगद्वारोंमें विभक्त है। इनमें से वन्ध और वन्धनीय अधिकारोंकी भी प्ररूपणा वर्गणाखण्ड (पु. १४) में की गयी है। वन्धक अधिकारकी प्ररूपणा खुद्दावन्ध नामक द्वितीय खण्डमें तथा वन्धविधान नामक अवान्तर अधिकारकी प्ररूपणा महावन्ध[1] नामक छठे खण्डमें की गयी है। इस प्रकार मूल पट्खण्डागममें पूर्वोक्त २४ अनुयोग द्वारोंमेंसे प्रथम ६ अनुयोगद्वारोंके ही विपयका विवरण किया गया है। शेप निवन्धन आदि १८ अनुयोग-द्वारोंकी प्ररूपणा यद्यपि मूल पट्खण्डागममें नहीं की गयी है फिर भी वर्गणाखण्डके अन्तिम सूत्रको देशामर्शक मानकर उनकी प्ररूपणा अपनी धवला टीका (पु. १५-१६) में वीरसेनाचार्य ने प्राप्त उपदेशके अनुसार संक्षेपमें कर दी है[2]। इसका नाम सत्कर्म प्रतीत होता है[3]।

उन शेप १८ अनुयोगद्वारोंमेंसे निवन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय ये ४ (७-१०) अनुयोगद्वार पुस्तक १५ में प्रकाशित हो रहे हैं। तथा शेप १४ (११-२४) अनुयोगद्वार पुस्तक १६ में प्रकाशित किये जायँगे। इनका विपयपरिचय संक्षेपमें इस प्रकार है—

७ निवन्धन—'निवध्यते तदस्मिन्निति निवन्धनम्' इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें निवद्ध है उसे निवन्धन कहा जाता है। निक्षेपयोजनामें इसके ये ६ भेद किये गये हैं—नामनिवन्धन,

---

१ इसके ५ भाग भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं और शेप २ भाग भी उक्त संस्थाके द्वारा शीघ्र प्रकाशित होनेवाले हैं।

२ भूदवलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसअट्ठारसअणियोग-द्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो। पु. १५, पृ. १.

३ महाकम्मपयडि·········सव्वाणि परूविदाणि। संतकम्मपंजियाकी उत्थानिका (पु. १५, परिशिष्ट पृ. १.)

स्थापनानिबन्धन, द्रव्यनिबन्धन, क्षेत्रनिबन्धन, कालनिबन्धन और भावनिबन्धन। इन सबके स्वरूपका विवरण करते हुए यहाँ नाम और स्थापना निबन्धनोंको छोड़कर शेष ४ निबन्धनोंको प्रकृत बतलाया है। साथमें यहाँ यह भी निर्देश किया गया है कि यद्यपि इस निबन्धन अनुयोगद्वारमें छहों द्रव्योंके निबन्धनकी प्ररूपणा की जाती है[1] फिर भी अध्यात्मविद्याका अधिकार होनेसे यहाँ उन सबको छोड़कर केवल कर्म-निबन्धन की ही प्ररूपणा यहाँ की गयी है। सर्वप्रथम यहाँ निबन्धन अनुयोगद्वारकी आवश्यकता प्रगट करते हुए यह बतलाया है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके द्वारा कर्मों और उनके मिथ्यात्वप्रभृति प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है। साथ ही कर्मरूप होनेकी योग्यता रखनेवाले पुद्गलोंका भी विवेचन किया ही जा चुका है। किन्तु उन कर्मोंकी प्रवृत्ति कहाँ किस प्रकार होती है, यह नहीं बतलाया गया है। इसीलिये कर्मोंके इस व्यापारको प्ररूपणाके लिये प्रकृत निबन्धन अनुयोगद्वारका अवतार हुआ है।

नोआगमकर्मनिबन्धनके दो भेद हैं—मूलकर्मनिबन्धन और उत्तरकर्मनिबन्धन। इनमेंसे मूल-कर्मनिबन्धनमें ज्ञानावरणादि ८ मूल प्रकृतियोंके तथा उत्तरकर्मप्रकृतिनिबन्धनमें इन्हींके उत्तर भेदोंके निबन्धनकी प्ररूपणा की गयी है।'

८ प्रक्रम—यहाँ निक्षेपयोजना करते हुए प्रक्रमके ये ६ भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम। इनके कुछ और उत्तर भेदोंका उल्लेख करते हुए यहाँ कर्मप्रक्रमको अधिकार प्राप्त बतलाया है तथा 'प्रक्रामतीति प्रक्रमः' इस निरुक्तिके अनुसार प्रक्रमसे कार्मण पुद्गलप्रचयका अभिप्राय बतलाया है।

यहाँ यह शंका उठायी गयी है कि जिस प्रकार कुंभार एक मिट्टीके पिण्डसे अनेक घटादिकोंको उत्पन्न करता है उसी प्रकार यह संसारी प्राणी एक प्रकारके कर्मको बांधकर फिर उससे आठ प्रकारके कर्मोंको उत्पन्न करता है, क्योंकि अन्यथा अकर्म पर्यायसे कर्मपर्यायका उत्पन्न होना सम्भव नहीं है। इसके उत्तरमें कहा गया है कि जब अकर्मसे कर्मकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है तब जिस एक कर्मसे आठ प्रकारके कर्मोंकी उत्पत्ति स्वीकार की जाती है वह एक कर्म भी कैसे उत्पन्न हो सकेगा? यदि उसे भी कर्मसे ही उत्पन्न माना जावेगा तो ऐसी अवस्थामें अनवस्थाजनित अव्यवस्था दुर्निवार होगी। इसलिये उसे अकर्मसे ही उत्पन्न मानना पड़ेगा। दूसरे, कार्य सर्वथा कारणके ही अनुरूप होना चाहिये, ऐसा एकान्त नियम नहीं बन सकता; अन्यथा मृत्तिकापिण्डसे घट-घटी आदि उत्पन्न न होकर मृत्तिकापिण्डके ही उत्पन्न होनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। परन्तु चूंकि ऐसा होता नहीं है, अत एव कार्य कथंचित् (द्रव्यकी अपेक्षा) कारणके अनुरूप और कथंचित् (पर्यायकी अपेक्षा) उससे भिन्न ही उत्पन्न होता है, ऐसा स्वीकार करना चाहिये।

प्रसंग पाकर यहाँ सांख्याभिमत सत्कार्यवादका उल्लेख करके उसका निराकरण करते हुए 'नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि' इत्यादि आप्तमीमांसाकी अनेक कारिकाओंको उद्धृत करके तदनुसार नित्यत्वैकान्त और सर्वथा असत्कार्यवादका भी खण्डन किया गया है। इसके अतिरिक्त परस्पर निरपेक्ष अवस्थामें उभय (सत्-असत्) रूपता भी उत्पद्यमान कार्यमें नहीं बनती, इसका उल्लेख करते हुए स्याद्वादसम्मत सप्तभंगी की भी योजना की गयी है। इसी सिलसिलेमें बौद्धाभिमत क्षणक्षयित्वका उल्लेख कर उसका निराकरण करते हुए द्रव्यकी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूपताको सिद्ध किया गया है।

पूर्वोक्त कारिकाओंके अभिप्रायानुसार पदार्थोंको सर्वथा सत् स्वीकार करनेवाले सांख्योंके यहाँ प्रागभावादिके असम्भव हो जानेसे जिस प्रकार अनादिता, अनन्तता, सर्वात्मकता और निःस्वरूपताका

---

१. इसकी प्ररूपणा संतकम्मपंजिया (परिशिष्ट पृ. १-२) में देखिये।

प्रसंग दुर्निवार है उसी प्रकार सर्वथा अभाव (शून्यैकान्त) को स्वीकार करनेवाले माध्यमिकोंके यहाँ अनुमानादि प्रमाणके असम्भव होनेसे स्वपक्षकी सिद्धि और परपक्षको दूषित न कर सकनेका भी प्रसंग अनिवार्य होगा। परस्पर निरपेक्ष उभयस्वरूपता (सदसदात्मकता) को स्वीकार करनेवाले भाट्टोंके समान सांख्योंके यहाँ भी परस्परपरिहारस्थितिलक्षण विरोधकी सम्भावना है ही। कारण कि वह (उभयस्वरूपता) स्याद्वाद सिद्धान्तको स्वीकार किये विना वन नहीं सकती। पूर्वोक्त दोषोंके परिहारकी इच्छासे बौद्ध जो सर्वथा अनिर्वचनीयताको स्वीकार करते हैं वे भी भला 'तत्त्व अनिर्वचनीय है' इस प्रकारके वचनके विना अपनी अभीष्ट तत्त्वव्यवस्थाका बोध दूसरोंको किस प्रकारसे करा सकेंगे ? इस प्रकार सर्वथा सदसदादि एकान्त पक्षोंकी समीक्षा करते हुए यहाँ इन सात भंगोंकी योजना की गयी है। यथा—

१ स्वद्रव्य; क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वस्तु कथंचित् सत् ही है। २ वही परद्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा कथंचित् असत् ही है। ३ क्रमसे स्वद्रव्यादि और परद्रव्यादिकी विवक्षा होनेपर वह कथंचित् सदसत् (उभय स्वरूप) ही है। ४ युगपत् स्वद्रव्यादि और परद्रव्यादि दोनोंकी विवक्षामें वस्तु कथंचित् अवाच्य ही है। इन चार मुख्य भंगोंका निर्देश तो 'कथंचित्ते सदेवेष्टं' इत्यादि कारिकामें ही कर दिया गया है। शेष तीन भंग 'च' शब्दसे सूचित कर दिये गये हैं। वे इस प्रकार हैं—५ कथंचित् वस्तु सत् और अवक्तव्य ही है। ६ कथंचित् वह असत् और अवक्तव्य ही है। ७ कथंचित् वह सत्-असत् और अवक्तव्य ही है। इन तीन भंगोंमें यथाक्रमसे स्वद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादि, परद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादि और क्रमसे स्व-परद्रव्यादि तथा युगपत् स्व-परद्रव्यादिकी विवक्षा की गयी है।

यहाँ जो आप्तमीमांसाकी 'कथंचित् ते सदेवेष्टं' आदि कारिका उद्धृत की गयी है ठीक उसी प्रकारकी प्राकृत गाथा पंचास्तिकाय में पायी जाती है। यथा—

सिय अत्थि णत्थि उभयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि॥

प्रकृतिप्रक्रम, स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमके भेदसे प्रक्रम तीन प्रकारका बतलाया गया है। इनमें प्रकृतिप्रक्रमको भी मूलप्रकृतिप्रक्रम और उत्तरप्रकृतिप्रक्रम इन दो भेदोंमें विभक्त कर यथाक्रमसे उनके अल्पबहुत्वकी यहाँ प्ररूपणा की गयी है। अन्तमें स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमकी भी संक्षेपमें प्ररूपणा करके इस अनुयोगद्वारको समाप्त किया गया है।

९ उपक्रम—प्रक्रमके समान ही उपक्रमके भी ये छह भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम। यहाँ कर्मप्रक्रमको अधिकारप्राप्त बतलाकर उसके ये चार भेद निर्दिष्ट किये गये हैं—बन्धनोपक्रम, उदीरणोपक्रम, उपशामनोपक्रम और विपरिणामोपक्रम। यहाँ प्रक्रम और उपक्रममें विशेषताका उल्लेख करते हुए यह बतलाया है कि प्रक्रम प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाग्रकी प्ररूपणा करता है जब कि उपक्रम बन्ध होनेके द्वितीय समयसे लेकर सत्त्व स्वरूपसे स्थित कर्मपुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है।

बन्धनोपक्रमके भी यहाँ प्रकृति व स्थिति आदिके भेदसे चार भेद बतलाकर उनकी प्ररूपणा सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतके समान करना चाहिये, ऐसा उल्लेखमात्र किया है। यहाँ यह आशंका उठायी गयी है कि इनकी प्ररूपणा जैसे महाबन्धमें की गयी है तदनुसार ही वह यहाँ क्यों न की जाय ? इसके समाधानमें बतलाया है कि महाबन्धमें चूंकि प्रथम समय सम्बन्धी बन्धका आश्रय लेकर वह प्ररूपणा की गयी है अतएव तदनुसार यहाँ उनकी प्ररूपणा करना इष्ट नहीं है।

उदीरणा--उदयावलीबाह्य स्थितिको आदि लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्त प्रदेश-पिण्डका पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रतिभागसे या असंख्यात लोक प्रतिभागसे अपकर्षण करके उसको उदयावलीमें देना, इसे उदीरणा कहा जाता है। अभिप्राय यह है कि उदयावलीको छोड़कर आगेकी स्थितियोंमेंसे प्रदेशपिण्डको खींचकर उसे उदयावलीमें प्रक्षिप्त करनेको उदीरणा कहते हैं। वह दो प्रकारकी है--एक-एक-प्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा। एक-एक प्रकृतिउदीरणाकी प्ररूपणामें प्रथमतः उसके स्वामियोंका विवेचन किया गया है। उदाहरणार्थ ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मोंकी उदीरणाके स्वामीका निर्देश करते हुए बतलाया है कि इन कर्मोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होती है। विशेषता इतनी है कि क्षीणकषायके कालमें एक समय अधिक आवलीमात्र शेष रहनेपर उनकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है।

तत्पश्चात् एक-एकप्रकृतिउदीरणाविषयक एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। नाना जीवोंकी अपेक्षा उसके अन्तर की सम्भावना ही नहीं है। एक एक प्रकृतिका अधिकार होनेसे यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि उदीरणाकी भी सम्भावना नहीं है।

प्रकृतिस्थान उदीरणाकी प्ररूपणामें स्थानसमुत्कीर्तना करते हुए मूल प्रकृतियोंके आधारसे ये पांच प्रकृतिस्थान बतलाये गये हैं--आठों प्रकृतियोंकी उदीरणारूप पहिला, आयुके बिना शेष सात प्रकृतियों रूप दूसरा; आयु और वेदनीयके बिना शेष छह प्रकृतियोंरूप तीसरा; मोहनीय, आयु और वेदनीयके बिना शेष पांच प्रकृतियोंरूप चौथा; तथा ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायके बिना शेष दो प्रकृतियोंरूप पांचवां।

स्वामित्वप्ररूपणामें उक्त स्थानोंके स्वामियोंका निर्देश करते हुए बतलाया है कि इनमेंसे प्रथम स्थान, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है ऐसे प्रमत्त (मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक प्रमाद युक्त) जीवके होता है। द्वितीय स्थान भी उक्त जीवके ही होता है। विशेषता केवल इतनी है कि उसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट होना चाहिये। तीसरा स्थान सातवें गुणस्थानसे लेकर दसवें गुणस्थान तक होता है। चौथे स्थानका स्वामी छद्मस्थ वीतराग (उपशान्तकषाय और क्षीणमोह) जीव होता है। विशेष इतना है कि वह क्षीणमोहके कालमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रह जानेके पहिले पहिले ही होता है, उसके पश्चात् नहीं। पाँचवें (नाम व गोत्र प्रकृतिरूप) स्थानके स्वामी सयोगकेवली हैं।

तत्पश्चात् प्रकृतिस्थान उदीरणाकी ही प्ररूपणामें एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्वका विचार किया गया है।

भुजाकारउदीरणाकी प्ररूपणामें अर्थपदका कथन करते हुए बतलाया है कि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करके इस समय उनसे अधिक प्रकृतियोंकी उदीरणा करना इसे भुजाकार (भूयस्कार) उदीरणा कहते हैं। अनन्तर अतिकान्त समयमें अधिक प्रकृतियोंकी उदीरणा करके इस समय उनसे कम प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेका नाम अल्पतरउदीरणा है। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा कर रहा था इस समय भी उतनी ही प्रकृतियोंकी उदीरणा करना—उनसे हीन या अधिककी उदीरणा न करना—इसे अवस्थितउदीरणा कहा जाता है। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें अनुदीरक होकर इस समयमें की जानेवाली उदीरणाका नाम अवक्तव्य उदीरणा है।

स्वामित्वप्ररूपणामें यह बतलाया गया है कि भुजाकारउदीरणा, अल्पतरउदीरणा और अवस्थित

उदीरणाका स्वामी कोई भी मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव हो सकता है। अवक्तव्यउदीरणाका स्वामी सम्भव नहीं है।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणामें भुजाकारउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे दो समय मात्र बतलाया है जो इस प्रकारसे सम्भव है—कोई उपशान्तकषाय जीव वहाँसे च्युत होकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती हुआ। वहाँ वह पाँचसे छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेके कारण भुजाकारउदीरक हो गया। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ। पुनः वहीं द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें वह छह प्रकृतियोंसे आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरक ही रहा। यहाँ भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त हुआ। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय मात्र प्राप्त होता है।

अल्पतर उदीरणाका भी काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। वह इस प्रकारसे—प्रमत्तसंयतके अन्तिम समयमें आयुकर्मके उदयावलीमें प्रविष्ट हो जानेपर वह आठसे सात प्रकृतियोंकी उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक हो गया। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाका जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह वेदनीय कर्मके विना छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक ही रहा। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाका काल भी उत्कर्षसे दो समय मात्र ही पाया जाता है।

अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक एक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपमप्रमाण है। देवोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें पाँच, छह या सातसे आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरक हुआ। पुनः द्वितीय समयसे लेकर मरणावली प्राप्त होने तक अवस्थितरूपसे आठका ही उदीरक रहा। इस प्रकार अवस्थित उदीरणाका उत्कृष्ट काल प्रथम समय और अन्तिम आवलीको छोड़कर पूर्ण देव पर्यायप्रमाण तेतीस सागरोपम मात्र प्राप्त हो जाता है।

अन्तरप्ररूपणामें भुजाकार उदीरणाके अन्तरपर विचार करते हुए उसका जघन्य अन्तर एक या दो समय मात्र बतलाया है। यथा—पाँच प्रकृतियोंका उदीरक कोई उपशान्तकषाय नीचे गिरता हुआ सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छहका उदीरक हुआ। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें भी वह छहका ही उदीरक रहा। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अवस्थित उदीरणासे अन्तर हुआ। पुनः तृतीय समयमें मरकर वह देवोंमें उत्पन्न हो आठका उदीरक होकर भुजाकार उदीरणा करने लगा। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समयमात्र जघन्य अन्तर प्राप्त हो जाता है। उसका उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। वह इस प्रकारसे—कोई जीव तेतीस सागरोपम आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होकर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरक हुआ और द्वितीय समयसे लेकर मरणावली प्राप्त होनेके पूर्व समय तक वह अवस्थित उदीरक रहा। इस प्रकार उसका इतना अन्तर अवस्थित उदीरणासे हुआ। तत्पश्चात् मरणावलीके प्रथम समयमें वह आयुके विना सात प्रकृतियोंकी उदीरणा करता हुआ अल्पतर उदीरक हो मरणावली कालके अन्तिम समय तक अवस्थित उदीरक रहा। तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें पुनः भुजाकार उदीरक हुआ। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अवस्थित और अल्पतर उदीरणाओंसे एक समय कम पूरे तेतीस सागरोपम काल तक अन्तर रहा।

आगे चलकर इसी भुजाकार उदीरणाकी प्ररूपणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी अतिसंक्षेपमें प्ररूपणा करते हुए भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भाव; इन सबको जानकर प्ररूपणा करनेका निर्देशमात्र किया गया है।

पदनिक्षेपप्ररूपणामें भुजाकार उदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि आदि किसके होती है, इसका कुछ विवेचन करते हुए प्रकृत हानि-वृद्धि आदिके अल्पबहुत्वका निर्देश मात्र किया गया है।

वृद्धिउदीरणाप्ररूपणामें संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और अवस्थित उदीरणा इन चार पदोंके अस्तित्वका उल्लेखमात्र करके शेष प्ररूपणा जानकर करना चाहिये (सेसं जाणिऊण वत्तव्वं) इतना मात्र निर्देश करते हुए मूलप्रकृतिउदीरणाकी प्ररूपणा समाप्त की गयी है।

मूलप्रकृतिउदीरणाके समान उत्तर प्रकृतिउदीरणा भी दो प्रकारकी है—एक-एक प्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा। इनमें प्रथमतः एक-एक प्रकृतिउदीरणाकी प्ररूपणा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इन अधिकारोंके द्वारा की गयी है। आठ कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किस-किस प्रकृतिके कौन कौनसे जीव उदीरक होते हैं, इसका विवेचन स्वामित्वमें किया गया है। एक जीवकी अपेक्षा कालके कथनमें यह बतलाया है कि अमुक अमुक प्रकृतिकी उदीरणा एक जीवके आश्रयसे निरन्तर जघन्यतः इतने काल और उत्कर्षतः इतने काल तक होती है। एक जीवकी अपेक्षा विवक्षित प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे कितना और उत्कर्षसे कितना होता है, इसका विचार एक जीवकी अपेक्षा अन्तरके निरूपणमें किया गया है। मतिज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी उदीरणामें नाना जीवोंकी अपेक्षा कितने भंग सम्भव हो सकते हैं, इसका विचार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयमें किया गया है। उदाहरणके रूपमें पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके उदीरक कदाचित् सब जीव हो सकते हैं, कदाचित् बहुत उदीरक और एक अनुदीरक होता है तथा कदाचित् बहुत जीव उदीरक और बहुत ही जीव अनुदीरक भी होते हैं। इस प्रकार यहाँ तीन भंग संभव हैं। नाना जीव यदि विवक्षित प्रकृतिकी उदीरणा करें तो कमसे कम कितने काल और अधिकसे अधिक कितने काल करेंगे, इसका विचार 'नाना जीवोंकी अपेक्षा काल'में किया गया है। इसी प्रकार नाना जीव विवक्षित प्रकृतिको छोड़कर अन्य प्रकृतिकी उदीरणा करते हुए यदि फिरसे उक्त प्रकृतिकी उदीरणा प्रारम्भ करते हैं तो कमसे कम कितने कालमें और अधिकसे अधिक कितने कालमें करते हैं, इसका विवेचन नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरमें किया गया है।

संनिकर्ष—एक-एक प्रकृति उदीरणाकी ही प्ररूपणाको चालू रखते हुए संनिकर्षका भी यहाँ कथन किया गया है। यह संनिकर्ष स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकारका निर्दिष्ट किया गया है। स्वस्थान संनिकर्षके विवेचनमें ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंमें किसी एक कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंमेंसे विवक्षित प्रकृतिको उदीरणा करनेवाला जीव उसकी ही अन्य शेष प्रकृतियोंका उदीरक होता है या अनुदीरक, इसका विचार किया गया है। जैसे—मतिज्ञानावरणकी उदीरणा करनेवाला शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंका भी नियमसे उदीरक होता है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरण इन तीन दर्शनावरण प्रकृतियोंका नियमसे उदीरक तथा शेष पाँच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह कदाचित् उदीरक होता है। परस्थानसंनिकर्षमें आठों कर्मोंकी समस्त उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किसी एककी विवक्षा कर शेष सभी प्रकृतियोंकी उदीरणा अनुदीरणाका विचार किया जाना चाहिये था। परन्तु सम्भवतः उपदेशके अभावमें वह यहाँ नहीं किया जा सका है, उसके सम्बन्धमें यहाँ केवल इतनी मात्र सूचना की गयी है कि 'परत्थाणसण्णियासो जाणियूण वत्तव्वो' अर्थात् परस्थान संनिकर्षका कथन जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व—यह अल्पबहुत्व भी स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकारका है। इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें ज्ञानावरणादि एक-एक कर्मकी पृथक्-पृथक् उत्तर प्रकृतियोंके उदीरकोंकी हीनाधिताका

विचार किया गया है। परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणामें समस्त कर्मप्रकृतियोंके उदीरकोंकी हीनाधिकताका विचार सामान्य स्वरूपसे किया जाना चाहिये था। परन्तु उसका भी विवेचन यहाँ सम्भवतः उपदेशके अभावसे ही नहीं किया जा सका है। इतना ही नहीं, बल्कि स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणामें भी केवल ज्ञानावरण, दर्शनावरण और वेदनीय इन तीन ही कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंके आश्रयसे उपर्युक्त अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जा सकी है, शेष मोहनीय आदि कर्मोंके आश्रयसे वह भी नहीं की गयी है। यहाँ उसके सम्बन्धमें इतनी मात्र सूचना की गयी है- 'उपरि उपदेसं लहिय वत्तव्वं। परत्थाणप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं' अर्थात् आगे मोहनीय आदि शेष कर्मोंके सम्बन्धमें प्रकृत स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा उपदेश पाकर करना चाहिये। परस्थान अल्पबहुत्वका कथन जानकर करना चाहिये।

यहाँ एक-एक प्रकृतिकी विवक्षा होनेसे भुजाकर, पदनिक्षेप और वृद्धि प्ररूपणाओंकी असम्भावना प्रगट की गयी है।

प्रकृतिस्थानउदीरणा—यहाँ ज्ञानावरण आदि एक-एक कर्मकी अलग-अलग उत्तर प्रकृतियोंका आश्रय करके जितने उदीरणास्थान सम्भव हों उनके आधार से स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर तथा अल्पबहुत्वका विचार किया गया है। उदाहरण स्वरूप मोहनीय कर्मकी स्थानउदीरणामें एक, दो, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ और दस प्रकृति रूप नौ स्थानोंकी सम्भावना है। उनमें एक प्रकृति रूप उदीरणास्थानके चार भंग हैं-संज्वलन क्रोधके उदयसे प्रथम भंग, मानसंज्वलनके उदयसे दूसरा भंग, मायासंज्वलनके उदयसे तीसरा भंग, और लोभसंज्वलनके उदयसे चौथा भंग। इन भंगोंका कारण यह है कि इन चारों प्रकृतियोंमें से विवक्षित समयमें किसी एककी ही उदीरणा हो सकती है। दो प्रकृतिरूप स्थानके उदीरकके बारह भंग होते हैं--इसका कारण यह है कि विवक्षित समयमें तीन वेदोंमें से किसी एक ही वेदकी उदीरणा हो सकेगी तथा उसके साथ उक्त चार संज्वलन कषायोंमें से किसी एक संज्वलन कषायकी भी उदीरणा होगी। इस प्रकार दो प्रकृतिरूप स्थानकी उदीरणामें बारह (४×३=१२) भंग प्राप्त होते हैं। चार प्रकृतिरूप स्थानकी उदीरणामें चौबीस भंग होते हैं। वे इस प्रकारसे—तीन वेदोंमें से कोई एक वेद प्रकृति, चार संज्वलन कषायोंमें से कोई एक, तथा इनके साथ हास्य-रति या अरति-शोक इन दो युगलोंमें से कोई एक युगल रहेगा। इस प्रकार चार प्रकृतिरूप स्थानके चौबीस (३×४×२=२४) प्राप्त होते हैं। इस चार प्रकृतिरूप स्थानमें भय, जुगुप्सा, सम्यक्त्व प्रकृति अथवा प्रत्याख्यानावरणादि चारमें से किसी एक प्रत्याख्यानावरण कषायके सम्मिलित होनेपर पाँच प्रकृतिरूप स्थानके चार चौबीस (२४×४=९६) भंग होते हैं। इसी प्रकारसे आगे भी छह प्रकृतिरूप स्थानके सात चौबीस (२४×७=१६८), सात प्रकृतिरूप स्थानके दस चौबीस (२४×१०=२४०), आठ प्रकृतिरूप स्थानके ग्यारह चौबीस (२४×११=२६४), नौ प्रकृतिरूप स्थानके छह चौबीस (२४×६×१४४), तथा दस प्रकृतिरूप स्थानके एक चौबीस (२४×१=२४) भंग होते हैं। इस प्रकार मोहनीय कर्मकी स्थान उदीरणामें प्रथमतः स्थान समुत्कीर्तना करके तत्पश्चात् स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके द्वारा उसकी प्ररूपणा की गयी है।

इसी प्रकारसे ज्ञानावरणादि अन्य कर्मोंके भी विषयमें पूर्वोक्त स्वामित्व आदि अधिकारोंके

द्वारा यथासम्भव स्थान उदीरणाकी प्ररूपणा की गयी है। वेदनीय और आयु कर्मोंके स्थान उदीरणाकी सम्भावना नहीं है।

भुजाकार उदीरणा—यहाँ प्रथमतः दर्शनावरणके सम्बन्धमें भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य इन चारों ही उदीरणाओंके अस्तित्वकी सम्भावना बतला कर तत्पश्चात् उनके स्वामी, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तरका तथा अल्पबहुत्वका संक्षेपमें विवेचन किया गया है। आगे चलकर इसी क्रमसे मोहनीयके सम्बन्धमें भी भुजाकार उदीरणाकी प्ररूपणा करके उसे यहीं समाप्त कर दिया है। नामकर्म आदि अन्य कर्मोंके सम्बन्धमें उक्त प्ररूपणा नहीं की गयी है। इसके पश्चात् अति संक्षेपमें पदनिक्षेप और वृद्धिप्ररूणा करके प्रकृतिउदीरणाकी प्ररूपणा समाप्त की गयी है।

स्थितिउदीरणा—यह भी मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणामें मूल प्रकृतियोंके आश्रयसे स्थिति उदीरणाका जघन्य और उत्कृष्ट प्रमाण बतलाया गया है। जैसे—ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय इन चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। यहाँ उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणामें दो आवली कम बतलानेका कारण यह है कि बन्धावली और उदयावलीगत स्थिति उदीरणाके अयोग्य होती है। जघन्य स्थितिउदीरणा ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायकी एक स्थिति मात्र है जो कि ऐसे क्षीणकषाय जीवके पायी जाता है जिसे अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय होनेमें एक समय अधिक एक आवलि काल शेष है। मोहनीयकी जघन्य स्थिति उदीरणा भी एक स्थितिमात्र है जो कि ऐसे सूक्ष्म-साम्परायिक क्षपकके पायी जाती है जिसके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र स्थिति शेष रही है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिउदीरणा पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन बटे सात ($\frac{3}{7}$) सागरोपमप्रमाण है।

जिस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणामें मूलप्रकृतियोंके आश्रयसे यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकारसे उत्तर प्रकृति स्थिति उदीरणामें उत्तर प्रकृतियोंके आश्रयसे उक्त प्ररूपणा की गयी है।

स्वामित्व--पाँच ज्ञानावरण आदि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिके उदीरक कौन और किस अवस्थामें होते हैं, इसका विचार स्वामित्वप्ररूपणामें किया गया है।

एक जीवकी अपेक्षा काल—उक्त पाँच ज्ञानावरण आदि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट तथा जघन्य और अजघन्य स्थितिउदीरणा जघन्यसे कितने काल और उत्कर्पसे कितने काल होती है, इसका विचार यहाँ कालप्ररूपणामें किया गया है। उदाहरणके रूपमें जैसे पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति की उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होती है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनरूप अनन्त काल है। उन्हींकी जघन्य स्थितिउदीरणाका काल जघन्यसे भी एक समय मात्र है और उत्कर्षसे भी एक समय मात्र ही है। इनकी अजघन्य स्थितिउदीरणाका काल अभव्य जीवोंकी अपेक्षा अनादि-अपर्यवसित और भव्य जीवोंकी अपेक्षा अनादि-सपर्यवसित है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर--जिस प्रकार काल प्ररूपणामें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य स्थितिउदीरणाओंके कालका कथन किया गया है उसी प्रकार अन्तर प्ररूपणामें उनके अन्तरका विचार किया गया है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय--यहाँ अर्थपदके कथनमें यह बतलाया है कि जो जीव उत्कृष्ट स्थितिके उदीरक होते हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं और जो अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरक होते हैं

वे उत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं। इसी प्रकारसे जो जघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे अजघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं तथा जो अजघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे जघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं। इस प्रकार अर्थपदका उल्लेख करके तत्पश्चात् किन प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा आदिमें कितने भंग होते हैं, इसका विचार किया गया है। जैसे--पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत अनुदीरक और एक उदीरक होता है तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक और बहुत ही उदीरक होते हैं। इस प्रकार उनकी उत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंमें तीन भंग पाये जाते हैं' अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंमें भी तीन ही भंग पाये जाते हैं। किन्तु वे विपरीत क्रमसे पाये जाते हैं। यथा—अनुत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक एक अनुदीरक तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा न करके यहाँ केवल इतना उल्लेख भर किया गया है कि उनकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा की गयी पूर्वोक्त भंगविचयप्ररूपणासे ही सिद्ध करके करना चाहिये।

संनिकर्ष—मतिज्ञानावरण प्रकृतिको प्रधान करके उसकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला जीव अन्य सब प्रकृतियोंमें किस-किस प्रकृतिकी स्थितिका उदीरक या अनुदीरक होता है, तथा यदि उदीरक होता है तो क्या उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है या अनुत्कृष्ट स्थितिका; इसका विचार यहाँ किया गया है। उदाहरणार्थ—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरणकी स्थितिका नियमसे उदीरक होता है। उदीरक होकर भी वह उसकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों ही स्थितियोंका उदीरक होता है। अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता हुआ उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कम, दो समय कम, तीन समय कम, इत्यादि क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे हीन अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अवधिज्ञानावरणादि शेष तीन ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण तथा साता व असातावेदनीय आदि सभी प्रकृतियोंकी स्थिति उदीरणाका तुलनात्मक विचार यहाँ संनिकर्षप्ररूपणामें किया गया है। इस प्रकार मतिज्ञानावरणकी प्रधानतासे पूर्वोक्त प्ररूपणा कर चुकनेके बाद यहाँ यह उल्लेख मात्र किया गया है कि शेष ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंमेंसे एक एकको प्रधान कर उनके संनिकर्षकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान करना चाहिये।

तत्पश्चात् यहाँ कुछ प्रकृतियोंके संनिकर्षके कहनेकी प्रतिज्ञा करके सम्भवतः सातावेदनीयको प्रधान करके (प्रतियोंमें यह उल्लेख पाया नहीं जाता, सम्भवतः वह स्खलित हो गया है) भी पूर्वोक्त प्रकारसे संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। यह उत्कृष्ट पद विषयक संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। जघन्य पद विषयक संनिकर्षकी प्ररूपणाके सम्बन्धमें इतना मात्र उल्लेख किया गया है कि उसकी प्ररूपणा विचारकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व—यहाँ प्रथमतः सामान्य (ओघ) स्वरूपसे सब प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा विषयक अल्पबहुत्वका विवेचन करते हुए तदनुसार आदेशकी अपेक्षा गत्यादि मार्गणाओंमें भी पूर्वोक्त अल्पबहुत्वके कथन करनेका उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् ओघ और फिर आदेश रूपसे जघन्य स्थितिउदीरणा विषयक अल्पबहुत्वकी भी प्ररूपणा की है।

भुजाकार स्थितिउदीरणा—यहाँ पहिले अर्थपदका विवेचन करते हुए यह बतलाया है कि अल्पतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार स्थिति उदीरणा होती है। बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें अल्प स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह अल्पतर स्थितिउदीरणा कही जाती है। जितनी स्थितियोंकी उदीरणा इस समय की गयी है

आगेके अनन्तर समयमें भी उतनी ही स्थितियों की उदीरणा की जानेपर यह अवस्थित उदीरणा कहलाती है। जिसने पहिले स्थितिउदीरणा नहीं की है किन्तु अब कर रहा है उसकी यह उदीरणा अवक्तव्य उदीरणा कही जाती है। इस प्रकारसे अर्थपदका कथन करके तत्पश्चात् यहाँ भुजाकार स्थितिउदीरणाकी प्ररूपणा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके द्वारा यथासम्भव की गयी है। तत्पश्चात् पदनिक्षेपका संक्षिप्त विवेचन करते हुए वृद्धिउदीरणाकी प्ररूपणाके इन अधिकारोंके द्वारा जानकर करनेका संकेतमात्र किया है--स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तर। इसके बाद फिर इसी वृद्धिप्ररूपणाके आश्रयसे अल्पबहुत्वका विचार विस्तारसे किया गया है।

अनुभागउदीरणा--अनुभागउदीरणाको मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणा इन दो भेदोंमें विभक्त करके उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करनेका उल्लेख मात्र किया गया है। उत्तरप्रकृति-अनुभाग उदीरणाकी प्ररूपणामें इन २४ अनुयोगद्वारोंका निर्देश करके यह कहा गया है कि इन अनुयोग-द्वारोंका कथन करके तत्पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थानका भी कथन करना चाहिये। वे अनुयोगद्वार ये हैं- १ संज्ञा, २ सर्वउदीरणा, ३ नोसर्वउदीरणा, ४ उत्कृष्ट उदीरणा, ५ अनुत्कृष्ट उदीरणा, ६ जघन्य उदीरणा, ७ अजघन्य उदीरणा, ८ सादिउदीरणा, ९ अनादिउदीरणा, १० ध्रुवउदीरणा, ११ अध्रुवउदीरणा, १२ एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, १३ एक जीवकी अपेक्षा काल, १४ एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, १५ नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, १६ भागाभागानुगम, १७ परिमाण, १८ क्षेत्र, १९ स्पर्शन, २० नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, २१ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, २२ भाव, २३ अल्पबहुत्व और २४ संनिकर्ष।

इनमें संज्ञाके घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा इन दो भेदोंका निर्देश करके फिर घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा करते हुये यह बतलाया है कि आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरण इन चारकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती एवं देसघाती भी होती है। केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती ही होती है। इसी प्रकारसे दर्शनावरण आदि अन्य अन्य प्रकृतिभेदोंके सम्बन्धमें भी इस घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की गयी है।

स्वामित्व—यहाँ ये चार अनुयोगद्वार निर्दिष्ट किये गये हैं—प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा, स्थान-प्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा। प्रत्ययप्ररूपणामें यह बतलाया है कि पाँच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शनमोहनीय और सोलह कषायकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है। नौ नोकषायोंकी पूर्वानुपूर्वीसे असंख्यातवें भाग प्रमाण परिणामप्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्वीसे असंख्यात बहुभाग प्रमाण भवप्रत्ययिक है। साता व असाता वेदनीय, चार आयु कर्म, चार गति और पाँच जातिकी उदीरणा भवप्रत्ययिक है। औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यञ्च और मनुष्योंके भवप्रत्ययिक है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा देव-नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंच-मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक है। इसी क्रमसे आगे भी यह प्ररूपणा की गयी है।

विपाकप्ररूपणामें बतलाया है कि जैसे पहले निबन्धनकी प्ररूपणा की गयी है (देखिये पृ. १७४) उसी प्रकार यहाँ विपाककी भी प्ररूपणा करना चाहिये। स्थानप्ररूपणामें मतिज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी उदीरणाके उत्कृष्ट आदि भेदोंमें एकस्थानिक और द्विस्थानिक आदि अनुभागस्थानोंकी सम्भावना बतलायी गयी है। शुभाशुभप्ररूपणामें पुण्य-पापरूप प्रकृतियोंका नामोल्लेख मात्र किया गया है।

इसके पश्चात् मतिज्ञानवरणादि प्रकृतियोंके उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि उदीरणा भेदोंके स्वामियोंकी प्ररूपणा यथाक्रमसे की गयी है। आगे इसी क्रमसे पूर्वोक्त उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य एवं अजघन्य उदीरणा भेदोंके एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल व अन्तर तथा स्वस्थान व परस्थान संनिकर्षकी भी प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वारोंमें इतने अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके शेष अनुयोगद्वारोंके सम्बन्धमें यह कह दिया है कि उनकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। अन्तमें अल्पबहुत्व (२३ वें) अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा विस्तारसे की गयी है।

भुजाकार अनुभागउदीरणा--यहाँ अर्थपदकी प्ररूपणा करते हुए यह बतलाया है कि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें अल्पतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करके यदि इस समयमें बहुतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करता है तो वह भुजाकार अनुभाग उदीरणा कही जायगी। यदि अनन्तर अतिक्रान्त समयमें बहुतर स्पर्धकोंकी उदीरणा करके इस समय स्तोक स्पर्धकोंकी उदीरणा करता है तो उसे अल्पतर उदीरणा कहना चाहिये। अनन्तर अतिक्रान्त समयमें जितने स्पर्धकोंकी उदीरणा की गई है आगे भी यदि उतने उतने ही स्पर्धकोंकी उदीरणा करता है तो इसका नाम अवस्थित उदीरणा होगा। पूर्वमें अनुदीरक होकर आगे उदीरणा करनेपर यह अवक्तव्य उदीरणा कही जायगी। इस प्रकारसे अर्थपदका कथन करते हुए यहाँ यह संकेत किया है कि पूर्वोक्त भुजाकारादि उदीरणाओंके स्वामित्वकी प्ररूपणा इसी अर्थपदके अनुसार करना चाहिये।

तत्पश्चात् यहाँ इन्हीं उदीरणाओंसे सम्बन्धित एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर ; तथा अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। पश्चात् पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हुए उसमें उत्कृष्ट एवं जघन्य भेदोंकी अपेक्षा स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। वृद्धिउदीरणामें समुत्कीर्तनाका कथन करके तत्पश्चात् यह संकेत किया है कि अल्पबहुत्व पर्यन्त स्वामित्व आदि अधिकारोंकी प्ररूपणा जिस प्रकार अनुभागवृद्धिबन्ध में की गयी है उसी प्रकारसे उनकी प्ररूपणा यहाँ भी करना चाहिये।

प्रदेशउदीरणा—मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणाके भेदसे प्रदेशउदीरणा दो प्रकारकी है। इनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाकी विशेष प्ररूपणा यहाँ न कर केवल इतना मात्र संकेत किया गया है कि मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाकी समुत्कीर्तना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा अन्वेषण करके भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर चुकनेपर मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा समाप्त होती है। ऐसा ही निर्देश कषायप्राभृतमें चूर्णिसूत्रके कर्ता द्वारा भी किया गया है (देखिये क पा. सूत्र पृ. ५१६)।

उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणामें स्वामित्वका विवेचन करते हुए पहिले मतिज्ञानावरण आदि प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाके स्वामियोंका और तत्पश्चात् उन्हींकी जघन्य प्रदेशउदीरणाके स्वामियोंका कथन किया गया है। इसके बाद एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ; इतना उल्लेख मात्र करके स्वस्थान और परस्थान संनिकर्षकी संक्षेपमें प्ररूपणा की गयी है।

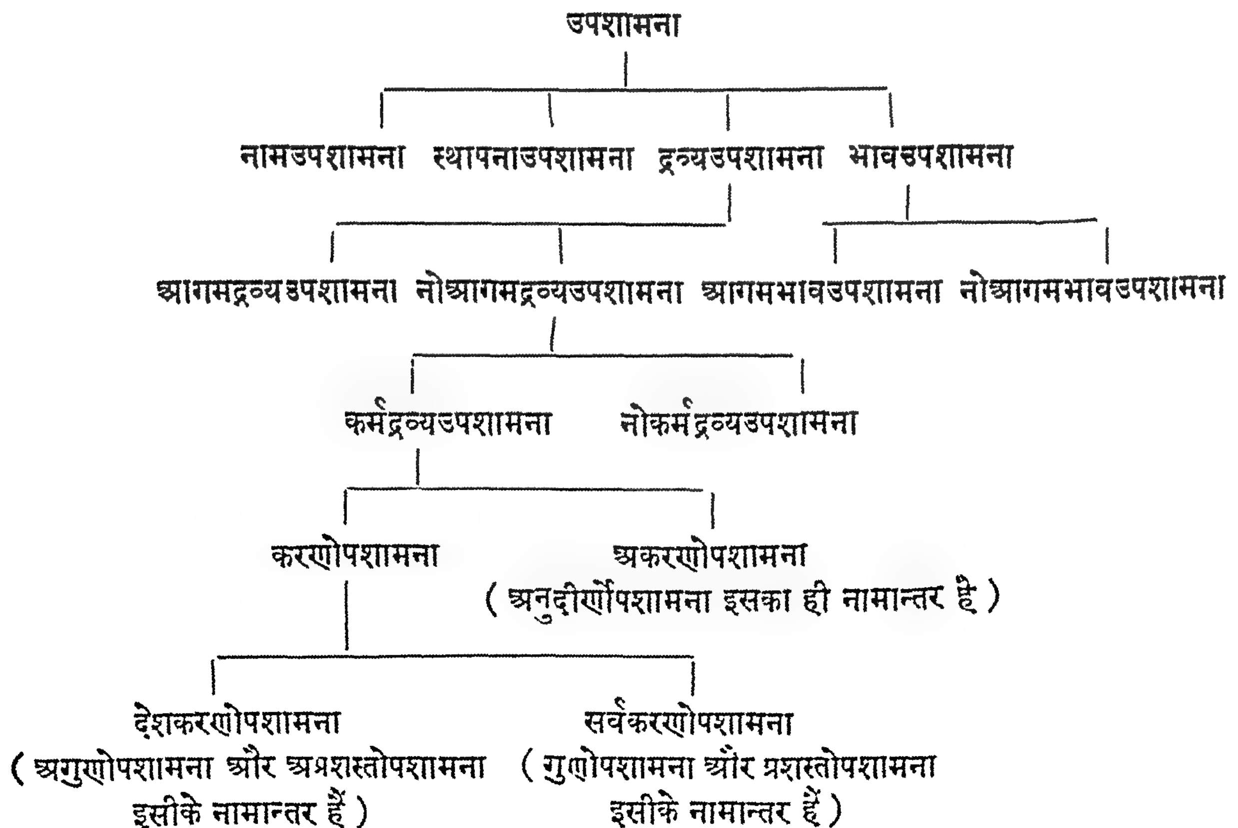
प्रदेशभुजाकार उदीरणाकी प्ररूपणामें पहिले प्रदेशभुजाकारउदीरणा, प्रदेशअल्पतरउदीरणा, प्रदेशअवस्थितउदीरणा और प्रदेशअवक्तव्यउदीरणा इन चारोंके स्वरूपका निर्देश किया गया है। तत्पश्चात् स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना

जीवोंकी अपेक्षा काल तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर इनकी प्ररूपणा अनुभागभुजाकारउदीरणाके समान करनेका उल्लेख करके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

पदनिक्षेपप्ररूपणा में पहले उत्कृष्ट स्वामित्वका विवेचन करके तत्पश्चात् जघन्य स्वामित्वका भी विवेचन करते हुए उत्कृष्ट और जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

वृद्धि उदीरणामें प्रथमतः स्थानसमुत्कीर्तनाका कथन करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि शेष अनुयोगद्वारोंका कथन भी अति संक्षेपमें किया गया है। इस प्रकारसे प्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणा हो चुकनेपर यहाँ उदीरणा उपक्रम समाप्त हो जाता है।

उपशामना उपक्रम—यहाँ उपशामनाके सम्बन्धमें निक्षेपयोजना करते हुए कर्मद्रव्यउपशामनाके दो भेद बतलाये हैं—करणोपशामना और अकरणोपशामना। इनमें अकरणोपशामनाका अनुदीर्णोपशामना यह दूसरा भी नाम है। इसकी सविस्तर प्ररूपणा कर्मप्रवादमें की गयी है। करणोपशामना भी दो प्रकारकी है—देशकरणोपशामना और सर्वकरणोपशामना। सर्वकरणोपशामनाके और भी दो नाम हैं—गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना। इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कसायपाहुडमें की जायगी, ऐसा निर्देश करके यहाँ उसकी प्ररूपणा नहीं की गयी है। इसी प्रकार देशकरणोपशामनाके भी दूसरे दो नाम हैं—अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना। इसी अप्रशस्तोपशामनाको यहाँ अधिकारप्राप्त बतलाया है। उपशामनाके पूर्वोक्त भेदोंके लिये तालिका देखिये—



आचार्य यतिवृषभ द्वारा विरचित कसायपाहुडके चूर्णिसूत्रोंमें भी इन उपशामनाभेदोंके सम्बन्धमें प्रायः इसी प्रकार और इन्हीं शब्दोंमें कथन किया गया है[1]। कसायपाहुडसे इतनी ही विशेपता है कि यहाँ सर्वकरणोपशामनाका 'गुणोपशामना' और देशकरणोपशामनाका 'अगुणोपशामना' इन नामान्तरोंका उल्लेख अधिक किया गया है। कसायपाहुडकी जयधवला टीकामें उपशामनाके पूर्वोक्त भेदोंमेंसे कुछका स्वरूप इस प्रकार बतलाया है—

अकरणोपशामना—कर्मप्रवाद नामका जो आठवाँ पूर्वाधिकार है वहाँ सब कर्मों सम्बन्धी मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी विपाक पर्याय और अविपाक पर्यायका कथन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार बहुत विस्तारसे किया गया है। वहाँ इस अकरणोपशामनाकी प्ररूपणा देखना चाहिये।

देशकरणोपशामना—दर्शनमोहनीयका उपशम कर चुकनेपर उदयादि करणोंमें से कुछ तो उपशान्त और कुछ अनुपशान्त रहते हैं। इसलिये यह देशकरणोपशामना कही जाती है। × × × द्वितीय पूर्वकी पाँचवीं 'वस्तु' से प्रतिबद्ध कर्मप्रकृति नामका चौथा प्राभृत अधिकार प्राप्त है। वहाँ इस देशकरणोपशामनाकी प्ररूपणा देखना चाहिये, क्योंकि, वहाँ इसकी प्ररूपणा विस्तार पूर्वक की गयी है।

सर्वकरणोपशामना—सब करणोंकी उपशामनाका नाम सर्वकरणोपशामना है।

अप्रशस्तोपशामना—संसारपरिभ्रमणके योग्य अप्रशस्त परिणामोंके निमित्तसे होनेके कारण यह अप्रशस्तोपशामना कही जाती है।

इन उपशामना भेदोंका उल्लेख प्रायः इसी प्रकारसे श्वेताम्बर कर्मप्रकृति ग्रन्थमें पाया जाता है। इस करणकी प्ररूपणा प्रारम्भ करते हुए वहाँ सर्व प्रथम यह गाथा प्राप्त होती है—

करणकयाऽकरणा वि य दुविहा उवसामणत्थ विइयाए।
अकरण-अणुइन्नाए अणुओगधरे पणिवयामि ॥ १ ॥

इसमें उपशामनाके करणकृता और अकरणकृता ये वे ही दो भेद बतलाये गये हैं। इनमें द्वितीय अकरणकृता उपशामनाके वे ही दो नाम यहाँ भी निर्दिष्ट किये गये हैं—अकरणकृता और अनुदीर्णा। यहाँ विशेप ध्यान देने योग्य 'अणुओगधरे पणिवयामि' वाक्यांश है। इसकी संस्कृत टीकामें श्रीमलयगिरि सूरिने लिखा है—

इस अकरणकृतोपशामनाके दो नाम हैं—अकरणोपशामना और अनुदीरणोपशामना। उसका अनुयोग इस समय नष्ट हो चुका है। इसीलिये आचार्य (शिवशर्मसूरि) स्वयं उसके अनुयोगको न जानते हुए उसके जानकार विशिष्ट प्रतिभासे सम्पन्न चतुर्दशपूर्ववेदियोंको नमस्कार करते हुऐ कहते हैं—'विइयाए' इत्यादि।

यहाँ द्वितीय गाथामें सर्वोपशामना और देशोपशामनाके भी वे ही दो दो नाम निर्दिष्ट किये गये

---

१ एतो सुत्तविहासा। तं जहा। उपसामणा कदिविधा त्ति ? उपसामणा दुविहा करणोवसामणा अकरणोवसामणा च। जा सा अकरणोवसामणा तिस्से दुवे णामधेयाणि—अकरणोवसामणा त्ति वि अणुदिण्णोवसामणा त्ति वि। एसा कम्मपवादे। जा सा करणोवसामणा सा दुविहा—देसकरणोवसामणा त्ति वि सव्वकरणोवसामणा त्ति वि। देसकरणोवसामणाए दुवे णामाणि देसकरणोवसामणा त्ति वि अप्पसत्यउवसामणा त्ति वि। एसा कम्मपयडीसु। जा सा सव्वकरणोवसामणा तिस्से वि दुवे णामाणि—सव्वकरणोवसामणा त्ति वि पसत्थकरणोवसामणा त्ति वि। एदाए तत्थ पयदं। क. पा. सुत्त पृ. ७०७-८.

हैं जो कि यहाँ प्रकृत धवलामें बतलाये गये हैं। यथा-सर्वकरणोपशामनाके गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना तथा देशकरणोपशामनाके उनसे विपरीत अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना।

यहाँ अप्रशस्तोपशामनाको अधिकारप्राप्त बतलाते हुए श्री वीरसेनाचार्यने उसके अर्थपदका कथन करते हुए बतलाया है कि जो प्रदेशपिण्ड अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा उपशान्त किया गया है उसका न तो अपकर्षण किया जा सकता है, न उत्कर्षण किया जा सकता है, न अन्य प्रकृतिमें संक्रम कराया जा सकता है और न उदयावलीमें प्रवेश भी कराया जा सकता है। इस अर्थपदके अनुसार यहाँ पहिले स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर तथा अल्पबहुत्व, (भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि प्ररूणाओंकी यहाँ सम्भावना नहीं है)। इन अधिकारोंके द्वारा मूलप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा अतिसंक्षेपमें की गयी है। उत्तरप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा भी इन्हीं अधिकारोंके द्वारा संक्षेपमें की गयी है।

प्रकृतिस्थानोपशामनाकी प्ररूपणामें ज्ञानावरणादि कर्मोंके सम्भव स्थानोंका उल्लेख मात्र करके उनकी प्ररूपणा स्वामित्व आदि अधिकारोंके द्वारा करना चाहिये, ऐसा उल्लेख मात्र किया गया है। यहाँ भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि उपशामनाओंकी भी सम्भावना है।

स्थितिउपशामना—यहाँ पहिले मूल प्रकृतियोंके आश्रयसे क्रमशः उत्कृष्ट और जघन्य अद्धाछेदकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि शेष अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा स्थितिउदीरणाके समान करना चाहिये, ऐसा संकेत किया गया है।

अनुभागउपशामना—यहाँ मूलप्रकृतिअनुभागउपशामनाको सुगम बतलाकर उत्तरप्रकृतिअनुभाग उपशामनामें उत्कृष्ट व जघन्य प्रमाणानुगम, स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा यथासम्भव अनुभागसत्कर्मके समान करना चाहिये ऐसा निर्देश किया गया है। यहाँ तीव्रता और मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाको जैसे अनुभागबन्ध में छयासठ पदों द्वारा तद्विषयक अल्पबहुत्वकी की गयी है वैसे करने योग्य बतलाया है।

प्रदेशउदीरणा—यहाँ 'प्रदेशउदीरणाकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये' इतना मात्र संकेत किया गया है।

विपरिणामोपक्रम—प्रकृतिविपरिणमना आदिके भेदसे विपरिणामोपक्रम चार प्रकारका है। इनमें प्रकृतिविपरिणमनाके दो भेद हैं—मूलप्रकृतिविपरिणमना और उत्तरप्रकृतिविपरिणमना। मूलप्रकृतिविपरिणमनाके भी दो भेद हैं—देशविपरिणमना और सर्वविपरिणमना।

देशविपरिणमना—जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनाके द्वारा एकदेश निर्जीर्ण होता है उसका नाम देशविपरिणमना है।

सर्वविपरिणमना—जो प्रकृति सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण होती है वह सर्वविपरिणमना कहलाती है।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामना—देशनिर्जरा या सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण प्रकृति तथा जो अन्य प्रकृतिमें देशसंक्रमण अथवा सर्वसंक्रमणके द्वारा संक्रान्त होती है इसका नाम उत्तरप्रकृतिविपरिणामना है।

इस स्वरूपकथनके अनुसार यहाँ मूल और उत्तर प्रकृतिविपरिणामनाकी प्ररूपणा स्वामित्व आदि अधिकारोंके द्वारा करना चाहिये, ऐसा उल्लेख भर किया गया है। इसका कारण तद्विषयक उपदेश का अभाव ही प्रतीत होता है। यहाँ भुजाकर, पदनिक्षेप और वृद्धिकी सम्भावना नहीं है।

अपकर्षण, उत्कर्षण और संक्रमको प्राप्त कराई जानेवाली स्थितिका नाम विपरिणामिना स्थिति है। अपकर्षित, उत्कर्षित अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया अनुभाग विपरिणामित अनुभाग कहलाता है। जो प्रदेशपिण्ड निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है। इनमें स्थितिविपरिणामनाकी प्ररूपणा स्थितिसंक्रम, अनुभागविपरिणामनाकी प्ररूपणा अनुभागसंक्रम, और प्रदेशविपरिणामनाकी प्ररूपणा प्रदेशसंक्रमके समान करने योग्य बतलायी गयी है।

१० उदयानुयोगद्वार—यहाँ नोआगमकर्मद्रव्य उदयको प्रकृत बतलाकर उसके प्रकृतिउदय आदि के भेदसे चार भेद बतलाये हैं। उत्तर प्रकृति उदयकी प्ररूपणामें स्वामित्वका कथन करते हुए किन प्रकृतियों के कौन-कौनसे जीव वेदक हैं, इसका विवेचन किया गया है। अन्य काल आदि अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये, ऐसा उल्लेख करते हुए यहाँ अल्पबहुत्वके विवेचनमें जो प्रकृति उदीरणाअल्पबहुत्वसे कुछ विशेषता है उसका उपदेशभेदके अनुसार निर्देशमात्र किया गया है।

स्थितिउदय--स्थितिउदयकी प्ररूपणामें पहिले स्थितिउदय प्रमाणानुगम, स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंके अनुसार मूलप्रकृतिस्थितिउदयकी प्ररूपणा की गयी है। यह उदयकी प्ररूपणा प्रायः उदीरणाप्ररूपणाके ही समान निर्दिष्ट की गयी है।

उत्तरप्रकृतिस्थितिउदय--यहाँ एवं उत्कृष्ट स्थिति उदयके प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाके प्रमाणानुगमके समान बतलाते हुए उसे उदयस्थितिसे अधिक बतलाया गया है। जघन्य स्थिति उदयकी प्ररूपणामें नामनिर्देशपूर्वक कुछ कर्मोंका जघन्य प्रमाणानुगम बतलाकर शेष कर्मोंके प्रमाणानुगम, सभी कर्मोंके स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व इन अधिकारोंकी भी प्ररूपणा स्थिति उदीरणाके समान निर्दिष्ट की गयी है।

अनुभाग उदय—यहाँ मूलप्रकृतिअनुभागउदय और उत्तरप्रकृतिअनुभागउदयकी प्ररूपणा चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा करणीय बतलाकर जघन्य स्वामित्वके विषयमें कुछ थोड़ीसी विशेषताका भी उल्लेख किया गया है।

प्रदेशउदय—यहाँ मूलप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करने योग्य बतलाकर उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणामें स्वामित्वके परिज्ञानार्थ 'सम्मत्तुप्पत्तीए' आदि २ गाथाओंके द्वारा १० गुणश्रेणियोंका निर्देश करके उक्त गुणश्रेणियोंमें कौनसी गुणश्रेणियाँ भवान्तरमें संक्रान्त होती हैं, इसका उल्लेख करते हुए उत्कृष्ट व जघन्य प्रदेशउदयविषयक स्वामित्वका विवेचन किया गया है।

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व आदि अन्य अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा पूर्वोक्त स्वामित्व प्ररूपणा से ही सिद्ध करने योग्य बतलाकर तत्पश्चात् उत्कृष्ट और जघन्य प्रदेशउदयविषयक अल्पबहुत्वका विवेचन किया गया है।

भुजाकार प्रदेशउदयकी प्ररूपणामें प्रथमतः अर्थपदका निर्देश करके तत्पश्चात् स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा की गयी है। एक जीवकी अपेक्षा काल प्ररूपणा प्रथमतः नागहस्ती क्षमाश्रमणके उपदेशानुसार और तत्पश्चात् अन्य उपदेशके अनुसार की गयी है।

पदनिक्षेपप्ररूपणामें स्वामित्वका विवेचन करते हुए तत्पश्चात् अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

संतकम्मपंजिया

निवन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय इन पूर्वोक्त चार अनुयोगद्वारोंके ऊपर एक पंजिका भी उपलब्ध है जो इसी पुस्तकके 'परिशिष्ट' में दी गयी है। यह पंजिका किसके द्वारा रची गयी है, इसका कुछ संकेत यहाँ प्राप्त नहीं है। उसकी उत्थानिकामें यह वतलाया गया है कि 'महाकर्मप्रकृति प्राभृत' के जो कृति-वेदनादि २४ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे कृति और वेदना नामक २ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखण्ड (पु० ६-१२) में की गयी है। स्पर्श, कर्म, प्रकृति (पु० १३) और वन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्ध एवं वन्धनीय (वन्धन अनुयोग द्वार चार प्रकारका है--वन्ध, वन्धनीय, बन्धक और वन्धविधान) अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वर्गणाखण्डमें की गयी है। बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तगर्त वन्धविधान नामक अवान्तर अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा महावन्धमें[१] विस्तारपूर्वक की गयी है। तथा उक्त बन्धन अनुयोगद्वारके अवान्तर अनुयोगद्वारभूत वन्धक अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा क्षुद्रकवन्ध (पु० ७) में विस्तार से की गयी है। शेष १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा 'सत्कर्म' में की गयी है। तथापि उसके अतिशय गम्भीर होनेसे यहाँ अर्थविषमपदोंके अर्थ की प्ररूपणा पंजिका स्वरूपसे की जाती है[२]।

इससे यह निश्चित होता है कि प्रस्तुत मूलभूत षट्खंडागममें कृति-वेदनादि पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम ६ अनुयोगद्वारोंकी ही प्ररूपणा की गयी है। शेष निवन्धन आदि १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा श्री वीरसेन स्वामीने स्वयं ही की है, जैसा कि उन्होंने उसके प्रारम्भमें इस वाक्यके द्वारा सूचित भी कर दिया है—

भूदवलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसअट्ठारसअणियोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो। तं जहा—

उक्त 'संतकम्मपंजिया' की उत्थानिकामें की गयी सूचनाके अनुसार तो वह शेष सभी १८ अनुयोगद्वारोंके ऊपर लिखी जानी चाहिये थी। परन्तु उपलब्ध वह उदयानुयोगद्वार तक ही है। इसकी जो हस्तलिखित प्रति हमारे सामने रही है वह श्री पं० लोकनाथ जी शास्त्रीके अन्यतम शिष्य श्री देवकुमार जी के द्वारा मूडबिद्रीस्थ श्री वीरवाणीविलास जैनसिद्धान्त भवनकी प्रतिपरसे लिखी गयी है। यह प्रायः अशुद्ध बहुत है। इसमें लेखकने पूर्णविराम, अर्धविराम और प्रश्नसूचक आदि चिह्नोंका भी उपयोग किया है जो यत्र तत्र भ्रान्तिजनक भी हो गया है।

पंजिकामें जहाँ कहीं भी अल्पबहुत्वका प्रकरण प्राप्त हुआ है उसीके ऊपर प्रायः विशेष लिखा गया है, अन्य विषयोंका स्पष्टीकरण प्रायः कहीं भी विशेषरूपसे नहीं किया गया है। यहाँ पंजिकाकारने जो संख्याओंका उपयोग अल्पबहुत्वके स्पष्टीकरणार्थ किया है वह किस आधारसे किया है, यह समझमें नहीं आ सका है। इसमें प्रायः सर्वत्र अस्पष्ट स्वरूपसे एक विशेष चिह्न आया है जो प्रायः संख्यातका प्रतीक दिखता है। उसके स्थानमें हमने अंग्रेजीके दो (2) के अंक का उपयोग किया है।

---

१ महावन्धके ५ भाग 'भारतीय ज्ञानपीठ' द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। शेष भागोंके भी शीघ्र प्रकाशित हो जानेकी सम्भावना है।

२ महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ (इ) चउवीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदि-वेदणा त्ति जाणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्मि, पुणो प [पस्स-कम्म-पयडि-बंधण त्ति] चत्तारिअणिओगद्दारेसु तत्थ बंध-बंधणिज्जणामाणियोगेहि सह वग्गणाखंडम्मि, पुणो बंधविधाणणामाणियोगद्दारो महाबंधम्मि, पुणो बंधगाणियोगो खुद्दाबंधम्मि च सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसाणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि। तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुच्चयेण पंजियसरूवेण भणिस्सामो। परिशिष्ट पृष्ठ १

विषय-सूची

शुद्धि-पत्र

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१३	सव द्रव्यों में निवद्ध है, वह सव पर्यायों में निवद्ध नहीं है॥	सव द्रव्यों और असर्व (कुछ) पर्यायों में निवद्ध है॥
४	१६	" " "	" " "
५	१४	प्राप्त	प्राप्त
१०	३	पचसत्ती ?	पचासत्ती ?
"	४	अक्रणेण	अक्कमेण
११	२४	द्रव्यों में निवद्ध है, सब पर्यायों में नहीं॥	द्रव्यों और कुछ पर्यायों में निवद्ध है॥
१३	१६	नाम कृतियां	नाम प्रकृतियां
१७	१	कारणपरूवमावरणस्स	कारणसरूवमावरणस्स
२०	२६	जन	वंन
२४	७	तदुवलभादो	तदुवलंभादो
३३	३१	इसके अतिरिक्त मिथ्यात्व	तथा मिथ्यात्व
३४	१३	उसमें	×
३६	४	आचरिमासु	अचिरमासु
४५	११	उदेरिदि त्ति भणति	उदीरेदि त्ति भणंति
४६	७	उदीरणंतर	उदीरणंतरं
४८	११	सत्तरणमुदरओ	सत्तण्णमुदीरओ
५०	२६	सात के उदीरकों से एक आवली में संचित हुए आठ के	एक आवली में संचित हुए आठ के
५१	४	सम्माइट्टी	सम्माइट्ठी
५१	६	सत्तउदीरंतस्स	सत्त उदीरंतस्स
६०	४	मिच्छाइठिप्पहुडि	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि
६१	३१	जयन्य	जघन्य
८३	२६	वे प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरण इन तीन गुणस्थानों में पाये	प्रमत्त और अप्रमत्त में वे सव तथा अपूर्वकरण में सातके विना तीन स्थान पाये
९२	८	चे व	चेव

पृं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१५	सागरोववमाणि	सागरोवमाणि
१००	७	असंखेज्जगुणा	संखेज्जगुणा
१००	२२	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे
१०५	२०	असता	असाता
११०	३	–मदुयावलिय–	–मुदयावलिय–
१११	२	उवरिल्ल	उवरिल्ल–
११२	२६	एगिंदियागए	एगिंदियागहे
११६	६	चरिमसमयसजोगस्स	चरिमसमयसजोगिस्स
११७	१०	ट्ठिदिसंतकम्मेण	ट्ठिदिसंतकम्मेण
११६	११	एगसओ	एगसमओ
१३२	६	अणुकस्सट्ठिदि	अणुकस्सट्ठिदि
१३५	६–१०	सुह-सुस्सर-आदेज्ज	अथिर-असुह
१३५	२६	शुभ, सुस्वर, आदेय	अशुभ, अस्थिर
१४४	११	कादूण	कादूण
१६४	१४	संखेज्जभाग-	[संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्ज-गुणा] संखेज्जभाग–
,,	३०	संख्यातभागवृद्धिके	[संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यात-गुणे हैं] संख्यातभागवृद्धिके
१६७	६	णवुसयवेदस्स	णवुंसयवेदस्स
१७०	३	असंखेज्जगुणा। हेदुणा	असंखेज्जगुणा हेदुणा।
१७०	१४	आणादिउदीरणा	अणादिउदीरणा
१७०	१६	असंख्यातगुणे हैं। किन्तु वे हेतु पूर्वक उपदेश से	हेतु से असंख्यातगुणे हैं। किन्तु उपदेश से
१७७	२०	अनुत्कृष्ट	उत्कृष्ट
१८२	११	मज्झिमजहण्णासु	मज्झिम-जहण्णासु
१८४	३१	रहने पर हाती	रहने पर होती
१६१	५	–णवणोकसायाण–	णवणोकसायाण–
१६१	३२	अनुभागउदीरणा उत्कर्ष से	अनुभागउदीरणा का काल उत्कर्ष से
२०८	२३	अप्रशस्त, वर्ण	अप्रशस्त वर्ण,
२१४	७	जदि जहण्णं	जदि अजहण्णं
२१४	२३	जघन्य	अजघन्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२०	२	अजसगित्ति-	जसगित्ति-
२२०	१६	अयशःकीर्ति	यशःकीर्ति
२२८	६	कायव्व	कायव्वं
२३१	६	जसगित्ति० अ० गुणा	×
२३१	२१-२२	यशःकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है।	×
२३४	१२	आदाव	×
२३४	१६	तिरिक्खगइ	×
२३४	२६	आतप	×
२३४	३३	तिर्यग्गति	×
२४६	१३	अप्पावहुअं	अप्पाबहुअं
२५३	१६	खोजक	खोजकर
२५७	५	जरस	जस्स
२६२	११	ओरालिय वेउव्वि-	ओरालिय-वेउव्वि-
२७१	१०	पंचंतराइयाणंपदेस-	पंचंतराइयाणं पदेस-
२७३	३	वड्ढिउदीरणा[१]- ।	वड्ढिउदीरणा[१] ।
२७४	५	संखेज्जभागहाणि-	संखेज्जगुणहाणि-
२७४	२०	संख्याभागहानि	संख्यातगुणहानि
२७६	२	अट्ठपदं तं ।	अट्ठपदं । तं
२८०	१३	तीससागरोवमकोडाकोडोओ	तीससागरोवमकोडाकोडीओ
२८१	२	जट्ठिदि	जट्ठिदी
२८७	६	सरीरपज्जज्जीए	सरीरपज्जत्तीए
२९५	३	एवमद्धाछेदो । समत्तो ।	एवमद्धाछेदो समत्तो ।
२९६	१२	उवसंते ॥१॥	उवसंते ॥१॥
२९६	१४	सेडीए[१] ॥६॥	सेडीए[१] ॥२॥
२९७	३	दिसंति ।	दिस्संति ।
३१२	१२	उक्कस्संदडओ	उक्कस्सदंडओ
३१८	१३	अगुलस्स	अंगुलस्स
३१९	४	वि थोववहुत्तं	वि भागहारस्स थोवबहुत्तं
३१९		तिरिक्खगइ०	[आहार०विसे०] । तिरिक्खगइ०

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१९	२४	तिर्यंचगति का	[आहारकशरीरका विशेष अधिक है] तिर्यञ्चगति का
३२०	१३	सम्ममिच्छत्तो	सम्मामिच्छत्तो
३२५	१२	अचक्खु	[चक्खु-] अचक्खु-
३२६	३०	अचक्षुदर्शनावरण	[चक्षुदर्शनावरण] अचक्षुदर्शनावरण
३२१	१३	विसेसाहिओ, गोवुच्छरयणाए	विसेसाहियं गोवुच्छरयणाए
३२८	१	उपएसेण	उवएसेण
३३३	२३	वह अन्तिम	उस अन्तिम
३३३	२४	छद्मस्थ के ....होती है।	छद्मस्थ के जिसकी अवधिलब्धि प्रथम समय में नष्ट हुई है, होती है।
३३५	३१	प्रशस्त विहायोगति,	प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति

णिबंधणादि-सेस-अणियोगद्दाराणि



सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदवलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीकासमण्णिदो

तत्थ

संतकम्मपाहुडएसु सेस-अट्ठारह-अणियोगद्दारेसु

७ णिबंधणाणियोगद्दारं

णिट्ठवियअट्ठकम्मं केवलणाणेण दिट्ठपरमट्ठं ।
णमियूणरिट्ठणेमिं वोच्छामि णिबंधणणियोगं ॥

भूदवलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिद-सेसअट्ठारसअणियोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो । तंजहा– निबध्यते तदस्मिन्निति निबंधनम्, जं दव्वं जम्हि णिबद्धं तं णिबंधणं ति भणिदं होदि । णिबंधणे त्ति अणियोगद्दारे णिबंधणं ताव अपयदणिबंधणणिराकरणट्ठं णिक्खिवियव्वं । तं जहा–

जिन्होंने आठ कर्मोंका अन्त करके प्रगट हुए केवलज्ञानके द्वारा पदार्थके यथार्थ स्वरूपको देख लिया है ऐसे अरिष्टनेमि जिनेन्द्र (वाईसवें तीर्थंकर) को नमस्कार करके निबन्धन अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥

भूतवलि भट्टारकने चूंकि यह सूत्र देशामर्शक रूपसे लिखा है, अत एव इस सूत्रके द्वारा सूचित शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी कुछ संक्षेपसे प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— 'निबध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनम्' इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें सम्बद्ध है उसे निबन्धन कहा जाता है । 'निबन्धन' इस अनुयोगद्वारमें पहिले अप्रकृत निबन्धनके निराकरणार्थ निबन्धनका निक्षेप करते हैं । वह इस प्रकार है—नामनिबन्धन, स्थापनानिबन्धन, द्रव्यनिबन्धन,

णामणिबंधणं ठवणणिबंधणं दव्वणिबंधणं खेत्तणिबंधणं कालणिबंधणं भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि। जस्स णामस्स वाचगभावेण पवुत्तीए जो अत्थो आलंबणं होदि सो णामणिबंधणं णाम, तेण विणा णामपवुत्तीए अभावादो। तं च णामणिबंधणमत्थाहिहाण-पच्चयभेएण तिविहं। तत्थ अत्थो अट्ठविहो एग-बहुजीवाजीवजणिदपादेक्क-संजोगभंगभेएण। एदेसु अट्ठसु अत्थेसुप्पण्णणाणं[1] पच्चयणिबंधणं। जो णामसद्दो पवुत्तो[2] संतो अप्पाणं चेव जाणावेदि तमभिहाणणिबंधणं णाम। अधवा, एदं सव्वं पि दव्वादिणिबंधणेसु पविसदि त्ति मोत्तूण णिबंधणसद्दो चेव णामणिबंधणं ति घेत्तव्वं, एवं संते पुणरुत्तदोसाभावादो। ठवणणिबंधणं दुविहं सब्भावासब्भावट्ठवणणिबंधणभेएण। जं जहा[3] अणुयारइ अप्पिददव्वं तं तहा ठविदं सब्भावट्ठवणणिबंधणं। तव्विवरीयमसब्भावट्ठवणणिबंधणं। जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स[4] सहावो दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिबंधणं। खेत्तणिबंधणं णाम गाम-णयरादीणि[5], पडिणियदखेत्ते तेसिं पडिबद्धत्तुवलंभादो। जो जम्हि काले पडिबद्धो अत्थो तक्कालणिबंधणं। तं जहा— चूअ[6]फुल्लाणि चेत्तमासणिबद्धाणि, अंबिलियाहुल्लाणि आसाढमासणिबद्धाणि, वियइल्ल-

---

क्षेत्रनिवन्धन, कालनिवन्धन और भावनिवन्धन इस प्रकार निवन्धन छह प्रकारका है। जिस नामकी वाचक रूपसे प्रवृत्तिमें जो अर्थ आलम्बन होता है वह नाम निवन्धन है, क्योंकि, उसके विना नामकी प्रवृत्ति सम्भव नहीं है। वह नामनिवन्धन अर्थ, अभिधान और प्रत्ययके भेदसे तीन प्रकारका है, उनमें एक व बहुत जीव तथा अजीवसे उत्पन्न प्रत्येक व संयोगी भंगोंके भेदसे अर्थ आठ प्रकारका है। इन आठ अर्थोंमें उत्पन्न हुआ ज्ञान प्रत्ययनिवन्धन कहलाता है। जो संज्ञा शब्द प्रवृत्त होकर अपने आपको जतलाता है वह अभिधाननिवन्धन कहा जाता है। अथवा, यह सभी चूंकि द्रव्यनिवन्धन आदिक निवन्धनोंमें प्रविष्ट है, अत एव उसे छोड़कर 'निवन्धन' शब्दको ही नामनिवन्धन रूपसे ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा होनेपर पुनरुक्त दोष नहीं आता।

स्थापनानिवन्धन सद्भावस्थापनानिवन्धन और असद्भावस्थापनानिवन्धनके भेदसे दो प्रकारका है। जो जिस प्रकारसे विवक्षित द्रव्यका अनुसरण करता है उसको उसी प्रकारसे स्थापित करना सद्भावस्थापनानिवन्धन है। उससे विपरीत असद्भावस्थापनानिवन्धन है। जो द्रव्य जिन द्रव्योंका आश्रय करके परिणमन करता है, अथवा जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिवद्ध है वह द्रव्यनिवन्धन कहलाता है। ग्राम व नगर आदि क्षेत्रनिवन्धन हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें उनका सम्वन्ध पाया जाता है। जो अर्थ जिस कालमें प्रतिवद्ध है वह कालनिवन्धन कहा जाता है। यथा— आम्र वृक्षके फूल चैत्र माससे सम्वद्ध हैं, अम्लिकाके फूल आपाढ़ माससे

---

१ काप्रतौ 'अत्थेसुप्पण्णणाणं' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। काप्रतौ 'सद्दो ण वुत्तो' ताप्रतौ 'सद्दो [ण] वुत्तो' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'तं जहा' इति पाठः। ४ प्रत्योरुभयोरेव 'सद्दस्स' इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'गामणयरादीहि' इति पाठः। ६ प्रत्योरुभयोरेव 'भूअ' इति पाठः।

हुल्लाणि वइसाह-जेट्ठमासणिबद्धाणि; तत्थेव तेसिमुवलंभादो। एवमण्णेसिं पि कालणिबंधणं जाणिऊण वत्तव्वं। पंचरत्तियाओ णिबंधो त्ति वा। जं दव्वं भावस्स आलंबणमाहारो होदि तं भावणिबंधणं। जहा लोहस्स हिरण्ण-सुवण्णादीणि णिबंधणं, ताणि अस्सिऊण तदुप्पत्तिदंसणादो[1], उप्पण्णस्स वि लोहस्स तदावलंबणदंसणादो। कोहुप्पत्तिणिमित्तदव्वं कोहणिबंधणं उप्पण्णकोहावलंबणदव्वं वा। एत्थ एदेसु णिबंधणेसु केण णिबंधणेण पयदं? णाम-ट्ठवणणिबंधणाणि मोत्तूण सेससव्वणिबंधणेसु पयदं। एदं णिबंधणाणिओगद्दारं जदि वि छण्णं दव्वाणं णिबंधणं परूवेदि तो वि तमेत्थ मोत्तूण कम्मणिबंधणं चेव घेत्तव्वं, अज्झप्पविज्जाए अहियारादो। किमट्ठं णिबंधणाणिओगद्दारमागयं? दव्व-खेत्त-काल-भावेहि कम्माणि परूविदाणि, मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगपच्चया वि तेसिं परूविदा, तेसिं कम्माणं पाओग्गपोग्गलाणं पि परूवणा कदा। संपहि तेसिं कम्माणं लद्धप्पसरूवाणं वावारपदुप्पायणट्ठं णिबंधणाणियोगद्दारमागयं। तत्थ जं तं णोआगमदोकम्मदव्वणिबंधणं तं दुविहं—मूलकम्मणिबंधणं उत्तरकम्मणिबंधणं चेदि। तत्थ अट्ठ मूलकम्माणि, तेसिं णिबंधणं वत्तइस्सामो। तं जहा—

सम्बद्ध हैं, विचकिल नामक वृक्षविशेषके फूल वैशाख व ज्येष्ठ माससे सम्बद्ध हैं; क्योंकि, वे इन्हीं मासोंमें पाये जाते हैं। इसी प्रकार दूसरोंके भी कालनिबन्धनका जानकर कथन करना चाहिये। अथवा पंचरात्रिक निबन्धन कालनिबन्धन है (?)। जो द्रव्य भावका आलम्बन अर्थात् आधार होता है वह भावनिबन्धन है। जैसे–लोभके चांदी-सोना आदिक निबन्धन हैं, क्योंकि, उनका आश्रय करके लोभकी उत्पत्ति देखी जाती है, तथा उत्पन्न हुआ लोभ भी उनका आलम्बन देखा जाता है। क्रोधकी उत्पत्तिका निमित्तभूत द्रव्य अथवा उत्पन्न हुआ क्रोध जिसका आलम्बन होता है वह क्रोधनिबन्धन कहा जाता है।

शंका—यहां इन निबन्धनोंमेंसे कौनसा निबन्धन प्रकृत है?

समाधान—नामनिबन्धन और स्थापनानिबन्धनको छोड़कर शेष सब निबन्धन यहां प्रकृत हैं। यह निबन्धनानुयोगद्वार यद्यपि छह द्रव्योंके निबन्धनकी प्ररूपणा करता है तो भी यहां उसे छोड़कर कर्मनिबन्धनको ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यहां आध्यात्मविद्याका अधिकार है।

शंका—निबन्धनानुयोगद्वार किसलिये आया है?

समाधान—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके द्वारा कर्मोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है; उनके मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग रूप प्रत्ययोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है; तथा उन कर्मोंके योग्य पुद्गलोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है। अब आत्मलाभको प्राप्त हुए उन कर्मोंके व्यापारका कथन करनेके लिये निबन्धनानुयोगद्वार आया है।

उनमें जो नोआगमकर्मद्रव्यनिबन्धन है वह दो प्रकारका है—मूलकर्मनिबन्धन और उत्तरकर्मनिबन्धन। उनमें मूल कर्म आठ हैं, उनके निबन्धनका कथन करते हैं। यथा—

---

१ ताप्रतौ 'तदुववत्तिदंसणादो' इति पाठः।

तत्थ णाणावरणं सव्वदव्वेसु णिबद्धं[1], णोसव्वपज्जाएसु ॥१॥

सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति केवलणाणावरणमस्सिदूण भणिदं । कुदो ? तिकालविसय-अणंतपज्जायभरिदछदव्वविसयकेवलणाणविरोहित्तादो । णोसव्वपज्जाएसु त्ति वयणं सेस-णाणावरणाणि पडुच्च भणिदं, सेसणाणाणं सव्वदव्वग्गहणसत्तीए अभावादो । मदि-सुद-णाणाणं सव्वदव्वविसयत्तं किण्ण वुच्चदे, तासिं मुत्तामुत्तासेसदव्वेसु वावारुवलंभादो ? ण एस दोसो, तेसिं दव्वाणमणंतेसु पज्जाएसु तिकालविसएसु तेहि सामण्णेणावगएसु विसेससरूवेण वावाराभावादो । भावे वा केवलणाणेण समाणत्तं तेसिं पावेज्ज । ण च एवं, पंचणाणुवदेसस्स अभावप्पसंगादो । णोसद्दो सव्वपडिसेहओ[2] त्ति किण्ण घेप्पदे ? [ण,] णाणावरणस्साभावस्स पसंगादो, सु [व] वयणविरोहादो च । तम्हा णोसद्दो देसपडिसेहओ त्ति घेत्तव्वं ।

एवं दंसणावरणीयं ॥ २ ॥

दंसणावरणीयं णाम अप्पाणम्मि चेव णिबद्धं, अण्णहा णाण-दंसणाणमेयत्तप्प-

---

उनमें ज्ञानावरण सब द्रव्योंमें निबद्ध है, वह सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है ॥१॥

'सब द्रव्योंमें निबद्ध है' यह केवल ज्ञानावरणका आश्रय करके कहा गया है, क्योंकि, वह तीनों कालोंको विषय करनेवाली अनन्त पर्यायोंसे परिपूर्ण ऐसे छह द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका विरोध करनेवाली प्रकृति है । 'सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है' यह वचन शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी अपेक्षासे कहा गया है, क्योंकि, शेष चार ज्ञानोंमें सब द्रव्योंको ग्रहण करनेकी शक्ति नहीं पाई जाती।

शंका—मतिज्ञान व श्रुतज्ञान सब द्रव्योंको विषय करनेवाले हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते; क्योंकि, उनका मूर्त व अमूर्त सब द्रव्योंमें व्यापार पाया जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उन द्रव्योंकी त्रिकालविषयक अनन्त पर्यायोंमें उन ज्ञानोंकी सामान्य रूपसे प्रवृत्ति है, विशेष रूपसे नहीं है। अथवा यदि उनमें उनकी विशेष रूपसे भी प्रवृत्ति स्वीकार की जाय तो वे दोनों ज्ञान केवलज्ञानकी समानताको प्राप्त हो जावेंगे। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पांच ज्ञानोंका जो उपदेश प्राप्त है उसके अभावका प्रसंग आता है ।

शंका—'नो' शब्दको सबके प्रतिषेधक रूपसे क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा स्वीकार करनेपर एक तो ज्ञानावरणके अभावका प्रसंग आता है, दूसरे स्ववचनका विरोध भी होता है ।इसलिये 'नो' शब्दको देशप्रतिषेधक ही ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरण भी सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें वह निबद्ध नहीं है ॥२॥

शंका—दर्शनावरणीय कर्म आत्मामें ही निबद्ध है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर ज्ञान

---

१ काप्रतौ 'णिबंधणं', ताप्रतौ 'णिबंधणं (णिबद्धं)' इति पाठः । २ काप्रतौ 'सद्दपडिसेहओ', ताप्रतौ सद्द (व्व) पडिसेहओ' इति पाठः ।

संगादो। ण च विसय-विसयिसण्णिवादाणंतरसमए सामण्णग्गहणं दंसणं, विषय-विषयिसन्निपातानन्तरमाद्यग्रहणमवग्रह इति लक्षणात् ज्ञानत्वं प्राप्तस्यावग्रहस्य दर्शनत्वविरोधात्। किं च— ण विसेसेण विणा सामण्णं चेव घेप्पदि, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि अविसेसिदस्स गहणत्ताणुववत्तीदो। किं च — णाणेण किमवत्थुपरिच्छेदो[1] आहो वत्थुपरिच्छेदो कीरदि ? ण पढमपक्खो, घड-पडादिवत्थूणं परिच्छेदयाभावेण सयललोगसंववहाराभावप्पसंगादो। ण विदियपक्खो वि, दंसणस्स णिव्विसयत्तप्पसंगादो। एवं दंसणं पि ण वुत्तदोसे अइक्कमइ। [ण च] णाण-दंसणेहि अक्कमेण वत्थुपरिच्छेदो कीरदि, दोण्णमक्कमेण पवुत्तिविरोहादो। एदं कुदो णव्वदे ? "हंदि दुवे णत्थि उवजोगा"[2] इदि वयणादो। ण च कमेण वत्थुपरिच्छित्तिं कुणंति, केवलणाण-दंसणाणं पि कमपवुत्तिप्पसंगादो। दोण्णमेक्कदरस्स अभावो वि होज्ज, अगहिदगहणाभावादो। तम्हा एवं दंसणावरणस्से त्ति वयणं

और दर्शनके एक होनेका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर समयमें जो सामान्य ग्रहण होता है वह दर्शन है तो यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर जो आद्य ग्रहण होता है वह अवग्रह कहा जाता है, इस प्रकारके लक्षणसे ज्ञानस्वरूपको प्राप्त हुए अवग्रहके दर्शन होनेका विरोध आता है। दूसरे, विशेषके विना केवल सामान्यका ग्रहण करना शक्य भी नहीं है, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी विशेषतासे रहित केवल सामान्यका ग्रहण वन नहीं सकता। तीसरे, ज्ञान क्या अवस्तुको ग्रहण करता है अथवा वस्तुको ? प्रथम पक्ष तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, ज्ञानके घट पट आदि वस्तुओंका परिच्छेदक न रहनेसे समस्त लोकव्यवहारके अभाव हो जानेका प्रसंग आता है। द्वितीय पक्ष भी नहीं वनता है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर दर्शनके निर्विषय हो जानेका प्रसंग आता है। इसी प्रकार दर्शनमें भी उक्त दोनों दोषोंका प्रसंग आता है। ज्ञान व दर्शन युगपत् वस्तुका परिच्छेदन करते हैं, यह भी नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि, दोनोंकी युगपत् प्रवृत्ति होनेमें विरोध आता है।

प्रतिशंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

प्रतिशंका समाधान—यह "खेद है कि दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते" इस आगमवचनसे जाना जाता है।

यदि कहा जाय कि वे क्रमसे वस्तुका परिच्छेदन करते हैं तो यह भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर केवलज्ञान और केवलदर्शनके भी क्रमप्रवृत्तिका प्रसंग आता है। तथा दोनोंमेंसे किसी एकका अभाव भी हो जाना चाहिये, क्योंकि, वैसा होनेपर दूसरेके अगृहीतग्रहण सम्भव नहीं है। 'इस कारण "ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है" ऐसा जो वचन कहा गया है वह घटित नहीं होता है ?

१ काप्रतौ 'परिच्छंदि' इति पाठः। २ दंसण-णाणावरणक्खए समाणम्मि कस्स पुव्वअरं। होज्ज समं उप्पाओ हंदि दुए णत्थि उवओगा॥ सम्मइ० २-९.

ण घडदे । ण एस दोसो, सरूवस्स वज्झत्थपडिबद्धस्स संवेयणं[1] दंसणं णाम । ण च वज्झत्थेण असंवद्धं सरूवमत्थि, णाण-सुह-दुक्खाणं सव्वेसिं पि वज्झत्थावट्ठंभवलेणेव तेसिं पवुत्तिदंसणादो । तदो एवं दंसणावरणीयस्से त्ति वयणं घडदि त्ति सिद्धं । सेसं जाणिऊण वत्तव्वं ।

वेयणीयं सुह-दुक्खम्हि णिवद्धं ॥ ३ ॥

सिरोवेयणादी दुक्खं णाम । तस्स उवसमो तदणुप्पत्ती वा दुक्खुवसमहेउदव्वादिसंपत्ती वा सुहं णाम । तत्थ वेयणीयं णिवद्धं, तदुप्पत्तिकारणत्तादो ।

मोहणीयमप्पाणम्मि णिवद्धं ॥ ४ ॥

कुदो ? सम्मत्त-चारित्ताणं जीवगुणाणं घायणसहावादो । सम्मत्त-चारित्ताणि णाणदंसणाणीव वज्झत्थसंवद्धाणि चेव, तदो मोहणीयं सव्वदव्वेसु णिवद्धमिदि किण्ण वुच्चदे । ण एस दोसो, चत्तारि वि घाइकम्माणि जीवम्हि चेव णिवद्धाणि त्ति जाणावणट्ठं वज्झत्थाणवलंवणादो[2] ।

आउअं भवम्मि णिवद्धं ॥ ५ ॥

कुदो ? भवधारणलक्खणत्तादो । को भवो णाम ? उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि वाह्य अर्थसे सम्बद्ध आत्मस्वरूपके जाननेका नाम दर्शन है । यदि कहा जाय कि आत्मस्वरूप वाह्य अर्थसे सम्बन्ध नहीं रखता सो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि ज्ञान, सुख व दुखरूप उन सभीकी प्रवृत्ति वाह्य अर्थके आलम्बलनसे ही देखी जाती है । अत एव "ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है" यह वचन संगत ही है, यह सिद्ध है । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

वेदनीय सुख व दुखमें निवद्ध है ॥३॥

सिरकी वेदना आदिका नाम दुख है । उक्त वेदनाका उपशान्त हो जाना, अथवा उसका उत्पन्न ही न होना, अथवा दुक्खोपशान्तिके कारणभूत द्रव्यादिककी प्राप्ति होना; इसे सुख कहा जाता है । उनमें वेदनीय कर्म निवद्ध है, क्योंकि वह उनकी उत्पत्तिका कारण है ।

मोहनीय कर्म आत्मामें निवद्ध है ॥४॥

कारण कि उसका स्वभाव सम्यक्त्व व चारित्र रूप जीवगुणोंके घातनेका है ।

शंका—ज्ञान व दर्शनके समान सम्यक्त्व एवं चारित्र भी चूंकि वाह्य अर्थसे ही सम्बन्ध रखते हैं, अत एव 'मोहनीय कर्म सव द्रव्योंमें निवद्ध है'; ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, चारों ही घातिया कर्म जीव द्रव्यमें ही निवद्ध हैं, यह जतलानेके लिये यहां वाह्य अर्थका अवलम्बन नहीं लिया है ।

आयु कर्म भवके विषयमें निवद्ध है ॥ ५ ॥

कारण कि भव धारण करना यह उसका लक्षण है ।

शंका—भव किसे कहते हैं ?

---

१ काप्रतौ 'पडिवद्धस्स तंवेयणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'वज्झत्थाणावलंवणादो' इति पाठः ।

चरिमसमओ त्ति जो अवत्थाविसेसो सो भवो णाम ।

णामं तिधा णिबद्धं, पोग्गलविवागणिबद्धं जीवविवागणिबद्धं खेत्त-विवागणिबद्धं ॥ ६ ॥

वण्ण-गंध-रस-फास-संघादणादीणं विवागो पोग्गलणिबद्धो, तेसिमुदएण वण्णादीण-मुप्पत्तिदंसणादो । तित्थयरादीणि कम्माणि जीवणिबद्धाणि, तेसिं विवागस्स जीवे चेवुव-लंभादो । आणुपुव्वी खेत्तणिबद्धा, पडिणियदखेत्ते चेव तिस्से विवागुवलंभादो । तेण णामं तिधा णिबद्धं ति सिद्धं ।

गोदमप्पाणम्हि णिबद्धं ॥ ७ ॥

कुदो ? उच्च-णीचगोदाणं जीवपज्जायत्तणेण दंसणादो ।

अंतराइयं दाणादिणिबद्धं ॥ ८ ॥

कुदो ? दाणादीणं विग्घकरणे तव्वावारुवलंभादो । एवं मूलपयडिणिबंधणपरूवणं समत्तं ।

संपहि उत्तरपयडिणिबंधणं वुच्चदे । तं जहा—

चत्तारि णाणावरणीयाणि दव्वपज्जायाणं देसणिबद्धाणि ॥ ९ ॥

ओहिणाणं [दव्वदो] मुत्तिदव्वाणि चेव जाणदि णामुत्तधम्माधम्म-कालागास-सिद्ध-

---

समाधान—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक जो विशेष अवस्था रहती है उसे भव कहते हैं ।

नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है—पुद्गलविपाकनिबद्ध, जीवविपाकनिबद्ध और क्षेत्र-विपाकनिबद्ध ॥ ६ ॥

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श और संघात आदि नामप्रकृतियोंका विपाक पुद्गलमें निबद्ध है, क्योंकि, उनके उदयसे वर्णादिककी उत्पत्ति देखी जाती है । तीर्थङ्कर आदिक कर्म जीवमें निबद्ध हैं, क्योंकि, उनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है । आनुपूर्वी कर्म क्षेत्रमें निबद्ध है, क्योंकि, उसका विपाक प्रतिनियत क्षेत्रमें ही पाया जाता है । इस कारण नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है, यह सिद्ध होता है ।

गोत्र कर्म आत्मामें निबद्ध है ॥ ७ ॥

कारण कि उच्च व नीच गोत्र जीवकी पर्यायस्वरूपसे देखे जाते हैं ।

अन्तराय कर्म दानादिकमें निबद्ध है ॥ ८ ॥

कारण कि दानादिकोंके विषयमें विघ्न करनेमें उसका व्यापार पाया जाता है ।

इस प्रकार मूलप्रकृतिनिबन्धनप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धनकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—

चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियां द्रव्योंकी पर्यायोंके एकदेशमें निबद्ध हैं ॥ ९ ॥

अवधिज्ञान द्रव्यकी अपेक्षा मूर्त द्रव्योंको ही जानता है; धर्म, अधर्म, काल, आकाश और

जीवस्स सगसंवेयणघाइत्तादो । रस-फास-गंध-सद्द-दिट्ठ-सुदाणुभूदत्थविसयसग-सत्तिविसयजीवोवजोगो अचक्खुदंसणं णाम । तम्हा[1] अचक्खुदंसणेण वज्झत्थणिबंधणेण[2] होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ वज्झत्थणिबंधणत्तं ण विवक्खिदं । किमट्ठं विवक्खा ण कीरदे ? सव्वं पि दंसणं णाणं व वज्झत्थविसयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ण कीरदे ।

चक्खुदंसणावरणीयं[3] गरुअलहुअणंतपदेसिएसु दव्वेसु णिबद्धं ॥१२॥

संखेज्जासंखेज्जपदेसियपोग्गलदव्वं चक्खुदंसणस्स विसओ ण होदि, किंतु अणंत-पदेसियपोग्गलदव्वं चेव विसओ होदि त्ति जाणावणट्ठमणंतपदेसिएसु दव्वेसु त्ति भणिदं । एदं वयणं देसामासियं, तेण सव्वेसिं दंसणाणमचक्खुसण्णिदाणमेसा परूवणा कायव्वा । गरुअलहुअविसेसणं अणंतपदेसियक्खंधस्स होदि, गरुआणं लोहदंडादीणं हलुआण[4]मक्क-तूलादीणं[5] च चक्खिदिएण[6] गहणुवलंभादो । अगुरुअलहुअविसेसणं किण्ण कीरदे ? ण, चक्खिदियविसए परमाणुआदीणमसंभवादो । पुव्वं सव्वं पि दंसणमज्झत्थविसयमिदि परूविदं, संपहि चक्खुदंसणस्स वज्झत्थविसयत्तं परूविदं ति णेदं घडदे, पुव्वावरविरो-

कारण कि उक्त प्रकृतियां जीवके स्वसंवेदनको घातनेवाली हैं ।

शंका—रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द, दृष्ट, श्रुत व अनुभूत अर्थको विषय करनेवाली अपनी शक्तिविषयक जीवके उपयोगको अचक्षुदर्शन कहा जाता है । इसीलिये अचक्षुदर्शनका निबन्धन बाह्य अर्थ होना चाहिये ?

समाधान—यह कहना सत्य है, किन्तु उक्त बाह्यार्थनिबन्धनताकी यहां विवक्षा नहीं की गई है ।

शंका—उसकी विवक्षा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—सभी दर्शन ज्ञानके समान बाह्य अर्थको विषय करनेवाला नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ यहां उसकी विवक्षा नहीं की गई है ।

चक्षुदर्शनावरणीय कर्म गुरु व लघु ऐसे अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १२ ॥

संख्यात व असंख्यात प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य चक्षुदर्शनका विषय नहीं होता, किन्तु अनन्त प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य ही उसका विषय होता है; इस बातको जतलानेके लिये 'अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें' यह कहा है । यह वचन देशामर्शक है, इसलिये उससे अचक्षु संज्ञावाले सब दर्शनोंकी यह प्ररूपणा करनी चाहिये । 'गुरु व लघु' यह अनन्त प्रदेशवाले स्कन्धका विशेषण है, क्योंकि, चक्षु इन्द्रियके द्वारा लोहदण्डादिरूप गुरु और अर्कतूल (आकके पेड़का रूआ) आदिरूप लघु पदार्थोंका ग्रहण पाया जाता है ।

शंका—'अगुरुअलघु' यह विशेषण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, परमाणु आदि चक्षु इन्द्रियके विषय नहीं होते ।

शंका—सभी दर्शन अध्यात्म अर्थको विषय करनेवाला है, ऐसी प्ररूपणा पहिले की जा चुकी है । किन्तु इस समय बाह्यार्थको चक्षुदर्शनका विषय कहा है, इस प्रकार यह कथन संगत

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः । २ काप्रतौ 'विबंधणेण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'चक्खुदंसणीयं' इति पाठः । ४ काप्रतौ 'हलुहाण', ताप्रतौ 'हलुहाण (लहुआण)' इति पाठः । ५ प्रतिषु पाठोऽयम् । काप्रतौ—'मक्कतुलादी', ताप्रतौ—'मक्कतुलादीणं' इति पाठः । ६ काप्रतौ 'चक्खिदिएण', ताप्रतौ 'चक्खिदिएण (ण)' इति पाठः ।

जीवदव्वाणि, "रूपिष्ववधेः"[1] इति वचनात्। खेत्तदो घणलोगब्भंतरट्ठिदाणि[2] चेव जाणदि, णो बहित्थाणि[3]। कालदो असंखेज्जेसु वासेसु जमदीदमणागयं तं चेव जाणदि, णो बहित्थं[4]। भावदो असंखेज्जलोगमेत्तदव्वपज्जाए तीदाणागद-वट्टमाणकालविसए जाणदि। तेणोहिणाणं सव्वदव्वपज्जयविसयं ण होदि। तदो ओहिणाणावरणं सव्वदव्वाणं देसणिबद्धं ति भणिदं। मणपज्जवणाणं पि जेण दव्व-खेत्त-काल-भावाणं विसईकदेगदेसं तेण मणपज्जवणाणावरणीयं पि देसणिबद्धं। एवं मदि-सुदणाणावरणीयाणं पि[5] देसणिबद्धत्तं परूवेयव्वं।

केवलणाणावरणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं॥ १०॥

कुदो? विसईकदासेसदव्व[6]केवलणाणपडिबंधयत्तादो। खेत्त-काल-भावग्गहणं[7] सुत्तेण कदं, तेण तमेत्थ वत्तव्वं? ण, दव्वेहिंतो पुधभूदक्खेत्त-काल-भावाणमभावादो।

थीणगिद्धितियं णिद्दा पयला य अचक्खुदंसणावरणीयं अप्पाणम्मि णिबद्धं॥ ११॥

सिद्ध जीव इन अमूर्त द्रव्योंको वह नहीं जानता; क्योंकि, 'अवधिज्ञानका निबन्धरूपी द्रव्योंमें है, ऐसा सूत्रवचन है। क्षेत्रकी अपेक्षा वह घनलोकके भीतर स्थित द्रव्योंको ही जानता है, उसके बाहर स्थित द्रव्योंको नहीं जानता। कालकी अपेक्षा वह असंख्यात वर्षोंके भीतर जो अतीत व अनागत वस्तु है उसे ही जानता है, उनके बाहर स्थित वस्तुको नहीं जानता। भावकी अपेक्षा वह अतीत, अनागत एवं वर्तमान कालको विषय करनेवाली असंख्यात लोक मात्र द्रव्यपर्यायोंको जानता है। इसलिये अवधिज्ञान द्रव्योंकी समस्त पर्यायोंको विषय करनेवाला नहीं है। इसी कारण अवधिज्ञानावरण सब द्रव्योंके एकदेशमें निबद्ध है, ऐसा कहा है। मनःपर्ययज्ञान भी चूंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा एक देशको ही विषय करनेवाला है; अत एव मनःपर्ययज्ञानावरणीय भी देशनिबद्ध है। इसी प्रकार मतिज्ञानावरणीय और श्रुतज्ञानावरणीयकी भी देशनिबद्धताका कथन करना चाहिये।

केवलज्ञानावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है॥ १०॥

कारण कि वह समस्त द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका प्रतिबन्धक है।

शंका—यहां सूत्रमें क्षेत्र, काल और भावका ग्रहण नहीं किया गया है, इसलिये उनका यहां कथन करना चाहिये?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्योंसे पृथग्भूत क्षेत्र, काल और भावका अभाव है।

स्त्यानगृद्धित्रय, निद्रा, प्रचला और अचक्षुदर्शनावरणीय आत्मामें निबद्ध है॥ ११॥

---

१ त. सू. १-२७. २ काप्रतौ '-वरणीयं पदेसणिबद्धं' इति पाठः। ३ प्रत्योरुभयोरेव 'ट्ठिदाणे' इति पाठः। ३ प्रत्योरुभयोरेव 'बहिद्धाणि' इति पाठः। ४ प्रत्योरुभयोरेव बहिद्धं' इति पाठः। ५ काप्रतौ 'प देसणिबद्धं' ताप्रतौ 'पि देसणिबद्धं' इति पाठः। ६ प्रत्योरुभयोरेव 'विसमईकदासेसदव्वं' इति पाठः। ७ काप्रतौ 'कालभवग्गहणं', ताप्रतौ 'कालणिबद्धग्गहणं' इति पाठः।

जीवस्स सगसंवेयणघाइत्तादो । रस-फास-गंध-सद्द-दिट्ठ-सुदाणुभूदत्थविसयसगसत्तिविसयजीवोवजोगो अचक्खुदंसणं णाम । तम्हा[1] अचक्खुदंसणेण बज्झत्थणिबंधणेण[2] होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ बज्झत्थणिबंधणत्तं ण विवक्खिदं । किमट्ठं विवक्खा ण कीरदे ? सव्वं पि दंसणं णाणं व बज्झत्थविसयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ण कीरदे ।

चक्खुदंसणावरणीयं[3] गरुअलहुअणंतपदेसिएसु दव्वेसु णिबद्धं ॥१२॥

संखेज्जासंखेज्जपदेसियपोग्गलदव्वं चक्खुदंसणस्स विसओ ण होदि, किंतु अणंतपदेसियपोग्गलदव्वं चेव विसओ होदि त्ति जाणावणट्ठमणंतपदेसिएसु दव्वेसु त्ति भणिदं । एदं वयणं देसामासियं, तेण सव्वेसिं दंसणाणमचक्खुसण्णिदाणमेसा परूवणा कायव्वा । गरुअलहुअविसेसणं अणंतपदेसियक्खंधस्स होदि, गरुआणं लोहदंडादीणं हलुआणमक्कतूलादीणं[5] च चक्खिदिएण[6] गहणुवलंभादो । अगुरुअलहुअविसेसणं किण्ण कीरदे ? ण, चक्खिदियविसए परमाणुआदीणमसंभवादो । पुव्वं सव्वं पि दंसणमज्झत्थविसयमिदि परूविदं, संपहि चक्खुदंसणस्स बज्झत्थविसयत्तं परूविदं ति णेदं घडदे, पुव्वावरविरो-

कारण कि उक्त प्रकृतियां जीवके स्वसंवेदनको घातनेवाली हैं ।

शंका—रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द, दृष्ट, श्रुत व अनुभूत अर्थको विषय करनेवाली अपनी शक्तिविषयक जीवके उपयोगको अचक्षुदर्शन कहा जाता है । इसीलिये अचक्षुदर्शनका निबन्धन बाह्य अर्थ होना चाहिये ?

समाधान—यह कहना सत्य है, किन्तु उक्त बाह्यार्थनिबन्धनताकी यहां विवक्षा नहीं की गई है ।

शंका—उसकी विवक्षा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—सभी दर्शन ज्ञानके समान बाह्य अर्थको विषय करनेवाला नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ यहां उसकी विवक्षा नहीं की गई है ।

चक्षुदर्शनावरणीय कर्म गुरु व लघु ऐसे अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १२ ॥

संख्यात व असंख्यात प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य चक्षुदर्शनका विषय नहीं होता, किन्तु अनन्त प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य ही उसका विषय होता है ; इस बातको जतलानेके लिये 'अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें' यह कहा है । यह वचन देशामर्शक है, इसलिये उससे अचक्षु संज्ञावाले सब दर्शनोंकी यह प्ररूपणा करनी चाहिये । 'गुरु व लघु' यह अनन्त प्रदेशवाले स्कन्धका विशेषण है, क्योंकि, चक्षु इन्द्रियके द्वारा लोहदण्डादिरूप गुरु और अर्कतूल (आकके पेड़का रूआ) आदिरूप लघु पदार्थोंका ग्रहण पाया जाता है ।

शंका—'अगुरुअलघु' यह विशेषण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, परमाणु आदि चक्षु इन्द्रियके विषय नहीं होते ।

शंका—सभी दर्शन अध्यात्म अर्थको विषय करनेवाला है, ऐसी प्ररूपणा पहले की जा चुकी है । किन्तु इस समय बाह्यार्थको चक्षुदर्शनका विषय कहा है, इस प्रकार यह कथन संगत

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः । २ काप्रतौ 'णिबंधणेण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'चक्खुदंसणीयं' इति पाठः । ४ काप्रतौ 'हलुहाण', ताप्रतौ 'हलुहाण (लहुआण)' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम् । काप्रतौ—'मक्कतुलादीणं', ताप्रतौ—'मक्कतुल्यादीणं' इति पाठः । ६ काप्रतौ 'चक्खिदिएण', ताप्रतौ 'चक्खिदिएण (ण)' इति पाठः ।

हादो ? ण एस दोसो, एवंविहेसु वज्झत्थेसु पडिवद्धत्तसगसत्तिसंवेयणं[1] चक्खुदंसणं ति जाणावणट्ठं वज्झत्थविसयपरूवणाकरणादो । पंचण्णं दंसणाणमचक्खुदंसणमिदि एगणिद्देसो किमट्ठं कदो ? तेसिं पच्चासत्ती अत्थि त्ति जाणावणट्ठं कदो[2] । कधं तेसिं पच्चसत्ती ? विसईदो[3] पुधभूदस्स अक्कमेण सग-परपच्चक्खस्स चक्खुदंसणविसयस्सेव तेसिं विसयस्स परेसिं जाणावणोवायाभावं[4] पडि समाणत्तादो ।

ओहिदंसणावरणीयं रूविदव्वेसु णिबद्धं ॥ १३ ॥

रूविदव्वविसयसगसत्तिसंवेयणविघादकरणादो वि पुव्वं व वज्झत्थविसयपरूवणाए कारणं वत्तव्वं ।

नहीं है; क्योंकि, इसमें पूर्वापरविरोध है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके वाह्य पदार्थोंमें प्रतिवद्ध आत्मशक्तिका संवेदन करनेको चक्षुदर्शन कहा जाता है; यह वतलानेके लिये उपर्युक्त वाह्यार्थविषयताकी प्ररूपणा की गई है ।

शंका—पांच दर्शनोंके लिये 'अचक्षुदर्शन' ऐसा एक निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान—उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति है, इस वातके जतलानेके लिये वैसा निर्देश किया गया है ।

शंका— उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति कैसे है ?

समाधान—विषयीसे पृथग्भूत अतएव युगपत् स्व और परको प्रत्यक्ष होनेवाले ऐसे चक्षुदर्शनके विषयके समान उन पांचों दर्शनोंके विषयका दूसरोंके लिये ज्ञान करानेका कोई उपाय नहीं है । इसकी समानता पांचों ही दर्शनोंमें है, यही उनमें प्रत्यासत्ति है ।

विशेषार्थ—यहां शंकाकारका कहना है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गयी है इसी प्रकारसे त्वगिन्द्रियादिसे उत्पन्न होनेवाले शेष पांच दर्शनोंकी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार न कर उन्हें एक अचक्षुदर्शनके ही अन्तर्गत क्यों कहा गया है । इसके उत्तरमें यहां यह कहा गया है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी विषयभूत वस्तु विषयी (अप्राप्यकारी चक्षु) से पृथक् होनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनों के लिये प्रत्यक्ष होती है और इसीलिए दूसरोंको उसका ज्ञान भी कराया जा सकता है, इस प्रकार उक्त पांचों दर्शनोंकी विषयभूत वस्तु विषयी (प्राप्यकारी त्वगिन्द्रियादि) से पृथक् न रहनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनोंके लिये प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, और इसीलिये उसका दूसरोंको एक साथ ज्ञान भी नहीं कराया जा सकता है । यही इन पांचों दर्शनोंमें प्रत्यासत्ति है जो सबमें समान है ।

अवधिदर्शनावरणीय रूपी द्रव्योंमें निवद्ध है ॥ १३ ॥

रूपी द्रव्यविषयक आत्मशक्तिके संवेदनका विघात करनेके कारण पहिलेके ही समान इसकी भी वाह्यार्थविषयक प्ररूपणाका कारण कहना चाहिये ।

---

१ काप्रतौ 'सत्तिस्संवेयणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'कुदो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'पच्चासत्तिविसइदो' इति पाठः । ४ मप्रतिपाठोऽयम् । का-ताप्रत्योः 'अचक्खुदंसण' इति पाठः । ५ काप्रतौ '-वायाभावा' इति पाठः ।

केवलदंसणावरणीयं सव्वदव्वे णिबद्धं ॥ १४ ॥

अणंतसम्मत्त-णाण-चरण-सुहादिसत्तीणं केवलदंसणविसयाणं बज्झत्थं चेव अस्सिदूण अवट्ठाणुवलंभादो। केवलदंसणादीणं बज्झत्थणिबंधो[2] किमट्ठं वुच्चदे ? दंसणविसयजाणावणट्ठं, अण्णहा दंसणविसयस्स अज्झत्थस्स परेसिमपच्चक्खस्स जाणावणोवायाभावादो।

सादासादाणमप्पाणम्हि णिबंधो ॥ १५ ॥

कुदो ? सादासादविवागफलाणं[3] सुह-दुक्खाणं जीवे समुवलंभादो।

मोहणीयं दुविहं—दंसणमोहणीयं चारित्तमोहणीयं चेदि। तत्थ दंसणमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं, णोसव्वपज्जाएसु ॥ १६ ॥

मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं च सव्वदव्वेसु णिबद्धं, सव्वदव्वसद्दहणगुणविघादकरणादो। सम्मत्तं णोसव्वपज्जाएसु णिबद्धं। कुदो? तत्तो सम्मत्तस्स एगदेसघादुवलंभादो। दंसणमोहणीयं जेण घादिकम्मं तेण अप्पाणम्मि णिबद्धमिदि किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो,

केवलदर्शनावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १४ ॥

कारण कि केवलदर्शनकी विषयभूत अनन्त सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र एवं सुख आदि रूप शक्तियोंका अवस्थान बाह्य अर्थका ही आश्रय करके पाया जाता है।

शंका—केवलदर्शनादिकोंकी बाह्यार्थनिबद्धताका कथन किसलिये किया जाता है ?

समाधान—दर्शनका विषय बतलानेके लिये उसका कथन किया गया है। कारण कि दर्शनका विषयभूत अर्थ अध्यात्मरूप होनेसे दूसरोंको प्रत्यक्ष नहीं है, अतएव इसके बिना उसका ज्ञान करानेके लिये और कोई दूसरा उपाय ही नहीं था।

सातावेदनीय और असातावेदनीय आत्मामें निबद्ध हैं ॥ १५ ॥

कारण कि साता व असाता सम्बन्धी विपाकके फलरूप सुख व दुख जीवमें ही पाये जाते हैं।

मोहनीय कर्म दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें दर्शनमोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें नहीं ॥ १६ ॥

मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध हैं, क्योंकि, वे समस्त द्रव्यों सम्बन्धी श्रद्धान गुणका विघात करनेवाली प्रकृतियां हैं। सम्यक्त्व दर्शनमोहनीय प्रकृति कुछ पर्यायोंमें निबद्ध है, क्योंकि, उसके द्वारा सम्यक्त्वके एकदेशका घात पाया जाता है।

शंका—दर्शनमोहनीय चूंकि घातिया कर्म है, अत एव 'वह आत्मामें निबद्ध है'; ऐसी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, छह द्रव्य और नौ पदार्थ विषयक श्रद्धानका

१ ताप्रतौ 'णाणादरणसुहादि' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'णिबद्धो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'विवाकफलाणं', ताप्रतौ 'विवाकफलाणं (सादासादविवागाणं), मप्रतौ 'विवाकफलाणं' इति पाठः।

छदव्व-णवपयत्थविसयसद्दहणं सम्मद्दंसणं ति बाइज्जमाणजीवसंपदुप्पायणट्ठं वज्झत्थ-णिबंधणपरूवणाकरणादो।

चारित्तमोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ १७ ॥

राग-दोसा वज्झत्थालंवणा, तेसिं च णिरोहो चारित्तं। तदो चारित्तमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति वत्तव्वं[2]। सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ णावेक्खिदं। कुदो? बहुसो पदुप्पायणेण उवएसेण विणा एत्थ तदवगमादो।

णिरयाउअं णिरयभवम्मि णिबद्धं ॥ १८ ॥

कुदो? तत्थ णिरयभवधारणसत्तिदंसणादो।

सेसाउआणि वि अप्पप्पणो भवेसु[3] णिबद्धाणि ॥ १९ ॥

तत्तो तेसिं भवाणमवट्ठाणुवलंभादो।

णामं तिधा णिबद्धं— जीवणिबद्धं पोग्गलणिबद्धं खेत्तणिबद्धं च ॥ २० ॥

एवं णामणिबद्धं तिविहं चेव होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो। पोग्गलविवाग-णिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं भणदि—

नाम सम्यग्दर्शन है, अत एव घाते जानेवाले जीवगुणोंकी प्ररूपणा करनेके लिये बाह्यार्थ-निवन्धनकी प्ररूपणा की गई है।

चारित्रमोहनीयकर्म आत्मामें निवद्ध है ॥ १७ ॥

शंका— राग और द्वेष बाह्य अर्थका आलम्बन करनेवाले हैं, और चूंकि उन्हींके निरोध करनेका नाम चारित्र है अत एव चारित्रमोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निवद्ध है; ऐसा यहां कहना चाहिये ?

समाधान—यह सत्य है, किन्तु उसकी यहां अपेक्षा नहीं की गई है। कारण कि बहुत बार प्ररूपणा की जानेसे उपदेशके विना भी यहां उसका ज्ञान हो जाता है।

नारकायु नारक भवमें निवद्ध है ॥ १८ ॥

कारण कि उसमें नारक भव धारण करानेकी शक्ति देखी जाती है।

शेष तीन आयु कर्म भी अपने अपने भवोंमें निवद्ध हैं ॥ १९ ॥

क्योंकि, उनसे उन भवोंका अवस्थान पाया जाता है।

नाम कर्म तीन प्रकारसे निवद्ध है—जीव द्रव्यमें निवद्ध है, पुद्गलमें निवद्ध है, और क्षेत्रमें निवद्ध है ॥ २० ॥

इस प्रकार नामका निवन्धन तीन प्रकारका ही है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य कोई निवन्धन पाया नहीं जाता। पुद्गलविपाकनिवद्ध प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र कहते हैं—

---

१ काप्रतौ 'जीवस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'निबद्धं ति त्ति वेतव्वं' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'भवं वा' इति पाठः।

पंच य छ त्ति य छप्पंच दोण्णि पंच य हवंति अट्ठेव ।
सरीरादीपस्संता पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ १ ॥
अगुरुलहु-परुवघादा आदाउज्जोव णिमिणणामं च ।
पत्तेय-थिर-सुहेदरणामाणि य पोग्गलविवागा[1] ॥ २ ॥

पंच सरीराणि, छ संठाणाणि, तिण्णि अंगोवंगाणि, छ संघडणाणि, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-आदाउज्जोव-पत्तेय-साहारण-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणि च पोग्गलणिबद्धाणि[2] । कुदो ? एदेसिं विवागेण सरीरादीणं णिप्पत्तिदंसणादो । एवं बावणणामपयडीओ पोग्गलणिबद्धाओ । संपहि जीवणिबद्धणामपयडिपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

गदिजादी उस्सासो दोण्णि विहाया तसादितियजुगलं ।
सुभगादीचदुजुगलं जीवविवागा य तित्थयरं[3] ॥ ३ ॥

चत्तारिगदि-पंचजादि-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-अजसकित्ति-तित्थयरपयडीओ अप्पाणम्मि णिबद्धाओ । कुदो ? एदासिं विवागस्स जीवे चेवुवलंभादो । एवमेदाओ सत्तावीसणामपयडीओ जीवविवागियाओ । संपहि खेत्तणिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं

शरीरसे लेकर स्पर्श पर्यन्त अर्थात् शरीर संस्थान,आंगोपांग, संसहनन, वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श ये अनुक्रमसे पांच, छह, तीन, छह, पांच, दो, पांच और आठ प्रकृतियां अगुरुलघु, परघात, उपघात, आतप, उद्योत, निर्माण, प्रत्येक व साधारण, स्थिर व अस्थिर तथा शुभ व अशुभ; ये नामप्रकृतियां पुद्गलविपाकी हैं ॥ १–२ ॥

पांच शरीर, छह संस्थान, तीन आंगोपांग, छह संहनन, पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येक, व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण ये नामकर्मकी प्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं, क्योंकि, इनके विपाकसे शरीरादिकोंकी उत्पत्ति देखी जाती है । इस प्रकार ये बावन नामप्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं । अब जीवनिबद्ध नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

गति, जाति, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस आदिक तीन युगल, सुभग आदिक चार युगल और तीर्थंकर, ये प्रकृतियां जीवविपाकी हैं ॥ ३ ॥

चार गति, पांच जाति, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति और तीर्थंकर, ये प्रकृतियां आत्मामें निबद्ध हैं, क्योंकि, इनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है । इस प्रकार ये सत्ताईस नामप्रकृतियां जीवविपाकी हैं । अब क्षेत्रनिबद्ध प्रकृतियोंकी

---

१ देहादी फासंता पण्णासा णिमिण-तावजुगलं च । थिर-सुह-पत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई ॥ गो.क.४७.
२ काप्रतौ 'णिबद्धाणाम' इति पाठः । ३ तित्थयरं उस्सासं बादर-पज्जत्त-सुस्सरादेज्जं । जस-तस-विहाय-सुभगदु-चउगइ-पणजाइ सगवीसं ॥ गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं च । सुभगादिचउजुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं ॥ गो. क. ५०–५१.

भणदि—

चत्तारि आणुपुव्वी खेत्तविवागा त्ति जिणवरुद्दिट्ठा ।
णीचुच्चागोदाणं होदि णिबंधो दु अप्पाणे ॥ ४ ॥

चत्तारि आणुपुव्वीओ खेत्तणिबद्धाओ । कुदो ? पडिणियदखेत्तम्हि चेव तासिं फलोवलंभादो । णीचुच्चागोदाणं पुण णिबंधो अप्पाणम्मि चेव, तेसिं फलस्स जीवे चेवुवलंभादो ।

दाणंतराइयं दाणे लाभे भोगे तदेव उवभोगे ।
गहणे होंति णिबद्धा विरियं जह केवलावरणं ॥ ५ ॥

एदाओ पंच वि पयडीओ जीवणिबद्धाओ चेव, घाइकम्मत्तादो । किंतु घाइज्जमाण-जीवगुणजाणावणट्ठमेसा गाहा परूविदा । दाणंतराइयं दाणविग्घयरं, लाहविग्घयरं लाहंतराइयं, भोगविग्घयरं भोगंतराइयं, उपभोगविग्घयरं उवभोगंतराइयं । गहणसद्दो उवभोगग्गहणे त्ति पादेक्कं संबंधेयव्वो । जहा केवलणाणावरणीयं परूविदं अणंतदव्वेसु णिबद्धमिदि तहा विरियंतराइयं पि परूवेयव्वं, जीवादो पुधभूददव्वं अस्सिऊण विरियस्स पवुत्तिदंसणादो । एवमेत्थ अणियोगद्दारे एत्तियं चेव परूविदं, सेसअणंतत्थविसय-उवदेसाभावादो ।

एवं णिबंधणे त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र कहते हैं—

चार अनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रविपाकी हैं, ऐसा जिनेन्द्र देवके द्वारा निर्दिष्ट किया गया है । नीच व ऊंच गोत्रोंका निबन्ध आत्मामें है ॥ ४ ॥

चार आनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रनिबद्ध हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें ही उनका फल पाया जाता है । परन्तु नीच व ऊंच गोत्रका निबन्ध आत्मामें ही है, क्योंकि, उनका फल जीवमें ही पाया जाता है ।

दानान्तराय दानके ग्रहणमें, लाभान्तराय लाभके ग्रहणमें, भोगान्तराय भोगके ग्रहणमें, तथा उपभोगान्तराय उपभोगके ग्रहणमें निबद्ध हैं । वीर्यान्तराय केवलज्ञानावरणके समान अनन्त द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ ५ ॥

ये पांचों ही प्रकृतियां जीवनिबद्ध ही हैं, क्योंकि, वे घातिया कर्म हैं । किन्तु उनके द्वारा घाते जानेवाले जीवगुणोंका ज्ञापन करानेके लिये इस गाथाकी प्ररूपणा की गई है । दानमें विघ्न करनेवाला दानान्तराय, लाभमें विघ्न करनेवाला लाभान्तराय, भोगमें विघ्न करनेवाला भोगान्तराय, और उपभोगमें विघ्न करनेवाला उपभोगान्तराय है । ग्रहण शब्दका अर्थ उपभोगग्रहण है, इस कारण इसका प्रत्येकके साथ सम्बन्ध करना चाहिये । जिस प्रकार केवलज्ञानावरणीयकी अनन्त द्रव्योंमें निबद्धताकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार वीर्यान्तरायकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, जीवसे भिन्न द्रव्यका आश्रय करके वीर्यकी प्रवृत्ति देखी जाती है । इस प्रकार इस अनुयोगद्वारमें इतनी ही प्ररूपणा की गई है, क्योंकि, शेष अनन्त पदार्थविषयक निबन्धनके उपदेशका अभाव है ।

इस प्रकार निबन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

८

पक्कमाणियोगद्दारं

जयउ भुवणेक्कतिलओ तिहुवणकलिकलुसधुवणवावारो।
संतियरो संतिजिणो पक्कमअणियोगकत्तारो ॥ १ ॥

पक्कमे त्ति अणियोगद्दारस्स थोवत्थपरूवणे[1] कीरमाणे अपयदत्थणिराकरणदुवारेण पयदत्थपरूवणट्ठं णिक्खेवो कीरदे। तं जहा—णामपक्कमो, ठवणपक्कमो, दव्वपक्कमो, खेत्तपक्कमो, कालपक्कमो, भावपक्कमो चेदि छव्विहो पक्कमो। णाम-ठवणं गदं। दव्व-पक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वपक्कमभेएण। तत्थ आगमदव्वपक्कमो पक्कमाणिओग-द्दारजाणगो अणुवजुत्तो। णोआगमदव्वपक्कमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-भेदेण। जाणुगसरीर-भवियं गदं। तव्वदिरित्तपक्कमो दुविहो—कम्मपक्कमो णोकम्म-पक्कमो चेदि। तत्थ कम्मपक्कमो अट्ठविहो। णोकम्मपक्कमो तिविहो—सचित्त-अचित्त-मिस्स-भेएण। अस्साणं हत्थीणं पक्कमो सचित्तपक्कमो णाम। हिरण्ण-सुवण्णादीणं पक्कमो अचित्त-पक्कमो णाम। साभरणाणं हत्थीणं अस्साणं वा पक्कमो मिस्सपक्कमो णाम। खेत्तपक्कमो तिविहो— उड्ढलोगपक्कमो अधोलोगपक्कमो तिरियलोगपक्कमो चेदि। एत्थ आधेये आधारोवयारेण तत्थट्ठियजीवाणं उड्ढाधोतिरियलोगो त्ति सण्णा, अण्णहा तिण्णं लोगाणं

लोकके एक मात्र तिलक स्वरूप, तीन लोकके शत्रुभूत पाप-मैलके धोनेमें व्यापृत, शान्तिके करनेवाले और प्रक्रम अनुयोगके कर्ता ऐसे शान्तिनाथ जिनेन्द्र जयवन्त होवें ॥ १ ॥

प्रक्रम इस अनुयोगद्वारके स्तोक अर्थोंकी प्ररूपणा करते समय अप्रकृत अर्थके निराकरण द्वारा प्रकृत अर्थकी प्ररूपणा करनेके लिये निक्षेप किया जाता है। वह इस प्रकार है—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम; इस प्रकार प्रक्रम छह प्रकारका है। इनमें नामप्रक्रम और स्थापनाप्रक्रम अवगत हैं। द्रव्यप्रक्रम आगमद्रव्यप्रक्रम और नोआगम-द्रव्यप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वारका ज्ञायक उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यप्रक्रम है। नोआगमद्रव्यप्रक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। इनमेंसे ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यप्रक्रम अवगत हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यप्रक्रम कर्मप्रक्रम और नोकर्मप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें कर्मप्रक्रम आठ प्रकारका है। नोकर्मप्रक्रम सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है। अश्वों और हाथियोंका प्रक्रम सचित्तप्रक्रम, हिरण्य और सुवर्ण आदिकोंका प्रक्रम अचित्तप्रक्रम, तथा आभरण सहित हाथियों व अश्वोंका प्रक्रम मिश्रप्रक्रम कहलाता है।

क्षेत्रप्रक्रम ऊर्ध्वलोकप्रक्रम, अधोलोकप्रक्रम और तिर्यग्लोकप्रक्रमके भेदसे तीन प्रकारका है। यहां आधेयमें आधारका उपचार करनेसे उन लोकोंमें स्थित जीवोंको ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और

१ ताप्रतौ 'थोवत्त (त्थ) परूवणे' इति पाठः।

थावराणं पक्कमाणुववत्तीदो। समयावलिया-खण-लव-मुहुत्तादी कालपक्कमो[1]। भावपक्कमो दुविहो– आगमदो णोआगमदो[2] च। तत्थ आगमदो पक्कमाणिओगद्दारजाणओ उवजुत्तो। णोआगमदो भावपक्कमो ओदइयादिपंचभावा। एत्थ कम्मपक्कमे पयदं। प्रक्रामतीति प्रक्रमः कार्मणपुद्गलप्रचयः। आदाणिओ एत्थ भणदि– जहा कुंभारो एयादो मट्टियपिंडादो अणेयाणि घडादीणि उप्पादेदि तहा इत्थी पुरिसो णवुंसओ थावरो तसो वा जो वा सो वा एयविहं कम्मं बंधिदूण अट्ठविहं करेदि, अकम्मादो कम्मस्स उप्पत्तिविरोहादो? एत्तो णिग्गहो कीरदे—जदि अकम्मादो[3] कम्मुप्पत्ती ण होदि तो अकम्मादो[3] तुब्भेहि संकप्पिदएगकम्मुप्पत्ती वि ण होदि, कम्मत्तं पडि विसेसाभावादो। अह कम्मइयवग्गणादो जमेगमुप्पण्णं तं जइ कम्मं ण होदि तो तत्तो ण अट्ठकम्माणमुप्पत्ती, अकम्मादो[3] कम्मुप्पत्तिविरोहादो। ण च एयंतेण कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वं, मट्टियपिंडादो मट्टियपिंडं मोत्तूण घट-घटी-सरावालिंजरुट्टियादीणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। सुवण्णादो सुवण्णस्स घटस्सेव उप्पत्तिदंसणादो कारणाणुसारि चेव कज्जं ति ण वोत्तुं जुत्तं, कढिणादो[4] सुवण्णादो जलणादिसंजोगेण सुवण्णजलुप्पत्तिदंसणादो। किं च–कारणं व ण कज्जमुप्पज्जदि,

तिर्यग्लोक संज्ञा है, क्योंकि, इसके विना स्थिरशील तीन लोकोंका प्रक्रम बन नहीं सकता। समय, आवली, क्षण, लव और मुहूर्त आदिकको कालप्रक्रम कहा जाता है। भावप्रक्रम दो प्रकार का है— आगमभावप्रक्रम और नोआगमभावप्रक्रम। उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वारका ज्ञायक उपयोग युक्त जीव आगमभावप्रक्रम है। औदयिक आदिक पांच भावोंको नोआगमभावप्रक्रम कहा जाता है। यहां कर्मप्रक्रम प्रकृत है। 'प्रक्रामतीति प्रक्रमः' इस निरुक्तिके अनुसार कार्मण पुद्गलप्रचयको प्रक्रम कहा गया है।

शंका— यहां शंकाकार कहता है कि जिस प्रकार कुम्हार मिट्टीके एक पिण्डसे अनेक घटादिकोंको उत्पन्न करता है उसी प्रकार स्त्री, पुरुष, नपुंसक, स्थावर, त्रस अथवा जो कोई भी जीव एक प्रकारके कर्मको बांधकर उसे आठ भेद रूप करता है; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी उत्पत्तिका विरोध है?

समाधान— इस शंकाका निग्रह करते हैं। यदि अकर्मसे कर्मकी उत्पत्ति नहीं होती है तो फिर तुम्हारे द्वारा संकल्पित एक कर्मकी उत्पत्ति भी अकर्मसे नहीं हो सकती, क्योंकि, कर्मत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है। यदि कहा जाय कि कार्मण वर्गणासे जो एक उत्पन्न हुआ है वह यदि कर्म नहीं है, तो फिर उससे आठ कर्मोंकी उत्पत्ति नहीं हो सकती; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी उत्पत्तिका विरोध है। दूसरे, कारणानुसारी ही कार्य होना चाहिये, यह एकान्त नियम भी नहीं है; क्योंकि, मिट्टीके पिण्डसे मिट्टीके पिण्डको छोड़कर घट, घटी, शराव, अलिंजर और उष्ट्रिका आदिक पर्याय विशेषोंकी उत्पत्ति न हो सकनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। यदि कहो कि सुवर्णसे सुवर्णके घटकी ही उत्पत्ति देखी जानेसे कार्य कारणानुसारी ही होता है, सो ऐसा कहना भी योग्य नहीं है; क्योंकि, कठोर सुवर्णसे अग्नि आदिका संयोग होनेपर सुवर्णजलकी उत्पत्ति देखी

१ ताप्रतौ 'मुहुत्तादिकालपक्कमो' इति पाठः। २ काप्रतौ 'आगमणोआगमदो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'अक्कमादो' इति पाठः। ४ का-ता-मप्रतिषु 'कढिणादो' इति पाठः।

सव्वप्पणा कारणपरूवमावण्णस्स उप्पत्तिविरोहादो। जदि एयंतेण [ण] कारणाणुसारि चेव कज्जमुप्पज्जदि तो मुत्तादो पोग्गलदव्वादो अमुत्तस्स गयणुप्पत्ती होज्ज, णिच्चेयणादो पोग्गलदव्वादो सचेयणस्स जीवदव्वस्स वा उप्पत्ती पावेज्ज। ण च एवं, तहाणुवलंभादो। तम्हा[1] कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वमिदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे—होदु णाम केण वि सरूवेण कज्जस्स कारणाणुसारित्तं, ण सव्वप्पणा; उप्पाद-वय-ट्ठिदिलक्खणाणं जीव-पोग्गल-धम्माधम्म-कालागासदव्वाणं सगवइसेसियगुणाविणाभाविसयलगुणाणमपरिच्चाएण पज्जायंतरगमणदंसणादो। ण च कम्मइयवग्गणादो कम्माणि एयंतेण पुधभूदाणि, णिच्चे-यणत्तेण मुत्तभावेण पोग्गलत्तेण च ताणमेयत्तुवलंभादो। ण च एयंतेण अपुधभूदाणि चेव, णाणावरणादिपयडिभेदेण ट्ठिदिभेदेण अणुभागभेदेण च जीवपदेसेहि अण्णोण्णाणु-गयत्तेण च भेदुवलंभादो। तदो सिया कज्जं कारणाणुसारि सिया णाणुसारि त्ति सिद्धं।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्[2] ॥ १ ॥

जाती है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार कारण उत्पन्न नहीं होता है उसी प्रकार कार्य भी उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि, कार्य सर्वात्मना कारण रूप ही रहेगा इसलिए उसकी उत्पत्तिका विरोध है।

शंका—यदि सर्वथा कारणका अनुसरण करनेवाला ही कार्य नहीं होता है तो फिर मूर्त पुद्गल द्रव्यसे अमूर्त आकाशकी उत्पत्ति हो जानी चाहिये, इसी प्रकार अचेतन पुद्गल द्रव्यसे सचेतन जीव द्रव्यकी भी उत्पत्ति पायी जानी चाहिये। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता। इसीलिये कार्य कारणानुसारी ही होना चाहिये ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं। किसी विशेष स्वरूपसे कार्य कारणा-नुसारी भले ही हो, परन्तु वह सर्वात्म स्वरूपसे वैसा सम्भव नहीं है; क्योंकि, उत्पाद व्यय व ध्रौव्य लक्षणवाले जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्य अपने विशेष गुणोंके अविनाभावी समस्त गुणोंका परित्याग न करके अन्य पर्यायको प्राप्त होते हुए देखे जाते हैं। दूसरे, कर्म कार्मण वर्गणासे सर्वथा भिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, उनमें अचेतनत्व, मूर्तत्व और पौद्गलिकत्व स्वरूपसे कार्मण वर्गणाके साथ समानता पायी जाती है। इसी प्रकार वे उससे सर्वथा अभिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि रूप प्रकृतिभेद, स्थितिभेद व अनुभाग-भेदसे तथा जीवप्रदेशोंके साथ परस्पर अनुगत स्वरूपसे उनमें कार्मण वर्गणासे भेद पाया जाता है। इसलिये कार्य कथंचित् कारणानुसारी है और कथंचित् वह तदनुसारी नहीं भी है, यह सिद्ध है।

शंका—चूंकि असत् कार्य किया नहीं जा सकता है, उपादानोंके साथ कार्यका सम्बन्ध रहता है, किसी एक कारणसे सभी कार्योंकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, समर्थ कारणके द्वारा शक्य कार्य ही किया जाता है, तथा कार्य कारणस्वरूप ही है— उससे भिन्न सम्भव नहीं है; अतएव इन हेतुओंके द्वारा कारणव्यापारसे पूर्व भी कार्य सत् ही है, यह सिद्ध है ॥१॥

---

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः। २ सांख्यकारिका ९.

इदि के वि भणंति। एदं पि ण जुज्जदे। कुदो? एयंतेण संते कत्तारवावारस्स विहलत्तप्पसंगादो, उवायाणग्गहणाणुववत्तीदो, सव्वहा संतस्स संभवविरोहादो, सव्वहा

विशेषार्थ— सांख्यमतमें प्रधानकी सिद्धिमें उपयोगी होनेसे सत्कार्यवादको स्वीकार किया गया है। कार्यको सत् सिद्ध करनेके लिये उपर्युक्त कारिकामें निम्न हेतु दिये गये हैं—(१) यदि कारणव्यापारके पूर्वमें कार्यको असत् स्वीकार किया जाय तो उसका उत्पन्न होना शक्य नहीं है, जैसे खरविषाण। अत एव कारणव्यापारके पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये। कारणके द्वारा केवल उसकी अभिव्यक्ति की जाती है जो उचित ही है। जैसे तिलोंमें तैल जब पहिलेसे ही सत् है तभी वह कोल्हू आदिके द्वारा निकाला जा सकता है, बालुकामेंसे तैलका निकाला जाना किसी प्रकार भी शक्य नहीं है। (२) दूसरा हेतु 'उपादानग्रहण' दिया गया है— उपादानग्रहणका अर्थ है कारणोंसे कार्यका सम्बन्ध। अर्थात् कारण कार्यसे सम्बद्ध हो करके ही उसका उत्पादक हो सकता है, न कि असम्बद्ध रह कर। और वह सम्बन्ध चूंकि असत् कार्यके साथ सम्भव नहीं है, अतएव कारणव्यापारसे पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये। (३) यदि कहा जाय कि कारण असम्बद्ध ही कायको उत्पन्न कर सकते हैं, अतः इसके लिये कार्यको सत् मानना आवश्यक नहीं है; सो यह कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, वैसा माननेपर जिस प्रकार मिट्टीके द्वारा अपनेसे असम्बद्ध घट कार्य किया जाता है उसी प्रकार असम्बद्धत्वकी समानता होनेसे घटके समान पट आदिक कार्य भी उसके द्वारा उत्पन्न किये जा सकते हैं। इस प्रकार एक ही किसी कारणसे सब कार्योंके उत्पन्न होनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। परन्तु ऐसा चूंकि सम्भव नहीं है. अतएव यह स्वीकार करना चाहिये कि सम्बद्ध कारण सम्बद्ध कार्यको ही उत्पन्न करता है, न कि असम्बद्धको। इस प्रकार यह तीसरा हेतु देकर सत्कार्य सिद्ध किया गया है। (४) यहां शंका की जा सकती है कि असम्बद्ध रहकर भी वही कार्य उत्पन्न किया जा सकता है जिसके उत्पन्न करनेमें कारण समर्थ है। इसीलिये सर्वसम्भवका प्रसंग देना उचित नहीं है। इसके उत्तरमें 'शक्तस्य शक्यकरणात्' यह चतुर्थ हेतु दिया गया है। उसका अभिप्राय है कि शक्त कारण शक्य कार्यको ही करता है। यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि कारणमें रहनेवाली वह कार्योत्पादनरूप शक्ति क्या समस्त कार्यविषयक है या शक्य कार्यविषयक ही है? यदि उक्त शक्ति समस्त कार्यविषयक स्वीकार की जाती है तो सबसे सभीके उत्पन्न होनेका जो प्रसङ्ग दिया गया है वह तदवस्थ ही रहेगा। इसलिये यदि उक्त शक्तिको शक्य कार्यविषयक ही स्वीकार किया जाय तो फिर स्वयमेव सत् कार्य सिद्ध हो जाता है, क्योंकि अविद्यमान शक्य कार्यमें तद्विषयक शक्तिकी सम्भावना ही नहीं रहती। अतएव कार्य सत् ही है। (५) सत् कार्यको सिद्ध करनेके लिये अन्तिम हेतु 'कारणभाव' दिया गया है। उसका अभिप्राय यह है कि कार्य चूंकि कारणात्मक है, अतएव जब कारण सत् है तो उससे अभिन्न कार्य कैसे असत् हो सकता है? नहीं हो सकता। अतः कार्य कारणव्यापारके पूर्व भी सत् ही रहता है। यह सांख्योंका अभिमत है। आगे वीरसेन स्वामी स्वयं इस अभिप्रायका निरास करनेवाले हैं।

समाधान—इस प्रकार किन्हीं कपिल आदिका कहना है जो योग्य नहीं है। कारण कि कार्यको सर्वथा सत् माननेपर कर्ताके व्यापारके निष्फल होनेका प्रसंग आता है। इसी प्रकार सर्वथा कार्यके सत् होनेपर उपादानका ग्रहण भी नहीं बनता, सर्वथा सत् कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है,

संते कज्ज-कारणभावाणुववत्तीदो। किं च—विप्पडिसेहादो ण संतस्स उप्पत्ती। जदि अत्थि, कधं तस्सुप्पत्ती? अह उप्पज्जइ, कधं तस्स अत्थित्तमिदि?

किं च– णिच्चपक्खे ण कारणं कज्जं वा अत्थि, णिव्वियप्पभावेण पागभाव-पद्धंसाभावविरहिए तदणुववत्तीदो। आविब्भावो उप्पादो, तिरोभावो विणासो त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, णिच्चस्स अत्थस्स दोण्णं मज्झे एगम्हि चेव भावे अवट्ठियस्स अणाहेआदिसयत्तेण अवत्थंतरसंकंतिवज्जियस्स दुब्भावविरोहादो। वुत्तं च—

नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि विक्रिया नोपपद्यते।
प्रागेव कारकाभावः क्व प्रमाणं क्व तत्फलं[1] ॥ २ ॥

कार्यके सर्वथा सत् होनेपर कार्य-कारणभाव ही घटित नहीं होता। इसके अतिरिक्त असंगत होनेसे सत् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है; क्योंकि, यदि कार्य कारणव्यापारके पूर्वमें भी विद्यमान है तो फिर उसकी उत्पत्ति कैसे हो सकती है? और यदि वह कारणव्यापारसे उत्पन्न होता है तो फिर उसका पूर्वमें विद्यमान रहना कैसे संगत कहा जावेगा?

और भी— नित्य पक्षमें कारण और कार्यका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, उस अवस्थामें निर्विकल्प होनेके कारण प्रागभाव और प्रध्वंसाभावसे रहित अर्थमें कार्य-कारणभाव बन नहीं सकता। यदि कहा जाय कि आविर्भावका नाम उत्पाद और तिरोभावका नाम विनाश है, तो यह भी कहना योग्य नहीं है; क्योंकि, इन दोनोंमेंसे किसी एक ही अवस्थामें रहनेवाले नित्य पदार्थका अनाधेयातिशय (विशेषता रहित) होनेसे चूंकि अवस्थान्तरमें संक्रमण सम्भव नहीं है, अतएव उसमें आविर्भाव एवं तिरोभाव रूप दो अवस्थाओंके रहनेका विरोध है, अर्थात् कूटस्थ नित्य होनेसे यदि वह तिरोभूत है तो तिरोभूत ही सदा रहेगा, और यदि आविर्भूत है तो सदा आविर्भूत ही रहेगा। कहा भी है—

नित्य एकान्त पक्षमें भी पूर्व अवस्था (मृत्पिण्डादि) के परित्यागरूप और उत्तर अवस्था (घटादि) के ग्रहण रूप विक्रिया घटित नहीं होती, अतः कार्योत्पत्तिके पूर्वमें ही कर्त्ता आदि कारकोंका अभाव रहेगा। और जब कारक ही न रहेंगे तब भला फिर प्रमाण (प्रमृति क्रियाका अतिशय साधक) और उसके फल (अज्ञाननिवृत्ति) की सम्भावना कैसे की जा सकती है? अर्थात् उनका भी अभाव ही रहेगा ॥२॥

विशेषार्थ—सांख्य मतमें चेतन पुरुषको कूटस्थ नित्य स्वीकार किया गया है। इस मतका निराकरण करनेके लिये उक्त कारिकाका अवतार हुआ है। उसका अभिप्राय यह है कि यदि पुरुषको सर्वथा नित्य माना जाता है तो वह विकार रहित होनेसे चेतना रूप क्रियाका कर्त्ता भी नहीं हो सकता, क्योंकि, उस अवस्थामें कारक (कुम्भकारादि) अथवा ज्ञापक (प्रमाता) हेतुओंका व्यापार असम्भव है। अथवा यदि कारक व ज्ञापक हेतुओंका व्यापार स्वीकार किया जाता है तो फिर पूर्व स्वभाव (अकारक अथवा अप्रमाता) का परित्याग करके उत्तर स्वभाव (उत्पत्ति अथवा चेतना क्रियाका कर्त्तृत्व) को ग्रहण करनेके कारण उसकी कूटस्थताका विघात होता है। अतएव कूटस्थ नित्यताका पक्ष बनता नहीं है।

---

१ आ. मी. ३७.

यदि सत्सर्वथा कार्यं पुंवन्नोत्पत्तुमर्हति ।
परिणामप्रक्लृप्तिश्च नित्यत्वैकान्तबाधिनी[1] ॥ ३ ॥
पुण्यपापक्रिया न स्यात् प्रेत्यभावः फलं[2] कुतः ।
बन्धमोक्षौ च तेषां न येषां त्वं नासि नायकः[3] ॥४॥

सदकरणात्, उपादानग्रहणात्, सर्वसम्भवाभावात्, शक्तस्य शक्यकरणात्, कारणभावाच्च असंतं चेव कज्जमुप्पज्जदि त्ति के वि भणंति। तण्ण जुज्जदे, विसेससरूवेणेव सामण्णसरूवेण वि असंते बुद्धिविसयमइक्कंते वयणगोयरमुल्लंघिय ट्ठिदकारणकलाववावारविरोहादो। अविरोहे वा, मट्टियपिंडादो घडो व्व गद्दहसिंगं पि उप्पज्जेज्ज, असंतं पडि

यदि कार्य सर्वथा सत् है तो वह पुरुषके समान उत्पन्न नहीं हो सकता। और परिणामकी कल्पना नित्यत्वरूप एकान्त पक्षकी विघातक है ॥३॥

विशेषार्थ— अभिप्राय यह है कि यदि कार्यको सर्वथा सत् ही स्वीकार किया जाता है तो जैसे सांख्य मतमें पुरुषकी उत्पत्ति नहीं मानी गई है वैसे ही पुरुषके समान सर्वथा सत् होनेसे प्रकृतिसे महान व अहंकारादिकी भी अनुत्पत्तिका अनिवार्य प्रसंग आता है, जो उन्हें अभीष्ट नहीं है। इस प्रसंगको टालनेके लिये यदि कहा जाय कि यथार्थमें न कोई कार्य उत्पन्न होता है और न नष्ट ही होता है। किन्तु जिस प्रकार कछवा अपने विद्यमान अंगोंको कभी बाहिर निकलता है और कभी भीतर छुपा लेता है, इसी प्रकार पूर्वमें विद्यमान महान् व अहंकारादिका प्रधानसे आविर्भाव मात्र होता है। इस प्रकारके आविर्भाव व तिरोभावरूप परिणामको छोड़कर कार्य-कारणभाव वास्तवमें है ही नहीं। सो इस कथनको असंगत बतलाते हुए उत्तरमें यहां कहा गया है कि पूर्वस्वभाव (तिरोभूत अवस्था) के नाश और उत्तरस्वभाव (आविर्भूत अवस्था) के उत्पन्न होनेका नाम ही तो परिणाम है। फिर भला ऐसे परिणामकी कल्पना करनेपर नित्यत्वरूप एकान्त पक्षमें कैसे बाधा न उपस्थित होगी? अवश्य होगी।

इसके अतिरिक्त सर्वथा नित्यत्वकी प्रतिज्ञामें मन, वचन व कायकी शुभ प्रवृत्तिरूप पुण्य क्रिया तथा उनकी अशुभ प्रवृत्तिरूप पाप क्रिया भी नहीं बन सकती। अत एव पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तरप्राप्तिरूप प्रेत्यभाव तथा सुख व दुखके अनुभवनरूप पुण्य एवं पापका फल भी कहांसे होगा? नहीं हो सकेगा। इसलिये हे भगवन्! जिन एकान्तवादियोंके आप नेता नहीं हैं उनके मतमें बन्ध व मोक्षकी व्यवस्था भी नहीं बन सकती ॥ ४ ॥

अब सत् कार्यके किये न जा सकनेसे उपादनोंका ग्रहण होनेसे, सबसे सबकी उत्पत्तिका अभाव होनेसे, शक्त कारण द्वारा शक्य कार्यके ही किये जानेसे तथा कारणभाव होनेसे असत् ही कार्य उत्पन्न होता है; ऐसा कणाद (वैशेषिकदर्शनके कर्ता) और गौतम (न्यायदर्शनके कर्ता) आदि कितने ही ऋषि कहते हैं वह भी योग्य नहीं है, क्योंकि, कार्य जैसे विशेष (घटादि आकार) स्वरूपसे असत् है वैसे ही यदि उसे सामान्य (मृत्तिका आदि) स्वरूपसे भी असत् स्वीकार किया जाय तो ऐसा कार्य न तो बुद्धिका ही विषय हो सकता है और न वचनका भी। अत एव बुद्धि व वचनके अविषयतभूत ऐसे कार्यके लिये स्थित कारणकलापके व्यापारका विरोध आता है। और यदि विरोध न माना जाय तो फिर जैसे मिट्टीके पिण्डसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे गधेका सींग भी उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी

१ आ. मी. ३९. २ काप्रतौ 'प्रेत्यभावफलं' इति पाठः। ३ आ. मी. ४०.

विसेसाभावादो। किं च- जदि पिंडे असंतो घडो समुप्पज्जइ तो वालुवादो वि तदुप्पत्ती होदु, असंतं पडि विसेसाभावादो। किं च—इदं चेव एदस्स कारणं, ण अण्णमिदि एदं पि ण जुज्जदे; णियामयाभावादो। भावे वा, कारणे कज्जस्स अत्थित्तं मोत्तूण कोवरो णियामयो होज्ज? ण सहावो णियामओ, कज्जुप्पत्तीए पुव्वं कज्जस्सहावस्स[1] अभावादो। ण चासंतो[2] असंतस्स णियामयो होदि, अइप्पसंगादो। किं च—पिंडे घडो व्व तिहुवणमुप्पज्जउ, असंतं पडि भेदाभावादो। ण च एवं, परिमियकज्जुप्पत्तिदंसणादो। किं च—समत्थो वि कुंभारो मट्टियपिंडे घडं व पडं किण्ण उप्पादेदि, विसेसाभावादो? विसेसभावे वा सगसत्तं मोत्तूण कोवरो विसेसो होज्ज? वुत्तं च—

यद्यसत्सर्वथा कार्यं तन्माजनि खपुष्पवत्।
मोपादाननियामो भून्माश्वासः कार्यजन्मनि[3] ॥ ५ ॥

अपेक्षा दोनोंमें कोई विशेपता नहीं है। दूसरे, यदि मृत्पिण्डमें अविद्यमान घट उससे उत्पन्न होता है तो वह मृत्पिण्डके समान वालुसे भी क्यों न उत्पन्न हो जावे? अवश्य ही उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा कोई विशेपता नहीं है। [अर्थात् जैसे वह मृत्पिण्डमें अविद्यमान है वैसे ही वह वालुमें भी अविद्यमान है। फिर क्या कारण है कि वह मृत्पिण्डसे तो उत्पन्न होता है और वालुसे नहीं उत्पन्न होता? अत एव मानना चाहिये कि घट मृत्पिण्डमें व्यक्तिरूपसे अविद्यमान होकर भी शक्तिरूपसे विद्यमान है, किन्तु वालुमें वह शक्तिरूपसे भी विद्यमान नहीं है; अतएव वह जैसे मृत्पिण्डसे उत्पन्न होता है वैसे वालुसे उत्पन्न नहीं हो सकता।]

और भी—कार्यको सर्वथा असत् माननेपर यही इसका कारण है, अन्य नहीं है; यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, इसका कोई नियामक नहीं है। और यदि कोई नियामक है भी, तो वह कारणमें कार्यके अस्तित्वको छोड़कर दूसरा भला कौनसा नियामक हो सकता है? यदि कहो कि स्वभाव नियामक है तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, कार्योत्पत्तिके पूर्वमें कार्यके स्वभावका अभाव है। और एक असत् कुछ दूसरे असत्का नियामक हो नहीं सकता, क्योंकि, वैसा होनेपर अतिप्रसंग आता है। इसके अतिरिक्त—मृत्पिण्डमें जैसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे तीनों लोक भी उत्पन्न हो जाने चाहिये; क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद भी नहीं है। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, परमित कार्यकी उत्पत्ति देखी जाती है। इसके सिवाय समर्थ भी कुम्हार मृत्पिडमें जैसे घटको उत्पन्न करता है वैसे पटको क्यों नहीं उत्पन्न करता, क्योंकि, किसी भी विशेपताका यहां अभाव है। अथवा यदि कोई विशेपता है, तो वह अपने अस्तित्वको छोड़कर और दूसरी क्या हो सकती है? कहा भी है—

यदि कार्य सर्वथा (पर्यायके समान द्रव्यसे भी) असत् है तो वह आकाशकुसुमके समान उत्पन्न ही नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त वैसी अवस्थामें घटका उपादान मिट्टी है, तन्तु नहीं है, इस प्रकारका उपादाननियम भी नहीं बन सकेगा। इसीलिये अमुक कार्य अमुक कारणसे उत्पन्न होता है, अमुकसे नहीं; इस प्रकारका कोई भी आश्वासन कार्यकी उत्पत्तिमें नहीं हो सकता ॥ ५ ॥

१ ताप्रतौ 'कज्जस्स सहावस्स' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'णवासंतो' इति पाठः।
३ आ. मी. ४२.

किं च– ण णिच्चादो कारणकलावादो असंतं कज्जमुप्पज्जइ, णिच्चस्स अणाहेयादिसयस्स पमाणगोयरमइक्कंतस्स अणहिलप्पस्स असंतस्स कारणत्तविरोहादो। ण कमेण कुणदि, णिच्चम्मि कमाभावादो। भावे वा, अणिच्चं होज्ज; अवत्थादो अवत्थंतरं गयस्स[1] णिच्चत्तविरोहादो। ण च अक्कमेण कुणदि, एगसमए समुप्पाइदसयलकज्जस्स विदियसमए असंतप्पसंगादो। ण च अकज्जं कारणमत्थित्तमल्लियइ, पमाणविसयमइक्कंतस्स अत्थित्तविरोहादो।

ण च अणिच्चादो कारणादो असंतं कज्जमुप्पज्जदि, अट्ठियस्स कारणत्तविरोहादो। ण ताव उप्पज्जमाणमुप्पादेदि, एगसमए चेव सव्वकज्जाणमुप्पत्तिप्पसंगादो। ण च एवं, विदिसमए सव्वकज्जस्स अणुवलद्धिप्पसंगादो। ण च उप्पण्णमुप्पादेदि, अणवट्ठियस्स दुसमयअवट्ठाणविरोहादो। ण च णट्ठं कज्जमुप्पादेदि, अभावस्स सयलसत्तिविरहियस्स

और भी—नित्य कारणकलापसे तो असत् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, सर्वथा नित्य वस्तु अनाधेयातिशय होनेसे न प्रमाणकी विषय हो सकती है और न वचनकी भी विषय हो सकती है। इस प्रकार असत् होनेसे [गधेके सींगके समान] उसके कारणताका विरोध है। [इतनेपर भी यदि उसे कारण स्वीकार किया जाता है तो यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि विवक्षित कारण क्या क्रमसे कार्यको करता है या अक्रमसे ?] क्रमसे तो वह कार्यको कर नहीं सकता, क्योंकि, नित्यमें क्रमकी सम्भावना ही नहीं है। अथवा यदि उसमें क्रमकी सम्भावना है तो फिर वह अनित्यताको प्राप्त होना चाहिये, क्योंकि, एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होनेपर नित्यताका विरोध है। अक्रमसे वह कार्यको करता है, यह द्वितीय पक्ष भी योग्य नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक समयमें समस्त कार्यको उत्पन्न करके द्वितीय समयमें उसके असत्त्वका प्रसंग आता है। इस प्रकारसे कार्यव्यापारसे रहित कारण अस्तित्वको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, प्रमाण (अनुमानादि) का अविषय होनेसे उसके अस्तित्वका विरोध है।

अनित्य कारणसे असत् कार्य उत्पन्न होता है, यह बौद्धाभिमत भी ठीक नहीं है; क्योंकि, स्थिति रहित वस्तुके कारणताका विरोध है [यदि स्थितिसे रहित अर्थ भी कारण हो सकता है तो वह क्या उत्पद्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है, उत्पन्न होकर कार्यको उत्पन्न करता है, नष्ट होकर कार्यको उत्पन्न करता है, अथवा विनश्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है ?] उत्पद्यमान होता हुआ तो वह कार्यको उत्पन्न कर नहीं सकता, क्योंकि, इस प्रकारसे एक समयमें ही समस्त कार्योंके उत्पन्न होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर द्वितीय समयमें समस्त कार्योंकी अनुपलब्धिका प्रसंग प्राप्त होता है। उत्पन्न होकर वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, अवस्थानसे रहित उसका दो समयोंमें रहनेका विरोध है। नष्ट हो करके वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, नष्ट होनेपर अभाव स्वरूपको प्राप्त हुए उसके समस्त शक्तियोंसे रहित होनेके कारण कार्यको उत्पन्न करनेका विरोध

---

१ काप्रतौ 'सयस्स' इति पाठः।

कज्जुप्पायणत्तविरोहादो। अविरोहे वा, ससर्सिगादो वि ससी समुप्पज्जेज्ज, अभावं पडि विसेसाभावादो। ण च विणस्संतमुप्पादेदि, विणट्ठाविणट्ठभावे मोत्तूण विणस्संतभावस्स तइज्जस्स अणुवलंभादो। तदो णासंतं पि कज्जमुप्पज्जदि। णोभयसरूवं कज्जमुप्पज्जइ, विरोहादो उभयपक्खदोसप्पसंगादो वा। णाणुभयपक्खो वि, णीरूवस्स उप्पत्तिविरोहादो। ण च कज्जाभावो, उवलब्भमाणस्स अभावविरोहादो। तदो सिया संतं, सिया असंतं, सिया अवत्तव्वं, सिया संतं च असंतं च, सिया संतं च अवत्तव्वं च, सिया असंतं च अवत्तव्वं च, सिया संतं च असंतं च अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जदि त्ति णिच्छओ कायव्वो; अण्णहा पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो।

एदेसिं भंगाणमत्थो वुच्चदे। तं जहा—कज्जं सिया संतमुप्पज्जदि, पोग्गलभावेण मट्टियादिवंजणपज्जाएहि य संतस्स दव्वस्स घडपज्जाएण उप्पत्तिदंसणादो। सिया असंतमुप्पज्जइ, पिंडागारेण णट्ठस्स पोग्गलदव्वस्स घडभावेण उप्पत्तिदंसणादो। सिया अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जइ, पोग्गलदव्वस्स अत्थपज्जाएहि वयणविसयमइक्कंतस्स घडभावेणुप्पत्तिदंसणादो, विहि-पडिसेहधम्माणं सगसरूवापरिचाएण अण्णोण्णाणुगयत्तादो जच्चंतर-

---

है। और यदि इस विरोधको नहीं माना जाता है, तो फिर खरगोशके सींगसे भी चन्द्रमा उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, अभावकी अपेक्षा उनमें कोई विशेषता नहीं है। विनश्यमान होता हुआ वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह पक्ष भी असंगत है; क्योंकि, विनष्ट और अविनष्ट पदार्थोंको छोड़कर तीसरा कोई विनश्यमान पदार्थ पाया नहीं जाता। इस कारण सत् कार्यके समान असत् कार्य भी उत्पन्न नहीं हो सकता है। यदि कहा जाय कि उभय (सत्-असत्) स्वरूप कार्य उत्पन्न होता है, सो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, उसमें विरोध आता है। अथवा, उभय पक्षमें दिये गये दोषोंका प्रसंग अनिवार्य होगा। अनुभय (न सत् न असत्) पक्ष भी नहीं बनता, क्योंकि, वैसी अवस्थामें निःस्वरूप होनेसे उसकी उत्पत्तिका विरोध है। यदि कार्यका ही अभाव स्वीकार किया जाय तो यह भी अनुचित होगा, क्योंकि, जो प्रत्यक्षादिसे उपलभ्यमान है उसका अभाव माननेमें विरोध आता है। इस कारण कथंचित् सत्, कथंचित् असत्, कथंचित् अवक्तव्य, कथंचित् सत् व असत्, कथंचित् सत् व अवक्तव्य, कथंचित् असत् व अवक्तव्य, तथा कथंचित् सत् व असत् और अवक्तव्य कार्य उत्पन्न होता है ऐसा निश्चय करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना एकान्त पक्षोंमें दिये गये पूर्वोक्त दोषोंका प्रसंग अनिवार्य है।

इन भंगोंका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है—कार्य कथंचित् सत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पुद्गल स्वरूपसे और मृत्तिका आदि व्यञ्जन पर्यायरूपसे भी सत् द्रव्यकी घट पर्याय स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् वह असत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पिण्डरूप आकारसे नष्ट हुए पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् अवक्तव्य कार्य उत्पन्न होता है, क्योंकि, अर्थ पर्यायोंकी अपेक्षा वचनके अविषयभूत पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है, अथवा अपने स्वरूपको न छोड़कर परस्परमें अनुगत होनेसे जात्यन्तर भावको प्राप्त हुए विधि-प्रतिषेध धर्मोंको कहनेवाले शब्दका अभाव है, इसलिये भी कार्य अवक्तव्य उत्पन्न होता है।

मावण्णाणं पदुप्पायणसद्भावादो वा। कुदो जच्चंतरत्तं? संजोग-समवाएहि विणा अण्णोण्णाणुगयत्तादो। को संजोगो? पुधप्पसिद्धाण मेलणं संजोगो। को समवाओ? एगत्तेण अजुवसिद्धाणं मेलणं। ण विहि-पडिसेहाणं[1] संजोगो, पुधप्पसिद्धीए अभावादो। ण समवाओ वि, सामण्णसरूवेण सव्वकालमण्णोण्णाजहावुत्तीए ट्ठिदाण संबंधाणुववत्तीदो। ण च एयंतेण दुविहसंबंधाभावो, विहि[2]-प्पडिसेहविसेसं पडुच्च तदुभयसंबंधुवलंभादो। ण च विहि-प्पडिसेहाणं पुधभावो णत्थि, भिण्णपच्चयगेज्झत्तेण पुधभूददव्वावट्ठाणेण च तदुवलभादो। तदो सिद्धं जच्चंतरत्तं।

सिया संतमसंतं च उप्पज्जदि णेगमणयावलंबणेण। को णेगमो? यदस्ति न तद्द्वयमतिलंघ्य वर्तत इति नैकगमो नैगमः। सिया संतं च अवत्तव्वं च अवत्तव्वेण सह विहिधम्मप्पणाए। एवं णेगमणयमस्सियूण ट्ठिदसेसभंगाणं पि अत्थो वत्तव्वो। ण च

शंका—जात्यन्तरता क्यों है?

समाधान—कारण कि वे विधि-प्रतिपेध धर्म संयोग व समवायके विना परस्परमें अनुगत हैं।

शंका—संयोग किसे कहते हैं?

समाधान—पृथक् प्रसिद्ध पदार्थोंके मेलको संयोग कहते हैं।

शंका—समवाय किसे कहते हैं?

समाधान—अयुतसिद्ध पदार्थोंका एक रूपसे मिलनेका नाम समवाय है।

विधि और प्रतिपेध धर्मोंका संयोग तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें पृथक्सिद्धत्वका अभाव है। समवायकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, सामान्य स्वरूपसे सब कालमें परस्पर अजहत् वृत्तिसे स्थित उक्त दोनों धर्मोंका सम्बन्ध नहीं बन सकता। और एकान्ततः इन दो प्रकारके सम्बन्धोंका अभाव हो, ऐसा भी नहीं है; क्योंकि, विधि-प्रतिपेधविशेषकी अपेक्षा वे दोनों सम्बन्ध पाये जाते हैं। विधि व प्रतिपेध धर्मोंके भिन्नता नहीं हो, यह भी बात नहीं है; क्योंकि, भिन्न प्रत्यय द्वारा ग्राह्य होनेसे तथा पृथग्भूत द्रव्योंमें रहनेसे उनमें भिन्नता पायी जाती है। इसलिये उनमें जात्यन्तरत्व सिद्ध है।

नैगम नयकी अपेक्षा कथंचित् सत् व असत् कार्य उत्पन्न होता है।

शंका—नैगम नय किसे कहते हैं?

समाधान—'जो विद्यमान है वह भेद व अभेद इन दोनोंका उल्लंघन करके नहीं रहता' इस कारण जो उन दोनोंमेंसे किसी एकको विषय न करके विवक्षाभेदसे दोनोंको ही विषय करता है वह नैगम नय कहा जाता है।

अवक्तव्यके साथ विधि धर्मकी प्रधानतासे कार्य कथंचित् सत् व अवक्तव्य उत्पन्न होता है। इसी प्रकार नैगम नयका आश्रय करके स्थित शेष भंगोंके भी अर्थका कथन करना चाहिये।

---

१ ताप्रतौ 'विहिपडिसेहणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'विदिह' इति पाठः।

एत्थ पुव्वुत्तदोसा संभवंति, एयंतविसयाणं दोसाणमणेयंते संभवविरोहादो । को अणेयंतो णाम ? जच्चंतरत्तं । उप्पत्ती णाम ण परदो, अणवत्थापसंगादो । ण सदो, असंतस्स कारणत्ताणुववत्तीदो । दीसइ च सव्वत्थाणं सत्तं, तदो णिच्चा सव्वत्था त्ति णत्थि कज्जुप्पत्ती ? ण एस दोसो, पमाणगोयरमइक्कंतस्स णिच्चत्थस्स अत्थित्तविरोहादो । णिच्चत्थो पमाणविसयमइक्कंतो, अक्कमेण कमेण वा तत्थ कम्म-कत्तारपज्जायाणमभावादो, भावे च अणिच्चत्तप्पसंगादो । ण च कज्जं परदो चेव उप्पज्जदि सदो वा, दव्व-खेत्त-काल-भावे पडुच्च उप्पज्जमाणकज्जुवलंभादो । ण च पमाणेण विसईकयत्थो पमाणपडिकूलदाए[1] अवगयअप्पमाणत्तेहि वियप्पाभासेहि अण्णहा काउं सक्किज्जदि, अव्ववत्थापसंगादो ।

वत्थुविणासो ण परदो होदि, पसज्ज-पज्जुदासलक्खणअभावाणमण्णेहिंतो उप्पत्ति-

---

यहां पूर्वोक्त (सत् व असत् एकान्त पक्षमें दिये गये) दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, एकान्तको विषय करनेवाले दोषोंकी अनेकान्तके विषयमें सम्भावना नहीं है ।

शंका—अनेकान्त किसे कहते हैं ।

समाधान—जात्यन्तरभावको अनेकान्त कहते हैं ।

शंका—उत्पत्ति किसी दूसरेसे नहीं हो सकती, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है । [अर्थात् विवक्षित घटादि कार्योंकी उत्पत्ति जिस किसी दूसरेसे होती है, वह भी अन्य किसी दूसरेसे ही उत्पन्न होगा । इस प्रकार उत्तरोत्तर कल्पना करनेपर व्यवस्था नहीं बनेगी, इसलिये अनवस्था दोप सम्भव है ।] यदि कहा जाय कि कार्य किसी दूसरेसे उत्पन्न न होकर स्वतः उत्पन्न होता है, तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, असत् पदार्थके कारणता वन नहीं सकती । और चूंकि सब पदार्थोंका सत्त्व देखनेमें आता है, इसीलिये समस्त पदार्थोंके नित्य होनेसे कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोप नहीं है, क्योंकि, नित्य पदार्थ चूंकि प्रमाणगोचर नहीं है, अर्थात् प्रत्यक्ष व अनुमानादि किसी भी प्रमाणसे सिद्ध नहीं है, अत एव उसके अस्तित्वका विरोध है । नित्य अर्थ प्रमाणका विषय नहीं है, क्योंकि, युगपत् अथवा क्रमसे उसमें कर्म व कर्ता रूप पर्यायोंका अभाव है । और यदि उनका सद्भाव है तो फिर उसके अनित्य होनेका प्रसंग आता है । इसके अतिरिक्त कार्य परसे ही उत्पन्न होता हो अथवा स्वतः ही उत्पन्न होता हो, यह वात भी नहीं है; क्योंकि, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावका आश्रय करके उत्पन्न होनेवाला कार्य पाया जाता है । दूसरे, प्रमाणके प्रतिकूल होनेसे जिनकी अप्रमाणता ज्ञात हो चुकी है ऐसे विकल्पाभासों (परतः उत्पन्न है या स्वतः उत्पन्न है, इत्यादि) के द्वारा प्रमाणसे विषय किया गया पदार्थ अन्यथा करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारसे अव्यवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका—वस्तुका विनाश परके निमित्तसे नहीं होता है, क्योंकि, प्रसज्य व पर्युदासरूप

---

१ काप्रतौ 'पडिकुलदाए' इति पाठः ।

विरोहादो । तदो णिरहेउओ विणासो । वुत्तं च भास्से[1]—

जातिरेव हि भावानां निरोधे हेतुरिष्यते ।
यो जातश्च न च ध्वस्तो नश्येत् पश्चात् स केन वः[2] ॥६॥

खणक्खइणो च ण कज्जमुप्पज्जदि, उप्पण्णुप्पज्जमाणेहिंतो कज्जुप्पत्तिविरोहादो । तदो ण कज्जमुप्पज्जदि त्ति ? ण, उप्पत्तीए विणा खणखइत्तविरोहादो । ण चाणुप्पण्णं विणस्सदि, गद्दहसिंगस्स वि विणासप्पसंगादो[3] । ण च खणक्खइवत्थू अत्थि, पमाण-पमेयाणमभावप्पसंगादो । वुत्तं च—

क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि प्रेत्यभावाद्यसम्भवः ।
प्रत्यभिज्ञाद्यभावान्न कार्यारम्भः कुतः फलम्[4] ॥ ७ ॥

तदो उप्पाद-ट्ठिदि-भंगलक्खणं सव्वं दव्वं ति इच्छेयव्वं । उत्तं च—

अभावोंका दूसरोंसे उत्पन्न होनेका विरोध है । इसीलिये विनाश निर्हेतुक है । कहा भी भाष्य में—

पदार्थोंके विनाशमें जाति (उत्पत्ति) को ही कारण माना जाता है । परन्तु जो उत्पन्न होकर भी नष्ट नहीं होता है वह फिर पीछे आपके यहां किसके द्वारा नाशको प्राप्त होगा ? नहीं हो सकेगा ॥ ६ ॥

दूसरे, क्षणक्षयी कारणसे कार्य उत्पन्न भी नहीं हो सकता है; क्योंकि, उत्पन्न अथवा उत्पद्यमान कारणोंसे कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है । इस कारण कार्य उत्पन्न नहीं होता ।

समाधान—ऐसा जो बौद्धका कहना है वह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उत्पत्तिके विना क्षणक्षयित्वका विरोध है । पदार्थ उत्पन्न हुए विना नष्ट नहीं हो सकता; क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर गधेके सींगके भी विनाशका प्रसंग आता है । दूसरे क्षणक्षयी वस्तुका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर प्रमाण और प्रमेय दोनोंके अभावका प्रसंग आता है । कहा भी है—

क्षणिक एकान्त पक्षमें भी प्रत्यभिज्ञान आदिका अभाव होनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता, और जब कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता है तब उसके अभावमें भला पुण्य एवं पाप रूप फलकी सम्भावना कहांसे की जा सकती है ? तथा पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तर रूप प्रेत्यभाव एवं बन्ध-मोक्षादिका भी सद्भाव नहीं रह सकता ॥ ७ ॥

विशेषार्थ—सब पदार्थ क्षणक्षयी हैं, ऐसा एकान्त स्वीकार करनेपर स्मृति व प्रत्यभिज्ञान आदिकी सम्भावना नहीं की जा सकती है । कारण कि स्मृति पूर्वमें अनुभव किये गये पदार्थके विषयमें ही होती है । परन्तु जिसका वर्तमानमें अनुभव किया गया है वह तो उसी क्षणमें उत्पन्न होनेके साथ ही नष्ट हो चुका । इस प्रकार विषयका अभाव होनेसे स्मरण ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता । स्मरणके अभावमें प्रत्यभिज्ञान भी असम्भव है, क्योंकि, प्रत्यक्ष व स्मरणके

---

१ काप्रतौ 'भाष्ये', ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् । २ उद्धृतेयं कारिका कसायपाहुडे १, पृ०२२७. ३ काप्रतौ 'विणासपसंगादो वि' इति पाठः । ४ आ. मी. ४१.

घटमौलिसुवर्णार्थी नाशोत्पादस्थितिष्वयम् ।
शोक-प्रमोद-माध्यस्थ्यं जनो याति सहेतुकम्[1] ॥ ८ ॥
पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः ।
अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम्[2] ॥ ९ ॥

निमित्तसे 'यह वही देवदत्त है, गायके सदृश गवय होता है' इस प्रकार जो एकत्व व सादृश्य आदि विषयक ज्ञान उत्पन्न होता है उसे प्रत्यभिज्ञान कहा जाता है। पदार्थके सर्वथा क्षणिक होनेपर पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें रहनेवाले एकत्व आदि धर्मोंके असम्भव होनेसे उक्त लक्षणवाले प्रत्यभिज्ञानकी भी सम्भावना नहीं की जा सकती है। इस प्रकार स्मरण व प्रत्यभिज्ञान आदिके साथ ही पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें अवस्थित एक प्रमाता आत्माके भी न रह सकनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता। कार्यके अभावमें उसके फल स्वरूप पुण्य-पाप एवं बन्ध-मोक्ष आदि भी नहीं बन सकते। अतएव वह क्षणिक एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं है।

इसलिये सब द्रव्यको उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) व भंग (व्यय) स्वरूप स्वीकार करना चाहिये। कहा भी है—

घट, मुकुट और सुवर्णसामान्यका अभिलाषी यह मनुष्य क्रमशः घटके नाश, मुकुटके उत्पाद और सुवर्णसामान्यकी स्थितिमें शोक, प्रमोद एवं माध्यस्थ्य भावको प्राप्त होता है। यह सहेतुक है, अकारण नहीं है ॥ ८ ॥

विशेषार्थ—यहां वस्तुको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप सिद्ध करनेके लिये निम्न प्रकार लौकिक दृष्टान्त दिया गया है—कल्पना कीजिये कि तीन मनुष्य क्रमसे सुवर्णघट, सुवर्णका मुकुट एवं सुवर्णसामान्यकी अभिलापासे किसी विशेष दकानपर जाते हैं। इसी समय दूकानदारके द्वारा सुवर्णघटको नष्ट करके मुकुटका निर्माण करानेपर उनमेंसे सुवर्णघटका अभिलापी दुखी, मुकुटका अभिलाषी हर्षित और सुवर्णसामान्यका ग्राहक हर्ष-विषाद दोनोंसे ही रहित होकर मध्यस्थ रहता है। अब यदि कार्यका विनाश न होता तो घटके नष्ट होनेपर तदभिलापी व्यक्तिको दुखी न होना चाहिये था। इसी प्रकार यदि कार्यका उत्पाद न होता तो मुकुटाभिलाषी व्यक्तिका हर्षित होना असंगत था। निरन्वय विनाशके होनेपर (ध्रौव्यके अभावमें) सुवर्णसामान्यके ग्राहककी उदासीनता भी स्थिर नहीं रह सकती थी। परन्तु चूंकि व्यवहारमें वैसा देखा जाता है; अतएव द्रव्यको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप मानना ही चाहिये।

'मैं केवल दूधको ग्रहण करूंगा' ऐसा नियम लेनेवाला व्यक्ति दहीको नहीं खाता है, 'मैं केवल दही खाऊंगा' ऐसा नियम रखनेवाला व्यक्ति दूधको नहीं लेता है, तथा 'मैं गोरससे भिन्न पदार्थको ग्रहण करूंगा' ऐसा व्रत लेनेवाला व्यक्ति दूध व दही दोनोंको ही नहीं खाता है। इसीलिये वस्तुतत्त्व उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य इन तीनों स्वरूप है ॥ ९ ॥

विशेषार्थ—पर्याय स्वरूपसे होनेवाले उत्पाद व व्ययमें न सर्वथा भेद है और न सर्वथा अभेद ही है, किन्तु वे कथंचित् भेदाभेदको प्राप्त हैं। कारण कि दूधके अपने स्वरूपको छोड़कर दही रूपमें परिणत होनेपर भी यदि उनमें सर्वथा अभेद ही स्वीकार किया जाय तो दूधका

---

१ आ. मी. ५९. २ आ. मी. ६०.

न सामान्यात्मनोदेति न व्येति व्यक्तमन्वयात् ।
व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत्[1] ॥१०॥

सव्वं पि वत्थु विहि-पडिसेहप्पयं ति घेत्तव्वं, अण्णहा कज्ज-कारणभावविरोहादो। वुत्तं च—

भावैकान्ते पदार्थानामभावानामपह्नवात् ।
सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम्[2] ॥११॥

नियम करनेवालेके दहीका ग्रहण तथा दहीका नियम करनेवालेके दूधका ग्रहण करना अनुचित ठहरेगा। उसी प्रकार अन्वय प्रत्ययके विषयभूत गोरस सामान्यसे भी दूध व दही रूप विशेषोंको यदि सर्वथा भिन्न स्वीकार किया जाय तो गोरस-भिन्न भोजनका नियम करनेवालेके उन दोनोंका त्याग करना अयुक्तिसंगत होगा। परन्तु ऐसा है नहीं, अतएव सिद्ध है कि वस्तुतत्त्व अनेकान्तसे अनुगत होकर उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य स्वरूप ही है।

कोई भी वस्तु सामान्य स्वरूपसे न उत्पन्न होती है और न नष्ट भी होती है, क्योंकि, इनमें सामान्य स्वरूपसे स्पष्टतया अन्वय देखा जाता है। किन्तु वही विशेष स्वरूपसे नष्ट भी होती है और उत्पन्न भी होती है। हे भगवन्! इस प्रकार आपके मतमें एक ही वस्तुमें उत्पादादि तीनों ही एक साथ रहते हैं। इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है ॥१०॥

विशेषार्थ—पूर्वोत्तर पर्यायोंमें रहनेवाले साधारण स्वभावका नाम सामान्य है, जैसे सुवर्णसे उत्तरोत्तर होनेवाली कटक व कुण्डलादि रूप पर्यायोंमें सुवर्णसामान्य। इसकी अपेक्षा वस्तुका उत्पाद व विनाश सम्भव नहीं है, क्योंकि, कटकरूप पर्यायका नाश होकर कुण्डलरूप पर्यायके उत्पन्न होनेपर भी 'यह वही सुवर्ण है जिसके पहिले कटक बनवाये गये थे' ऐसा अन्वय प्रत्यय पाया जाता है। उत्पाद व विनाश केवल विशेष (पर्याय) की अपेक्षा होता है। यदि कटक व कुण्डल रूप आकारके समान सुवर्णद्रव्यका भी विनाश व उत्पाद हुआ होता तो उन दोनोंमें समान रूपसे सुवर्णत्वका बोध नहीं हो सकता था। परन्तु होता अवश्य है, अतः सिद्ध है कि सामान्य स्वरूपसे वस्तु उत्पाद-व्ययसे रहित होकर कथंचित् नित्य और वही विशेषकी अपेक्षा कथंचित् अनित्य भी है। ये सामान्य और विशेष धर्म भी परस्पर सापेक्ष रहते हैं, न कि निरपेक्ष। इस प्रकार उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये तीनों ही वस्तुमें एक साथ पाये जाते हैं। इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है और यही द्रव्यका लक्षण है।

सभी वस्तु विधि-प्रतिषेधात्मक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इसके विना कार्य-कारणभावका विरोध है। कहा भी है—

अस्तित्वविषयक एकान्त पक्षमें अभावोंका अपलाप होनेसे दूसरोंके मतमें पदार्थोंके सर्वरूपता, अनादिता, अनन्तता और अस्वरूपताका प्रसंग आता है ॥११॥

विशेषार्थ—सांख्योंका अभिमत है कि सब पदार्थ सत्स्वरूप ही हैं, कोई भी असत् (अभाव) स्वरूप नहीं है। उनमें जो परिवर्तित अवस्थायें देखी जाती हैं वे आविर्भाव व तिरोभावके कारण होती हैं। उनके यहां निम्न २५ तत्त्व स्वीकार किये गये हैं—पुरुष, प्रकृति, महान्

---

[1] आ. मी. ५७. [2] आ. मी. ९.

कार्यद्रव्यमनादि स्यात् प्रागभावस्य निह्नवे ।
प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत्[1] ॥१२॥
सर्वात्मकं तदेकं स्यादन्यापोहव्यतिक्रमे ।
अन्यत्रसमवाये न व्यपदिश्येत सर्वथा[2] ॥१३॥

(बुद्धि), अहंकार, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु व उपस्थ), मन, पांच तन्मात्र (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द) और पांच भूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु व आकाश) । इनमें प्रकृति कर्त्री और पुरुप भोक्ता है । प्रकृतिसे महान्, महान्से अहंकार, अहंकारसे ग्यारह इन्द्रियां व पांच तन्मात्र, तथा पांच तन्मात्रोंसे पांच भूतोंका आविर्भाव और इसके विपरीत क्रमसे उन सबका तिरोभाव (जैसे पृथिव्यादि पांच भूतोंका तिरोभाव गन्धादि पांच तन्मात्रोंमें) होता है । इस प्रकार सांख्यमतमें सब कार्य सत् ही हैं । उनके इस एकान्त पक्षको दूषित करते हुए उपर्युक्त कारिकामें कहा गया है कि सब पदार्थोंको सर्वथा सत् माननेपर अन्योन्याभाव, प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव और अत्यन्ताभाव, ये चारों ही अभाव नहीं बन सकेंगे । इनमेंसे महान् व अहंकारादिमें प्रकृतिका तथा प्रकृतिमें महदादिका अन्योन्याभाव न रहनेसे महदादिक प्रकृतिस्वरूप व प्रकृति महदादिस्वरूप भी हो सकती है । इस प्रकार अन्योन्याभावके अभावमें सबके सब स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा । इसी प्रकार प्रागभाव (कार्योत्पत्तिके पूर्वमें उसका अभाव) के न रह सकनेसे महदादिके अनादिताका तथा प्रध्वंसाभाव (विनाश) के न रहनेसे उनके अनन्तताका प्रसंग भी दुर्निवार होगा । साथ ही प्रकृतिमें भोक्तृत्वका तथा पुरुपमें कर्तृत्वका अत्यन्ताभाव न रहनेपर प्रकृति व पुरुपका कोई निश्चित लक्षण भी नहीं बन सकेगा, अतः निःस्वरूपताका प्रसंग भी कैसे टाला जा सकेगा ? इसीलिये उक्त एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं हो सकता ।

प्रागभावका अपलाप होनेपर कार्यरूप द्रव्यके अनादि हो जानेका प्रसंग आता है । तथा प्रध्वंसरूप धर्मका (प्रध्वंसाभावका) अभाव होनेपर वह अनन्तता (अविनश्वरता) को प्राप्त हो जावेगा ॥१२॥

विशेषार्थ—कार्यके उत्पन्न होनेके पूर्वमें जो उसकी अविद्यमानता है उसे प्रागभाव कहा जाता है । इसको न माननेपर घट-पटादि कार्य अपने स्वरूपलाभ (उत्पत्ति) के पूर्वमें भी विद्यमान ही रहना चाहिये । इस प्रकार प्रागभावके अभावमें घटादि कार्योंके अनादि हो जानेका अनिष्ट प्रसंग आता है । कार्यके विनाशका नाम प्रध्वंसाभाव है । इसे स्वीकार न करनेपर चूंकि घटादि कार्योंका उत्पन्न होनेके पश्चात् कभी विनाश तो होगा ही नहीं, अत एव उनके अनन्त (अन्त रहित) हो जानेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि घटादि पर्यायविशेषोंका अपनी उत्पत्तिके पूर्वमें और विनाशके पश्चात् उन उन आकारविशेषोंमें अवस्थान देखा नहीं जाता । अत एव यह स्वीकार करना चाहिये कि पदार्थ सर्वथा भाव (अस्तित्व) स्वरूप नहीं है, किन्तु अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वे कथंचित् भावस्वरूप तथा दूसरे पदार्थोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा कथंचित् अभावस्वरूप भी हैं ।

अन्यापोह (अन्योन्याभाव) का उल्लंघन होनेपर विवक्षित कोई एक तत्त्व सब तत्त्वों

१ आ. मी. १० २ आ. मी. ११.

अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापह्नववादिनाम् ।
बोध-वाक्यं प्रमाणं न केन साधन-दूषणम्[1] ॥१४॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते[2] ॥१५॥

स्वरूप हो जावेगा । अन्यत्रसमवाय, अर्थात् ज्ञानादि गुणविशेषोंका अपने समवायी (आत्मादि) के अतिरिक्त दूसरे समवायीमें समवाय होनेपर अर्थात् अत्यन्ताभावके अभावमें अभीष्ट स्वरूपसे किसी भी तत्त्वका निर्देश नहीं किया जा सकेगा ॥ १३ ॥

विशेषार्थ—विवक्षित स्वभावकी दूसरे स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नताका नाम अन्योन्याभाव है, जैसे गायरूप स्वभाव (पर्याय) की अश्वादि स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नता । इस अन्योन्याभावको न माननेपर गाय अश्वस्वरूप और अश्व गायस्वरूप भी हो सकता है । इस प्रकार द्रव्यकी सब पर्यायें सभी पर्यायों स्वरूप हो सकती हैं । इससे लोकव्यवहारका विरोध होगा । अत एव द्रव्यकी विभिन्न पर्यायोंमें परस्पर भेदको प्रगट करनेवाले अन्योन्याभावको स्वीकार करना ही चाहिये । एक द्रव्यमें दूसरे द्रव्यसम्बन्धी असाधारण गुणोंके त्रैकालिक अभावको अत्यन्ताभाव कहा जाता है, जैसे पुद्गल द्रव्यमें चैतन्य गुणका अभाव और जीव द्रव्यमें रहनेवाला रूपादि गुणोंका अभाव । इस अत्यन्ताभावको स्वीकार न करनेसे एक द्रव्यके गुणोंका दूसरे द्रव्यमें समवाय सम्भव होनेपर दूसरोंके द्वारा कल्पित प्रकृति-पुरुषादिरूप तत्त्वोंका नियमित स्वरूप नहीं बन सकेगा । अत एव तत्त्वव्यवस्थाको स्थिर रखनेके लिये अत्यन्ताभावका भी अपलाप नहीं किया जा सकता है ।

'कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है' इस प्रकारसे सर्वथा अभाव पक्षको स्वीकार करनेपर भी सत्स्वरूपताका अपलाप करनेवाले शून्यैकान्तवादियों (माध्यमिक) के यहां बोधरूप स्वार्थानुमान और वाक्यरूप परार्थानुमान प्रमाणका भी सद्भाव नहीं रह सकेगा । ऐसी अवस्थामें शून्यता रूप स्वपक्षकी सिद्धि किस प्रमाणसे की जावेगी, तथा सत्स्वरूप पदार्थको स्वीकार करनेवाले अन्य वादियोंके पक्षको दूषित भी किस प्रमाणके द्वारा किया जावेगा ? ॥१४॥

विशेषार्थ—'पदार्थोंकी जिस स्वरूपसे प्ररूपणा की जाती है वह उनका स्वरूप वास्तवमें है नहीं, क्योंकि, पदार्थोंके एकानेकरूपता बनती नहीं है । अत एव बाह्य या आभ्यन्तर कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है ।' यह शून्यैकान्तवादी माध्यमिकोंका अभिमत है । इस एकान्त पक्षको असंगत बतलाते हुए यहां कहा गया है कि जो वादी शून्यमय जगत्को स्वीकार करते हैं उनके यहां सत् स्वरूप किसी भी पदार्थके न रहनेसे अपने अभीष्ट (शून्यता) पक्षके साधक और परपक्ष (सत्स्वरूपता) को दूषित करनेवाले अनुमानादि प्रमाणकी भी सत्ता सम्भव नहीं है । और ऐसा होनेपर प्रमाणके अभावमें उनका अभीष्ट तत्त्व भी सिद्ध नहीं हो सकता । इसलिये यदि स्वपक्षको सिद्ध करनेके लिये किसी प्रमाणविशेषकी सत्ता स्वीकार की जाती है तो उसके सद्भावमें 'सर्वथा शून्यमय जगत् है' यह उनका एकान्त पक्ष नहीं रहता ।

'पदार्थ सत् व असत् स्वरूप हैं' इस प्रकार अनेकान्तविरोधियोंके यहां उभयस्वरूपताका भी एकान्त पक्ष नहीं बनता, क्योंकि, उसमें विरोध है । तथा 'पदार्थ सर्वथा वचनके अगोचर

१ आ. मी. १२. २ आ. मी. १३.

कथंचित्ते सदेवेष्टं कथंचिदसदेव तत् ।
तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न सर्वथा[1] ॥१६॥

हैं' इस प्रकारका भी एकान्त पक्ष सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर 'अवाच्य हैं' इस वाक्यका प्रयोग भी अयुक्त होगा ॥१५॥

विशेषार्थ— जो वादी पदार्थको सत् व असत् (उभय) स्वरूप मानकर भी उन दोनों धर्मोंमें परस्पर सापेक्षता स्वीकार नहीं करते उनके यहां उभयस्वरूपता भी असम्भव है, क्योंकि, जिस स्वरूपसे वे सत् हैं उसी स्वरूपसे उन्हें असत् माननेमें विरोध आता है। इस प्रकार स्याद्वाद न्यायके विना उक्त प्रकारसे उभयस्वरूपता भी नहीं बनती। किन्तु स्याद्वादका अवलम्बन करनेपर पदार्थको उभय (सत्-असत्) स्वरूप माननेमें कोई विरोध नहीं रहता। कारण कि स्वकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा सत्स्वरूप वस्तुको परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा असत्स्वरूप भी मानना ही पड़ेगा, क्योंकि, इसके विना सबके सब स्वरूप हो जानेका अनिवार्य प्रसंग आनेसे घट-पटादि पदार्थोंमें विभिन्नरूपता सम्भव नहीं है। जो वादी (बौद्ध) सत् व असत् पक्षोंमें दिये गये दोषोंके परिहारकी इच्छासे तत्त्वको अवक्तव्य स्वीकार करते हैं वे अपने इस अभिमतका परिज्ञान दूसरोंको किस प्रकारसे करावेंगे? कारण कि स्वसंवेदनसे तो दूसरोंको समझाया नहीं जा सकता है। यदि कहा जाय कि 'तत्त्व क्षणक्षयी व कल्पनातीत होनेसे अवाच्य है' इत्यादि वाक्योंके द्वारा दूसरोंको समझाया जा सकता है, सो यह भी उचित नहीं है; क्योंकि, ऐसा होनेपर 'सर्वथा अवक्तव्य है' यह सिद्धान्त स्वयमेव खण्डित हो जाता है। यह कथन तो उस व्यक्तिके समान स्ववचनबाधित है जो कि 'मैं मौनव्रती हूं' इन शब्दोंके द्वारा अपने मौनव्रतकी सूचना देता है।

हे भगवन्! आपका अभीष्ट तत्त्व कथंचित् सत् स्वरूप ही है, वह कथंचित् असत् स्वरूप ही है, कथंचित् उभय (सत्-असत्) स्वरूप भी है, और कथंचित् अवाच्य भी है। वह अभीष्ट तत्त्व नयके सम्बन्धसे ऐसा है, सर्वथा वैसा नहीं है ॥१६॥

विशेषार्थ—उक्त प्रकारसे सत्, असत्, उभय और अवाच्य स्वरूप एकान्त पक्षोंमें दोषोंको दिखाकर यहां इस कारिकाके द्वारा सप्तभंगीको प्रगट किया गया है। यद्यपि कारिकामें चार ही भंगोंका निर्देश है, तथापि उसमें प्रयुक्त 'च' शब्दके द्वारा शेष तीन भंगोंकी भी सूचना कर दी गयी है। प्रश्नके वश एक ही वस्तुमें विधि व निषेधकी कल्पना करनेको सप्तभंगी कहा जाता है। वह नयविवक्षाके अनुसार ही सम्भव है, न कि सर्वथा। वे सात भंग निम्न प्रकार हैं— (१) कथंचित् घट सत् स्वरूप है। इसमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे विधिकी कल्पना की गई है, क्योंकि, घटादिक सभी पदार्थ अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे सत् स्वरूप ही हैं। यदि उन्हें अपने द्रव्यादिककी अपेक्षा सत् न माना जाय तो फिर वे खरविषाणके समान वस्तु ही नहीं रहेंगे। (२) कथंचित् घट असत् स्वरूप है। इसमें पर्यायार्थिक नयकी प्रधानतासे प्रतिषेधकी कल्पना की गई है, क्योंकि, परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे घट असत् ही है। यदि परकीय द्रव्यादिकी अपेक्षा विवक्षित वस्तुको असत् न स्वीकार किया जावे तो जिस प्रकार घट

१ आ. मी. १४. सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं । दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि ॥ पंचा, १४.

ण च एयादो अणेयाणं कम्माणं वुत्पत्ती विरुद्धा, कम्मइयवग्गणाए अणंताणंतसंखाए अट्ठकम्मपाओग्गभावेण अट्ठविहत्तमावण्णाए एयत्तविरोहादो। णत्थि एत्थ एयंतो, एयादो घडादो अणेयाणं खप्पराणमुप्पत्तिदंसणादो। वुत्तं च—

कम्मं ण होदि एयं अणेयविहमेय वंधसमकाले।
मूलुत्तरपयडीणं परिणामवसेण जीवाणं ॥१७॥

जीवपरिणामाणं भेदेण परिणामिज्जमाणकम्मइयवग्गणाणं भेदेण च कम्माणं वंधसमकाले चेव अणेयविहत्तं होदि त्ति घेत्तव्वं। कधं मुत्ताणं कम्माणममुत्तेण जीवेण सह संबंधो? ण,[1] अणादिवंधणवद्धस्स जीवस्स संसारावत्थाए अमुत्तत्ताभावादो। अणादिवंधो

स्वकीय द्रव्यादिसे सत् है, उसी प्रकार वह परकीय द्रव्यादिककी अपेक्षा भी सत् ही ठहरेगा। और वैसा होनेपर 'यह घट है, पट नहीं है' इस प्रकारका भेद न रह सकनेसे सबके सब स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा। अतएव अपने द्रव्यादिकी अपेक्षा वस्तु जैसे सत है वैसे ही वह परकीय द्रव्यादिकी अपेक्षा असत् भी है, यह मानना ही चाहिये। (३) कथंचित् घट सत् व असत् (उभय) स्वरूप है। यहां द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा क्रमसे विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। कारण कि यदि ऐसा न माना जावे तो फिर घटादि वस्तुओंमें क्रमशः होनेवाले सत् व असत् रूप विकल्पके व्यवहारका विरोध होगा। (४) कथंचित् घट अवक्तव्य है। इसमें युगपत् विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। चूंकि सत् व असत् रूप दोनों धर्मोंको एक साथ सूचित करनेवाला कोई भी शब्द सम्भव नहीं है, अतएव उस अवस्थामें वस्तुको अवक्तव्य मानना उचित ही है। 'च' शब्दसे सूचित शेष तीन भंग—(५) कथंचित् घट सत् व अवक्तव्य है। यहां विधिके साथ ही युगपत् विधि व प्रतिषेध की कल्पना की गई है। (६) कथंचित् घट असत् व अवक्तव्य है। यहां प्रतिषेधके साथ युगपत् विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। (७) कथंचित् घट सत्-असत् व अवक्तव्य है। यहां क्रमशः विधि व प्रतिषेधकी कल्पनाके साथ युगपत् भी विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। इस प्रकार ये सात वाक्य ही सम्भव हैं। प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ भंगोंमें दो अथवा तीनके संयोग से उत्पन्न वाक्य इन्हींमें अन्तर्भूत होंगे, उनसे भिन्न सम्भव नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त एकसे अनेक कर्मोंकी उत्पत्ति विरुद्ध है, ऐसा कहना भी अयुक्त है; क्योंकि, आठ कर्मोंकी योग्यतानुसार आठ भेदको प्राप्त हुई अनन्तानन्त संख्यारूप कार्मण वर्गणाको एक माननेका विरोध है। दूसरे, एकसे अनेक कार्योंकी उत्पत्ति नहीं होती; ऐसा एकान्त भी नहीं है, क्योंकि, एक घटसे अनेक खप्परोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। कहा भी है—

कर्म एक नहीं है, वह जीवोंके परिणामानुसार मूल व उत्तर प्रकृतियोंके वन्धके समानकालमें ही अनेक प्रकारका है॥ १७॥

जीवपरिणामोंके भेदसे और परिणमायी जानेवाली कार्मण वर्गणाओंके भेदसे वन्धके समकालमें ही कर्म अनेकप्रकारका होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

शंका—मूर्त कर्मोंका अमूर्त जीवके साथ सम्बन्ध कैसे हो सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि अनादिकालीन वन्धनसे बद्ध रहनेके कारण जीवका संसार

१ ताप्रतौ 'ण' इत्येतत्पदं नास्ति।

कुदो णव्वदे ? जीव-सरीराणं वट्टमाणबंधण्णहाणुववत्तीदो । ण च वट्टमाणबंधघडावणट्ठं जीवस्स वि[1] रूवित्तं वोत्तुं जुत्तं, जीव-देहाणं महापरिमाणत्तादो रूवित्तणेण च उवलद्धि-लक्खणपत्ताणं रूव-रस-गंध-पासाणं पुधभूदाणमुवलंभप्पसंगादो । किं च—ण जीवदव्वमत्थि, रूपिणः पुद्गलाः'[2] इच्चेदेण लक्खणेण जीवाणं पोग्गलेसु अंतब्भावादो । ण च दव्वं दव्वं-तरस्स असाहारणगुणेण परिणमइ, अच्चंताभावेण णिरुद्धपवुत्तीदो । काणि दव्वाणमसा-हारणलक्खणाणि ? चेयणलक्खणं जीवदव्वं, रूव-रस-गंध-पासलक्खणं पोग्गलदव्वं, ओगाहणलक्खणमायासदव्वं, जीव-पोग्गलाणं गमणागमणणिमित्तकारणं धम्मदव्वं, तेसि-मवट्ठाणस्स णिमित्तकारणलक्खणमधम्मदव्वं, दव्वाणं परिणमणस्स णिमित्तकारणलक्खणं कालदव्वं । किं दव्वं णाम ? स्वकासाधारणलक्षणापरित्यागेन द्रव्यांतरासाधारणलक्षण-परिहारेण द्रवति द्रोष्यत्यदुद्रुवत् तांस्तान् पर्यायानिति द्रव्यं[3] । तदो जीवो अमुत्तो चेव, पोग्गलस्स असाहारणगुणेहि तस्स परिणामाभावादो । मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा

अवस्थामें अमूर्त होना सम्भव नहीं है ।

शंका—अनादिबन्धका परिज्ञान किस प्रमाणसे होता है ?

समाधान—चूंकि जीव और शरीरका वर्तमान बन्ध अनादिबन्धके विना बन नहीं सकता है, अत एव इस अन्यथानुपपत्तिरूप हेतुसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

शंका—वर्तमान बन्धको घटित करानेके लिये पुद्गलके समान जीवको भी रूपी कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर जीव और शरीर दोनों चूंकि महान् परिमाणवाले हैं और रूपी भी हैं; अतएव वे इन्द्रियग्राह्य हो जाते हैं । इसलिए उनके रूप, रस, गन्ध और स्पर्शके अलग अलग ग्रहण होनेका प्रसंग आता है । दूसरे, जीव द्रव्यको इस प्रकारसे रूपी स्वीकार करनेपर उसका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, 'जो रूपी हैं वे पुद्गल हैं' इस सूत्रोक्त लक्षणके अनुसार रूपी माननेसे जीवोंका पुद्गलोंमें अन्तर्भाव हो जाता है । तीसरे, एक द्रव्य दूसरे द्रव्यके असाधारण गुणरूपसे परिणत भी नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसी प्रवृत्ति अत्यन्ताभावके द्वारा रोकी जाती है । द्रव्योंके असाधारण लक्षण कौनसे हैं ? जीव द्रव्यका असाधारण लक्षण चेतना; पुद्गल द्रव्यका रूप, रस, गन्ध व स्पर्श; आकाश द्रव्यका अवगाहन, धर्म द्रव्यका जीवों और पुद्गलोंके गमनागमनमें निमित्तकारणता, अधर्म द्रव्यका उक्त जीवों और पुद्गलोंके अवस्थानमें निमित्तकारणता, तथा काल द्रव्यका असाधारण लक्षण द्रव्योंके परिणमनमें निमित्तकारण होना है । द्रव्य किसे कहते हैं ? अपने असाधारण स्वरूपको न छोड़-कर दूसरे द्रव्योंके असाधारण स्वरूपका परिहार करते हुए जो उन उन पर्यायोंको वर्तमानमें प्राप्त होता है, भविष्यमें प्राप्त होगा व भूतकालमें प्राप्त हो चुका है वह द्रव्य कहलाता है । इसलिये जीव अमूर्तिक ही है, क्योंकि पुद्गल द्रव्यके जो रूप और रसादिक असाधारण गुण हैं उनके स्वरूपसे उसका परिणमन हो नहीं सकता । इसके अतिरिक्त मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और

१ काप्रतौ 'वि' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते । २ तत्त्वा० ५-५. ३ यथास्वं पर्यायैर्द्रूयन्ते द्रवन्ति वा तानि द्रव्याणि । स. सि ५-२.

जीवादो[1] अपुधभूदा कम्मइयवग्गणक्खंधाणं तत्तो पुधभूदाणं कधं परिणामांतरं संपादेंति ? ण एस दोसो, जलणट्ठिददहणगुणेण तेल्लस्स वट्टिगयस्स[2] कज्जलागारेण परिणामुवलंभादो । वुत्तं च—

राग-द्वेषाद्यूष्मा स योग[3]-वर्त्यात्मदीप आवर्ते[4] ।
स्कन्धानादाय पुनः परिणमयति तांश्च कर्मतया ॥१८॥

जदि मिच्छत्तादिपच्चएहि कम्मइयवग्गणक्खंधा अट्ठकम्मागारेण परिणमंति तो एगसमएण सव्वकम्मइयवग्गणक्खंधा कम्मागारेण [किं ण] परिणमंति, णियमाभावादो ? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावे त्ति चदुहि णियमेहि णियमिदाणं परिणामुवलंभादो । दव्वेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव वग्गणाओ एगसमएण एगजीवादो कम्मसरूवेण परिणमंति । खेत्तेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तोगाहणाओ जीवेणोगाढखेत्तट्ठियाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ । कालेण एगसमयमादिं कादूण जाव असंखेज्जलोगमेत्तकालं कम्मइयवग्गणसरूवेण ट्ठिदाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ ।

योग ये जीवसे अभिन्न होकर उसमें उससे पृथग्भूत कार्मण वर्गणाके स्कन्धोंके परिणामान्तर (रूपित्व) को कैसे उत्पन्न करा सकते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अग्निमें स्थित दहन गुणके निमित्तसे वत्तीमें रहनेवाले तेलका कज्जलके आकारसे परिणाम पाया जाता है । कहा भी है—

संसारमें राग-द्वेषरूपी उष्णतासे संयुक्त वह आत्मारूपी दीपक योगरूप वत्तीके द्वारा [कार्मण वर्गणाके] स्कन्धोंको ग्रहण करके फिर उन्हें कर्मस्वरूपसे परिणमाता है ॥१८॥

शंका—यदि मिथ्यात्वादिक प्रत्ययोंके द्वारा कार्मण वर्गणाके स्कन्ध आठ कर्मरूपसे परिणमन करते हैं तो समस्त कार्मण वर्गणाके स्कन्ध एक समयमें आठ कर्मरूपसे क्यों नहीं परिणत हो जाते, क्योंकि, उनके परिणमनका कोई नियामक नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव, इन चार नियामकों द्वारा नियमको प्राप्त हुए उक्त स्कन्धोंका कर्मरूपसे परिणमन पाया जाता है । यथा— द्रव्यकी अपेक्षा अभवसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणी और सिद्ध जीवोंके अनन्तवें भाग मात्र ही वर्गणायें एक समयमें एक जीवके साथ कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं । क्षेत्रकी अपेक्षा जीवके द्वारा अवगाहको प्राप्त क्षेत्रमें स्थित अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अवगाहनावाली वर्गणायें ही कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत नहीं होतीं । कालकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोक मात्र कालके भीतरकी कार्मणवर्गणा स्वरूपसे स्थित ही वे वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं होती । भावकी अपेक्षा कार्मणवर्गणा पर्यायरूपसे परिणत

---

१ मप्रतौ 'जोगजीवादो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'वट्टिगयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'सयोग-' इति पाठः । ४ मप्रतौ 'आदत्ते' इति पाठः ।

भावेण कम्मइयवग्गणपज्जाएण परिणदाओ चेव कम्मसरूवेण परिणमंति, ण सेसाओ[1]। वुत्तं च—

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं।
बंधइ जहुत्तहेऊ[2] सादियमहणादियं वा वि[3] ॥१९॥

सो च एवंविहलक्खणो पक्कमो पयडिपक्कमो ठिदिपक्कमो अणुभागपक्कमो चेदि तिविहो। तत्थ पयडिपक्कमो दुविहो– मूलपयडिपक्कमो उत्तरपयडिपक्कमो चेदि। तत्थ मूलपयडिपक्कमं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं एगसमयपबद्धम्हि आउअदव्वं, णामा-गोददव्वं अण्णोण्णं सरिसं होदूण विसेसाहियं, णाण-दंसणावरण-अंतराइयाणं दव्वमण्णोण्णेण सरिसं होदूण विसेसाहियं। मोहणीयदव्वं विसेसाहियं। वेयणीयदव्वं विसेसाहियं। सव्वत्थ विसेसपमाणमणंतरहेट्ठिमदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तं होदि। वुत्तं च—

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ।
आवरण-अंतराए तुल्लो अहिओ दु मोहे वि ॥२०॥

ही वे कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं। कहा भी है—

जीव एकक्षेत्रमें अवगाहको प्राप्त हुए तथा कर्मके योग्य सादि, अनादि अथवा उभय स्वरूप पुद्गलप्रदेशसमूहको यथोक्त हेतुओं (मिथ्यात्व आदि) द्वारा अपने सब प्रदेशोंसे बांधता है ॥१९॥

इस प्रकारके लक्षणसे संयुक्त वह प्रक्रम प्रकृतिप्रक्रम, स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमें प्रकृतिप्रक्रम मूलप्रकृतिप्रक्रम और उत्तरप्रकृतिप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है। इनमें मूलप्रकृतिप्रक्रमका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—एक समयप्रबद्धमें आयुका द्रव्य सबसे स्तोक है। नाम व गोत्र कर्मोंका द्रव्य परस्परमें समान होकर उससे विशेष अधिक है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन तीन कर्मोंका द्रव्य परस्परमें समान होकर नाम व गोत्रकी अपेक्षा विशेष अधिक है। मोहनीयका द्रव्य उससे विशेष अधिक है। वेदनीयका द्रव्य उससे विशेष अधिक है। सब जगह विशेषका प्रमाण अनन्तर अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करके जो एक खण्ड प्राप्त होता है उतने मात्र है। कहा भी है—

आयु कर्मका भाग सबसे स्तोक है। नाम व गोत्र कर्ममें वह समान हो करके उससे अधिक है। आवरण अर्थात् ज्ञानावरण व दर्शनावरण तथा अन्तरायमें वह समान होकर उक्त दोनों कर्मोंकी अपेक्षा विशेष अधिक है। मोहनीयमें उनसे विशेष अधिक है। किन्तु वेदनीय

---

१ ते खलु पुद्गलस्कन्धा अभव्यानन्तगुणाः सिद्धानन्तभागप्रमितप्रदेशा घनांगुलस्यासंख्येयभागक्षेत्रावगाहिन एक-द्वि-त्रि-चतुः-संख्येयासंख्येयसमयस्थितिकाः पंचवर्ण-पंचरस-द्विगन्ध-चतुःस्पर्शस्वभावा अष्टविधकर्मप्रकृति-योग्याः योगवशादात्मनात्मसात् क्रियन्त इति प्रदेशबन्धः समासतो वेदितव्यः। स. सि. ८–२४. २ ताप्रतौ 'जुहुत्तुहेयो सादियमणादियं' इति पाठः। ३ एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं। बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं ॥ गो. क. १८५.

सव्वुवरि वेदणीए भागो अहिओ दु कारणं किंतु।
सुह-दुक्खकारणत्ता ठिदिविसेसेण सेसाणं[1] ॥२१॥

एवं सत्तविह-छव्विहबंधगेसु वि पदेसपक्कमो परूवेयव्वो, विसेसाभावादो। एवं मूलपयडिपक्कमो समत्तो।

उत्तरपयडिपक्कमो दुविहो— उक्कस्सउत्तरपयडिपक्कमो जहण्णउत्तरपयडिपक्कमो चेदि। तत्थ उक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणकसायमाणपदेसग्गं। अपच्चक्खाणकोधे विसेसाहियं। अपच्चक्खाणमायाए विसेसाहियं। अपच्चक्खाणलोहपदेसग्गं विसेसाहियं। पच्चक्खाणमाणपदेसग्गं विसेसाहियं। कोहे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। अणंताणुबंधिमाणपदेसग्गं विसेसाहियं। कोधे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। मिच्छत्ते विसेसाहियं। केवलदंसणावरणे विसेसाहियं। पयलाए विसेसाहियं। णिद्दाए विसेसाहियं। पयलापयलाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहियं। थीणगिद्धीए विसेसाहियं। केवलणाणावरणे विसेसाहियं। आहारसरीरणामाए पक्कदव्वं अणंतगुणं। वेउव्वियसरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं। ओरालियसरीरणामाए

कर्मका द्रव्य सर्वोत्कृष्ट हो करके मोहनीयकी अपेक्षा विशेष अधिक है। इसका कारण वेदनीयका सुख व दुखमें निमित्त होना है। शेष कर्मोंका हीनाधिक भाग उनकी स्थितिविशेषसे है॥२०-२१॥

इसी प्रकारसे सात प्रकारके व छह प्रकारके कर्मोंको बांधनेवाले जीवोंमें भी प्रदेशप्रक्रमका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेपता नहीं है। इस प्रकार मूलप्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ।

उत्तरप्रकृतिप्रक्रम दो प्रकारका है— उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघन्य उत्तरप्रकृतिप्रक्रम। उनमें उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है— अप्रत्याख्यान कषायोंमें मानका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है। अप्रत्याख्यान क्रोधमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है। अप्रत्याख्यान मायामें उससे अधिक प्रदेशाग्र है। अप्रत्याख्यान लोभमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है। उससे प्रत्याख्यान मानका प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है। मायामें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है। लोभमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है। अनन्तानुबन्धी मानका प्रदेशाग्र उससे विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। वह प्रक्रमद्रव्य प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रक्रमद्रव्य आहारशरीर नामकर्ममें अनन्तगुणा है। प्रक्रमद्रव्य वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। प्रक्रमद्रव्य औदारिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। प्रक्रमद्रव्य तैजसशरीर नामकर्ममें

---

१ आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो। घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये॥ सुह दुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगो त्ति वेदणीयस्स। सव्वेहितो बहुगं दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं॥ सेसाणं पयडीणं ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु। आवलिअसंखभागो पडिभागो होदि णियमेण॥ गो. क. १९२-१९४.

पक्कमदव्वं विसेसाहियं । तेजासरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । कम्मइयसरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । देवगइ-णिरयगईणं पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । मणुसगईए विसेसाहियं । तिरिक्खगईए विसेसाहियं । अजसगित्तीए विसेसाहियं । दुगुंछाए पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । भयपक्कमदव्वं विसेसाहियं । हस्स-सोगपक्कमदव्वं विसेसाहियं । रदि-अरदिपक्कमदव्वं विसेसाहियं । इत्थि-णवुंसयवेदपक्कमदव्वं विसेसाहियं । दाणंतराए संखेज्जगुणं । लाभंतराए विसेसाहियं । भोगंतराए विसेसाहियं । परिभोगंतराए विसेसाहियं । विरियंतराए विसेसाहियं । कोहसंजलणे विसेसाहियं । मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं । ओहिणाणावरणे विसेसाहियं । सुदणाणावरणे विसेसाहियं । मदिणाणावरणे विसेसाहियं । माणसंजलणे विसेसाहियं । ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं । अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । पुरिसवेदे विसेसाहियं । मायासंजलणे[1] विसेसाहियं । अण्णदरम्हि आउए विसेसाहियं । णीचागोदे विसेसाहियं । लोहसंजलणे विसेसाहियं । असादे विसेसाहियं । उच्चागोदे जसगित्तीए विसेसाहियं । सादे विसेसाहियं । एवमुक्कस्सपयडिपक्कमो समत्तो ।

जहण्णए पयदं– सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदव्वं । कोहे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणे विसेसाहियं । कोधे विसेसाहियं । मायाए

विशेष अधिक है। प्रक्रमद्रव्य कार्मणशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। देवगति और नरकगतिका प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है। भयमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है। हास्य व शोकमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है। रति व अरतिमें विशेष अधिक है। स्त्रीवेद व नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें संख्यातगुणा है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। अन्यतर आयुमें विशेष अधिक है। नीच गोत्रमें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें विशेष अधिक है। उच्चगोत्र और यशःकीर्तिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें विशेष अधिक है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ।

जघन्य प्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है—प्रक्रमद्रव्य अप्रत्याख्यान मानमें सबसे स्तोक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यान मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'माणसंजलणे' इति पाठः ।

विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। अणंताणुबंधिमाणे विसेसाहियं। कोधे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। मिच्छत्ते विसेसाहियं। केवलदंसणावरणे विसेसाहियं। पयलाए विसेसाहियं। णिद्दाए विसेसाहियं। पयलापयलाए विसेसाहियं। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहियं। थीणगिद्धीए विसेसाहियं। केवलणाणावरणे विसेसाहियं। ओरालियसरीरे अणंतगुणं। तेजइयसरीरे विसेसाहियं। कम्मइयसरीरे विसेसाहियं। तिरिक्खगईए संखेज्जगुणं। जसाजसगित्तीए सरिसं विसेसाहियं। मणुसगईए विसेसाहियं। दुगुंछाए संखेज्जगुणं। भये विसेसाहियं। हस्स-सोगे विसेसाहियं। रदि-अरदीसु विसेसाहियं। अण्णदरम्हि वेदे विसेसाहियं। माणसंजलणाए[1] विसेसाहियं। कोधे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। दाणंतराइए विसेसाहियं। लाहंतराइए विसेसाहियं[2]। भोगंतराइए विसेसाहियं। परिभोगंतराइए विसेसाहियं। विरियंतराइए विसेसाहियं। मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं। ओहिणाणावरणे विसेसाहियं। सुदणाणावरणे विसेसाहियं। मदिणाणावरणे विसेसाहियं। ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं। अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं। चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं। उच्च-णीचागोदेसु संखेज्जगुणं। सादासादेसु विसेसाहियं। वेउव्वियसरीरे असंखेज्जगुणं। देवगईए संखेज्जगुणं। मणुस-तिरिक्खाउआणं असंखेज्जगुणं। णिरयगईए

अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिमें संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्तिमें समान होकर विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें संख्यातगुणा है। भयमें विशेष अधिक है। हास्य व शोकमें विशेष अधिक है। रति व अरतिमें विशेष अधिक है। अन्यतर वेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। ऊंच व नीच गोत्रमें संख्यातगुणा है। साता व असाता वेदनीयमें विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें संख्यातगुणा है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है। नरकगतिका असंख्यातगुणा है। देव व नारक

---

१ ताप्रतौ 'अण्णदरम्हि विसे०, वेदे माणसंजलणाए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'लाहंतराइए विसेसाहियं' इत्येतद् वाक्यं नास्ति।

असंखेज्जगुणं। देव-णिरयाउआणं असंखेज्जगुणं। आहारसरीरस्स पक्कमदव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पयडिपक्कमो समत्तो।

ठिदिपक्कमे पयदं— सव्वत्थोवं चरिमाए ट्ठिदीए पक्कमिदपदेसग्गं। पढमट्ठिदीए पक्कमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं। अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पक्कमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं। अपढमाए पदेसग्गं विसेसाहियं। अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं। सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं। कुदो एदमप्पाबहुगं? ठिदीसु पक्कमिददव्वावेक्खित्तादो। तं जहा— जहण्णियाए ट्ठिदीए बहुअं पदेसग्गं पक्कमदि। बिदियाए विसेसहीणं। एवं विसेसहीणं होदूण गच्छदि जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, तत्थ दुगुणहीणं[1]। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। एत्थ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि। एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं। एवं ठिदिपक्कमो समत्तो।

अणुभागपक्कमे पयदं—जहण्णियाए वग्गणाए बहुअं पदेसग्गं पक्कमदि। बिदियाए विसेसहीणमणंतभाएण। एवमणंताणि फद्दयाणि गंतूण दुगुणहीणं पक्कमदि। एवं णेयव्वं

आयुका असंख्यातगुणा है। आहारशरीरका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है। इस प्रकार प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ।

स्थितिप्रक्रम प्रकृत है— चरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है। प्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है। अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है। अप्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। अचरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। सब स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है।

शंका—यह अल्पबहुत्व क्यों है?

समाधान—कारण कि वह स्थितियोंमें प्रक्रमको प्राप्त हुए द्रव्यकी अपेक्षा करता है। यथा— जघन्य स्थितिमें बहुत प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। द्वितीय स्थितिमें विशेषहीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार विशेषहीन होकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक जाता है। वहांकी स्थितिमें दुगुणा हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये।

यहां एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं। एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर उनसे असंख्यातगुणा है। इस प्रकार स्थितिप्रक्रम समाप्त हुआ।

अनुभागप्रक्रम प्रकृत है—जघन्य वर्गणामें बहुत प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। द्वितीय वर्गणामें अनन्तवें भाग रूप विशेष हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार अनन्त स्पर्द्धक जाकर दुगुणा हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट वर्गणा तक ले जाना चाहिये।

---

१ ताप्रतौ 'दुगुहीणं' इति पाठः।

जाव उक्कस्सवग्गणे त्ति । एयगुणहाणिट्ठाणंतरे फद्दयाणि थोवाणि । णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि अणंतगुणाणि ।

एत्थ अप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा—सव्वत्थोवमुक्कस्सियाए वग्गणाए पक्कमिदद्व्वं । जहण्णियाए वग्गणाए अणंतगुणं । अजहण्ण-अणुक्कस्सियासु वग्गणासु पक्कमिदद्व्वमणंतगुणं । अजहण्णियासु विसेसाहियं । अणुक्कस्सियासु विसेसाहियं । सव्वासु विसेसाहियं । संपहि ट्ठिदीसु पक्कमिदअणुभागस्स अप्पाबहुअं उच्चदे—सव्वत्थोवो जहण्णियाए ट्ठिदीए पक्कमिदअणुभागो । अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु अणुभागो अणंतगुणो । अचरिमासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । चरिमाए ट्ठिदीए अणुभागो अणंतगुणो । अपढमासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । सव्वासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । एसो णिक्खेवाइरियउवएसो ।

एवं पक्कमे त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

एकगुणहानिस्थानान्तरमें स्पर्द्धक स्तोक हैं । नानागुणहानिस्थानान्तर [में स्पर्धक] अनन्तगुणे हैं ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट वर्गणामें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । जघन्य वर्गणामें अनन्तगुणा है । अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य अनन्तगुणा है । अजघन्य वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । सब वर्गणाओंमें विशेष अधिक है ।

अब स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभागके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं—जघन्य स्थितिमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग सबसे स्तोक है । अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग अनन्तगुणा है । अचरम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । चरम स्थितिमें अनुभाग अनन्तगुणा है । अप्रथम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । सब स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । यह निक्षेपाचार्यका उपदेश है ।

इस प्रकार प्रक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



उवक्कमाणियोगद्दारं

सयलिंदविंदवंदियमहिणंदियभव्व-पउमवणसंडं ।
अहिणंदणजिणणाहं णमिऊण उवक्कमं वोच्छं ॥१॥

एत्थ उवक्कमस्स ताव णिक्खेवो उच्चदे । तं जहा— णामउवक्कमो, ठवणउवक्कमो, दव्वउवक्कमो, खेत्तउवक्कमो, कालउवक्कमो, भावउवक्कमो चेदि छव्विहो उवक्कमो । णाम-ट्ठवणं गदं । दव्वउवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वोवक्कमभेएण । उवक्कम-अणियोगद्दारजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वोवक्कमो । णोआगमदव्वोवक्कमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । जाणुग-भवियं गदं । तव्वदिरित्तदव्वोवक्कमो दुविहो— कम्मोवक्कमो णोकम्मोवक्कमो चेदि । कम्मोवक्कमो अट्ठविहो । णोकम्मोवक्कमो तिविहो सचित्त-अचित्त-मिस्सभेएण[2] । खेत्तोवक्कमो[3] जहा उड्ढलोगो उवक्कंतो, गामो उवक्कंतो, णयरमुवक्कंतं इच्चेवमादी । कालोवक्कमो जहा वसंतो उवक्कंतो, हेमंतो उवक्कंतो इच्चेवमादी । भावोवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमभावोवक्कमभेएण । उवक्कमअणियोगद्दारजाणगो

समस्त इन्द्रसमूहोंसे वन्दित और भव्य जीवों रूपी कमल-वनखण्डको अभिनन्दित करनेवाले अभिनन्दन जिनेन्द्रको नमस्कार करके उपक्रम अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥१॥

यहां पहिले उपक्रमका निक्षेप कहते हैं । वह इस प्रकार है— नामउपक्रम, स्थापनाउपक्रम, द्रव्यउपक्रम, क्षेत्रउपक्रम, कालउपक्रम और भावउपक्रम, इस तरह उपक्रम छह प्रकारका है । नाम व स्थापना उपक्रम अवगत हैं । द्रव्यउपक्रम आगम और नोआगम द्रव्यउपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रमअनुयोगद्वारका ज्ञायक, उपयोग रहित जीव आगमद्रव्योपक्रम कहलाता है । नोआगमद्रव्योपक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्योपक्रम अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त द्रव्योपक्रम दो प्रकारका है— कर्मोपक्रम और नोकर्मोपक्रम । कर्मोपक्रम आठ प्रकारका है । नोकर्मोपक्रम सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है ।

क्षेत्र-उपक्रम— जैसे ऊर्ध्वलोक उपक्रान्त हुआ, ग्राम उपक्रान्त हुआ व नगर उपक्रान्त हुआ इत्यादि । कालउपक्रम जैसे— वसन्त उपक्रान्त हुआ व हेमन्त उपक्रान्त हुआ इत्यादि । भाव-उपक्रम आगम और नोआगम भाव-उपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रम-अनुयोगद्वारका ज्ञायक

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'उवक्कमणियोगद्दारं' इति पाठः । २ से किं तं उवक्कमे ? छव्विहे पण्णत्ते । तं जहा— णामोवक्कमे ठवणोवक्कमे दव्वोवक्कमे खेत्तोवक्कमे कालोवक्कमे भावोवक्कमे । नाम-ठवणाओ गयाओ । से किं तं दव्वोवक्कमे ? दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा— आगमओ अ नोआगमओ अ । जाव जाणगसरीर-भवियसरीर-वइरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते । तं जहा— सचित्ते अचित्ते मीसए । अणु. ६०. ३ से किं तं खेत्तोवक्कमे ? जण्णं हल-कुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति, से तं खेत्तोवक्कमे । अणु. ६७.

उवजुत्तो आगमभावोवक्कमो– जहा पाहुडमुवक्कंतं, पुव्वं वत्थू वा उवक्कंतं। ओदइयादि-भावोवक्कमो णोआगमभावोवक्कमो णाम। एत्थ एदेसु उवक्कमेसु केण पयदं ? कम्मो-वक्कमेण पयदं। जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो— बंधणउवक्कमो उदीरणउव-क्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि। पक्कम-उवक्कमाणं को भेदो ? पयडि-ट्ठिदि-अणुभागेसु ढुक्कमाणपदेसग्गपरूवणं[2] पक्कमो कुणइ, उवक्कमो पुण बंधविदियसमयप्पहुडि संतसरूवेण ट्ठिदकम्मपोग्गलाणं वावारं परूवेदि। तेण अत्थि विसेसो। जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो— पयडिबंधणउवक्कमो, ठिदिबंधण-उवक्कमो, अणुभागबंधणउवक्कमो, पदेसबंधणउवक्कमो चेदि। जीवपदेसेहि खीर-णीरं व अण्णोण्णाणुगयपयडीणं बंधक्कमपरूवणं पयडिबंधणउवक्कमो णाम। तो संत-पयडीण[3]मेगसमयादि जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ त्ति कम्मभावेणावट्ठाणकाल-परूवणं ट्ठिदिबंधणउवक्कमो णाम। तासिं चेव संतपयडीणमणुभागस्स जीवेण सह एयत्तं गयस्स फद्दय-वग्ग-वग्गणा-ट्ठाणाविभागपडिच्छेदादिपरूवणा अणुभागबंधणउव-क्कमो णाम। तासिं चेव पयडीणं खविद-गुणिदकम्मंसिय-तग्घोलमाणे अस्सिदूण संचिद-

उपयोग युक्त जीव आगमभाव-उपक्रम कहलता है। जैसे–प्राभृत उपक्रान्त हुआ, पूर्व उपक्रान्त हुआ अथवा वस्तु उपक्रान्त हुई। औदयिक आदि भावोंके उपक्रमको नोआगमभावोपक्रम कहते हैं।

शंका— इन उपक्रमोंमें यहां कौनसा उपक्रम प्रकृत है ?

समाधान—यहां कर्मोपक्रम प्रकृत है।

जो वह कर्मोपक्रम है वह चार प्रकारका है— बन्धन-उपक्रम, उदीरणा-उपक्रम, उपशामना-उपक्रम और विपरिणाम-उपक्रम।

शंका— प्रक्रम और उपक्रममें क्या भेद है ?

समाधान— प्रक्रम अनुयोगद्वार प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाग्रकी प्ररूपणा करता है; परन्तु उपक्रम अनुयोगद्वार बन्धके द्वितीय समयसे लेकर सत्त्वस्वरूपसे स्थित कर्म-पुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है। इसलिये इन दोनोंमें विशेषता है।

जो वह बन्धन-उपक्रम है वह चार प्रकारका है– प्रकृतिबन्धन-उपक्रम, स्थितिबन्धन-उपक्रम, अनुभागबन्धन-उपक्रम और प्रदेशबन्धन-उपक्रम। दूधके साथ पानीके समान जीवप्रदेशोंके साथ परस्परमें अनुगत (एकरूपताको प्राप्त) प्रकृतियोंके बन्धके क्रमकी प्ररूपणा करनेको प्रकृतिबन्धन-उपक्रम कहते हैं। अनन्तर उन सत्त्वरूप प्रकृतियोंके एक समयसे लेकर सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम काल तक कर्मस्वरूपसे रहनेके कालकी प्ररूपणाको स्थितिबन्धन-उपक्रम कहते हैं। उन्हीं सत्त्वप्रकृतियोंके जीवके साथ एकताको प्राप्त हुए अनुभाग सम्बन्धी स्पर्द्धक, वर्ग, वर्गणा, स्थान और अविभागप्रतिच्छेद आदिकी प्ररूपणाका नाम अनुभागबन्धन-उपक्रम है। उन्हीं प्रकृतियोंके क्षपितकर्मांशिक, गुणितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवों-

१ काप्रतौ 'दुःकमग' इति पाठः। २ काप्रतौ 'परूवण-', ताप्रतौ 'परूवणा (णं)' इति पाठः। ३ ताप्रतौ '[तो] संतपयडीण' इति पाठः।

उक्कस्साणुक्कस्सपदेसपरूवणा पदेसबंधणउवक्कमो णाम। एत्थ एदेसिं चदुण्णमुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडिपाहुडे परूविदं तहा परूवेयव्वं। जहा महाबंधे परूविदं तहा परूवणा एत्थ किण्ण कीरदे? ण, तस्स पढमसमयबंधम्मि चेव वावारादो। ण च तमेत्थ वोत्तुं जुत्तं, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो। एवं बंधणउवक्कमो समत्तो।

उदीरणा चउव्विहा—पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसउदीरणा चेदि। तत्थ पयडि-उदीरणा दुविहा—मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ मूलपयडिउदीरणं वत्तइस्सामो। तं जहा—का उदीरणा णाम? अपक्कपाचनमुदीरणा। आवलियाए बाहिरट्ठिदिमादिं कादूण उवरिमाणं ठिदीणं बंधावलियवदिक्कंतपदेसग्गमसंखेज्जलोगपडि-भागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण वा ओकड्डिदूण उदयावलियाए देदि[1] सा उदीरणा[2]। मूलपयडिउदीरणा दुविहा— एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्ठाणउदीरणा चेदि।

का आश्रय करके संचयको प्राप्त हुए उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट प्रदेशकी प्ररूपणाको प्रदेशबन्धन-उपक्रम कहा जाता है। इन चार उपक्रमोंकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतमें की गई है उसी प्रकार यहां भी करनी चाहिये।

शंका—जैसी महाबन्धमें प्ररूपणा की गई है वैसी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की जाती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि उसका व्यापार प्रथम समय सम्बन्धी बन्धमें ही है। और उसका यहां कथन करना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पुनरुक्त दोपका प्रसंग आता है। इस प्रकार बन्धन-उपक्रम समाप्त हुआ।

उदीरणा चार प्रकारकी है— प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा, और प्रदेशउदीरणा। उनमें प्रकृतिउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—

शंका— उदीरणा किसे कहते हैं?

समाधान—नहीं पके हुए कर्मोंके पकानेका नाम उदीरणा है। आवलीसे बाहिरकी स्थितिको लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्त प्रदेशाग्रको असंख्यात लोक प्रतिभागसे अथवा पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अपकर्पण करके उदयावलीमें देना, यह उदीरणा कहलाती है।

मूलप्रकृति उदीरणा दो प्रकारकी है— एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा।

---

१ काप्रतौ 'उदयावलियारा जादि' इति पाठः। २ तत्थ उदओ णाम कम्माणं जहाकालजणिदो फलविवागो कम्मोदयो उदयो त्ति भणिदं होइ। उदीरणा पुण अपरिपत्तकालाणं चेव कम्माणमुवायविसेसेण परिपाचणं, अपक्कपरिपाचनमुदीरणेति वचनात्। वुत्तं च—कालेण उवायेण य पच्चंति जहा वणप्फइफलाइं। तह कालेण तवेण य पच्चंति कयायिं कम्मा[म्मा]यिं॥ इदि। जयध. अ. प. ७४८. जं करणेणोकड्डिय उदये दिज्जइ उदीरणा एसा। पगइ-ठिइ-अणुभाग-प्पएसमूलुत्तरविभागा॥ क. प्र. ४, १. तत्र यत्परमाण्वात्मकं दलिकं करणेन योगसंज्ञकेन वीर्यविशेषेण कषायसहितेन असहितेन वा उदयावलिकाबहिर्वर्त्तिनीभ्यः स्थितीभ्योऽपकृष्य उदये दीयते उदयावलिकायां प्रक्षिप्यते एषा उदीरणा (मलय.)।

एत्थ ताव एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं भणिस्सामो। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव खीणकसाओ त्ति ताव एदे उदीरया। णवरि खीणकसायद्धाए समयाहियावलियसेसाए एदासिं तिण्णं पयडीणं उदीरणा वोच्छिण्णा। मोहणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइओ त्ति उदीरया[1]। णवरि चडमाणसुहुमसांपराइयद्धाए समयाहियावलियसेसाए उदीरणा वोच्छिण्णा। वेयणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति उदीरया। णवरि पमत्तसंजदस्स अप्पमत्ताहिमुहस्स चरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। आउअस्स मिच्छाइट्ठी मरणकाले चरिमावलियं मोत्तूण सेससव्वकाले उदीरओ। गुणं पुण पडिवज्जमाणो जाव चरिमसमयं ताव उदीरओ। एवं वत्तव्वं जाव पमत्तसंजदो त्ति। उवरि उदीरणा आउअस्स णत्थि। कुदो? साभावियादो। णामा-गोदाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति उदीरणा[2]। णवरि सजोगिकेवलिचरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— वेयणीय-मोहणीयाणमुदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो,

यहां पहले एक-एक-प्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय इन तीन कर्मोंके मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय पर्यन्त, ये जीव उदीरक हैं। विशेष इतना है कि क्षीणकषायके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर इन तीनों प्रकृतियोंकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मोहनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि चढ़ते समय सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। वेदनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुए प्रमत्तसंयत जीवके अन्तिम समयमें उसकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर शेष सब कालमें आयुका उदीरक मिथ्यादृष्टि जीव होता है। परन्तु अन्य गुणस्थानको प्राप्त होनेवाला जीव उस गुणस्थानके अन्तिम समय तक उदीरक होता है। इस प्रकार प्रमत्तसंयत तक कहना चाहिये, क्योंकि, उसके आगे आयुकी उदीरणा नहीं है। इसका कारण स्वभाव है। नाम व गोत्र कर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक है। विशेष इतना है कि सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— वेदनीय और मोहनीयका उदीरक जीव अनादि-अपर्यवसित,

---

१ घाईणं छउमत्था उदीरगा रागिणो य मोहस्स। क. प्र. ४, ३. घातिप्रकृतीनां ज्ञानावरण-दर्शनावरणान्तरायरूपाणां सर्वेऽपि छद्मस्थाः क्षीणमोहपर्यवसाना उदीरकाः। मोहनीयस्य तु रागिणः सरागाः सूक्ष्मसम्परायपर्यवसाना उदीरकाः (मलय. टीका)। २ तइयाऊण पमत्ता जोगंता उ त्ति दोण्हं च॥ क. प्र. ४, ४. तृतीयस्य वेदनीयस्य आयुषश्च प्रमत्ताः प्रमत्तगुणस्थानकपर्यन्ताः सर्वेऽप्युदीरकाः। केवलमायुषः पर्यन्तावलिकायां नोदीरका भवन्ति। तथा द्वयोर्नाम-गोत्रयोर्योग्यन्ताः सयोगिकेवलिपर्यवसानाः सर्वेऽप्युदीरकाः (मलय. टीका)।

अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा । जो सो सादिओ सपज्जवसिदो सो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उदीरेदि, अप्पमत्त-उवसंतकसायाणं हेट्ठा पदिदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो अप्पमत्तगुणं गयाणं समयाहियावलियसुहुमसांपराइयचरिमसमयअपत्ताणं[2] च जहाकमेण वेयणीय-मोहणीयाणमंतोमुहुत्तकालपमाणउदीरणुवलंभादो । उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं, अप्पमत्त-उवसंतकसाएसु हेट्ठा पदिदूण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं परिभमिय जहाकमेण सग-सगगुणं गंतूण उदीरणावोच्छेदे कदे उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलमेत्तकालुवलंभादो ।

आउअस्स जहण्णएण एगो वा दो वा समया । अप्पमत्तो पमत्तो होदूण जहण्णेण एगसमयं चेव आउअस्स उदीरओ होदूण विदियसमयए आउअस्स अणुदीरओ होदि । उदयावलियमेत्तट्ठिदिविसेसो त्ति जे आइरिया भणंति तेसिमहिप्पाएण उदीरणकालो जहण्णओ एगसमयमेत्तो । जे पुण दोण्णिसमए जहण्णेण उदेरिदि त्ति भणति तेसिमहिप्पाएण बे समया त्ति परूविदं । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । कुदो ? उदयावलियब्भंतरे पविट्ठट्ठिदीणं उदीरणाभावादो । सेसाणं कम्माणमणादिओ

अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है । जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है । इसका कारण यह है कि अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानसे नीचे गिरकर और सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक वहां रहकर फिरसे अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवोंके, तथा एक समय अधिक आवली स्वरूप सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्त समयको न प्राप्त हुए अर्थात् सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके अवशिष्ट रहनेके पूर्व समयवर्ती जीवोंके, यथाक्रमसे वेदनीय और मोहनीय कर्मकी अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण उदीरणा पायी जाती है । उत्कर्षसे दोनों कर्मोंकी उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक उदीरणा करता है, क्योंकि, अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंसे नीचे गिरकर व उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक परिभ्रमण करके यथाक्रमसे अपने अपने गुणस्थानको प्राप्त होकर वहां उदीरणाकी व्युच्छित्ति करनेपर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण काल पाया जाता है ।

आयु कर्मकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक अथवा दो समय है । कारण कि अप्रमत्त जीव प्रमत्त हो जघन्यसे एक समय ही आयुका उदीरक होकर द्वितीय समयमें आयुका अनुदीरक होता है । जो आचार्य उदयावली मात्र स्थितिविशेषकी प्ररूपणा करते हैं उनके अभिप्रायसे उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय मात्र होता है । किन्तु जो आचार्य 'जघन्यसे दो समय उदीरणा करता है' ऐसा कहते हैं उनके अभिप्रायसे दो समय मात्र जघन्य कालकी प्ररूपणा की गई है । आयुका उदीरणाकाल उत्कर्षसे एक आवली हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, उदयावलीके भीतर प्रविष्ट स्थितियोंकी उदीरणा सम्भव नहीं है । शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-अपर्यवसित

१ काप्रतौ 'समयाहियावलिया' ताप्रतौ 'समयाहियावलिया (य)' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'समयअप्पमत्ताणं' इति पाठः ।

अपज्जवसिदो । खवगसेडिमणारुहणसहावाणमेस भंगो । अणादिओ सपज्जवसिदो, खवगसेडिमारुहिय विणासिदउदीरणाणमेसेव भंगो । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरेण पयदं– वेयणीय-मोहणीयउदीरणाणमंतरं जहण्णेण एगो समओ । कुदो ? अप्पमत्त-आवलियसेससुहुमउवसामयगुणेसु एगसमयमच्छिय विदियसमए मदाणं तदुवलंभादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? अप्पमत्तगुणमुवसंतकसायगुणं च पडिवज्जिय सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पमत्तगुणे सकसायगुणे च पडिवण्णे[1] तदुवलंभादो । आउअस्स उदीरणंतरं जहण्णेण आवलिया । कुदो ? सव्वेसु भवेसु आवलियमेत्तसेसेसु आउअस्स उदीरणाभावादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? अप्पमत्तादिउवरिमगुणट्ठाणेसु सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो पमत्तगुणं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो । सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं, खीणकसायगुणट्ठाणम्हि उदीरणाए णट्ठाए पुणो उदीरणाऽपादुब्भावादो[2] । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचए अट्ठपदं— जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारादो । एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेयणीयाणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया अणुदीरया च । सेसाणं कम्माणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरओ च,

---

जीव होता है । यह भंग क्षपकश्रेणिपर न चढ़नेवाले जीवोंके सम्भव है । तथा इन्हीं शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-सपर्यवसित जीव भी होता है । किन्तु क्षपकश्रेणिपर चढ़कर उदीरणाको नष्ट करनेवालोंके यही भङ्ग होता है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर प्रकृत है—वेदनीय और मोहनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, अप्रमत्त और आवली प्रमाण शेष सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक इन दोनों गुणस्थानोंमें क्रमसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरणको प्राप्त हुए जीवोंके उक्त अन्तरकाल पाया जाता है । उत्कर्षसे वह अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्त गुणस्थान और उपशान्तकषाय गुणस्थानको प्राप्त होकर और वहां सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर प्रमत्त गुणस्थान और सकषाय (सूक्ष्मसाम्पराय) गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह पाया जाता है । आयुकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे आवली काल प्रमाण है, क्योंकि, सब भवोंके आवली मात्र शेष रहनेपर आयुकी उदीरणाका अभाव होता है । उत्कर्षसे वह अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्तादिक उपरिम गुणस्थानोंमें सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर पश्चात् प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके वह पाया जाता है । शेष पांच कर्मोंकी उदीरणाका अन्तर नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषाय गुणस्थान (बारहवें और तेरहवें) में उदीरणाके नष्ट होनेपर फिर उदीरणाका प्रादुर्भाव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयमें अर्थपद— जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे यहां प्रकृत हैं, क्योंकि, अवेदकोंमें उसका व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदसे आयु और वेदनीय कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक हैं और अनुदीरक भी हैं । शेष कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक,

---

१ ताप्रतौ 'पमत्तगुणे च पडिवण्णे' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'पादुब्भावा [भावा–] दो' इति पाठः ।

सिया उदीरया च अणुदीरया च । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो— सव्वेसिं कम्माणं उदीणा केवचिरं कालादो होदि ? णाणा-जीवे पडुच्च सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं णत्थि । अप्पाबहुअं पयदं । आउअस्स उदीरया थोवा । वेयणीयस्स उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए[1] संचिदअणंतजीवमेत्तेण । मोहणीयस्स उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अप्पमत्त-अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांप-राइयजीवमेत्तेण । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तिय-मेत्तेण ? उवसंत-खीणकसायमेत्तेण । णामा-गोदाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सजोगिकेवलिमेत्तेण ।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वेसिं पि कम्माणमुदीरया तुल्ला, णिरंतरं तत्थ मरंताण-मभावादो । कदाचि आउअस्स उदीरया थोवा, सेसकम्माणं सरिसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए संचिदजीवमेत्तेण । एवं सव्वासिं गदीणं वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खेसु सरिसा त्ति ण वत्तव्वं । मणुस्सेसु ओघं । एवमप्पाबहुअं समत्तं ।

कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— सब कर्मोंकी उदीरणा कितने काल तक होती है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा होती है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है । अल्पबहुत्व प्रकृत है— आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं । वेदनीयके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अन्तिम आवलीमें संचित अनन्त जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं । मोहनीय कर्मके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं । नाम व गोत्रके उदीरक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? सयोगकेवलियोंके प्रमाणसे अधिक हैं ।

नरकगतिमें नारकियोंमें सभी कर्मोंके उदीरक तुल्य हैं, क्योंकि, वहां निरन्तर मरनेवाले जीवोंका अभाव है । कदाचित् वहां आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं और शेष कर्मोंके उदीरक समान होकर आयु कर्मके उदीरकोंकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं ? कितने मात्रसे विशेष अधिक होते हैं ? अन्तिम आवलीमें संचित जीवोंके प्रमाणसे वे विशेष अधिक होते हैं । इसी प्रकार सब गतियोंमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यंचोंमें 'सदृश होते हैं' ऐसा नहीं कहना चाहिये । मनुष्योंकी प्ररूपणा ओघके समान है । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

---

१ काप्रतौ 'चरिमावलिये', ताप्रतौ 'चरिमावलिय' इति पाठः ।

भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढिउदीरणा च णत्थि, एगेगपयडिअधियारादो। एवमेगेगपयडिउदीरणा समत्ता।

संपहि पयडिट्ठाणसमुक्कित्तणं कस्सामो। अट्ठविह-सत्तविह-छव्विह-पंचविह-दुविह-उदीरणा त्ति पंचपयडिट्ठाणाणि उदीरणाए होंति। तं जहा— सव्वाओ पयडीओ उदीरंतस्स अट्ठविहउदीरणा होदि। आउएण विणा सत्तविहउदीरणा होइ। आउअ-वेयणीहि विणा अप्पमत्तादिसु छव्विहउदीरणा होदि। मोहाउअ-वेयणीयकम्मेहि विणा खीणकसायम्हि उवसंतकसाए च पंचविहउदीरणा होदि। णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-मोहाउअ-अंतराइएहि विणा सजोगकेवलिम्हि दोण्णमुदीरणा होदि। एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता।

सामित्तं—अट्ठण्णमुदीरओ को होदि? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं ण होदि उदयावलियपविट्ठं। सत्तण्णमुदरओ को होदि? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं उदयावलियं पविट्ठं। छण्णमुदीरओ को होदि? अप्पमत्तो सकसाओ। पंचण्णमुदीरओ को होदि? छदुमत्थो वीयराओ आवलियचरिमसमयस्स हेट्ठा। दोण्णमुदीरओ को होदि? उप्पण्णणाण-दंसणहरो सजोगिकेवली[1]। एवं सामित्तं समत्तं।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदीरणा नहीं है, क्योंकि, यहां एक एक प्रकृतिका अधिकार है। इस प्रकार एक-एकप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

अव प्रकृतिस्थानोंका समुत्कीर्तन करते हैं— आठ कर्मोंकी, सात कर्मोंकी, छह कर्मोंकी, पांच कर्मोंकी और दो कर्मोंकी उदीरणा इस प्रकार उदीरणाके पांच प्रकृतिस्थान हैं। यथा— सब प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेवालेके आठ प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयुके विना सात प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयु और वेदनीयके विना अप्रमत्त आदि गुणस्थानोंमें छह प्रकृतिक उदीरणा होती है। मोहनीय, आयु और वेदनीय कर्मोंके विना क्षीणकषाय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें पांच प्रकृतिक उदीरणा होती है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायके विना सयोगकेवली गुणस्थानमें दो प्रकृतिक उदीरणा होती है। इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना समाप्त हुई।

स्वामित्व— आठ कर्मोंका उदीरक कौन होता है? उनका उदीरक अन्यतर प्रमत्त जीव होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है। सात कर्मोंका उदीरक कौन होता है? अन्यतर प्रमत्त जीव उनका उदीरक होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है। छहका उदीरक कौन होता है? अप्रमत्त सकषाय जीव उनका उदीरक होता है। पांचका उदीरक कौन होता है? उनका उदीरक छद्मस्थ वीतराग जीव होता है, मात्र वह क्षीणमोहके कालमें एक आवली चरम समय शेष रहनेके पूर्व उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक कौन होता है? उत्पन्न हुए ज्ञान व दर्शनका धारक सयोगकेवली उनका उदीरक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

---

१ घाईणं छउमत्था उदीरगा रागिणो य मोहस्स। तइयाऊण पमत्ता जोगंता उ त्ति दोण्हं च॥ क० प्र० ४-४.

एयजीवेण कालो—अट्ठण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। सत्तण्णमुदीरओ [जहण्णेण] एक्कं[1] व दो व समए, पमत्ते उदयावलियपविट्ठआउए बिदियसमए तदियसमए वा अप्पमत्तगुणं गदे वेदणीयउदीरणाए णट्ठाए एग-दोसमयसत्तउदीरणाकालुवलंभादो। उक्कस्सेण आवलिया। छण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पंचण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। दोण्णमुदीरगो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवं कालो समत्तो।

एगजीवेण अंतरं— अट्ठण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण[2] एगावलिया, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सत्तण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। छण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। एवं पंचण्णमुदीरयाणं पि अंतरं वत्तव्वं। दोण्णमुदीरयाणं णत्थि अंतरं। कुदो? अंतरिदे पुणो दोण्णमुदीरणाए पादुब्भावाभावादो[3]। एवमंतरं समत्तं।

एक जीवकी अपेक्षा काल—आठ कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय तथा उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है। सात कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय होता है, क्योंकि प्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवके आयु कर्मके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर जब वह द्वितीय समयमें अथवा तृतीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होता है तब चूंकि वेदनीयकी उदीरणा नष्ट हो जाती है, अतः उसके एक या दो समय प्रमाण सातकी उदीरणाका काल पाया जाता है। [तात्पर्य यह है कि जिस प्रमत्तसंयतके आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट हो गया उसके सात कर्मकी उदीरणा होती है। किन्तु उसके एक समय बाद या दो समय बाद अप्रमत्त संयत गुणस्थानको प्राप्त हो जानेपर प्रमत्तसंयतके सात कर्मकी उदीरणाका जघन्य काल एक या दो समय देखा जाता है।] सातकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे आवली प्रमाण है। छहका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है। पांचका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक उनकी उदीरणा करता है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— आठ कर्मोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक आवली व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। सातकी उदीरणाका अन्तर जघन्यतः आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। छहकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकार पांच कर्मोंके उदीरकोंका भी अन्तर कहना चाहिये। दोके उदीरकोंका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, अन्तरको प्राप्त होनेपर फिर दोकी उदीरणाके प्रादुर्भावका अभाव है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

---

१ काप्रतौ 'एवं दो', ताप्रतौ 'एवं (गं) दो' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अट्ठण्णमुदीरणंतरं, जहण्णेण' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'पादुब्भावादो' इति पाठः।

णाणाजीवेहि भंगविचओ—जे जं पयडिट्ठाणमुदीरेंति तेसु पयदं। अट्ठण्णं सत्तण्णं छण्णं दोण्णं ट्ठाणाणं णियमा सव्वे जीवा उदीरया। सिया एदे च पंचविहउदीरओ च, सिया एदे च पंचविहउदीरया च। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो— पंचण्णमुदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसाणमुदीरयाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

अंतरं— पंचण्णमुदीरयाण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं—पंचण्णमुदीरया थोवा। दोण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। छण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। सत्तण्णमुदीरया अणंतगुणा। अट्ठण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? एगावलियसंचिदअट्ठण्णमुदीरयाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

भुजगारे अट्ठपदं— जाओ एण्हिं पयडीओ उदीरेदि तत्तो अणंतरओसक्काविदे समए अप्पदरियाओ उदीरेदि त्ति एसो भुजगारो। अणंतरविदिक्कंतसमए बहुदरियाओ उदीरेदि त्ति एसा अप्पदरउदीरणा। दोसु वि समएसु तत्तिया चेव पयडीओ उदीरेंतस्स[1]

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय—जो जीव जिस प्रकृतिस्थानकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं। आठ, सात, छह और दो प्रकृतिक स्थानोंके नियमसे सब जीव उदीरक होते हैं। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचका एक जीव उदीरक होता है। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचके भी नाना जीव उदीरक होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल- पांच कर्मोंके उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर—पांच कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व— पांचके उदीरक जीव स्तोक हैं। दोके उदीरक संख्यातगुणे हैं। छहके उदीरक संख्यातगुणे हैं। सातके उदीरक अनन्तगुणे हैं। आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सातके उदीरकोंसे एक आवलीमें संचित हुए आठके उदीरक संख्यातगुणे पाये जाते हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजाकारके विषयमें अर्थपद— इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उससे अनन्तर पिछले समयमें उनसे थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह भुजाकार उदीरणा है। इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उनसे अनन्तर बीते हुए समयमें बहुतर प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह अल्पतर उदीरणा है। दोनों ही समयोंमें उतनी मात्र प्रकृतियोंकी ही उदीरणा करनेवालेके अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरणासे उदीरणा करनेवालेके

---

१ ताप्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः।

अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरणाओ उदीरेंतस्स[1] अवत्तव्वउदीरणा[2]। एदेण अट्ठपदेण उवरिमअहियारा वत्तव्वा।

सामित्तं— भुजगारउदीरओ, अप्पदरउदीरओ अवट्ठिदउदीरओ च को होदि? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा। अवत्तव्वउदीरया[3] णत्थि। एवं सामित्तं समत्तं[4]।

एयजीवेण कालो—भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। तं जहा—उवसंतकसाए सुहुमसांपराइए जादे छ उदीरेंतस्स एगो भुजगार-समओ। पुणो विदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पण्णस्स पढमसमए अट्ठ उदीरेंतस्स विदिओ भुजगारसमओ। एवं भुजगारस्स बे समया। पमत्तसंजदचरिमसमए आउए उदयावलियं पविट्ठे सत्तउदीरेंतस्स एगो अप्पदरसमओ। तदो विदियसमए अप्पमत्तगुणे पडिवण्णे वेदणीएण विणा छ उदीरेंतस्स विदिओ अप्पदरसमओ। एवमप्पदरउदीरणाए वि उक्कस्सेण बे चेव समया। अवट्ठिदउदीरणाए कालो[5] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियाए आवलियाए ऊणाणि, देवेसुप्पण्णपढमसमओ मरणा-वलिया च। एवं भुजगारकालो समत्तो।

भुजगारउदीरणाए अंतरं जहण्णेण एक्को वा दो वा समया। कुदो? पंचविह-

---

अवक्तव्य उदीरणा होती है। इस अर्थपदके अनुसार आगेके अधिकारोंका कथन करना चाहिये।

स्वामित्व—भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है? अन्यतर मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक होता है। अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है। वह इस प्रकारसे— उपशान्तकषाय जीवके सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका एक समय प्राप्त होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उक्त जीवके प्रथम समयमें आठ कर्मोंको उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त होता है। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय है। प्रमत्तसंयत गुणस्थानके अन्तिम समयमें आयुके उदया-वलीमें प्रविष्ट होनेपर सात कर्मोंकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका एक समय काल होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वेदनीयके विना छहकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका द्वितीय समय पाया जाता है। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाके भी उत्कर्षसे दो ही समय हैं। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है। यहां एक समय और एक आवलीसे देवोंमें उत्पन्न होनेका प्रथम समय और मरणावली ली गई है। इस प्रकार भुजाकार-काल समाप्त हुआ।

भुजाकार उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक व दो समय है, क्योंकि, पांच कर्मोंका उदीरक

---

१ ताप्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'अवत्तव्वत्तउदीरणा' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अवट्ठिद (अवत्तव्व) उदीरया' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'समत्तं' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते। ५ काप्रतौ 'काले' इति पाठः।

उदीरओ उवसंतकसाओ हेट्ठा ओदरिय सुहुमसांपराइयो होदूण छव्विहउदीरगो जादो, विदियसमए भुजगारउदीरणा अवट्ठिदउदीरणाए अंतरिदा, तदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पज्जिय अट्ठ उदीरयमाणो भुजगारं गदो, एवमेगसमयअंतरदंसणादो । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि । तं जहा— तेत्तीससागरोवमेसु उप्पण्णपढमसमए भुजगारं कादूण समऊणतेत्तीससागरोवमाणि अवट्ठिद-अप्पदरउदीरणाए अंतरिय मणुस्सेसु उप्पण्णपढमसमए कयभुजगारस्स समऊणतेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सभुजगारंतरं होदि । एवमप्पदरउदीरणाए वि वत्तव्वं । कुदो ? आवलियकालेण देवेसुप्पज्जिहदि त्ति पुव्वं चेव अप्पदरं काऊण अंतरिय देवेसुप्पज्जिय आवलियूणतेत्तीससागरोवमाणि गमिय अप्पदरे कदे तदुवलंभादो । अधवा अप्पदरस्स उक्कस्सं अंतरं[1] तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि । अवट्ठिदउदीरणाए जहण्णेण अंतरमेगसमओ, उक्कस्सेण वे समया । एवं भुजगारंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि[2] भंगविचओ । वेदएसु पयदं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि, अवत्तव्वं णत्थि । एवमोघो समत्तो ।

सेसासु गदीसु जाणिदूण वत्तव्वं । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

उपशान्तकषाय जीव नीचे उतर कर सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह कर्मोंका उदीरक हुआ, द्वितीय समयमें भुजाकार उदीरणा अवस्थित उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हुई, तृतीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हो आठ कर्मोंकी उदीरणा करता हुआ भुजाकार उदीरणाको प्राप्त हुआ, इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समय अन्तर देखा जाता है। उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण अन्तर होता है । वह इस प्रकारसे— तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करके एक समय कम तेतीस सागरोपम तक अवस्थित या अल्पतर उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हो मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करनेपर एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इसी प्रकार अल्पतर उदीरणाके विषयमें भी कहना चाहिये, क्योंकि, आवली प्रमाण कालके बाद देवोंमें उत्पन्न होगा, इस प्रकार पूर्वमें ही अल्पतर उदीरणा करके अन्तरको प्राप्त हो देवोंमें उत्पन्न होकर आवलीसे कम तेतीस सागरोपमोंको विताकर अल्पतर उदीरणा करनेपर उक्त अन्तर पाया जाता है । अथवा, अल्पतर उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय । वेदक प्रकृत हैं— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं, अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं । इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ ।

शेष गति आदिकोंके विषयमें जानकर कथन करना चाहिये । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

१ काप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरिय', ताप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'णाणाजीवेण' इति पाठः ।

भागाभागो, परिमाणं, खेत्तं, पोसणं, कालो, अंतरं, भावो च जाणिदूण णेदव्वो। अप्पाबहुअं—भुजगारउदीरया थोवा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो [विसेसो]? संखेज्जमाणुसजीवमेत्तो। अवट्ठिदउदीरया[1] असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया (?)। एवं मणुसगदीए वि अप्पाबहुअं वत्तव्वं। सेसासु गदीसु भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

पदणिक्खेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो पंचविहउदीरओ उवसंतकसाओ मदो, तस्स पढमसमयदेवस्स अट्ठ उदीरयमाणस्स उक्कस्सिया वड्ढी। एदस्स चेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो अट्ठण्णमुदीरगो पमत्तो अप्पमत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। पंचउदीरएण दोसु उदीरिदासु उक्कस्सहाणी किण्ण परूविदा? ण, बहुपयडीहिंतो बहुहाणीए इहग्गहणादो। अधवा एसो वि संभवो एत्थ संगहेयव्वो।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। एवमोघो समत्तो।

भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भावको जानकर ले जाना चाहिये। अल्पबहुत्व— भुजाकर उदीरक स्तोक हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

शंका— विशेष कितना है?

समाधान— वह संख्यात मनुष्य जीवोंके बराबर है।

अल्पतर उदीरकोंसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है (?)। इसी प्रकार मनुष्य गतिमें भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये। शेष गतियोंमें भुजाकर और अल्पतर उदीरक समान होकर स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदनिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? पांचका उदीरक जो उपशान्तकषाय जीव मृत्युको प्राप्त हुआ है, उसके देव होनेके प्रथम समयमें आठकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट वृद्धि होती है। इसीके अनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो आठका उदीरक प्रमत्त जीव अप्रमत्त हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है।

शंका— पांचके उदीरक जीवके द्वारा दोकी उदीरणा करनेपर उसके उत्कृष्ट हानिकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यहां बहुत प्रकृतियोंसे बहुत हानिको ग्रहण किया गया है। अथवा यह विकल्प भी चूंकि सम्भव है, अतः उसका भी यहां संग्रह करना चाहिये।

हानि स्तोक है तथा वृद्धि व अवस्थान दोनों ही समान होकर उससे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ।

---

१ काप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः।

सेसासु गदीसु वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । एवं पदणिक्खेवो समत्तो ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा— संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागहाणी [संखेज्जगुणहाणी] अवट्ठिदउदीरणा चेदि एत्थ चत्तारि चेव पदाणि होंति । सेसं जाणिऊण वत्तव्वं ।

एवं मूलपयडिउदीरणा समत्ता ।

उत्तरपयडिउदीरणा दुविहा— एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्ठाणउदीरणा चेदि । एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं उच्चदे— पंचण्णं णाणावरणीयाणं को उदीरगो ? अण्णदरो छदुमत्थो । आवलियचरिमसमयछदुमत्थो णवरि अणुदीरओ । एवमुवरिमसव्वे छदुमत्था अणुदीरया जाव चरिमसमयछदुमत्थो त्ति । एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइय-णिद्दा-पयलाणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो[1] । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं च

मनुष्यगतिके सिवा शेष गतियोंमें वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही समान हैं । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

आगे वृद्धिउदीरणाका कथन करते हैं— संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और अवस्थितउदीरणा, ये चार ही पद यहां होते हैं । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

विशेषार्थ— पहले पदनिक्षेपका कथन कर आये हैं । वहां उत्कृष्ट हानिका निर्देश करते समय पांचकी उदीरणा करनेवालेके दोकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट हानि सम्भव है ; उत्कृष्ट हानिके इस विकल्पका भी निर्देश किया है । अव यदि इस विकल्पकी विवक्षा की जाती है तो संख्यातगुणहानिके साथ चार पद सम्भव हैं और यदि इसकी विवक्षा नहीं की जाती है तो संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि और अवस्थित ये तीन पद ही सम्भव हैं ।

इस प्रकार मूलप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई ।

उत्तरप्रकृतिउदीरणा दो प्रकारकी है— एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा । इनमेंसे एक-एकप्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं—

पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्यतर छद्मस्थ होता है । विशेष इतना है कि छद्मस्थकालके अन्तमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है ऐसा छद्मस्थ जीव उनका उदीरक नहीं होता । इसी प्रकार छद्मस्थकी अन्तिम आवलीके प्रारम्भसे लेकर अन्तिम समय तकके आगेके सब छद्मस्थ जीव अनुदीरक हैं ।

इसी प्रकारसे चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, निद्रा और प्रचलाके विषयमें कथन करना चाहिये, क्योंकि, उनमें इनसे कोई विशेषता नहीं है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और

---

१ मोत्तूण खीणरागं इंदियपज्जत्तगा उदीरेंति । णिद्दा-पयला सायासायाइं जे पमत्त त्ति ॥ पं. सं. ४, १९. इह कर्मस्तवकारादयः क्षपक-क्षीणमोहयोरपि निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति, उदये च सत्यवश्यमुदीरणा । ततस्तन्मतेनोक्तं क्षीणरागमन्तावलिकामात्रकालभाविनं मुक्त्वेति । ये पुनः सत्कर्माभिधग्रन्थकारादयस्ते क्षपक-क्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति । तथा च तद्ग्रन्थः—'णिद्दादुगस्स उदओ खीण-

उदीरओ को होदि ? अण्णदरो इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तो। एदमादिं कादूण एदासिमुदीरणाए ताव पाओग्गो होदि जाव पमत्तसंजदो त्ति। णवरि पमत्तसंजदस्स उत्तरसरीरविउव्वणाभिमुहस्स चरिमावलियप्पहुडि उवरि जाव आहारसरीरमुट्ठविय मूलसरीरं पविसदि ताव अणुदीरगो। थीणगिद्धितियस्स अप्पमत्तसंजदा च देव-णेरइया च आहारसरीरया च उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्सा च असंखेज्जवासाउआ च अणुदीरया[1]। सादासादाणमुदीरणाए[2] मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तो त्ति पाओग्गो[3]।

मिच्छत्तस्स मिच्छाइट्ठी चेव उदीरगो जाव सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठि त्ति। णवरि उवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणमिच्छाइट्ठिस्स मिच्छत्तपढमट्ठिदीए आवलियसेसाए णत्थि उदीरणा। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्ठी जाव चरिमसमओ त्ति ताव उदीरगो। सम्मत्तस्स असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति तावउदीरया। णवरि सम्मत्तं खवेंतुवसामेंताणं[4] सम्मत्तट्ठिदीए उदयावलियपविट्ठाए णत्थि

स्त्यानगृद्धि, इनका उदीरक कौन होता है ? इन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें रहने वाला अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है। इसको आदि लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक कोई भी जीव इन प्रकृतियोंकी उदीरणाके योग्य होता है। विशेषता इतनी है कि उत्तर शरीरकी विक्रियाके अभिमुख हुए प्रमत्तसंयतको अन्तिम आवलीसे लेकर आगे जब तक आहारकशरीर उत्थित हो करके मूल शरीरमें प्रविष्ट नहीं होता तब तक वह इनका अनुदीरक है। अप्रमत्तसंयत, देव, नारकी, आहारकशरीरी, उत्तर शरीरकी विक्रयाको प्राप्त तिर्यञ्च व मनुष्य, तथा असंख्यातवर्षायुष्क ये सब उक्त स्त्यानगृद्धि आदि तीन प्रकृतियोंके अनुदीरक हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत तक साता व असाता वेदनीयकी उदीरणाके योग्य होता है।

सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि तक मिथ्यादृष्टि जीव ही मिथ्यात्व प्रकृतिका उदीरक होता है। विशेष इतना है कि उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें एक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा नहीं होती। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव अपने अन्तिम समय तक सम्यग्मिथ्यात्वका उदीरक होता है। असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक सम्यक्त्व प्रकृतिके उदीरक होते हैं। विशेष इतना है कि सम्यक्त्व प्रकृतिका क्षय अथवा उपशम करनेवाले जीवोंके सम्यक्त्वकी स्थितिके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है।

खवगे परिच्चज्ज।' तन्मतेनोदीरणापि निद्राद्विकस्य क्षपक-क्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव वेदितव्या। तथा चोक्तं कर्मप्रकृतौ— इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तगाए पाउग्गा। णिद्दा-पयलाणं खीणराग-खवगे परिच्चज्ज॥ [४-१८] (मलयगिरि टीका)।

१ निद्दानिद्दाईण वि असंखवासा य मणुय-तिरिया य। वेउव्वाहारतणू वज्जित्ता अप्पमत्ते य॥ क. प्र. ४, १९. २ ताप्रतौ '-मुदीरया (णा) ए' इति पाठः। ३ वेयणियाण पमत्ता ××× ॥ क. प्र. ४, २०. ४ काप्रतौ 'खइयेंतुवसामंताणं' इति पाठः।

उदीरणा[1] । अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा उदीरगो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठिचरिमसमओ त्ति ताव उदीरया । पच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स चरिमसमओ त्ति ताव उदीरया[2] । णवुंसयवेदस्स उदीरओ को होदि ? सव्वो णवुंसओ । णवरि खवओ उवसामओ वा णवुंसयवेदपढमट्ठिदीए उदयावलियमेत्तसेसाए अणुदीरगो णवुंसयवेदस्स, अवसेसो सव्वो णवुंसओ उदीरगो चेव । जहा णवुंसयवेदस्स तहा इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं पि वत्तव्वं । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अपुव्वकरणचरिमसमयं ति ताव उदीरगो । णवरि साद-हस्स-रदीणं पढमसमयदेवमादिं कादूण जाव अंतोमुहुत्तदेवो त्ति ताव णियमा उदीरणा, उवरि भज्जा । असाद-अरदि-सोगाणं पढमसमयणेरइयमादिं कादूण जाव अंतोमुहुत्तणेरइओ त्ति ताव णियमा उदीरणा[3] । तिण्णं संजलणाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अणियट्टिअद्धाए सग-सगबंधज्झवसाणाणं चरिमसमओ त्ति ताव उदीरणा । लोहसंजलणाए मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ त्ति ताव उदीरणा ।

णिरयाउअस्स[4] सव्वम्हि णेरइयम्हि उदीरणा । णवरि आवलियचरिमसमय-

अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव उदीरक होता है। अप्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टिके अन्तिम समय तकके जीव उदीरक होते हैं। प्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानके अन्तिम समय तकके जीव उदीरक होते हैं। नपुंसकवेदका उदीरक कौन होता है ? उसके उदीरक सभी नपुंसक जीव होते हैं। विशेष इतना है कि क्षपक और उपशामक नपुंसक जीव नपुंसकवेदकी प्रथम स्थितिके उदयावली मात्र शेष रहनेपर नपुंसकवेदके अनुदीरक होते हैं। शेष सब नपुंसक जीव उसके उदीरक ही होते हैं। जिस प्रकारसे नपुंसकवेदके उदीरकोंका कथन किया गया है उसी प्रकारसे स्त्री और पुरुष वेदोंके भी उदीरकोंका कथन करना चाहिये। हास्य, रति, अरति, शोक, भय व जुगुप्सा; इन प्रकृतियोंका उदीरक मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके अन्तिम समय तक रहनेवाला जीव होता है। विशेष इतना है कि देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त तक सातावेदनीय, हास्य और रति इनकी उदीरणा नियमसे होती है। आगे वह भाज्य है, अर्थात् आगे वह होती भी है और नहीं भी होती। तथा नारकीके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त तक असाता वेदनीय, अरति और शोककी उदीरणा नियमसे होती है। तीन संज्वलन कषायोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणकालमें अपने-अपने बन्धाध्यवसानोंके अन्तिम समय तक होती है। संज्वलनलोभकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहने तक होती है।

नारकायुकी उदीरणा सब नारकियोंमें होती है। विशेष इतना है कि जिस नारक जीवके

---

१ क. प्र. ४, ६. २ × × × ते ते बंधंतगा कसायाणं । क. प्र. ४, २०.३ हास-रई-सायाणं अंतमुहुत्तं तु आइमं देवा । इयराणं नेरइया उड्ढं परियत्तणविहीए ॥ पं. सं. ४, २१. ४ काप्रतौ 'णिरयाउआउअस्स,' ताप्रतौ 'णिरयाउ [आउ] अस्स' इति पाठः ।

तब्भवत्थणेरइयमादिं कादूण जाव चरिमसमयतब्भवत्थो त्ति ताव अणुदीरओ। जहा णिरयाउअस्स तहा सेसाउआणं पि परूवणा कायव्वा। णवरि तिरिक्ख-मणुस-देवाउआणं जहाक्कमेण तिरिक्ख-मणुस-देवा चेव उदीरया। मणुसाउअस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदस्स मरणकाले चरिमावलियं मोत्तूण अण्णत्थ उदीरणा।

णिरयगइणामाए सव्वो णेरइओ उदीरओ। तिरिक्खगइणामाए सव्वो तिरिक्खजोणिओ उदीरओ। मणुसगइणामाए अजोइं मोत्तूण सेसो सव्वो मणुसो मणुसिणी वा उदीरओ। देवगदिणामाए सव्वो देवो सव्वदेवी वा उदीरया। एइंदियजादिणामाए सव्वो एइंदियो, बीइंदियजादिणामाए सव्वो बीइंदियो, तीइंदियजादिणामाए सव्वो तीइंदियो, चउरिंदियजादिणामाए सव्वो चउरिंदियो, पंचिंदियजादिणामाए सव्वो पंचिंदियो उदीरओ। णवरि पंचिंदियजादिणामाए अजोगिम्हि णत्थि उदीरणा। ओरालियसरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो [जो] ओरालियसरीरस्स णिव्वत्तओ। वेउव्वियसरीरणामाए उदीरओ अण्णदरो जो वेउव्वियसरीरस्स[1] णिव्वत्तओ। आहारसरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो जो आहारसरीरस्स णिव्वत्तओ। तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरओ अण्णदरो जो सजोगो। जहा सरीराणं तहा तेसिमंगोवंगणामाणं वत्तव्वं। एवं

अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें आवली मात्र काल शेष रहा है उससे लेकर अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ नारक तकके उसकी उदीरणा नहीं होती। जैसे नारकायुकी उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही शेष तीन आयु कर्मोंकी भी उदीरणाकी प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यंच, मनुष्य और देव आयुओंके उदीरक यथाक्रमसे तिर्यंच, मनुष्य एवं देव ही होते हैं। मनुष्यायुकी मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक उदीरणा होती है। मात्र मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर अन्य कालमें ही उदीरणा होती है।

नरकगति नामकर्मके सभी नारकी उदीरक होते हैं। तिर्यंचगति नामकर्मके सभी तिर्यंच योनिवाले जीव उदीरक होते हैं। मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक अयोगी जिनको छोड़कर शेष सब मनुष्य और मनुष्यनियां होती हैं। देवगति नामकर्मके उदीरक सब देव और सभी देवियां हैं। एकेन्द्रियजाति नामकर्मके सब एकेन्द्रिय जीव, द्वीन्द्रियजाति नामकर्मके सब द्वीन्द्रिय जीव, त्रीन्द्रियजाति नामकर्मके सब त्रीन्द्रिय जीव, चतुरिन्द्रियजाति नामकर्मके सब चतुरिन्द्रिय जीव, तथा पंचेन्द्रियजाति नामकर्मके सब पंचेन्द्रिय जीव उदीरक होते हैं। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उदीरणा आयोगी गुणस्थानमें नहीं है। औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि औदारिकशरीरका निर्वर्तक है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि वैक्रियिकशरीरका निर्वर्तक है। आहारशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि आहारशरीरका निर्वर्तक है। तैजस और कार्मण शरीरोंका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि योगसे सहित है। जैसे शरीरोंकी उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही उनके आंगोपांग नामकर्मोंकी उदीरणाका भी कथन करना

१ काप्रतौ 'वेउव्वियसरीरणामस्स', ताप्रतौ 'वेउव्वियसरीरस्स णामस्स' इति पाठः।

छसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं पि वत्तव्वं । सेसाणं संघडणणामाणं उदीरगो णिव्वत्तओ । तं जहा– वेउव्वियसरीरस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा । एवं तदंगोवंगस्स । आहारदुगस्स पमत्तसंजदम्मि चेव उदीरणा । वज्जणारायण-संघडण-णाराइणसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति उदीरणा । अद्धणारायणसंघडण-खीलियसंघडण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति उदीरणा । पंचबंधण-पंचसंघादाणं पंचसरीरभंगो । वण्ण-गंध-रस-फासाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति उदीरणा ।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पढमसमयणेरइओ दुसमयणेरइओ वा मिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा उदीरओ । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए तिरिक्खो[2] पढम-समयतब्भवत्थो बिदियसमयतब्भवत्थो वा सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा, पढमसमय-दुसमय-तिसमयतब्भवत्थमिच्छाइट्ठी वा उदीरओ । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-णामाए पढमसमय दुसमयतब्भवत्थो सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा उदीरओ[3] । देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए पढमसमयतब्भवत्थो दुसमयतब्भवत्थो

चहिये । इसी प्रकारसे छह संस्थानों और वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये । शेष संहनन नामकर्मोंका उदीरक उनका निर्वर्तक होता है । यथा—वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है । इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी भी उदीरणा जानना चाहिये । आहारद्विककी उदीरणा प्रमत्तसंयतमें ही होती है । वज्रनाराच-संहनन और नाराचसंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक होती है । अर्धनाराचसंहनन, कीलितसंहनन और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक होती है । पांच बन्धन और पांच संघातोंकी उदीरणाकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक होती है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती नारक अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती नारक मिथ्यादृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि होता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ तिर्यंच सासादन-सम्यग्दृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि, अथवा प्रथम समय, द्वितीय समय और तृतीय समयवर्ती तद्-भवस्थ मिथ्यादृष्टि होता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समय अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होता है । देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि अथवा असंयत-

१ प्रत्योरुभयोरेव 'संघडणाणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'तिरिक्ख' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'सासण सम्माइट्ठी असंजदसम्मामिच्छाइट्ठी वा उदीरओ', ताप्रतौ 'सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा पढमसमयदुसमयतिसमयतब्भवत्थमिच्छाइट्ठी वा उदीरओ' इति पाठः ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा उदीरओ।

अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिणणामाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। उवघादणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिचरिमसमओ त्ति[उदीरणा]। णवरि आहारओ चेव उदीरेदि, णाणाहारओ। परघादणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि। [1]उस्सासणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ[2]। आदावणामाए बादरपुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ। उज्जोवणामाए एइंदियो अणेइंदियो वा बादरो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ[3]। पसत्थविहायोगदिणामाए पंचिंदियो पज्जत्तो सण्णी असण्णी वा मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरगो। एवमप्पसत्थविहायोगइणामाए वि वत्तव्वं। णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सव्वो तसकाइयो सजोगी उदीरेदि[4]।

सम्यग्दृष्टि होता है।

अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण, इन नामकर्मोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समय तक होती है। उपघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा आहारक ही करता है, अनाहारक नहीं करता। परघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसकी उदीरणा करता है। उच्छ्वास नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसका उदीरक होता है। आतप नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ बादर पृथिवीकायिक जीव ही होता है। उद्योत नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ ही एकेन्द्रिय अथवा द्वीन्द्रिय आदि बादर जीव होता है। प्रशस्तविहायोगति नामकर्मका उदीरक पंचेन्द्रिय पर्याप्त संज्ञी और असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होता है। इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति नामकर्मकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए सब त्रसकायिक सयोगकेवली तक उसकी उदीरणा करते हैं।

---

१ ताप्रतावतः प्राक्—उदीरओ [आदावणामाए बादरपुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ] इत्येतावानयं पाठ उपलभ्यते कोष्ठकान्तर्गतः। २ उस्सासस्स सराण य पज्जत्ता आणपाण-भासासु। सव्वण्णूणुस्सासो भासा वि य जा न रुज्झंति॥ क. प्र. ४, १९. पं. सं. ४,१६. ३ बायरपुढवी आयावस्स य वज्जित्तु सुहुमसुहुमतसे। उज्जोयस्स य तिरिए (ओ) उत्तरदेहो य देव-जई॥ क. प्र. ४, १२. पज्जत्त-बायरे च्चिय आयवउद्दीरगो भोमो॥ पुढवी-आउ-वणस्सइ-बायर-पज्जत्त उत्तरतणू य। विगल-पणिंदियतिरिया उज्जोवुद्दीरगा भणिया॥ पं० सं० ४, १३-१४. ४ सगला सुगति-सराणं पज्जत्तासंखवास-देवा य। इयराणं नेरइया नर-तिरि सुसरस्स विगला य॥ पं. सं. ४, १५.

तसणामाए तसकाइयमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। वादरणामाए वादरमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। पज्जत्तणामाए पज्जत्तमिच्छाइट्ठिप्पहुडि[1] जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। पत्तेयसरीरणामाए पत्तेयसरीरमिच्छाइठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि आहारओ चेव उदीरओ, णाणाहारओ। थावरणामाए थावरो मिच्छाइट्ठी उदीरओ। सुहुमणामाए सुहुमेइंदियो उदीरओ। अपज्जत्तणामाए अपज्जत्तो मिच्छाइट्ठी उदीरओ। साहारणसरीरणामाए अण्णदरो साहारणकाइयो आहारओ चेव उदीरओ।

जसकित्तिणामाए बीइंदियो तीइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा पज्जत्तो चेव उदीरओ, एइंदियो वि वादरो पज्जत्तो तेउकाइय-वाउकाइयवदिरित्तो उदीरेदि, संजदासंजदा संजदा[2] च णियमा जसगित्तीए उदीरया जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति[3]। जदा पग्गहेण पग्गहिदो तदा अजसगित्तिवेदगो वि जसगित्तिं वेदयदि, तव्वदिरित्तो दो वि वेदयदि। पग्गहो णाम संजमो संजमासंजमो च। अजसगित्तिणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि गब्भोवक्कंतियसण्णि-असण्णिणो अण्णदरा

त्रस नामकर्मकी उदीरणा त्रसकायिक मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। वादर नामकर्मकी उदीरणा वादर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। पर्याप्त नामकर्मकी उदीरणा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। प्रत्येकशरीर नामकर्मकी उदीरणा प्रत्येकशरीर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि आहारक जीव ही उसका उदीरक होता है, अनाहारक नहीं होता। स्थावर नामकर्मका स्थावर मिथ्यादृष्टि उदीरक है। सूक्ष्म नामकर्मका सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव उदीरक है। अपर्याप्त नामकर्मका अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टि उदीरक है। साधारणशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर साधारणकायिक आहारक जीव ही होता है।

यशकीर्ति नामकर्मका उदीरक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक ही होता है; तेजकायिक व वायुकायिकको छोड़कर एकेन्द्रिय वादर पर्याप्त जीव भी उसकी उदीरणा करता है; तथा संयतासंयत और सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक संयत जीव भी नियमसे यशकीर्तिके उदीरक हैं। जब प्रग्रहसे प्रगृहीत अर्थात् संयमको स्वीकार करता है तब अयशकीर्तिका वेदक भी यशकीर्तिका वेदक होता है, शेष जीव दोनोंका वेदन करते हैं। प्रग्रहका अर्थ संयम और संयमासंयम है। अशयकीर्ति नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। सुभग और आदेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि अन्यतर गर्भोपकान्त संज्ञी व असंज्ञी

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि' इति पाठः। २ काप्रतौ 'संजदासंजदा संजदो', ताप्रतौ 'संजदासंजदो संजदो' इति पाठः। ३ नेरइया सुहुमतसा वज्जिय सुहुमा य तह अपज्जत्ता। जसकित्तिउदीरगाइज्ज-सुभगनामाण सण्णि-सुरा॥ पं० सं० ४, १७.

णियमा देवा देवीओ संजदासंजदा[1] संजदा च उदीरेंति। दूभग-अणादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। सुस्सर-दुस्सराणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि बेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि। तित्थयरणामाए तित्थयरो उप्पण्ण-केवलणाणो सजोगी चेव उदीरगो।

उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि मणुस्सो वा मणुस्सिणी वा सिया उदीरेदि, देवो देवी वा संजदो वा णियमा उदीरेंति, संजदासंजदो सिया उदीरेदि। णीचागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स उदीरणा। णवरि देवेसु णत्थि उदीरणा, तिरिक्ख-णेरइएसु णियमा उदीरणा, मणुसेसु सिया उदीरणा[2]। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो। एवं सेसचत्तारिणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण-पंचंतराइयाणं दोहि भंगेहि कालपरूवणा कायव्वा। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुदीरणाए

जीव उसकी उदीरणा करते हैं; तथा देव व देवियां, संयतासंयत एवं संयत जीव नियमसे उसकी उदीरणा करते हैं। दुर्भग व अनादेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होकर ही उनकी उदीरणा करता है। तीर्थंकर नामकर्मका उदीरक जिसके केवलज्ञान उत्पन्न हो चुका है ऐसा सयोगी तीर्थंकर ही होता है।

उच्चगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि मनुष्य और मनुष्यनी उसकी कदाचित् उदीरणा करते हैं, देव-देवी तथा संयत जीव उसकी उदीरणा नियमसे करते हैं, तथा संयतासंयत जीव कदाचित् उदीरणा करते हैं। नीचगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक होती है। विशेष इतना है कि देवोंमें उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है, तिर्यंचों व नारकियोंमें उसकी उदीरणा नियमसे तथा मनुष्योंमें कदाचित् होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— आभिनिबोधिकज्ञानावरणीयका उदीरक अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित जीव है। इसी प्रकारसे शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियों (ध्रुवोदयी) के उदीरणाकालकी प्ररूपणा इन दो भंगोंसे करनी चाहिये। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है,

---

१ देवो सुभगाए (इ) ज्जाण गब्भवक्कंतिओ य···। क. प्र. ४, १६. २ उच्चं चिय जइ अमरा केई मणुया व नीयमेवण्णे। चउगइया दुभगाई तित्थयरो केवली तित्थं॥ पं. सं. ४, १८.

कालो जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? अद्धुवोदयादो। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं णिद्दा-पयलाणं पि वत्तव्वं। सादस्स जहण्णएण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। असादस्स जहण्णएण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि। कुदो ? सत्तमपुढविपवेसादो पुव्वं पच्छा च असादस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालमुदीरणुवलंभादो।

हस्स-रदीणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छमासा। अरदि-सोगाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि। मिच्छत्तस्स तिण्णि भंगा— जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सम्मत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं। सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णगो उदीरणकालो तुल्लो। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सउदीरणकालो विसेसाहिओ। अणंताणुबंधिकोधस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं माण-माय-लोभाणं पि वत्तव्वं। जहा अणंताणुबंधीणं तहा अपच्चक्खाण-चउक्क-पच्चक्खाणचउक्काणं पि वत्तव्वं। कोहसंजलणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं माण-माया-लोभसंजलणाणं वत्तव्वं। भय-दुगुंछाणं जहण्णेण एयसमओ,

---

क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। उनकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इसी प्रकारसे निद्रा और प्रचला इन दो प्रकृतियोंके उदीरणाकाल कथन करना चाहिये। सातावेदनीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। असातावेदनीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, सातवीं पृथिवीमें प्रवेश करनेसे पूर्व और पश्चात् अन्तर्मुहूर्त मात्र काल तक असातावेदनीयकी उदीरणा पायी जाती है।

हास्य व रतिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। अरति और शोकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहुतसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। मिथ्यात्वके उदीरणाकालकी प्ररूपणामें तीन भंग हैं— उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूत और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है। सम्यक्त्व प्रकृतिका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे आवलीसे कम छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है। सम्यग्मिथ्यात्व-का काल जघन्यसे और उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है। सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्य-ग्मिथ्यात्व,इन तीनों प्रकृतियोंका जघन्य उदीरणाकाल समान है। सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट उदीरणा-काल उससे विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकारसे अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। जैसे अनन्तानुबन्धी कषायोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अप्रत्याख्यानचतुष्क और प्रत्याख्यानचतुष्कके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये। संज्वलन क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इसी प्रकार संज्वलन मान, माया और लोभके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। भय और जुगुप्साका

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कधं भय-दुगुंछाणमुदीरणकालो एगसमओ ? अपुव्वकरणचरिमसमयम्मि पढमसमयवेदगो होदूण से काले अणियट्टिगुणं गदस्स उदीरणवोच्छेददंसणादो । णवुंसयवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जपोग्गलपरियट्टं । इत्थिवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि आवलियाए ऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । एवं देवाउअस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउअस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियाए ऊणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियाए उणाणि ।

णिरयगदिणामाए उदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण दसवाससहस्साणि, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि । एवं देवगदीए वि वत्तव्वं । तिरिक्खगदिणामाए मणुसगदिणामाए च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण परिवाडीए अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तिण्ण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । अजोगिवज्जा मणुसगदीए

उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका—भय और जुगुप्साका उदीरणाकाल एक समय कैसे है ?

समाधान—कारण कि अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उनका एक समयके लिये वेदक होकर अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंकी उदीरणाकी व्युच्छित्ति देखी जाती है ।

नपुंसकवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । पुरुषवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक आवली कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । इसी प्रकार देवायुके उदीरणाकालका भी कथन करना चाहिये । मनुष्यायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है । तिर्यंच आयुका उदीरणाकाल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

नरकगति नामकर्मकी उदीरणा कितने काल होती है ? उसकी उदीरणा जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है । इसी प्रकारसे देवगतिके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । तिर्यंचगति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । अयोगकेवलीको छोड़कर शेष (सब मनुष्य व मनुष्यनी) मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक हैं ।

उदीरया । एइंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्ज-पोग्गलपरियट्टं । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादीए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । पंचिंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं । ओरालियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विय मूलसरीरं पविसिय एगसमयमोरालियसरीरमुदीरिय विदिय-समए कालं कादूण विग्गहं गदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सेसु एगसमयमुत्तर-सरीरं विउव्विदूण विदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए[1] जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? आहारसरीर-मुट्ठावेंतस्स अपज्जत्तद्धाए मरणाभावादो । जहा तिण्णं सरीराणं तहा तेसिं अंगोवंगाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओरालियसरीरंगोवंगणामस्स उक्कस्सेण[2] तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्व-कोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । जहा पंचण्णं सरीराणं तहा तेसिं बंधण-संघादाणं परूवणा कायव्वा ।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? अणप्पिदसंठाणेण उत्तर-

---

एकेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक हजार सागरोपम प्रमाण है । औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर मूल शरीरमें प्रविष्ट होकर एक समय औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेके पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर जो विग्रहको प्राप्त हुआ है उसके उपर्युक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, तिर्यंचों या मनुष्यों-में एक समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहारशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है, क्योंकि, आहारशरीरको उत्पन्न करनेवाले जीवका अपर्याप्तकालमें मरण सम्भव नहीं है । जैसे इन तीन शरीरोंके उदीरणा-कालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांगोंके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि औदारिकशरीरांगोपांगका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । जैसे पांच शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके बन्धन और संघातोंके उदीरणाकालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि,

---

१ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'उक्कस्स-', ताप्रतौ 'उक्कस्से०' इति पाठः ।

सरीरं विउव्विय अप्पिदसंठाणमूलसरीरं पविट्ठविदियसमए कालं कादूण संठाणंतरं गदस्स एगसमयकालुवलंभादो । उक्कस्सेण तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं । सेसाणं संठाणाणं हुंड-संठाणवज्जाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं, पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण अण्णत्थ सेससंठाणाणं संभवाभावादो । हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? विग्गहगदीए विणा हिंडमाणएइंदिय-विगलिंदिएसु संठाणंतराभावादो । अणंतकालो किण्ण परूविदो ? ण, विग्गहगदीए[1] वट्टमाणाणं संठाणुदयाभावादो । तत्थ संठाणाभावे जीवाभावो किण्ण होदि ? ण, आणुपुव्विणिव्वत्तिदसंठाणे अवट्ठियस्स जीवस्स अभावविरोहादो । वज्जरिसहवइरणारायणसरीर-संघडणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरादो मूलसरीरं गंतूण अप्पिदसंघडणेण[2] एगसमयं परिणमिय विदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । सेसाणं संघडणाणं पंचण्णं पि जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ।

अविवक्षित संस्थानके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करके विवक्षित संस्थानवाले मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर संस्थानान्तरको प्राप्त हुए जीवके एक समय मात्र काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व मात्र है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचों और मनुष्योंको छोड़कर अन्यत्र शेष संस्थानोंकी सम्भावना नहीं है । हुण्डकसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, विग्रहगतिके विना परिभ्रमण करनेवाले एकेंद्रियों व विकलेन्द्रियोंमें अन्य संस्थानकी सम्भावना नहीं है ।

शंका— अनन्त कालकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके संस्थानका उदय सम्भव नहीं है ।

शंका—विग्रहगतिमें संस्थानके अभावमें जीवका अभाव क्यों नहीं हो जाता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि वहां आनुपूर्वीके द्वारा रचे गये संस्थानमें अवस्थित जीवके अभावका विरोध है ।

वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरसे मूल शरीरको प्राप्त होकर विवक्षित संहननसे एक समय परिणत होकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । शेष पांचों ही संहननोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

---

१ ताप्रतौ 'विग्गहगदीसु' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेवं 'संघादणेण' इति पाठः ।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एवं मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं[1] वत्तव्वं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया। उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय पज्जत्तयदविदियसमए मुदस्स एगसमओ लब्भदे। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। जहा परघादणामाए परूविदं तहा उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं परूवेयव्वं।

आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवस्ससहस्साणि देसूणाणि, सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयस्स आदावुदयाभावादो। उज्जोवणामाए[2] जहण्णेण एयसमयो, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि। थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणाणं जहण्णगो उदीरणकालो अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सओ थावरणामाए असंखेज्जपोग्गलपरियट्टा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणं

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। इसी प्रकार मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। उपघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। परघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके एक समय काल पाया जाता है। उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। जैसे परघात नामकर्मके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये।

आतप नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिसे अपर्याप्त जीवके आतप नामकर्मका उदय सम्भव नहीं है। उद्योत नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है। त्रस नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक और साधारण नामकर्मोंका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। उत्कृष्ट उदीरणाकाल स्थावर नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'मणुसगइ-देवगइणामाणं' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'उज्जोवणामाणं' इति पाठः।

अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ उत्तर-विउव्वणाए कालं करेंतस्स, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं[1] । अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णामाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अजसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, दूभग-अणादेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । कधमेगसमओ ? अजसकित्तिमुदीरयमाणो संजदो जादो, ताधे जसगित्ती उदयमागदा[2], पुणो अंतोमुहुत्तेण सासणं गदो, तत्थ अजसगित्तीए उदीरणविदियसमए मुदो, तस्स एगसमओ लब्भइ । उत्तरविउव्वणाए वि लब्भदे । एवं दूभग-अणादेज्जाणं पि वत्तव्वं, परियट्टमाणउदयत्तादो ।

तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उच्चागोदादो णीचागोदं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय विदिय-समए उच्चागोदे उदयमागदे एगसमओ लब्भदे । उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । उच्चागोदस्स जहण्णेण एयसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय[3] एगसमएण मुदस्स तदुव-लंभादो । एवं णीचागोदस्स वि । उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । एवमोघाणुगमो

साधारण नामकर्मोंका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यशकीर्ति, सुभग और आदेय नाम-कर्मोंका उदीरणाकाल उत्तर विक्रियासे मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्यसे एक समय मात्र है, उत्कर्षसे वह सागरोपमशतपृथकत्व प्रमाण है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नाम-कर्मोका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा दुर्भग व अनादेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

शंका— इनका जघन्य उदीरणाकाल एक समय मात्र कैसे है।

समाधान—अयशकीर्तिकी उदीरणा करनेवाला जीव संयत हो गया, उस समय उसके यशकीर्तिका उदय हुआ, फिर वह अन्तर्मुहूर्तमें सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुआ, वहां अयश-कीर्तिकी उदीरणाके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुआ, उसके अयशकीर्तिका उदीरणाकाल एक समय पाया जाता है। यह काल उत्तर विक्रियासे भी पाया जाता है। इसी प्रकार दुर्भग व अना-देय नामकर्मोंके भी एक समयरूप उदीरणाकालका कथन करना चाहिये, क्योंकि, ये परिवर्तमान उदयवाली प्रकृतियां हैं।

तीर्थंकर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है। नीचगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उच्चगोत्रसे नीचगोत्रको प्राप्त होकर और वहां एक समय रहकर द्वितीय समयमें उच्चगोत्रका उदय होनेपर एक समय उदीरणाकाल पाया जाता है। उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उच्चगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया करके एक समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। नीचगोत्रका भी जघन्य काल एक समय मात्र इसी प्रकारसे घटित किया जा सकता है। उच्चगोत्रका उत्कृष्ट काल सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण

१ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'एगसमओ उक्क० उत्तरविउव्वणाए कालं करेंतस्स सागरोवम-' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'उदयमागदो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'विउव्विद' इति पाठः ।

समत्तो । आदेसो जाणिदूण वत्तव्वो । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणमुदीरणाए अंतरं णत्थि, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयलाणमंतरं जहण्णमुक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि साहियाणि अंतोमुहुत्तेण । सादस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सादस्स गदियाणुवादेण जहण्णमंतरमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं चेव । असादस्स जहण्णमंतरमेगसमओ, उक्कस्सं छम्मासा । मणुसगदीए असादस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्तस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं । अणंताणुबंधीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पुव्वकोडी देसूणा । एवं चेव पच्चक्खाणावरणीयचदुक्कस्स वत्तव्वं । कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतो-

---

है । इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ । आदेशका कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरूलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इनकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा और प्रचलाकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निन्द्रानिद्रा, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धिका वह अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । गतिके अनुवादसे सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त ही है । असातावेदनीयका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट छह मास प्रमाण है । मनुष्यगतिमें असाताकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कपसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणा-अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम काल प्रमाण है । अप्रत्याख्यान कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है । इसी प्रकार ही प्रत्याख्यानावरणीयचतुष्कके अन्तरका कथन करना चाहिये । संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य

मुहुत्तं । लोहसंजलणाए[1] जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं । भय-दुगुंछाणमंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । कधं एगसमओ ? चरिमसमयणियट्टिभयवेदगो[2] से काले अणियट्टिगुणं पविट्ठो अवेदगो जादो, तदो से काले मदो देवो जादो भयं चेव वेदेदि, एवं भयवेदगस्स एगसमयमंतरं । एवं दुगुंछाए । पुरिसवेदस्स[3] उदीरणंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सं णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, इत्थिवेदस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

देव-णिरयाउआणमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण अन्तरमावलिया, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । एवं मणुस्साउअस्स वि । णवरि उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । संज्वलन लोभका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । जिस प्रकार साता वेदनीयके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे हास्य व रतिके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिये । जिस प्रकार असातावेदनीयके अन्तरका कथन किया है उसी प्रकारसे अरति और शोकके अन्तरका कथन करना चाहिये । भय और जुगुप्साका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका— उनकी उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय कैसे है ?

समाधान— भयका वेदक अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्रविष्ट होकर उसका अवेदक हुआ । पश्चात् अनन्तर समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ । वह उस समय भयका ही वेदन करता है । इस प्रकारसे भयका वेदन करनेवाले उक्त जीवके एक समय अन्तर पाया जाता है । इसी प्रकार जुगुप्साके भी उपर्युक्त एक समय मात्र अन्तरका कथन करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणाका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कृष्ट अन्तर नपुंसकवेदका सागरोपमशतपृथक्त्व और स्त्रीवेदका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

देव व नारक आयुओंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । तिर्यंच आयुका अन्तर जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । इसी प्रकारसे मनुष्यायुके भी अन्तरका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'लोहसंजलणाणं' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'अणियट्टिभयवेदगो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'पुरिसवेदयस्स' इति पाठः ।

चदुण्णं पि गदीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण तिरिक्खगइणामाए सागरोवमसदपुधत्तं, सेसाणं गईणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणमुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण ओरालियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि, वेउव्वियसरीरस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अहारसरीरस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अण्णदरस्स संठाणस्स जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि हुंडसंठाणस्स तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं। एइंदियजादीए जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। सेसाणं जादीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिण्णमंगोवंगाणं सग-सगसरीराणं व जहण्णुक्कस्संतरं वत्तव्वं। णवरि ओरालियअंगोवंगस्स वेउव्वियभंगो। पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो। छण्णं संघडणाणं जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि साहियाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

चारों गतियोंका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे वह तिर्यंचगतिका सागरोपमशतपृथक्त्व और शेष गतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। औदारिक और वैक्रियिक शरीरोंका उदीरणा-अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह औदारिकशरीरका अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम और वैक्रियिकशरीका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। आहारकशरीरका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। अन्यतर संस्थानका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। एकेन्द्रिय जातिका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है। शेष जातियोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तीन अंगोपांग नामकर्मोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरका कथन अपने अपने शरीरोंके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि औदारिक अंगोपांगके अन्तरकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। पांच शरीरबन्धनों और पांच संघातोंके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है। छह संहननोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

देवगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

उवघादणामाए उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया। परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमुदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, केवलिसमुग्घादं पडुच्च पंचसमया। उक्कस्सेण परघादुस्सासाणमंतोमुहुत्तं, पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। आदावुज्जोवाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं[1]। तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण थावरणामाए तसट्ठिदी[2], सुहुमणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, बादरणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, अपज्जत्तणामाए तसपज्जत्तट्ठिदी। पत्तेय-साहारणाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण पत्तेयसरीरणामाए णिगोदट्ठिदी, साहारणसरीरणामाए असंखेज्जा लोगा। जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दूभग-आदेज्ज-अणादेज्जाणमंतरं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण जसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, सुभग-आदेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं सागरोवमसदपुधत्तं। तित्थयरणामाए णत्थि अंतरं। उच्चाणीचागोदाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण णीचा-

---

असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उपघात नामकर्मकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंकी उदीरणाका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त मात्र है, केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा वह पांच समय प्रमाण है। उत्कर्षसे वह परघात व उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियों, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। आतप व उद्योतका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है। त्रस नामकर्मका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त और पर्याप्त नामकर्मोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उत्कर्षसे वह स्थावर नामकर्मका त्रसस्थिति (साधिक दो हजार सागरोपम), सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, बादर नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा अपर्याप्त नामकर्मका त्रस पर्याप्तकी स्थिति प्रमाण है। प्रत्येक और साधारणका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह प्रत्येकशरीर नामकर्मका निगोदस्थिति प्रमाण तथा साधारणशरीर नामकर्मका असंख्यात लोक प्रमाण है। यशकीर्ति, अयशकीर्ति, सुभग, दुर्भग, आदेय और अनादेयका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह यशकीर्तिका असंख्यात लोक, सुभग व आदेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; तथा अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। ऊंच व नीच गोत्रोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे नीच गोत्रकी उदीरणाका वह अन्तर सागरोपम-

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'अणंता लोगा' इति पाठः। २ काप्रतिपाठोऽयम्। ता-मप्रत्योः 'तस्स ट्ठिदी' इति पाठः।

गोदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, उच्चागोदस्स उदीरणंतरमुक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे। तत्थ अट्ठपदं— जेसिं कम्ममत्थि तेसु पयदं, अकम्मेहि[1] अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण पंचण्णं णाणावरणीयाणं सिया सव्वे जीवा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरयो च, सिया उदीरया च अणुदीरया च। एवं तिण्णि भंगा। चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो। णिद्दादीणं पंचण्णं पि उदीरया च अणुदीरया च णियमा अत्थि। णिरयगइ-देवगईसु णिद्दा-पयलाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। सव्वे जीवा सादस्स असादस्स च णियमा उदीरया च अणुदीरया च। णेरइएसु सादस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया[2] च उदीरगो च, अणुदीरया च उदीरया च। णेरइयवज्जा जे पमत्ता[3] तसा ते सादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरगो च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइया असादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरओ च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइयवज्जा सेसा जे पमत्ता[3] तसा ते

शतपृथक्त्व तथा ऊंच गोत्रकी उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें अर्थपद—जिन जीवोंके कर्मका अस्तित्व है वे प्रकृत हैं, कर्मरहित जीवोंसे व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदसे पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी, इस प्रकारसे तीन भंग हैं। चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इन कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। निद्रा आदि पांचोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक हैं। नरकगति और देवगतिमें निद्रा और प्रचलाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं। साता व असाता वेदनीयके नियमसे सब जीव उदीरक और अनुदीरक हैं। नारक जीवोंमें सातावेदनीयके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, [कदाचित्] अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा [कदाचित्] अनुदीरक बहुत और उदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोड़कर जो प्रमत्त (प्रमाद युक्त) त्रस जीव हैं वे सातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं। नारकी जीव असातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोड़कर शेष जो प्रमत्त (प्रमाद

---

१ काप्रतौ 'अक्कमेहि' इति पाठः। २ काप्रतौ 'अणुदीरया च अणुदीरया' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'पम-(ज्ञ) त्ता' इति पाठः।

असादस्स सिया अणुदीरया, अणुदीरया[1] च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया[2] च।

सम्मामिच्छत्तस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च। एवमेत्थ तिण्णि भंगा वत्तव्वा। सेससत्तावीसमोहपयडीणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि। एवं सव्वेसिमाउआणं। णवरि देव-णिरयाउआणं[3] अणुदीरया भयणिज्जा। णामस्स परियत्तमाणपयडीणमाहारसरीर-आणुपुव्वितियवज्जाणं सव्वजीवा णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि। आहार-आणुपुव्वितियाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च। एवं तिण्णि भंगा। उच्चा-णीचागोदाणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो वुच्चदे— आहारसरीर-आणुपुव्वितिय-सम्मामिच्छत्तं मोत्तूण सेससव्वकम्माणं उदीरया सव्वद्धं। आहारसरीरस्स उदीरआ[4] जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

सहित) त्रस जीव हैं वे असातावेदनीयके कदाचित् बहुत अनुदीरक, बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यात्वके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं। इस प्रकारसे यहां तीन भंगोंको कहना चाहिये। शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी हैं। इसी प्रकार सब आयुओंके विषयमें कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि देवायु और नारकायुके अनुदीरक भजनीय हैं। आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंको छोड़कर नामकर्मकी शेष परिवर्तमान प्रकृतियोंके सब जीव नियमसे उदीरक और अनुदीरक भी हैं। आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं। इस प्रकारसे तीन भंग हैं। ऊंच व नीच गोत्रोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— आहारकशरीर, तीन आनुपूर्वी और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष सब कर्मोंके उदीरक सब काल रहते हैं। आहारकशरीरके उदीरक जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल रहते हैं। तीन आनुपूर्वियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहते हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक रहते हैं। नाना जीवोंकी

---

१ काप्रतौ 'अणुदीरआ' इति पाठः। २ काप्रतौ 'उदीरिया' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'देवणिरयाउआ' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'उदीरअ', ताप्रतौ 'उदीरओ' इति पाठः।

णाणाजीवेहि सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णओ उदीरणकालो थोवो, तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं, तस्सेव उक्कस्सओ उदीरणकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छत्तस्स उदीरणाए णाणाजीवेहि उक्कस्सओ विरहकालो असंखेज्जगुणो। एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं वुच्चदे— सम्मामिच्छत्तस्स अंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। आहारसरीरस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि। आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण चउवीसमुहुत्ता। सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो दुविहो— सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि। सत्थाणसण्णियासे पयदं— मदिणाणावरणमुदीरेंतो सेसणाणावरणीयाणि णियमा उदीरेदि। एवं पुध पुध सेसपयडीणं वत्तव्वं। चक्खुदंसणावरणीयमुदीरेंतो अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणीयाणं[1] णियमा उदीरओ। सेसपंचण्णं पयडीणं सिया उदीरओ। एवमचक्खुदंसणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-केवलदंसणावरणीयाणं वत्तव्वं। णिद्दमुदीरेंतो हेट्ठिमाणं चदुण्णं पयडीणं णियमा उदीरओ, सेसाणमुवरिमाणं णियमा अणुदीरओ। एवं पयलाए णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पुध पुध वत्तव्वं।

अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणाकाल स्तोक है। उसीका द्रव्य असंख्यातगुणा है। उसीका उत्कृष्ट उदीरणाकाल असंख्यातगुणा है। नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका उत्कृष्ट विरहकाल असंख्यातगुणा है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका कथन किया जाता है— सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। आहारकशरीरकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है। तीन आनुपूर्वियोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चौबीस मुहूर्त प्रमाण है। शेष कर्मोंकी उदीरणाका अन्तरकाल सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष दो प्रकार है— स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष। यहां स्वस्थान संनिकर्ष प्रकृत है— मतिज्ञानावरणीयकी उदीरणा करनेवाला शेष ज्ञानावरणीयोंकी नियमसे उदीरणा करता है। इसी प्रकार पृथक् पृथक् शेष चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके आश्रयसे संनिकर्षका कथन करना चाहिये। चक्षुदर्शनावरणीयकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणका नियमसे उदीरक होता है। शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके आश्रयसे संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। निद्राकी उदीरणा करनेवाला पिछली चार प्रकृतियोंका नियमसे उदीरक और शेष आगेकी प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि प्रकृतियोंका आश्रय करके अलग अलग संनिकर्षका कथन करना चाहिये।

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'दंसणावरणीयं' इति पाठः।

सादमुदीरेंतो असादस्स अणुदीरओ, असादमुदीरेंतो सादस्स अणुदीरओ। मिच्छत्तं उदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ, अणंताणुबंधिस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, संजोजिदअणंताणुबंधीणमावलियामेत्तकालमुदीरणाभावादो। जदि उदीरओ कोह-माण-माया-लोहाणं सिया उदीरगो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ। एदेसिं बारसण्हं कसायाणं एक्केक्कं पडुच्च सिया उदीरगो। तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वेदस्स हस्स-रदि-अरदि-सोगजुगलेसु एक्कदरस्स जुगलस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मत्तमुदीरेंतो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अणंताणुबंधीणं च णियमा अणुदीरगो, अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ अट्ठण्णं कसायाणं सिया उदीरओ। संजलणस्स णियमा उदीरओ, तस्सेव चदुण्णं कसायाणं सिया उदीरगो। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मामिच्छत्तमुदीरेंतो सम्मत्त-मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरगो।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असाताका अनुदीरक और असाताकी उदीरणा करनेवाला साताका अनुदीरक होता है। मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक तथा अनन्तानुबन्धीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कषायोंका संयोग हो जानेपर संयोगके समयसे लेकर आवली मात्र काल तक उदीरणा सम्भव नहीं है। यदि उनका उदीरक होता है तो क्रोध, मान, माया और लोभका कदाचित् उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान व संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। फिर भी इन बारह कषायोंमें एक एककी अपेक्षा कर कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेद, हास्य, रति, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक होता है। परन्तु तीन वेदोंमेंसे किसी एक वेदका एवं हास्य-रति, और अरति-शोक इन युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। वह भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व व अनन्तानुबन्धियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। परन्तु अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। यदि वह उनका उदीरक है तो आठ कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु वह उसीकी (संज्वलन) चार कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, किन्तु इन्हीं तीनों वेदोंमेंसे किसी एक वेदका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति और शोकका वह कदाचित् उदीरक होता है; किन्तु इन दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय व जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है।

सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंका

अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ, तेसिं बारसण्णं पयडीणं सिया उदीरओ। तिण्ण वेदाणं [सिया] उदीरओ, तिण्णं वेदाणं एक्कदरस्स णियमा उदीरगो। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

अणंताणुबंधिकोधमुदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ। मिच्छत्तस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, उदयावलियं पविट्ठमिच्छत्तपढमट्ठिदिमिच्छाइट्ठिस्स सासणस्स च उदयाभावादो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणाणं तिण्णं कोहाणं णियमा उदीरओ, सेसाणं बारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरगो, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ। दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवमणताणुबंधिमाण-माया-लोहाणं वत्तव्वं। णवरि माणे उदीरिज्जमाणे चदुण्णं माणाणं, मायाए उदीरिज्जमाणाए चदुण्णं मायाणं, लोभे उदीरिज्जमाणे चदुण्णं लोभाणं णियमा उदीरणा होदि त्ति वत्तव्वं।

अपच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि।

नियमसे अनुदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु इनकी बारह प्रकृतियोंका वह कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति व शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। भय व जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक होता है। वह मिथ्यात्वका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, उदयावलीमें प्रविष्ट हुए मिथ्यात्वकी प्रथम स्थिति युक्त मिथ्यादृष्टिके और सासादनसम्यग्दृष्टिके उसका उदय सम्भव नहीं है। वह अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन इन तीन क्रोध कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके आश्रयसे कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि मानकी उदीरणाके समय चार मान कषायोंकी, मायाकी उदीरणाके समय चार माया कषायोंकी, और लोभकी उदीरणाके समय चार लोभ कषायोंकी नियमसे उदीरणा होती है; ऐसा कहना चाहिये।

अप्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित्

---

१ काप्रतौ 'संजुलग' इति पाठः।

अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ, अणंताणुबंधिसेसकसायाणं[1] णियमा अणुदीरगो। पच्चक्खाणकोधस्स संजलणकोधस्स णियमा उदीरओ। सेसाणं णवण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसतिण्णं कसायाणं।

पच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि। अणंताणुबंधिं पि सिया उदीरेदि, जदि उदीरेदि तो कोधं णियमा उदीरेदि, सेसतिविहअणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरओ। अपच्चक्खाणकसायस्स सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो णियमा कोधमुदीरेदि, तस्सेव सेसकसायाणमणुदीरओ। पच्चक्खाणस्स सेसतिण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। कोधसंजलणस्स णियमा उदीरओ, सेससंजलणाणमणुदीरगो[2]। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसपच्चक्खाणकसायाणं वत्तव्वं।

उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक होता है, शेष अनन्तानुबन्धी मान आदि कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यान क्रोध और संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन मान, माया एवं लोभ इन शेष नौ कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अप्रत्याख्यान मान आदि शेष तीन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

प्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित् उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धीकी भी कदाचित् उदीरणा करता है। यदि उसकी उदीरणा करता है तो क्रोधकी नियमसे उदीरणा करता है। शेष तीन प्रकार अनन्तानुबन्धी कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। वह अप्रत्याख्यान कषायका कदाचित् उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे क्रोधकी उदीरणा करता है, उसीको शेष कषायोंका वह अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यानकी शेष तीन कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होकर वह शेष संज्वलन कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे मान आदि शेष प्रत्याख्यान कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'अणंताणुबंधिविसेस-' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'सेससंजलणाणमुदीरगो' इति पाठः।

कोधसंजलणमुदीरेंतो तिविहदंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि। अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो एदेसिं कोधाण णियमा उदीरओ, सेसबारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वि सिया उदीरगो। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरगो, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स [वि] सिया उदीरओ[1], भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसतिण्णं कसायाणं संजलणाणं वत्तव्वं।

पुरिसवेदमुदीरेंतो दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि। अणताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ। संजलणाए णियमा उदीरओ। उदीरेंतो वि सोलसण्हं कसायाणं पि सिया उदीरओ। इत्थि-णवुंसयवेदाणं णियमा अणुदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणं पि सिया उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवमित्थि-णवुंसयवेदाणं पि वत्तव्वं।

हस्समुदीरेंतो रदीए णियमा उदीरओ। अरदि-सोगाणं णियमा अणुदीरओ। दंसणतिय-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। रदिमुदीरेंतो हस्सस्स[2] णियमा उदीरओ। सेसं हस्सभंगो। अरदिमुदीरेंतो सोगस्स णियमा उदीरओ। हस्स-

---

संज्वलन क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान कषायोंका वह कदाचित् उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो इनके क्रोधोंका नियमसे उदीरक होता हुआ शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उन तीनोंमेंसे किसी एक वेदका भी कदाचित् उदीरक होता है। हास्य-रति व अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एकका भी कदाचित् उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार मान आदि शेष तीन संज्वलन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

पुरुषवेदकी उदीरणा करनेवाला तीन दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है। उदीरणा करता हुआ भी वह सोलह कषायोंका भी कदाचित् उदीरक होता है। स्त्री और नपुंसक वेदोंका वह नियमसे अनुदीरक है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होता हुआ दोनों युगलोंका भी कदाचित् उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार स्त्री और नपुंसक वेदोंके आश्रयसे भी प्ररूपणा करना चाहिये।

हास्यकी उदीरणा करनेवाला रतिका नियमसे उदीरक होता है। अरति और शोकका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन दर्शनमोहनीय, सोलह कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। रतिकी उदीरणा करनेवाला हास्यका नियमसे उदीरक होता है। शेष कथन हास्यके समान है। अरतिकी उदीरणा करनेवाला शोकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य व

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'णियमा उदीरओ' इति पाठः। २ काप्रतौ 'हस्स', ताप्रतौ 'हस्सं' इति पाठः।

रदीणमणुदीरओ। सेसं रदिभंगो। सोगमुदीरेंतो अरदीए णियमा उदीरओ। सेसमरदिभंगो। भयमुदीरेंतो सेससत्तावीसमोहणीयपयडीणं सिया उदीरओ। एवं दुगुंछाए।

णिरयाउअमुदीरेंतो सेसआउआणं णियमा अणुदीरओ। एवं सेसआउआणं वत्तव्वं।

णिरयगइमुदीरेंतो णियमा सेसगईणमणुदीरओ। एवं सेसतिण्णं गईणं वत्तव्वं। एइंदियजादिमुदीरेंतो सेसजादीणं णियमा अणुदीरओ। एवं चदुण्णं जादीणं वत्तव्वं। ओरालियसरीरमुदीरेंतो वेउव्वियसरीर-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ। वेउव्वियसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ। आहारसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ।

अण्णदरसंठाणमुदीरेंतो सेससंठाणाणं णियमा अणुदीरओ। एवं छण्णं संघडणाणं वत्तव्वं। एवं चेवाणुपुव्वी-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्तीण वत्तव्वं। तिण्णमंगोवंगाणं तिसरीरभंगो। वण्ण-गंध-रस-फासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरेंतो सेसाणं सिया

रतिका अनुदीरक होता है। शेष कथन रतिके समान है। शोककी उदीरणा करनेवाला अरतिका नियमसे उदीरक होता है। शेष कथन अरतिके समान है। भयकी उदीरणा करनेवाला शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार जुगुप्साके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

नारक आयुकी उदीरणा करनेवाला शेष आयु कर्मोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष आयु कर्मोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये।

नरकगतिकी उदीरणा करनेवाला नियमसे शेष गतियोंका अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष तीन गतियोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये। एकेन्द्रिय जातिकी उदीरणा करनेवाला शेष जातियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष चार जातियोंका आश्रय करके प्ररूपणा करना चाहिये। औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला वैक्रियिकशरीर और आहारक शरीरका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस और कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और आहारक शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। आहारकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और वैक्रिय शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है।

अन्यतर संस्थानकी उदीरणा करनेवाला शेष संस्थानोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार छह संहननोंके आश्रयसे कथन करना चाहिये। इसी प्रकारसे ही आनुपूर्वी, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये। तीन अंगोपांगोंकी प्ररूपणा तीन शरीरोंके समान है। वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्शके अपने भेदोंमेंसे

उदीरओ, विरोहाभावादो। आदावमुदीरेंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ, उज्जोवमुदीरेंतो आदावस्स णियमा अणुदीरओ। णिरयगइ-मणुसगईओ वेदंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ। देवगइं वेदंतो मूलसरीरेण उज्जोवस्स अणुदीरओ। आदावस्स पुढविजीवो चेव उदीरगो, ण अण्णो।

उच्चागोदमुदीरेंतो णीचागोदस्स णियमा अणुदीरगो। एवं णीचागोदस्स। सेसं जाणियूण वत्तव्वं। एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो। परत्थाणसण्णियासो जाणियूण वत्तव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

अप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणप्पाबहुअं परत्थाणप्पाबहुअं चेदि। सत्थाणे पयदं— पंचविहस्स णाणावरणस्स तुल्ला उदीरया। थीणगिद्धीए उदीरया[1] थोवा। णिद्दाणिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, णिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, सेसचदुण्णं दंसणावरणीयाणमुदीरया तुल्ला संखेज्जगुणा।

सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। णिरयगईए सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया असंखेज्जगुणा। सेसेसु तसेसु असादस्स उदीरया

किसी एककी उदीरणा करनेवाला शेष भेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है। आतपकी उदीरणा करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक और उद्योतकी उदीरणा करनेवाला आतपका नियमसे अनुदीरक होता है। नरकगति व मनुष्यगतिका वेदन करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक होता है। देवगतिका वेदन करनेवाला मूल शरीरसे उद्योतका अनुदीरक होता है। आतपका उदीरक पृथिवीकायिक जीव ही होता है, अन्य नहीं होता।

उच्चगोत्रकी उदीरणा करनेवाला नीचगोत्रका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार नीचगोत्रके आश्रयसे कहना चाहिये। शेष कथन जानकर करना चाहिये। इस प्रकार स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ।

परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है— स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व। इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है—पांच प्रकार ज्ञानावरणकी उदीरणा करनेवाले परस्परमें समान हैं। स्त्यानगृद्धिके उदीरक जीव स्तोक हैं, उनसे निद्रानिद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाप्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे निद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे शेष चार दर्शनावरणीय प्रकृतियोंके उदीरक परस्परमें तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं।

सातावेदनीयके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। नरकगतिमें साताके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं। शेष त्रस जीवोंमें

१. काप्रतौ 'उदीरए' इति पाठः।

थोवा। सादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। एइंदिएसु सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। उवरि उवदेसं लहिय वत्तव्वं। परत्थाणप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं। एवमप्पाबहुअं समत्तं। भुजगार-पदणिक्खेवो वड्ढीयो णत्थि, एगेगपयडिविवक्खत्तादो।

एत्तो उदीरणट्ठाणपरूवणा कीरदे— णाणावरणीयस्स उदीरणाए एक्कं चेव ट्ठाणं। एत्थ [सामित्तं] णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं च परूवेयव्वं। णाणावरणीयस्स ट्ठाणपरूवणा समत्ता। दंसणावरणीयस्स दुवे ट्ठाणाणि चदुण्णमुदीरणा पंचण्णमुदीरणा चेदि। एदेसिं ट्ठाणाणं सामित्तं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च कायव्वं। एवं दंसणावरणस्स ट्ठाणउदीरणा समत्ता।

वेयणीयस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा। मोहणीयस्स ट्ठाणउदीरणाए अत्थि एक्किस्से पवेसओ, दोण्णं पवेसओ, तिण्णं पवेसओ णत्थि, चदुण्णं पवेसओ अत्थि। एत्तो पाए णिरंतरं जाव दसण्णं पवेसओ त्ति वत्तव्वं[1]। एक्किस्से पवेसयस्स चत्तारि भंगा। तं जहा— कोधसंजलणस्स उदएण एगो भंगो, माणसंजलणस्स उदएण बिदियो भंगो, मायासंजलणस्स उदएण तिण्णि भंगा, लोभस्स उदएण चत्तारि भंगा। दोण्णं पवेसयस्स बारस भंगा। चदुण्णं पवेसयस्स चदुवीसभंगा। पंचण्णं पवेसयस्स चत्तारि चउवीसभंगा।

असाताके उदीरक स्तोक और साताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। एकेन्द्रिय जीवोंमें साताके उदीरक स्तोक और असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। आगे उपदेशको प्राप्तकर कथन करना चाहिये। परस्थान अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि अनुयोगद्वार यहां नहीं हैं; क्योंकि, एक एक प्रकृतिकी विवक्षा है।

आगे यहां उदीरणास्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है— ज्ञानावरणीयकी उदीरणाका एक ही स्थान है। यहां स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। ज्ञानावरणीयकी स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

दर्शनावरणीयके दो स्थान हैं— चारकी उदीरणाका एक स्थान और पांचकी उदीरणाका एक। इन स्थानोंके स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इस प्रकार दर्शनावरणकी स्थानउदीरणा समाप्त हुई।

वेदनीयकी स्थानउदीरणा नहीं है। मोहनीयकी स्थानउदीरणामें एक प्रकृतिका प्रवेशक (उदीरक) है, दो प्रकृतियोंका प्रवेशक है, तीन प्रकृतियोंका प्रवेशक नहीं है, चार प्रकृतियोंका प्रवेशक है। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकको आदि करके दस प्रकृतियोंके प्रवेशक तक इन स्थानोंका प्रवेशक निरन्तर है। इनमें एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग हैं। वे इस प्रकार हैं— संज्वलन क्रोधके उदयकी अपेक्षा एक भंग, संज्वलन मानके उदयकी अपेक्षा द्वितीय भंग, संज्वलन मायाके उदयकी अपेक्षा तृतीय भंग, और संज्वलन लोभके उदयकी अपेक्षा चतुर्थ भंग। दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह भंग होते हैं। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके चौबीस भंग होते हैं। पांच प्रकृतियोंके

---

१ जयध. (चू. सू.) अ. प. ७५६.

छण्णं पवेसयस्स सत्त चउवीस भंगा। सत्तण्णं पवेसयस्स दस चउवीस भंगा। अट्ठण्णं पवेसयस्स एक्कारस चउवीस भंगा। णवण्णं पवेसयस्स छ चदुवीस भंगा। दसण्णं पवेसयस्स एक्को चउवीस भंगा। एदेसिं भंगाणं पमाणपरूवणट्ठमेसा गाहा वुच्चदे। तं जहा—

एक्क य छक्केक्कारस दस सत्त चदुक्कमेक्कयं चेव।
दोसु य बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि[1] ॥ १ ॥

एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता। सामित्तपरूवणाए इमाओ बे सुत्तगाहाओ। तं जहा—

सत्तादि दसुक्कस्सं मिच्छे सण-मिस्सए णउक्कस्सं[2]।
छादी य णवुक्कस्सं[2] अविरदसम्मत्तमादिस्स ॥ २ ॥
पंचादि अट्ठणिहणा विरदाविरदे उदीरणट्ठाणा।
एगादी तियरहिदा सत्तुक्कस्सा य विरदस्स[3] ॥ ३ ॥

प्रवेशकके चार चौवीस (२४×४) भंग होते हैं। छह प्रकृतियोंके प्रवेशकके सात चौवीस (२४×७) भंग होते हैं। सात प्रकृतियोंके प्रवेशकके दस चौवीस (२४×१०) भंग होते हैं। आठ प्रकृतियोंके प्रवेशकके ग्यारह चौवीस (२४×११) भंग होते हैं। नौ प्रकृतियोंके प्रवेशकके छह चौवीस (२४×६) भंग होते हैं। दस प्रकृतियोंके प्रवेशकके एक चौवीस (२४×१) भंग होते हैं। इन भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये यह गाथा कही जाती है। वह इस प्रकार है—

दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके क्रमसे एक, छह, ग्यारह, दस, सात, चार और एक [इतनी शलाकाओंसे युक्त चौवीस] भंग; दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह, तथा एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग होते हैं ॥ १ ॥

इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना समाप्त हुई। स्वामित्वकी प्ररूपणामें ये दो सूत्र गाथायें हैं। यथा—

सातको आदि लेकर उत्कर्षसे दस (७, ८, ९, १०) प्रकृतियों तकके चार स्थान मिथ्यात्व गुणस्थानमें होते हैं, अर्थात् इन चार स्थानोंका स्वामी मिथ्यादृष्टि है। सातको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ प्रकृतियों तकके तीन (७, ८, ९,) स्थान सासादन और मिश्र गुणस्थानमें होते हैं। छह प्रकृतियोंको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ तकके चार (६, ७, ८, ९) स्थान अविरतसम्यग्दृष्टिके होते हैं। पांचको आदि लेकर आठ प्रकृतियों तकके चार (५, ६, ७, ८) उदीरणास्थान विरताविरत (देशविरत) गुणस्थानमें होते हैं। एकको आदि लेकर उत्कर्षसे त्रिप्रकृतिक स्थानसे रहित सात प्रकृतियों तकके छह (१, २, ४, ५, ६, ७) उदीरणास्थान संयत जीवके होते हैं ॥ २-३ ॥

विशेषार्थ— यहां सात प्रकृतियोंको आदि लेकर दस प्रकृतियों तकके जो चार उदीरणा-

१ एक्कग-च्छेक्के[छक्के]क्कारस दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव। दोसु य बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि ॥ जयध. अ. प. ७५८. एक्क य छक्केयारं दस-सग-चदुरेक्कयं अपुणरुत्ता। एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥ गो. क. ४८८. २ ताप्रतौ 'ण उक्कस्सं' इति पाठः। ३ जयध. अ. प. ७५९. दस-णव-णवादि चउ-तिय-तिट्ठाण णवट्ठ-सग-सगादि चऊ। ठाणा छादि तियं च य चदुवीसगदा अपुव्वो त्ति ॥ गो. क. ४८९.

एदासु दोसु गाहासु भासिदासु मोहणीयसामित्तं समप्पदि। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— एक्किस्से पवेसओ केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। दोण्णं पवेसओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पंचण्णं पवेसयस्स जहण्णेण

स्थान मिथ्यादृष्टिके बतलाये गये हैं वे इस प्रकारसे सम्भव हैं— मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्कमेंसे एक, अप्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, संज्वलनचतुष्कमेंसे एक, तीन वेदोंमेंसे कोई एक, हास्य रति और अरति-शोकमेंसे एक युगल, तथा भय व जुगुप्सा; इन दस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है। इन दस प्रकृतियोंमें भय व जुगुप्सामेंसे किसी एकके विना नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है, भय व जुगुप्सा इन दोनोंके विना आठ प्रकृतियोंका स्थान होता है; तथा भय, जुगुप्सा व कोई एक अनन्तानुबन्धी कषाय इन तीन प्रकृतियोंके विना सातका स्थान होता है। ये तीन स्थान भी मिथ्यादृष्टिके ही सम्भव हैं। उपर्युक्त दस प्रकृतियोंके स्थानमेंसे एक अनन्तानुबन्धी कषायको कम करके मिथ्यात्व प्रकृतिके स्थानमें सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहण करनेपर नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है। इसमें भय व जुगुप्सामेंसे एकके विना आठका, तथा दोनोंके विना सातका स्थान होता है। ये तीन उदीरणास्थान सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही सम्भव हैं। इन तीनों स्थानोंमेंसे सम्यग्मिथ्यात्वको कम करके अनन्तानुबन्धी कषायको जोड़ देनेपर भी जो नौ, आठ व सात प्रकृतियोंके तीन उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी सासादनसम्यग्दृष्टि होता है। सम्यक्त्व प्रकृति, एक अप्रत्याख्यान कषाय, एक प्रत्याख्यान कषाय, एक संज्वलन कषाय, एक वेद, हास्यादिमेंसे एक युगल तथा भय व जुगुप्सा प्रकृतिको ग्रहण कर नौका; भय व जुगुप्सामेंसे एकके विना आठका, इन दोनोंके ही विना सातका, तथा उपशमसम्यग्दृष्टि एवं क्षायिकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षा सम्यक्त्व प्रकृतिको भी छोड़कर छहका; ये चार उदीरणास्थान अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पाये जाते हैं। अविरतसम्यग्दृष्टिके इन चार उदीरणास्थानोंमेंसे एक अप्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो आठ, सात, छह और पांच प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी संयतासंयत होता है। इसके उक्त चारों स्थानोंमेंसे एक प्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं वे प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरण इन तीन गुणस्थानोंमें पाये जाते हैं। संज्वलनचतुष्कमेंसे एक और तीन वेदोंमेंसे एक इन दो प्रकृतियोंका स्थान, तथा एक मात्र अन्यतर संज्वलन प्रकृतिका स्थान, ये दो स्थान अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्राप्त होते हैं। तीन प्रकृतियोंके स्थानकी सम्भावना ही नहीं है। तथा सूक्ष्म लोभकी अपेक्षा एक प्रकृतिक स्थान सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें भी होता है, इतना यहां विशेष जानना चाहिये।

इन दो गाथाओंकी प्ररूपणा करनेपर मोहनीय कर्मका स्वामित्व समाप्त होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है। दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है। चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका

एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। णवण्णं[1] दसण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमेगजीवेण कालो समत्तो।

एगजीवेण अंतरं— दसण्णं पवेसयस्स अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वेछावट्ठिसागरोवमाणि। णवण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। जहा छण्णं तहा पंचण्णं। चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं। एवं दोण्णमेक्किस्से पवेसयस्स वत्तव्वं। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— दसण्णं णवण्णं अट्ठण्णं सत्तण्णं छण्णं पंचण्णं चदुण्णं पवेसया जीवा णियमा अत्थि। दोण्णमेक्किस्से पवेसया जीवा भजिदव्वा। एवं णाणा-

---

काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। नौ और दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है। नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है। आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। जैसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल है वैसे ही पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर काल है। चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकारसे दो प्रकृतियोंके और एक प्रकृतिके उदीरकके अन्तरकालका कथन करना चाहिये। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव नियमसे हैं। दो और एक प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव भजनीय हैं।

---

१ ताप्रतौ 'एवं णवण्णं' इति पाठः।

जीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो— एक्किस्से दोण्णं च पवेसया जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसट्ठाणप्पवेसयाणं कालो सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं— एक्किस्से दोण्णं च पवेसंतरं जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो— एक्किस्से पवेसओ वेण्हमप्पवेसओ,[1]। एवं सेसाणं वत्तव्वं। एवं सव्वट्ठाणाणं परूवणा कायव्वा[2]। एवं सण्णियासो समत्तो।

[अप्पा बहुअं-]सव्वत्थोवा एक्किस्से पवेसया। दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। पंचण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। छण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। दसण्णं पवेसया अणंतगुणा। णवण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा।

आदेसेण णिरयगदीए सव्वत्थोवा छण्णं पवेसया। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— एक व दो प्रकृतियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं। शेष स्थानोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— एक और दो प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास तक होता है। शेष प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक नहीं होता है। इसी प्रकारसे चार, पांच आदि शेष प्रकृतिक स्थानोंको कहना चाहिये। इस प्रकार सब स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व—एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। उनसे दो प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे चार प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आदेशकी अपेक्षा नरकगतिमें छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं।

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'वेण्हं पवेसओ' इति पाठः। २ सण्णियासो। एत्तो सण्णियासो कायव्वो त्ति अहियार-संभालणवक्कमेदं। एक्किस्से पवेसगो दोण्हमप्पवेसगो। कुदो? परोप्परविरुद्धसहावत्तादो। चउण्हं पंचण्हं छण्हं सत्तण्हं अट्ठण्हं णवण्हं दसण्हं च अपवेसगो त्ति एदमत्थदो लब्भदे, एक्किस्से पवेसगस्स सेसासेसट्ठाणाणमपवेसय-भावस्स देसामासयभावेणेदस्स पयट्टत्तादो। एवं सेसाणं। सुगमं। उच्चारणाहिप्पाएण सण्णियासो णत्थि त्ति, तत्थ सत्तारसण्हमेवाणिओगद्दाराणं परूवणादो। जयध. अ. प. १७६३–६४.

दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा । णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं सव्वणेरइय-देव-भवणादि जाव सहस्सारे त्ति ।

तिरिक्खेसु पंचपवेसया थोवा । छप्पवेसया असंखेज्जगुणा । उवरि ओघं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स । णवरि दसपवेसया असंखेज्जगुणा । पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस-अपज्जत्तएसु दसपवेसया थोवा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्जगुणा । मणुस्सेसु एक्किस्से पवेसया थोवा, दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, [चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा,] पंचण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, छण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, सत्तण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा, णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं [मणुस] पज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कायव्वं । आणदादि जाव णवगेवज्ज त्ति दसण्णं पवेसया थोवा, छप्पेवसया संखेज्जगुणा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्जगुणा, सत्तपवेसया संखेज्जगुणा । एवमणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठे त्ति । णवरि दसपवेसया णत्थि ।

आउअस्स ट्ठाणदीरणा णत्थि । णिरयगईए णामस्स[1] एक्कवीस पंचवीस सत्तावीस

नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे सब नारक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार स्वर्ग तकके देवोंके विषयमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

तिर्यंचोंमें पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक हैं । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । आगे ओघके समान कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीनके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, नौके उदीरक संख्यातगुणे तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्योंमें एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, दोके उदीरक संख्यातगुणे, [चारके उदीरक संख्यातगुणे,] पांचके उदीरक संख्यातगुणे, छहके उदीरक संख्यातगुणे, सातके उदीरक संख्यातगुणे, दसके उदीरक असंख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि जहां मनुष्योंमें असंख्यातगुणा कहा गया है वहां इनमें संख्यातगुणा कहना चाहिये । आनत स्वर्गको आदि लेकर नौ ग्रैवेयक पर्यंत देवोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, छहके उदीरक संख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, आठके उदीरक संख्यातगुणे और सातके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमान तक कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां दसके उदीरक नहीं हैं ।

आयु कर्मकी स्थानउदीरणा नहीं है । नरकगतिमें नामकर्मके इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस,

---

१ काप्रतौ 'णिरयगईणामस्स' इति पाठः ।

अट्ठावीस एगुणतीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि होंति |२१|२५|२७|२८|२९| । तत्थ इगिवीस-पयडिउदीरणट्ठाणं वुच्चदे । तं जहा—णिरयगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एदाओ पयडीओ घेत्तूण एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ठाणस्स को सामी ? विग्गहगदीए वट्टमाणो णेरइयो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । एदस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया ।

आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि । तं कस्स ? सरीरगहिदणेरइयस्स । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरगहिदपढमसमयमादिं कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति, अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि ।

परघाद-अप्पसत्थ[1]विहायगदीसु पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्तासु सत्तावीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति । एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो ।

अट्ठाईस और उनतीस प्रकृतियोंके पांच (२१, २५, २७, २८, २९) उदीरणास्थान होते हैं । उनमें इक्कीस प्रकृतियोंके उदीरणास्थानकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ. दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और निर्माण; इन प्रकृतियोंको ग्रहण कर इक्कीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है ।

शंका—इस स्थानका स्वामी कौन है ?

समाधान—विग्रहगतिमें वर्तमान सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नारक जीव उक्त स्थानका स्वामी है ।

इसका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह किसके होता है ? वह जिसने शरीर ग्रहण कर लिया है ऐसे नारक जीवके होता है । वह कितने काल तक होता है ? शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयको आदि करके शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । अभिप्राय यह कि वह अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है ।

पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात और अप्रशस्त विहायोगति इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कितने काल रहता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि लेकर आनप्राण पर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

---

१ काप्रतौ 'परघादप्पसत्थ-', ताप्रतौ 'परघाद- [अ-] पसत्थ-' इति पाठः ।

पुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणं उदीरणट्ठाणं होदि। तं केवचिरं कालादो होदि ? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासापज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति। एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो।

पुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि। एदस्स अद्धाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति। तस्स कालो जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोवमाणि।

तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति णव उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ एइंदियाणमेक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवुदएण सहिदएइंदियस्स पणुवीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस - फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दूभगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमेदाहि एक्कवीसपयडीहि एग-

---

पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कितने काल तक रहता है ? आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके भाषापर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक रहता है। यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। इसका अध्वानं भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके अपनी अपनी आयुःस्थितिके अन्तिम समय तक है। उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है।

तिर्यंगतिमें इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृतियोंके नौ उदीरणास्थान हैं। उनमें एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस और सत्ताईस प्रकृतियोंके पांच उदीरणास्थान सम्भव हैं। उनमेंसे आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईसके विना चार उदीरणास्थान होते हैं। आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृति रूप स्थानके विना चार उदीरणास्थान होते हैं। उनमें आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उक्त चार स्थानोंका कथन करनेपर तिर्यंगति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, स्थावर, बादर व सूक्ष्ममेंसे एक, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण, इन इक्कीस

मुदीरणाट्ठाणं होदि । तं कत्थ ? विग्गहगदीए वट्टमाणएइंदियम्मि होदि । तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेय-साहारणमेसरीराणमेकदरे पक्खित्ते चउवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि। तं कत्थ? गहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्मि अद्धाणे[1] । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पुणो अपज्जत्तमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं कत्थ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं कस्स ? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । तं केवचिरं ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्साणि ।

आदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे— एक्कवीस-चउवीसउदीरणट्ठाणाणं पुव्वं [व] परूवणा कायव्वा । पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-आदावुज्जोवाणमेकदरे च

प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान एकेन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय तक होता है।

पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, उपघात तथा प्रत्येक व साधारण शरीरमेंसे एक, इन चार प्रकृतियोंको मिला देनेपर चौबीस प्रकृतिक उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता ? वह शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक, इस अध्वानमें होता है। वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है ?

फिर इनमेंसे अपर्याप्तको कम करके शेष चौबीस प्रकृतियोंमें परघातको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है। वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त एकेन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह किसके होता है ? वह आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल होता है। वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष तक होता है।

अब आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं— इक्कीस और चौबीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये। पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवकी पूर्वोक्त चौबीस प्रकृतियोंमें परघात और आतप-उद्योतमेंसे

---

१ काप्रतौ 'अद्धाणं' इति पाठः ।

पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसट्ठाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्ठाणमुप्पज्जदि। तं कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। तं केवचिरं ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं। तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीस-पयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि।

विगलिंदियाणं सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवउदयविरहिदविगलिंदियाणं पंच उदीरणट्ठाणाणि, एक्कत्तीस-उदीरणट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तविगिलिंदियस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि, परघा-दुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीणमक्कमपवेसेण अट्ठावीसट्ठाणाणुप्पत्तीदो।

उज्जोवुदयविरहिदबेइंदियस्स ताव उच्चदे। तं जहा-[तिरिक्खगइ-] बेइंदिय-जादि तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस - फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज जस-अजसगित्तीण-मेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीसपयडीणमेगं ट्ठाणं। तं कस्स ? बेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स। तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एदासु एक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण गहिदसरीरपढमसमए ओरालियसरीर-

---

किसी एकके मिलानेपर पच्चीस प्रकृतिक स्थानका उल्लंघन करके छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न होता है। वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक रहता है। आन-प्राणपर्याप्ति-से पर्याप्त हुए उक्त जीवकी छब्बीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है।

विकलेन्द्रिय जीवोंके सामान्यसे इक्कीस, छब्बीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृति रूप ये छह उदीरणास्थान होते हैं। परन्तु उद्योतके उदयसे रहित विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उनके इकतीस प्रकृति रूप उदीरणास्थान नहीं होता। उद्योतके उदयसे संयुक्त विकलेन्द्रियके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि उनके परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंका युगपत् प्रवेश होनेसे अट्ठाईस प्रकृतियों-का स्थान उत्पन्न नहीं होता।

उद्योतके उदयसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं। यथा— [तिर्य-ग्गति,] द्वीन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है। वह किसके होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय रहता है। इन इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर,

हुंडसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। तं कस्स ? वेइंदियस्स सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदस्स[1]। तं केव-चिरं ? जहण्णुणक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु अपज्जत्त-मवणिय परघाद-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाण-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसट्ठाणं होदि। भासा-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि उज्जोवुदयसंजुत्तवेइंदियस्स भण्णमाणे एक्कवीस-छव्वीसाओ जधा पुव्वं वुत्ताओ तधा वत्तव्वाओ। पुणो छव्वीसाए उवरि परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एक्कतीसाए ट्ठाणं होदि। एदस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबारसवासाणि। एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि वत्तव्वं। णवरि तीसेक्कत्तीसाणं कालो जहाकमेण एगुणवण्णरादिं-दियाणि छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा।

हुण्डकसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतिक स्थान होता है। वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त न हुए द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कपसे अन्तमुहूर्त रहता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और अप्रशस्त विहायोगतिको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

अब उद्योतके उदयसे संयुक्त द्वीन्द्रिय जीवके स्थानोंका कथन करते समय इक्कीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा जैसे पहिले की गई है वैसे ही करना चाहिये। पुनः छब्बीस प्रकृति रूप स्थानके ऊपर परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंको मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके एक उच्छ्वास प्रकृतिके मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवके दुस्वर प्रकृतिके मिला देनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। इसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष प्रमाण है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके भी स्थानोंका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तीस और इकतीस प्रकृति रूप स्थानोंका काल यथाक्रमसे अन्तर्मुहूर्त कम उनंचास रात्रि-दिवस और अन्त-र्मुहूर्त कम छह मास प्रमाण है।

---

१ काप्रतौ 'पज्जत्तयदस्स', ताप्रतौ '[अ-] पज्जत्तयदस्स' इति पाठः।

पंचिंदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स पंच उदीरणट्ठाणाणि। कुदो ? तत्थ एक्कत्तीसाए उदयाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि। कुदो ? तत्थ अट्ठावीसट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसट्ठाणं[1] — तिरिक्खगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च, एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चेव ट्ठाणं। सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणिय ओरालियसरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघादं पत्तेयसरीरमिदि छसु पयडीसु पक्खित्तासु[2] छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादे[3] दोण्णं विहायगदीणमेक्कदरे च पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एदिस्से तीसाए कालो जहण्णेण अंतो-

पंचेन्द्रिय तिर्यंचके सामान्यसे इक्कीस, छव्वीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृति रूप छह उदीरणास्थान होते हैं। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उसके इकतीस प्रकृतिरूप उदीरणास्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, वहां अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके स्थानोंकी प्ररूपणा करते समय उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थान यह है— तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग और दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक ही स्थान होता है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहननोंमेंसे एक, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छव्वीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी उन छव्वीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और दो विहायोगतियोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका स्थान होता है। उक्त जीवके आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एकको मिला देनेपर तीस प्रकृतियोंका स्थान

१ काप्रतौ 'इदमेक्कवीसट्ठाणाणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'पक्खित्ता' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'परघाद' इति पाठः।

मुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि।

उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स एक्कवीस-छव्वीसउदीरणट्ठाणाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादुज्जोवेसु पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरे च पविट्ठेसु एगूणतीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पविट्ठे एक्कत्तीसाए ट्ठाणं होदि। एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि।

मणुस्साणं सामण्णेण वीसेक्कवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस इदि णव उदीरणट्ठाणाणि। सामण्णमणुस्सा विसेसमणुस्सा विसेसविसेसमणुस्सा चेदि तिविहा मणुस्सा होंति। तत्थ सामण्णमणुस्साणं वुच्चदे। तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुहासुह सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं चेदि एदासिं पयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं। गहिदसरीरस्स[1] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीमवणेदूण ओरालिय-

---

होता है। तीस प्रकृति रूप इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है।

उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके इकीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंका कथन पहिलेके समान ही करना चाहिये। पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी उक्त छब्बीस प्रकृतियोंमें परघात, उद्योत और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन तीन प्रकृतियोंके प्रविष्ट होनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उनमें एक उच्छ्वासके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके उपर्युक्त प्रकृतियोंमें प्रविष्ट होनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है।

मनुष्योंके सामान्यसे वीस, इकीस, पचीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस; ये नौ उदीरणास्थान होते हैं। सामान्य मनुष्य, विशेष मनुष्य और विशेषविशेष मनुष्य इस प्रकारसे मनुष्योंके तीन भेद हैं। उनमें सामान्य मनुष्योंके उदीरणास्थनोंका कथन करते हैं। यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग व दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति व अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म, इन प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिक-

---

1 ताप्रतौ 'गहिदस्स सरीरस्स' इति पाठः।

सरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघाद-पत्तेयसरीरं च घेत्तूण पक्खित्ते छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि आहारसरीरोदइल्लाणं विसेसमणुस्साणं भण्णमाणे तेसिं पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीसं चेदि चत्तारिउदीरणट्ठाणाणि। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-आहार-तेजा[1]-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं पणुवीसपयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि।

विसेसविसेसमणुस्साणं वीस-एक्कवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-

---

शरीरांगोपांग, छह संहननोंमें एक, उपघात और प्रत्येकशरीर इन प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेसे छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर अपर्याप्तको कम करके परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतिरूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे उनतीस प्रवृत्ति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है।

अब आहारशरीरके उदयसे संयुक्त विशेष मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करनेपर उनके पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस प्रकृति रूप चार उदीरणास्थान होते हैं। मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, आहारकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्म; इन पचीस प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें परघात और प्रशस्तविहायोगतिके मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके मिला देनेसे उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

विशेषविशेष मनुष्योंके बीस, इक्कीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और

---

१ काप्रतौ 'जादि-तेजा' इति पाठः।

एक्कत्तीसं चेदि अट्ठ उदीरणट्ठाणाणि । तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं वीसण्णं पयडीणमेगं चेव ट्ठाणं । तं कस्स ? पदर-लोगवूरणगदसजोगिकेवलिस्स । जदि तित्थयरो तो तित्थयरेण सह एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि । कवाडं गदस्स ओरालियसरीरं समचउरससंठाणं, तित्थयरुदयरहियाणं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं, ओरालियसरीरंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं उवघादं पत्तेयसरीरं च वीसाए एक्कवीसाए वा पक्खित्ते छव्वीसाए सत्तवीसाए वा ट्ठाणं होदि । दंडं गदस्स परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण छव्वीसाए सत्तवीसाए च पक्खित्ते अट्ठवीसाए एगुणतीसाए वा ट्ठाणं होदि । णवरि तित्थयराणं पसत्थविहायगदी एक्का चेव उदेदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए तीसाए च ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पविट्ठे तीसाए एक्कतीसाए वा ट्ठाणं होदि । णवरि तित्थयराणं दुस्सर-अप्पसत्थविहायगदीणमुदओ णत्थि ।

संपहि एक्कत्तीसंपयडीणं णामणिद्देसो कीरदे । तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-

---

इकतीस, ये आठ उदीरणास्थान होते हैं । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण; इन बीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है । वह किसके होता है ? वह प्रतर व लोकपूरण समुद्घातगत सयोगकेवलीके होता है । वह यदि तीर्थंकर होता है तो तीर्थंकर प्रकृतिके साथ इक्कीस प्रकृति रूप स्थान होता है । कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवलीके औदारिकशरीर, [यदि वह तीर्थंकर है तो] समचतुरस्रसंस्थान, तीर्थंकर प्रकृतिके उदयसे रहित केवलियोंके छह संस्थानोंमेंसे कोई एक, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको बीस अथवा इक्कीस प्रकृति रूप स्थानमें मिला देनेपर छब्बीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । दण्डसमुद्घातको प्राप्त केवलीकी अपेक्षा परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे किसी एकको ग्रहण कर छब्बीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थानोंमें मिला देनेसे अट्ठाईस अथवा उनतीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके एक प्रशस्त विहायोगतिका ही उदय होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त दो स्थानोंमें एक उच्छ्वास प्रकृतिको मिला देनेसे क्रमशः उनतीस और तीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर व दुस्वरमेंसे किसी एकके प्रविष्ट होनेपर तीस अथवा इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके दुस्वर और अप्रस्त विहायोगतिका उदय नहीं होता ।

अब इकतीस प्रकृतियोंके नामोंका निर्देश किया जाता है । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभ-

वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरं चेदि एदाओ एक्कत्तीसपयडीओ तित्थयरो उदीरेदि। एदस्स कालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण गब्भादिअट्ठवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी। सेसाणं ट्ठाणाणं कालो[1] जाणिगूण वत्तव्वो।

देवगदीए एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीसं[2]अट्ठावीस-एगुणतीसउदीरणट्ठाणाणि होंति। तत्थ एक्कवीसाए पयडिपरूवणं कस्सामो। तं जहा—देवगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि। एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पविट्ठे अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पविट्ठे एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। एदस्स ट्ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तूणदसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोव-

संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और तीर्थंकर; इन इकतीस प्रकृतियोंकी उदीरणा तीर्थंकर करते हैं। इसका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षतः गर्भसे लेकर आठ वर्षोंसे हीन एक पूर्वकोटि प्रमाण है। शेष स्थानोंके कालका कथन जानकर करना चाहिये।

देवगतिमें इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस; ये पांच उदीरणास्थान होते हैं। उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थानकी प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— देवगति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण। इस स्थानका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन पांच प्रकृतियोंको मिलानेपर पच्चीस प्रकृति रूप स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर परघात और प्रशस्त विहायोगति, इन दो प्रकृतियोंको उपर्युक्त प्रकृतियोंमें मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वास प्रकृतिके प्रविष्ट होनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके प्रविष्ट होनेसे उनतीस प्रकृतिरूप स्थान होता है। इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। इन स्थानोंका एक जीवकी अपेक्षा

१ काप्रतौ 'सेसाणं कालो' इति पाठः। २ काप्रतौ 'सत्तावीस' इति पाठः।

वमाणि। एदेसिं ट्ठाणाणमेयजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च जाणिदूण वत्तव्वं। गोदस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा। अंतराइयस्स एक्कं चेव ट्ठाणं। एवं ट्ठाणपरूवणा समत्ता।

एत्तो भुजगारुदीरणा वुच्चदे। तं जहा— दंसणावरणीयस्स अत्थि भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाओ, अवत्तव्वउदीरणा णत्थि। एवं परूवणा समत्ता।

एत्थ सामित्तं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं को उदीरगो? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा। एवं सामित्तं समत्तं।

कालो— भुजगार-अप्पदराणं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं कालो समत्तो।

अंतरं— एयजीवेण भुजगार-अप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिदउदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ[1]। एवमंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे। तं जहा— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

कालो— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। गोत्र कर्मकी स्थानउदीरणा सम्भव नहीं है। अन्तराय कर्मका एक ही स्थान है। इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां भुजाकारउदीरणाका कथन करते हैं। यथा— दर्शनावरणीय कर्मकी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणायें हैं; अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां स्वामित्व— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन है? अन्यतर मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर— एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

काल— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

---

१ ताम्रतौ 'भुजगारअप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ' इति पाठः।

अंतरं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पाबहुअं— भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा । एवमप्पाबहुगं समत्तं ।

मोहणीयस्स सामित्तं वुच्चदे— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणमुदीरओ को होदि ? अण्णदरो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । अवत्तव्वउदीरओ को होदि ? मणुसो वा मणुसिणी वा देवो वा सम्माइट्ठी । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— भुजगारउदीरओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया । कुदो ? वेद-कसाय-भय-दुगुंछासु कमेण उदिण्णासु चदुण्णं समयाणमुवलंभादो । अधवा सेडीदो परिवदमाणस्स हस्स-रदीहि सह एक्को, भएण एक्को, दुगुंछाए एक्को, कालगदस्स एक्को, एवं चत्तारि समया । अप्पदरस्स जहण्णमेगसमओ, उक्कस्सं तिण्णि समया । अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— भुजगारस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवमप्पदर-अवट्ठिदाणं । अवत्तव्वं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्समुवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवमंतरं समत्तं ।

अन्तर— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका अन्तर नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व— भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य होकर स्तोक हैं । अवस्थित उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

मोहनीय कर्मके स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन होता है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि उनका उदीरक होता है । अवक्तव्य उदीरक कौन होता है ? सम्यग्दृष्टि मनुष्य, मनुष्यनी और देव उसका उदीरक होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय है, क्योंकि वेद, कषाय, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंकी क्रमसे उदीरणा होनेपर चार समय पाये जाते हैं । अथवा श्रेणिसे नीचे गिरते हुए जीवके हास्य व रतिके साथ एक समय, भयके साथ एक समय, जुगुप्साके साथ एक समय, तथा कालको प्राप्त हुएका एक समय; इस प्रकार चार समय पाये जाते हैं । अल्पतरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय है । अवस्थितका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— भुजाकारका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इसी प्रकार अल्पतर और अवस्थित उदीरणाका अन्तर है । अवक्तव्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्वउदीरया च, धुवससहिया तिण्णि[1]। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

कालो— अवत्तव्वउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जा समया। सेसाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो। अंतरं— अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं— अवत्तव्वउदीरया थोवा। भुजगारउदीरया अणंतगुणा। अप्पदर-उदीरया विसेसाहिया खवगसेडिं पडुच्च। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

पदणिक्खेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो उवसामओ एगपयडिउदीरओ मदो देवो जादो, ताधे अट्ठ उदीरेदि, तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। तस्सेव उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो मिच्छाइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि, संपहि भय-दुगुंछाणं वेदगो, से काले पढमसमयसंजदो जादो भय-दुगुंछाणमवेदगो, तस्स मिच्छत्त-

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक एक, कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक बहुत, इस प्रकार इन दो भंगोंमें ध्रुवभंगको मिलानेपर तीन भंग होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

काल— अवक्तव्यउदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय प्रमाण है। शेष उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर— अवक्तव्यउदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है। शेष उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व— अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं। उनसे भुजाकारउदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे क्षपकश्रेणिकी अपेक्षा अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं। अर्थात् क्षपकश्रेणिमें मोहनीयका अल्पतर पद ही होता है, भुजाकार पद नहीं होता; इस अपेक्षासे भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरक विशेष अधिक कहे गये हैं। इनसे अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदनिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो उपशामक एक प्रकृतिका उदीरक होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है, तब वह आठकी उदीरणा करता है, उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके [अनन्तर समयमें] उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो मिथ्यादृष्टि अनन्तर समयमें संयमको प्राप्त होगा वह अभी भय व जुगुप्साका वेदक है, अनन्तर समयमें वह प्रथमसमयवर्ती संयत होकर उनका अवेदक हो जाता है, उस मिथ्यात्वसे

१ भुज० अप्प० अवट्ठि० उदीर० णिय० अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वओ च सिया एदे च अवत्तव्वगा च भंगा तिण्णि ३। जयध. अ. प. ७६७.

पच्छायदस्स पढमसमयसंजदस्स उक्कस्सिया हाणी। एवं सामित्तं समत्तं।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं। जहण्णिया वड्ढी जहण्णिया हाणी जहण्णमवट्ठाणं च एया पयडी। सेसं चिंतिय वत्तव्वं। एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

एत्तो वड्ढिउदीरणा— अत्थि संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढिउदीरओ, एदेसिं चेव हाणीओ अवट्ठाणमवत्तव्वं च।

अवत्तव्वउदीरया थोवा। संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढि-उदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवं णामकम्मस्स वि जाणिऊण वत्तव्वं। पयडिउदीरणा समत्ता।

ठिदिउदीरणा[1] दुविहा— मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणा चेदि। मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा दुविहा— जहण्णिया उक्कस्सिया चेदि। तत्थ उक्कस्सिया ठिदि-उदीरणा णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ[2]। एवं णामा-गोदाणं। णवरि वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ

आये हुए प्रथम समयवर्ती संयतके उत्कृष्ट हानि होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

हानि स्तोक है, उससे वृद्धि और अवस्थान दोनों समान होकर विशेष अधिक हैं। जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान एक प्रकृति स्वरूप हैं। शेष प्ररूपणा विचार कर करना चाहिये। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

यहां वृद्धिउदीरणा— संख्यातभागवृद्धिउदीरक और संख्यातगुणवृद्धिउदीरक हैं। इनकी ही हानियोंके उदीरक अर्थात् संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि उदीरक, अवस्थानउदीरक तथा अवक्तव्यउदीरक हैं।

अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं। उनसे संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यात-गुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे संख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं। अवस्थितउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकारसे नामकर्मकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। प्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

स्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणा। मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट। उनमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। इसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मकी भी स्थितिउदीरणा समझना चाहिये।

---

१ संपत्तिए य उदए पओगओ दिस्सए उईरणा सा। सेची(वी)का-ठिइहिं ता जाहिं तो तत्तिगा एसा॥ क. प्र. ४,२९. तथा चाह— या स्थितिरकालप्राप्तापि सती प्रयोगत उदीरणाप्रयोगेण संप्राप्त्युदये पूर्वोक्तस्वरूपे प्रक्षिप्ता सती दृश्यते केवल-चक्षुषा सा स्थित्युदीरणा (मलयगिरि)। २ तत्रोदये सति यासां प्रकृतीनामुत्कृष्टो बन्धः सम्भवति तासामुत्कर्षत आवलिकाद्विकहीना सर्वाप्युत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या। क. प्र. ४,२९ (मलय.)।

वेहि आवलियाहि ऊणाओ। उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा मोहणीयस्स[1] सत्तरिसागरोवम-कोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ। आउअस्स उक्कस्सिया ठिदिउदीरणा तेत्तीसं सागरोवमाणि एगावलियाए ऊणाणि। एवमुक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा एया ट्ठिदी। सा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयखीणकसायस्स। मोहणीयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी। सा कस्स? समयाहियावलियचरिम-समयसुहुमसांपराइयखवगस्स। वेदणीयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणा। णामा-गोदाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा अंतोमुहुत्तमेत्ता समयूणावलियाए ऊणा, अजोगिअद्धा चरिमफाली च होदि त्ति भणिदं होदि। आउअस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी। तं कत्थ? मरणकाले समयाहियावलियसेसे। एवं मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

उत्तरपयडीसु उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेयणीय-पंचण्णमंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि

विशेषता यह है कि उनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवलीसे रहित तेतीस सागरोपम प्रमाण है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थितिउदीरणा— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह किसके होती है? वह जिसके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकपाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेप रही है उसके होती है। मोहनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह किसके होती है? वह जिस जीवके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-साम्परायिक क्षपक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेप रहा है उसके होती है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिउदीरणा सागरोपमके पल्योपमका असंख्यातवां भाग हीन तीन बटे सात भाग($\frac{3}{7}$) प्रमाण होती है। नाम और गोत्रकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक समय कम आवलीसे हीन अन्तर्मुहूर्त मात्र होती है। अभिप्राय यह कि वह अयोगकेवलीके काल और अन्तिम फालि रूप होती है।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह कहांपर होती है? वह मरण-समयमें एक समय अधिक आवलीके शेप रहनेपर होती है। इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा समाप्त हुई।

उत्तर प्रकृतियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पांच अन्त-रायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियों (बन्धावली और उदयावली) से कम तीस कोड़ाकोड़ि

---

१ ताप्रतौ 'ट्ठिदिउदीरणा। मोहणीयस्स' इति पाठः।

ऊणाओ। सादस्स तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ[1]।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ अंतोमुहुत्तूणाओ। सोलसण्णं कसायाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ। णवणोकसायाणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ[2]। णिरय-देवाउआणं उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा तेत्तीससागरोवमाणि आवलिऊणाणि। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि।

णिरयगइ-तिरिक्खगइ एइंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-हुंडसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिण-णीचागोदाणमुक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ। मणुसगइ-पंचसंठाण-पंचसंघडण-पसत्थविहायगइ-थिरादि-

---

सागरोपम प्रमाण है। साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियों (बन्धावली, संक्रमणावली और उदयावली) से हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तर्मुहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमप्रमाण है। नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

नारकआयु और देवायुकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। तिर्यगायु और मनुष्यायुकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है।

नरकगति, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, हुण्डकसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगति व तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। मनुष्यगति, पांच संस्थान, पांच संहनन, प्रशस्त विहायो-

---

१ येषां तु कर्मणां मनुजगति-सातावेदनीय...एकोनत्रिंशत्संख्याकानामुदए सति संक्रमेणोत्कृष्टा स्थितिः, तेषामावलिकात्रिकहीना सर्वा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या, केवलं तानि कर्माणि वेद्यमानानां वेदितव्या। क. प्र. (मलय) ४,३२। २ ओघेण मिच्छ० उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ। सम्म० सम्मामि०......। जयध. अ. प. ७१३।

छक्क-उच्चागोदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ। देवगदि-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-देव-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहरणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा वीसं कोडाकोडिसागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणाणि। आहारदुगस्स अंतोकोडाकोडिसागरोवमाणि उदीरणा। तित्थयरस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एवमुक्कस्सओ अद्धाच्छेदो समत्तो।

जहण्णए पयदं— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सम्मत्त-तिण्णिवेद-चत्तारिसंजलण[1]-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी[2]। थीणगिद्धितिय-सादासाद-बारसकसाय-छण्णोकसाय[3]-एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-तिरिक्ख-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-दूभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा चत्तारि सत्त भागा बे सत्त भागा पलिदोवमस्स[4] असंखेज्जदिभागेण ऊणया। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-

गति, स्थिर आदि छह और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। देवगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, देवगति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर; इनकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा अन्तर्मुहूर्त कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। आहारद्विककी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तः-कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। इस प्रकार उत्कृष्ट अद्धाच्छेद समाप्त हुआ।

जघन्य अद्धाच्छेद प्रकृत है— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, तीन वेद, चार संज्वलन, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है। स्त्यानगृद्धि आदि तीन, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, छह नोकषाय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जाति, पांच संहनन, तिर्यग्गति, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सात भागोंमेंसे तीन, चार और दो भाग ($\frac{3}{7}$, $\frac{4}{7}$, $\frac{2}{7}$) प्रमाण है। अर्थात् दर्शनावरण व वेदनीयकी प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम तीन बटे सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम चार बटे सात भाग प्रमाण तथा नामकर्म और गोत्र कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्यका असंख्यातवां भाग कम दो बटे सात भाग प्रमाण जघन्य स्थितिउदीरणा होती है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर,

१ ताप्रतौ 'चत्तारिकसायसंजलग–' इति पाठः। २ ओघेण मिच्छ० सम्म० चदुसंजल० तिण्णिवेद जह० ट्ठिदिउदी० एया ट्ठिदी समयाहियावलियट्ठिदी। जयध. अ. प. ७९३. ३ बारसक० छण्णोक० जह० ट्ठिदिउदी० सागरोवमस्स चत्तारि सत्त भागा पलिदो० असंखे० भागेणूणा। जयध. अ. प. ७९३. ४ मतिपाठोऽयम्। उभयोरेव प्रत्योः 'सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा पलिदोवम०' इति पाठः।

छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास- अगुरुअलहुअ-उव-घाद-परघाद-उस्सास- दोविहायगइ-तस - बादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहण्णिया ठिदि-उदीरणा अंतोमुहुत्तं। सा कत्थ ? सजोगिचरिमसमए। वेगुव्वियछक्कस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमसहस्स-बेसत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया। णवरि वेउव्वियसरीस्स सागरोवमस्स वे सत्त भागा देसूणा। उव्वेलणं पडुच्च सम्मा-मिच्छत्तस्स जहण्णिया ठिदिउदीरणा सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं[1]। सा पुण उव्वेल्लमाणेण सम्मामिच्छत्तपाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं कादूण सम्मामिच्छत्ते पडिवण्णे तस्स चरिमसमए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। आहारदुगस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा अंतोकोडाकोडी। एवं जहण्णट्ठिदिअद्धाछेदो समत्तो।

एत्तो सामित्तं— पंचणाणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण आवलियादिक्कंतो एइंदिओ वा पंचिंदियो वा पज्जत्तो वा अपज्जत्तो वा। जदि अपज्जत्तो जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो। अपज्जत्तो त्ति वुत्ते कस्स गहणं ? णेरइओ वा बादरपत्तेयसरीरएइंदिओ गब्भोवक्कंतिओ णवुंसओ वा

छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उप-घात, परघात, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और उच्चगोत्र; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण है। वह कहांपर होती है ? वह सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें होती है। वैक्रियिकशरीर आदि छह प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक हजार साग-रोपमोंके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन दो भागप्रमाण है। विशेष इतना है कि वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे कुछ कम दो भाग प्रमाण है। उद्वेलनाकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिउदीरणा पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है। परन्तु वह जघन्य स्थितिउदीरणा उद्वेलना-को करनेवाले जीवके सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके योग्य जघन्य स्थितिसत्त्वको करके सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेपर उसके अन्तिम समयमें होती है। आहारद्विककी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। इस प्रकार जघन्य स्थितिअद्धाच्छेद समाप्त हुआ।

यहां स्वामित्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर जिसने आवली मात्र कालको विताया है ऐसा एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय, पर्याप्त व अपर्याप्त जीव उसका उदीरक होता। यदि अपर्याप्त है तो वह आवली कालवर्ती तद्भवस्थ होने तक उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है।

शंका— 'अपर्याप्त' कहनेपर किसका ग्रहण किया गया है ?

समाधान— नारक, बादर प्रत्येकशरीर एकेन्द्रिय और गर्भोपक्रान्तिक नपुंसकका ग्रहण

---

१ सम्मामि० जह० ट्ठिदिउदी० सागरोवमपुधत्तं। जयध. अ. प. ७९३.

घेत्तव्वो। जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा चत्तारिदंसणावरणीय-असादावेदणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-णिमिण-हुंडसंठाण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं च वत्तव्वं।

सादस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो असादस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधेदूण पडिभग्गो संतो सादं बंधमाणो आवलियूणमसादुक्कस्सट्ठिदिं पडिच्छिय संकमणावलियकालं गमिय उदयावलियबाहिरसव्वट्ठिदीओ ओकड्डिय उदए णिसिंचमाणो। एवं हस्स-रदि-पुरिस-इत्थिवेदाणं। थीणगिद्धितिय-णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधियूण पडिभग्गो संतो पंचण्णमेक्कदरपयडीए पवेसओ उदयावलिय-बाहिरसव्वट्ठिदीओ बंधावलियादिक्कंताओ ओकड्डियूण उदए संछुहमाणो। थीणगिद्धि-तियस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ[1] णियमा पज्जत्तओ। सम्मत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधियूण अंतोमुहुत्तेण पडिभग्गो चेव सम्मत्तं पडिवण्णो तस्स बिदियसमयसम्माइट्ठिस्स। सम्मामिच्छत्तस्स सो चेव सम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी जादो, तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा[2]।

करना चाहिये।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, अरति शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, निर्माण, हुण्डकसंस्थान, नीचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होकर साता वेदनीयको बांधता हुआ एक आवलीसे हीन असाता-की उत्कृष्ट स्थितिको सातारूप संक्रान्त कर व संक्रमणावलीकालको बिताकर उदयावलीके बाहिर-की सब स्थितियोंका अपकर्षण करके उदयमें देता है वह साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकार हास्य, रति, पुरुष और स्त्री वेदके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। स्त्यान-गृद्धि आदिक तीन, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होता हुआ उक्त पांच प्रकृतियोंमेंसे किसी एकका उदीरक होकर बन्धा-वलीसे अतिक्रान्त उदयावलीके बाहिरकी सब स्थितियोंका अपकर्षण कर उदयमें दे रहा है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। स्त्यानगृद्धि आदि तीनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक नियमसे पर्याप्तक जीव होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें प्रतिभग्न होकर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है उसके सम्यग्दृष्टि होनेके द्वितीय समयमें सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है। वही सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो गया, तब उसके सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा होती है।

१ काप्रतौ 'ट्ठिदिउदीरणा णियमा', ताप्रतौ 'ट्ठिदिं उदीरणा (ओ)' इति पाठः। २ तथा सप्ततिसागरोपम-कोटीकोटीप्रमाणा मिथ्यात्वस्य स्थितिर्मिथ्यादृष्टिना सता बद्धा। ततोऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मिथ्यात्वमनुभूय सम्यक्त्वं प्रतिपद्यते। ततः सम्यक्त्वे सम्यग्मिथ्यात्वे चान्तर्मुहूर्तोनां मिथ्यात्वस्थितिं सकलामपि संक्रमयति।

चदुण्णमाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदीसु उववण्णो पढमसमयतब्भवत्थो सो उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ। णिरयगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदीए उदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधियूण णिरयगदीए उववण्णो जहण्णेण पंचमाए पुढवीए उक्कस्सेण सत्तमाए पुढवीए पढमसमयतब्भवत्थो दुसमयतब्भवत्थो तिसमयतब्भवत्थो चदुसमयतब्भवत्थो वि एवं[1] जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति उक्कस्सट्ठिदीए उदीरओ[2]। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ को होदि ? णियमा अपज्जत्तओ देवगइपच्छायदएइंदियो वा देव[3]-णिरयगदिपच्छायदगब्भोवक्कंतियतिरिक्खजोणिणवुंसयवेदो वा। एवमेइंदियजादीए। णवरि देवपच्छायदएइंदियस्सेव। पंचिंदियजादीए णाणावरणभंगो। णवरि एइंदिओ त्ति ण वत्तव्वं।

चार आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुस्थितिमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ है वह उस उस आयुकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर नरकगतिमें उत्पन्न हुआ है, वह जघन्यसे पांचवीं और उत्कर्षसे सातवीं पृथिवीमें तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें, द्वितीय समयमें, तृतीय समयमें, चतुर्थ समयमें; इस प्रकार तद्भवस्थ होनेके आवली मात्र काल तक नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? नियमसे देवगतिसे लौटकर आया हुआ एकेन्द्रिय अपर्याप्त, अथवा देवगति व नरकगतिसे लौटकर आया हुआ गर्भोपक्रान्तिक तिर्यंचयोनिवाला नपुंसकवेदी जीव तिर्यग्गतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे एकेन्द्रिय जाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि देव पर्यायसे पीछे आये हुए एकेन्द्रिय जीवके ही उसकी उदीरणा सम्भव है। पंचेन्द्रिय जातिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन ज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि यहां 'एकेन्द्रिय' यह नहीं कहना चाहिये। मनुष्यगति

संक्रमावलिकायां चातीतायामुदीरणायोग्या, तत्र संक्रमावलिकातिक्रमेऽपि सान्तर्मुहूर्तोनैव। ततः सम्यक्त्वमनुभवतः सम्यक्त्वस्यान्तर्मुहूर्तोना सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या। ततः कश्चित् सम्यक्त्वेऽप्यन्तर्मुहूर्तं स्थित्वा सम्यग्मिथ्यात्वं प्रतिपद्यते। ततः सम्यग्मिथ्यात्वमनुभवतः सम्यग्मिथ्यात्वस्यान्तर्मुहूर्तद्विकोना सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति। क. प्र. (मलय.) ४, ३२.

१ ताप्रतौ 'वि। एवं' इति पाठः। २ अद्धाच्छेओ सामित्तं पि य ठिइसंकमे जहा नवरं (रि)। तव्वेइसु निरयगईए वा वि तिसु हि (हे)ट्ठिमखिईसु॥ क. प्र. ४, ३२. नरकगतेः, अपि[illegible] तिर्यक्पंचेन्द्रियो मनुष्यो वोत्कृष्टां स्थितिं बद्ध्वा उत्कृष्टस्थितिबन्धानन्तरं चान्तर्मुहूर्ते व्यतिक्रान्ते सति [illegible] धस्तनपृथिवीषु मध्येऽन्यतरस्यां पृथिव्यां समुत्पन्नः, तस्य प्रथमसमये नरकगतेरन्तर्मुहूर्तहीना [illegible] सागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा उदीरणायोग्या भवति।........अधस्तनपृथिवीत्रयग्रहणे किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते– इह नरकगत्यादीनामुत्कृष्टां स्थितिं बध्नन्नवश्यं कृष्णलेश्यापरिणामोपेतो भवति। कृष्णलेश्यापरिणामोपेतश्च कालं कृत्वा नरकेषूत्पद्यमानो जघन्यकृष्णलेश्यापरिणामः पंचमपृथिव्यामुत्पद्यते, मध्यमकृष्णलेश्यापरिणामः षष्ठपृथिव्याम्, उत्कृष्टकृष्णलेश्यापरिणामः सप्तमपृथिव्यामित्यधस्तनपृथिवीत्रयग्रहणम्। (मलय. टीका)
३ काप्रतौ 'देवा' इति पाठः।

मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो मणुस्सो णिरयगइणामाए उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो मणुसगदिं बंधदि तस्स आवलियादिक्कंतस्स पडिच्छिदणिरयगदिउक्कस्सट्ठिदिस्स मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा । देवगदि-णामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? मणुस्सो वा तिरिक्खो वा णिरयगदिसंजुत्त-मुक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो ताधे चेव जो देवगदिं बंधिदूण अंतोमुहुत्तेण देवो[2] जादो तस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स[3] ।

जहा तिरिक्खगइणामाए तहा ओरालियसरीरणामाए । वेउव्वियसरीरस्स णिरय-गइभंगो । अहारसरीरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? आहारसरीरस्स[4] तप्पाओग्गउक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिओ पढमसमयआहारसरीरओ[5] । ओरालियसरीर-

नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मनुष्य नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे भ्रष्ट होता हुआ मनुष्यगतिको बांधता है उसके नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका मनुष्यगतिरूपसे संक्रमण होनेपर एक आवली कालके पश्चात् मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है । देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? मनुष्य और तिर्यंच होता है, जो नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर भ्रष्ट होता हुआ उसी समयमें देवगतिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें देव हो जाता है उसके देव होनेके प्रथम समयमें देवगतिकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है ।

जिस प्रकार तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाके स्वामीकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार औदारिकशरीरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदी-रणाकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? आहारशरीरका उदीरक तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके सत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती आहारक-

१ ताप्रतौ -उक्कस्सट्ठिदिमणुस- इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । उभयोरेव प्रत्योः 'अंतोमुहुत्तूण देवो' इति पाठः । ३ देवगति-देव-मणुयाणुपुव्वी आयाव-विगल-सुहुमतिगे । अंतोमुहुत्तभग्गा तावयगूणं तदुक्कस्सं ॥ क. प्र. ४, ३३. देवगति त्ति— देवगति-देवानुपूर्वी-मनुष्यानुपूर्वीणामातपस्य विकलत्रिकस्य द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रियजातिरूपस्य सूक्ष्मत्रिकस्य च सूक्ष्म-साधारणापर्याप्तकलक्षणस्य (१०) स्व-स्वोदये वर्तमान अन्तर्मुहूर्त-भग्ना उत्कृष्टस्थितिबन्धाध्यवसायादनन्तरमन्तर्मुहूर्तं कालं यावत् परिभ्रष्टाः सन्तस्तावदूनामन्तर्मुहूर्तोनां तदुत्कृष्टां देवगत्यादीनामुत्कृष्टां स्थितिमुदीरयन्ति । इयमत्र भावना— कश्चित्तथाविधपरिणामविशेषभावतो नरकगतेरुत्कृष्टां स्थितिं विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणां बध्वा ततः शुभपरिणामविशेषभावतो देवगतेरुत्कृष्टां स्थितिं दश-सागरोपमकोटीकोटीप्रमाणां बद्धुमारभते । ततस्तस्यां देवगतिस्थितौ बध्यमानायामावलिकाया उपरि बन्धा-वलिकाहीनामावलिकात उपरितनीं सर्वामपि नरकगतिस्थितिं संक्रमयति । ततो देवगतेरपि विंशतिसागरोपम-कोटीकोटीप्रमाणा स्थितिरावलिकामात्रहीना जाता । देवगतिं च बध्नन् जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तं कालं यावद् बध्नाति । बन्धानन्तरं च कालं कृत्वाऽनन्तरसमये देवो जातः । ततस्तस्य देवत्वमनुभवतो देवगतेरन्तर्मुहूर्तोना विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति । (मलय. टीका). ४ उभयोरेव प्रत्योः 'आहारसरीरदुगस्स' इति पाठः ।

५ ताप्रतौ 'आहारसरीर (?) ।' इति पाठः । '''तथाहारकसत्कर्मप्रमत्तेन सता तद्योग्योत्कृष्टसंक्लेशेनो-त्कृष्टस्थितिकं बद्धम्, तत्कालोत्कृष्टस्थितिक (स्व) मूलप्रकृत्यभिन्नप्रकृत्यन्तरदलिकं च तत्र संक्रमितम्,

अंगोवंगणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? देवो णेरइओ वा उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण तिरिक्खजोणिगब्भोवक्कंतियणवुंसए उववण्णो तस्स जाव आवलियतब्भवत्थस्से त्ति ओरालियंगोवंगणामाए उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा। जहा वेउव्वियाहारसरीराणं तहा तेसिमंगोवंगणामाणं। जहा पंचण्णं सरीरणं तहा पंचबंधण-संघादाणं पि परूवणा कायव्वा।

पंचसंठाणेसु जस्स जस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स संठाणस्स वेदगो उक्कस्सियं ठिदिं कादूण आवलियादिक्कंतमुदीरेदि। जहा ओरालियसरीरअंगोवंगणामाए तहा असंपत्त-सेवट्टसंघडणणामाए वत्तव्वं। सेसाणं पंचण्णं संघडणाणं जहा पचण्णं संठाणाणं कदं तहा कायव्वं। जहा णिरयगई तहा णिरयाणुपुव्वीए। जहा तिरिक्खगई तहा तिरिक्खिाणु-पुव्वीए। जहा देवगई तहा देवाणुपुव्वीए मणुसाणुपुव्वीए च[1]।

जहा धुवउदीरयाणं पयडीणं तहा उवघादणामाए परघादणामाए उस्सासणामाए च। उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण अमरंतो चेव आवलियादिक्कंतमुदीरेदि त्ति वत्तव्वं। एव-

शरीरी होता है। औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक देव अथवा नारक जीव होता है, जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर तिर्यंच योनिवाले गर्भोपक्रान्तिक नपुंसकमें उत्पन्न हुआ है उसके उक्त भवमें स्थित होनेके आवली मात्र कालके भीतर औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। जिस प्रकार वैक्रियिक और आहारकशरीर सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उनके आंगोपांग नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। जैसे पांच शरीरोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही पांच बन्धन और पांच संघात नामकर्मोंके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करना चाहिये।

पांच संस्थानोंमेंसे जिस जिसकी विवक्षा हो उस संस्थानका वेदक जीव उत्कृष्ट स्थितिको करके आवली मात्र कालको बिताकर उसका उदीरक होता है। जैसे औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये। शेष पांच संहननोंका कथन पांच संस्थानोंके समान करना चाहिये। नरकगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यग्गत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। देवगत्यानुपूर्वी और मनुष्यगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

उपघातनामकर्म, परघात नामकर्म और उच्छ्वास नामकर्मकी प्ररूपणा ध्रुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान है। मात्र उनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणसे रहित होता हुआ एक आवलीके

ततस्तत्सर्वोत्कृष्टान्तःसागरोपमकोटीकोटीस्थितिकं जातम्। बन्धानन्तरं चान्तर्मुहूर्तमतिक्रम्याहारकशरीरमारभते। तच्चारभमाणो लब्ध्युपजीवनेनौत्सुक्यभावतः प्रमादभाग्भवति। ततस्तस्य प्रमत्तस्य सत आहारकशरीरमुत्पादयता आहारकशरीरस्य तस्यान्तर्मुहूर्तोनोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या। अत्र प्रमत्तस्य सत आहारकशरीरमारभमाणस्यो-त्कृष्टस्थित्युदीरणास्वामी प्रमत्तसंयत एवं वेदितव्यः। क. प्र. (मलय.) ४, ३३. १ देवगति-देव-मणुयाणुपुव्वी आयाव-विगल-सुहुमतिगे। अंतोमुहुत्तभग्गा तावइगूणं तदुक्कस्सं॥ क. प्र. ४, ३३.

मुज्जोवणामाए। णवरि उत्तरविउव्विददेवस्स। आदावस्स देवपच्छायदपुढविकाइयस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स तप्पाओग्गमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेमाणस्स[1]। पसत्थापसत्थविहायगइणामाए उस्सासभंगो[2]। णवरि एदासिं पयडीणं जो वेदओ तत्थ वत्तव्वं।

तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरणामाणं जहा धुवउदीरणापयडीणं परूविदं तहा परूवेयव्वं। थावरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा [कस्स] होदि? जो देवो उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण मदो एइंदिएसु उववण्णो तस्स जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति ताव उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं उक्कस्सट्ठिदिमुदीरओ को होदि? जो वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधिदूण पणिभग्गो संतो अप्पिदपयडीओ बंधिय उक्कस्सियं पडिच्छिय अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरेसुप्पण्णपढमसमयतब्भवत्थो उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो। एवं बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियणामाणं पि वत्तव्वं।

बाद उसकी-उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये। इसी प्रकारसे उद्योत नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा उत्तर विक्रियायुक्त देवके होती है। आतप नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा देव पर्यायसे पीछे आये हुए पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करते समय होती है। प्रशस्त और अप्रशस्त विहायोगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा उच्छ्वास नामकर्मके समान है। विशेषता इतनी है कि इन प्रकृतियोंका जो जीव वेदक है उसके कहना चाहिये।

त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर नामकर्मों सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा जैसे ध्रुव-उदीरणावाली प्रकृतियोंकी की गई है वैसे करना चाहिये। स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा किसके होती है? जो देव उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके आवली मात्र कालवर्ती तद्भवस्थ रहने तक उसकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है? जो जीव बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होता हुआ विवक्षित प्रकृतियोंको बांधकर उत्कृष्ट स्थितिको संक्रान्त कर अन्तर्मुहूर्त स्थित रहकर सर्वलघु कालमें सूक्ष्म अपर्याप्त साधारणशरीरवालोंमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुआ है वह उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय नामकर्मोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये।

---

१ एवमातपादीनामप्यन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणा भावनीया। नन्वुदयसंक्रमोत्कृष्टस्थितीनां प्रकृतीनामन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टस्थितिरुदीरणायोग्या भवतु, आतपनाम तु बन्धोत्कृष्टम्, ततस्तस्य बन्धोदयावलिकाद्विकरहितैवोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या प्राप्नोति, कथमुच्यतेऽन्तर्मुहूर्तोनेति? उच्यते— इह देव एवोत्कृष्टे संक्लेशे वर्तमान एकेन्द्रियप्रायोग्याणामातप-स्थावरैकेन्द्रियजातीनामुत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, नान्यः। स च तां बध्वा तत्रैव देवभवेऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावदवतिष्ठते। ततः कालं कृत्वा बादरपृथिवीकायिकेषु मध्ये समुत्पद्यते। समुत्पन्नः सन् शरीरपर्याप्त्या पर्याप्त आतपनामोदये वर्तमानस्तदुदीरयति। तत एवं सति तस्यान्तर्मुहूर्तोनैवोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति (मलय. टीका)। २ काप्रतौ 'उक्कस्सभंगो' इति पाठः।

थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्तीणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो होदूण बंधावलियादिक्कंतं पडिच्छिय संकमणावलियादीदमदुयावलियबाहिरमोकड्डियूण उदए देदि सो उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ। अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं जहा धुवउदीरयाणं तहा कायव्वं। णवरि सुस्सर-दुस्सराणमपज्जत्तकाले णत्थि उदीरणा। तित्थयरस्स [उक्कस्सट्ठिदि] उदीरगो को होदि ? जो पढमसमयकेवली तप्पाओग्गुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिओ[1]। उच्चागोदस्स उक्कस्सट्ठिदि-उदीरगो को होदि ? जो णीचागोदस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो[2] उच्चागोदस्सेव वेदओ तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। एवं उक्कस्ससामित्तं।

एत्तो जहण्णसामित्तं उच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थो[3]। खीणकसायम्मि णिद्दा-पयलाणमुदीरणा णत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीहि[4] सह जहण्णसामित्तं वत्तव्वं[5]। तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्ण-

स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर व उससे प्रतिभग्न होकर बन्धावलीसे अतिक्रान्त स्थितिको संक्रान्त कर संक्रमणावलीके बाद उदयावलीसे बाह्य स्थितिका अपकर्षण कर उदयमें देता है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका कथन ध्रुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा अपर्याप्तकालमें नहीं होती। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिसत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती केवली तीर्थंकर प्रकृतिका उदीरक होता है। उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उच्चगोत्रका ही वेदक नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे प्रतिभग्न हुआ है उसके उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसा छद्मस्थ जीव उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। क्षीणकषाय गुणस्थानमें निद्रा और प्रचलाकी उदीरणा नहीं है, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे उनकी उदीरणाके जघन्य स्वामित्वका कथन निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि प्रकृतियोंके साथ करना चाहिये। तीन

१ तित्थयरस्स य पल्लासंखिज्जइमे × × × ॥ क. प्र. ४, ३४. ६६ पूर्वं तीर्थकरनाम्नः स्थितिं शुभसंक्रम-सांपरायपवर्त्यापवर्त्य पल्योपमासंख्येयभागमात्रा शेषीकृता। ततोऽनन्तरसमये उत्पन्नकेवलज्ञानः सन् तामुदीरयति। उदीरयतश्च प्रथमसमये उत्कृष्टोदीरणा। सर्वदैव चेयन्मात्रैव स्थितिरुत्कृष्टा तीर्थकरनाम्न उदीरणाप्रायोग्या प्राप्यते, नाधिकेति। (मलय.). २ ताप्रतौ 'पडिभग्गे संते' इति पाठः।

३ छउमत्थखीणरागे चउदस समयाहिगावलिगठिईए। क. प्र. ४, ४२. ४ काप्रतौ '-भिप्पाएण णिद्दाहि', ताप्रतौ 'भिप्पाएण [थीण-] गिद्धीहि' इति पाठः। ५ [illegible] (ब) [illegible]।

ट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो पज्जत्तो हदसमुप्पत्तियकम्मेण सव्वचिरं कालं जहण्ण-ट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण तदो तं चेव जहण्णसंतकम्मं बंधिय पुणो तत्तो उवरिल्लं ट्ठिदिं बंधमाणस्स आवलियमेत्ते काले गदे तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा[1]। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो बादरएइंदिओ हदसमुप्पत्ति-एण कम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतादो हेट्ठा बंधिदूण से काले उवरिं बंधिहिदि त्ति तदो मदो सण्णीसु उववण्णो, तत्थ असादं सव्वचिरं बंधियूण सादस्स बंधगो जादो, तस्स सादं बंधमाणस्स गमिदावलियकालस्स सादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। एव-मसादस्स वि वत्तव्वं। णवरि सण्णीसुप्पण्णो संतो सादं बंधावेयव्वो, तदो सादबंधगद्धाए उक्कस्सियाए गदाए असादं बद्धं, तदो आवलियमधिच्छिदूण जहण्णट्ठिदिमसादस्स उदीरेदि त्ति वत्तव्वं[2]।

दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो पर्याप्त जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल (दीर्घ अन्तर्मुहूर्त काल) तक जघन्य स्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, पुनः उसी जघन्य स्थितिसत्कर्मको बांधकर, तत्पश्चात् ऊपरकी स्थितिको बांधता हुआ जब आवली मात्र काल बिताता है तब उसके तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। साता-वेदनीयकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो बादर एकेन्द्रिय जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल जघन्य स्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, अनन्तर कालमें अधिक स्थितिको बांधेगा कि इसी बीचमें मरकर संज्ञी जीवोंमें उत्पन्न हुआ, फिर उनमें सर्वचिरकाल तक असाता वेदनीयको बांधकर साता वेदनीयका बन्धक हुआ है, उसके साताको बांधते हुए आवली मात्र कालके बीतनेपर साता वेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। इसी प्रकार असाता वेदनीयके विषयमें भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि संज्ञियोंमें उत्पन्न होते हुए उसे साता वेदनीयका बन्ध कराना चाहिये, तत्पश्चात् उत्कृष्ट साताबन्धककालके बीतनेपर जो असाताका बन्धक हुआ है वह आवली मात्र कालको बिताकर असाता वेदनीय सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये ?

निद्दा-पयलाणं खीणराग-खवगे परिच्चज ॥ क. प्र. ४, १८. इंदिय त्ति—इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ताः सन्तो द्वितीय-समयादारभ्येन्द्रियपर्याप्त्यनन्तरसमयादारभ्येत्यर्थः; निन्द्रा-प्रचलयोरुदीरणाप्रायोग्या भवन्ति। किं सर्वेऽपि ? नेत्याह—क्षीणरागान् क्षपकांश्च परित्यज्य। उदीरणा हि उदये सति भवति, नान्यथा। न च क्षीणराग-क्षपकयोर्निद्रा-प्रचलोदयः सम्भवति, "निद्दादुगस्स उदओ खीणग-खवगे परिच्चज्ज" इति वचनप्रमाण्यात्। ततस्तान् वर्जयित्वा शेषा निद्रा-प्रचलयोरुदीरका वेदितव्याः। (मलय. टीका).

१ थावरजहन्नसंतेण समं अहि (ही) गं व बंधंतो ॥ गंतूणावलिमित्तं कसायबारसग-भय-दुगं(गुं)छाणं। निद्दाय (इ) पंचगस्स य आयावुज्जोयनामस्स ॥ क. प्र. ४, ३४-३५.

२ भावना त्वियम्— एकेन्द्रियो जघन्यस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्वृत्य पर्याप्त-संज्ञिपंचेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः, उत्पत्तिप्रथमसमयादारभ्यं च सातवेदनीयमनुभवन् असातवेदनीयं बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तकालं यावद् बध्नाति। ततः पुनरपि सातं बद्धुमारभते। ततो बन्धावलिकायाश्चरमसमये पूर्वबद्धस्य सातवेदनीयस्य जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति। एवमसातवेदनीयस्यापि द्रष्टव्यम्। केवलं सातवेदनीयस्थानेऽसातवेदनीयमुच्चारणीयम्, असातवेदनीयस्थाने सातवेदनीयमिति। क. प्र. (मलय.)४, ३७.

मिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिउदीरगो को होदि ? जो दंसणमोहणीयउवसामगो समयाहियावलियचरिमसमयमिच्छाइट्ठी। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणिज्जो[1]। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छाइट्ठी एइंदियं गंतूण तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लिय तदो तसेसु उववण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवमट्ठिदिसंतकम्मेण सह सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो तस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[2]। तसेसु चेव उव्वेल्लाविय[3] सम्मामिच्छत्तं किण्ण णीदो ? ण, एइंदिएसु उव्वेल्लिदसम्मामिच्छत्तट्ठिदिसंतकम्मस्सेव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणसागरो-

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो जीव दर्शनमोहनीयका उपशामक है उसके मिथ्यादृष्टि रहनेके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके दर्शनमोहनीयके क्षीण होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो अट्ठाईस प्रकृतियोंके सत्त्ववाला मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें जाकर वहां पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालके द्वारा सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्वेलना करके पश्चात् त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त काल रहकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण स्थितिसत्त्वके साथ सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है; उस अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है।

शंका—त्रस जीवोंमें ही उद्वेलना कराकर सम्यग्मिथ्यात्वको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिसने एकेन्द्रियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वकी उद्वेलना की है उसके ही पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र स्थितिसत्त्वके शेष रहनेपर

१ मिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स मिच्छाइट्ठिस्स उवसमसम्मत्ताहिमुहस्स समयाहियावलियपढमट्ठिदिउदीरगस्स तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। सम्मत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स दंसणमोहक्खवयस्स समयाहियावलियउदीरगस्स। जयध. अ. प. ७९४. समयाहिगालिगाए पढमठिईए उ सेसवेलाए। मिच्छत्ते वेएसु य संजलणासु वि य सम्मत्ते (वं)॥ क. प्र. ४, ३९.

२ सम्मामिच्छत्तजहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरो जो मिच्छाइट्ठी वेदगपाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो अंतोमुहुत्तं विगट्ठं सम्मामिच्छत्तद्धमणुपालिय चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। जयध. अ. प. ७९४. पल्लासंखियभागूणुदही एगिंदियागए मिस्से। क. प्र. ४, ४०. पल्योपमासंख्येयभागेन न्यूनं यदेकं सागरोपमं तावन्मात्रसम्यग्मिथ्यात्वस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्वृत्तः संज्ञिपंचेन्द्रियमध्ये समायातः। तत्र यतः समयादारभ्यान्तर्मुहूर्तानन्तरं सम्यग्मिथ्यात्वमुदीरयितुमारभते तस्मिन् समये सम्यग्मिथ्यात्वप्रतिपन्नस्य चरमसमये सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्या स्थित्युदीरणा। एकेन्द्रियागतजघन्यस्थितिसत्कर्मणश्च सकाशादन्यो वर्तमानः सम्यग्मिथ्यात्वमुदीरयितुं योग्यो न भवति, तावन्मात्रस्थितिके तस्मिन् सति मिथ्यात्वोदयसम्भवात् (मलय.)। ३ अ-काप्रत्योः 'उव्वेल्लाविय' इति पाठः।

वममेत्तट्ठिदिसंतकम्मे सेसे सम्मामिच्छत्तग्गहणपाओग्गस्सुवलंभादो[1]। जो पुण तसेसु एइंदियट्ठिदिसंतसमं सम्मामिच्छत्तं कुणइ सो पुव्वमेव सागरोवमपुधत्ते सेसे चेव तदपाओग्गो होदि।

बारसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो बादरेइंदियो पज्जत्तो सव्वविसुद्धो हदसमुप्पत्तियकमेण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा सव्वचिरं बंधिऊण से काले समट्ठिदिं वा उवरिं वा बंधिय तदो आवलियमुवरिं गदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा बारसण्णं कसायाणं होदि[2]। कोधसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स होदि ? खवओ वा उवसामओ वा जो कोधवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। माणसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? खवगो वा उवसामगो वा जो माणवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा। मायासंजलणाए जहण्णट्ठिदिउदीरया वि[3] एवं चेव वत्तव्वा। लोभसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि ? समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ[4]।

सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहणकी योग्यता पायी जाती है। परन्तु जो त्रस जीवोंमें एकेन्द्रियके स्थितिसत्त्वके बराबर सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वको करता है वह पहिले ही सागरोपमपृथक्त्व प्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर ही उसके ग्रहणके अयोग्य हो जाता है।

बारह कषायोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त सर्वविशुद्ध जीव हतसमुत्पत्तिक क्रमसे जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे सर्वचिर काल तक बांधकर अनन्तर समयमें समान स्थिति अथवा अधिक स्थितिको बांधकर उससे आगे एक आवली मात्र काल ऊपर गया है उसके बारह कषायोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा होती है। संज्वलनक्रोधकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो क्षपक अथवा उपशामक क्रोधवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। संज्वलनमानकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? जो क्षपक अथवा उपशामक मानवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। इसी प्रकारसे संज्वलनमायाकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंका भी कथन करना चाहिये। संज्वलनलोभकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती सकषाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। हास्य व रति सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी

१ प्रत्योरुभयोरेव -'पाओग्गाणुवलंभादो' इति पाठः। २ बारसक० जह० ट्ठिदिउदी० कस्स ? अण्णद० बादरेइंदियस्स हदसमुप्पत्तियस्स जावदि सक्कं ताव संतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण समट्ठिदिं वा बंधिदूण संतकम्मं वोलेदूण वा आवलियादीदस्स। जयध. अ. प. ७९४. ३ ताप्रतौ 'उदीरवा त्ति' इति पाठः। ४ चदुसंज० जह० ट्ठिदिउदीर० कस्स ? अण्णद० उवसामगस्स वा खवगस्स वा अप्पप्पणो कसाएहि सेडिमारुढस्स समयाहियावलियउदी० तस्स जह०। जयध. अ. प. ७९४.

हस्स-रदीणं सादभंगो। अरदि-सोगाणमसादभंगो। भय-दुगंछाणं बारसकसायभंगो। तिण्णं वेदाणं कोधसंजलणस्स भंगो। णवरि जस्स जस्स वेदस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स वेदस्सुदएण खवगुवसामगसेडीयो चढाविय समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा वत्तव्वा।

आउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयतब्भवत्थस्स। णिरयगइणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो असण्णिपंचिंदियो तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ तप्पाओग्गुक्कस्सियाए ट्ठिदीए पढमपुढविणेरइएसु उववण्णो तस्स चरिमसमयणेरइयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। तिरिक्खगइणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो तेउकाइयो वा वाउकाइयो वा हदसमुप्पत्तिकम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण सण्णिपंचिंदियतिरिक्खेसुववण्णो, उप्पण्णपढमसमए चेव मणुसगइबंधगो जादो, पुणो तं सव्वचिरं बंधिऊण तदो तिरिक्खगई बद्धा[1] तस्सावलियकालं बंधमाणस्स तिरिक्खगईए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[2]। तेउकाइय-वाउकाइयपच्छायदो तिरिक्खगई

उदीरणाका कथन सातावेदनीयके समान है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन असातावेदनीयके समान है। भय व जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन बारह कषायोंके समान करना चाहिये। तीन वेदोंकी प्ररूपणा संज्वलनक्रोधके समान है। विशेष इतना है कि जो जो वेद अभीष्ट हो उस उस वेदके उदयसे क्षपक अथवा उपशम श्रेणिपर चढ़ाकर अन्तिम समयवर्ती सवेद रहनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये।

आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। नरकगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो तत्प्रायोग्य जघन्य स्थिति-सत्कर्मवाला असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ प्रथम पृथिवीके नारक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती नारक जीवके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। तिर्यंनगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिर काल तक जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे बांधकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही मनुष्यगतिका बन्धक हुआ है, पश्चात् सर्वचिर काल तक उसे बांधकर जिसने तिर्यंचगतिका बन्ध किया है, आवली मात्र काल तक बांधनेवाले उसके तिर्यंचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। तेजकायिक और वायुकायिक

---

१ काप्रतौ 'बद्धो' इति पाठः। २ तथा तेजस्कायिको वायुकायिको वा बादरः सर्वजघन्यस्थितिसत्कर्मा पर्याप्त-संज्ञि-तिर्यक्पंचेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः। ततो बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मनुजगतिं बध्नाति। तद्बन्धानन्तरं च तिर्यग्गतिं बद्धुमारभते। ततो बन्धावलिकायाश्चरमसमये तस्यास्तिर्यग्गतेर्जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति। क. प्र. (मलय.) ४, ३७.

चेव अंतोमुहुत्तं बंधदि त्ति भणंतबंधसामित्तेण[1] णेदस्स विरोहो, तत्थ णियमाभावादो। मणुसगईए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। जहा णिरयगईए तहा देवगईए वत्तव्वं[2]। णवरि तप्पाओग्गेण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मेण असण्णिपंचिंदियो तप्पाओग्गउक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिएसु देवेसु उप्पादेदव्वो। चदुजादिणामाणं बादरेइंदियं सव्वविसुद्धपरिणामेण कयजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं सग-सगजादिमुप्पादिय पडिवक्खबंधगद्धाओ वोलाविय अप्पिदजादिं बंधमाणस्स पढमावलियचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरणा वत्तव्वा। पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि? चरिमसमयसजोगिकेवली। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि? जो एइंदियो वेउव्वियसरीरस्स तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ विउव्विदुत्तरसरीरो तस्स[4] चरिमसमए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[5]। आहारसरीरस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा

जीवोंमेंसे पीछे आया हुआ जीव अन्तर्मुहूर्त काल तक तिर्यंचगतिको ही बांधता है, इस प्रकारकी प्ररूपणा करनेवाले बन्धस्वामित्वके साथ इसका कोई विरोध नहीं है, क्योंकि, वहां ऐसा नियम नहीं है। मनुष्यगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? उसकी उदीरणा अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। जैसे नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही देवगति सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट आयुस्थितिसत्त्ववाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। सर्वविशुद्ध परिणामके द्वारा किये गये जघन्य स्थितिसत्त्वसे संयुक्त वादर एकेन्द्रियको उस उस जातिवाले जीवोंमें उत्पन्न कराकर प्रतिपक्ष जातियोंके बन्धककालको बिताकर विवक्षित जाति नामकर्मको बांधनेवाले उस उस जीवके प्रथम आवलीके अन्तिम समयमें एकेन्द्रिय आदि चार जाति नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कहना चाहिये। पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर इनकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली जीव उनकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? वैक्रियिकशरीरके तत्प्रायोग्य स्थितिसत्त्ववाले जिस एकेन्द्रिय जीवने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है उसके उत्तर शरीरकी विक्रियाके अन्तिम समयमें वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। आहारकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा

१ तिरिक्खगइ-ओरालियदुग-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तमपुढवीणेरइएहिंतो आगंतूण पंचिदियतिरिक्ख-तप्पज्जत्त-जोणिणीसु उप्पण्णणं सणक्कुमारादि-देव-णेरइएहिंतो तिरिक्खेसुप्पण्णाणं च णिरंतरबंधदंसणादो। प. खं. पु. ८, पृ. १२१. २ अमणागयस्स चिरठिइ अंत (ते) सुर-नरयगइ-उवंगाणं। अणुपुव्वीतिसमइगे नराण एगिंदियागयगे॥ क. प्र. ४, ३८. ३ उभयोरेव प्रत्योः 'जहण्णओट्ठिदि' इति पाठः। ४ उभयोरेव प्रत्योः 'विउव्विदुत्तरसरीरोत्तरस्स' इति पाठः। ५ एतदुक्तं भवति— बादरवायुकायिकः पल्योपमासंख्येयभागहीनसागरोपमद्वि-सप्तभागप्रमाणवैक्रियिक-षट्कजघन्यस्थितिसत्कर्मा बहुशो वैक्रियमारभ्य चरमे वैक्रियारम्भे चरमसमये वर्तमानो जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति। अनन्तरसमये च वैक्रियिकषट्कमेकेन्द्रियसत्कजघन्यसत्कर्मापेक्षया स्तोकतरमिति कृत्वा उदीरणा-योग्यं न भवति, किन्तूद्वलनायोग्यम्। क. प्र. (मलय.) ४, ४०.

कस्स ? जो आहारसरीरस्स तप्पाओगेण जहण्णेण ट्ठिदिसंतकम्मेण आहारसरीरमुट्ठावेंतस्स सव्वमहंतीए उत्तरविउव्वणद्धाए चरिमसमए होदि। कस्स पुण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं वुच्चदे ? जो चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण पच्छा दंसणमोहणीयं खवेदूण देवेसु तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो तत्तो चुदो मणुस्सेसु संजमं पुव्वकोडिकालमणुपालेऊण तदो पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तावसेसाए आहारएण उत्तरं विउव्विदो सव्वमहंतीए विउव्वणद्धाए चरिमसमये जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं[1]। जधा आहारसरीरस्स तधा तदंगोवंगस्स वि वत्तव्वं। जहा ओरालियसरीरस्स तहा तदंगोवंगस्स सजोगिचरिमसमए वत्तव्वं। वेउव्वियअंगोवंगस्स णिरयगदिभंगो। जहा पचण्णं सरीराणं तहा तेसिं बंधण-संघादाणं परूवेयव्वं। छसंठाण-वज्जरिसहसंघडणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स। पंचण्णं संघडणाणं भण्णमाणे एइंदिएसु तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिं कादूण सण्णीसु अप्पिदसंघडणेणुप्पादिय अवेदिज्जमाणसंघडणाणि सव्वचिरं बंधाविय तदो जं वेदेदि तं पच्छा

किसके होती है ? जो जीव आहारशरीरके तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ आहारकशरीरको उत्पन्न कर रहा है उसके सबसे महान् उत्तर विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है।

शंका— जघन्य स्थितिसत्त्व किस जीवके होता है ?

समाधान— जो जीव चार वार कषायोंको उपशमा कर पश्चात् दर्शनमोहनीयका क्षय करके तेतीस सागरोपम स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे च्युत होकर मनुष्योंमें पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन करके पूर्वकोटिमें अन्तर्मुहूर्तके शेष रहनेपर जो आहारकशरीरके साथ उत्तर विक्रियाको प्राप्त हुआ है, उसके सबसे महान् विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसका जघन्य स्थितिसत्त्व होता है।

जिस प्रकार आहारकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उसके अंगोपांगकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। जैसे औदारिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही उसके अंगोपांगकी जघन्य स्थिति-उदीरणा सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें कहनी चाहिये। वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा नरकगतिके समान करना चाहिये। पांच शरीरों सम्बन्धी बन्धनों और संघातोंकी प्ररूपणा उन पांच शरीरोंके ही समान करना चाहिये। छह संस्थानों और वज्रर्षभसंहनन सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? उनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। पांच संहननोंकी प्ररूपणा करते समय एकेन्द्रिय जीवोंमें तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिको करके संज्ञी जीवोंमें विवक्षित संहननके साथ उत्पन्न कराकर उदयमें न आनेवाले संहननोंको सर्वचिर काल तक बंधाकर पश्चात् जिस संहननका वेदन करता है उसे पीछे बंधाना चाहिये, उसके प्रथम

१ चउरुवसमेत्तु पेज्जं पच्छा निच्छं णवेत्तु तेत्तीसा। उक्कोससंजमद्धा अंते सुतणु-उवंगाणं ॥ क. प्र. ६, ८१.

बंधावेयव्वं, पढमसमयपबद्धस्स आवलियकाले गदे तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[1]। वण्ण-गंध-रस-फासाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। णिरयाणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? असण्णिपच्छायदस्स तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स दुसमयणेरइयस्स। मणुस्साणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो बादरेइंदिओ हदसमुप्पत्तियकम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मादो [हेट्ठा] बंधिदूण से काले संतकम्मस्स उवरि बंधिहिदि त्ति मणुस्सो जादो तस्स दुसमयमणुसस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा[2]। जहा देवगदिणामाए जहण्णसामित्तं परूविदं तहा देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए परूवेयव्वं। णवरि देवेसुप्पण्णविदियसमए जहण्णसामित्तं वत्तव्वं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीजहण्णट्ठिदिउदीरणाए को सामी? जो तेउकाइयो वाउकाइयो वा सव्वविसुद्धो सव्वजहण्णेण ट्ठिदिसंतकम्मेण मदो सण्णितिरिक्खजोणिएसु विग्गहगदीए उववण्णो तस्स विदियसमयतब्भवत्थस्स। अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर - सुहासुह-

---

समयमें बांधनेके पश्चात् आवली मात्र कालके वीतनेपर उसके विवक्षित संहनन सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। नरकगत्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए ऐसे तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्व युक्त द्वितीय समयवर्ती नारक जीवके होती है। मनुष्यगत्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो बादर एकेन्द्रिय जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल तक जघन्य स्थितिसत्त्वसे कमको बांधकर अनन्तर कालमें उक्त स्थितिसत्त्वके ऊपर बांधेगा कि इस बीचमें जो मनुष्य हुआ है उसके मनुष्य भवके द्वितीय समयमें जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। जिस प्रकार देवगति नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि देवोंमें उत्पन्न होनेके द्वितीय समयमें जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका स्वामी कौन है? जो सर्वविशुद्ध तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव सर्वजघन्य स्थितिसत्त्वके साथ मरकर विग्रहगति द्वारा संज्ञी तिर्यंचयोनि जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,

---

१ वेयणिया (य) नोकसाया सम्मत्त-संघडणपंच-नीयाणं। तिरियदुग-अयस-दूभगणाइज्जाणं च संनिगए ॥ क. प्र. ४,३७. संहननपंचकस्य तु मध्ये वेद्यमानं संहननं मुक्त्वा शेषसंहननानां प्रत्येकं बन्धकालोऽतिदीर्घो वक्तव्यः। ततो वेद्यमानसंहननस्य बन्धे बन्धावलिकाचरमसमये जघन्या स्थित्युदीरणा। (मलय.). २ एकेन्द्रियः सर्वजघन्यमनुष्यानुपूर्वीस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्धृत्य मनुष्येषु मध्ये उत्पद्यमानोऽपान्तरालगतौ वर्तमानो मनुष्यानुपूर्व्यास्तृतीयसमये जघन्यस्थित्युदीरणास्वामी भवति। क. प्र. (मलय.) ४, ३८.

सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि? चरिमसमयसजोगी[1]। आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि? जो बादरपुढविजीवो पज्जत्तओ हदसमुप्पत्तिएण सव्वचिरं हेट्ठा बंधियूण तदो उवरिं वा समट्ठिदियं वा बंधिय आवलियादिक्कंतस्स[2] आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा। उज्जोवणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो बादरेइंदिओ पज्जत्तयदो हदसमुप्पत्तिय-कम्मेण सव्वचिरं हेट्ठदो बंधिय पुणो उवरि समट्ठिदियं वा बंधिय आवलियादिक्कंतस्स[2]। थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणणामकम्माणं जहण्णट्ठिदिउदीरणाए एइंदियस्स[3] सामित्तं वत्तव्वं। दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्तीणमेइंदियस्स हदसमुप्पत्तियकम्मेण पंचिंदिएसुप्पाइय पडिवक्खबंधगद्धाओ गालिय तदो आवलियादीदस्स वत्तव्वं। णीचागोदस्स तिरिक्खगइ-भंगो। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स[4]। गदीसु

अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर और निर्माण; इन नाम-कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? इनका उदीरक अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली होता है। आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? जो बादर पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मसे सर्वचिर काल तक कमको बांधकर पश्चात् उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको बिताता है उसके आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। उद्योत नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा किसके होती है? जो बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मसे सर्वचिर काल कमको बांधकर, फिर उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको बिताता है उसके उद्योत सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उदीरणाका स्वामित्व एकेन्द्रिय जीवके कहना चाहिए। दुभंग, अनादेय और अयशकीतिकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उदीरणाके स्वामित्वका कथन ऐसे एकेन्द्रिय जीवके करना चाहिये जिसने हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धककालोंको गलाकर पश्चात् आवली मात्र कालको बिताया है। नीच गोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान करना चाहिये। उच्चगोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती सयोग-केवलीके होती है। गतियोंमें जानकर जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस

१ सेसाणुदीरगंते भिण्णमुहुत्तो ठिईकालो॥ क. प्र. ४, ४९. शेषाणां च प्रकृतीनां मनुजगति-पंचेन्द्रियजाति-प्रथमसंहननौदारिकसप्तक-संस्थानषट्कोपघात-पराघातोच्छ्वास-प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगति-त्रस-बादर-पर्याप्त-प्रत्येक-सुभग-सुस्वरादेय-यशःकीर्ति-तीर्थकरोच्चैर्गोत्र-दुःस्वरलक्षणानां द्वात्रिंशत्प्रकृतीनां ध्रुवोदयानां च नामकर्मो-दीरणानां त्रयस्त्रिंशत्प्रकृतीनां सर्वसंख्यया पंचषष्टिसंख्यानां सयोगिकेवलिचरमसमये जघन्या स्थितिरुदीरणा। तस्याश्च जघन्यायाः कालो भिन्नमुहूर्तोऽन्तर्मुहूर्तमित्यर्थः। (मलय.). २ ताप्रतौ 'आवलियादिक्कंतस्स' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'उदीरणा एइंदियस्स', ताप्रतौ 'उदीरणाए एइंदियस्स' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'समए सजोगिस्स' इति पाठः।

जाणिदूण णेदव्वं । एवं जहण्णट्ठिदिउदीरणा समत्ता ।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । जहा णाणावरणीयस्स तहा सव्वासिं धुवउदयपयडीणं[1] वत्तव्वं । दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्स-अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । णवरि उक्कस्सस्स[2] एगावलिया, उक्कस्सट्ठिदिबंधकाले णिद्दादिपंचयस्स उदयाभावादो । सादस्स उक्कस्सट्ठिदि-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं । असादस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं ।

सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणमुक्कस्साणुक्कस्सठिदीणमुदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सम्मत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।

प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल तक होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनस्वरूप अनन्त काल है । जैसे ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन किया गया है वैसे ही सब ध्रुवोदयी प्रकृतियोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये । पांच दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । विशेष इतना है कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल एक आवली प्रमाण है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कालमें निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उदय सम्भव नहीं है । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । जिस प्रकार साताकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया है उसी प्रकार हास्य और रति प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम है । जैसे असातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अरति और शोककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

सोलह कषाय, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितियोंकी उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

१ ताप्रतौ 'धुवउत्तरपयडीणं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'उक्कस्स०' इति पाठः ।

अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। णवुंसयवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। इत्थिवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं। पुरिसवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं।

चदुण्हमाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो णिरय-देवाउआणं जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि आवलियूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि। तिरिक्खाउअस्स अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणाकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि। मणुस्साउअस्स अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियाए ऊणाणि।

काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छयासठ सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली प्रमाण है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपम-शतपृथक्त्व प्रमाण है।

चार आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। नारकायु और देवायुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यतः एक आवलीसे कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षतः एक समय अधिक आवलीसे हीन तेत्तीस सागरोपम है। तिर्यंच-आयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम है। मनुष्यआयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है।

णिरयगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा[1] केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि[2] ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। देवगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा जहण्णेण दसवाससहस्साणि समयूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि।

एइंदियजादिणामाए तिरिक्खगइभंगो। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियणामाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि। पंचिदियजादिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र काल तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है। तिर्यंचगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली काल तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण काल तक होती है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा जघन्यसे एक समय कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है।

एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष है। पचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे

---

१ ताप्रतौ '-उदीरणाकालो' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो' इति पाठः।

पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं ।

ओरालियसरीरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । ओरालियसरीरअंगोवंगणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । वेउव्विय-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं वेउव्विय-आहारसरीरणामाणं भंगो । पंचबंधण-पंचसंघादणामाणं पंचसरीरभंगो ।

पंचण्णं संठाणाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो समचउरससंठाणस्स[1] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेवट्ठिसागरोवम-सदं सादिरेयं । सेसाणं चदुण्णं संठाणाणं जहण्णेण एगसमओ,

क्षुद्रभवग्रहण अथवा अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक एक हजार सागरोपम है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम मात्र है । वैक्रियिक और आहारक शरीरांगोपांग नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा वैक्रियिक और आहारक शरीर-नामकर्मोंके समान है । पांच बंधन और पांच संघात नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है ।

पांच संस्थान नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उनमें समचतुरस्रसंस्थानकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपमप्रमाण है । शेष चार संस्थानोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

१ ताप्रतौ 'अणुक्क० ट्ठिदिउदीरणकालो० । समचउरससंठाणस्स' इति पाठः ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं। हुंडसंठाणस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। छण्णं संघडणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण सादिरेयाणि। सेसाणं पंचण्णं संघडणाणमणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं।

तिण्णमाणुपुव्वीणामाणमुक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। णवरि मणुस्स-देवाणुपुव्वीणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया।

उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-तस-पत्तेयसरीर-दुभग-अणादेज्ज-दुस्सरणामाणं णीचागोदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ; दुभग-अणादेज्ज-

---

हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है। छह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। इनमें वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम मात्र है। शेप पांच संहननोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है।

तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे दो समय है। विशेष इतना है कि मनुष्यानुपूर्वी और देवानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्पसे एक समय है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे दो समय है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे तीन समय है।

उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, प्रत्येकशरीर, दुर्भग, अनादेय और दुस्वर नामकर्मोंकी तथा नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा काल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि इनमें दुर्भग, अनादेय व नीचगोत्रको छोड़कर शेप प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी

---

१ ताप्रतौ 'णीचागोदवज्जएण' इति पाठः।

णीचागोदवज्जाणमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदूण तदो अणुक्कस्समेगसमयमुदीरिय कालगदस्स विग्गहगदस्स च, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुण उत्तरविउव्विदस्स तदुवलंभादो। णवरि तसणामाए अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण उवघादणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं च तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, उज्जोवणामाए देसूणतिण्णिपलिदोवमाणि, तसणामाए वे सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, पत्तेय-सरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवाससहस्साणि देसूणाणि। सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं जहण्णकालो अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, साहारणसरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

पसत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणमुच्चागोदस्स य एदेसिं कम्माणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एससमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदि उदीरणकालो पसत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण

उदीरणा करके तत्पश्चात् उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी एक समय उदीरणा करके कालको प्राप्त होकर विग्रहको प्राप्त हुए जीवके उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका उपर्युक्त एक समय मात्र काल पाया जाता है; तथा दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका वह एक समय रूप काल उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त हुए जीवके पाया जाता है। विशेष इतना है कि त्रस नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल उपघात नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग; परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वरका कुछ कम तेतीस सागरोपम; उद्योत नामकर्मका कुछ कम तीन पल्योपम, त्रस नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, प्रत्येकशरीर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग; तथा दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है। उनमें अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल आतप नामकर्मका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है; सूक्ष्म, अपर्याप्त व साधारण नामकर्मोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे वह सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा साधारणशरीर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग है।

प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग व आदेय नामकर्मोंकी तथा उच्चगोत्र इन कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। अनुत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका काल प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका जघन्यसे

पसत्थविहायगईए तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं सागरोवमसदपुधत्तं। उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं।

थावरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। बादर-पज्जत्तणामाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[1]। उक्कस्सेण बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, पज्जत्तणामाए वेसागरोवमसहस्साणि। थिर-सुभाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलिया[2]। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तित्थयरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो समत्तो।

जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो वुच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादासाद-सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-चदुसंजलणाणि तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-

---

एक समय है। उत्कर्षसे वह प्रशस्त विहायोगतिका कुछ कम तेतीस सागरोपम तथा यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका सागरोपमशतपृथक्त्व मात्र है। उच्चगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। बादर और पर्याप्त नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तथा उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण और पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सगरोपम है। स्थिर और शुभ नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली प्रमाण है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल समाप्त हुआ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व,

---

१ 'अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं' इत्येतावानयं पाठः उभयोरेव प्रत्योरनुपलभ्यमानो मप्रतितोऽत्र योजितः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'आवलियाए' इति पाठः।

ब्भहियाणि। एइंदियजादिणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादीणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णवरि पंचिंदियजादिणामाए संखेज्जाणि सागरोवमाणि।

ओरालियसरीरणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। आहारसरीरणामाए जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। तिण्णमंगोवंगाणमणुक्कस्सभंगो। पंचसंघाद-पंचबंधणाणं पि[1] सग-सगसरीरभंगो। समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं। हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। सेसाणं संठाणाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं। वज्जरिसहवइरणारायणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। सेसाणं संघडणाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण

नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे संख्यात सागरोपम प्रमाण है।

औदारिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। आहारशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तीन आंगोपांग नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालके समान है। पांच संघातों और पांच बन्धनोंकी भी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है। समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। हुण्डकसंस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। शेष संस्थानोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है। वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। शेष संहननोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। काप्रतौ 'पंचसंघादपंचसंघडणाणं पि', ताप्रतौ 'पंचसंघाद-पंचसंघडणाणं पि (पंचबंधण-पंचसंघादाणं पि)' इति पाठः।

पुव्वकोडिपुधत्तं ।

णिरयगइ-देवगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो[1] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए वत्तव्वं । णवरि उक्कस्सेण तिण्णि समया । उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं परघादभंगो । तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि । थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीराणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण थावरणामाए असंखेज्जा लोगा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बे-सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । जसकित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्जणामाणं[2] जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अजसगित्तीए

और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार है । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट काल तीन समय प्रमाण है । उपघात नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । परघात नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा परघात नामकर्मके समान है । त्रस नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उत्कर्षसे स्थावर नामकर्मका असंख्यात लोक, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व साधारण शरीरनामकर्मोंका उपर्युक्त काल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक

१ काप्रतौ 'णामाणं ज० कालो', ताप्रतौ 'णामाणं कालो' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाए' इति पाठः ।

असंखेज्जा लोगा, सेसाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

दंसणावरणीयपंचयस्स जहण्ण-अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । बारसकसाय-भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । आदावुज्जोवाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण[1] आदावणामाए बावीसं वाससहस्साणि देसूणाणि, उज्जोवणामाए तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि । एवं जहण्णट्ठिदिउदीरणा समत्ता ।

अंतराणुगमेण उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं उच्चदे । तं जहा— पंचण्णं णाणावरणीयाणं छण्णं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं

समय है । उक्त काल उत्कर्षसे अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा शेष दोका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । तीर्थंकर नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । नीचगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । उच्चगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अथवा अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

निद्रा आदिक पांच दर्शनावरणप्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल और अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । आतप व उद्योतकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उक्त काल उत्कर्षसे आतप नामकर्मका कुछ कम बाईस हजार वर्ष तथा उद्योत नामकर्मका कुछ कम तीन पल्योपम प्रमाण है । इस प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

अन्तरानुगमके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरका कथन करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण और छह दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तरकाल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल प्रमाण होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । स्त्यानगृद्धि आदि तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

---

१ ताप्रतौ [उक्क०-] इति पाठः ।

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। सादासादवेदणीयाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि छम्मासा।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं च, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। चदुण्णं संजलणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणंताणुबंधिचउक्कस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोमाणि देसूणाणि। अट्ठकसायाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है। साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर काल कितना है? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे सातावेदनीयका साधिक तेतीस सागरोपम तथा असातावेदनीयका छह मास प्रमाण होता है।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अर्ध पुद्‌गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्पसे उपार्ध पुद्‌गलपरिवतन मात्र होता है। चार संज्वलन कपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। आठ कपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर

अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा अंतोमुहुत्तं, णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं। इत्थिवेद-पुरिसवेद-हस्स-रदीणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि हस्स-रदीणं तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि।

मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगावलिया। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं, मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णिरयाउअस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाणि मासपुधत्तेणब्भहियाणि, मासपुधत्तादो हेट्ठा उक्कस्सणिरयाउअस्स[1] बंधाभावादो; उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र होता है। अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अरति व शोकका छह मास तथा भय और जुगुप्साका अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। नपुंसकवेदकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका यह अन्तर उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है। स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि उक्त अन्तर हास्य और रतिका उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है।

मनुष्य व तिर्यंच आयुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक तीन पल्योपम और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक आवली मात्र होता है। उत्कर्षसे वह तिर्यंच आयुका सागरोपमशतपृथक्त्व और मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे मासपृथक्त्वसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है, क्योंकि [ऐसे जीवके तिर्यंच होनेपर] मासपृथक्त्वसे नीचे उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध सम्भव नहीं है। उक्त-अन्तर उसका उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल प्रमाण होता है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे वह एकेन्द्रियकी स्थितिके

---

१ काप्रतौ 'णिरयाउअजीवस्स', ताप्रतौ 'णिरयाउअ [जीव] स्स' इति पाठः।

एइंदियट्ठिदी। देवाउअस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

णिरयगइ-तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, णिरयगईए सत्तारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि वा जहण्णंतरं। उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण जहाकमेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा सागरोवमसदपुधत्तं। देवगइ-णामाए उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि अंतो-मुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। मणुसगइणामाए उक्कस्साणु-क्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दस-वाससहस्साणि सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि एइंदियजादिणामाए अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं बेसागरोवम-सहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। पंचिंदियजादिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं

बराबर होता है। देवायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है।

नरकगति और तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। अथवा, नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका जघन्य अन्तर साधिक सत्तरह सागरोपम प्रमाण होता है। उक्त दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल और सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्तकाल मात्र होता है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतु-रिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जातिनामकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण होता है। पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्त-

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण दोण्णं पि पमाणमणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

ओरालियसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि। वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। आहारसरीरस्स उक्कस्स-अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। तेजा-कम्मइयसरीराणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। जहा सरीरणामाणं तहा तेसिमंगोवंग-बंधण-संघादाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओरालियअंगोवंगअणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं कम्मइयसरीर-एइंदियट्ठिदी।

छण्णं संठाणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ। णवरि हुंडसंठाणस्स

मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। उत्कर्षसे उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा इन दोनोंके ही अन्तरका प्रमाण असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक, समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। जैसे शरीरनामकर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांग, बन्धन और संघात नामकर्मोंकी भी उक्त दोनों उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिए। विशेष इतना है कि औदारिकशरीर आंगोपांगकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर कार्मणशरीर अर्थात् कर्मणकाययोगके दो समय अधिक एकेन्द्रियकी कायस्थिति प्रमाण होता है।

छह संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उक्त अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। उत्कर्षसे छहों

अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं सागरोवमसदं सादिरेयं। छण्णं संघडणाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ। णवरि असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा-पोग्गलपरियट्टा।

वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहाय-गदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुहपंचय-णिमिण-णीचागोदंतराइयाणमुक्कस्स-ट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्स-ट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-सुह-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणंतराइय-उवघाद-परघाद-उस्सासाणमंतोमुहुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-तसाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, उज्जोव-बादरणामाणमसंखेज्जा लोगा, पज्जत्तस्स अंतोमुहुत्तं, पत्तेयसरीरस्स अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा, दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचा-गोदाणं सागरोवमसदपुधत्तं।

तिण्णमाणुपुव्वीणं जहा गदिणामाणं तहा वत्तव्वं। णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणु-

---

संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर साधिक सौ सागरोपम प्रमाण होता है। छह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। विशेष इतना है कि असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। उत्कर्षसे छहों संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभादिक पांच, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। उत्कर्षसे वह वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, शुभ, सुस्वर, आदेय, निर्माण, अन्तराय, उपघात, परघात और उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त मात्र; अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और त्रसका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; उद्योत और बादर नामकर्मोका असंख्यात लोक, पर्याप्तका अन्तर्मुहूर्त, प्रत्येकशरीरका अढ़ाई पुद्गलपरिवर्तन; तथा दुर्भग अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रका सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है।

तीन आनुपूर्वियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरका कथन गतिनामकर्मोंके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अनुत्कृष्ट

पुव्वीए अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि त्ति वत्तव्वं। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो होदूण मणुस्सेसुप्पज्जिय मणुस्साणुपुव्वीए उक्कस्सट्ठिदिं वेदिय तदो अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं समाणिय गब्भे चेव उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण पुणो तदुक्कस्सट्ठिदिं कादूण मणुस्सेसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो। णेदमसिद्धं, सत्तमाए पुढवीए उप्पज्जंतस्स मणुस्सेसुप्पत्तिं पडि विरोहाभावदो। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं[1] उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। णवरि आदावस्स दसवस्ससहस्साणि सादिरेयाणि। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। णवरि साहारणसरीरस्स एगसमओ। उक्कस्सेण आदाव-साहारणसरीराणं जहाकमेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा असंखेज्जा लोगा,

स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र होता है, तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है, ऐसा कहना चाहिये। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर और प्रतिभग्न होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थितिका वेदन करके तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा पर्याप्तिको पूर्ण कर गर्भमें ही उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर फिरसे उसको उत्कृष्ट स्थितिको करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके उपर्युक्त अन्तर पाया जाता है। यह असिद्ध भी नहीं, क्योंकि, जो जीव सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाला है उसके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेका कोई विरोध नहीं है। उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रकण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। विशेष इतना है कि आतप नामकर्मका वह अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। उन सबकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। विशेष इतना है कि साधारणशरीर नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर एक समय मात्र होता है। उत्कर्षसे वह अन्तर आतप और साधारणशरीर नामकर्मका यथाक्रमसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और असंख्यात लोक, सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके

१ काप्रतौ 'दुसमऊणाणं', ताप्रतौ 'दुसमउ [णा] णं'।

सुहुमस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, अपज्जत्तस्स सागरोवमसहस्सं सादिरेगं। थावरस्स एइंदियभंगो। जहा पंचण्णं संठाणाणं तहा पसत्थविहायगइ-उच्चागोद-सुहपंचयाणं[1]। णवरि उच्चागोदउक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। तित्थयरस्स उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। एवमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं समत्तं।

जहण्णए पयदं— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-आहारसरीर-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। णिद्दा-पयलाणं पि जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि त्ति एत्थ ण परूविदं। कुदो ? एदस्साइरियस्स उवदेसेण खीणकसायम्हि जहण्णट्ठिदिउदीरणाभावादो। एसिं[2] णामपयडीणं सजोगिचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरणा तासिं पि अंतरं णत्थि। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा।

मिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। उवसामगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

असंख्यातवें भाग, तथा अपर्याप्त नामकर्मका साधिक एक हजार सागरोपम प्रमाण होता है। स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा एकेन्द्रियजाति नामकर्मके समान है। जैसे पांच संस्थानोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही प्रशस्त विहायोगति, उच्चगोत्र तथा शुभ आदि पांच प्रकृतियोंके भी उक्त अन्तरकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर नहीं होता। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर अधिकारप्राप्त है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, आहारशरीर, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। निद्रा और प्रचलाकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, यह यहां नहीं कहा गया है; क्योंकि, इन आचार्यके उपदेशसे क्षीणकषाय गुणस्थानमें इन दोनोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा नहीं होती। जिन नाम प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें होती है उनकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है।

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। परन्तु उपशामककी अपेक्षा उसका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। इन तीनों ही प्रकृतियों-

---

१ ताप्रतौ 'सुह-पंचंतराइयाणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'एदासिं' इति पाठः।

उक्कस्सेण तिण्णं पि जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरमुवड्ढपोग्गलपरियट्टं। बारसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा। सादा-साद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं[1] जहण्णेण पलिदोवमस असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। भय-दुगुंछाणं बारसकसायभंगो। तिण्णं वेदाणं चदुण्णं सजलणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।

देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं। उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, तिरिक्खाउअस्स सागरोवमसदपुधत्तं।

तिण्णं गइणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं। मणुसगईए णत्थि अंतरं, सजोगिचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरण-दंसणादो। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं। तिण्णं सरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं। एवं दोण्णमंगोवंगणामाणं। वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्स

की जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कषसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण और उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा बारह कषायोंके समान है। तीन वेदों और चार संज्वलन कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है। उत्कर्षसे उक्त अन्तर मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण तथा तिर्यंचआयुका सागरोपम शतपृथक्त्व प्रमाण होता है।

तीन गतिनामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण तथा उत्कर्षसे वह अनन्त काल प्रमाण होता है। मनुष्यगति नामककर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, जघन्य स्थितिकी उदीरणा सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें देखी जाती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है। तीन शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे होता ही नहीं है। इसी प्रकारसे दो आंगोपांग नामकर्मोंके उक्त अन्तरका कथन करना चाहिए। वैक्रियिक-

१ ताप्रतौ 'हस्स-रदि-सोगाणं' इति पाठः।

देवगइभंगो । पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो। एइंदियजादिणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । पंचिंदियजादिणामाए णत्थि अंतरं । छसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणं च णत्थि अंतरं । पंचण्णं संघडणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं ।

णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं । एवमुज्जोवणामाए । थावर-सुहुम-साहारणाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-अपज्जत्त-णीचागोदाणमसादभंगो । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो— जहण्णपदभंगविचओ उक्कस्सपदभंगविचओ

शरीरांगोपांगकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर देवगतिके समान है । पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरनामकर्मोंके समान है । एकेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । छह संस्थानों और वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता है । पांच संहनन नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । आतप नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । इसी प्रकार उद्योत नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर भी समझना चाहिये । स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है । दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, अपर्याप्त और नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है— जघन्यपदभंगविचय और उत्कृष्टपद-

चेदि। तत्थ अट्ठपदं– जे उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरया ते अणुक्कस्सियाए अणुदीरया, जे अणुक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरया ते उक्कस्सियाए अणुदीरया। जे जं पयडिमुदीरेंति तेसु पयदं। अणुदीरएसु अव्ववहारो। एदमेत्थ अट्ठपदं कादूण उवरिमपरूवणा कायव्वा– पंचण्णं णाणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। एवमणुक्कस्सियाए। णवरि तप्पडिलोमेण तिण्णि भंगा वत्तव्वा। एवं सेससव्वकम्माणं पि वत्तव्वं। णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारदुग-आणुपुव्वीतिगाणं पादेक्कमट्ठभंगा। उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरयाणं सव्वभंग-समासो सोलस १६। एवमुक्कस्सओ णाणाजीवभंगविचओ समत्तो।

जहण्णपदभंगविचए ताव अट्ठपदं वुच्चदे– जे जहण्णियाए उदीरया ते अजहण्णिआए ट्ठिदीए णियमा अणुदीरया, जे अजहण्णियाए उदीरया जीवा ते जहण्णियाए ट्ठिदीए णियमा अणुदीरया। एदेण अट्ठपदेण जहण्णपदभंगविचओ उच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादासदवेदणीय-दोदंसणमोहणीय-चदुसंजलण-सत्त-णोकसाय-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जेसिं णामाणं तसा जहण्णं करेंति तेसिं च कम्माणं जहण्णपदभंगविचए छच्चेव भंगा होंति। तं जहा– एदेसिं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया

भंगविचय। उनमें अर्थपद— जो जीव उत्कृष्ट स्थितिके उदीरक हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं, जो जीव अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरक होते हैं वे उत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं। जो जिस प्रकृतिकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं। अनुदीरक जीवोंका व्यवहार नहीं है। यहां इस अर्थपदको करके आगेकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनु-दीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व बहुत जीव उदीरक होते हैं। इसी प्रकारसे उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके विषयमें भी प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि उनके विपरीत क्रमसे तीन भंगोंका कथन करना चाहिये। इसी प्रकारसे शेष दर्शना-वरणादि सब कर्मोंके सम्बन्धमें प्रकृत प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि सम्य-ग्मिथ्यात्व, आहारद्विक और तीन आनुपूर्वियोंमेंसे प्रत्येकके आठ भंग कहना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंके सब भंगोंका जोड़ सोलह (१६) होता है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट भंगविचय समाप्त हुआ।

जघन्यपदभंगविचयके विषयमें पहिले अर्थपदका कथन करते हैं— जो जीव जघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे अजघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं, तथा जो जीव अजघन्य स्थितिके उदीरक हैं वे जघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं। इस अर्थपदके अनुसार जघन्यपदभंगविचयका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, दो दर्शनमोहनीय, चार संज्वलन कषाय, सात नोकषाय, नीच व ऊंच गोत्र, पांच अन्तराय तथा जिन नामकर्मप्रकृतियोंका त्रस जीव जघन्य करते हैं उन नामकर्मप्रकृतियोंके भी जघन्यपदभंगविषयक छह ही भंग होतेहैं। वे इस प्रकारसे— इन कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत

सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। एवं तिण्णि भंगा ३। अजहण्णस्स वि तिण्णि चेव भंगा लब्भंति ३। एदेसिं समासो छभंगा होंति ६। पंचदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्खाउ-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणणामाणं जहण्णट्ठिदीए णियमा उदीरया अणुदीरया च अत्थि। मणुसगइ-देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणाए सोलस-सोलस भंगा। मणुस-देव-णिरयआउआणं च जहण्णट्ठिदिउदीरयाणं छ भंगा होंति। सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं सोलस भंगा। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो अंतरं च णाणाजीवेहि भंगविचयादो साहेदूण वत्तव्वं। एवं कालंतरपरूवणा समत्ता।

सण्णियासो वुच्चदे—मदिणाणावरणीयस्स उक्कस्सट्ठिदिमुदीरेंतो सुदणाणावरणीय-ट्ठिदीए किमुदीरओ अणुदीरओ? णियमा उदीरओ। जदि उदीरओ किमुक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ आहो अणुक्कस्सियाए? उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा। एवं सेसतिण्णिणाणावरणीय-चउदंसणावरणीयाणं वा। पंचदंसणावरणीयाणं असादस्स च अणु-

---

जीव अनुदीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं। इस प्रकार तीन (३) भंग हुए। अजघन्य स्थितिके भी तीन (३) ही भंग प्राप्त होते हैं। इनके जोड़से छह (६) भंग होते हैं। पांच दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यंचआयु, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिके नियमसे बहुत जीव उदीरक और अनुदीरक भी होते हैं। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके सोलह-सोलह भंग होते हैं। मनुष्यायु, देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंके छह भंग होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व और आहारकशरीरके सोलह भंग होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयसे सिद्ध करके करनी चाहिये। इस प्रकार काल और अन्तरकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है— मतिज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला जीव श्रुतज्ञानावरणीयकी स्थितिका क्या उदीरक होता है या अनुदीरक? वह नियमसे उसका उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह क्या उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है या अनुत्कृष्ट स्थितिका? वह उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कम उत्कृष्ट स्थितिको आदि करके उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। इसी प्रकार शेष तीन ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये। वह पांच दर्शनावरण और असाता वेदनीयका अनुदीरक और उदीरक भी होता है। यदि उनका उदीरक

दीरओ उदीरओ वा। जदि उदीरओ उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा ट्ठिदीए उदीरओ। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा। सादस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव संखेज्जगुणहीणा। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं णियमा अणुदीरओ। मिच्छत्तस्स णियमा उदीरओ[1], तं तु समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणा। सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरगो। जदि उदीरगो तं तु समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण हीणा त्ति। णवरि कसायवज्जाणं समऊणमादिं करिय पलिदोवमस्स असंखेज्जभागहीण-वीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति। इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदि अंतोमुहूत्तूणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीओ त्ति। णिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरगो। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा चउट्ठाणपदिदा। मणुस-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि

होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि लेकर उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। सातावेदनीयका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यातगुणी हीन तक होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह नियमसे अनुदीरक होता है। मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक होता है। वह उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, नपुंसक वेद, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। विशेष इतना है कि कषायोंको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी एक समय कम स्थितिको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक स्थिति होती है। स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम स्थितिको आदि लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करता है। नारकआयुका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति चतुःस्थानपतित होती है। मनुष्यायु व तिर्यंचआयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित्

---

१ प्रयोरुभयोरेव 'उदीरया' इति पाठः।

उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा असंखेज्जगुणहीणा। देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा सादिरेयअट्ठारससागरोवममादिं कादूण जाव समयाहियावलिया त्ति। णिरयगइणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। जदि अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवमसहस्सस्स। मणुसगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव संखेज्जगुणहीणा। तिरिक्खगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। देवगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवमसहस्सस्स। एइंदिय-पंचिंदियजादिणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा[1] समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[2] त्ति। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादीणं णियमा अणु-

---

अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे असंख्यातगुणी हीन अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। देवायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे साधिक अठारह सागरोपमको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। नरकगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो वह अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है। मनुष्यगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उसके नियमसे अनुत्कृष्ट स्थिति होती है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यात-गुणी हीन तक होती है। तिर्यग्गति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। देवगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है। एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मोंका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक होती है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय

---

१ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सा' [वा]' इति पाठः। २ ताप्रतौ '-भागा' इति पाठः।

दीरओ। ओरालियसरीरस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। वेउव्वियसरीरणामाए णिरयगइभंगो। तेजा-कम्मइयसरीराणं सुदणाणावरणभंगो। पंच-संठाण-पंचसंघडणाणं सादभंगो। हुंडसंठाणस्स असादभंगो। असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स तिरिक्खभंगो। णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए[1] सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समयूणमादिं कादूण जाव पल्लस्स असंखेज्जदिभागो ऊणो त्ति। एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए। मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणमणुदीरओ। उवघाद-परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमसादभंगो। णवरि बादर-पज्जत्ताणं णियमा उदीरओ। उज्जोवणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा[2]। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीए। आदावस्स अणुदीरओ। पसत्थविहायगदि-थिर-सुभ-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं सादभंगो। णवरि थिर-

---

जातिनामकर्मोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। औदारिकशरीरका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। नरकगति-प्रायोग्यानुपूर्वीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक कम होती है। इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-पूर्वीकी प्ररूपणा समझना चाहिये। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका वह अनुदीरक होता है। उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनके संनिकर्षकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि वह बादर और पर्याप्तका नियमसे उदीरक होता है। उद्योत नामकर्मका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक होती है। वह आतप नामकर्मका अनुदीरक होता है। प्रशस्त विहायोगति, थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि स्थिर और शुभका वह नियमसे उदीरक होता है। अस्थिर,

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'णिरयगइदेवाणुपुव्वीए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वा' इत्येतपदं नास्ति।

सुभाणं णियमा उदीरओ। अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं असादभंगो। णवरि अथिर-असुहाणं णियमा उदीरओ। अगुरुअलहुअ-णिमिणाणं सुदणाणावरणभंगो। अपज्जत्त-सुहुम-साहारणाणमणुदीरओ। वण्ण-गंध-रस-फासाणं सुदणाणावरणभंगो। उच्चागोदस्स सादभंगो। एवमाभिणिबोहियणाणावरणीयस्स णिरोहणं काऊण परूवणा कदा। एवं सव्वासिं धुवबंधपयडीणं कायव्वं।

एत्तो समासेण कासिं पि पयडीणं सण्णियासं वत्तइस्सामो। तं जहा— णाणावरणीयस्स णियमा उदीरओ। उदीरेंतो वि णियमा अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणं[1] ति। एवं सव्वासिं धुवबंधपयडीणं वत्तव्वं। हस्स-रदि-इत्थि-पुरिसवेदाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। णवुंसयवेद-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूण-वीसंसागरोवमकोडाकोडीओ त्ति। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि

अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी यह संनिकर्षप्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि अस्थिर और अशुभका नियमसे उदीरक होता है। अगुरुलघु और निर्माणके संनिकर्षकी प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। अपर्याप्त, सूक्ष्म और साधारणका अनुदीरक होता है। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी यह प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। उच्चगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। इस प्रकार आभिनिवोधिकज्ञानावरणीयकी विवक्षा करके यह संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। इसी प्रकारसे सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी विवक्षा करके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये।

यहां संक्षेपसे कुछ प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— [सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला] ज्ञानावरणीयका नियमसे उदीरक होता है। उदीरक होकर भी वह उत्कृष्टसे एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये। हास्य, रति, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक होती है। नपुंसकवेद, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और

---

१ काप्रतौ 'भागेणूणं' इति पाठः।

उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूण-चत्तालीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति। णिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा[1] अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव समयाहियावलिया त्ति। मणुस-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा असंखेज्जगुणहीणट्ठिदीए उदीरओ। देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया[2] अणुदीरओ। जदि उदीरओ सादिरेयअट्ठारससागरोवमाणि आदिं कादूण जाव[3] [समयाहियावलिया त्ति। णिरयगइ-देवगइणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव] सागरोवमसहस्सअंतो। मणुसगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। जदि अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। तिरिक्खगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। एवं सेसाओ वि सव्वणामपयडीओ जाणिदूण परूवेयव्वाओ। जहा सादेण सह सण्णियासो कदो तहा इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं परियत्तमाणसुह-

---

अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम चालीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होती है। नारकायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता हुआ अन्तर्मुहूर्तको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र अनुत्कृष्ट स्थिति तकका उदीरक होता है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे असंख्यातगुणी हीन स्थितिका उदीरक होता है। देवायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उसका उदीरक होता है तो साधिक अठारह सागरोपमोंको आदि करके एक समय अधिक आवली मात्र स्थिति तकका उदीरक होता है। नरकगति व देवगति नामकर्मोंका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अन्तर्मुहूर्तको आदि करके हजार सागरोपमोंके भीतर तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। मनुष्यगतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टसे एक समय कम स्थितिको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। तिर्यंचगतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे शेष सभी नामप्रकृतियोंकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। जिस प्रकार सातावेदनीयके साथ संनिकर्षकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य

---

१ ताप्रतौ 'उदीरओ [ण] णियमा' इति पाठः। २ काप्रतौ 'देवाउअस्स उदीरया सिया', ताप्रतौ 'देवाउअस्स [सिया] उदीरया (ओ) सिया। ३ कोष्ठकस्थोऽयं पाठस्ताप्रतौ नोपलभ्यते।

णामकम्मपयडीणं च सण्णियासो कायव्वो। जहण्णपदसण्णियासो वि चिंतिय वत्तव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

अप्पाबहुअं उच्चदे— सव्वत्थोवा तित्थयरुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। देव-णिरयाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। आहारसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदिउदीरणा[1] विसेसाहिया। देवगदीए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदिउदीरणा[2] विसेसाहिया। मणुसगदि-उच्चागोद-जसगित्तीणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। एदासिं चेव पयडीणं जट्ठिदिउदीरणा[3] विसेसाहिया। णिरयगइ-तिरिक्खगइ-चदुसरीर-अजसगित्ति-णीचागोदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सादस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सादस्स जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-पंचंतराइयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा। एदासिं चेव जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। णवण्णं णोकसायाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। एदेसिं चेव कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सोलसण्हं कसायाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा त्ति[4]। एदेसिं कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसा-

---

व रति तथा परिवर्तमान शुभ नामकर्म प्रकृतियोंकी मुख्यतासे भी संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। जघन्य पदविषयक संनिकर्षकी भी विचारकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सबसे स्तोक है। मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। आहारशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। उससे उसीकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। मनुष्यगति, उच्चगोत्र और यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इन्हीं प्रकृतियोंकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगति, तिर्यंचगति, आहारकको छोड़कर शेष चार शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इनकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इन्हीं कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इन कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'जहण्णट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः। २ काप्रतौ 'ज० ट्ठिदि-', ताप्रतौ 'जहण्णट्ठिदि०' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'जह० ट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः। अग्रेऽत्र काप्रतौ प्रायशः 'ज० ट्ठिदि' तथा ताप्रतौ 'जह० ट्ठिदि०' इत्येवंविधः पाठ उपलभ्यते। ४ काप्रतौ 'सरिसा होंति' इति पाठः।

हिया । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । सम्मत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । एवमोघुक्कस्सअप्पाबहुअं समत्तं । एवं गदियादिसु वि उक्कस्सदंडओ कायव्वो ।

जहण्णप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेद-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा थोवा । जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । वेउव्विय० जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । अजसगित्ति० विसे० । जट्ठिदि० विसे० । तिरिक्खगदि० जह० ट्ठिदि० विसे० । जट्ठिदि० विसे० । [1]णीचागोदस्स जह० ट्ठिदिउदीरणा विसे० । जट्ठिदि० विसे० । सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदि० विसे० । असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । जट्ठिदि० विसेसाहिया । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा सिसेसाहिया । जट्ठिदि० विसेसाहिया । हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । इसी प्रकारसे गति आदि मार्गणाओंमें भी उत्कृष्ट दण्डक करना चाहिये ।

जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार संज्वलन, तीन वेद, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है । ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है । हास्य व रतिकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा

---

१ काप्रतौ 'णीचागोदस्स' इत्यादिवाक्यद्वयं नास्ति ।

जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। बारसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव। जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। देवगदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदि० विसेसाहिया। देवगदिपाओग्गाणु० विसे०। जट्ठिदि० विसेसाहिया। णिरयगइ० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। णिरयगइपाओग्गाणु० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। आहारदुग० संखेज्जगुणा। जट्ठिदि० विसेसाहिया। एवमोघ-जहण्णप्पाबहुअं समत्तं।

णिरयगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-णिरयाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीर-णिरयगईणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदि-

विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। आहारद्विककी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ जघन्य अल्प-बहुत्व समाप्त हुआ।

नरकगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और नारकायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीर और नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशःकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तैजस और कार्मण शरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेद-

उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरण-चउदंसणावरण पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स[1] जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, तेसिं चेव जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया। णिद्दा-पयलाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। एवं णिरयगइजहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

तिरिक्खगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा[2]। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। जसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया। तिरिक्खगइणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। ओरालिय-

---

नीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, उन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंचगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और तिर्यंचआयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक हैं। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण

---

१ ताप्रतौ 'एवं णवुंसयवेदस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'संखेज्जगुणा' इति पाठः।

तेजा-कम्मइयसरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, एइंदिएसु चेव पडिवक्खबंधगद्धं गालिय जहण्णट्ठिदिउदीरणविहाणादो। पंचिंदियतिरिक्खपडिवक्खबंधगद्धाओ किण्ण गालिदाओ? णवुंसयवेदपाओग्गविसोहीए णवुंसयवेदे वज्झमाणे तट्ठिदीए बहुत्तप्पसंगादो। जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसकसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा सरिसा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। कुदो कसायट्ठिदीदो इत्थिवेदट्ठिदीए गलिदपडिवक्खबंधगद्धाए विसेसाहियत्तं? ण, इत्थिवेदो-

---

शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थितिउदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीय जघन्य स्थितिकी-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति व शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवोंमें ही प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककालको गला कर जघन्य स्थितिकी उदीरणाका विधान है।

शंका— पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककाल क्यों नहीं गलते?

समाधान— कारण कि नपुंसकवेदके बन्धयोग्य विशुद्धिके द्वारा नपुंसकवेदके बांधे जानेपर चूंकि उसकी स्थितिके बहुत होनेका प्रसंग आता है, अतएव वे वहां नहीं गलते।

नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति उदीरणा समान है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है।

शंका— कषायस्थितिकी अपेक्षा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धककालसे रहित स्त्रीवेदकी स्थिति विशेष अधिक क्यों है?

समाधान— नहीं, क्योंकि स्त्रीवेदके उदय युक्त जीवमें स्त्रीवेदके उदयके समुत्पादनार्थ

दइल्ले समुप्पायणट्ठं इत्थिवेदविसोहीए इत्थिवेदेण सह बज्झमाणकसायाणमहियट्ठिदीदो पडिवक्खबंधगद्धाओ वि बहुत्तुवलंभादो। जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदि-उदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तिरिक्खेसु णीचागोदस्स चेव उदीरणा होदि त्ति सव्वत्थ परूविदं। एत्थ पुण उच्चागोदस्स वि परूवणा परूविदा, तेण पुव्वा-वरविरोहो त्ति भणिदे– ण, तिरिक्खेसु संजमासंजमं परिवालयंतेसु उच्चागोदत्तुवलंभादो। उच्चागोदे देस-सयलसंजमणिबंधणे संते मिच्छाइट्ठीसु तदभावो त्ति णासंकणिज्जं, तत्थ वि उच्चागोदजणिदसंजमजोगत्तावेक्खाए उच्चागोदत्तं पडि विरोहाभावादो। एवं तिरिक्ख-गदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

तिरिक्खणीसु मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा। जसगित्तिए जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तिरिक्खगइणा-माए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदि-

---

स्त्रीवेदके बन्ध योग्य विशुद्धिके द्वारा स्त्रीवेदके साथ बन्धको प्राप्त होनेवाली कपायोंकी अधिक स्थितिसे प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धककाल भी बहुत पाया जाता है।

स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्य-ग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेप अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेप अधिक है। उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है।

शंका— तिर्यंचोंमें नीचगोत्रकी ही उदीरणा होती है, ऐसी प्ररूपणा सर्वत्र की गयी है। परन्तु यहां उच्चगोत्रकी भी उनमें प्ररूपणा की गयी है, अतएव इससे पूर्वापर कथनमें विरोध आता है?

समाधान— ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि इसमें पूर्वापर विरोध नहीं है, क्योंकि, संयमा-संयमको पालनेवाले तिर्यंचोंमें उच्चगोत्र पाया जाता है।

यदि उच्चगोत्रके कारण देशसंयम और सकलसंयम हैं तो फिर मिथ्यादृष्टियोंमें उसका अभाव होना चाहिये?

समधान— ऐसी आशंका करना योग्य नहीं है, क्योंकि, उनमें भी उच्चगोत्रके निमित्तसे उत्पन्न हुई संयमग्रहणकी योग्यताकी अपेक्षा उच्चगोत्रके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

इस प्रकार तिर्यंचगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंच स्त्रियोंमें मिथ्यात्व और तिर्यंच आयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेप अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेप अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेप अधिक है,

उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। दंसणावरणपंचयस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीरणामाए उच्चागोदस्स च जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी० जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ[1] समत्तो।

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीर नामकर्म और उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

---

१ ताप्रतौ 'उदीरणसंकमो दंडओ' इति पाठः।

मणुसगदीए पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेदाउआणं पंचंतराइयाणं जह० ट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठि० उदी० असंखेज्जगुणा। मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जह० ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। अजसगत्तीए जह० ट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णिया ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। बारसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। दंसणावरणपंचयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। आहारसरीरणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। एवं[1] मणुसगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

मनुष्यगतिमें पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार संज्वलन, तीन वेद और आयु कर्मोंकी तथा पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। मनुष्यगति, औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असतावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। आहारकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

१ ताप्रतौ 'एवं' इत्येतत्पदं नास्ति।

देवगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-देवाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठि० उदी० असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। देवगइ-वेउव्वियसरीरणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। जसकित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० उदी० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णिद्दा-पयलाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया।

देवगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और देवायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगति और वैक्रियिकशरीर नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा इतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है,

देवगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

असण्णीसु आउअस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदि० उदी० असंखेज्जगुणा। जसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। तिरिक्खगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया[1]। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सोलसकसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसे-

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

असंज्ञी जीवोंमें आयु कर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक

१ ताप्रतौ [ज० ट्ठिदि० विसे०-] इति पाठः।

साहिया। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। असण्णीसु जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

भुजगारउदीरणाए अट्ठपदं— अप्पदराओ ट्ठिदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए बहुदरासु ठिदीसु उदीरिदासु एसा भुजगारउदीरणा। बहुदराओ ट्ठिदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए थोवासु उदीरिदासु अप्पदरउदीरणा। जत्तियाओ ट्ठिदीओ एण्हि उदीरिदाओ अणंतरउवरिमसमए तित्तियासु चेव उदीरिदासु एसा[1] अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरएण उदीरिदे भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाहि पुधभूदत्तादो एसा अवत्तव्व-उदीरणा[2]। एदमेत्थ अट्ठपदं। संपहि सामित्तं वुच्चदे। भुजगारउदीरओ को होदि? अण्णदरो। अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरओ को होदि? अण्णदरो। णवरि धुवियाणमवत्तव्वउदीरगो णत्थि[3]। एवं सामित्तपरूवणा गदा।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि समयसहस्साणि। एइंदियस्स अप्पिदणाणावरणीयपयडीए उवरि अणप्पिदसंखेज्जसहस्सपयडिट्ठिदीणं संकमेण संकंत-

है। पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असंज्ञियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

भुजाकारउदीरणामें अर्थपद— अल्पतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह भुजाकार उदीरणा होती है। बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें स्तोक स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर अल्पतर उदीरणा होती है। जितनी स्थितियोंकी इस समय उदीरणा की गयी है आगेके अनन्तर समयमें उतनी ही स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरकके द्वारा उदीरणा की जानेपर यह अवक्तव्य उदीरणा कही जाती है, क्योंकि, वह भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंसे भिन्न है। यह यहां अर्थपद हुआ। अब स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। भुजाकार उदीरणा करनेवाला कौन होता है? अन्यतर जीव भुजाकार उदीरक होता है। अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक कौन होता है? अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है। विशेष इतना है कि ध्रुवोदयी प्रकृतियोंका अवक्तव्य उदीरक नहीं होता। इस प्रकार स्वामित्व प्ररूपणा समाप्त हुई।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे संख्यात हजार समयों तक होती है। एकेन्द्रियके विवक्षित प्रकृतिस्थितिके आगे अविवक्षित संख्यात हजार प्रकृतिस्थितियोंके संक्रमसे संक्रान्त

१ काप्रतौ 'एसो' इति पाठः। २ करणोदय-संताणं पगइट्ठाणेसु सेसगतिगे य। भूयक्कारप्पयरो अवट्ठिओ तह अवत्तव्वो॥ एगादहिगे पढमो एगाईऊणगम्मि बिइओ उ। तत्तियमेत्तो तइओ पढमे समये अवत्तव्वो॥ क. प्र. ७, ५१-५२ ३ मप्रतोकमयोरेव 'दुवियाणमवत्तव्वा उदीरगो' इति पाठः।

पयडिमेत्ता ठिदिभुजगारसमया एइंदिएसु[1] लद्धूण पुणो अप्पिदपयडीए[2] अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सव्वासु वड्ढिदासु अण्णेगो, पुणो सण्णिपंचिंदिएसुप्पण्णयस्स विग्गहगदीए असण्णिट्ठिदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो, एवं वड्ढिदट्ठिदीसु[3] कमेणुदीरिज्जमाणासु भुजगारुदीरणाए कालो संखेज्जाणि समयसहस्साणि।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बारस समया। तंजहा— एइंदियस्स अणप्पिदअट्ठपयडीणं जहापरिवाडीए संकमेण अट्ठ भुजगारसमया, पुणो अप्पिदपयडीए अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सव्वासु वड्ढिदासु अण्णेगो, पुणो सण्णीसुप्पण्णस्स विग्गहगदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो; एवं बारस समया। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं[4] भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण णव समया अत्थदो दस समया वा।

सादासाद-मिच्छत्ताणं भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगूणवीस समया। णवण्णं णोकसायाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अट्ठावीससमया। अत्थदो एगूणवीस समया दीसंति।

हुई प्रकृतियोंके बराबर स्थितिभुजाकार समयोंको एकेन्द्रियोंमें प्राप्त करके पश्चात् विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक, संक्लेशक्षयसे सबके वृद्धिको प्राप्त होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें असंज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, इस प्रकार वृद्धिप्राप्त स्थितियोंकी क्रमसे उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका काल संख्यात हजार समय प्रमाण होता है।

चक्षुदर्शनावरण आदि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे बारह समय तक होती है। वह इस प्रकारसे— एकेन्द्रियके अविवक्षित आठ प्रकृतियोंके परिपाटी अनुसार संक्रमण द्वारा आठ भुजाकार समय, पुनः विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक समय, संक्लेशक्षयसे सब प्रकृतियोंके वृद्धिगत होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें एक, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय; इस प्रकार उपर्युक्त बारह समय प्राप्त होते हैं। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे नौ समय अथवा अर्थतः दस समय होती है।

साता व असाता वेदनीय तथा मिथ्यात्वकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। सोलह कषायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उन्नीस समय होती है। नौ नोकषायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अट्ठाईस समय होती है। अथवा अर्थतः उसके उन्नीस समय दिखते हैं।

---

१ काप्रतौ 'समयासु एइंदिएसु', ताप्रतौ 'समया [सु] एइंदिएसु' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणप्पिदयडीए' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'वड्ढिदेसु ट्ठिदीसु' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'दंसाणावरणीय', ताप्रतौ 'दंसणावरणीय(याणं)' इति पाठः।

आउआणं भुजगारउदीरणा णत्थि। णामाणमण्णदरपयडीए भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि समयसहस्साणि। उच्चागोद-णीचागोदाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पंच समया। अत्थदो चत्तारि समया दीसंति। पंचण्णमंतराइयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अट्ठ समया।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीयाणं णामम्हि धुवोदयपयडीणं पंचंतराइयाणं च अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। पंचण्णं दंसणावरणीयाणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सादस्स अप्पदरउदीरणा जहणेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासे समऊणे। असादस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सम्मादिट्ठीसु असंजदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेसिं पुव्वुत्तसव्वकम्माणमवट्ठियस्स कालो जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

मिच्छत्तअप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सम्मत्तस्स भुजगारो अवट्ठिदो जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ। अप्पदरउदीरणा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,

---

आयु कर्मोंकी भुजाकार उदीरणा नहीं होती। नाम कर्मकी प्रकृतियोंमें अन्यतर प्रकृतिकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात हजार समय तक होती है। उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पांच समय होती है। अर्थतः उसके चार समय दिखते है। पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय होती है।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, नामकर्मकी ध्रुवोदयी प्रकृतियों तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम काल तक होती है। पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है। सातावेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम छह मास तक होती है। असाता वेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंयत सम्यग्दृष्टियोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। पूर्वोक्त इन सब कर्मोंकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

मिथ्यात्वकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी भुजाकार और अवस्थित उदीरणाओंका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अवट्ठिदउदीरणाओ णत्थि । अप्पदरउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

सोलसण्णं कसायाणं भय-दुगुंछाणं च अप्पदरउदीरणा अवट्ठिदउदीरणा च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं । णवुंसयवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । इत्थिवेदस्स अप्पदरउदरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पणवण्णपलिदोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पुरिसवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सदिरेयाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? एदासु पयडीसु बज्झमाणासु कसायअवट्ठिदबंधस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो । आउआणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण सग-सगजहण्णट्ठिदी समयाहियावलियाए ऊणा । णवरि मणुस्साउअस्स एयो[1]समयो । उक्कस्सेण सग-सगउक्कस्सट्ठिदी समयाहियावलियाए हीणा ।

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजाकार और अवस्थित उदीरणा नहीं होती । उसकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सोलह कषायोंकी तथा भय व जुगुप्साकी अल्पतर उदीरणा और अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । जिस प्रकार असातावेदनीयकी इन प्रकृत उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार अरति व शोककी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । जिस प्रकार सातावेदनीयकी उन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार हास्य व रतिकी भी उन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । नपुंसकवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । स्त्रीवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक पचवन पल्य प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पुरुषवेदकी अल्पतर उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इसका कारण यह है कि इन प्रकृतियोंके बंधनेपर कषायके अवस्थित बन्धका अन्तर्मुहूर्त मात्र काल पाया जाता है । आयु कर्मोंकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अधिक आवलीसे हीन अपनी अपनी जघन्य स्थिति है । विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी उक्त उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उनकी उपर्युक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है ।

१ काप्रतौ 'खयो' इति पाठः ।

णिरयगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि। अवट्ठियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण समऊणावलिया। तिरिक्खगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। मणुसगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। देवगईए णिरयगइभंगो। सेसाणं[1] पि णामाणं जाणिदूण णेयव्वं जाव (?)।

णीचागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। उच्चागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमेयजीवेण कालो समत्तो।

एयजीवेण अंतरं कालादो साधेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि भंगविचओ—जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं। अवेदएहि अव्ववहारो। णाणावरणीयपंचयस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। सव्वाओ पयडीओ णाणाजीवेहि एवं जाणि-

नरकगति नामकर्मकी अल्पर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है। तिर्यग्गति नामकर्मकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। मनुष्यगतिकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्य प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। देवगतिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। शेष नामकर्मोंकी भी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

नीचगोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। ऊंच गोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा कालसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— जो जीव जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं। अवेदकोंका व्यवहार नहीं है। पांच ज्ञानावरणीयके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। इसी प्रकारसे

१ काप्रतौ 'देवगईए णिरयगई सेसाणं', ताप्रतौ 'देवगईए णिरयगईए सेसाणं' इति पाठः।

दूण भाणिदव्वाओ। णाणाजीवेहि कालो अंतरं च जाणिदूण भाणिदव्वं।

अप्पाबहुगं— सव्वत्थोवा णाणावरणपंचयस्स भुजगारउदीरया जीवा, अवट्ठिद-उदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवोदयणामपयडीणं च वत्तव्वं। सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्ज-गुणा। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयाणं। सादासादाणं णिद्दाभंगो।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिद-उदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स[1] सव्वत्थोवा अवट्ठिदउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया अप्पदर-उदीरया असंखेज्जगुणा। सोलसण्हं कसायाणमण्णदरस्स कसायस्स सव्वत्थोवा भुजगार-उदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं। इत्थि-पुरिसवेदाणं सव्वत्थोवा

सब प्रकृतियोंके विषयमें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन जानकर करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका कथन भी जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके भुजाकार उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं, उनसे अवस्थित उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय और ध्रुवोदयी नामप्रकृतियोंके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। निद्रा दर्शनावरणके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, उनसे अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये। साता व असाता वेदनीयकी प्रकृत अल्पबहुत्वप्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक उनसे अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे है। सम्यक्त्वके अवस्थित-उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकर उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्प-तर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सोलह कषायोंमें अन्यतर कषायके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर-उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके विषयमें इस अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। स्त्री और पुरुष वेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं,

---

१ ताप्रतौ 'अवत्तव्वउदीरया, [अप्पदरउदीरया] असंखे० गुणा, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिद-उदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स' इति पाठः।

अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदर-उदीरया संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा।

आउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। णिरय-गइणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया[1] असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। मणुसगइणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्व-उदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। जहा णवुंसयवेदस्स तहा तिरिक्खगइणामाए। देवगईए णिरयगइभंगो। ओरालियसरीरणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरणामाए देवगदिभंगो। संठाण-संघडणाणं ओरालियसरीरभंगो।

णिरयाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया। एवं मणुस-देवाणु-पुव्वीणं। तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। उवघाद-

भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आयु कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। जैसे नपुंसकवेदके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही तिर्यंचगति नामकर्मके विषयमें भी उसे करना चाहिये। देवगतिकी प्रकृत प्ररूपणा नरकगतिके समान है। औदारिकशरीर नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी यह प्ररूपणा देवगतिके समान है। संस्थानों और संहननोंकी यह प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकारसे मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके विषयमें प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

१ ताप्रतौ 'सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगार० असंखे० गुणा, अवट्ठिद० इति पाठः।

परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सुहदुहपंचय-उच्चागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। थावर-णीचागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिद-उदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। सेसअवुत्तपयडीणं पि जाणिऊण भाणियव्वं। एवं भुजगारो समत्तो।

पदणिक्खेवो वुच्चदे— सव्वत्थोवा उक्कस्सिया हाणी। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडय-ग्गहणादो। उक्कसिया वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहिया। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडयादो ट्ठिदिबंधुक्कस्सवड्ढीए विसेसाहियदंसादो। जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि, एगट्ठिदिपमाणत्तादो। वड्ढि-उदीरणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च जाणिदूण कायव्वं।

अप्पाबहुअं कीरदे। तं जहा— सव्वत्थोवा णाणावरणीयस्स असंखेज्जगुणहाणि-उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा[1]। अव-

उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुह-दुहपंचक (सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और यशकीर्ति) और ऊंच गोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। स्थावर और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। यहां जिन शेष प्रकृतियोंका उल्लेख नहीं किया गया है उनके विषयमें भी उपर्युक्त अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार भुजाकार समाप्त हुआ।

पदनिक्षेपका कथन करते हैं— उत्कृष्ट हानि सबसे स्तोक है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थिति-काण्डकका ग्रहण है। उत्कृष्ट वृद्धि व अवस्थान विशेष अधिक हैं, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिकाण्डककी अपेक्षा स्थितिबन्धकी उत्कृष्ट वृद्धि विशेष अधिक देखी जाती है। जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान ये तीनों ही समान हैं; क्योंकि, वे एक स्थिति प्रमाण हैं। वृद्धिउदीरणाके स्वामित्व, काल, अन्तर और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल तथा अन्तरका कथन जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयकी असंख्यात-गुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यात-भागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यात-भागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके

१ मप्रतौ 'संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखे० गुणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा असंखेज्जभागवड्ढि-उदीरया असंखेज्जगुणा' इति पाठः।

ट्ठिदउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। एवं पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवउदीरणसव्वणामपयडीणं च वत्तव्वं।

णिद्दाए वेदओ ट्ठिदिघादं ण करेदि। णिद्दाए वेदओ ट्ठिदिबंधं बंधदि। असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झादो संखेज्जगुणहीणं अंतोकोडाकोडीए हेट्ठदो बंधंतो वि सादस्स तिट्ठाणिय-चदुट्ठाणियाणि [ण] बंधदि, दुट्ठाणियाणि चेव बंधदि। एदं[1] णिद्दाट्ठिदिउदीरण-वड्ढिअप्पाबहुअस्स साहणं भणिदं। अप्पाबहुअं। तं जहा— सव्वत्थोवा णिद्दाए संखेज्जभागवड्ढिउदीरया। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभाग-वड्ढिउदीरया अणंतगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। एवं पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पि वत्तव्वं।

सव्वत्थोवा सादस्स संखेज्जगुणहाणिउदीरया। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्ज-गुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। असाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सादभंगो। णवरि चदुसंजलणाणमसंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिउदीरया

उदीरक संख्यातगुणे हैं। इस प्रकार पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय और ध्रुव उदीरणावाली सब नामप्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

निद्राका वेदक स्थितिघातको नहीं करता है। निद्राका वेदक स्थितिबन्धको बांधता है। वह असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यसे संख्यातगुणे हीन अन्तःकोड़ाकोड़िके नीचे स्थितिबन्ध-को बांधता हुआ भी सातावेदनीयके त्रिस्थानिक व चतुःस्थानिक स्थितिबन्धको [नहीं] बांधता है, किंतु उसके द्विस्थानिकको ही बांधता है। यह निद्राकी स्थिति-उदीरणावृद्धिके अल्पबहुत्वका साधन कहा है। उसका अल्पबहुत्व कहा जाता है। यथा— निद्राके संख्यातभागवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि-उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकारसे प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये।

सातावेदनीयके संख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यात-गुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। अव-स्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी यह प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि चार संज्वलन कषायोंके असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि-

---

१ ताप्रतौ 'एदे' इति पाठः।

वि अत्थि । ते एत्थ ण विवक्खिया ।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । संखेज्जगुणा (?) । संखेज्जगुणहाणि-उदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्ज-गुणा । सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्ज-गुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । एदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-च्छेदणएहि ओवट्टिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणं । संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागच्छेदणएहि ओवट्टिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणत्तादो । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मत्तपवेसणरासिग्गहणादो । संखेज्जभाग-हाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया णाम एगसमयपवेसया, संखेज्जभागहाणि-उदीरया पुण सव्वो पविट्ठरासी अंतोमुहुत्तस्संतो संखेज्जवारं संखेज्जभागवड्ढिखंडयघादओ, तेण संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा ।

उदीरक भी होते हैं । परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं की गयी है ।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थित-उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यात-भागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । ये पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां सम्यक्त्व-में प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिका ग्रहण है । संख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । इसका कारण यह है कि अवक्तव्यउदीरक एक समयमें प्रविष्ट होनेवाले जीव हैं, परन्तु संख्यात-भागहानिउदीरक अन्तर्मुहूर्तके भीतर संख्यात वार संख्यातभागवृद्धिकाण्डकोंकी घातक सब प्रविष्ट राशि है । इसीलिये संख्यातभागहानिउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानि-उदीरक असंख्यातगुणे हैं

इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया[1]। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। पुरिसवेदस्स इत्थिवेदभंगो। णवरि असंखेज्जगुणवड्ढिउदीरया वि अत्थि, ते एत्थ ण विवक्खिया। गंथाहिप्पाओ जाणिय वत्तव्वो। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया। संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? असण्णिपंचिंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियेसु सण्णिपंचिंदियेसु च संखेज्जभागहाणीए संभवुवलंभादो। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा।

देव-णिरयाउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वं। णिरयगईए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा[2]। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्ज-

स्त्रीवेदके असंख्यातगुणहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदकी यह प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है। विशेष इतना है कि उसके असंख्यातगुणवृद्धिउदीरक भी हैं। किन्तु उनकी विवक्षा यहां नहीं की गयी है। ग्रन्थके अभिप्रायको जानकर कथन करना चाहिये। नपुंसकवेदके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। कारण यह कि असंज्ञी पंचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय तथा संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें संख्यातभागहानिकी सम्भावना पायी जाती है। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। तिर्यंचआयु और मनुष्यायुके चार पद हैं, उनको जानकर कथन करना चाहिये। नरकगतिनामकर्मके संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानि-उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक

१ काप्रतौ 'असंखेज्जगुणहाणि', ताप्रतौ 'असंखे० [गुण] गुणहाणि०' इति पाठः। २ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा' इति पाठः।

भागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा, संखेज्जवासाउअरासीए पाहण्णियादो। देवगदिणामाए णिरयगइभंगो। तिरिक्खगइणामाए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणहाणीए उदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। मणुसगदीए सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरआ संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। ओरालियसरीरस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। [1]संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया अणंतगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरस्स णिरयगइभंगो। आहारसरीरस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया।

असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां संख्यातवर्षायुष्क राशिकी प्रधानता है। देवगति नामकर्मकी यह प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यंचगति नामकर्मके संख्यातगुणहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। औदारिकशरीरके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक अनन्तगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। आहारशरीरके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे

१ काप्रतावतः प्राक् 'संखेज्जगुणा' इत्येतदधिकं पदमुपलभ्यते।

असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा[1]। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो। वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्स वेउव्वियसरीरभंगो। समचउरससंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणी०। [संखेज्जगुणहाणी०] असंखेज्जगुणा[2]। संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। णग्गोहपरिमंडलसंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। एवं सादिय-वामण-खुज्जसंठाणाणं। हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो। वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स णग्गोहपरि-

हैं। औदारिकशरीरआंगोपांगके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। आहारशरीरआंगोपांगकी प्ररूपणा आहारशरीरके समान है। वैक्रियिकशरीरआंगोपांगकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। समचतुरस्रसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार स्वाति, वामन और कुब्जक संस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानके समान है। शेष संहननोंकी

१ ताप्रतौ 'असंखे०[गुणा-]' इति पाठः। २ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणा', ताप्रतौ 'सव्वत्थोवा असंखे० गुणहाणी० असंखे० गुणा ?' इति पाठः।

मंडलसंठाणभंगो। सेसाणं संघडणाणं पि णग्गोहपरिमंडलसंठाणभंगो। णवरि असंखेज्ज-गुणहाणी णत्थि। णिरय-देवाणुपुव्वीणं सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया। संखेज्ज-भागवड्ढीए असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा। हेदुणा उवदेसेण[1] पुण संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्ज-गुणा। अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया। मणुस्साणुपुव्वीए देवाणुपुव्वीभंगो। तिरिक्खाणु-पुव्वीए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया। संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए विसेसाहिया। एदेण बीजपदेण सेसाओ वि पयडीओ जाणिदूण भाणिदव्वाओ। एवं ट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

एत्तो अणुभागुदीरणा दुविधा— मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ मूलपयडिउदीरणा जाणिदूण भाणिदव्वा। उत्तरपयडिउदीरणाए पयदं— तत्थ इमाणि चउवीस अणियोगद्दाराणि। तं जहा— सण्णा, सव्वउदीरणा, णोसव्वउदीरणा, उक्कस्सउदीरणा, अणुक्कस्सउदीरणा, जहण्णउदीरणा, अजहण्णउदीरणा, सादिउदीरणा, आणादिउदीरणा, धुवउदीरणा, अद्धुवउदीरणा, एगजीवेण सामित्तं, कालो, अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ, भागाभागाणुगमो, परिमाणं, खेत्तं, फोसणं, णाणाजीवेहि कालो,

---

भी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानके समान है। विशेष इतना है कि उनके असंख्यातगुण-हानि नहीं है। नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। किन्तु वे हेतुपूर्वक उपदेशसे संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यात-गुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके समान है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-पूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्य-उदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक विशेष अधिक हैं। इस बीजपदसे शेष प्रकृतियोंकी भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई।

यहां अनुभागउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। इनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करना चाहिये। उत्तरप्रकृतिउदीरणा प्रकृत है—उसमें ये चौबीस अनुयोगद्वार हैं। यथा— संज्ञा, सर्वउदीरणा, नोसर्वउदीरणा, उत्कृष्ट-उदीरणा, अनुत्कृष्टउदीरणा, जघन्यउदीरणा, अजघन्यउदीरणा, सादिउदीरणा, अनादिउदीरणा ध्रुव-उदीरणा, अध्रुवउदीरणा, एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, भागाभागानुगम, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन,

---

१ काप्रतौ 'होदुणा उवदेसेण', ताप्रतौ 'होदु णा ? उवदेसेण' इति पाठः।

अंतरं, भावो, अप्पाबहुअं, सण्णियासो चेदि। एदाणि भणिदूण पुणो भुजगारो पदणिक्खेवो[1] वड्ढी ठाणं च[2] वत्तव्वं। तत्थ ताव सण्णा वुच्चदे। सा दुविहा घादिसण्णा ट्ठाणसण्णा चेदि। तत्थ घादिसण्णा उच्चदे। तं जहा— आभिणिबोहिय-सुदणाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। ओहि-मणपज्जवणाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवलणाणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा सव्वघादी। अचक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कसा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवलदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी। सादासादाउचउक्कस्स[3] सव्वणामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादिपडिभागो। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसायाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी। सम्मत्तस्स पंचंतराइयाणं उदीरणा उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चदुसंजलण-णवणोकसायाणमुदीरणा उक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। जेसिं[4] कम्माणमुदीरणाए देसघादित्तं सव्वघादित्तं च संभवदि तेसिं कम्माणं जहण्णिया उदीरणा

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और संनिकर्ष। इनकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थानका कथन करना चाहिये। उनमें पहिले संज्ञाका कथन करते हैं। वह दो प्रकारकी है— घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। उनमें घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट अणुभागउदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। साता व असाता वेदनीय, आयु चार, सब नामप्रकृतियों, तथा ऊंच व नीच गोत्रकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा अघाती है जो सर्वघातीके प्रतिभाग स्वरूप है। मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। सम्यक्त्व व पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। जिन कर्मोंकी उदीरणामें देशघातीपना और सर्वघातीपना सम्भव है उन कर्मोंकी जघन्य उदीरणा नियमसे

१ ताप्रतौ 'पुणो पदणिक्खेवो' इति पाठः। २ काप्रतौ 'द' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'चउक्कस्स' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'तेसिं' इति पाठः।

णियमा देसघादी, अजहण्णिया देसघादी वा सव्वघादी वा। जेसिं कम्माणमुक्कस्सिया उदीरणा णियमा देसघादी तेसिं कम्माणं जहण्णिया अजहण्णिया वि उदीरणा णियमा देसघादी। जेसिं कम्माणमुक्कस्समणुक्कस्सं पि सव्वघादी तेसिं जहण्णमजहण्णं पि सव्वघादी। भवोवग्गहियाणमुदीरणा जहण्णा अजहण्णा च णियमा अघादी घादिपडिभागिया।

एत्तो सामित्ते भण्णमाणे तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि। तं जहा— पच्चयपरूवणा विवागपरूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा चेदि। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-तिदंसणमोहणीय-सोलसकसायाणमुदीरणा परिणामपच्चइया। को परिणामो? मिच्छत्तासंजम-कसायादी। णवण्हं[1] णोकसायाणं उदीरणा पुव्वाणुपुव्वीए असंखेज्जदिभागो परिणामपच्चइया, पच्छाणुपुव्वीए असंखेज्जा भागा भवपच्चइया। सादासादवेदणीय-चत्तारिआउअ-चत्तारिगदि-पंचजादीणं च उदीरणा भवपच्चइया। ओरालियसरीरस्स उदीरणा तिरिक्ख-मणुस्साणं[2] भवपच्चइया। वेउव्वियसरीरस्स उदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। आहारसरीरस्स उदीरणा परिणामपच्चइया। तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्सेसु परिणामपच्चइया। तिण्णमंगोवंगाणं संघाद-बंधणाणं सगसरीरभंगो।

देशघाती तथा अजघन्य उदीरणा देशघाती और सर्वघाती होती है। जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे देशघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य और अजघन्य भी उदीरणा नियमसे देशघाती होती है। जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट भी उदीरणा सर्वघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य भी उदीरणा सर्वघाती होती है। भवोपगृहीत (आयु) प्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य उदीरणा नियमसे अघाती होकर घातिप्रतिभागस्वरूप होती है।

यहां स्वामित्वके कथनमें ये चार अनुयोगद्वार हैं। यथा— प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा। पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शनमोहनीय और सोलह कषाय; इनकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है।

शंका—परिणाम किसे कहते हैं?

समाधान—मिथ्यात्व, असंयम एवं कषाय आदिको परिणाम कहा जाता है।

पूर्वानुपूर्वीके अनुसार नौ नोकषायोंकी असंख्यातवें भाग प्रमाण उदीरणा परिणामप्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्वीके अनुसार असंख्यात बहुभाग प्रमाण उदीरणा भवप्रत्ययिक है। साता व असाता वेदनीय, चार आयुकर्म तथा चार गति और पांच जाति नामकर्मोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यंचों व मनुष्योंके भवप्रत्ययिक होती है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्यायिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। आहारशरीरकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है। तैजस व कार्मण शरीरोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। तीन आंगोपांग, पांच संघात व पांच बन्धन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरके

१ काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः, मप्रतौ 'कसायादियाणं णवण्हं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'मणुस-' इति पाठः।

समचउरससंठाणस्स उदीरणा मूलसरीरे भवपच्चइया आहारसरीरस्स उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्साणं च सव्वेसिं परिणामपच्चइया। सेसपंचसंठाणाणमुदीरणा भवपच्चइया। छण्णं संघडणाणमुदीरणा भवपच्चइया। वण्ण-गंध-रसणामाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। सीदुण्ण-णिद्ध-ल्हुक्खाण-मुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चया[1]। कक्खड-गरुआणं उदीरणा एयंतभवपच्चइया। मउअ-लहुआणमुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुदीरणा भवपच्चइया। अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुहाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। उवघादादावुस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-साहारण-पज्जत्तापज्जत्त-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाण-मुदीरणा एयंतभवपच्चइया[2]। परघादुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स च परिणाम-पच्चइया, अण्णत्थ भवपच्चइया। उज्जोवुदीरणा उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परघादभंगो। णिमिण-तित्थयर-पंचंतराइयाणमुदीरणा परिणामपच्चइया। सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति[3]-उच्चागोदाणमुदीरणा

अनुसार है। समचतुरस्रसंस्थानकी उदीरणा मूल शरीरमें भवप्रत्ययिक होती है, और आहार-शरीरी तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले सभी तिर्यंचों व मनुष्योंके उसकी उदीरणा परि-णामप्रत्ययिक होती है। शेष पांच संस्थानोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। छह संहननोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। वर्ण, गन्ध व रस नामकर्मोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्षकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। मृदु और लघु नामकर्मोंकी उदीरणा आहारकशरीरी तथा उत्तरशरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्यायिक और शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है। चार आनुपूर्वियोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभ प्रकृतियोंकी उदीरणा देवों और नारकियोंके भव-प्रत्ययिक तथा तिर्यंचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्यायिक होती है। उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, साधारण, पर्याप्त, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। परघातकी उदीरणा आहारशरीरी एवं उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक तथा अन्यत्र भवप्रत्ययिक होती है। उद्योतकी उदीरणा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवके परिणाम-प्रत्ययिक तथा शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है। प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वर-की प्ररूपणा परघातके समान है। निर्माण, तीर्थंकर और पांच अन्तरायकी उदीरणा परिणाम-प्रत्ययिक है। सुभग, आदेय, यशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा गुणप्रतिपन्न जीवोंमें परिणाम-

१ काप्रतौ 'परिणामपच्चया ण', ताप्रतौ 'परिणामपच्चया [ण] ।' इति पाठः। २ काप्रतौ 'एइंतभव-' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अजगित्ति' इति पाठः।

गुणपडिवण्णेसु परिणामपच्चइया, अगुणपडिवण्णेसु भवपच्चइया। को पुण गुणो[1]? संजमो संजमासंजमो वा। एवं पच्चयपरूवणा गदा।

विवागपरूवणागदाए जहा णिबंधो पुव्वं परूविदो तहा एत्थ विवागो वि परूवेयव्वो, भेदाभावादो।

ठाणपरूवणदाए आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया उदीरणा णियमा चउट्ठाणिया। अणुक्कस्सा चउट्ठाणिया तिट्ठाणिया बिट्ठाणिया एयट्ठाणिया वा। सुदणाणावरण-ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरण-चदुसंजलण - णवुंसयवेदाणमाभिणिबोहियणाणावरणभंगो। मणपज्जवणाणावरण-केवलणाणदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिद्दा-पयला-सादासादवेदणीय - मिच्छत्त-बारसकसाय-छण्णोकसाय-णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-पंचिंदियजादि - चदुसरीर - वेउव्विय - आहारअंगोवंग - वेउव्विय - आहार - तेजा - कम्मइयपाओग्गबंधण-संघाद-समचउरस-हुंडसंठाण-वण्ण-गंध-रस-सीदुसुण-णिद्ध-ल्हुक्ख-मउअ-लहुअ - अगुरुअलहुअ - उवघाद-परघाद- उज्जोवुस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-दुभग-दुस्सर - अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा चउट्ठाणिया। अणुक्कस्सा चउट्ठाणिया तिट्ठाणिया दुट्ठाणिया वा। चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-इत्थि-पुरिस-

---

प्रत्ययिक और अगुणप्रतिपन्न जीवोंमें भवप्रत्ययिक होती है।

शंका—गुणसे क्या अभिप्राय है?

समाधान—गुणसे अभिप्राय संयम और संयमासंयमाका है।

इस प्रकार प्रत्ययप्ररूपणा समाप्त हुई।

विपाकप्ररूपणाकी विवक्षा होनेपर जैसे पहिले निबन्धकी प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां विपाककी भी प्ररूणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

स्थानप्ररूपणामें आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक, द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, चार संज्वलन और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, बारह कषाय, छह नोकषाय, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, चार शरीर, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीरोंके योग्य बंधन व संघात; समचतुरस्रसंस्थान, हुण्डकसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मृदु, लघु, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण तथा नीच व ऊंच गोत्र, इनकी उत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक और द्विस्थानिक

---

१ ताप्रतौ 'गुणगारो' इति पाठः।

वेदाणं पंचंतराइयाणं च उक्कस्सिया उदीरणा दुट्ठाणिया, अणुक्कस्सिया दुट्ठाणिया एयट्ठाणिया वा । चक्खु-अचक्खुदंसणाणमुदओ जस्स वि एगमक्खरमत्थि तस्स णियमा एगट्ठाणिया उदीरणा । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया अणुक्कस्सिया वा णियमा दुट्ठाणिया एक्कम्मि ट्ठाणे । तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-चउजादि-ओरालियसरीर-तदंगोवंग-ओरालियसरीरबंधण-संघाद-चउसंठाण-छसंघडण-कक्खड-गरु-आणुपुव्वीचउक्क-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा वा उदीरणा दुट्ठाणिया । तित्थयरस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा चदुट्ठाणिया । एवमुक्कस्सिया ट्ठाणपरूवणा समत्ता ।

जहण्णट्ठाणसमुक्कित्तणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वकम्माणं पि अणुक्कस्सियाए उदीरणाए जं जस्स जहण्णियट्ठाणं अभिवाहरिदं तं चेव जहण्णट्ठाणं उदीरणाए ट्ठाणमभिवाहरियव्वं । अजहण्णाए अणुक्कस्सभंगो । भवोवग्गहियाणं दुट्ठाणियपडिभागियं तिट्ठाणपडिभागियं चउट्ठाणपडिभागियं चेदि अभिवाहिरियव्वं । दुट्ठाणिय-तिट्ठाणिय-चउट्ठाणियं ति च ण भाणियव्वं । एवं ठाणपरूवणा समत्ता ।

एत्तो सुहासुहपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-अट्ठावीसमोहणीय-णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-

---

होती है। चक्षु व अचक्षु दर्शनावरण, सम्यक्त्व, स्त्री व पुरुष वेद तथा पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। चक्षु व अक्षु दर्शनावरणका उदय जिसके भी एक अक्षर है उसके नियमसे उनकी एकस्थानिक उदीरणा होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा एक स्थानमें नियमसे द्विस्थानिक होती है। तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, चार जातिनामकर्म, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीरसंघात, चार संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, चार आनुपूर्वी, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर; इनकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक होती है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थानसमुत्कीर्तनका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— सभी कर्मोंकी अनुत्कृष्ट उदीरणामें जिसका जो जघन्य स्थान कहा गया है वही जघन्य स्थान उदीरणाका स्थान कहना चाहिये । अजघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा अनुत्कृष्ट उदीरणाके समान है । भवोपगृहीत प्रकृतियोंके द्विस्थानप्रतिभागिक, त्रिस्थानप्रतिभागिक और चतुःस्थानप्रतिभागिक कहना चाहिये; उनके द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक नहीं कहना चाहिये । इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां शुभाशुभप्ररूपणा कहते हैं। वह इस प्रकार है पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, नरकगति, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श, नरक-

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - उपघाद - अप्पसत्थविहायगदि - थावर - सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद - पंचंतराइय-पयडीओ असुहाओ । सादावेदणीय-आउतिय-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण- ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस - फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस - बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्त-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदपयडीओ सुहाओ। एवं सुहासुहपरूवणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया अणुभागउदीरणा कस्स? सण्णिस्स पज्जत्तयदस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणमाभिणिबोहियणाणावरणभंगो । चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सउदीरणा कस्स? तीइंदियपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स[1] । ओहि-केवलदंसणावरणाणं उक्कस्सिया कस्स? सण्णिपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स । णवरि ओहि-णाण-दंसणावरणीयाणं उक्कस्सुदीरणा ओहिलंभेणुज्झियस्स वत्तव्वा । अचक्खुदंसणावर-

---

गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; ये प्रकृतियां अशुभ हैं। सातावेदनीय, शेष तीन आयु, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध,रस व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यनुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और ऊंच गोत्र; ये प्रकृतियां शुभ हैं। इस प्रकार शुभाशुभप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां स्वामित्वप्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह संज्ञी, पर्याप्त एवं उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। चक्षुदर्शनावरकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह त्रीन्द्रिय पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है। अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह संज्ञी पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा अवधिज्ञान और अवधिदर्शनकी प्राप्तिसे रहित जीवके कहना चाहिये। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट

---

१ ××× चक्खुणो पुण तेइंदिय सव्वपज्जत्ते ॥ क. प्र. ४, ५८.

णीयस्स उक्कस्सिया अणुभागुदीरणा कस्स[1] ? सुहुमस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्ण-लद्धियस्स[2] । सेसपंचण्णं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सउदीरणा कस्स ? सण्णिपज्जत्तयस्स मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[3] । सादस्स० कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । असादस्स णेरइयस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स मज्झिमपरिणामस्स । किं कारणं ? उक्कस्ससंकिलिट्ठो वेदणीयं[4] ण बुज्झदि[5] त्ति ।

सम्मत्तस्स कस्स ? सम्माइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं पडिवज्जमाणतप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । सम्मामिच्छत्तस्स कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं गच्छंतस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[6] । मिच्छत्त-सोलसकसायाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स मिच्छाइट्ठिस्स । णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं कस्स ? तेत्तीससागरोवमियणेरइयस्स पज्जत्तयस्स मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । हस्स-रदीणं कस्स ? सहस्सारदेवस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[7] । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं कस्स ?

उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य लब्धिवाले सूक्ष्म जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है । शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे सहित मध्यम परिणामवाले संज्ञी पर्याप्त जीवके होती है । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त देवके होती है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले मध्यम परिणामयुक्त पर्याप्त मिथ्यादृष्टि नारकीके होती है ।

शंका—इसका कारण क्या है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव वेदनीयके अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुभवन नहीं करता है ।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले ऐसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टि जीवके होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले ऐसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके होती है । मिथ्यात्व व सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि जीवके होती है । नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारक पर्याप्त जीवके होती है जो मध्यम परिणामोंसे युक्त होता हुआ तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त है । हास्य व रतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सहस्रार कल्पवासी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि देवके होती है । स्त्रीवेद

१ काप्रतावतोऽग्रे 'सण्णिपज्जत्तस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स' इत्येतावानयमधिकः पाठोऽस्ति । २ दाणाइ अचक्खूणं जेट्ठा आयम्मि हीणलद्धिस्स । सुहुमस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ५८. ३ निद्दाइपंचगस्स य मज्झिमपरिणाम-संकिलिट्ठस्स । क. प्र. ४, ५९. ४ प्रत्योरुभयोरेव 'वेदं' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'वज्झदि' इति पाठः । ६ सम्मत्त-मीसगाणं से काले गहिहिइत्ति मिच्छत्तं । क. प्र. ४, ६१. ७ हास-रईणं सहस्सारगस्स पज्जत्तदेवस्स ॥ क. प्र. ४, ६१.

तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवस्सजादस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स ।

णिरयाउअस्स कस्स ? णेरइअस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । मणुस-तिरिक्खाउआणं कस्स ? तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तयस्स[1] । देवाउअस्स कस्स ? तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स[2] ।

णिरयगइणामाए कस्स ? तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स[3] मज्झिमपरिणामस्स वा । तिरिक्खगइणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवस्सजादस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । मणुसगदिणामाए कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स । देवगदिणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । ओरालियणामाए उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स । वेउव्वियसरीरणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । आहारसरीरणामाए कस्स ? पज्जत्तस्स आहारसरीरमुट्ठाविदसंजदस्स । तेजा-कम्मइय-सरीराणमुक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । तिण्णिअंगोवंग-बंधण-

---

और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय सर्वसंक्लिष्ट तिर्यंच जीवके होती है ।

नारकायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकी जीवके होती है । मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है । देवायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है । वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त देवके होती है ।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त अथवा मध्यम परिणाम युक्त तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है । तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे युक्त आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय तिर्यंच जीवके होती है । मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है । देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देव पर्याप्तके होती है । औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम आयुवाले देव पर्याप्तके होती है । आहारशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरको पूर्ण करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है । तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है । तीन आंगोपांग, बन्धन और संघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा अपने

---

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तयस्स' इत्येतत्पदं नास्ति । २ णिरयगठिई उक्कोसो पज्जत्तो आउगाणं पि ॥ क. प्र. ४, ६४. ३ काप्रतौ 'सागरोवमेयस्स पज्जत्तस्स उदीरणासंकिलिट्ठस्स' इति पाठः ।

संघादणामाणं सरीरभंगो ।

पसत्थवण्ण-गंध-रसाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । अप्पसत्थाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । णिद्ध-उण्हाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । सीद-ल्हुक्खाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । मउअ-लहुआणं कस्स ? आहारसरीरेण पज्जत्तयदस्स संजदस्स[1] । कक्खड-गरुआणं कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवासाणमंते वट्टमाणस्स[2] ।

णिरयाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तेत्तीसंसागरोवमियस्स णेरइयस्स बिसमयतब्भत्थस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । मणुसाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तिपलिदोवमियस्स मणुस्सस्स विसमयतब्भवत्थस्स । तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवस्सियस्स बिसमयतब्भवत्थस्स । देवाणुपुव्वीणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स बिसमयतब्भवत्थस्स ।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स[3] । उवघादणामाए कस्स ? तेत्तीसं-

अपने शरीरके समान है ।

प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रसकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है । उन अप्रशस्त वर्णादिकोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती है । स्निग्ध और उष्ण स्पर्शकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । शीत और रूक्षकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेश युक्त जीवके होती है । मृदु और लघुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरसे पर्याप्त हुए संयत जीवके होती है । कर्कश और गुरुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले व आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान तिर्यंच जीवके होती है ।

नरकानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारकी जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले तिर्यंच जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । देवानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले देवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है ।

१ ताम्रतौ 'पज्जत्तयदसंजदस्स' इति पाठः । २ कक्खड-गरु-संघयणा-त्थी-पुम-संठाण-तिरियणामाणं । पंचिंदिओ तिरिक्खो अट्ठमवासट्ठवासाओ ॥ क. प्र. ४, ६३. ३ जोगंते सेसाणं सुभाणमियराणि चउसु वि

सागरोवमियस्स णेरइयस्स पज्जत्तस्स । परघाद-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीराणं कस्स ? संजदस्स आहारसरीमुट्ठाविदस्स पज्जत्तस्स । आदावणामाए कस्स ? वावीसंवस्ससहस्साउअस्स पुढविकाइयपज्जत्तस्स । उज्जोवणामाए कस्स ? संजदस्स विउव्विदुत्तरसरीरस्स पज्जत्तिं गयस्स ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं कस्स ? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए[1] णिव्वत्तिदूण अंतोमुहुत्तपज्जत्तस्स[2] । एइंदियजादिणामाए कस्स ? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए णिव्वत्तिय अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स एइंदियस्स । पंचिंदियजादि-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्तणामाणं कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स[3] । अप्पसत्थविहायगइ-दुब्भग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं कस्स ? णेरइयस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स । अथिर-असुहणामाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स ।

थावरणामाए कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स बादरेइंदियस्स

उपघात नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त नारकीके होती है । परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरको उत्पन्न कर लेनेवाले संयत पर्याप्तके होती है । आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह बाईस हजार वर्षकी आयुवाले पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवके होती है । उद्योत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त होकर अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए उन उन जीवोंके होती है । एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त एकेन्द्रियके होती है । पंचेन्द्रियजाति, उच्छ्वास, त्रस, बादर और पर्याप्त नामकर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देवके होती है । अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा तेतीस सागरोपमकी आयुवाले नारक पर्याप्तके होती है । अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशयुक्त जीवके होती है ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न

गईसु । पज्जत्तुक्कडमिच्छस्सोहीणमणोहिलद्धिस्स ।। क. प्र. ४, ६८. जोगंते त्ति— योगिनः सयोगकेवलिनोऽन्ते सर्वापवर्तनरूपे वर्तमानस्य शेषाणमुक्तव्यतिरिक्तानां शुभप्रकृतीनां तैजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णाद्येकादशका-गुरुलघु-स्थिर-शुभ-सुभगादेय-यशःकीर्ति-निर्माणोच्चैर्गोत्रतीर्थकरनाम्नां (२५) पंचविंशतिसंख्यानामुत्कृष्टानुभागोदीरणा भवति । (मलयगिरिटीका). १ ताप्रतौ 'जहण्णपज्जत्तीए' इति पाठः । २ हस्सठिई पज्जत्ता तन्नामा विगलजाइ-सुहुमाणं । क. प्र. ४,६५. ३ पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्तग-साइ-सुस्सर-गईणं । वेउव्वुस्सासाणं देवो जेट्ठट्ठिइसमत्ता ।। क. प्र. ४. ६०.

अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स[1] उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सुहुमणामाए कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । अपज्जत्तणामाए कस्स ? मणुस्सस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए चरिमसमए[2] उक्कस्ससंकिलेसं गदस्स[3] । साहारणसरीरणामाए कस्स ? बादरणिगोदस्स जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए अंतोमुहुत्तं पज्जत्तस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स समचउरससंठाणस्स उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? संजदस्स आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स । सेसाणं हुंडसंठाणवज्जाणं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च उक्कस्सिया कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासियस्स अट्ठवासंते वट्टमाणस्स[4] । हुंडसंठाणस्स कस्स ? णेरइयस्स अग्गट्ठिदीए उववण्णअंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स[5] । पढमसंघडणस्स कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयदस्स[6] । अंतराइयपंचयस्स अचक्खुदंसणभंगो । एदाणि सव्वाणि सामित्ताणि अप्पप्पणो संतकम्मेण उक्कस्सेण वा छट्ठाणगुण-

तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त बादर एकेन्द्रिय जीवके होती है। सूक्ष्म नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त सूक्ष्म जीवके होती है। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके चरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मनुष्यके होती है। साधारणशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए उत्कृष्ट संक्लेश युक्त बादर निगोद जीवके होती है। समचतुरस्रसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए आहारशरीरी संयत जीवके होती है। हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंकी तथा वज्रर्षभनाराचसंहननको छोड़कर शेष पांच संहननोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान अष्टवर्षीय तिर्यंचके होती है। हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह उत्कृष्ट स्थितिके साथ उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए नारकीके होती है। प्रथम संहननकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त मनुष्यके होती है। पांच अन्तराय कर्मोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है। ये सब स्वामित्व अपने अपने उत्कृष्ट सत्कर्मके साथ अथवा षट्स्थान-

१ ताप्रतौ 'अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'समय' इति पाठः। ३ तथाऽपर्याप्तनाम्नो मनुष्योऽपर्याप्तश्चरमसमये वर्तमानः सर्वसंक्लिष्ट उत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी । संज्ञितिर्यक्पंचेन्द्रियादपर्याप्तान्मनुष्योऽपर्याप्तोऽतिसंक्लिष्टतर इति मनुष्यग्रहणम्। क. प्र. (मलय.) ४, ६२. ४ कक्खड-गुरु-संघयणा-त्थी-पुम-संठाण-तिरियनामाणं। पंचिंदिओ तिरिक्खो अट्ठमवासट्ठवासाओ॥ क. प्र. ४, ६३. ५ गइ-हुंडुवघाया-णिट्ठखगइ-नीयाण दुहचउक्कस्स। निरउक्कस्स-समत्ते असमत्ताए नरस्संते॥ क. प्र. ४,६२. गइ त्ति— नैरयिक उत्कृष्टस्थितौ वर्तमानः सर्वाभिः पर्याप्तिभिः पर्याप्तः सर्वोत्कृष्टसंक्लेशयुक्तो नरकगति-हुंडसंस्थानोपघाता-प्रशस्तविहायोगति-नीचैर्गोत्राणां 'दुहचउक्कस्स त्ति' दुर्भगचतुष्कस्य दुर्भग-दुःस्वरानादेयायशःकीर्तिरूपस्य सर्वसंख्यया नवानां प्रकृतीनामुत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी। मलय. ६ मणु-ओरालिय-वज्जरिसहाण मणुओ तिपल्लपज्जत्तो। क. प्र. ४, ६४.

हीणेण वा होंति त्ति दट्ठव्वाणि। एवमुक्कस्साणुभागुदीरणा समत्ता।

जहण्णयं सामित्तं उच्चदे। तं जहा— आभिणिबोहिय-सुदणाणावरणीय-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णिया अणुभागउदीरणा कस्स? चोद्दसपुव्वियस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स? परमोहिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। मणपज्जवणाणावरणीयस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? विउलमदिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स[1]। केवलणाण-केवलदंसणावरणीयाणं जहण्णिया कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। णिद्दा-पयलाणं जहण्णिया कस्स? उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थस्स[2]। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णिया उदीरणा कस्स? पमत्तसंजदस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स[3]। सादासादाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स? अण्णदरो णेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो[4] देवो वा उक्कस्स-मज्झिमजहण्णासु ट्ठिदीसु वट्टमाणो मज्झिमपरिणामो[1]।

पतित गुणहानिस्वरूप सत्कर्मके साथ होते हैं, ऐसा जानना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुभाग-उदीरणा समाप्त हुई।

जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह चौदह पूर्वधारीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह परमावधिज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? उनकी जघन्य उदीरणा छद्मस्थकालमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थके होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुए प्रमत्तसंयतके होती है। साता व असाता वेदनीयकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? जो अन्यतर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अथवा देव उत्कृष्ट, मध्यम या जघन्य स्थितिमें वर्तमान होकर मध्यम परिणामसे युक्त होता है उसके

१ सुयकेवलिणो मइ-सुय-अचक्खु-चक्खूणुदीरणा मंदा। विपुल-परमोहिगाणं मणणाणोहीदुगस्सावि ॥ क. प्र. ४, ६९. २. खवणाए विग्घ-केवल-संजलणाण य सनोकसायाणं। सय-सयउदीरणंते निद्दा-पयलाणमुवसंते ॥ क.प्र.७०. क्षपणायोत्थितस्य पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवलदर्शनावरण-संज्वलनचतुष्टय-नवनोकपायरूपाणं विंशतिप्रकृतीनां स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने जघन्यानुभागोदीरणा। तत्र पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवलदर्शनावरणानां क्षीणकषायस्य × × × स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने। तथा निद्रा-प्रचलयोरुपशान्तमोहे जघन्यानुभागोदीरणा लभ्यते। (म. टीका) ३ निद्दानिद्दाईणं पमत्तविरए विसुज्झमाणम्मि। क. प्र. ४, ७१. ४ काप्रतौ 'अण्णदरा णेरइया तिरिक्खमणुस्सो', ताप्रतौ 'अण्णदरणेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो' इति पाठः।

मिच्छत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स पुव्वुप्पण्णेण सम्मत्तेण से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठिदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा[2] । सम्मत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणिज्जस्स[3] । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स सम्मामिच्छाइट्ठिस्स[4] । अणंताणुबंधीणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । अपच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । पच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ?

उन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है।

मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो सर्वविशुद्धमिथ्यादृष्टि जीव पूर्वोत्पन्न सम्यक्त्वसे अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे अवस्थित है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? जिसके दर्शनमोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेप रहा है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त करेगा, इस अवस्थामें स्थित है ऐसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है। अनन्तानुबन्धी कपायों-की जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित उस सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके उनकी जघन्य उदीरणा होती है। अप्रत्या-ख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? अन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध सम्यग्दृष्टि जीवके अप्रत्याख्यानावरणचतुष्की जघन्य उदीरणा होती है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त

१ सेसाण पगइवेई मज्झिमपरिणामपरिणओ होज्जा । क. प्र. ४, ७९. सेसाण त्ति— शेपाणां साता-सातवेदनीय-गतिचतुष्टय- × × × चतुस्त्रिंशत्संख्यानां प्रकृतीनां तत्तत्प्रकृत्युदये वर्तमानाः सर्वेऽपि जीवा-मध्यमपरिणामपरिणता जघन्यानुभागोदीरणास्वामिनो भवन्ति (मलय. टीका)। २ से काले सम्मत्तं ससंजमं गिण्हओ य तेरसगं । क. प्र. ४, ७२. से त्ति— अनन्तरे काले द्वितीये यः सम्यक्त्वं ससंयमं संयमसहितं ग्रहीष्यति तस्य त्रयोदशानां मिथ्यात्वानन्तानुबन्धिचतुष्टयाप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यानावरणरूपाणां प्रकृतीनां जघन्यानुभागोदीरणा । अयमिह संप्रदायः— योऽनन्तरसमये सम्यक्त्वं संयमसहितं ग्रहीष्यति तस्य मिथ्यादृष्टे-र्मिथ्यात्वानुबन्धिनां जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). ३वेयगसम्मत्तस्स उ सगखवणोदीरणाचरिमे ॥ क. प्र. ४, ७१. तथा क्षायिकसम्यक्त्वमुत्पादयतो मिथ्यात्व-सम्यग्मिथ्यात्वयोः क्षपितयोर्वेदकसम्यक्त्वस्य क्षायोपशमिकस्य सम्यक्त्वस्य क्षपणकाले चरमोदीरणायां समयाधिकावलिकाशेपायां स्थितौ सत्यां प्रवर्तमानायां जघन्यानुभागोदीरणा भवति । सा च चतुर्गतिकानामन्यतरस्य वेदितव्या (म. टीका)। ४ सम्मत्तमेव मीसे × × × ॥ क. प्र. ४, ७२. तथा 'सम्मत्तमेव मीसे' इति यः सम्यग्मिथ्यादृष्टिरनन्तरसमये संयमं प्रतिपत्स्यते तस्य सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्यानुभागोदीरणा । सम्यग्मिथ्यादृष्टिर्युगपत् सम्यक्त्वं संयमं च न प्रतिपद्यते, तथा विशुद्धेरभावात् , किन्तु केवलं सम्यक्त्वमेवेति कृत्वा तदेव केवलमुक्तम् (म. टीका) ।

संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति।

कोधसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? कोधोदएण खवगसेडिमुवट्ठियस्स चरिमसमयकोधवेदयस्स। माणसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? कोधोदएण माणोदएण वा खवगसेढिमारूढस्स चरिमसमयमाणवेदगस्स। मायासंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? चरिमसमयमायवेदयस्स खवगस्स। लोभसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स खवयस्स। णवुंसयवेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयणवुंसयवेदयखवयस्स[1]। पुरिसवेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयपुरिसवेदखवयस्स। इत्थिवेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियइत्थिवेदस्स खवयस्स। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स? चरिमसमयअपुव्वकरणखवगस्स सव्वविसुद्धस्स।

णिरयाउअस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? दसवस्ससहस्सियाए[2] ट्ठिदीए उववण्णस्स णेरइयस्स पढमे वा चरिमे वा अण्णम्हि वा कम्हि वि एगसमए वट्टमाणस्स।

करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध संयातसंयतके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है।

संज्वलनक्रोधकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह क्रोधोदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हुए अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक जीवके होती है। संज्वलनमानकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह क्रोधके उदयके साथ अथवा मानके उदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हुए अन्तिम समयवर्ती मानवेदकके होती है। संज्वलनमायाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती मायावेदक क्षपकके होती है। संज्वलन लोभकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? जिसकी सकषाय अवस्थाके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है ऐसे क्षपक जीवके संज्वलनलोभकी जघन्य उदीरणा होती है। नपुंसकवेदकी जघन्य-उदीरणा किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपकके नपुंसकवेदकी जघन्य उदीरणा होती है। पुरुषवेदकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती पुरुषवेदी होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपक जीवके उसकी जघन्य उदीरणा होती है। स्त्रीवेदकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? स्त्रीवेदवेदक क्षपकके उसके वेदनमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहनेपर स्त्रीवेदकी जंघन्य उदीरणा होती है। हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है।

नारकयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए नारकीके प्रथम, अन्तिम अथवा अन्य किसी भी एक समयमें वर्तमान रहनेपर हाती

---

१ काप्रतौ 'वेयणीयखवयस्स', ताप्रतौ 'वेदणीयखवयस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'देवस्स सहस्सियाए', ताप्रतौ 'देवस्स (दसवस्स) सहस्सियाए' इति पाठः।

मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? जहण्णियासु अपज्जत्तणिव्वत्तीसु उववण्णस्स पढमे अपढमे वा चरिमे अचरिमे वा समए वट्टमाणस्स मणुस-तिरिक्खस्स। देवाउअस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? दसवस्ससहस्सियाए ट्ठिदीए उववण्णस्स पढमसमयदेवस्स वा चरिमसमयस्स वा तव्वदिरित्तस्स वा[1]।

णिरयगइणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? णेरइयस्स अण्णदरिस्से पुढवीए वट्टमाणस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मज्झिमपरिणामस्स। तिरिक्खगदिणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिएसु अण्णदरस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा तिपलिदोवमट्ठिदियस्स अण्णदरस्स वा। मणुसगदिणामाए जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स संखेज्जवासाउअस्स असंखेज्जवासाउअस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मणुस्सस्स मज्झिमपरिणामस्स। देवगदिणामाए जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स कप्पोपपादियस्स वा अणुत्तरोपपादियस्स वा देवस्स मज्झिमपरिणामस्स। पंचण्णं जादिणामाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स पयडिवेदयस्स।

है। मनुष्यायु और तिर्यंच आयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तियोंमें उत्पन्न और प्रथम-अप्रथम अथवा चरम-अचरम समयमें वर्तमान मनुष्य और तिर्यंचके होती है। देवायुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, चरम समयमें अथवा उनसे भिन्न किसी भी समयमें स्थित रहनेपर होती है।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान मध्यम परिणामवाले पर्याप्त अथवा अपर्याप्त नारकीके होती है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंमें अन्यतर पर्याप्त अथवा अपर्याप्तके तीन पल्योपम प्रमाण स्थितिसे अथवा अन्यतर आयुस्थिति युक्त होते हुए होती है। मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क पर्याप्त अथवा अपर्याप्त मध्यम परिणावाले मनुष्यके होती है। देवगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर कल्पोपपादिक अथवा अनुत्तरोपपादिक मध्यम परिणामवाले देवके होती है। पांच जातिनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उस उस प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके होती है।

---

१ आऊण जहन्नगठिईसु ॥ क.प्र.४, ७२. तथा चतुर्णामायुषामात्मीयात्मीयजघन्यस्थितौ वर्तमानो जघन्यमनुभागमुदीरयति। तत्र त्रयाणामायुषां संक्लेशादेव जघन्यस्थितिबन्धो भवतीति कृत्वा जघन्यानुभागोऽपि तत्रैव लभ्यते। तथा नारकायुषो विशुद्धिवशाज्जघन्यः स्थितिबन्धः, ततो जघन्यानुभागोऽपि नारकायुषस्तत्रैव लभ्यते। तथा च सति त्रयाणामायुषामतिसंक्लिष्टो जघन्यानुभागोदीरकः नारकायुषस्त्वतिविशुद्ध इति। (म. टीका).

ओरालियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स अविग्गहगदीए उववण्णस्स। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स वा जीवस्स[1] ? जहण्णियाए उत्तरविउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स[2]। आहारसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? जहण्णियाए आहारविउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स[3]। तेजा-कम्मइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स[4]। ओरालियसरीअंगोवंगणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? वेइंदियस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स। वेउव्वियअंगोवंगणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? पढमसमयणेरइयस्स असण्णिपच्छायदस्स पढमसमयआहारयस्स तप्पाओग्गउक्कस्सियाए ट्ठिदीए उववण्णस्स[5]। आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो। पंचसरीरबंधण-

औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे एवं ऋजुगतिसे उत्पन्न हुए सूक्ष्म जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किस जीवके होती है ? वह जघन्य उत्तरविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है। आहारशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य आहारविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है। तैजस और कार्मण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्यतर जीवके होती है ? औदारिकशरीरआंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न ऐसे द्वीन्द्रिय जीवके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है। वैक्रियिकशरीरआंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ नरकमें उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती नारकीके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है। आहारकशरीरांगोपांगकी जघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है। पांच शरीरबन्धनों और

१ ताप्रतौ 'कस्स ? वा जीवस्स ?' इति पाठः। २ पोग्गलविवागियाणं भवाइसमए विसेसमवि चासिं। आइतणूणं दोण्णं सुहुमो वाऊ य अप्पाऊ ॥ क. प्र. ४, ७३. × × × तत एतदुक्तं भवति— औदारिकशरीरौदारिकसंघातौदारिकबन्धनचतुष्टयरूपस्यौदारिकषट्कस्याप्यपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियो वायुकायिको वैक्रियिकषट्कस्य च पर्याप्तो बादरो वायुकायिकोऽल्पायुर्जघन्यानुभागोदीरको भवति। (म. टीका) ३ × × × तत आहारकसप्तकस्य यतेराहारकशरीरमुत्पादयतः संक्लिष्टस्याल्पे काले, प्रथमसमय इत्यर्थः, जघन्यानुभागोदीरणा। क. प्र. ४, ७४. (म. टीका). ४ तथा तैजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णाद्येकादशकागुरुलघु-स्थिर-शुभ-निर्माणरूपाणां (२०) विंशतिप्रकृतीनां संक्लिष्टोऽपान्तरालगतौ वर्तमानोऽनाहारको मिथ्यादृष्टिर्जघन्यानुभागोदीरणास्वामी वेदितव्यः। क. प्र. ४, ७६. (म. टीका). ५ इयमत्र भावना— द्वीन्द्रियोऽल्पायुरौदारिकांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये जघन्यमनुभागमुदीरयति। तथाऽसंज्ञिपंचेन्द्रियः पूर्वोद्वलितवैक्रियो वैक्रियांगोपांगं स्तोककालं बद्ध्वा स्वभूमिकानुसारेण चिरस्थितिको नैरयिको जातस्तस्य वैक्रियांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये वर्तमानस्य जघन्यानुभागोदीरणा। क. प्र. ४, ७४. (म० टीका).

संघादाणं सग-सगसरीरभंगो ।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स असण्णिस्स । हुंडसंठाणवज्जाणं सेसाणं संठाणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? पुव्वकोडाउअस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स । हुंडसंठाणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सुहुमेइंदियस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स । पढमसंघडणस्स पढमसंठाणस्स भंगो । चदुण्णं संघडणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? मणुस्सस्स पुव्वकोडाउअस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[1] । असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? बेइंदियस्स बारसवस्साउट्ठिदीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[2] ।

वण्ण-गंध-रसाणमप्पसत्थाणं सीद-ल्हुक्खाणं च[3] जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । एदासिं चेव पडिवक्खाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । कक्खड-गरुआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? केवलिस्स मंथगदस्स

पांच संघातोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है ।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए असंज्ञी जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है । हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष संस्थानोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह पूर्वकोटि वर्ष प्रमाण आयुवाले प्रथम समयवर्ती आहारकके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है । हुण्डकसंस्थानकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती है । प्रथम संहननकी जघन्य अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा प्रथम संस्थानके समान है । चार संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले मनुष्यके होती है । असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह बारह वर्ष प्रमाण आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए द्वीन्द्रिय जीवके होती है ।

अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत एवं रूक्ष स्पर्शकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । इनकी ही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेश युक्त जीवके होती है । कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह मंथसमुद्घातगत-

---

१ अमणो चउरंसुसभाणप्पाऊ सगचिरट्ठिई सेसे । संघयणाण य मणुओ हुंडुवघायाणमवि सुहुमो ॥ क. प्र. ४, ७५. २ सेवट्टस्स बिइंदिय बारसवासस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ७६. ३ काप्रतौ 'सीदुल्हल्हुक्खाणं, ताप्रतौ 'सीदल्ह-ल्हुक्खाणं' इति पाठः ।

णियत्तमाणस्स[1]। लहुअ-मउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सण्णिस्स अणाहारयस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स[2]। णिरयाणुपुव्विणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? णेरइयस्स अण्णदरिस्से पुढवीए वट्टमाणस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स दुसमयतब्भवत्थस्स वा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स तिरिक्खस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स दुसमयतब्भवत्थस्स तिसमयतब्भवत्थस्स वा। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स मणुस्सस्स पढमविग्गहे बिदियविग्गहे वा वट्टमाणस्स ? देवाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स दसवस्ससहस्सियस्स वा तेत्तीसंसागरोवमियस्स[3] वा।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। अथिर-असुहाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सजोगिचरिमसमए। उवघादणामाए जह० कस्स ? सुहुमेइंदियस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[4]। परघादणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए वट्टमाणस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स।

केवलीके उससे पीछे हटनेकी अवस्थामें होती है। लघु और मृदुकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संज्ञी अनाहारक जीवके होती है। नारकानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान नारकीके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें अथवा उसके द्वितीय समयमें होती है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ, द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ, अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ अन्यतर तिर्यंच जीवके होती है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम विग्रह अथवा द्वितीय विग्रहमें वर्तमान अन्यतर मनुष्यके होती है। देवानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुवाले अथवा तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले अन्यतर देवके होती है।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए जीवके होती है। अस्थिर और अशुभकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह सयोग केवलीके अन्तिम समयमें होती है। उपघात नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती है। परघात नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिमें वर्तमान सूक्ष्म जीवके पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें होती है।

१ कक्खड-गुरूण मंते (थे) नियत्तमाणस्स केवलिणो ॥ क. प्र. ४, ७८. २ × × × मउय-लहुगाणं। सन्निविसुद्धाणाहारगस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ७६. ३ अप्रतौ 'सागरोवमेयस्स', काप्रतौ 'सागरोवमाणि', ताप्रतौ 'सागरोवमाणियस्स। ४ हुंडुवघायाणमवि सुहुमो ॥ क. प्र. ४, ७९. तथा सूक्ष्मैकेन्द्रियः सुदीर्घायुःस्थिक आहारकः प्रथमसमये हुंडोपघातनाम्नोर्जघन्यानुभागोदीरकः। मं. टीका.

आदावणामाए जह० कस्स ? बादरपुढविजीवस्स जहण्णियाए पज्जत्तीए उववण्णस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमए वट्टमाणस्स। उज्जोवणामाए आदावभंगो[1]। उस्सासणामाए जह० कस्स ? अण्णदरस्स देवस्स णेरइयस्स एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियस्स वा। पसत्थापसत्थविहायगदीणं जह० कस्स ? अण्णदरस्स तद्दइछस्स। तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो वेदओ सो सव्वो पाओग्गो जहण्णाणुभागउदीरणमुदीरेदुं। पत्तेयसरीरणामाए जह० कस्स? सुहुमस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स। साहारणसरीरणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स पढमसमयआहारयस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स। सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्ति-णीचुच्चागोदाणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो वेदओ सो सव्वो पाओग्गो जहण्णियअणुभागउदीरणमुदीरेदुं। तित्थयरणामाए जह० को होदि ? पढमसमयकेवलिप्पहुडि जाव केवलसमुग्घादस्स चरिमसमयअणावज्जिदगो त्ति ताव जहण्णाणुभागउदीरओ[2]। पंचण्णमंतराइयाणं जह० कस्स ? समयाहियावलिय-

आतप नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्तिसे उत्पन्न हुए बादर पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान होनेपर होती है। उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा आतप नामकर्मके समान है। उच्छ्वास नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर देव, नारकी अथवा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रियके होती है। प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उनके उदयसे संयुक्त अन्यतर जीवके होती है। त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्तकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो जीव इन प्रकृतियोंके वेदक हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउदीरणा करनेके योग्य होते हैं। प्रत्येकशरीर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म जीवके होती है। साधारणशरीर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती आहारक हुए सूक्ष्म जीवके होती है। सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो इन प्रकृतियोंके वेदक हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउदीरणा करनेके लिये योग्य होते हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? प्रथम समयवर्ती केवलीसे लेकर केवलसमुद्घातके पूर्व अनावर्जितकरण अवस्थाके अन्तिम समय तक उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है। पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह छद्मस्थ अवस्थामें एक

१ तथा आतपोद्योतनाम्नोस्तद्योग्यः पृथिवीकायिकः शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः प्रथमसमये वर्तमानः संक्लिष्टो जघन्यानुभागोदीरकः। क. प्र. (म. टीका) ४, ७७. २ प्रतिपु 'अजहण्णाणुभागउदीरओ' इति पाठः। जा नाउज्जियकरणं तित्थगरस्स × × ×। क. प्र. ४, ७८. ज त्ति— आयोजिकाकरणं नाम

चरिमसमयछदुमत्थस्स । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभाग-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया । अणुक्कस्स० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरणीयाणं आभिणिबोहियणाणावरणभंगो । चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणीय-मिच्छत्त-अथिर-असुह-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-पंचंतराइयाणं उक्कस्सअणुभागुदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुभागउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण[1] एगसमओ । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण

समय अधिक आवली मात्र शेष रह जानेपर होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है। उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके कालकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है। विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

केवलिसमुद्घातादर्वाग् भवति । तत्राङ् मर्यादायाम् । आ मर्यादया केवलिदृष्ट्या योजनं व्यापारणं आयोजनम् । तच्चातिशुभयोगानामवसेयम् । आयोजनमायोजिका, तस्याः करणं आयोजिकाकरणम् । केचिदावर्जितकरणमाहुः । तत्रायं शब्दार्थः— आवर्जितो नाम अभीमुखीकृतः । तथा च लोके वक्तारः— आवर्जितोऽयं मया, संमुखीकृत इत्यर्थः । ततश्च तथा भव्यत्वेनावर्जितस्य मोक्षगमनं प्रत्यभिमुखीकृतस्य करणं शुभयोगव्यापारणं आवर्जितकरणम् । अपरे 'आ नाउस्सयकरणं' इति पठन्ति । तत्रायं शब्दसंस्कारः— आवश्यककरणमिति । अन्वर्थश्चायं आवश्यकेनावश्यंभावेन करणमावश्यककरणम् । तथाहि— समुद्घातं केचित् कुर्वन्ति, केचिच्च न कुर्वन्ति । इदं त्वावश्यककरणं सर्वेऽपि केवलिनः कुर्वन्तीति । तच्चायोजिकाकरणमसंख्येयसमयात्मकमन्तर्मुहूर्तप्रमाणम् । × × × तद्यावन्नाद्याप्यारभ्यते तावत्तीर्थंकरकेवलिनस्तीर्थंकरनाम्नो जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). १ काप्रतौ 'मुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णुक्क०', ताप्रतौ 'मुक्कस्साणुक्कस्स० (मुक्कस्साणुभागु०) जहण्णुक्कस्स०', इति पाठः ।

असंखेज्जा लोगा । दंसणावरणपंचयस्स उक्क० अणुभागु० जह० एगसमओ, उक्क० बे-समया । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुभाग० जहण्णुक्क० एगसमओ[2] । अणुक्क० जह० अंतोमुहुत्तं । उक्क० सम्मामिच्छ० अंतोमु०, सम्मत्त० छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि[3] । सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसायाणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसमया । अणुक्क० अणुभागउदीरणा साद-हस्स-रदीणं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । असाद-अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवुंसयवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । पुरिसवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं । इत्थि-वेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउ-देवाउआणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । तिरिक्ख-

असंख्यात लोक प्रमाण है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय प्रमाण है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कर्ष वह सम्यग्मिथ्यात्वका अन्तर्मुहूर्त और सम्यक्त्वका एक आवलीसे कम छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है । साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय और नौ नोकषाय; इनके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल सातावेदनीय, हास्य व रतिका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास; असातावेदनीय, अरति और शोकका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम; सोलह कषाय, भय व जुगुप्साका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त; नपुंसकवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; पुरुषवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व; तथा स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकायु व देवायुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है । इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवलीसे

१ ताप्रतौ 'अणुक्क० (भा०)' इति पाठः २ ताप्रतौ 'एगसमओ ......।' इति पाठः । ३ सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो । अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालदो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । क. पा. (चू. सू.) प्रे. ग. पृ. ५४६५.

मणुसाउआणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बे समया तिण्णि चत्ता समया वा। अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि।

चदुण्णं पि गईणमुक्कस्समणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० [बेसमया अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क०] णिरय-देवगईणं तेत्तीसं सागरोवमाणि, मणुसगई तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खगईए असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा। पंचण्णं जादीणमुक्क० केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० सग-सगुक्कस्सट्टिदीओ। ओरालिय-वेउव्विय-आहार सरीराणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा० केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० ओरालियसरीरस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो वेउव्वियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि, आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं तेजा-कम्मइयाणमुक्कस्स अणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ। अणुक्क[1] अणादि-अपज्जवसिदा अणादि-सपज्जवसिदा वा। तिण्णिअंगोवंग-पंचसरीरबंधण-संघादाण च सग-सगसरीरभंगो। णवरि ओरालियअंगोवंग० अणुक्कस्सुक्कस्सस्स तिण्णि पलिदोवमाणि

कम तेतीस सागरोपम प्रमाण होती है। तिर्यंचआयु और मनुष्यायुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय अथवा तीन चार समय होती है। इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवलीसे कम तीन पल्योपम प्रमाण होती है।

चारों ही गति नामकर्मोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र होती है। इनकी अनुत्कृष्ट उदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह नरक व देवगतिकी तेतीस सागरोपम काल, मनुष्यगतिकी पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा तिर्यंचगतिकी असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होती है। पांच जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण होती है। औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह औदारिकशरीरकी अंगुलके असंख्यातवें भाग, वैक्रियिकशरीरकी साधिक तेतीस सागरोपम, तथा आहारकशरीरकी अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। तैजस व कार्मण शरीरकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? व जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा अनादि-अपर्यवसित अथवा अनादि-सपर्यवसित होती है। तीन आंगोपांग, पांच शरीरबन्धन और पांच संघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरके समान है। विशेष इतना है कि औदारिकशरीरांगोपांगकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम

१ ताप्रतौ '[अणुक्क०]' इति पाठः।

पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

छसंठाण-छसंघडणाणं च उक्क० अणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० वेसमया । अणुक्क० जह० एगसमओ । उक्क० समचउरससंठाणस्स वे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि, हुंडसंठाणस्स अंगुलस्स असंखे० भागो, सेसाणं संठाणाणं पुव्वकोडिपुधत्तं । वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडि-पुधत्तेणब्भहियाणि, सेसाणं संघडणाणं पुव्वकोडिपुधत्तं । पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धु-ण्णाणं तेजा-कम्मइयसरीरभंगो । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्हुक्ख-कक्खड-गरुआणं णाणावरणभंगो । मउअ-लहुआणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्कस्सेण वेसमया । अणुक्क० अणादि-अपज्जवसिदा अणादि-सपज्जवसिदा सादि-सपज्ज-वसिदा । तत्थ सादि-सपज्जवसिदा जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अद्धपोग्गलपरियट्टं ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अणुक्क० अणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया । णवरि तिरिक्खाणुपुव्वीए तिण्णिसमया । अधवा तिरिक्खाणुपुव्वीए चत्तारिसमया सेसाणं तिण्णिसमया । अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ णिमिणणामाणं तेजा-कम्मइयभंगो । उवघाद-

---

प्रमाण है ।

छह संस्थानों और छह संहननोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्य-से एक समय होती है । उत्कर्षसे वह समचतुरस्रसंस्थानकी साधिक दो छ्यासठ सागरोपम, हुण्डकसंस्थानकी अंगुलके असंख्यातवें भाग, तथा शेष संस्थानोंकी पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक होती है । उक्त उदीरणा वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम तथा शेष संहननोंकी पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक होती है । प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रसकी तथा स्निग्ध और उष्ण स्पर्शकी प्ररूपणा तैजस व कार्मण शरीरके समान है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस तथा शीत, रूक्ष, कर्कश व गुरु स्पर्श नामकर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । मृदु और लघुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें सादि-सपर्यवसितका प्रमाण जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम अर्ध पुद्गल-परिवर्तन है ।

चार आनुपूर्वियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है । वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है । वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उक्त उदीरणा तीन समय तक होती है । अथवा तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उक्त उदीरणाका काल चार समय और शेष आनुपूर्वियोंका तीन समय है । अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी प्ररूपणा तैजस व कार्मण शरीरके समान है । उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त

परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-[बादर-]सुहुम-पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारण-दुस्सर-अजसकित्तीणमुक्कस्साणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वेसमया। अणुक्क० जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण जच्चिरं पयडिउदीरणा तच्चिरं कालं। जसगित्ति-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्क० अणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ। अणुक्कस्सं जच्चिरं पयडिउदीरणा तच्चिरं कालं। तित्थयरणामाए उक्कस्सअणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सा० केवचिरं० ? जह० वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवमुक्कस्स-अणुभागउदीरणाए कालो समत्तो।

एत्तो जहण्णाणुभागउदीरणकालो वुच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अजहण्णाणुभागउदीरणा अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा। णिद्दा-पयलाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अजहण्णउदीरणाए जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु०। सादासादाणं

व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, [वादर,] सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, दुस्वर और अयशकीर्तिकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जितने काल उनकी प्रकृतिउदीरणा होती है उतने काल होती है। यशकीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जितने काल प्रकृतिउदीरणा होती है उतने काल होती है। तीर्थंकर नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे वर्षपृथक्त्व व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल समाप्त हुआ।

यहां जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है। साता व असाता वेदनीयके जघन्य अनु-

जहण्णाणुभागस्स जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिसमया । अजहण्ण०जह० एगसमओ। उक्क० सादस्स छम्मासा, असादस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि ।

मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जह० केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्ण० मिच्छत्तस्स तिण्णिभंगा । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सम्मत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । सोलसण्णं कसायाणं जहण्णाणुभागउदीरणा[1] केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवण्णं णोकसायाणं जहण्णाणुभागु-दीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्ण० हस्स-रदीणं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । भय-दुगुंछाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवुंसयवेदस्स जह० एयसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । इत्थिवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं ।

भागकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । उनकी अज-घन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह सातावेदनीयका छह मास और असातावेदनीयका अन्तमुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है ।

मिथ्यात्व, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणाके विषयमें [अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित व सादि-सपर्यवसित ये] तीन भंग हैं । उनमें जो सादि-सपर्यवसित भंग है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । सम्यक्त्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन छयासठ सागरोपम काल तक होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । सोलह कषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । नौ नोकषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य उदीरणा हास्य व रतिकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास, अरति व शोककी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, भय व जुगुप्साकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त, नपुंसकवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, स्त्रीवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व, तथा पुरुषवेदकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है ।

---

१ मप्रतौ 'जहण्णाणुभागउदीरणा अणुभागउदीरणा' इति पाठः ।

आउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि-समया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० णिरय-देवाउआणं तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि, तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि।

चदुण्णं गदीणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि-समया। अजहण्ण० जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण णिरय-देवगईणं तेत्तीसं सागरोव-माणि, मणुसगदीए तिण्णिपलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खगईए असंखेज्जा लोगा। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अजहण्ण० ओरालियसरीरस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो; वेउव्विय० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि; आहारसरीरस्स जहण्णुक्कस्सेण[1] अंतोमुहुत्तं। तेजा-कम्मइयसरीराणं जह-ण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० बे समया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिण्णिअंगोवंग-पंचसरीरबंधण-पंचसरीर-संघादाणं सग-सगसरीरभंगो। णवरि ओरालियअंगोवंग० अजहण्णुक्कस्स० तिण्णि

आयु कर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह नारकायु व देवायुकी एक आवलीसे कम तेतीस सागरोपम, तथा तिर्यंचायु और मनुष्यायुकी एक आवलीसे कम तीन पल्योपम प्रमाण होती है।

चार गति नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह नरकगति व देवगतिकी तेतीस सागरोपम, मनुष्यगतिकी पूर्वकोटि-पृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा तिर्यंचगतिकी असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होती है। औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। अजघन्य अनुभागउदीरणा औदारिकशरीरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वैक्रियिकशरीरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, तथा आहारशरीरकी जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। तैजस व कार्मण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य-से एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होती है। तीन आंगोपांग, पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात प्रकृतियोंकी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा अपने अपने शरीर-के समान है। विशेष इतना है कि औदारिकशरीरआंगोपांगकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका

---

१ प्रतिपु 'आहारसरीरस्स जह० अणु० (अ. जहण्णुक्क०) केवचिरं ? जह० उक्क० एगसमओ। अजह० जहण्णुक्कस्सेण' इति पाठः।

पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणऽभहियाणि ।

छसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्ण० समचउरससंठाणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि । हुंडसंठाणस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो । वज्जरिसहवइरणारायण० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणऽभहियाणि । सेसाणं संठाणाणं संघडणाणं च जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । काल-णीलय-तित्त-कडुअ-दुग्गंध-सीद-ल्हुक्खाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । पसत्थवण्ण-गंध-रसाणं[1] णिद्धुण्णाणं च जहण्णाणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । अजहण्ण० जह० एगस० उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । मउअ-लहुआणं जहण्णाणुभागुदी० केवचिरं० ? जहण्णु० एगसमओ । अजहण्णअणुभागुदीरणा जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । कक्खड-गरुआणं जहण्णाणु० केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्णाणुभागउदीरणा अणादिय-अपज्जवसिदा अणादिय-सपज्जवसिदा सादि-सपज्जवसिदा वा । जा सादि-सपज्जवसिदा सा जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं ।

उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है ।

छह संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य अनुभागउदीरणा समचतुरस्रसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे दो छ्यासठ सागरोपम, हुण्डकसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा शेष संस्थानों और संहननोंकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक होती है । कृष्ण व नील वर्ण, तिक्त व कटु रस, दुर्गन्ध तथा शीत व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रस नामकर्मोंकी तथा स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । मृदु और लघु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल तक होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभाग-उदीरणा अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होती है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है ।

---

1 ताप्रतौ-'रसादीणं' इति पाठः ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणामाणं जहण्णाणुभागउदी० अजहण्णाणुभागु० च केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसमया। णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए तिण्णिसमया। केसिं पि आइरियाणं अहिप्पाएण सव्वासिमाणुपुव्वीणमुक्कस्सकालो तिण्णिसमया, तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए चत्तारिसमया। अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं तेजा-कम्मइयभंगो।

अथिर-असुह-उवघाद-परघाद-पत्तेय-साहारणसरीर-आदावुज्जोवणामाणं जहण्णाणुभागुदी० जहण्णुक्क० एगसमओ। अजहण्णाणुभागुदी० अथिर-असुहाणं अणादिया अपज्जवसिदा अणादिया सपज्जवसिदा। उवघादणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो। परघादणामाए जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, पत्तेय-साहारणसरीराणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। आदावणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० बावीसवाससहस्साणि देसूणाणि। उज्जोवणामाए जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णिपलिदोवमाणि देसूणाणि।

जादिपंचयं[1]-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चा-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिसमया। अजहण्णाणुभागुदी०

चार आनुपूर्वी नाकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा और अजघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे तीन समय मात्र है। किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे सब आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट काल तीन समय और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका चार समय है। अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी इन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा तैजस व कार्मण शरीरके समान है।

अस्थिर अशुभ, उपघात, परघात, पत्येकशरीर, साधारणशरीर, आतप और उद्योत नाकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। अजघन्य अनुभागउदीरणा अस्थिर और अशुभकी अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित, तथा उपघात नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, परघात नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्पसे कुछ कम तेतीस सागरोपम, प्रत्येक व साधारण शरीरकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्पसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, आतप नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष, तथा उद्योत नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तीन पल्योपम काल तक होती है।

पांच जातियां, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, ऊंचगोत्र और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक

---

१ ताप्रतौ 'जादिपंचयस्स' इति पाठः।

जह० उस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। तसणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि। थावर-एइंदियणामाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। चदुण्णं जादीणं जह० एगसमओ, उक्क० सगट्ठिदी। बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० एगसमओ; उक्क० बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं। जसगित्ति-सुभग-आदेज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। उच्चागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। तित्थयरणामाए जहण्णाणुभागुदी० केवचिरं०? जह० वासपुधत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा देसूणचउरासीदिलक्खमेत्तपुव्वाणि वा। अजहण्ण० जहण्णुक्क०[1] अंतोमुहुत्तं। एवमेयजीवेण कालो समत्तो।

एयजीवेण अंतरं। तं जहा[2]— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-असादावेदणीय-

होती है। अजघन्य अनुभागउदीरणा उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति और सुस्वरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होती है। त्रस नामकर्मकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम काल तक होती है। उक्त अजघन्य उदीरणा स्थावर और एकेन्द्रिय नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है। चार जाति नामकर्मोंकी वह उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अपनी स्थिति प्रमाण होती है। बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्तकी जघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मकी अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मकी असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मकी दो हजार सागरोपम, तथा अपर्याप्त नामकर्मकी अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। यशकीर्ति, सुभग और आदेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक काल तक होती है। ऊंच गोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है। नीचगोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे वर्षपृथक्त्व तथा उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल अथवा कुछ कम चौरासी लाख मात्र पूर्व तक होती है। उसकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, नारकायु,

१ अप्रतौ 'अणुक्क०' इति पाठः। २ अप्रतौ 'अंतरं जहा' इति पाठः।

मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुसाउअ-णिरय-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-पंचसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-विगलिंदियजादि- उवघाद-अप्पसत्थविहायगइ-अथिर- असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज- णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अचक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्क० असंखेज्जा लोगा। सादावेदणीय-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-आहार-वेउव्विय-सरीराणं तदंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं समचउरससंठाण-मउअ-लहुग-परघाद-उज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-उस्सासणामाणं च उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह०एगसमओ, उक्क०उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। णवरि साद-देवाउ-देवगदि-वेउव्वियचउक्क-पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणमुक्कस्साणुभागउदीरणाए णत्थि अंतरं।

णिरयाणुपुव्वीए उक्कस्साणुभागुदी० जह० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। तिरिक्खाणुपुव्वीए अट्ठवस्साणि समऊणाणि। मणुस्साणुपुव्वीए तिण्णि पलिदोवमाणि

तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, विकलेन्द्रिय जाति, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्पसे असंख्यात लोक मात्र होता है। सातावेदनीय, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारकशरीर, वैक्रियिकशरीर, इन दोनों शरीरोंके आंगोपांग, बन्धन व संघात नामकर्म, समचतुरस्रसंस्थान, मृदु, लघु, परघात, उद्योत, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और उच्छ्वास नामकर्म; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जन्यसे एक समय व उत्कर्पसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक होता है। विशेष इतना है कि सातावेदनीय, देवायु, देवगति, वैक्रियिकचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका उपर्युक्त अन्तर उत्कर्पसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है। तैजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता।

उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे नारकानुपूर्वीका साधिक तेतीस सागरोपम, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका एक समय कम आठ वर्ष, और मनुष्यानुपूर्वीका साधिक तीन पल्योपम

---

१ मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि। क. पा. (चू. सू.) प्रे. न. पृ. ५४४८–४९.

सादिरेयाणि। उक्कस्सं तिण्णं पि एइंदियट्ठिदी। देवाणुपुव्वीए जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अणुक्कस्सस्स पयडिउदीरणंतरभंगो[1]। आदावणामाए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं उक्कस्साणुभागउदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखे० लोगा। अपज्जत्तणामाए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्टा। एवमोघुक्कस्सं समत्तं।

जहण्णाणुभागुदीरणंतरं। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-णवणोकसाय-चदुसंजलण - सम्मत्त-अप्पसत्थवण्ण[2]-गंध-रस-फास - अथिर-असुभ - पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं णत्थि। णिद्दा-पयला-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसायाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णाणुभाग० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सादासादाणं जह० उदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा।

मात्र काल तक होता है। उत्कृष्ट अन्तर इन तीनोंका भी एकेन्द्रियकी स्थिति प्रमाण होता है। देवानुपूर्वीकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे भी नहीं होता। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृतिउदीरणाके अन्तर जैसी है। आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीरकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट समाप्त हुआ।

जघन्य अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, नौ नोकषाय, चार संज्वलन, सम्यक्त्व, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य अनुभागउदीणाका अन्तर नहीं होता। निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषाय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल मात्र काल तक होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। साता व असाता वेदनीयकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है।

---

१ एवं सेसाणं कम्माणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तवज्जाणं। णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं पयडिअंतरं कादव्वं। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं। क. पा. (चू. सू.) प्रे. प्र. पृ. ६४५०–५१. २ अ-काप्रत्योः 'चदुसंजलण-अप्पसत्थ' इति पाठः।

चदुण्णमाउआणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ। उक्क० तिण्णमाउआणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, तिरिक्खाउअस्स असंखेज्जा लोगा। चदुण्णं गईणं सग-सग-आउअभंगो। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंगाणं तेसिं बंधण-संघादाणं उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-पत्तेय-साहारणाणं च जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं। उक्क० ओरालियसरीरबंधण-संघाद-उवघाद-परघाद-साहारणसरीराणमसंखेज्जा लोगा, वेउव्वियसरीर-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-तब्बंधण-संघाद-पत्तेय०-आदावुज्जोवाणं उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-तब्बंधण-संघादाणं उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। णवरि वेउव्विय-अंगोवंगणामाए जहण्णेण पलिदो० असंखे० भागो, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो। पंचसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागउदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्टा। मउअ-लहुआणं संघडणभंगो।

णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० असंखे० पो० परियट्टा। अधवा, जहण्णाणुभागंतरमेगसमओ, देव-णेरइएसु अणाहार-

चार आयुकर्मोंकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय होता है। उक्त अन्तर उत्कर्षसे तीन आयुकर्मोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और तिर्यंचआयुका असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होता है। चार गतियोंके उक्त अन्तरकी प्ररूपणा अपनी अपनी आयुके समान है। औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर; औदारिक, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग; उनके बन्धन व संघात तथा उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उक्त अन्तर उत्कर्षसे औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, उपघात, परघात और साधारणशरीरका असंख्यात लोक मात्र; वैक्रियिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन, वैक्रियकसंघात, प्रत्येकशरीर, आतप और उद्योतका वह अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण; तथा आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकबन्धन और आहारकसंघातका वह अन्तर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि वैक्रियिकआंगोपांगका उक्त अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। हुण्डकसंस्थानके इस अन्तरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। पांच संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मृदु और लघुके प्रकृत अन्तरकी प्ररूपणा संहननोंके समान है।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। अथवा उनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है, क्योंकि, देवों

१ अप्रतौ आयुःसम्बद्धसंदर्भोऽयमग्रे 'परघाद-साधारणसरीराणमसंखेज्जा लोगा' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते।

कालस्स तिसमयपमाणब्भुवगमादो। मणुसाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगसमओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं, उक्क० असंखे० पो० परियट्टा। तिरिक्खाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगसमओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं चदुसमऊणं वा, उक्क० असंखेज्जा लोगा। उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जस-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। दोविहायगइ-तस-सुभगादेज्ज-सरदुग-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-पसत्थ-वण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तित्थयरस्स जहण्णाणुभागउदीरणंतरं णत्थि। एवमंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ चेदि। उक्कस्सपदभंगविचयस्स अट्ठपदं। तं जहा— जो उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो अणुक्कस्सअणुभागस्स अणुदीरओ, जो अणुक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो उक्कस्स-अणुभागस्स अणुदीरओ[2]। जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण पंचण्णं णाणावरणीयपयडीणं उक्कस्साणुभागस्स सिया सव्वे जीवा

व नारकियोंमें अनाहारकालका प्रमाण तीन समय स्वीकार किया गया है। मनुष्यानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय अथवा दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। तिर्यगानुपूर्वीकी जघन्य अनुभाग-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र अथवा तीन समय कम या चार समय कम क्षुद्रभव-ग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है। उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, आदेय, स्वरद्विक, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, इन दोनोंके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, निर्माण और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गल-परिवर्तन मात्र काल तक होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा अन्तर नहीं होता। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय। इनमें उत्कृष्ट-पद-भंगविचयका अर्थपद कहा जाता है। यथा— जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरक होता है। जो अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह उत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरद होता है। जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं, अवेदकोंका व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदके अनुसार पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक जीव

१ ताप्रतौ 'उदीरणा (ओ)' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ णत्थि' इति पाठः।

अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। एवमणुक्कस्सस्स वि पडिलोमेण[1] तिण्णिभंगा वत्तव्वा। अट्ठविहस्स दंसणावरणीयस्स णाणावरणभंगो। अचक्खुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं च उक्कस्सअणुभागस्स णियमा उदीरया अणुदीरया च[2] अत्थि। सादासादाणं मोहणिज्जस्स सत्तावीसं पयडीणं चउव्विहस्स आउअस्स आहारचउक्कवज्जाणं णामपयडीणं णीचुच्चागोदाणं च जहा णाणावरणस्स छभंगा परूविदा तहा परूवेदव्वा। सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णमाणुपुव्वीणं च सोलस भंगा वत्तव्वा[3]।

जहण्णपदभंगविचए अट्ठपदं जहा उक्कस्सपदभंगविचए कदं तहा कायव्वं। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीय-तिण्णिआउ-तिण्णिगदि-जादिचउक्क-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयपयडीणं तब्बंधण-संघाद-अंगोवंगाणं पंचसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-आदाव-तस-अगुरुअलहु-पसत्थापसत्थविहायगइ-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर-तित्थयर-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं च जहण्णाणुभागस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया

उदीरक होता है, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं। इसी प्रकारसे अनुत्कृष्ट अनुभागके सम्बन्धमें भी प्रतिलोम स्वरूपसे इन तीन भंगोको कहना चाहिये। आठ प्रकार दर्शनावरणके भंगविचयकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियों सम्बन्धी उत्कृष्ट अनुभागके नियमसे बहुत जीव उदीरक और बहुत जीव अनुदीरक भी होते हैं। साता व असाता वेदनीय, मोहनीयकी सत्ताईस प्रकृतियों, चार प्रकार आयुकर्म, आहारकचतुष्कको छोड़कर शेष नामप्रकृतियों तथा नीच व ऊंच गोत्रके विषयमें जैसे ज्ञानावरणके छह भंगोकी प्ररूपणा की गयी है, वैसे ही उनकी प्ररूपणा करना चाहिये। सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंके सोलह भंग कहना चाहिये।

जिस प्रकार उत्कृष्ट-पद-भंगविचयमें अर्थपद बतलाया गया है उसी प्रकार जघन्य-पद-भंगविचयमें भी बतलाना चाहिये। पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सत्ताईस मोहनीयप्रकृतियां, तीन आयु, तीन गति, चार जातियां, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण प्रकृतियां एवं उनके बन्धन, संघात व आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, आतप, त्रस, अगुरुलघु, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, तीर्थंकर, निर्माण, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत ही जीव उदीरक भी होते हैं। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिके अजघन्यकी प्ररूपणा

---

१ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमेण', ताप्रतौ '[पलिदोवमेण]' इति पाठः २ अप्रतौ 'पंचंतराइयस्स उक्कस्स'...... उदीरया च अणुदीरया च' इति पाठः। ३ ओघेण मिच्छ० सोलसक० सम्म० णवणोक० उक्क० अणुभागुदीरणाए सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च। एवमणुक्क०। णवरि उदीरगा पुव्वं व वत्तव्वं। सम्मामि० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० अट्ठभंगा। जयध. प्रे. ५. पृ. ५४६७.

च। णवरि तित्थयरस्स अजहण्णं पुव्वं वत्तव्वं[1]। एवमजहण्णस्स वि तिण्णिभंगा वत्तव्वा। णवरि तित्थयरस्स जहण्णं पुव्वं व वत्तव्वं[2]।

सादासाद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-ओरालियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-तिरिक्खाणुपुव्वी-उवघाद-परघादुज्जोव-उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाजहण्णाणुभागस्स उदीरया अणुदीरया च णियमा अत्थि। सम्मामिच्छत्त-तिण्णिआणुपुव्वी-आहारसरीराणं जहण्णाजहण्णाणुभागउदीरणाए सोलस भंगा वत्तव्वा। एवं भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठवीसमोहणीय-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-जाइचउ-णिरय-तिरिक्खाणुपुव्वी-पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-उवघाद-आदाव-उस्सास-अप्पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्त-अथिर-असुह-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-दुस्सर-णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणा केवचिरं०? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। अणुक्कस्सउदीरणा केवचिरं०? सव्वद्धा। णवरि सम्मामिच्छत्तस्स

पहिले करना चाहिये। इस प्रकार अजघन्यके भी तीन भंग कहने चाहिये। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणाविषयक भंगोंका कथन पहिलेके समान करना चाहिये।

साता व असाता वेदनीय, तिर्यंचआयु, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, हुण्डसंस्थान, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनके जघन्य व अजघन्यअनुभागके नियमसे बहुत जीव उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व, तीन आनुपूर्वियों और आहारकशरीरकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणाके विषयमें सोलह भंग कहने चाहिये। इस प्रकार भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, देवगति, नरकगति, तिर्यगति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी, तिर्यगानुपूर्वी, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, दुस्वर और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह सर्वकाल होती है। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्वकी वह उदीरणा जघन्यसे

---

१ अ-काप्रत्योः 'अहण्णपुव्वं वत्तव्वं', ताप्रतौ 'अजहण्णं पुव्वं व वत्तव्वं' इति पाठः। २ अप्रतौ 'जहण्णं पुव्वं वत्तव्वं', काप्रतौ 'जहण्णपुव्वं वत्तव्वं इति पाठः।

जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। णिरयाणुपुव्वीए अणुक्कस्सं पि आवलियाए असंखे० भागो। अचक्खुदंसणावरणीय-एइंदिय-थावर-सुहुम-साहारण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं० ? सव्वद्धा।

मणुस-तिरिक्खाउ-मणुसगइ-देवाउ-पंचसरीर-तिण्णिअंगोवंग-बंधण-संघाद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहु-परघाद-उज्जोव-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं उक्कस्सअणुभागउदीरणा णाणाजीवेहि जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्कस्स० सव्वद्धा। णवरि आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं अणुक्क० उदीरणा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। देव-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अणुक्कस्साणुभाग० जह० एगसमओ उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एवमुक्कस्सकालो समत्तो।

णाणाजीवेहि जहण्णाणुभागउदीरणकालो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-सत्त-दंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीयाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अजहण्णस्स सव्वद्धा। णिद्दा-पयलाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अजहण्णस्स सव्वद्धा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणु-

---

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। नरकानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका भी काल आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। अचक्षुदर्शनावरण, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह सर्वकाल होती है।

मनुष्यायु, तिर्यगायु, मनुष्यगति, देवायु, पांच शरीर, तीन आंगोपांग, बन्धन, संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय तक होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वकाल होती है। विशेष इतना है कि आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकशरीरबन्धन और आहारकशरीरसंघातकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है। यथा— पांच ज्ञानावरण, सात दर्शनावरण और सत्ताईस मोहनीय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। सम्य-

भागुदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। सादासाद-तिरिक्खाउआणं जहण्णाजहण्णाणुभागउदीरणकालो सव्वद्धा।

णिरय-देव-मणुस्साउ- णिरय- देव-मणुस्सगदि- चउजादि- वेउव्विय- तेजा-कम्मइय-सरीर-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग- वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरय-देव- मणुस्साणुपुव्वी -अगुरुअलहुअ-आदाव- पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। अजहण्णाणुभागुदीरणाए सव्वद्धा। णवरि तिण्णमाणुपुव्वीणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असं० भागो।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - एइंदियजादि- ओरालियसरीर- तव्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त- पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-तित्थयराणं जहण्ण-अजहण्णअणुभागउदीरणकालो सव्वद्धा। णवरि तित्थयरस्स अजहण्णाणुभागउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-तव्बंधण-संघादाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अजहण्ण० जहण्णु-

---

मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। साता व असाता वेदनीय और तिर्यंचआयुकी जघन्य व अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है।

नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, चार जातियां, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीरके बन्धन और संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, नरकानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, निर्माण और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। विशेष इतना है तीन आनुपूर्वियोंकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियजाति, औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और तीर्थंकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी अजघन्य अनुभागउदीरणा काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। आहारकशरीर, अहारकशरीरांगोपांग, तथा उसके बन्धन व संघात, इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। पांच संस्थानों और छह

क्कस्सेण अंतोमु० । पंचसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागउदी० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । अजहण्ण० सव्वद्धा । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुभाणं जहण्णाणुभाग० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा समया । अजहण्ण० सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठावीसमोहणीय-णिरय-देव-तिरिक्ख-मणुस्साउ-चत्तारिगदि-चत्तारिजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास मउअ-लहुअ-चत्तारिआणुपुव्वी-उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्था-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणुक्क० णत्थि अंतरं । णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णिआणुपुव्वीणं जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो वासपुधत्तं[1] चउवीसअंतोमुहुत्तं[2] । अचक्खुदंसणावरण० उक्कस्साणुक्कस्स० णत्थि अंतरं ।

तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-

संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर तथा अशुभ; इनकी जघन्य अनुभागउदीरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, देवायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार गतियां, चार जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त, वर्ण गन्ध, रस तथा मृदु व लघु स्पर्श चार आनुपूर्वियां, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे क्रमशः सम्यग्मिथ्यात्वका पल्योपमके असंख्यातवें भाग, आहारचतुष्कका वर्षपृथक्त्व, और तीन आनुपूर्वियोंका चौबीस अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता।

तैजस व कार्मण शरीर, उनके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस तथा स्निग्ध व उष्ण

१ अप्रतौ 'उक्क० पलिदो० असंखे० भागवासपुधत्तं', काप्रतौ 'उक्क० पलि० वासपुधत्तं', ताप्रतौ 'उक्क० पलिदोवमवासपुधत्तं' इति पाठः । २ ओघेण सव्वपयडी उक्क० अणुभागुदी० अंतरं जह० एगस०, उक्क० असंखेज्जा

थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। अणुक्कस्साए णत्थि अंतरं। एवं तित्थयरस्स। णवरि उक्कस्साणु० उदी० उक्कस्सेण वासपुधत्तं। थावर-सुहुमेइंदियजादि-साहारणसरीर-पंचंतराइयाणं उक्कस्साणुक्कस्सअणुभागुदीरणंतरं णत्थि। एवमुक्कस्संतरं समत्तं।

एत्तो जहण्णअणुभागउदीरणंतरं। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीय-सुद-णाणावरणीय-मणपज्जवणाणावरणीय-चक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि[2]। ओहिणाणावरणीय-ओहिदंसाणावरणीयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं पि जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि। केवलणाणा-वरणीय-केवलदंसणावरणीय-लोहसंजलण - अप्पसत्थवण्ण-गंध - रस-फास - अथिर-असुह-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। णिद्दा-पयलाणं जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जवस्साणि। सम्मत्तस्स जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० एगसमओ, उक्क० संखे० वस्साणि। पुरिसवेद-कोध-माण [-माया]-

---

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और ऊंच गोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। इनकी अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता। इसी प्रकारसे तीर्थंकर प्रकृतिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उसकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। स्थावर, सूक्ष्म, एकेन्द्रियजाति, साधारणशरीर और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता। इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर समाप्त हुआ।

यहां जघन्य अनुभागदीरणाका अन्तर कहा जाता है। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। अवधिज्ञानावरण और अवधि-दर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर भी जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, संज्वलनलोभ, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तरायकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। पुरुषवेद और संज्वलन क्रोध, मान व मायाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और

कोगा। अणुक० णत्थि अंतरं। णवरि सम्मामि० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं० भागो। जयध. प्रे. प. पृ. ५४८८. १ अ-काप्रत्योः 'जदि' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि' इति पाठः।

संजलणाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० वासं सादिरेयं।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि - मिच्छत्त- सम्मामिच्छत्त- बारसकसाय-छण्णोकसाय-णिरय- देव-मणुसाउ-णिरयगइ - मणुसगइ-देवगइ- चदुजादि-णिरय-देव-मणुस्साणुपुव्वी-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-तिण्णिअंगोवंग-पंचसंठाण- छसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फासमउअ-लहुअ-अगुरुअलहुअ[1]-आदाव-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। कक्खड-गरुआणं जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-थावर-सुहुम-बादर-पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर- जसगित्ति- अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्ज - णीचुच्चागोद-तित्थयराणं जहण्णाजहण्ण० णत्थि। णवरि तित्थयर[2]० जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो दुविहो उक्कस्सपदसण्णियासो जहण्णपदसण्णियासो चेदि। तत्थ[3] उक्कस्सपदसण्णियासो दुविहो सत्थाण-परत्थाणसण्णियासभेदेण। तत्थ सत्थाणे पयदं।

उत्कर्षसे साधिक एक वर्ष मात्र होता है।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व,सम्यग्मिथ्यात्व, बारह कषाय, छह नोकषाय, नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, तीन आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व मृदु-लघु स्पर्श, अगुरुलघु, आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, निर्माण और ऊंच गोत्रकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। कर्कश और गुरुकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर व उसके बन्धन-संघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और तीर्थंकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका अन्तर नहीं होता। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष दो प्रकार है—उत्कृष्टपदसंनिकर्ष और जघन्यपदसंनिकर्ष। उनमें उत्कृष्टपदसंनिकर्ष स्वस्थानसंनिकर्ष और परस्थानसंनिकर्षके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें स्वस्थानसंनिकर्ष प्रकृत

---

१ अप्रतौ 'फास-महुरअलहुअगुरुअलहु', ताप्रतौ 'फास-अगुरुअलहु-म [हुर] उ-लहुअ', मप्रतौ 'फास-महुअलहुअगुरुअलहुअ' इति पाठः। २ अप्रतौ 'तित्थयराणं', ताप्रतौ 'तित्थयर-' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'जत्थ' इति पाठः।

तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो सुदणाणावरणस्स उक्कस्स-मणुक्कस्सं वा उदीरेदि । जदि अणुक्कस्सं, छट्ठाणपदिदं । एवमोहिणाणावरणीय-मणपज्जव-णाणावरणीय-केवलणाणावरणीयाणं पि वत्तव्वं । सेसचदुण्णं पयडीणं आभिणिबोहिय-णाणावरणीयभंगो ।

चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं णियमा अणुक्कस्समुदीरेदि अणंतगुणहीणं । अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो सेसाणं तिण्णं पि णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सेसपंचण्णं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुदीरओ । ओहिदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागं उदीरेंतो पंचण्णं दंसणावरणीयाणं उदीरओ । केवलदंसणावरणस्स[1] णियमा, तं तु छट्ठाणपदिदं[2] । सेसाणं दोण्णं दंसणा-वरणीयाणं णियमा अणुक्कस्साणुभागस्स अणंतगुणहीणस्स उदीरओ । केवलदंसणावरणी-यस्स ओहिदंसणावरणभंगो । णिद्दाए उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो दंसणावरणचउक्कस्स णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सेसाणं चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुदीरओ । सेस-

---

है । *यथा*— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरणके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी करता है । इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी मुख्यतासे संनिकर्षकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है ।

चक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधि-दर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । अचक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष तीनों ही प्रकृतियोंके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है । वह शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । अवधिदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करने-वाला निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका [कदाचित्] उदीरक होता है । केवलदर्शना-वरणका नियमसे उदीरक होता हुआ षट्स्थानपतितका उदीरक होता है । शेष दो दर्शना-वरण (चक्षुदर्शनावरण व अचक्षुदर्शनावरण) प्रकृतियोंका उदीरक होकर वह नियमसे उनके अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है । केवलदर्शनावरणके संनिकर्षकी प्ररूपणा अवधिदर्शनावरणके समान है । निद्राके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शना-वरणादि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागका उदीरक होता है । शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है । प्रचला आदि शेष चार

---

१ अप्रतौ 'केवलदंसणावरणं', काप्रतौ 'केवलदंसणावरणे', ताप्रतौ 'केवलदंसणावर०' इति पाठः ।
२ ताप्रतौ '-पदिदा' इति पाठः ।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णिद्दाए भंगो।

सादावेदणीयमुदीरेंतो असादावेदणीयस्स णियमा अणुदीरओ। एवमसादस्स वि वत्तव्वं। मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो सोलसकसाय-णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ, सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्समणुक्कस्सं वा उदीरेदि। जदि अणुक्कस्स० तो[1] छट्ठाणपदिदमुदीरेदि। इत्थि-पुरिसवेदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं[2]। हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ[3]। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सं[4] णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि। सोलसण्णं कसायाणं मिच्छत्तभंगो। णवरि कोधे णिरुद्धे माणादीणमुदीरणा णत्थि। एवं माणादीणं पि वत्तव्वं। णवुंसयवेदस्स मिच्छत्तभंगो। णवरि इत्थि-पुरिसवेदाणमुदीरणा णत्थि। अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छत्तभंगो। णवरि अरदि-सोगमुदीरेंतो हस्स-रदीणमणुदीरओ। इत्थि-पुरिसवेदाणं मिच्छत्तभंगो। णवरि एगवेदे णिरुद्धे सेसवेदाणमणुदीरओ[5]। हस्स-रदीणमुक्कस्साणुभागमुदीरेंतो जासिं पयडीणमुदीरओ णियमा तासिमणुक्कस्समुक्कस्सादो अणंतगुणहीण-

---

दर्शनावरण प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असातावेदनीयका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार असाताके भी सम्बन्धमें कहना चाहिये।

मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कपाय, नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। वह यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणाके सम्बन्धमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये। हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक होता है और कदाचित् अनुदीरक। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे अनुत्कृष्ट और नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है। सोलह कषायोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। विशेष इतना है कि क्रोधकी विवक्षा होनेपर मानादिकी उदीरणा नहीं होती। इसी प्रकार मानादिकोंकी विवक्षामें भी कहना चाहिये। नपुंसकवेदके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। विशेष इतना है कि नपुंसकवेदके उदीरकके स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणा नहीं होती है। अरति शोक, भय व जुगुप्साके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। विशेष इतना है कि अरति व शोककी उदीरणा करनेवाला हास्य व रतिका अनुदीरक होता है। स्त्री और पुरुष वेदोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। विशेष इतना है कि एक वेदके विवक्षित होनेपर शेष वेदोंका वह अनुदीरक होता है। हास्य व रतिके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जिन प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके नियमसे उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन

---

१ ताप्रतौ 'अणुक्कस्साणुभागमुदीरेंतो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः '-वेदाणं पि चेव वत्तव्वं', ताप्रतौ '-वेदाणं पि चेव (एवं) वत्तव्वं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'हस्स-रदीणं णियमा उदीरओ सिया अणुदीरओ' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सा' इति पाठः। ५ ताप्रतौ '-मणुदीरेदि' इति पाठः।

मुदीरेदि ।

णिरयगइणामाए उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो हुंडसंठाण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-सीद-ल्हुक्ख-उवघाद-अप्पसत्थविहायगदि - अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर - अणादेज्ज- अजस-गित्तीणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो तस्स छट्ठाणपदिदस्स उदीरओ । एवं सेसणामपयडीणं पि जाणिदूण वत्तव्वं । दाणंतराइयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो लाभ-भोग-परिभोग-वीरियंतराइयाणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो णियमा छट्ठाणपदिद-मुदीरेदि । जहा सादासादाणं तहा गोदाउआणं । एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो ।

एत्तो परत्थाणसण्णियासो वुच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो चउणाणावरणीय-ओहि-केवलदंसणावरणीय-असाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-पंचसंठाण-चत्तारिसंघडण-णीचागोदाणमण्णेसिं च जेसिमसुभाणमुदीरओ तेसिमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो[1] छट्ठाणपदिदं । आभिणि-

अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है ।

नरकगति नामकर्मके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला हुण्डकसंस्थान, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व शीत-रूक्ष स्पर्श, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो वह उसके षट्स्थानपतितका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे शेष नामकर्मकी प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी जानकर कथन करना चाहिये ।

दानान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला लाभान्तराय, भोगान्तराय, परिभोगान्तराय और वीर्यान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो वह नियमसे षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । जैसे साता व असाता वेदनीयके संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही दोनों गोत्रों और चारों आयुकर्मोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थानसंनिकर्ष समाप्त हुआ ।

यहां परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चार ज्ञानावरणीय, अवधि व केवलदर्शनावरणीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, तीन वेद, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नारकायु, नरकगति, तिर्यग्गति, पांच संस्थान, चार संहनन और नीच गोत्र; इनका तथा अन्य भी जिन अशुभ प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उनके अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी

१ प्रतिपु 'अणुक्कस्समुदीरेंतो' इति पाठः ।

भंगो। एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो।

परत्थाणजहण्णाणुभागसण्णियासो। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं[1] णियमा जहण्णमुदीरेदि। एदेण कमेण परत्थाणसण्णियासो जाणिदूण णेयव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

एवं सेसाणि अणियोगद्दाराणि जाणिदूण णेयव्वाणि। अप्पाबहुअं दुविहं जहण्णमुक्कस्सं च। उक्कस्सए पयदं। तं जहा— सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयाणं। जसगित्ति-उच्चागोदाणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा। कम्मइय० अणंतगुणहीणा। तेजासरीर० अणंतगुणहीणा। आहारसरीर० अणंतगुणहीणा[2]। वेउव्विय० अणंतगुणहीणा। मिच्छत्त० अणंतगुणहीणा। केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-असाद० उदीरणा अणंतगुणहीणा। अणंताणुबंधीसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। संजलणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा। पच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउ० अणंतगुणहीणा। अपच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा। मदिणाणावरण० अणं० गु० हीणा[3]। सुदणाणाव०

स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ।

परस्थान जघन्य अनुभागके संनिकर्षका कथन करते हैं। यथा— आभिनिवोधिकज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इस क्रमसे परस्थान संनिकर्षको जानकर ले जाना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

इसी प्रकारसे शेष अनुयोगद्वारोंको जानकर ले जाना चाहिये। अल्पबहुत्व दो प्रकार है— जघन्य अल्पबहुत्व और उत्कृष्ट अल्पबहुत्व। इनमें उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है। यथा— सातावेदनीयकी अनुभागउदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी अनुभागउदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण और असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलन कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधि-

---

१ ताप्रतौ 'केवलदंसणावर०-चक्खुदंसणावरणीयाणं' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'मदिणाणावरणेसु अण्ण० उ० अणंत० हीणा' इति पाठः।

अणं० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अणं० गु० हीणा। मणपज्जव-णाणाव० अणंतगुणहीणा। णवुंसयवेद० अणंत० हीणा। थीणगिद्धि० अणं० गु० हीणा। अरदि० अणं० गु० हीणा। सोग० अणंतगुणहीणा। भय० अणंतगुणहीणा[1]। दुगुंछा० अणंतगुणहीणा। णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणहीणा। पयला-पयला० अणंतगुणहीणा। णिद्दा० अणंतगुणहीणा। पयला० अणंतगुणहीणा। णीचागोद-अजसगित्ति० अणंतगुणहीणा। णिरयगइ० अणंतगुणहीणा। देवगइ० अणंतगुणहीणा। रदि० अणंतगुणहीणा। हस्स० अणंतगुणहीणा। देवाउ० अणं० गु० हीणा। णिरयाउ० अणंतगु० हीणा। मणुसगइ० अणं० गु० हीणा। ओरालिय० अणं० गु० हीणा। मणुसाउ० अणं० गु० हीणा। तिरिक्खाउ० अणंतगुणहीणा। इत्थिवेद० अणंतगुणहीणा। पुरिसवेद० अणंतगुणहीणा। तिरिक्खगइ० अणंतगुणहीणा। चक्खुदं० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गुणहीणा। भोगंतराइय० अणंतगुणहीणा। परिभोगंतराइय० अणंतगुणहीणा। अचक्खुदं० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं। केवलणाणावरण० केवलदंसणा-

ज्ञानावरण और अवधिदर्शनवरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञाना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचला-प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणो हीन है। नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन हैं। नरक-गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणीहीन है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

नरकगतिमें नारकियोंमें सबसे तीव्र अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है। केवलज्ञाना-

१ ताप्रतौ 'भय० अणंतगुणहीणा' इति नास्तीदं वाक्यम्।

वरण० असादावेदणीय० अणंतगुणहीणा। अणंताणुबंधीसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। चदुसंजलणम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा। मदिणाणावर०[2] अणंतगुणहीणा। सुदणाणावर० अ० गु० हीणा। मणपज्जवणाणावरण० अ० गु० हीणा। णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा। अरदि० अणं० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पयला० अ० गुणहीणा। णीचागोद० अजसगित्ति० अ० गु० हीणा। णिरयगइ० अ० गु० हीणा। णिरयाउ० अ० गु० हीणा। सादावेदणी० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गुणहीणा। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा०। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खुदं० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंत-

वरण, केवलदर्शनावरण और असातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतर प्रकृतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार संज्वलन कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी

१ ताप्रतौ 'असादवेदणी० अणंताणुबंधीसु' इति पाठः। २ ताप्रतावतोऽग्रे वक्ष्यमाणप्रकृतिबोधकपदानां मध्ये 'अणंतगुणहीणा' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते– तत्तु प्रायः संदर्भस्यान्त एवैकवारमुपलभ्यते।

राइय० अ० गुणहीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

पढमाए पुढवीए सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाणावरण-केवलदंसणाव० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । मदिणाणावरण० अ० गु० हीणा । सुदणाणाव० अ० गु० हीणा । मणपज्जवणाणाव० अ० गु० हीणा । णिद्दा० अ० गु० हीणा । पचला० अ० गु० हीणा । असाद० अणंतगुणहीणा । णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अजसगि० अ० गु० हीणा । णिरयाउ० अ० गु० हीणा । साद० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउव्विय० अ० गु० हीणा । ओहिणाण० ओहिदंसण० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु०

उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

प्रथम पृथिवीमें सबसे तीव्र अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्त

अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

तिरिक्खगदीए सव्वतिव्वाणुभागं सादवेदणीयउदीरणा । अजसगित्ति-उच्चागोद० अ० गुणहीणा । कम्मइय० अ० गुणहीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ० गु० हीणा । मिच्छत्त० अ० गु० हीणा । केवलणाण० अ० गु० हीणा । केवलदंसण० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्हि अण्णदर० अ० गु० हीणा । संजलणचउक्कम्हि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्ण० अणंतगुणहीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । सुदआव० अ० गु० हीणा । ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ० गु० हीणा । थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा । णिद्दाणिद्दा अ० गु० हीणा । पयलापयला० अ० गु० हीणा । णिद्दा० अ० गु० हीणा । पयला० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । ओरालिय० अ० गु० हीणा । तिरिक्खाउ० अ० गु० हीणा । असाद० अ० गु० हीणा । णवुंसय० अ० गु० हीणा । इत्थिवेद० अ० गु० हीणा । पुरिस० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गुणहीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अणंतगुणहीणा । अजसगित्ति अ० गु०

गुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

तिर्यग्गतिमें सबसे तीव्र अनुभागवाली सातावेदनीय प्रकृति है । उससे अयशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । पुरुपवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अगन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्त-

हीणा। तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा०। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

मणुस्सेसु सव्वतिव्वाणुभागा सादावेदणीय०। उच्चागोद० जसकित्ति० अणंतगुणहीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। आहार० अ० गु० हीणा। वेउव्वि० अ० गु० हीणा। मिच्छत्त० अ० गु० हीणा। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणहीणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। पच्चक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा[1]। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुदणाणाव० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदं० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा। णिद्दाणिद्दा० अ० गु० हीणा। पचलापचला० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गुणहीणा। पचला० अ० गु० हीणा। रदि०

गुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

मनुष्योंमें सातावेदनीयकी उदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है। उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी

---

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा०' इति पाठः।

अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। मणुसगइ० अ० गु० हीणा। ओरालिय० अणंतगुणहीणा। मणुसाउ० अणंतगुणहीणा। असाद० अ० गु० हीणा। णवुंसयवे० अ० गु० हीणा। इत्थि० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। णीचागोद० अ० गु० हीणा। अजसकित्ति० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइअ० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

देवगदीए सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयं। उच्चागोद० जसगित्ति० अ० गु० हीणा। मिच्छत्त० अ० गु० हीणा। केवलणाण० अ० गु० हीणा। केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणहीणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा[1]। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुद० अ० गु० हीणा।

हीन है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

देवगतिमें सातावेदनीय सबसे तीव्र अनुभागवाली प्रकृति है। उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्यय-

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः।

हीणा। तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा०। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

मणुस्सेसु सव्वतिव्वाणुभागा सादावेदणीय०। उच्चागोद० जसकित्ति० अणंतगुणहीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। आहार० अ० गु० हीणा। वेउव्वि० अ० गु० हीणा। मिच्छत्त० अ० गु० हीणा। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणहीणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। पच्चक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा[1]। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुदणाणाव० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदं० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा। णिद्दाणिद्दा० अ० गु० हीणा। पचलापचला० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गुणहीणा। पचला० अ० गु० हीणा। रदि०

गुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

मनुष्योंमें सातावेदनीयकी उदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है। उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी

---

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा०' इति पाठः।

चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुद० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पयला० अणंतगुणहीणा। साद० अ० गु० हीणा। उच्चागोद० अ० गु० हीणा। जसगित्ति० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। देवाउ० अ० गु० हीणा। असाद० अ० गु० हीणा। इत्थि० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। अजस० अ० गु० हीणा। ओहिणाण० अ० गु० हीणा। ओहिदं० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अ० गु० हीणा।

एइंदिएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। संजलणचउक्क० अण्ण० अ० गु०

अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

एकेन्द्रिय जीवोंमें मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्याना-

हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्ण० अ० गु० हीणा । [1]अपच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्ण० अ० गु० हीणा । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । सुद० अ० गु० हीणा । ओहिणाण० अ० गु० हीणा । ओहिदंस० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ० गु० हीणा । थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा । णिद्दाणिद्दा० अ० गु० हीणा । पचलापचला० अ० गु० हीणा । णिद्दा० अ० गु० हीणा । पचला० अ० गु० हीणा । असाद० अ० गु० हीणा । णवुंसय० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अजसगित्ति० अ० गु० हीणा । तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा । साद० अ० गु० हीणा । जसगित्ति० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउ० अ० गु० हीणा । ओरालिय० अ० गु० हीणा । तिरिक्खाउ० अ० गु० हीणा[2] । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा ।

वरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजस शरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । इसी

---

१ अ-काताप्रतिष्वनुपलभ्यमानं वाक्यमिदं मप्रतितोऽत्र योजितम् । २ अप्रतावतोऽग्रे 'तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा' इत्यधिकः पाठोऽस्ति ।

वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। एवं विगलिंदिएसु वि। णवरि पसत्थकम्मंसाणमुवरि कायव्वं। एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं।

सव्वमंदाणुभागं लोहसंजलणं। मायसंजलणं अणंतगुणा। माणसंज० अणंतगुणा। कोधसंज० अणंतगुणा। वीरियंतराइय० अणंतगुणा। सम्मत्त० अणंतगुणा। चक्खुदंस० सुदणा० अणंतगुणा। मदि० अणंतगुणा। अचक्खु० अणंतगुणा। ओहिणाण० ओहिदंस० अणंतगुणा। परिभोगंतराइय० अणंतगुणा। भोगंतराइय० अणंतगुणा। लाहंतराइय० अणंतगुणा। दाणंतराइय० अणंतगुणा। पुरिसवे० अणंतगुणा। इत्थि० अ० गुणा। णवुंस० अ० गुणा। मणपज्जव० अ० गुणा। हस्स० अ० गुणा। रदि० अ० गुणा। दुगुंछा० अ० गुणा। भय० अ० गुणा। सोग० अ० गुणा। अरदि[१]० अ० गुणा। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा। पचला० अ० गुणा। णिद्दा० अ० गुणा। पचलापचला० अणंतगुणा। णिद्दाणिद्दा अ० गुणा। थीणगिद्धि० अ० गुणा। पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। अपच्च० चउक्क० अण्ण० अ० गुणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा। मिच्छत्त०

प्रकारसे विकलेन्द्रियोंमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रशस्त कर्मांशोंका अल्पबहुत्व ऊपर करना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

संज्वलनलोभ सबसे मंद अनुभागवाली प्रकृति है। उससे संज्वलनमायाके जघन्य अनुभागकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनमानकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनक्रोधकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। चक्षुदर्शनावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा

---

१ अ-काप्रत्योः 'रदि०' इति पाठः।

अ० गुणा। ओरालिय० अ० गुणा। वेउव्विय० अ० गुणा। तिरिक्खाउ० अ० गुणा। मणुसाउ० अ० गुणा। आहार० अ० गुणा। तेजइय० अ० गुणा। कम्मइय० अ० गुणा। तिरिक्खगइ० अ० गुणा। णिरयगइ० अ० गुणा। मणुसगइ० अ० गुणा। देवगइ० अ० गुणा। णीचागोद० अ० गुणा। अजस० अ० गुणा। असादावेदणीय० अ० गुणा। उच्चागोद० अ० गुणा। जसगित्ति० अ० गुणा। साद० अ० गुणा। णिरयाउ० अ० गुणा। देवाउ० अणंतगुणा।

णिरयगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं। चक्खुदं० अ० गुणा[1]। अचक्खु० अ० गुणा। हस्स० अ० गुणा। रदि० अ० गुणा। दुगुंछा० अ० गुणा। भय० अ० गुणा। सोग० अ० गुणा। अरदि० अ० गुणा। णवुंसय० अ० गुणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। वीरियंतराइय० अ० गुणा। परिभोगंतराइय० अ० गुणा। भोगंतराइय० अ० गुणा। लाहंतराइय० अ० गुणा। दाणंतराइय० अ० गुणा। ओहिणाण-ओहिदंसण० अ० गुणा। मणपज्जव० अ० गुणा। सुदावरण० अ० गुणा। मदिआव० अ० गुणा। अपच्चक्खाण० अण्णदर० अ० गुणा। पच्चक्खा० चउक्क०

अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

नरकगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है। उससे चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्य-

---

१ ताप्रतौ 'चक्खु० अण० अणंतगुणा' इति पाठः।

अण्ण० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा । पचला० अणंतगुणा । णिद्दा० अ० गुणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । मिच्छत्त० अ० गुणा । वेउव्वि० अ० गुणा । तेजइय० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । णिरयगइ० अ० गुणा । अजसगित्ति० अ० गुणा । णीचागोद० अ० गुणा । असाद० अ० गुणा । साद० अ० गुणा । णिरयाउ० अणंतगुणा[1] । एवं दोच्चाए वि । णवरि वीरियंतराइयस्स परिभोगंतराइयस्स मज्झे सम्मत्तं कायव्वं ।

तिरिक्खगदीए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणा । अचक्खु० अ० गुणा । ओहिणाण० ओहिदंसण० अ० गुणा । हस्स० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । सोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । पुरिस० अ० गुणा । इत्थि० अ० गुणा । णवुंसय० अ० गुणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा । परिभोगंतराइय० अ० गुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतराइय० अ० गुणा । दाणंतराइय० अ० गुणा ।

तरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। इसी प्रकार दूसरी पृथिवीमें भी जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व प्रकृतिको वीर्यान्तराय और परिभोगान्तरायके मध्यमें करना चाहिए।

तिर्यंचगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी

---

१ अ-काप्रत्योः 'णिरयाउ अण्णदर अणंतगुणा', ताप्रतौ 'णिरयाउ० अण्णदर अणंतगुणा' इति पाठः ।

मणपज्जव० अ० गुणा। सुद० अ० गुणा। मदिणाण० अ० गुणा। पच्चक्खाण-चउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। केवलणाण० केवलदंस० अ० गुणा। पंचला० अ० गुणा। णिद्दा० अ० गुणा। पचलापचला० अ० गुणा। णिद्दाणिद्दा० अ० गुणा। थीणगिद्धि० अ० गुणा। अपच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा। मिच्छत्त अ० गुणा। ओरालिय० अ० गुणा। वेउव्वि० अणंतगुणा। तिरिक्खाउ० अ० गुणा। तेज० अ० गुणा। कम्मइय० अ० गुणा। तिरिक्खगइ० अ० गुणा। णीचागोद० अजसगित्ति० अणंतगुणा। असाद० अ० गुणा। जसगित्ति० अ० गुणा। साद० अ० गुण। उच्चागोद० अणंतगुणा[1]।

मणुस्सेसु ओघं। णवरि तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-णिरआउ-णिरयगइ-देवाउ-देवगईणमुदीरणा णत्थि।

देवगदीए सव्वतिव्वाणुभागं सम्मत्तं। चक्खु० अ० गुणा। सुदावरण० अ० गुणा। मदिआवरण० अ० गुणा। अचक्खु० अ० गुणा०। ओहिणाण० ओहिदंस०

उदीरणा अनन्तगुणी है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नीचगोत्र व अयशकीर्तिकी उदीरणा अतन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

मनुष्योंमें जघन्य अनुभागउदीरणाके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि तिर्यगायु, तिर्यग्गति, नारकायु, नरकगति, देवायु और देवगतिकी उदीरणा उनमें सम्भव नहीं है।

देवगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है। उससे चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

---

१ ताप्रतौ 'उच्चागोद० अण्ण० अणंतगुणा' इति पाठः।

उदीरेदूण जदि एण्हिं बहुदराणि फद्दयाणि उदीरेदि तो एसा भुजगारउदीरणा। जदि अणंतरविदिक्कंते समए बहुदराणि फद्दयाणि उदीरेदूण एण्हिं थोवाणि उदीरेदि तो एसा अप्पदरउदीरणा। जदि तत्तियाणि तत्तियाणि चेव फद्दयाणि उदीरेदि तो एसा अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरएण उदीरिदे[1] एसा अवत्तव्वउदीरणा। एदेण अट्ठपदेण सामित्तं भुजगार० अप्पदर० अवट्ठिद० अवत्तव्व० उदीरणाणं वत्तव्वं।

एयजीवेण कालो वुच्चदे— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं च भुजगार-अप्पदरउदीरणाणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासादवेयणीय-सोलसकसाय-णवणोकसाय-मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-आउचउक्क-चत्तारिगदि-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-तिण्णिअंगोवंग-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-पाओग्गबंधण-संघाद-छसंठाण-संघडण-कक्खड-गरुअ-लहुअ-उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिदउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क०

स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करके यदि इस समय बहुतर स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह भुजाकार-उदीरणा है। यदि अनन्तर अतीत समयमें बहुतर स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करके इस समय स्तोक स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह अल्पतरउदीरणा है। यदि उतने उतने मात्र ही स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह अवस्थितउदीरणा है। यदि पूर्वमें उदीरणा नहीं की है और अब उदीरणा करता है तो यह अवक्तव्यउदीरणा है। इस अर्थपदके अनुसार यहां भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरणाओंके स्वामित्वका कथन करना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अवस्थितउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चार आयुकर्म, चार गतियां, पांच जातियां, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तीन आंगोपांग, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरके योग्य बन्धन एवं संघात, छह संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, लघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इन प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात समय मात्र है। तैजस व कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघात, वर्ण, गन्ध, रस,

१ ताप्रतौ 'अणुदीरणा उदीरेदि' इति पाठः।

सत्तसमया । तेजा-कम्मइयसरीर-तप्पाओग्गबंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदर-उदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चदुण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-कालो जो जिस्से पयडीए उदीरणकालो सो समऊणो[1] होदि । तित्थयरणामाए भुजगारउदीरणकालो जह० उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं । णत्थि[2] [अप्पदरउदीरणा ।] अवट्ठिदउदीरणाकालो जह० वासपुधत्तं, उक्क०[3] पुव्वकोडी देसूणा देसूणचुलसीदि-[4] पुव्वसदसहस्साणि वा ।

एयजीवेण अंतरं । तं जहा— णाणावरणीयस्स[5] भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदमंतरं जह० एयसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वासिं धुवोदयपयडीणं । णवरि कक्खड-गरुववज्जअसुहणामाणं[6] अप्पदर-उदीरणंतरं मउअ-लहुअवज्जसुहणामाणं भुजगारुदीरणंतरं च उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगसमओ, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तित्थयरस्स णत्थि अंतरं । जाणि कम्माणि

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और उच्चगोत्रकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। चार आनुपूर्वियोंकी भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंका काल, जो जिस प्रकृतिका उदीरणाकाल है उससे एक समय कम है। तीर्थंकर नामकर्मकी भुजाकार उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उसकी अल्पतर उदीरणा नहीं होती। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि अथवा कुछ कम चौरासी लाख वर्षपूर्व प्रमाण है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—ज्ञानावरणीयकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उसकी अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है। इसी प्रकारसे समस्त ध्रुवोदयी प्रकृतियोंकी उदीरणाके अन्तरका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि कर्कश व गुरुको छोड़कर शेष अशुभ नामप्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणाका अन्तर तथा मृदु व लघुको छोड़कर शेष शुभ नामप्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र काल तक होता है। मिथ्यात्व प्रकृतिकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता। जो कर्म उदयकी अपेक्षा परिवर्तमान हैं उनकी

---

१ अ-काप्रत्योः 'समऊणा' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'ण (अ) त्थि' इति पाठः। ३ ताप्रतौ [उक्क०] इति पाठः। ४ अप्रतौ 'देसूणा चूलसीदि', काप्रतौ देसूणचूलसीदि' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'णाणाजीवस्स' इति पाठः। ६ ताप्रतौ 'कक्खडगरुअं वज्ज असुहणामाणं' इति पाठः।

उदएण परियत्तमाणयाणि तेसिं भुजगार-अप्पदरउदीरणंतरं जहा पयडिउदीरणाए अंतरं परूविदं तहा परूवेयव्वं। एवमंतरं समत्तं।

णाणजीवेहि भंगविचओ। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जाओ णामपयडीओ धुवमुदीरिज्जंति तासिं च[1] भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-उदीरया णियमा अत्थि। मिच्छत्त-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-णवुंसयवेद-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। अवत्तव्व-उदीरया भजियव्वा— सिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्व-उदीरया च, धुवसहिया एत्थ तिण्णि भंगा। सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं आहारसरीरपाओग्गअंगोवंग[2]-बंधण-संघादाणं तिण्णमाणुपुव्वीणं च असीदिभंगा, धुवभंगाभावादो। ८०।

सम्मत्त-इत्थि-पुरिसवेद - तिण्णिआउ-तिण्णिगइ-जादिचउक्क-ओरालियसरीरअंगोवंग-वेउव्वियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदाव-पंचसंठाण-छसंघडण- पसत्थापसत्थविहाय-गइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरया णियमा अत्थि। अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरया भजियव्वा। तेणेत्थ णव भंगा होंति ९। पंचदंसणा-वरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - हस्स-रदि-अरदि - सोग-भय - दुगुंछा- तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ - ओरालियसरीर - तप्पाओग्गबंधण-संघाद - हुंडसंठाण - तिरिक्खाणुपुव्वी -

---

भुजाकार व अल्पतर अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृतिउदीरणाके अन्तरके समान करना चाहिये। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन करते हैं। यथा—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायके तथा जिन नामप्रकृतियोंकी ध्रुव उदीरणा होती है उनके भी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं। मिथ्यात्व, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, नपुंसकवेद, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं। अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं— कदाचित् उपर्युक्त ये तीन उदीरक बहुत व अवक्तव्य उदीरक एक होता है, कदाचित् ये तीन उदीरक बहुत और अवक्तव्य उदीरक भी बहुत होते हैं, इनमें ध्रुवभंगके मिला देनेसे यहां तीन भंग होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व, आहारक-शरीर, आहारकशरीरप्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात तथा तीन आनुपूर्वी; इनके अस्सी (८०) भंग होते हैं, कारण ध्रुव भंगका अभाव है।

सम्यक्त्व, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, तीन आयुकर्म, तीन गतियां, चार जातियां, औदारिकशरी-रांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिक बन्धन व संघात, आतप, पांच संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र; इनके भुजाकार व अल्पतर उदीरक नियमसे होते हैं। अवस्थित व अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं। इस कारण यहां नौ (९) भंग होते हैं। पांच दर्शनावरण, साता व असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, औदारिकशरीर, तत्प्रायोग्य

---

१ ताप्रतौ 'च' इत्येतत्पदं नास्ति। २ ताप्रतौ 'अंगोवंगाणं' इति पाठः।

उवघाद-परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर-साहारण-जसगित्ति-अजसगित्तीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरया णियमा अत्थि। णवरि पत्तेयसरीरस्स अवट्ठिदउदीरया भजियव्वा। तेणेत्थ तिण्णिभंगा।

णाणाजीवेहि कालो— जेसिं कम्माणं भंगविचए एक्को भंगो तेसिं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरयकालो सव्वद्धा। जेसिं तिण्णिभंगा तेसिमवत्तव्वउदीरयाण कालो[1] जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। सेसाणं सव्वद्धा। जेसिं णवभंगा तेसिं अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयकालो जह० एगसमओ, उक्क० आव० असंखे० भागो। असीदिभंगएसु सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदराणं जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयाणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। तिण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्व-उदीरयाणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। आहारचउक्क० भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिदावत्तव्वउदीरयाणं[2] जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो।

बन्धन व संघात, हुण्डकसंस्थान, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्ति; इनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक नियमसे होते हैं। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरके अवस्थित उदीरक भजनीय हैं। इसलिये यहां तीन भंग होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालका कथन किया जाता है—जिन कर्मोंका भंगविचयमें एक भंग होता है उनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल सर्वकाल होता है। जिन कर्मोंके तीन भंग होते हैं उनके अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीका असंख्यातवां भाग होता है। शेष कर्मोंका सर्वकाल होता है। जिन कर्मोंके नौ भंग होते हैं उनके अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। अस्सी भंगवाले कर्मोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरकों और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। तीन आनुपूर्वियोंके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। आहारकचतुष्कके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। आहारचतुष्कके अवस्थित व अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

---

१ ताप्रतौ '-उदीरणकालो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अवट्ठिदावत्तव्वा' इति पाठः।

णाणाजीवेहि अंतरं । तं जहा— जेसिं कम्माणमवट्ठिदउदीरया भजा तेसिमवट्ठिद-उदीरयंतरमसंखेज्जा लोगा । सम्मत्तस्स अवत्तव्वउदीरयंतरं बारस अहोरत्ता । चदुगदिं पडुच्च सत्त रादिंदियाणि । भुजगार-अप्पदरउदीरयंतरं णत्थि । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णमेगसमओ, उक्क० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे पलिदो० असंखे० भागो । तिण्णं वेदाणमवत्तव्वउदीरयंतरं अंतोमुहुत्तं । चत्तारिगदि-पंचजादि-वेउव्विय-सरीर-पंचसंठाण- ओरालिय- वेउव्वियअंगोवंग - छसंघडण-तिण्णिआणुपुव्वी- दोविहायगइ-तस-थावर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्चा-णीचागोदाणं अवत्तव्व० जह० एगसमओ, उक्क अंतोमुहुत्तं ।

अप्पाबहुअं । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा । भुजगारउदीरया विसेसाहिया । विसेसो सगसंखेज्जदि-भागो । सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं आभिणि-बोहियणाणावरणभंगो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसायाणं सव्वत्थोवा अवट्ठिदउदीरया । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेसाहिया । जेसिं णामकम्माणमवत्तव्वउदीरया असंखे० भागो

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—जिन कर्मोंके अवस्थित उदीरक भजनीय हैं उनके अवस्थित उदीरकोंका अन्तर असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर बारह अहोरात्र प्रमाण होता है। चार गतियोंकी अपेक्षा वह सात रात्रिंदिन प्रमाण होता है। उसके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः साधिक चौवीस अहोरात्र और पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। तीन वेदोंके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। चार गतियां, पांच जातियां, वैक्रियिकशरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, छह संहनन, तीन आनुपूर्वियां, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। उनसे उसके अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण अपना संख्यातवां भाग है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञाना-वरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवल-दर्शनावरण; इनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। पांच दर्शना-वरण, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय और आठ नोकषाय; इनके अवस्थित उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। जिन नामकर्मोंके अवक्तव्य उदीरक असंख्यातवें भाग मात्र

तेसिं णामकम्माणमवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसाहिया। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमवत्तव्व० थोवा। अवट्ठिय० अणंतगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसाहिया। अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-पंचंतराइयाणं अवट्ठिदउदीरया थोवा। जत्थ अवत्तव्वया अत्थि ते असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठि० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणे सत्थाणे भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला। मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंतजीवा थोवा। सम्मत्तादो गच्छंता असंखे० गुणा। जे सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते सम्मामिच्छत्तस्स भुजगारउदीरया होंति। कुदो? संकिलेसत्तादो। जे मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते सम्मामिच्छत्तस्स अप्पदरउदीरया होंति, विसुज्झमाणपरिणामादो। तेण अप्पदरउदीरएहिंतो भुजगार-उदीरयाणं विसेसाहियत्तं सिद्धं।

पदणिक्खेवे सामित्तं। तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया अणुभागउदीरणवड्ढी कस्स? जो संतकम्मेण उक्कस्सउदीरणापाओग्गेण तप्पाओग्गसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं

हैं उन नामकर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारउदीरक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यंच-गति, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक अनन्तगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारउदीरक विशेष अधिक हैं। अचक्षुदर्शनावरण, सम्यक्त्व और पांच अन्तरायके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। जहां अवक्तव्य उदीरक हैं वे असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानमें स्वस्थानमें भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य हैं। मिथ्यात्व-से सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव स्तोक हैं, परन्तु सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। जो जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरक होते हैं, क्योंकि, वे संक्लेश परिणामोंसे युक्त होते हैं। जो मिथ्यात्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके अल्पतरउदीरक होते हैं, क्योंकि, वे विशुध्यमान परिणामोंसे संयुक्त होते हैं। इसीलिये उसके अल्पतर उदीरकोंकी अपेक्षा भुजा-कारउदीरकोंका विशेष अधिक होना सिद्ध है।

पदनिक्षेपमें स्वामित्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है? जो उत्कृष्ट उदीरणाके योग्य सत्कर्मके साथ

---

१ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमेतत्।

गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो उक्कस्समुदीरणमुदीरेदूण मदो एइंदिओ जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तत्थेव उक्कस्समवट्ठाणं। सुद-मणपज्जव-णाणावरण-केवलणाण-केवलदंसणावरण- मिच्छत्त-सोलसकसायाणं[1] मदिआवरणभंगो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणमुक्कस्सियाए वड्ढीए मदिआवरणभंगो। णवरि ओहिलंभो णत्थि। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो विणा ओहिलंभेण उक्कस्समुदीरणमुदीरेदूण मदो णेरइयो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जो उक्कस्समुदीरण-मुदीरेंतो संतो सागारक्खएण पडिभग्गो[2] तप्पाओग्गजहण्णउदए पदिदो से काले तत्थेव अवट्ठिदो तस्स उक्कस्समवट्ठाणं।

चक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तीइंदियो[3] तप्पाओग्गविसुद्धो संतो संकिलेसं[4] गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो तेइंदियो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो संतो मदो एइंदियो जादो तस्स उक्कस्सिया[5] हाणी। तस्सेव उक्कस्समवट्ठाणं। अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो पुव्वहरो मिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो संतो मदो सुहुमेइंदिओ जहण्णखओवसमो जादो

तत्प्रायोग्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट उदीरणापूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। वहींपर उत्कृष्ट अवस्थान भी होता है। श्रुतज्ञाना-वरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व और सोलह कषायों-की प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञानकी प्राप्ति सम्भव नहीं है। उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-हानि किसके होती है ? जो जीव अवधिज्ञानकी प्राप्तिके विना उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ नारकी हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करता हुआ साकार उपयोगके क्षयसे प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पड़ता है व अनन्तर कालमें वहींपर अवस्थित होता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

चक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त होकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय होता है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो पूर्वधर मिथ्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य संक्लेश-को प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर जघन्य क्षयोपशमसे संयुक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय होता है उसके

---

१ प्रतिषु 'मिच्छत्तस्स सोलस' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'भंगो' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'तीइंदिय-' इति पाठः। ४ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'उक्कस्ससंकिलेसं' इति पाठः। ५ अप्रतौ 'तस्स उक्कस्स उक्कस्सिया' इति पाठः।

तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया हाणी कस्स? सुहुमेइंदियस्स जहण्णलद्धिस्स से काले तप्पाओग्गविसोहीए सव्वविसुद्धस्स उक्कस्सिया हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स? जो बादरेइंदिओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्गविसुद्धो जादो तत्थेव अवट्ठिदो तस्स उक्कस्सयमवट्ठाणं। दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो णिद्दावेदओ तप्पाओग्गविसुद्धो संतो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलिट्ठो जादो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो णिद्दावेदओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णए उदए पदिदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। एवं सेसाणं चदुण्णं पि वत्तव्वं।

सादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो देवो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णसादोदयादो उक्कस्सयं सादोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो देवो उक्कस्ससादवेदओ मदो मणुस्सो तप्पाओग्गजहण्णसादावेदओ जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तत्थेव उक्कस्समवट्ठाणं। असादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो णेरइओ तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णअसादोदयादो उक्कस्सयं असादोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? उक्कस्सअसादोदएण वट्ट-

---

उत्कृष्ट वृद्धि होती है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे सर्वविशुद्ध होनेवाले ऐसे जघन्य क्षयोपशम संयुक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? जो बादर एकेन्द्रिय जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ वहींपर अवस्थित रहता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो निद्राका वेदक जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर फिर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके निद्रा प्रकृतिकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि होती है। इसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो निद्राका वेदक जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पड़ता है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसके ही अनन्तर कालमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकारसे प्रचला आदि शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो देव तत्प्रायोग्य जघन्य साताके उदयसे उत्कृष्ट साताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? उत्कृष्ट सातावेदनीयका वेदक जो देव मृत्युको प्राप्त होकर तत्प्रायोग्य जघन्य साताका वेदक मनुष्य होता है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। वहींपर उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो नारकी जीव तत्प्रायोग्य जघन्य असाताके उदयसे उत्कृष्ट असाताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? उत्कृष्ट असाताके उदयमें वर्तमान जो जीव मरकर तत्प्रायोग्य असाताके

माणओ[1] मदो तप्पाओग्गजहण्णअसादोदए पदिदो तस्स[2] उक्कस्सिया हाणी। से काले उक्कस्समवट्ठाणं।

अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेदाणं असादभंगो। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो उक्कस्ससंकिलेसादो तप्पाओग्गजहण्ण-संकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। हस्स-रदीणं सादभंगो। णवरि सहस्सारओ त्ति वत्तव्वं। इत्थि-पुरिसवेदाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स होदि? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ[3] जादो तप्पाओग्गजहण्णवेदोएण उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण उक्कस्सयं वेदोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ जादो उक्कस्सवेदोदयादो सागार-क्खएण तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसं जहण्णवेदोदयं गदो च तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव उक्कस्सयमवट्ठाणं।

णिरयाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पा-ओग्गजहण्णसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया

जघन्य उदय में आया है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अनन्तर कालमें उसके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश-से उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो उत्कृष्ट संक्लेशसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसके ही अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। हास्य और रतिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि यहां तेतीस साग-रोपम स्थितिवाले देवके स्थानमें सहस्रार कल्पवासी देवका कथन करना चाहिये। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यंच आठ वर्षका होकर तत्प्रायोग्य जघन्य वेदोदयके साथ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर उत्कृष्ट वेदोदयको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यंच आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट वेदोदयसे साकार उपयोगके क्षयके साथ तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश और जघन्य वेदोदयको भी प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रा-योग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी

---

१ ताप्रतौ 'वड्ढमाणओ' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमस्स तस्स', ताप्रतौ 'पलिदोवमस्स (पदिदो) तस्स' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'वस्स' इति पाठः।

हाणी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णे संकिलेसे पदिदो तस्स[1] उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। मणुस-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तिण्णिपलिदोवमाउट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? तस्सेव उक्कस्सआउओदयादो जो सागारक्खएण पडिभग्गो[2] तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं।

णिरयगईए णिरयाउभंगो। मणुसगईए मणुसाउभंगो। देवगईए देवाउभंगो। तिरिक्खगईए इत्थिवेदभंगो। ओरालियसरीर-ओरालियअंगोवंग-बंधण-संघादाणं मणुसगइभंगो। आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो जो उक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी

उत्कृष्ट हानि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। मनुष्यायु और तिर्यगायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उक्त दो आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगका क्षय होनेसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो साकार उपयोगके क्षयपूर्वक आयुके उत्कृष्ट उदयसे प्रतिभग्न हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अनन्तर कालमें उसके ही उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

नरकगतिकी वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा नारकायुके समान है। मनुष्यगतिकी उक्त वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान, देवगतिकी देवायुके समान, और तिर्यंचगतिकी स्त्रीवेदके समान है। औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग तथा औदारिक बन्धन व संघातकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। आहारकशरीर, अहारकशरीरांगोपांग एवं आहारक बन्धन व संघातकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके

---

१ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमस्स तस्स', ताप्रतौ पलिदोवमस्स (पदिदो) तस्स' इति पाठः। २ अप्रतौ 'पडिभागो' इति पाठः।

कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण[1] जहण्णविसोहिं गदो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । वेउव्वियसरीरचउक्क-समचउरससंठाण-परघाद-पसत्थ-विहायगइ-पत्तेयसरीराणं आहारसरीरभंगो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-णिमिण-उच्चागोदाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? चरमसमयसजोगिस्स । उक्क० हाणी कस्स ? पढमसमयसकसायस्स । जेणेदाओ तिरिक्ख-मणुसाणं परिणामपच्चइयाओ तेण ण देवस्स, सुहुमसांपराइयस्सेव । उक्कस्सय-मवट्ठाणं कस्स ? जो अप्पमत्तसंजदो सव्वविसुद्धो सागारक्खएण[2] अवट्ठाणं गदो तस्स । चदुसंठाण-पंचसंघडणाणं तिरिक्खगदिभंगो । वज्जरिसहस्स मणुस्सो तिपलिदोवमिओ । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्हुक्खाणं मिच्छत्तभंगो । मउअ-लहुअ-उज्जोवाणमाहार-सरीरभंगो । कक्खड-गरुआणमित्थिवेदभंगो । अथिर-असुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजस-कित्तीणं मिच्छत्तभंगो । पंचिंदियजादि-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-सुस्सराणं देवगइभंगो ।

उन चारों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । वैक्रियिकशरीरादि चार, समचतुरस्रसंस्थान, परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीर; इनकी वृद्धि व हानिकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है ।

तैजसशरीर, कार्मणशरीर, तैजसशरीर वन्धन व संघात, कार्मणशरीर वन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति,सुभग, आदेय, निर्माण और उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । इनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट हानि प्रथम समयवर्ती सकषाय प्राणीके होती है । चूंकि ये तिर्यंचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती हैं, इसीलिये वे देवके सम्भव न होकर सूक्ष्मसाम्परायिक मनुष्यके ही सम्भव हैं । इनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अप्रमत्तसंयत साकार उपयोगके क्षयसे अवस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । चार संस्थानों व पांच संहननोंकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है । वज्रर्षभनाराचसंहननकी उत्कृष्ट वृद्धि तीन पल्योपम प्रमाण आयुवालेके होती है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत व रूक्ष स्पर्शोंको प्ररूपणा मिथ्यात्व प्रकृतिके समान है । मृदु, लघु और उद्योतकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है । कर्कश और गुरु स्पर्शोंकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है । अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । पंचेन्द्रिय जाति, उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याप्त और सुस्वरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

---

१ अप्रतौ 'सागरक्खएण' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'संकिलिट्ठ' इति पाठः ।

थावरणामाए उक्क० वड्ढी कस्स ? जो बादरो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । सो चेव मदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसे पदिदो तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्सयमवट्ठाणं । एइंदिय-विगलिंदिय-सुहुम-साहारणणामाणं थावरभंगो । णवरि वेदओ कायव्वो । साहारणणामाए बादर-साहारणकाइओ कायव्वो । अपज्जत्तणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? मणुस्सस्स अपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उप्पज्जिय चरिमसमयतब्भवत्थस्स । सो चेव मदो सुहुमेइंदियअपज्जत्तएसु उववण्णो तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । अप्पसत्थविहायगदि-दुस्सर-णीचागोदाणं णिरयगइभंगो ।

पंचण्णमंतराइयाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो सण्णिपंचिंदिओ तप्पाओग्गुक्कस्सियाए लद्धीए संजुत्तो मदो सुहुमेइंदिएसु जहण्णलद्धिसंजुत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । तस्सेव उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसे पदिदस्स तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । आदावणामाए उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं थावरभंगो । णवरि बादरपुढविकाइएसु विसोहीए वत्तव्वं । तित्थयरणामाए उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । एवं [उक्कस्स] सामित्तं समत्तं ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो बादर जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। वही मरकर जब तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है। विशेष इतना है कि विवक्षित प्रकृतिका वेदक कहना चाहिये। साधारण नामकर्मकी प्ररूपणामें बादर साधारणकायिक कहना चाहिये। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह मनुष्य अपर्याप्तके होती है जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर चरम समयवर्ती तद्भवस्थ होता है। वही मरकर जब सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है।

पांच अन्तराय कर्मोंकी उत्कष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट क्षयोपशमसे संयुक्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य क्षयोपशमसे संयुक्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त वही जब साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है। विशेष इतना है कि बादर पृथिवीकायिकोंमें विशुद्धिके द्वारा स्वामित्व कहना चाहिये। तीर्थंकर नाककर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

मदिआवरणस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो चोद्दसपुव्वहरो उदएण अणंतभागवड्ढीए वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी । तेणेव जहण्णवड्ढिमेत्तं चेव हाइदूण उदीरिदे तस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुदावरणस्स मदिआवरणभंगो । चक्खु-अचक्खुदंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चेव, चोद्दसपुव्वहरम्हि चक्खु-अचक्खुदंसणावरणाणमुक्कस्सखओवसमदंसणादो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? परमोहिणाणिस्स जहण्णवड्ढीए वड्ढियस्स वड्ढी, तेणेव हाइदस्स हाणी, एगदरत्थमवट्ठाणं । मणपज्जवणाणावरणस्स जहण्ण-वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? विउलमइस्स । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जह० हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । जह० वड्ढी कस्स ? पढमसमयसकसायस्स संजदस्स । अवट्ठाणं कस्स ? उवसंतकसायस्स । णिद्दा-पयलाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? तप्पाओग्गविसुद्धस्स अप्पमत्तसंजदस्स उदएण सव्वजहण्णाणंतभागवड्ढीए[1] वड्ढिदस्स जहण्णिया वड्ढी । तं चेव हाइदूण उदीरिदे जहण्णिया हाणी । एगदरत्थमवट्ठाणं[2] । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं णिद्दाभंगो। णवरि पमत्तसंजदो

मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो चौदह पूर्वोंका धारक उदयकी अपेक्षा अनन्तभाग वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त है उसके मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि होती है । वही जब जघन्य वृद्धि मात्र ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करता है तब उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे एकतरमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी प्ररूपणा भी मतिज्ञानावरणके ही समान है, क्योंकि, चौदह पूर्वोंके धारक प्राणीके चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणका उत्कृष्ट क्षयोपशम देखा जाता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुए परमावधिज्ञानीके उनकी वृद्धि, जघन्य हानिसे हानिको प्राप्त हुए उसके ही उनकी हानि, तथा दोनोंमेंसे किसी एकमें अवस्थान होता है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? वे विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानीके होते हैं । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य हानि किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके इन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती सकषाय संयतके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? उपशान्तकषायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो उदयकी अपेक्षा सर्वजघन्य अनन्तभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त अप्रमत्तसंयतके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उतनी ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करनेपर उसके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वजहण्णाणंतब्भागवड्ढीए', ताप्रतौ 'सव्वजहण्णाणं तब्भागवड्ढीए' इति पाठः
२ ताप्रतौ 'एगदरत्थमवट्ठाणं-' इति पाठः ।

सामी । सादासादाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अण्णदरस्स ।

मिच्छत्तस्स जहण्णिया हाणी कस्स ? चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापवत्तमिच्छाइट्ठिस्स[1] तप्पाओग्गविसुद्धस्स उदयादो अणंतभाएण वड्ढियस्स जह० वड्ढी । तस्सेव से काले जहण्णमवट्ठाणं । अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । सम्मत्तस्स जहण्णिया हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइट्ठिस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स उदयादो अणंतभागेण वड्ढियस्स तस्स जहण्णिया वड्ढी अवट्ठाणं च । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो अधापमत्तसम्मामिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो अणंतभाएण उदयादो वड्ढिदो तस्स जहण्णिया वड्ढी । तस्सेव से काले जहण्णमवट्ठाणं । सम्मामिच्छत्तस्स जह० [हाणी] कस्स ? से काले सम्मत्तं[2] पडिवज्जंतस्स ।

अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स[3] ? सम्माइट्ठिस्स असंजदस्स से

और स्त्यानगृद्धिकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है। विशेष इतना है कि उनका स्वामी प्रमत्तसंयत होता है। साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होते हैं ? वे किसीके भी होते हैं।

मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी जघन्य हानि होती है। उसकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? तत्प्रायोग्य विशुद्ध व उदयकी अपेक्षा अनन्तभागवृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त ऐसे अधःप्रवृत्त मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है। अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। सम्यक्त्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जिसके दर्शनमोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य हानि होती है। उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धसे संयुक्त है व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिंगत है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें जो सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाला है उसके उसकी जघन्य हानि होती है।

अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अविरत सम्यग्दृष्टि

१ ताप्रतौ 'अधापम (व) त्तमिच्छाइट्ठिस्स' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'सम्मत्ते' इति पाठः। ३ अतोऽग्रे अ-काप्रत्योः 'पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स' इत्येतावत्पर्यन्तः पाठस्त्रुटितोऽस्ति ।

काले संजमं पडिवज्जंतस्स। वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तअसंजदसम्माइट्ठिस्स। पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? संजदासंजदस्स से काले संजमं पडिवज्जंतस्स। वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसंजदासंजदस्स। चदुण्णं संजलणाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? कोह-माण-मायाणं खवओ चरिमसमयवेदओ सामी। लोभस्स पुण समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स खवयस्स जहण्णिया हाणी। लोभस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयसुहुमसांपराइयस्स। मायाए जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयमायावेदयस्स। माणस्स जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयमाणवेदयस्स। कोधस्स जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयकोधवेदयस्स[2]। चदुण्णं पि संजलणाणं जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स अणंतभाएण वड्ढिदूण हाइदूण वा अवट्ठियस्स।

तिण्णं पि वेदाणं जह० हाणी कस्स ? खवयस्स समयाहियावलियचरिमसमय-वेदयस्स अप्पिदवेदोदयजुत्तस्स जह० हाणी। जह० वड्ढी कस्स ? अप्पिदवेदोदएण

अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है उसके उनकी जघन्य हानि होती है। उनकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होता है ? अधःप्रवृत्त असंयत सम्यग्दृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है। प्रत्याख्यानावरण कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करनेवाले संयतासंयत जीवके उनकी जघन्य हानि होती है। उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? वे अधःप्रवृत्त संयतासंयतके होते हैं। चार संज्वलन कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उसका स्वामी संज्वलन क्रोध, मान और मायाके क्षपणमें उद्यत उनका अन्तिम समयवर्ती वेदक जीव होता है। परन्तु संज्वलन लोभकी जघन्य हानि, जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है, उसके होती है। संज्वलन लोभकी जघन्य वृद्धि किसके होती है? उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। संज्वलन मायाकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मायावेदकके होती है। संज्वलन मान-की जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मानवेदकके होती है। संज्वलन क्रोधकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती क्रोधवेदकके होती है। चारों ही संज्वलन कषायोंका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अनन्तवें भागसे वृद्धि अथवा हानिको प्राप्त होकर अवस्थित हुए तत्प्रायोग्य विशुद्ध अधःप्रवृत्तसंयतके होता है।

तीनों ही वेदोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? विवक्षित वेदके उदयसे संयुक्त क्षपकके उसके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर उनकी जघन्य हानि होती है। उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है। विवक्षित वेदके उदयके साथ श्रेणिसे

---

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वट्ठअवट्ठाणाणि' इति पाठः। २ अप्रतौ 'कोधवेदएण' इति पाठः।

परिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । तिण्णं वेदाणं जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स । छण्णोकसायाणं जह० हाणी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवयस्स । वड्ढी ओदरमाणविदियसमयअपुव्वस्स । अवट्ठाणं सत्थाणसंजदस्स ।

चदुण्णमाउआणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अप्पप्पणो जहण्णियाए णिव्वत्तीए उववण्णाणं जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च ।

णिरयगइणामाए जह० वड्ढी कस्स ? अण्णदरस्स अण्णदरिस्से पुढवीए जहण्णवड्ढीए वड्ढिदयस्स । हाइदस्स हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचजादीणं च णिरयगइभंगो । ओरालियसरीरणामाए जहण्णिया वड्ढी कस्स ? सुहुमेइंदियस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स दुसमयआहारयस्स दुसमयतब्भवत्थस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी वा कस्स ? तस्स चेव खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण मदस्स सुहुमेसुववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स जह० हाणी[2] । जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? जहण्णियाए वड्ढीए हाणीए वा वड्ढिदूण हाइदूण अवट्ठियस्स सुहुमेइंदियस्स पज्जत्तस्स । ओरालियसरीरबंधण-ओरालियसरीरसंघाद-हुंडसंठाण-उवघादाणं ओरालियसरीरभंगो ।

गिरते हुए उनके द्वितीय समयवर्ती वेदकके उनकी जघन्य हानि होती है । तीन वेदोंका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अधःप्रवृत्त संयतके होता है । छह नोकषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उनकी जघन्य हानि अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है । और उनकी जघन्य वृद्धि श्रेणिसे उतरते हुए द्वितीय समयवर्ती अपूर्वकरणके होती है । उनका जघन्य अवस्थान स्वस्थान संयतके होता है ।

चार आयु कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? अपनी अपनी जघन्य निर्वृत्तिसे उत्पन्न जीवोंके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होते हैं ।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें जघन्य वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त अन्यतर नारक जीवके होती है । उसीके हानिको प्राप्त होनेपर उसकी जघन्य हानि और दोनोंमेंसे किसी एकमें जघन्य अवस्थान होता है । तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति और पांच जाति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर द्वितीय समयवर्ती आहारक और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है? क्षुद्रभवग्रहण मात्र जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए उपर्युक्त जीवके ही प्रथम समयवर्ती आहारक होनेपर उसकी जघन्य हानि होती है । उसका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त होकर अथवा जघन्य हानि द्वारा हानिको प्राप्त होकर अवस्थानको प्राप्त हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके उसका जघन्य अवस्थान होता है । औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीरसंघात, हुण्डकसंस्थान और उपघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । औदारिकशरीरांगोपांग और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी जघन्य

---

१ ताप्रतौ 'अण्णदरस्स' इत्येतत्पदं नास्ति । २ अ-काप्रत्योः 'हाणीए' इति पाठः ।

ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसरीरससंघडणाणं[1] जह० वड्ढी कस्स ? दुसमय-बेइंदियस्स। णवरि संघडणस्स बारसवासाउदुसमयबेइंदियो[2] सामी। ओरालियसरीर-अंगोवंगस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो दुसमयवेइंदियो सामी। जहण्णिया हाणी कस्स ? जो एसु चेव खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण मदो एदासु[3] चेव ट्ठिदीसु उववण्णो पढमसमयआहारओ पढमसमयतब्भवत्थो तस्स जह० हाणी। जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? बेइंदियस्स बहुसमयपज्जत्तयस्स। वेउव्वियसरीरस्स जह० वड्ढी कस्स ? बादरवाउ-जीवस्स बहुसमयउत्तरविउव्वियस्स। हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? तस्स चेव बादरवाउ-जीवस्स वेउव्वियसरीरेण दुसमयपज्जत्तयस्स। वेउव्वियसरीरबंधण-संघादाणं वेउव्विय-सरीरभंगो। आहारचउक्कस्स वेउव्वियचउक्कभंगो। पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं जहण्णिया वड्ढी[4] कस्स ? जा जस्स जहण्णिया अणुभागउदीरणा तत्तो से काले सव्वजहण्णियाए वड्ढीए वड्ढिदस्स जह० वड्ढी। तेणेव हाइदस्स जहण्णिया हाणी। एगदरत्थ अवट्ठाणं।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अण्णदरस्स विग्गह-गदीए वट्टमाणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कुणंतस्स। तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थ-

वृद्धि किसके होती है ? वह द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय जीवके होती है। विशेष इतना है कि उक्त संहननकी जघन्य वृद्धिका स्वामी बारह वर्ष प्रमाण आयु वाला द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है। औदारिकशरीरांगोपांगकी जघन्य वृद्धिका स्वामी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है। उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो इनमें ही क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो इन्हीं स्थितियोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके उसकी जघन्य हानि होती है। उसका जघन्य अव-स्थान किसके होता है ? बहुसमयवर्ती पर्याप्त द्वीन्द्रियके उसका जघन्य अवस्थान होता है। वैक्रि-यिकशरीरकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह बहुत समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले बादर वायुकायिक जीवके होती है। उसकी जघन्य हानि व अवस्थान किसके होता है ? वे वैक्रियिकशरीरके द्वारा द्वितीय समयवर्ती पर्याप्त हुए उसी बादर वायुकायिक जीवके होते हैं। वैक्रि-यिकशरीरबन्धन और संघातकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। आहारकचतुष्ककी प्ररूपणा वैक्रियिकचतुष्कके समान है। पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जिसकी जघन्य अनुभागउदीरणा है उसके अनन्तर कालमें सर्वजघन्य वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत जीवके उनकी जघन्य वृद्धि होती है। उसीसे हानिको प्राप्त हुए जीवके उनकी जघन्य हानि होती है। दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है।

चार आनुपूर्वियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विग्रहगतिमें वर्तमान होकर जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानको करनेवाले अन्यतरके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होता है। तैजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, व रस, स्निग्ध, उष्ण,

१ अ-काप्रत्योः '-सरीरसससंघडणाणं', ताप्रतौ '[सरीरस्स] संघडणाणं' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'वेइंदियाणि', ताप्रतौ 'वेइंदियाणि (वेइंदियो)' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'एदोसु', का-ताप्रत्योः 'एदेसु' इति पाठः। ४ अप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम्।

वण्ण-गंध-रस-णिद्ध-उण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्हुक्ख-अथिर-असुहणामाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । जहण्णिया वड्ढी कस्स ? पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स परिवदमाणयस्स । अवट्ठाणं कस्स ? दुसमयउवसंतकसायस्स । कक्खड-गरुआणं जह० हाणी कस्स ? णियत्तमाणमंथे[१] वट्टमाणयस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? सण्णिस्स दुसमयतब्भवत्थस्स । एवं मउअ-लहुआणं । णवरि हाणी सण्णिस्स आहारयस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स ।

उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-थावर - बादर-सुहुम -पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्च-णीचागोदाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा कस्स ? अण्णदरस्स अप्पिदपयडिवेदयस्स । आदाव-उज्जोवाणं विहायगइभंगो । तित्थयरस्स जहण्णवड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? सजोगिकेवलिस्स । पंचण्णमंतराइयाणं केवलणाणावरणभंगो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स सव्वत्थोवा उक्कस्सिया वड्ढी ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती हैं । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह श्रेणिसे गिरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकषायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । कर्कश और गुरुकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह निवर्तमान अवस्थामें मन्थ (प्रतर) समुद्घातमें वर्तमान केवलीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होती है ? द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ संज्ञी जीवके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । इसी प्रकारसे मृदु और लघु स्पर्श नामकर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनकी हानि तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संज्ञी आहारकके होती है ।

उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विवक्षित प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि होती हैं । आतप और उद्योतकी प्ररूपणा विहायोगतिके समान है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होता है ? वे सयोगकेवली होते हैं । पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा केवलज्ञानावरणके समान है ।

अब यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाकी जाती है । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'मज्झे' इति पाठः ।

हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण - चक्खुदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला - थीणगिद्धि-णिद्दा - पयला-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसायाणं णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-णिरयगइ[1]-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर - ओरालिय - वेउव्विय-आहार-सरीरअंगोवंग-तिण्णबंधण-संघाद- छसंठाण-छसंघडण - चत्तारिआणुपुव्वी - उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थावसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय[2]-साहारणसरीर - अथिर-असुह-अजसगित्ति- दुभग-सुस्सर - दुस्सर[3] - अणादेज्ज-णीचा-गोदाणं उक्कस्सपदणिक्खेवप्पाबहुअस्स मदिआवरणभंगो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणा-वरणाणं उक्क० वड्ढी थोवा । अवट्ठाणं विसेसाहियं । हाणी विसेसाहिया । अचक्खुदंसणावर-णस्स सव्वत्थोवमुक्कस्समवट्ठाणं[4] । हाणी अणंतगुणा । वड्ढी अणंतगुणा । पंचण्णमंतरा-इयाणं अचक्खुदंसणावरणभंगो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सहाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसगित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कस्सिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमणंतगुणं । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-

उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उसकी हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, नरकगति, तिर्यंगति, मनुष्यगति, देवगति, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग; तीन बन्धन और संघात, छह संस्थान, छह संहनन, चार आनुपूर्वियां, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनके उत्कृष्ट-पद-निक्षेपविषयक अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । अवस्थान उससे विशेष अधिक है । हानि विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनारायणका उत्कृष्ट अवस्थान सबसे स्तोक है । हानि अनन्तगुणी है । वृद्धि अनन्तगुणी है । पांच अन्तरायोंकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्तगुणी है । तैजस व कर्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । उनका उत्कृष्ट अवस्थान अनन्तगुणा है । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्तगुणी है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, कर्कश, गुरु, मृदु और लघु; इनके उक्त

१ अप्रतौ 'देवाउ वि णिरयगइ' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'पज्जत्तापत्तेय' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'दुस्सर-सुस्सर-' इति पाठः । ४ अप्रतौ '-मुवट्ठाणं' इति पाठः ।

ल्हुक्ख-कक्खड-गरुअ-मउअ-लहुआणं च मदिणाणावरणभंगो। अपज्जत्तणामाए उक्क० वड्ढी थोवा। हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि।

जहण्णपदणिक्खेवे अप्पाबहुअं। तं जहा— आभिणि-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणावरणीय-चक्खु अचक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणं जह० वड्ढी जह० हाणी जहण्णमवट्ठाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि, तेणेत्थ अप्पाबहुअं णत्थि। केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जहण्णिया हाणी थोवा। अवट्ठाणमणंतगुणं। वड्ढी अणंतगुणा। पंचदंसणावरण-सादासादाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तुल्लाणि, तेणेत्थ अप्पाबहुअं णत्थि। मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-कक्खड-मउअ-लहुआणं जहण्णिया हाणी थोवा। वड्ढि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। बारसकसायाणं मिच्छत्तभंगो। चदुसंजलण-तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जह० हाणी थोवा। वड्ढी अणंतगुणा। अवट्ठाणमणंतगुणं। चदुण्णमाउआणं चदुण्णं गदीणं पंचण्णं जादीणं सादभंगो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा। हाणी अणंतगुणा। अवट्ठाणमणंतगुणं। वेउव्वियआहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा। हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। छसंठाण-छसंघडण-उवघाद-पत्तेय-साहारणसरीराणं ओरालियसरीरभंगो। पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-आणुपुव्वीचउक्क-अगुरुअलहुअ-उस्सास-

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। उसकी हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं।

जघन्य-पद-निक्षेपके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसीलिये उनमें अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य हानि स्तोक है। उनका जघन्य अवस्थान उससे अनन्तगुणा है। वृद्धि अनन्तगुणी है। पांच दर्शनावरण तथा साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसलिये इनमें अल्पबहुत्व नहीं है। मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, कर्कश, मृदु और लघु; इन प्रकृतियोंकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। बारह कषायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। चार संज्वलन, तीन वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि अनन्तगुणी है। अवस्थान अनन्तगुणा है। चार आयु कर्मों, चार गतियों और पांच जातियोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन व औदारिकसंघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है। हानि अनन्तगुणी है। अवस्थान अनन्तगुणा है। वैक्रियिक व आहारक शरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग तथा उनके बन्धन और संघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, चार आनुपूर्वी नामकर्म, अगुरु-

पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-थिर-सुभ-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुहणामाणं जहण्णिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमणंतगुणं । वड्ढी अणंतगुणा । पंचण्णमंतराइयाणं जह० वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि सरिसाणि । एवं पदणिक्खेवो समत्तो ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा । तं जहा— मदिआवरणस्स अत्थि अणंतभागउदीरणा असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणा असंखेज्ज-गुणवड्ढिउदीरणा अणंतगुणवड्ढिउदीरणा अणंतभागहाणिउदीरणा असंखेज्जभागहाणि-उदीरणा संखेज्जभागहाणिउदीरणा संखेज्जगुणहाणिउदीरणा असंखेज्जगुणहाणिउदीरणा अणंतगुणहाणिउदीरणा अवट्ठिदउदीरणा चेदि । एवं सव्वेसिं कम्माणं तेरस पदाणि होंति । अवत्तव्वउदीरणाए सह केसिं चि[1] चोद्दस पदाणि । एवं समुक्कित्तणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुए त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा अणुभागवड्ढिबंधे परूविदाणि तहा एत्थ परूवेयव्वाणि । पुणो अणुभागउदीरणट्ठाणपरूवणा जीवसमुदाहारो च परूवेयव्वो । एवमणुभागउदीरणा समत्ता ।

लघु, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, स्थिर, शुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच और ऊंच गोत्र; इनकी जघन्य हानि, वृद्धि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं। अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर और अशुभ नामकर्मोंकी जघन्य हानि स्तोक है। अवस्थान अनन्त-गुणा है। वृद्धि अनन्तगुणी है। पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान सदृश हैं। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

यहां वृद्धि-उदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी अनन्तभाग-वृद्धिउदीरणा, असंख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातगुणवृद्धिउदीरणा, असंख्यातगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तभागहानिउदीरणा, असंख्यातभाग-हानिउदीरणा, संख्यातभागहानिउदीरणा, संख्यातगुणहानिउदीरणा, असंख्यातगुणहानिउदीरणा अनन्तगुणहानिउदीरणा और अवस्थितउदीरणा भी होती है। इस प्रकार सब कर्मोंके ये तेरह पद होते हैं। किन्हीं कर्मोंके अवक्तव्यउदीरणाके साथ चौदह पद भी होते हैं। इस प्रकार समुत्कीर्तना समाप्त हुई।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा जिस प्रकार अनुभागवृद्धिबन्धमें की गयी है उसी प्रकारसे यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये। तत्पश्चात् अनुभागउदीरणास्थानप्ररूपणा और जीव-समुदाहारकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउदीरणा समाप्त हुई।

---

१ अप्रतौ 'केसिं पि' इति पाठः।

एत्तो पदेसउदीरणा दुविहा मूलपयडिपदेसउदीरणा उत्तरपयडिपदेसउदीरणा चेदि। मूलपयडिपदेसउदीरणं चउवीसअणियोगद्दारेहि मग्गिदूण भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिपदेसउदीरणा समत्ता होदि।

उत्तरपयडिपदेसउदीरणाए सामित्तं। तं जहा—मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसउदीरणा कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। सुदावरण-केवलणाण-केवलदंसण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-मणपज्जवणाणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो। एवमोहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि उक्कस्सपदेसउदीरणा वत्तव्वा। णवरि विणा ओहिलंभेण, पमत्तापमत्तद्धासु ओहिणाणसहेज्जुक्कस्सविसोहीहि ओकड्डिय सुहुमीकयउदयगोवुच्छत्तादो। णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया पदेसउदीरणा कस्स ? उवसंतवीयरागस्स। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासादाणं उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? पमत्तसंजदस्स से काले अप्पमत्तगुणं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स।

मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं उक्क० उदीरणा कस्स ? चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठिदस्स। सम्मत्तस्स उक्क० उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियकदकरणिज्जस्स। सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिम-

---

यहां प्रदेशउदीरणा दो प्रकारकी है— मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणा। इनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाको चौवीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा खोजकर भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर चुकनेपर मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा समाप्त हो जाती है।

उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणामें स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है। श्रुतज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और मनःपर्ययज्ञानावरण सम्बन्धी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि उसका कथन अवधिलब्धिके विना करना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त व अप्रमत्त कालोंमें अवधिज्ञानसे सहकृत उत्कृष्ट विशुद्धियोंके द्वारा अपकर्षण करके उदयगोपुच्छाओंको सूक्ष्म किया गया है। निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? वह उपशान्तकषाय वीतरागके होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय व असातावेदनीयकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो प्रमत्तसंयत अनन्तर कालमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होगा, इस अवस्थामें स्थित है; उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है।

मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त होगा, इस स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जिसके कृतकरणीय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी

समयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि ति ट्ठियस्स।

अपच्चक्खाणचउक्कस्स उक्क० उदी० कस्स? चरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स। पच्चक्खाणचदुक्कस्स उक्क० उदी० कस्स? चरिमसमयसंजदासंजदस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स। संजलणकोहस्स उक्कस्सपदेसउदीरणाए को सामी? खवओ चरिमसमयकोधवेदओ। माणस्स० चरिमसमयमाणवेदओ। मायाए० खवओ चरिमसमयमायावेदओ। लोभस्स० खवओ समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ। तिण्णं वेदाणं पदेसउदीरणाए उक्कस्सियाए को सामी? खवओ अप्पप्पणो वेदस्स समयाहियावलियचरिमसमयवेदगो। छण्णं णोकसायवेदणीयाणमुक्कस्सउदीरणाए[1] को सामी? खवओ सव्वविसुद्धो चरिमसमयअपुव्वकरणो।

णिरयाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि? जो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीओ णेरइओ उक्कस्सए असादोदए वट्टमाणओ। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सपदेसउदीरओ

उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थिति युक्त अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उसकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टिके उक्त उदीरणा होती है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके उक्त उदीरणा होती है। संज्वलनक्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है? उसका स्वामी अन्तिम समयवर्ती क्रोधका वेदक क्षपक होता है। संज्वलनमानकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मानका वेदक क्षपक होता है। संज्वलनमायाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मायाका वेदक क्षपक होता है। संज्वलनलोभकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अन्तिम समयवर्ती सकषाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है। तीन वेदोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है? उसका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अपने अपने वेदके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है। छह नोकषाय वेदनीयोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है? उसका स्वामी सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपक होता है।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुस्थितिवाला जो नारकी जीव उत्कृष्ट असातोदयमें वतमान है वह उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है? आठ वर्ष प्रमाण आयुवाला

---

१ अ-काप्रत्योः '-उदीरगा' इति पाठः।

को होदि ? जो अवट्ठवस्सिओ अवट्ठवस्सओ[1] जादो उक्कस्सए असादोदए[2] वट्टमाणओ। देवाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जो दसवस्ससहस्साउओ उक्कस्सए[3] असादोदए वट्टमाणो।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसस्स उदीरगो को होदि ? णेरइओ सम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? संजदासंजदो सव्वविसुद्धो। देवगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? देवसम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर- तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास- अगुरुअलहुअ- उवघाद-परघाद -पसत्थापसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? चरिमसमयसजोगिकेवली। वेउव्विय-आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग - बंधण-संघादाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ[4] को होदि ? संजदो सव्वविसुद्धो।

पंचण्णं संघडणाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि। संजदो तप्पाओग्गविसुद्धो। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? तप्पाओग्गविसुद्धो सम्माइट्ठी।

जो जीव आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है। देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवाला जो देव उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है।

नरकगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध नारक सम्यग्दृष्टि होता है। तिर्यग्गति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध संयतासंयत [तिर्यंच] होता है। देवगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध देव सम्यग्दृष्टि होता है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक चरम समयवर्ती सयोगकेवली होता है। वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके योग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक सर्वविशुद्ध संयत जीव होता है।

पांच संहननोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संयत होता है। चार आनुपूर्वियोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य

---

१ प्रतिषु 'अट्ठवस्स' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'असादोदएग', ताप्रतौ 'असादोदए [ण]' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्स' इति पाठः। ४ अप्रतौ 'उदीरगा' इति पाठः।

आदावणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? पुढवीजीवो सव्वविसुद्धो । उज्जोवणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? वेउव्वियउत्तरसरीरो संजदो सव्वविसुद्धो । उस्सासणामाए[1] उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारओ[2] सजोगी । अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? सव्वविसुद्धो असंजदसम्माइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति । बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जहाकमेण बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियसव्वविसुद्धो । एइंदिय-थावर-साहारणसरीराणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? बादरेइंदियसव्वविसुद्धो । सुहुमणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदियसव्वविसुद्धो[3] । अपज्जत्तणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? मणुस्सो उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो चरिमसमयतब्भवत्थो सव्वविसुद्धो ।

पंचण्णमंतराइयाणमुक्कस्सपदेस० को होदि ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थो । सुस्सर-दुस्सरणामाणं उक्कस्सपदेस०को होदि ? वचिजोगस्स चरिमसमयणिरोह-

विशुद्धिको प्राप्त सम्यग्दृष्टि होता है । आतप नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध पृथिवीकायिक जीव होता है । उद्योत नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है ऐसा सर्वविशुद्ध संयत जीव उद्योतके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है । उच्छ्वास नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उच्छ्वासनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उसके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक होते हैं । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध असंयत सम्यग्दृष्टि होता है जो कि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक यथाक्रमसे सर्वविशुद्ध द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव होते हैं । एकेन्द्रिय, स्थावर और साधारणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध बादर एकेन्द्रिय जीव होता है । सूक्ष्म नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है । अपर्याप्त नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा सर्वविशुद्ध मनुष्य अपर्याप्तके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है ।

पांच अन्तराय कर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसा जीव उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है । सुस्वर व दुस्वर नामकर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वचनयोगनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उन दो प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक

१ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्सासमाणाए' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णिरोहोकारओ' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'इंदिओ सव्वविसुद्धो' इति पाठः ।

कारओ सजोगिकेवली। एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं।

एत्तो जहण्णयं सामित्तं। तं जहा—मदि-सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं जहण्णपदेसउदीरओ[1] को होदि? उक्कस्ससंकिलिट्ठो। ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णपदेसुदीरओ[2] को होदि? पंचिंदियो उक्कस्स-संकिलिट्ठो जस्स ओहिलंभो अत्थि सो जहण्णपदेसउदीरओ। दंसणावरणपंचयस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? सण्णिपंचिंदियो पज्जत्तो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो।

सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? उक्कस्ससंकिलिट्ठो। सम्मत्तस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? वेदगसम्माइट्ठी असंजदो से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णपदेस० को होदि? सम्मा-मिच्छाइट्ठी से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ। णिरयाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? दसवस्ससहस्साउओ उक्कस्सए सादोदए वट्टमाणओ णेरइयो। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? जहाकमेण मणुस्स-तिरिक्खो[3] तिपलिदो-

होते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरण, श्रुत-ज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव होता है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? जिसके अवधिलब्धि है ऐसा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव उन दो प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव होता है।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीव सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होता है।

नारकायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक दस हजार वर्षकी आयु-वाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान नारक जीव होता है। तिर्यगायु व मनुष्यायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? तीन पल्योपम प्रमाण आयुस्थितिवाले एवं उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'मणुस्स (स्सो) तिरिक्ख (क्खो)' इति पाठः।

वमाउट्ठिदीया उक्कस्सए[1] सादोदए वट्टमाणा[2]। देवाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? देवो तेत्तीससागरोवमाउओ उक्कस्सए सादोदए वट्टमाणओ।

चत्तारिगदि-पंचजादि-चत्तारिसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद- परघाद-उज्जोव[3]-उस्सास- पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग - सुस्सर-दुस्सर -आदेज्ज - अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? सण्णिपंचिंदिओ पज्जत्तओ उक्कस्ससंकिलिट्ठओ। णवरि गदि-जादीणं अप्पप्पणो जादि-वेदओ सव्वसंकिलिट्ठो। छसंट्ठाण-छसंघडणाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? अप्पिद-अप्पिदसंठाण[4]-संघडणाणं वेदओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो।

आहारसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? पमत्तसंजदो उट्ठाविदआहारसरीरो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो। चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्ण-पदेसउदीरओ को होदि? तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो विग्गहगदीए वट्टमाणओ। आदाव-णामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि? पुढवीजीवो पज्जत्तो सव्वसंकिलिट्ठो। थावर-

मनुष्य व तिर्यंच यथाक्रमसे उन दो आयुकर्मोंके जघन्य प्रदेशके उदीरक होते हैं। देवायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान ऐसा देव होता है।

चार गतिनामकर्म, पांच जातिनामकर्म, चार शरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन एवं संघात नामकर्म, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच गोत्र, ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव उक्त प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। विशेषता इतनी है कि गति व जाति नामकर्मोंमें अपनी अपनी जातिका वेदक सर्वसंक्लिष्ट जीव उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। छह संस्थानों और छह संहननोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? विवक्षित विवक्षित संस्थान व संहननका वेदक प्राणी उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता हुआ उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है।

आहारकशरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाला तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ प्रमत्तसंयत जीव होता है। चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ विग्रहगतिमें वर्तमान जीव होता है। आतप नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है? सर्वसंक्लिष्ट पृथिवीकायिक पर्याप्त

१ अ-काप्रत्योः '-ट्ठिदीयादिउक्कस्सए, ताप्रतौ '-ट्ठिदीयादि (यो) उक्कस्सए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वट्टमाणओ' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'उवघाद-उज्जोव' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'अप्पिदअणप्पिदसंठाण-' इति पाठः।

साहारणणामाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? बादरइंदिओ सव्वसंकिलिट्ठो। सुहुमणामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदिओ सव्वसंकिलिट्ठो। अपज्जत्तणामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? मणुस्सो उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो चरिमसमयतब्भवत्थो उक्कस्ससंकिलिट्ठो। तित्थयरस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पढमसमयकेवलिमादिं कादूण जाव आवज्जिदकरणस्स अकारओ[1] त्ति। एवं जहण्णसामित्तं समत्तं। एगजीवेण कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ चेदि। एदेसिं दोण्णं पि भंगविचयाण अट्ठपदं सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणिदव्वं।

एत्तो सण्णियासो दुविहो सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि। तत्थ सत्थाणसण्णियासो। तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसमुदीरेंतो सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं णियमा उक्कस्सपदेसमुदीरेदि[2]। ओहिणाणावरणस्स सिया उक्कस्सं सिया अणुक्कस्सं उदीरेदि। जदि अणुक्कस्सं णियमा असंखेज्जगुणहीणं। एवं सेस-

---

जीव आतपके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। स्थावर और साधारण नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंक्लेशको प्राप्त हुआ बादर एकेन्द्रिय जीव होता है। सूक्ष्म नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंक्लेशको प्राप्त हुआ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है। अपर्याप्त नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ मनुष्य अपर्याप्तके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? प्रथम समयवर्ती केवलीको आदि करके जब तक वह आवर्जित करणको नहीं करता है तब तक तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ। एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय। इन दोनों ही भंगविचयोंके अर्थपदका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका भी कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

यहां संनिकर्ष दो प्रकार है—स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष। इनमें स्वस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला नियमसे श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है। वह अवधिज्ञानावरणके कदाचित् उत्कृष्ट और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है। यदि वह उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है तो नियमसे असंख्यातगुणे हीनकी करता है। इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी विवक्षामें भी संनिकर्षका कथन

---

१ प्रतिषु 'आकारओ' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'उक्कस्सपदसुदीरेदि' इति पाठः।

चदुण्णमावरणाणं पि वत्तव्वं ।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसमुदीरेंतो अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्समणुक्कस्सं वा उदीरेदि । जदि अणुक्कस्सं असंखेज्ज-भागहीणं संखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं[1] असंखे० गुणहीणं वा उदीरेदि । एवमुक्कस्स-सण्णियासो जाणिदूण णेदव्वो ।

जहण्णपदसण्णियासं वत्तइस्सामो । तं जहा—मदिआवरणस्स जहण्णपदेसउदीरओ[2] सुदआवरणस्स जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि । जदि अजहण्णं तो चउट्ठाणपदिदमुदीरेदि । एदेण बीजपदेण जहण्णपदसण्णियासो वत्तव्वो । एवं परत्थाणसण्णियासो वि जहण्णुक्कस्सपदभेयभिण्णो णेयव्वो । एवं सण्णियासो समत्तो । एत्थेव अप्पाबहुअं जाणिदूण भाणियव्वं ।

पदेसभुजगारउदीरणाए अट्ठपदं— अणंतरहेट्ठिमसमए उदीरिद[3]पदेसग्गादो एण्हिं[4]मुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जदि बहुअं होदि तो एसा भुजगारउदीरणा । अणंतरादिक्कंते समए उदीरिदपदेसग्गादो जमेण्हिमुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जइ थोवं होदि तो एसा अप्पदरउदीरणा । जदि दोसु वि समएसु तत्तियं चेव उदीरेदि तो एसा अवट्ठिद-

---

करना चाहिये ।

मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट अथवा अनुत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है। यदि वह अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो असंख्यातभागहीन, संख्यात-भागहीन संख्यातगुणहीन अथवा असंख्यातगुणहीनकी उदीरणा करता है। इस प्रकार उत्कृष्ट संनिकर्षको जानकर ले जाना चाहिये ।

जघन्य-पद-संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक श्रुतज्ञानावरणके जघन्य अथवा अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है। यदि वह अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है तो वह चतुःस्थानपतित (असंख्यातभागहीन, संख्यात-भागहीन, संख्यातगुणहीन व असंख्यातगुणहीन) की उदीरणा करता है। इस बीजपदसे जघन्य-पद-संनिकर्षका कथन चाहिये। इसी प्रकारसे जघन्य व उत्कृष्ट पदभेदोंमें विभक्त परस्थान संनि-कर्षको भी ले जाना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ। यहींपर अल्पबहुत्वकी भी जान-कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

प्रदेश-भुजाकार-उदीरणामें अर्थपद— अनन्तर अधस्तन समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे इस समय उदीर्यमाण प्रदेशाग्र यदि बहुत होता है तो यह भुजाकार उदीरणा कही जाती है। अनन्तर अतीत समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे यदि इस समय उदीर्यमाण प्रदेशाग्र स्तोक होता है तो यह अल्पतर उदीरणा कहलाती है। यदि दोनों ही समयोंमें उतने मात्र ही प्रदेशाग्रकी उदीरणा को

---

१ ताप्रतौ 'असंखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'पदेसमुदीरओ' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'उदीरेदि' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'एण्णि-' इति पाठः ।

उदीरणा। अणुदीरओ होदूण जदि उदीरगो होदि तो एसा अवत्तव्वउदीरणा।

सामित्तं— मदिआवरणस्स भुजगारउदीरओ अप्पदरउदीरओ अवट्ठिदउदीरओ वा को होदि ? अण्णदरो। एवं सव्वेसिं कम्माणं। णवरि अवत्तव्वउदीरओ केसिंचि कम्माणं भाणियव्वो। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो जहा अणुभागउदीरणाए तहा वत्तव्वो[1]। णवरि भवपच्चइए[2] जहा चेव परिणामपच्चइएसु तहा कायव्वो। तं जहा— मणुसगदिणामाए पदेसउदीरणाए अवट्ठिदउदीरओ पुव्वकोडिं देसूणं। भवपच्चइयाणमवट्ठिदउदीरयकालं[3] मोत्तूण सेसाणं कम्माणमेयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च[4] जहा अणुभाग-उदीरणाए तहा पदेसउदीरणाए[5] वि भुजगारो कायव्वो।

अप्पाबहुअं। तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा। भुजगार-उदीरया असंखे० गुणा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। सेसचदुण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्णं दंसणावरणीयाणं च मदिआवरणभंगो। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं एवं चेव। णवरि अवट्ठिदउदीरया थोवा। अवत्तव्वउदी० असंखे० गुणा। सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा

जाती है तो यह अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरक हो करके यदि उदीरक होता है तो यह अवक्तव्य उदीरणा कहलाती है।

स्वामित्व— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है ? अन्यतर जीव उक्त प्रकारका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे सब कर्मोंके सम्बन्ध-में कहना चाहिये। विशेष इतना है कि अवक्तव्य उदीरक किन्हीं विशेष कर्मोंका कहना चाहिये। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि वहां जिस प्रकार भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंका काल कहा है उसी प्रकार यहां परिणामप्रत्ययिक प्रकृतियोंका कहना चाहिए। यथा— मनुष्यगति नामकर्मकी प्रदेशउदीरणाके अवस्थितपदका काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है। भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंके अव-स्थित पदके उदीरककालको छोड़कर शेष कर्मोंका एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तर; इनका कथन जिस प्रकार अनुभागउदीरणामें किया है उसी प्रकार यहां प्रदेशउदीरणामें भी भुजाकार पदका आश्रय लेकर करना चाहिए।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं। शेष चार ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है। विशेष इतना है कि इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक उनसे असंख्यात-

---

१ का-ताप्रत्योः 'तहा कायव्वो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'भवपच्चएसु' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उदीरयाकालं', ताप्रतौ 'उदीरया (य) कालं' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'कालो च अंतरं' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'उदीरणाए तप्पदेसउदीरणाए' इति पाठः।

अवट्ठिदउदी० । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा । अप्पदरउ० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा । भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला असंखे० गुणा । अणुभागउदीरणाए[1] वि सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला कायव्वा । केण कारणेण भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं तुल्लत्तं[2] उच्चदे ? जत्तिया मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया चेव सम्मामिच्छत्तादो मिच्छत्तं गच्छंति । जत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया चेव सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्तं गच्छंति[3] । एदेण कारणेण भुजगारउदीरएहिंतो अप्पदर-उदीरयाणं तुल्लत्तं । पुव्वमणुभागउदीरणाए अप्पदरुदीरएहितो भुजगारुदीरया विसेसाहिया त्ति जं भणिदं तेणेदस्स कधं ण विरोहो ? सच्चं विरोहो चेव, किंतु दोण्णमुवदेसाणं थप्पत्तपरूवणट्ठं तदुभयणिद्देसो ण विरुज्झदे । सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-णिरय-देव-मणुसगइ-बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - ओरालिय वेउव्वियसरीर-ओरालिय - वेउव्वियसरीरंगोवंग-बंधण-संघाद - छसंठाण-छसंघडण - उवघाद -परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-सुहुम- पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय-

---

गुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थित उदीरक सबमें स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार व अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य व असंख्यातगुणे हैं । अनुभागउदीरणामें भी सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरकों व अल्पतर उदीरकोंको तुल्य करना चाहिये ।

शंका—भुजाकार व अल्पतर उदीरकोंकी समानता किस कारणसे कही जाती है ?

समाधान—जितने जीव मिथ्यात्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही जीव सम्यग्मिथ्यात्वसे मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं । जितने जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही सम्यग्मिथ्यात्वसे सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं । इस कारण भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरकोंकी समानता कही गयी है ।

शंका— पहिले अनुभागउदीरणामें "भुजाकार उदीरक अल्पतर उदीरकोंसे विशेष अधिक हैं" ऐसा जो कहा गया है, उससे इसका विरोध कैसे न होगा ?

समाधान—सचमुच ही उससे इसका विरोध होता है, किन्तु दोनों उपदेशोंको स्थापित करनेकी प्ररूपणा करनेके लिये उन दोनोंका निर्देश करना विरुद्ध नहीं है ।

साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक व वैक्रियिक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक,

---

१ प्रतिपु 'उदीरयाए' इति पाठः । २ प्रतिपु 'तुल्लं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'जत्तिया सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्तं गच्छंति तत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति' इति पाठः ।

साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-अजसगित्ति-उच्चागोदाणं अवट्ठिदउदीरया थोवा। अवत्तव्वउदी० असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदरउ० विसेसा०। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं अवत्तव्व० थोवा। अवट्ठिद० अणंतगुणा। भुज० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसेसा०।

जहा मदिआवरणस्स तहा धुवउदीरयाणं पंचण्णमंतराइयाणं च वत्तव्वं। चदुण्णमाउआणं अवट्ठिय० थोवा०। अवत्त० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसा०। केण कारणेण आउआणं भुजगारउदीरया वहुआ? जे असादअपज्जत्ता ते असादोदएण बहुअयरा वड्ढंति[1]। जे सादा अपज्जत्तया ते बहुयरा सादोदएण परिहायंति, थोवयरा वड्ढंति[2]। एदेण कारणेण आउआणं अप्पदर० थोवा, भुजगार० वहुआ। चउण्णमाणुपुव्वीणं अवट्ठिय० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० विसेसा०। अप्पदर० विसेसा०। आदेज्ज-जसगित्तीणं उच्चागोदभंगो।

साधारण, सुभग, सुस्वर दुस्वर, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र; इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय, और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक अनन्तगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही ध्रुव उदीरणावाली प्रकृतियोंके एवं पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। चार आयु कर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं।

शंका—आयु कर्मोंके भुजाकार उदीरक बहुत किस कारणसे हैं?

समाधान—जो जीव असातारूप संक्लेश परिणामसे सहित होते हुए पर्याप्तियोंसे अपरिपूर्ण होते हैं उनमें अधिकतर जीव दुःखानुभवनरूप असाताके उदयसे संयुक्त होकर बढ़ते हैं, अर्थात् आयुके भुजाकारको करते हैं। तथा जो जीव सातारूप मध्यम विशुद्धि परिणामोंसे परिणत होते हुए अपर्याप्त होते हैं उनमें अधिकतर सुखानुभवनरूप साताके उदयसे संयुक्त होकर हीन होते हैं, अर्थात् आयुके अल्पतरको करते हैं; कुछ थोड़ेसे जीव संक्लेश परिणामोंसे परिणत होते हुए अपर्याप्त होकर बढ़ते हैं, अर्थात् भुजाकारको करते हैं। इस कारणसे आयु कर्मोंके अल्पतर उदीरक स्तोक व भुजाकार उदीरक बहुत होते हैं।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक होते हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं। अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक होते हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक होते हैं। आदेय और यशकीर्ति नामकर्मोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा उच्चगोत्रके समान है। तीर्थंकर

१ अप्रतौ 'बहुअदरा वड्ढंति', काप्रतौ 'बहुअदरा वड्ढंति', ताप्रतौ 'बहु [अ] यरा वड्ढंति' इति पाठः।
२ प्रतिषु 'वड्ढंति' इति पाठः।

तित्थयर० अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्ठिद० असंखे०(?) गुणा । एवं भुजगारउदीरणा समत्ता ।

एत्तो पदणिक्खेवो । तत्थ सामित्तं— मदिआवरणीयस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? पढमसमयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? बिदियसमयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स । सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिआवरणभंगो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स जस्स ताधे चेव ओहिलंभो णट्ठो । हाणि-अवट्ठाणाणं मदिआवरणभंगो । अधवा, ओहिणाण-ओहिदसणावरणाणं वड्ढीए वि मदिणाणावरणभंगो होदि त्ति केसिं पि आइरियाणमुवएसो ।

णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो अधापमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण[1] उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया

प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरक स्तोक होते हैं । भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं । अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं । इस प्रकार भुजाकार उदीरणा समाप्त हुई ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हैं । उसमें स्वामित्व इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वीतराग (उपशान्तमोह) से पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वीतरागसे पीछे आये हुए द्वितीय समयवर्ती देवके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है तथा उसी समय ही जिसकी अवधिलब्धि नष्ट हुई है उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । इनकी उत्कृष्ट हानि एवं अवस्थानकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अथवा, अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिका कथन भी मतिज्ञानावरणके ही समान है, ऐसा कितने ही आचार्योंका उपदेश है ।

निद्रा और प्रचला दर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्तसंयत तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । जब वह

---

१ अ-काप्रत्योः 'सागर-' इति पाठः ।

हाणी । हाइदूण अवट्ठाणं गयस्स उक्कस्समवट्ठाणं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो पमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्ग-उक्कस्सविसोहिं[1] गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागार[2]क्खएण उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी । से काले अवट्ठाणं गयस्स उक्कस्समवट्ठाणं[3] ।

सादस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो संजदो चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो तस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? सो चेव चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । असादस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो संजदो[4] चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो तस्स उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठाणं च तस्सेव उक्कस्सविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलेसं गयस्स ।

मिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जदि त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठाणं च कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो

हीन होकर अवस्थानको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो प्रमत्तसंयत तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयके साथ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त होनेपर उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है ।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत जीव सर्व-विशुद्धिको प्राप्त है उसके सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वही अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त सर्वविशुद्ध संयत जीव मरणको प्राप्त होकर जब देव हो जाता है तब उसके उक्त सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त संयत सर्वविशुद्धिको प्राप्त है उसके असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उत्कृष्ट विशुद्धि-से तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होनेपर उसीके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान भी होता है ।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें वर्तमान है उसके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त जो मिथ्यादृष्टि साकार उपयोगके

---

१ अप्रतौ 'उक्कस्स हिं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'सागर' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'से काले अवट्ठाणं मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'संजदा०', ताप्रतौ 'संजदा० (दो)' इति पाठः ।

सागारक्खएण तप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च। सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स। हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स। जो अधापमत्तसम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो सागारक्खएण तप्पाओग्गसंकिलेसं गदो तस्स उक्क० हाणि-अवट्ठाणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स। सम्मामिच्छत्त० उक्क० हाणी अवट्ठाणं च कस्स ? जो सम्मामिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो परिणामक्खएण तप्पाओग्गजहण्णविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो। अपच्चक्खाणकसायाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो असंजदसम्माइट्ठी से काले संजमं गाहदि[1] त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वड्ढी। हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स सागारक्खएण से काले तप्पाओग्गजहण्णविसोहिं गयस्स। पच्चक्खाणकसायाणं अपच्चक्खाणकसायभंगो। णवरि संसदासंजदेसु परूवणा कायव्वा। संजलणाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? कोह-माण-मायाणं खवगस्स चरिमसमयवेदयस्स तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। लोभस्स उक्क०

क्षयसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके चरम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि सर्वविशुद्ध होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें स्थित है उस सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान किसके होता है ? जो सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर परिणामक्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान होता है।

अनन्तानुबन्धिचतुष्कके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो असंयत सम्यग्दृष्टि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, ऐसी अवस्थामें स्थित है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि साकार उपयोगके क्षयसे अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। प्रत्याख्यानावरण कषायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरण कषायोंके समान है। विशेष इतना है कि उसकी प्ररूपणा संयतासंयत जीवोंमें करना चाहिये। संज्वलन कषायों (क्रोध, मान व माया) की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो क्रोध, मान व मायाका क्षपक अन्तिम समयवर्ती तद्वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। संज्वलन लोभकी

---

१ अप्रतौ 'गहिदि' इति पाठः।

वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयसकसायखवगस्स । एदेसिं हाणी कस्स ? जो उवसामगो अप्पिदकसायस्स उक्कस्सउदयट्ठाणं पत्तो संतो मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं ।

छण्णोकसायाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवगस्स । हाणी कस्स ? तस्सेव उवसामयस्स कालं कादूण देवेसु उववण्णस्स । तस्सेव से काले उक्कस्स-मवट्ठाणं । णवरि अरदि-सोगाणं पडिवदमाणयस्स दुसमयवेदगस्स उक्कस्सिया हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स कदउक्कस्सावट्ठाणस्स । पुरिसवेदस्स संजलण-भंगो । इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयवेदगस्स खवगस्स । उक्क० हाणी कस्स ? उवसमसेडीदो पडिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । अवट्ठाणं कस्स ? सत्थाणसंजदस्स सागारक्खएण उक्कस्समवट्ठाणं गदस्स ।

णिरयाउअस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? णिरयगईए जस्स णेरइयस्स[1] असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उक्कस्सिया वड्ढी तस्स णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? णिरयगईए णेरइयस्स असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उक्क०

उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। इन चारोंकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उपशामक जीव विवक्षित कषायके उत्कृष्ट उदयस्थानको प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है उसके देव होनेके प्रथम समयमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उसी अपूर्व-करण उपशामकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। विशेषता इतनी है कि अरति और शोककी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्वेदकके होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त अधःप्रवृत्तसंयतके होता है। पुरुषवेदकी प्ररूपणा संज्वलन कषायके समान है। स्त्री व नपुंसक वेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है। जिस क्षपकके उनके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उन दो वेदोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्वेदकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह साकार उपयोगके क्षयसे उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त हुए स्वस्थान संयतके होता है।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? नरगतिमें जिस नारकीके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? नरकगतिमें जिस नारकीके असातोदयकी अनुभाग-

---

१ काप्रतौ 'कस्स' इति पाठः ।

हाणी[1] तस्स णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स? णेरइयस्स उक्कस्सियं हाणिं कादूण अवट्ठियस्स। तिरिक्खाउअस्स उक्क० पदेसवड्ढी कस्स? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागुदीरणाए असादोदयवड्ढी उक्कस्सिया तस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स[2] पदेसउदीरणाए[3] उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयहाणी उक्क० तस्स उक्क० पदेसहाणी। उक्कस्सअवट्ठाणं[4] कस्स? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स तिरिक्खाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं। मणुसाउअस्स तिरिक्खाउअभंगो। णवरि मणुस्सेसु वत्तव्वं। देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जस्स देवस्स अणुभागदीरणाए असादोदयवड्ढी उक्क० तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जस्स देवस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयहाणी उक्कस्सिया तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स? जस्स देवस्स अणुभागुदीरणाए असादोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स देवाउअपदेसउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं।

उदीरणामें उत्कृष्ट हानि होती है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? वह उत्कृष्ट हानिको करके अवस्थानको प्राप्त हुए नारक जीवके होता है। तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट प्रदेशवृद्धि किसके होती है? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उस तिर्यंचके तिर्यंचआयु सम्बन्धी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके तिर्यंच आयुकी उत्कृष्ट प्रदेशहानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके तिर्यंचआयुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। मनुष्यायुकी प्ररूपणा तिर्यंच आयुके समान है। विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी प्रदेशउदीरणाकी वृद्धि आदिका कथन मनुष्योंमें करना चाहिये। देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके देवायुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

---

१ अप्रतौ त्रुटितो जातोऽत्र पाठः, का-ताप्रत्योः 'वड्ढी' इति पाठः। २ अप्रतौ 'कस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स', काप्रतौ 'कस्स तिरिक्खाउअस्स' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'पदेसउदीरणा' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'कस्स अवट्ठाणं', ताप्रतौ '[कस्स]। अवट्ठाणं' इति पाठः।

णामकम्मस्स जाओ पयडीओ सुभाओ असुभाओ वा केवली वेदयदि तासिं चरिमसमयसजोगिम्हि उक्कस्सिया वड्ढी ? जाओ णामपयडीओ सुहाओ असुहाओ वा उवसंतकसाओ वेदेदि तासिमुक्कस्सिया हाणी पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायपच्छायदस्स होदि। तासिं चेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। णवरि मणुसगइ-ओरालियचदुक्क-सरदुग-विहायगइदुगाणमुक्कस्सिया हाणी ओदरमाणपढमसमयसुहुमसांपराइस्स, अवट्ठाणं विदियसमयउवसंतकसायस्स। जासिं णामपयडीणं केवली उदीरओ ण होदि तासिं तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो उक्कस्सविसोहिं गदस्स संजदस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० विसोहीदो जहण्णविसोहिं गदस्स सागारक्खएण भवक्खएण वा तस्स उक्क० हाणी। अवट्ठियस्स[1] उक्कस्समवट्ठाणं। णीचागोद-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयअसंजदस्स उक्क० वड्ढी। उक्क०हाणी कस्स ? णीचागोदस्स[2] (?) सम्माइट्ठिस्स सव्वुक्कस्सविसोहीदो जहण्णविसोहिं गयस्स तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। उच्चागोदस्स[3] उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायस्स पच्छायदस्स। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। पंचण्णमंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो। एवमुक्कस्स-

नामकर्मकी जिन शुभ अथवा अशुभ प्रकृतियोंका वेदन केवली करते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। जिन शुभ-अशुभ नामप्रकृतियोंका उपशान्तकषाय वेदन करता है उनकी उत्कृष्ट हानि उपशान्तकषायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके होती है। उन्हींका अनन्तर कालमें उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। विशेष इतना है कि मनुष्यगति, औदारिकचतुष्क, स्वरद्विक और दोनों विहायोगतियोंकी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे उतरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है; तथा उनका उत्कृष्ट अवस्थान द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकषायके होता है। जिन नामप्रकृतियोंके केवली उदीरक नहीं होते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुए संयतके होती है। साकार उपयोगके क्षयसे अथवा भवके क्षयसे उत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानिको करके अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त हुए उक्त जीवके ही उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। नीचगोत्र, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्तिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? चरम समयवर्ती असंयत जीवके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त सम्यग्दृष्टि जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशान्तकषायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। पांच अन्तराय

१ अ-ताप्रत्योः 'हाणी कादूण अवट्ठियस्स' इति पाठः। २ ताप्रतौ '[णीचागोदस्स]' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'णीचागोदस्स', ताप्रतौ 'णीचा (उच्चा) गोदस्स' इति पाठः।

सामित्तं समत्तं ।

मदिआवरणस्स जहण्णिया पदेसउदीरणावड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिलिट्ठो तत्तो अणंतभागेण हीणो तस्स जहण्णिया वड्ढी । जहण्णिया हाणी कस्स ? दुचरिमादो संकिलेसादो जो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुद-मणपज्जव - केवलणाणावरण-चक्खु -अचक्खु- केवलदंसणावरण- सादासाद - मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं मदिणाणावरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि मदिणाणावरणभंगो । णवरि देव-णेरइएसु जहण्णसामित्तं दादव्वं । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं मदिणाणावरणभंगो । णवरि तप्पाओग्गसंकिलिट्ठे जहण्णसामित्तं दादव्वं । णिरयाउअस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्सादो सादोदयट्ठाणादो दुचरिमसादोदयट्ठाणं गदो णेरइओ तस्स णिरयाउअस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? जो दुचरिमसादोदयादो चरिमसादोदयं गदो तस्स जहण्णिया हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्ख-मणुस-देवाउआणं णिरयाउअभंगो । णवरि तिरिक्ख-मणुस-देवेसु उक्कस्स-अणुक्कस्ससादोदएसु जहाकमेण सामित्तं वत्तव्वं ।

सव्वणामपयडीणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि भण्णमाणे मदिणाणावरणभंगो । णवरि अप्पिद-अप्पिदणामपयडीणमुदयसंभवपदेसम्हि उक्कस्स-अणुक्कस्ससंकिलेसेसु जहण्ण-

---

कर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य प्रदेशउदीरणावृद्धि किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जो जीव उसके अनन्तवें भागसे हीन होता है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उक्त प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्वामित्व देव-नारकियोंमें देना चाहिये । निद्रा आदि पांच दर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य संक्लेश युक्त जीवमें उनका जघन्य स्वामित्व देना चाहिये । नारकायुकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो नारकी जीव उत्कृष्ट सातोदयस्थानसे द्विचरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके नारकायुकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम सातोदयस्थानसे चरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी भी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट सातोदय युक्त तिर्यंच, मनुष्य और देवमें यथाक्रमसे उनका जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये ।

सब नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानकी प्ररूपणा करनेपर वह मतिज्ञानावरणके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि विवक्षित विवक्षित नामप्रकृतियोंके उदयकी

सामित्तं दादव्वं । उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं जह० वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिले-सादो दुचरिमसंकिलेसं गदो तस्स जह० वड्ढी । जह०हाणी कस्स ? जो दुचरिमसंकिले-सादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थमवट्ठाणं । एवं जहण्ण-सामित्तं समत्तं ।

अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी असंखेज्जगुणा । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरण-सम्मत्त - मिच्छत्त - सम्मामिच्छत्त - सोलसकसाय-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा - पुरिसवेद - पंचिंदियजादि - तेजा-कम्मइयसरीर - तब्बंधण[1] - संघाद-समचउरससंठाण-वण्ण- गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - तस - बादर - पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणंपदेस-उदीरणाए उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा । असादस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । वड्ढी असंखे०गुणा । दंसणावरणपंचयस्स उक्क० वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहि-याणि । सादस्स हाणि-अवट्ठाणाणि थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । इत्थि-णवुंसयवेद-

सम्भावना युक्त ऐसे उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट संक्लेशवाले जीवोंमें उनके जघन्य स्वामित्वको देना चाहिये । उच्च व नीच गोत्र तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट संक्लेशसे द्विचरम संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उनकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उसकी उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । श्रुतज्ञाना-वरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शना-वरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य एवं स्तोक हैं । उनकी उत्कृष्ट वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उससे उसकी वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रादिक पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । साता-वेदनीयकी हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । स्त्रीवेद, नपुंसकवेद,

१ ताप्रतौ '-सरीर-बंधण' इति पाठः ।

अरदि-सोगाणं सव्वत्थोवमवट्ठाणं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखेज्जगुणा। आउआणं वड्ढी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। तिण्णं गईणं चदुण्णं जादीणं च उक्कस्सिया वड्ढी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसा०। मणुसगइणामाए उक्क० हाणी थोवा। अवट्ठाणमसंखे० गुणं। वड्ढी असंखे० गुणा। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग- बंधण-संघाद - पंचसंठाण - वज्जरिसहसंघडण - परघाद - उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-दुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सिया हाणी थोवा। अवट्ठाणमसंखे० गुणं। वड्ढी असंखे० गुणा। वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्क० वड्ढी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च विसेसाहियं। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवा। वड्ढी असंखे० गुणा। उवसम-सेढिम्हि उदयसंभवसंघडणाणं वड्ढी अवट्ठाणं थोवं। हाणी विसे०। सेसाणं संघडणाणं वड्ढी थोवा। हाणी अवट्ठाणं च विसे०। अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवं। वड्ढी असंखेज्जगुणा। एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं।

पदेसउदीरणाए मदिआवरणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि। जधा मदिआवरणस्स तधा सव्वकम्माणं पि अप्पाबहुअं अत्थि[2], सव्वकम्म-जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं तुल्लत्तुवलंभादो। णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णिया

अरति व शोकका अवस्थान सबमें स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। आयु कर्मोंकी वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। तीन गतियों व चार जातियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। अवस्थान असंख्यातगुणा है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है। अवस्थान असंख्यातगुणा है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात; आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं। चार आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं। वृद्धि असंख्यातगुणी है। उपशमश्रेणिमें जिनका उदय सम्भव है उन संहननोंकी वृद्धि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं। हानि विशेष अधिक है। शेष संहननोंकी वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं। अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं। वृद्धि असंख्यातगुणी है। इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

प्रदेशउदीरणामें मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं। जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही सभी कर्मोंके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थानमें तुल्यता पायी जाती है।

---

१ का-ताप्रत्योः 'पुधअसंभव' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'णत्थि', ताप्रतौ 'ण (अ) त्थि' इति पाठः।

हाणी थोवा। वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि असंखे० गुणाणि। तित्थयरणामाए हाणि-अवट्ठाणाणि णत्थि, वड्ढी एक्का चेव।

एत्तो वड्ढिउदीरणा[1]०। तत्थ समुक्कित्तणा— मदिआवरणस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढी संखे० भागवड्ढी सखे०गुणवड्ढी असंखे० गुणवड्ढी असंखेज्जभागहाणी संखे० भागहाणी संखे० गुणहाणी असंखे० गुणहाणी अवट्ठाणं चेदि। एवं सव्वकम्माणं। णवरि केसिंचि सादादीणं अवत्तव्वेण सह दस होंति। तित्थयरणामाए असंखे० गुणवड्ढी अवट्ठिदमवत्तव्वं च तिण्णि चेव होंति। समुक्कित्तणा गदा।

सामित्तं वुच्चदे। तं जहा— चउव्विहाए वड्ढीए चउव्विहाए हाणीए अवट्ठाणस्स य को सामी? अण्णदरो। एवं सव्वकम्माणं वत्तव्वं। एयजीवेण कालो— तिण्णि-वड्ढि-तिण्णिहाणीणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे भागो। असंखेज्जगुण-वड्ढि-असंखेज्जगुणहाणीणं जह[2]० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। जाणि कम्माणि उवसामगो[3] उदीरेदि तेसिं कम्माणमवट्ठाणस्स उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं। जाणि केवली उदीरेदि तेसिमवट्ठियस्स उक्कस्सकालो पुव्वकोडी देसूणा। एयजीवेण अंतरं

विशेष इतना है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व असंख्यातगुणे हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी हानि व अवस्थान सम्भव नहीं है, उसकी एक मात्र वृद्धि ही होती है।

यहां वृद्धिउदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें समुत्कीर्तना— मतिज्ञानावरणके असंख्यात-भागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभाग-हानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अवस्थान भी होता है। इसी प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। विशेष इतना है कि किन्हीं सातावेदनीय आदि विशेष कर्मोंके अवक्तव्यके साथ वे दस पद होते हैं। तीर्थंकर नामकर्मके असंख्यातगुणवृद्धि, अवस्थित और अवक्तव्य ये तीन ही पद होते हैं। समुत्कीर्तना समाप्त हुई।

स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा—मतिज्ञानावरणकी चार प्रकारकी वृद्धि, चार प्रकारकी हानि और अवस्थानका स्वामी कौन है? उनका स्वामी अन्यतर जीव है। इसी प्रकार सब कर्मोंके कहना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं— तीन वृद्धियों और तीन हानियोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। जिन कर्मोंकी उपशामक उदीरणा करता है उन कर्मोंके अवस्थानका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है। जिन कर्मोंकी केवली उदीरणा करते हैं उनके अवस्थानका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटि मात्र

---

१ ताप्रतौ 'वड्ढिउदीरणा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'हाणीणं जहण्णीणं' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उवसमगो' इति पाठः।

कालेण साधेदूण णेयव्वं ।

एत्तो णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च भाणियव्वं[1] । एत्तो अप्पाबहुअं— मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखे० भागहाणिउदीरया विसेसाहिया । संखे० भागवड्ढिउ० संखे० गुणा । संखे० भागहाणिउ० विसेसा० । संखे० गुणवड्ढिउ० संखे० गुणा । संखेज्जभागहाणिउदी० विसे० । असंखे० गुणवड्ढिउ० असंखे० गुणा । असंखे० गुणहाणिउदीरया[2] विसेसाहिया । एवं सव्वकम्माणं कायव्वं ।

जेसिं कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेसिं अप्पाबहुअं । तं जहा— अवट्ठिदउदीरया थोवा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखे० गुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । संखेज्जभागवड्ढिउ० संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउ० विसेसा० । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणिउ० विसे० । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । असंखेज्जगुणवड्ढिउ० असंखे० गुणा । असंखेज्जगुणहाणिउ० विसेसा० । परित्तजीवियाणं कम्माणं जियाँ[3] अत्थि तेसिं एसो चेव अप्पाबहुगालावो कायव्वो । जाणि कम्माणि अणंतजीवियाणि परित्ता जेसिं अवत्तव्वया तेसिं

है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरको कालसे सिद्ध करके ले जाना चाहिये ।

यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका कथन करना चाहिये । यहां अल्पबहुत्व— मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें अल्पबहुत्व करना चाहिये ।

जिन कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक अनन्त हैं उनका अल्पबहुत्व कहा जाता है । वह इस प्रकार है—उनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । जिन कर्मोंके उदीरक परीत संख्यावाले जीव हैं उनके यही अल्पबहुत्व आलाप करना चाहिये । जिन कर्मोंके उदीरक अनन्त हैं, उनमें भी जिनका अवक्तव्य पद परीतसंख्याक जीवोंके होता है, उन

१ ताप्रतौ 'भाणियव्वो' इति पाठः । २ अप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'जेया' इति पाठः ।

कम्माणं अवत्तव्वयादिसेसाणं पदाणं जहापरिवाडीए अप्पाबहुअं वत्तव्वं। एवं पदेसउदीरणा समत्ता। एवमुदीरणाउवक्कमो समत्तो।

उवसामणाउवक्कमे उवसामणा णिक्खिविदव्वा। तं जहा— णाम-ट्ठवणा-दविय-भावुवसामणा चेदि उवसामणा चउव्विहा। णाम-ट्ठवणं गदं। आगमभावुवसामणा च गदा। णोआगमभावुवसामणा उवसंतो कलहो जुद्धं वा इच्चेवमादि। आगमदो दव्वुवसामणा सुगमा। णोआगमदो दव्वुवसामणा दुविहा कम्मउवसामणा णोकम्मउवसामणा चेदि। कम्मउवसामणा दुविहा करणुवसामणा अकरणुवसामणा चेदि। जा सा अकरणुवसामणा तिस्से दुवे णामाणि— अकरणुवसामणा त्ति च अणुदिण्णोवसामणा त्ति च[1]। सा कम्मपवादे सवित्थरेण परूविदा। जा सा करणुवसामणा[2] सा दुविहा देसकरणुवसामणा सव्वकरणुवसामणा चेदि। तत्थ सव्वकरणुवसामणाए अण्णाणि दुवे णामाणि गुणोवसामणा त्ति[3] च पसत्थुवसामणा त्ति च। एसा सव्वकरणुवसामणा कसायपाहुडे परूविज्जिहिदि। जा सा देसकरणुवसामणा तिस्से अण्णाणि दुवे णामाणि अगुणोवसामणा

कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक आदि शेष पदोंके अल्पबहुत्वका कथन परिपाटीक्रमके अनुसार करना चाहिये। इस प्रकार प्रदेशउदीरणा समाप्त हुई। इस प्रकार उदीरणा-उपक्रम समाप्त हुआ।

उपशामनाउपक्रममें उपशामनाका निक्षेप करते हैं। यथा— नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव उपशामनाके भेदसे उपशामना चार प्रकारकी है। उनमें नाम व स्थापना अवगत हैं। आगमभावोपशामना भी अवगत है। नोआगमभावोपशामना— जैसे कलह उपशान्त हो गया, अथवा युद्ध उपशान्त हो गया, इत्यादि। आगमद्रव्योपशामना सुगम है। नोआगमद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है— कर्मद्रव्योपशामना और नोकर्मद्रव्योपशामना। इनमें कर्मद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है— करणोपशामना और अकरणोपशामना। जो वह अकरणोपशामना है उसके दो नाम हैं—अकरणोपशामना और अनुदीर्णोपशामना। उसकी कर्मप्रवादमें विस्तारके साथ प्ररूपणा की गयी है। जो वह करणोपशामना है वह दो प्रकार है— देशकरणोपशामना और सर्वकरणोपशामना। उनमें सर्वकरणोपशामनाके दो नाम और हैं— गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना। इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कषायप्राभृतमें करेंगे। जो वह देशकरणोपशामना है उसके दो नाम और हैं— अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना।

---

१ करणकया अकरणा विय दुविहा उवसामण त्थ बिइयाए। अकरण-अणुइन्नाए अणुयोगधरे पणिवयामि॥ क. प्र. ५, १. करणकय त्ति— इह द्विविधा उपशमना करणकृताऽकरणकृता च। तत्र करणं क्रिया यथाप्रवृत्तापूर्वानिवृत्तिकरणसाध्यः क्रियाविशेषः, तेन कृता करणकृता। तद्विपरीताऽकरणकृता। या संसारिणां जीवानां गिरि-नदीपाषाणवृत्ततादिसंभववद्यथाप्रवृत्तादिकरणक्रियाविशेषमन्तरेणापि वेदनानुभवनादिभिः कारणैरुपशमनोपजायते साऽकरणकृतेत्यर्थः। इदं च करणकृताकरणकृतत्वरूपं द्वैविध्यं देशोपशामनाया एव द्रष्टव्यम्, न सर्वोपशामनायाः; तस्याः करणेभ्य एव भावात्। मलय. २ ताप्रतौ 'जा करणुवसामणा' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'गुणोवसामया त्ति' इति पाठः।

त्ति च अप्पसत्थुवसामणा त्ति[1] च । एदाए पयदं ।

तत्थ अप्पसत्थुवसामणाए अट्ठपदं तं । जहा— अप्पसत्थुवसामणाए जमुवसंतं पदेसग्गं तमोकड्डिदुं पि[2] सक्कं, उक्कड्डिदुं पि सक्कं[3]; पयडीए संकामिदुं पि सक्कं, उदयावलियं पवेसिदुं[4] ण उ सक्कं । वुत्तं च—

उदए संकम-उदए चदुसु वि दादुं कमेण णो सक्कं ।
उवसंतं च णिधत्तं णिकाचिदं चावि जं कम्मं[5] ॥ ४ ॥

एदेण अट्ठपदेण सामित्तं तत्थ पुव्वं गमणिज्जं । सामित्तणिद्देसस्स पयदकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वकम्माणि चरित्तमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं[6] मणियट्टि-पढमसमयं पविट्ठस्स चेव अप्पसत्थउवसामणाए अणुवसंताणि । दंसणमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं अणियट्टिकरणपढमसमयपविट्ठस्सेव दंसणमोहणीयं अप्पसत्थउवसामणाए अणुवसंतं होदि । सेसाणि सव्वकम्माणि तत्थ उवसंताणि अणुवसंताणि च । अणंताणुबंधिविसंजोयणाए अणियट्टिपढमसमए पविट्ठंतकाले[7] चेव अणंताणुबंधिचउक्कमप्पसत्थ-उवसामणाए अणुवसंतं । सेसाणि सव्वकम्माणि उवसंताणि अणुवसंताणि च । णत्थि

यह यहां प्रकृत है ।

उनमेंसे अप्रशस्तोपशामनामें अर्थपदका कथन करते हैं । यथा— अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा जो प्रदेशाग्र उपशान्त होता है वह अपकर्षणके लिये भी शक्य है, उत्कर्षणके लिए भी शक्य है, तथा अन्य प्रकृतिमें संक्रमण करानेके लिये भी शक्य है । वह केवल उदयावलीमें प्रविष्ट करानेके लिये शक्य नहीं है । कहा भी है—

जो कर्म उदयमें नहीं दिया जा सकता है वह उपशान्त, जो संक्रमण व उदय दोनोंमें नहीं दिया जा सकता है वह निधत्त, तथा जो चारों (उदय, संक्रमण, अपकर्षण व उत्कर्षण) में भी नहीं दिया जा सकता है वह निकाचित कहा जाता है ॥ ४ ॥

इस अर्थपदके अनुसार प्रथमतः स्वामित्वका परिज्ञान कराना योग्य है । स्वामित्वनिर्देशपूर्वक प्रकृत करणका कथन करते हैं । यथा— चारित्रमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही सब कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होते हैं । दर्शनमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही दर्शनमोहनीय कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म वहां उपशान्त और अनुपशान्त भी होते हैं । अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनमें अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट होनेके कालमें ही अनन्तानुबन्धिचतुष्क अप्रशस्त उपशामनासे अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म उपशान्त और अनुपशान्त होते हैं । किसी भी कर्मका सब प्रदेशाग्र

---

१. सव्वस्स य देसस्स य करणुवसमणा दुसन्नि एक्किक्का । सव्वस्स गुण-पसत्था देसस्स वि तासि विवरीया ॥ क. प्र. ५, २. २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'तमोकड्डिदुं वपि' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'उक्कड्डिदुं व सक्कं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'पदेसिदुं' इति पाठः । ५ गो. क. ४४०. ६ अप्रतौ '-क्खवणउवसामगाण', का-ताप्रत्योः 'क्खएण उवसामणाण' इति पाठः । ७ अप्रतौ 'पविट्टंतकाले', ताप्रतौ 'पविट्ठतक्काले' इति पाठः, काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः ।

कस्स वि कम्मस्स पदेसग्गं सव्वमुवसंतं णाम अधवा सव्वमणुवसंतं णाम, सव्वमुवसंतं च अणुवसंतं च। एदेण पयदकरणेण सामित्तं गदं होदि।

एत्तो एयजीवेण कालो। तं जहा— णाणावरणस्स उवसामगो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा। तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सेससत्तण्णं कम्माणं णाणावरणभंगो।

एयजीवेण अंतरं जह०[1] एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एवमट्ठण्णं पि मूलपयडीणं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ। संतकम्मिएसु पयदं— णाणावरणस्स सिया सव्वे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामया च, सिया उवसामया[2] च अणुवसामओ च। एवं तिण्णं घादिकम्माणं तिण्णि तिण्णि भंगा। अघादीणं उवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि।

णाणाजीवेहि कालो— अट्ठण्णं पि पयडीणं उवसामया सव्वद्धा। णाणजीवेहि णत्थि अंतरं। अप्पाबहुअं—अट्ठण्णं पि उवसामया तुल्ला। भुजगारउवसामया णत्थि। पदणिक्खेव-वड्ढिउवसामणा च णत्थि। एवं मूलपयडिउवसामणा समत्ता।

उपशान्त अथवा सब अनुपशान्त नहीं होता, किन्तु सब प्रदेशाग्र उपशान्त भी होता है और अनुपशान्त भी होता है। इस प्रकृत करणके साथ स्वामित्व समाप्त होता है।

यहां एक जीवकी अपेक्षा कालका वर्णन करते हैं। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणका उपशामक जीव अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है। उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल-परिवर्तन मात्र है। शेष सात कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है।

एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। इसी प्रकारसे आठों ही मूल प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। सत्कर्मिक जीव प्रकृत हैं— ज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक, कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक और एक अनुपशामक होता है। इस प्रकारसे तीन घातिया कर्मोंके तीन तीन भंग होते हैं। अघातिया कर्मोंके बहुत उपशामक और बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आठों ही प्रकृतियोंके उपशामक सर्व काल होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका अन्तर नहीं होता। अल्पबहुत्व— आठों ही कर्मोंके उपशामक तुल्य होते हैं। भुजाकार उपशामक नहीं होते। पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामना भी नहीं है। इस प्रकार मूल-प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई।

---

१ अ-काप्रत्योः 'अंतरं जहा जह०' इति पाठः। २ प्रतिषु 'उवसामओ' इति पाठः।

उत्तरपयडिउवसामणा वुच्चदे। तं जहा— सामित्तं तेणेव पायदकरणेण पुव्वपरूविदेण परूवेयव्वं। तं जहा— सव्वकम्माणमुवसामओ को होदि ? अण्णदरो। एयजीवेण कालो। तं जहा— सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि। मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं सादिरेयं। उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खाउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवास-सहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। णिरय-मणुस-देवगइ-तदाणुपुव्वी - वेउव्विय-आहारसरीर - वेउव्विय - आहारसरीरंगोवंग - बंधण-संघाद-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहा[1] संतकम्मियस्स कालो परूविदो तहा परूवेयव्वो। सेसाणं सव्वकम्माणं उवसामयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा। जो[2] सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।

एयजीवेण अंतरं— जेसिं कम्माणं अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा उवसंतकालो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। जेसिं

उत्तरप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— स्वामित्वकी प्ररूपणा पूर्वप्ररूपित उसी प्रकृत करणके अनुसार करना चाहिये। यथा— सब कर्मोंका उपशामक कौन होता है ? सब कर्मोंका उपशामक अन्यतर जीव होता है।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व-के उपशामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उक्त काल जघन्यसे साधिक क्षुद्रभवग्रहण मात्र है। उत्कर्षसे वह मनुष्यायुका पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम और तिर्यगायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। उक्त काल देवायु और नारकायुका जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, वे तीनों आनुपूर्वी प्रकृतियां, वैक्रियिक व आहारकशरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, उनके बन्धन व संघात, तीर्थंकर तथा उच्चगोत्र; इनके कालकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मिकके कालकी की गयी है वैसे करना चाहिये। शेष सब कर्मोंका उपशामककाल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है। जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— जिन कर्मोंका उपशान्तकाल अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'जहाकमेण' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वा। उवसंतकालो तेसिं कम्माणं जो' इति पाठः।

कम्माणं सादियसंतकम्मिओ जीवो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० जं जिस्से पयडीए संतकम्मस्स अंतरं उक्कस्सेण परूविदं तं परूवेयव्वं। णवरि देवाउअ-वज्जाणमाउआणं जह० अंतोमुहुत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— मदिआवरणस्स सिया सव्वे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामओ च, सिया उवसामया च अणुवसामया च। जहा मदिआवरणस्स तिण्णि भंगा परूविदा तहा सव्वपयडीणं पि तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेयव्वा। णवरि जासिं पयडिसंतं सजोगिम्मि अत्थि तासिमुवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि।

कालो—णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा। अंतरं—णाणाजीवे[1] पडुच्च णत्थि अंतरं। अप्पाबहुअं। तं जहा— सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया। सम्मत्तस्स उवसामया असंखे० गुणा। सम्मामिच्छत्तस्स उव० विसेसाहिया। मणुसाउअस्स असंखेज्जगुणा। णिरयाउअस्स असंखे० गुणा। देवाउअस्स असंखे० गुणा। देवगइणामाए संखे० गुणा। णिरयगइणामाए विसेसा०। वेउव्वियसरीरणामाए विसेसा० वेउव्विय-छक्कमुव्वेल्लिऊण पुव्वं देवदुगबंधगे पडुच्च। उच्चागोदस्स अणंतगुणा। मणुसगइणामाए

अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। जिन कर्मोंका उपशामक सादिसत्कर्मिक जीव है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जिस प्रकृतिके सत्कर्मका जो अन्तर उत्कर्षसे बतलाया गया है उसको कहना चाहिये। विशेष इतना है कि देवायुको छोड़कर शेष आयु कर्मोंके उप-शामकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— मतिज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक होते हैं, कदाचित् बहुत उपशामक व एक अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक होते हैं। जिस प्रकार ये मतिज्ञानावरणके तीन भंग कहे गये हैं उसी प्रकार सब ही प्रकृतियोंके तीन भंग कहना चाहिये। विशेष इतना है कि जिनका प्रकृतिसत्त्व सयोगकेवलीमें है उनके बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं।

काल— नाना जीवोंकी अपेक्षा उपशामकोंका काल सर्वकाल है। अन्तर— नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर सम्भव नहीं है। अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— आहारशरीर नामकर्मके उपशामक सबमें स्तोक हैं। सम्यक्त्वके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। सम्य-ग्मिथ्यात्वके उपशात्मक विशेष अधिक हैं। मनुष्यायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। नारकायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। देवायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके उपशामक संख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके उपशात्मक विशेष अधिक हैं। वैक्रियिकशरीर नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं। इसका कारण यह है कि वैक्रियिकषट्क-की उद्वेलना करके पहिले देवद्विकके बन्धकोंकी अपेक्षा यह अल्पबहुत्व कहा है। उच्चगोत्रके उप-शामक अनन्तगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं। तिर्यगायुके

१ प्रतिषु 'णाणाजीवेण' इति पाठः।

विसेसा० । तिरिक्खाउअस्स विसेसा० । अणंताणुबंधीणं विसेसा० । मिच्छत्तस्स विसेसा० । सेसाणं कम्माणमुवसामया तुल्ला विसेसाहिया । एत्थ भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि ।

पयडिट्ठाणुवसामणा— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणमेक्कं चेव ट्ठाणं । गोदाउआणं दोण्णि ट्ठाणाणि । मोहणीयस्स अत्थि अट्ठावीस-सत्तावीस-छव्वीस-पणुवीस-चउवीस-एक्कवीसपयडिउवसामणट्ठाणाणि । एदेसिं ट्ठाणाणं एयजीवेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढिउवसामणाओ कायव्वाओ । णामस्स तिउत्तरसदं बिउत्तरसदं छण्णवुदि-पंचाणउदि-तिणउदि-चउरासीदि-बासीदि त्ति सत्तण्णं ट्ठाणाणमुवसामणा अत्थि, सेसाणं णत्थि । एवं पयडिउवसामणा समत्ता ।

ठिदिउवसामणा दुविहा मूलपयडिट्ठिदिउवसामणा उत्तरपयडिट्ठिदिउवसामणा चेदि । तत्थ मूलपयडिट्ठिदिउवसामणाए ताव अद्धाच्छेदो वुच्चदे । तं जहा— णाणावरणस्स उक्कस्सट्ठिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ । जट्ठिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ आवलियाए ऊणाओ । एवं दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं । मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि

उपशामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धी कषायोंके उपशामक विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्वके उपशामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके उपशामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । यहां भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी सम्भावना नहीं है ।

प्रकृतिस्थानउपशामना— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायका एक ही उपशामनास्थान है । गोत्र व आयुके दो उपशामनास्थान हैं । मोहनीयके अट्ठाईस, सत्ताईस, छब्बीस, पच्चीस, चौवीस और इक्कीस प्रकृतियोंके उपशामनास्थान हैं । एक जीवकी अपेक्षा इन स्थानोंके स्वामित्व, काल व अन्तर एवं नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामनाको करना चाहिये । नामकर्म सम्बन्धी एक सौ तीन, एक सौ दो, छ्यानबै, पंचानबै, तेरानबै, चौरासी और ब्यासी प्रकृतियों रूप इन सात स्थानोंकी उपशामना है । शेष स्थानोंकी उपशामना नहीं है । इस प्रकार प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई ।

स्थितिउपशामना दो प्रकार है— मूलप्रकृतिस्थितिउपशामना और उत्तरप्रकृतिस्थिति-उपशामना । उनमें पहिले मूलप्रकृतिस्थितिउपशामनाके अद्धाछेदकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थितिउपशामना एक आवलीसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । इसी प्रकार दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना तथा जस्थितिउपशामनाका कथन करना चाहिये । मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र

आवलियाहि ऊणाओ । आउअस्स पुव्वकोडितिभागेण सादिरेयतेत्तीसंसागरोवमाणि दोआवलिऊणाणि[1] । जट्ठिदि आवलिऊणा । णामा-गोदाणं वीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ ।

जहण्णअद्धाच्छेदो— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदि-उवसामणा सागरोवमस्स तिण्णि-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । मोहणीयस्स सागरोवमं पलिदो० असंखे० भागेण ऊणयं । णामा-गोदाणं सागरोवमस्स वे-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । आउअस्स खुद्दाभवग्गहणसंखेज्जदिभागो । एवमद्धाछेदो समत्तो ।

सामित्तं । तं जहा— सव्वकम्माणं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए सामित्तं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं । जहा अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णट्ठिदिउदीरणासामित्तं कदं तहा उवसामणाट्ठिदिसामित्तं ओघजहण्णम्मि कायव्वं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा अभवसिद्धियपाओग्गट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा एत्थ कायव्वाणि । भुजगारो[2] पदणिक्खेवो वड्ढी च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदा तहा ट्ठिदिउवसामणाए वि कायव्वा । उत्तरपयडि-

---

काल तक होती है । आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम और पूर्वकोटित्रिभागसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थिति उपशामना एक आवलीसे कम उतनी मात्र होती है । नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र होती है ।

जघन्य अद्धाच्छेद— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्य स्थितिउपशामना एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन भाग प्रमाण होती है । वह मोहनीयकी पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र काल तक होती है । नाम व गोत्र कर्मकी एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन दो भाग मात्र होती है । आयुकी जघन्य स्थितिउपशामना क्षुद्रभवग्रहणके संख्यातवें भाग मात्र होती है । इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ ।

स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें सब कर्मोंका स्वामित्व किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये । जिस प्रकारसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य स्थितिउदीरणाका स्वामित्व किया गया है उसी प्रकारसे ओघ जघन्यमें उपशामना-स्थितिस्वामित्वको करना चाहिये । एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंको जैसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य स्थितिउदीरणामें किया गया है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा जैसे स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे स्थितिउपशामनामें भी करना

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'आवलिऊणाणि' इति पाठः । २ अप्रतौ 'तहा कायव्वाणि एत्थ भुजगारो' इति पाठः ।

ट्ठिदिउवसामणाए जहा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा। एवं ट्ठिदिउवसामणा समत्ता।

अणुभागउवसामणा दुविहा मूलपयडिअणुभागुवसामणा उत्तरपयडिअणुभागुवसामणा चेदि। मूलपयडिअणुभागुवसामणा सुगमा। उत्तरपयडिअणुभागुवसामणाए पयदं— तत्थ उक्कस्सेण जहा उक्कस्सओ अणुभागसंतकम्मस्स पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सओ अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो। जहा अक्खवय-अणुवसामयपाओग्गो जहण्णओ अणुभागसंतकम्मपमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णगो अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो। सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो च जहा अणुभागसंतकम्मस्स परूविदो तहा अणुभागुवसामणाए वि परूवेयव्वो। एत्तो अणुभागुवसामणाए तिव्व-मंदप्पाबहुअं। तं जहा— उक्कस्सेण छावट्ठिपदेहि जहा उक्कस्सए अणुभागबंधे अप्पाबहुअं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं। एवं जहण्णं पि कायव्वं। एवमणुभागउवसामणा समत्ता। पदेसउवसामणा जाणिदूण परूवेयव्वा।

विपरिणामउवक्कमो चउव्विहो पगदिविपरिणामणा ट्ठिदिविपरिणामणा अणुभागविपरिणामणा पदेसविपरिणामणा चेदि। पयडिविपरिणामाणा दुविहा[1] मूलपयडिविपरिणामणा

चाहिये। उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामनाकी प्ररूपणा जैसे उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। इस प्रकार स्थितिउपशामना समाप्त हुई।

अनुभागउपशामना दो प्रकारकी है— मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना और उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना। इनमें मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना सुगम है। उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना प्रकृत है— उसमें उत्कर्षसे जैसे उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। जिस प्रकार अक्षपक और अनुपशामक प्रायोग्य जघन्य अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है उसी प्रकारसे जघन्य अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्षकी प्ररूपणा जैसे अनुभागसत्कर्ममें की गयी है वैसे ही उसे अनुभागउपशामनामें भी करना चाहिये। यहां अनुभागउपशामनामें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— उत्कर्षसे छ्यासठ पदोंके द्वारा जिस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागबन्धमें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही यहां भी उसे करना चाहिये। इसी प्रकरसे उसके जघन्य अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउपशामना समाप्त हुई। प्रदेशउपशामनाकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

विपरिणामउपक्रम चार प्रकारका है— प्रकृतिविपरिणामना, स्थितिविपरिणामना, अनुभागविपरिणामना और प्रदेशविपरिणामना। इनमें प्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— मूलप्रकृति-

---

१ अ-का-ताप्रतिषु त्रुटितोऽयं अग्रिम 'दुविहा' पदपर्यन्तः पाठो मप्रतितोऽत्र योजितः।

उत्तरपयडिविपरिणामणा त्ति । तत्थ मूलपयडिविपरिणामणा दुविहा देसविपरिणामणा सव्वविपरिणामणा चेदि । एत्थ अट्ठपदं — जासिं पयडीणं देसो णिज्जरिज्जदि अधट्ठिदिगलणाए सा देसपयडिविपरिणामणा णाम । जा पयडी सव्वणिज्जराए णिज्जरिज्जदि सा सव्वविपरिणामणा णाम । एदेण अट्ठपदेण मूलपयडिविपरिणामणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च णेयव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च एत्थ णत्थि ।

उत्तरपयडिविपरिणामणाए अट्ठपदं । तं जहा— णिज्जिण्णा पयडी देसेण सव्वणिज्जराए वा, अण्णपयडीए देससंकमणेण वा सव्वसंकमणेण वा जा संकामिज्जदि एसा उत्तरपयडिविपरिणामणा णाम । एदेण अट्ठपदेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च कायव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि । पुणो पयडिट्ठाणविपरिणामणा परूवेयव्वा । एवं पयडिविपरिणामणा समत्ता ।

ट्ठिदिविपरिणामणाए अट्ठपदं— ट्ठिदी ओवट्टिज्जमाणा वा उव्वट्टिज्जमाणो[1] वा अण्णं पयडिं संकामिज्जमाणा वा विपरिणामिदा[2] होदि । एदेण अट्ठपदेण जहा ठिदिसंकमो तहा अविसेसेण ट्ठिदिविपरिणामणा कायव्वा ।

विपरिणामना और उत्तरप्रकृतिविपरिणामना । उनमें मूलप्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— देशविपरिणामना और सर्वविपरिणामना । यहां अर्थपद— जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनके द्वारा एक देश निर्जराको प्राप्त होता है वह देशप्रकृतिविपरिणामना कही जाती है। जो प्रकृति सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जराको प्राप्त होती है वह सर्वविपरिणामना कही जाती है । इस अर्थपदके अनुसार मूलप्रकृतिविपरिणामनाके स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी ले जाना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं ।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामनामें अर्थपद । यथा— देशनिर्जरा अथवा सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण प्रकृति अथवा जो प्रकृति देशसंक्रमण या सर्वसंक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त करायी जाती है यह उत्तरप्रकृतिविपरिणामना कहलाती है । इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्व,काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं । तत्पश्चात् प्रकृतिस्थानविपरिणामनाकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिविपरिणामना समाप्त हुई ।

स्थितिविपरिणामनामें अर्थपद— अपवर्तमान, उद्वर्तमान अथवा अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण करायी जानेवाली स्थिति विपरिणामिता (स्थितिविपरिणामना) कहलाती है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे स्थितिसंक्रम किया गया है वैसे ही निर्विशेष स्वरूपसे स्थितिविपरिणामनाको भी करना चाहिये ।

---

१ अ-काप्रत्योः 'उवट्टिज्जमाणा', ताप्रतौ '[उ] वड्ढिज्जमाणा' इति पाठः । २ अप्रतौ 'विपरिणामदा' इति पाठः ।

अणुभागविपरिणामणाए अट्ठपदं— ओकड्डिदो वि उक्कड्डिदो वि अण्णपयडिं णीदो वि अणुभागो विपरिणामिदो होदि। एदेण अट्ठपदेण जहा अणुभागसंकमो तहा णिरवयवं अणुभागविपरिणामणा कायव्वा।

पदेसविपरिणामणाए अट्ठपदं— जं पदेसग्गं णिज्जिण्णं अण्णपयडिं वा संकामिदं सा पदेसविपरिणामणा णाम। एदेण अट्ठपदेण जारिसो पदेससंकमो तारिसी पदेसविपरिणामणा। णवरि जं णिज्जरिज्जमाणं उदएण तमदिरेगं पदेससंकमादो विपरिणामणाए। एवमुवक्कमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

अनुभागविपरिणामनामें अर्थपद— अपकर्षणप्राप्त, उत्कर्षणप्राप्त अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया भी अनुभाग विपरिणामित होता है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे अनुभागसंक्रम किया गया है वैसे ही पूर्णतया अनुभागविपरिणामनाको करना चाहिये।

प्रदेशविपरिणामनामें अर्थपद— जो प्रदेशाग्र निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त हुआ है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे प्रदेशसंक्रम किया गया है वैसे ही प्रदेशविपरिणामनाको करना चाहिये। विशेष इतना है कि जो प्रदेशाग्र उदयके द्वारा निर्जीर्यमाण है वह प्रदेशसंक्रमसे विपरिणामनामें अधिक है। इस प्रकार उपक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

उदयाणियोगद्दारं

पणमिय संतिजिणिंदं घाइयणिस्सेसदोससंघायं ।
उदयाणियोगदारं किंचि समासेण वण्णेहं ॥ १ ॥

एत्तो उदओ कायव्वो— णामादिउदएसु एत्थ केण उदएण पयदं ? णोआगमदो कम्मदव्वउदएण पयदं । सो कम्मदव्वुदओ चउव्विहो । तं जहा— पयडिउदओ ट्ठिदिउदओ अणुभागउदओ पदेसउदओ चेदि । तत्थ पयडिउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि । मूलपयडिउदओ चिंतिय वत्तव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । तत्थ सामित्तं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं को वेदओ ? सव्वो छदुमत्थो । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तमादिं कादूण उवरिमो अण्णदरो तप्पाओग्गो वेदओ । णवरि थीणगिद्धितियस्स देव-णेरइय-अप्पमत्तसंजदा आहारसरीरमुट्ठावियपमत्तसंजदा च अवेदया । अण्णेसिमुवदेसेण एदे पुव्वुत्ता अवेदया होदूण असंखेज्जवस्साउआ च उत्तरविउव्विदतिरिक्ख-मणुस्सा च अवेदया । सादासादाणमण्णदरो संसारत्थो तप्पाओग्गो वेदओ ।

मिच्छत्तं सव्वो मिच्छाइट्ठी वेदयदि, सम्मामिच्छत्तं सव्वसम्मामिच्छाइट्ठी, सम्मत्तं

समस्त दोषसंघातको नष्ट कर देनेवाले शांति जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं कुछ संक्षेपसे उदयानुयोगद्वारका वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

यहां उदयकी प्ररूपणा की जाती है— नामउदयादिकोंमें यहां कौनसा उदय प्रकृत है ? यहां नोआगमकर्मद्रव्यउदय प्रकृत है । वह कर्मद्रव्यउदय चार प्रकारका है । यथा— प्रकृतिउदय, स्थितिउदय, अनुभागउदय और प्रदेशउदय । उनमें प्रकृतिउदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय । मूलप्रकृतिउदयका कथन विचार कर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । उसमें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, चक्षु आदि चार दर्शनावरण, और पांच अन्तरायका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी छद्मस्थ जीव होते हैं । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वेदक कौन होता है ? शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयवर्तीको आदि करके आगेका कोई भी तत्प्रायोग्य जीव उनका वेदक होता है । विशेष इतना है कि देव, नारकी, अप्रमत्तसंयत तथा आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले प्रमत्तसंयत भी स्त्यानगृद्धित्रिकके अवेदक होते हैं । अन्य आचार्योंके उपदेशके अनुसार ये पूर्वोक्त जीव स्त्यानगृद्धित्रिकके अवेदक हैं, इनके अतिरिक्त असंख्यातवर्षायुष्क तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले तिर्यंच व मनुष्य भी उसके अवेदक होते हैं । साता व असाता वेदनीयका वेदक तत्प्रायोग्य अन्यतर संसारी जीव होता है ।

मिथ्यात्वका वेदन सब ही मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वका वेदन सब

वेदयसम्माइट्ठी सव्वो। अणंताणुबंधीणं मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा वेदओ। अपच्चक्खाणकसायाणं असंजदो वेदओ। पच्चक्खाणावरणीयस्स को वेदओ? असंजदो संजदासंजदो वा वेदओ। तिण्णं संजलणाणं अप्पप्पणो बंधज्झवसाणेसु वट्टमाणओ। लोहसंजलणाए को वेदओ? अण्णदरो सकसाओ। छण्णं णोकसायाणं को वेदओ? अण्णदरो णियट्टिम्हि[1] वट्टमाणगो। णवरि पढमसमयदेवो णियमा साद-हस्स-रदीणं वेदगो। पढमसमयणेरइओ णियमा असाद-अरदि-सोगाणं वेदओ। पुरिसवेदं पुरिसो, इत्थिवेदमित्थी, णवुंसयवेदं णवुंसओ वेदेदि।

मणुसाउअं सव्वो मणुस्सो, णिरयाउअं सव्वो णेरइओ, तिरिक्खाउअं सव्वो तिरिक्खो, देवाउअं सव्वो देवो वेदेदि।

मणुसगइं मणुस्सो, णिरयगइं णेरइओ, तिरिक्खगइं तिरिक्खो, देवगइं देवो वेदेदि। जादिणामाणं गदिभंगो। ओरालियसरीरस्स को वेदगो? ओरालियसरीरो सजोगो। ओरालियसरीरबंधण-संघादाणं ओरालियसरीरभंगो। ओरालियसरीरअंगोवंग-वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं को वेदगो? सत्थाणे आहारओ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यक्त्वका वेदन सब वेदकसम्यग्दृष्टि करते हैं। अनन्तानुबन्धी कषायोंका वेदक मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि होता है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंका वेदक असंयत होता है। प्रत्याख्यानावरणका वेदक कौन होता है? उसका वेदक असंयत और संयतासंयत होता है। तीन संज्वलन कषायोंका वेदक अपने अपने बन्धाध्यवसानोंमें वर्तमान जीव होता है। संज्वलनलोभका वेदक कौन होता है? उसका वेदक अन्यतर सकषाय जीव होता है। छह नोकषायोंका वेदक कौन होता है? उनका वेदक निवृत्ति अवस्थामें वर्तमान (मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक) अन्यतर जीव होता है। विशेष इतना है कि प्रथम समयवर्ती देव नियमसे सातावेदनीय, हास्य और रतिका वेदक होता है। प्रथम समयवर्ती नारकी नियमसे असातावेदनीय, अरति और शोकका वेदक होता है। पुरुषवेदका वेदन पुरुष, स्त्रीवेदका वेदन स्त्री, और नपुंसकवेदका वेदन नपुंसक करता है।

मनुष्यायुका वेदन सब मनुष्य, नारकायुका वेदन सब नारकी, तिर्यगायुका वेदन सब तिर्यंच और देवायुका वेदन सब देव करते हैं।

मनुष्यगतिका वेदन मनुष्य, नरकगतिका वेदन नारकी, तिर्यग्गतिका वेदन तिर्यंच, और देवगतिका वेदन देव करता है। जाति नामकर्मोंके उदयकी प्ररूपणा गतिनामकर्मोंके समान है। औदारिकशरीरका वेदक कौन होता है? उसका वेदक औदारिकशरीरसे संयुक्त सयोग जीव होता है। औदारिकशरीरबन्धन और संघातके उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, इन दोनोंके आंगोपांग, बन्धन और संघातका वेदक कौन होता है? इनका वेदक स्वस्थानमें वर्तमान आहारक जीव होता है। तैजस और

---

१ अ-ताप्रत्योः 'अणियट्टिम्हि' इति पाठः।

तेजा-कम्मइय-तप्पाओग्गबंधण-संघादाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

छण्णं संठाणाणं को वेदओ ? आहारओ[1] सजोगो । छण्णं संघडणाणं को वेदओ ? जो जेण आहारओ सो णियमा वेदओ । वण्ण-गंध-रस-फासाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो । तिण्णमाणुपुव्वीणं को वेदओ ? पढमसमयतब्भवत्थो [बिदियसमय-तब्भवत्थो] वा । तिरिक्खाणुपुव्वीए वेदओ को होदि ? पढमसमय-दुसमय-तिसमय-तब्भवत्थो वा । अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

उवघादस्स को वेदओ ? आहारओ । परघादस्स को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगो । आदावुज्जोवाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तप्पाओग्गो । उस्सासस्स आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव चरिमसमयउस्सासणिरोहकारओ त्ति ताव वेदओ । पसत्थापसत्थविहायगईणं को वेदगो ? तसो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगो । तस-बादर-पज्जत्तणामाणं को वेदओ ? सजोगो अजोगो वा । पत्तेयसरीरस्स को वेदओ ? आहारओ । थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं को वेदओ ? थावर-सुहुम-

---

कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघातका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी सयोग प्राणी होते हैं ।

छह संस्थानोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक योगसहित आहारक जीव होता है । छह संहननोंका वेदक कौन होता है ? जो जिस संहननसे आहारक है वह नियमसे उसका वेदक होता है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक योग सहित सब जीव होते हैं । तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा [द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ] जीव होता है । तिर्यगानुपूर्वीका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक प्रथम समयवर्ती, द्वितीय समयवर्ती अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीव होता है । अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सब योग सहित प्राणी होते हैं ।

उपघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । परघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ सयोग प्राणी होता है । आतप और उद्योतका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ तत्प्रायोग्य जीव होता है । उच्छ्वासका वेदक आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक चरम समयवर्ती उच्छ्वास-निरोधकारक है तब तक होता है । प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ योगसे संयुक्त त्रस जीव है । त्रस, बादर और पर्याप्त नाम-कर्मोंका वेदक कौन है ? उनका वेदक योगसे सहित और उससे रहित भी जीव होता है । प्रत्येक-शरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक क्रमशः स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त

---

१ ताप्रतौ 'आहारो' इति पाठः ।

अपज्जत्तया। साहारणसरीरस्स को वेदओ? आहारओ। जसकित्ति-सुभग-आदेज्जाणं को वेदओ? सजोगो अजोगो वा। अजसकित्ति-दुभग-अणादेज्जाणं को वेदओ? अगुण-पडिवण्णो अण्णदरो तप्पाओग्गो। तित्थयरणामाए को वेदओ? सजोगो अजोगो वा। उच्चागोदस्स तित्थयरभंगो। णीचागोदस्स अणादेज्जभंगो। सुस्सर-दुस्सराणं को वेदओ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव भासाणिरोहस्स अकारओ त्ति। एवं सामित्तं समत्तं।

एगजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण वत्तव्वाणि। एत्तो अप्पाबहुअं पि जहा पयडिउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि णाणत्तं— मणुसगइणामाए मणुस्साउअस्स च तुल्ला वेदया। एवं सेसाणं पि गदि-आउआणं च। पवाइज्जंतेण उवएसेण हस्स-रदिवेदएहिंतो सादवेदया जीवा विसेस०। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जजीवमेत्तेण। अण्णेणं[2] उवएसेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया विसेसा० असंखे० भागमेत्तेण। जुत्तीए च विसेसाहियत्तं णव्वदे। तं जहा— सव्वो आउअघादओ णियमा जेण असादवेदओ हस्स-रदीसु भज्जो तेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया असंखेज्जा[3] भागा

जीव होते हैं। साधारणशरीरका वेदक कौन होता है? उसका वेदक आहारक जीव होता है। यशकीर्ति, सुभग और आदेयका वेदक कौन होता है? इनका वेदक योग सहित और उससे रहित भी जीव होता है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका वेदक कौन होता है? उनका वेदक गुणप्रतिपन्नसे भिन्न तत्प्रायोग्य अन्यतर जीव होता है। तीर्थंकर नामकर्मका वेदक कौन होता है? उसका वेदक सयोग व अयोग जीव भी होता है। उच्चगोत्रके उदयका कथन तीर्थंकर प्रकृतिके समान है। नीचगोत्रके उदयका कथन अनादेयके समान है। सुस्वर और दुस्वरका वेदक कौन होता है? उनका वेदक भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक भाषाके निरोधको नहीं करता तब तक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। अल्पबहुत्व भी जैसे प्रकृतिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये। परन्तु यहां इतनी विशेषता है— मनुष्यगति नामकर्म और मनुष्यायुके वेदकोंकी संख्या समान है। इसी प्रकार शेष भी गतिनामकर्मों और आयु कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। परस्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार हास्य और रतिके वेदकोंसे सातावेदनीयके वेदक जीव विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे वे विशेप अधिक हैं? संख्यात जीव मात्रसे विशेप अधिक हैं। अन्य उपदेशके अनुसार सातावेदनीयके वेदकोंकी अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेप अधिक हैं। इनकी विशेषाधिकता युक्तिसे भी जानी जाती है। यथा— आयुके घातक सब जीव नियमसे असाताके वेदक होकर भी चूंकि हास्य व रतिके वेदनमें भजनीय हैं इसीलिए सातावेदकोंकी

१. प्रतिपु 'अजसकित्ति-' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'असंखेज्ज'- इति पाठः।

विसेसा० । अरदि-सोगवेदया थोवा । असादवेदया विसे० । के० मेत्तेण ? पवाइज्जंतेण उवदेसेण संखेज्जजीवमेत्तेण विसे० । अण्णेणं[1] उवदेसेण असंखे० भागमेत्तेण विसे० । एदाणि पयडिउदीरणअप्पाबहुआदो पयडिउदयअप्पाबहुअस्स णाणत्ताणि[2] । भुजगार-पदणिक्खेव[3]-वड्ढीओ णत्थि । जहा पयडिट्ठाणउदीरणा तहा पयडिट्ठाणउदओ वि कायव्वो । एवं पयडिउदओ समत्तो ।

एत्तो ट्ठिदिउदओ दुविहो मूलपयडिट्ठिदिउदओ उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ चेदि । मूलपयडिट्ठिदिउदए अट्ठपदं— उदओ दुविहो पओअसा ट्ठिदिक्खएण चेदि । ट्ठिदिक्खओ उदओ[4] सुगमो । जो सो पओअसा उदओ सो दुविहो संपत्तीदो सेचीयादो च । संपत्तीदो[5] एगा ट्ठिदी उदिण्णा, संपहि उदिण्णपरमाणूणमेगसमयावट्ठाणं मोत्तूण दुसमयादिअवट्ठाणंतराणुवलंभादो । सेचीयादो अणेगाओ ट्ठिदीओ उदिण्णाओ, एण्हि जं पदेसग्गं उदिण्णं तस्स दव्वट्ठियणयं पडुच्च पुव्विल्लभावोवयारसंभवादो । एदेण अट्ठपदेण ट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो चउव्विहो उक्कस्सो अणुक्कस्सो जहण्णो अजहण्णो चेदि । णाणावरणस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिउदओ तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ । दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं णाणा-

अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भागसे विशेष अधिक हैं । अरति व शोकके वेदक स्तोक हैं । उनसे असातावेदनीयके वेदक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? पारम्परित उपदेशके अनुसार वे संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं । अन्य उपदेशके अनुसार वे असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं । प्रकृतिउदीरणा सम्बन्धी अल्पबहुत्वसे प्रकृतिउदय सम्बन्धी अल्पबहुत्वमें ये ही कुछ विशेषतायें हैं । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं । जैसे प्रकृतिस्थानउदीरणा की गयी है वैसे ही प्रकृतिस्थानउदयको भी करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिउदय समाप्त हुआ ।

यहां स्थितिउदय दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिस्थितिउदय और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदय । मूलप्रकृतिस्थितिउदयके विषयमें अर्थपद— प्रयोगजनित और स्थितिक्षयजनितके भेदसे उदय दो प्रकारका है । उनमें स्थितिक्षयजनित उदय सुगम है । जो वह प्रयोगजनित उदय है वह दो प्रकारका है— संप्राप्तिजनित और निषेकजनित । संप्राप्तिकी अपेक्षा एक स्थिति उदीर्ण होती है, क्योंकि, इस समय उदयप्राप्त परमाणुओंके एक समय रूप अवस्थानको छोड़कर दो समय आदि रूप अवस्थानान्तर पाया नहीं जाता । निषेककी अपेक्षा अनेक स्थितियां उदीर्ण होती हैं, क्योंकि, इस समय जो प्रदेशाग्र उदीर्ण हुआ है उसके द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा पूर्वीयभावके उपचारकी सम्भावना है । इस अर्थपदके अनुसार स्थितिउदयप्रमाणानुगम चार प्रकार है— उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य । ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायके स्थितिउदयका प्रमाण ज्ञानावरणके

१ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'णाणत्ताणं' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'णिक्खेवो' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'चे ट्ठिदिक्खाओदओ' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'संपत्ती' इति पाठः ।

वरणीयभंगो। मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ। आउअस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाए आवलियाए ऊणाणि। णामा-गोदाणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ।

जहण्णट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो। तं जहा— अट्ठण्णं पि मूलपयडीणं जहण्णओ ट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी। एत्तो सामित्तं। तं जहा— उक्कस्सट्ठिदिउदयसामित्तं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं। जहण्णट्ठिदिउद० सामी उच्चदे— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? चरिम [समय] छदुमत्थमादिं कादूण जाव आवलियचरिमसमयछदुमत्थो त्ति। मोहणीयस्स जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? चरिमसमयसकसायस्स, तमादिं काऊण जाव आवलियचरिमसमयसकसाओ त्ति। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? पढमसमयअजोगिस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति। आउअ-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? पढमसमयअप्पमत्तस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति। आउअस्स अण्णो वि जहण्णट्ठिदिउदओ अत्थि जस्स आउअमुदयावलियं पविट्ठं।

समान है। मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। आयुका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम एक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है। नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र है।

जघन्य स्थितिउदयके प्रमाणानुगमका कथन करते हैं। यथा— आठों ही मूल प्रकृतियोंके जघन्य स्थितिउदयका प्रमाण एक स्थिति है। अब यहां स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— उत्कृष्ट स्थितिउदयके स्वामित्वकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयके स्वामित्वका कथन करते हैं— ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थको आदि लेकर जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है। मोहनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह अन्तिम समयवर्ती सकषाय जीवके तथा उसको आदि लेकर जिसके चरम समयवर्ती सकषाय होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह प्रथम समयवर्ती अयोगीके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है। आयु और वेदनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह प्रथम समयवर्ती अप्रमत्तके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है। आयुका अन्य भी जघन्य स्थितिउदय उसके होता है जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है।

१ ताप्रतौ [सम] इति पाठः। २ 'एत्तो सामित्तं' इत्यतः प्राक्तनोऽयं पाठस्ताप्रतौ नास्ति। ३ अप्रतौ 'अट्ठं पि' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः '-ट्ठिदिउदओ सामी०' इति पाठः। ५ ताप्रतौ '-ट्ठिदि [ओ] उदओ' इति पाठः।

एयजीवेण कालो। तं जहा— जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो परूविदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदयकालो वि परूवेयव्वो। जहण्णट्ठिदिउदओ। तं जहा— णामा-गोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिउदिउदओ[1] केवचिरं०? जहण्णुक्क०[2] अंतोमुहुत्तं। णवरि वेयणीय० जह० एयसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। आउअस्स जह० ट्ठिदिउदओ केव०? जह० एगावलिया, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुण्णं पि घाइकम्माणं जह० केवचिरं०? जहण्णुक्क० आवलियाँ[3]। सत्तण्णं कम्माणमजहण्णट्ठिदिउदयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो। मोहणीयं वेयणीयं च पडुच्च सादिओ सपज्जवसिदो। तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो[4] तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। आउअस्स अजहण्णट्ठिदिवेदयकालो जह० अंतोमुहुत्तमेगसमओ वा, उक्क० तेत्तीससागरोवमाणि आवलियूणाणि।

एयजीवेण अंतरं। तं जहा— जहा[5] उक्कस्सट्ठिदिउदीरयंतरं परूवियं तहा उक्कस्सट्ठिदिवेदयंतरं परूवेयव्वं। आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं आवलियूणं एगसमओ वा, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। पंचण्णं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं णत्थि। मोहणीय-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह०

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयकी प्ररूणा की जाती है। यथा— नाम, गोत्र और वेदनीयका जघन्य स्थिति-उदय कितने काल रहता है? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है। विशेष इतना है कि वेदनीयके जघन्य स्थितिउदयका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। आयुकर्मका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र रहता है। चारों ही घातिया कर्मोंका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक आवली मात्र रहता है। सात कर्मोंके अजघन्य स्थितिउदयका काल अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित है। मोहनीय व वेदनीयकी अपेक्षा वह सादि-सपर्यवसित है। इसका जो सादि-सपर्यवसित काल है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। आयुकी अजघन्य स्थितिका वेदककाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका कथन करते हैं। यथा— जिस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरकके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार उत्कृष्ट स्थितिवेदकके अन्तरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। आयुकर्मके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र होता है। पांच कर्मोंके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर नहीं होता। मोहनीय और वेदनीयके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्य-

१ प्रतिषु '-ट्ठिदिउदीरओ' इति पाठः। २ प्रतिषु 'अणुक्क०' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'आवलियाए', काप्रतौ 'आवलिया०' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो' इत्येतावान् पाठो नोपलभ्यते। ५ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम्।

अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए[1] कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए कादव्वाणि। एदाणि चेव जहण्णट्ठिदिउदए वत्तइस्सामो। तं जहा— भंगविचए ताव अट्ठपदं। जो जहण्णट्ठिदीए वेदओ सो अजहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ, जो अजहण्णट्ठिदीए वेदगो सो जहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ। जाओ पयडीओ वेदयदि तासु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णियाए ट्ठिदीए णाणाजीवा वेदया णियमा अत्थि। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अवेदया, सिया अवेदया च वेदओ च, सिया अवेदया च वेदया च। एवं तिण्णिभंगा। अजहण्णियाए[2] ट्ठिदीए वेदयाणं तव्विवरीएण तिण्णिभंगा वत्तव्वा।

[णाणाजीवेहि कालो–] आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं०? सव्वद्धा। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं०? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदया जह० आवलि० उवसामगं पडुच्च मोहणीयस्स एगसमओ वा, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अट्ठण्णं पि कम्माणं अजहण्णट्ठिदिवेदयाणं णाणा-

---

से अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इन्हींका कथन जघन्य स्थितिउदयमें किया जाता है। यथा—पहिले भंगविचयमें अर्थपद बतलाते हैं। जो जीव जघन्य स्थितिका वेदक होता है वह अजघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है, जो अजघन्य स्थितिका वेदक होता है वह जघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है। जिन प्रकृतियोंका वेदन करता है वे प्रकृत हैं, अवेदकोंमें व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदके अनुसार आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक नाना जीव नियमसे हैं। शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अवेदक, कदाचित् बहुत अवेदक व एक वेदक, तथा कदाचित् अवेदक भी बहुत और वेदक भी बहुत; इस प्रकार तीन भंग हैं। इनकी अजघन्य स्थितिके वेदकोंके तीन भंग पूर्वोक्त भंगोंकी अपेक्षा विपरीत (कदाचित् सब जीव वेदक, कदाचित् बहुत वेदक व एक अवेदक, तथा कदाचित् बहुत वेदक और बहुत अवेदक भी) क्रमसे कहने चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं? सर्वकाल रहते हैं। नाम व गोत्र कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं? वे नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं। शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक जघन्यसे आवली मात्र, अथवा उपशामककी अपेक्षा मोहनीयकी उक्त स्थितिके वेदक जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहते हैं। आठों ही कर्मों सम्बन्धी

---

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'च तिण्णिभंगा एवं अजहण्णियाए' इति पाठः।

जीवे पडुच्च सव्वद्धं ।

णाणाजीवेहि अंतरं— आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदयाणं[1] णत्थि अंतरं। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदगंतरं[2] जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा।

सण्णियासो। तं जहा— णाणावरणस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ मोहणीयस्स अवेदओ, णामा-गोदाणं णियमा अजहण्णट्ठिदिवेदओ, जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया[3]। सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ। दंसणावरणंतराइयाणं णाणावरणभंगो। वेदणीयस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ चदुण्णं घादिकम्माणं सिया वेदओ सिया णोवेदओ। जदि वेदओ सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वेदेदि। जदि अजहण्णं दुगुणमादिं कादूण णिरंतरं जाव असंखे० गुणं वेदेदि। आउअस्स णियमा जहण्णं वेदेदि। णामा-गोदाणं जहण्णमजहण्णं वा वेदेदि। जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं वेदेदि। जहा वेयणीयं घाइकम्मेहि सण्णिकासिदं तहा आउअं पि घाइकम्मेहि सण्णिकासियव्वं।

आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ णामा-गोद[4]-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिमजहण्णट्ठिदिं वा वेदेदि। जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदओ

अजघन्य स्थितिके वेदकोंका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर नहीं होता। शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है।

अब संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—ज्ञानावरणकी जघन्य स्थितिका वेदक मोहनीयका अवेदक तथा नाम व गोत्रकी नियमसे अजघन्य स्थितिका वेदक होता है। जघन्यकी अपेक्षा यह अजघन्य स्थिति असंख्यातगुणी अधिक है। वह शेष कर्मोंकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक होता है। दर्शनावरण और अन्तरायके संनिकर्षकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक चार कर्मोंका कदाचित् वेदक और कदाचित् नोवेदक होता है। यदि वह वेदक होता है तो कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य स्थितिका वेदन करता है। यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो दुगुणी स्थितिको आदि करके निरन्तर असंख्यातगुणी तकका वेदन करता है। वह आयु कर्मकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, नाम व गोत्रकी जघन्य अथवा अजघन्यका वेदन करता है। यदि वह अजघन्यका वेदन करता है तो नियमसे असंख्यातगुणीका वेदन करता है। जिस प्रकार घातिया कर्मोंके साथ वेदनीयका संनिकर्ष बतलाया गया है उसी प्रकारसे घातिया कर्मोंके साथ आयुका भी संनिकर्ष बतलाना चाहिये।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव नाम, गोत्र और वेदनीयकी जघन्य स्थिति अथवा अजघन्य स्थितिका वेदन करता है। यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो नियमसे

१ प्रतिषु 'वेदणीयाणं' इति पाठः। २ अप्रतौ 'वेदगंतं', काप्रतौ 'वेदगं', ताप्रतौ 'वेदगत्तं' इति पाठः। ३ अ-का-ताप्रतिषु 'जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया। सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ' इत्ययं पाठो नास्ति, मप्रतितोऽत्र योजितः सः। ४ अप्रतौ 'गोदाणं' इति पाठः।

आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिं वेदेदि । सेसाणमवेदगो । मोहणिज्जस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदगो। सेसाणं कम्माणं णियमा अजहण्णं असंखेज्जगुणं वेदगो । एवं सण्णियासो समत्तो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए अप्पाबहुअं कदं तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए कायव्वं । जहण्णट्ठिदिउदए अप्पाबहुअं । तं जहा— अट्ठण्णं पि कम्माणं जहण्णट्ठिदिउदओ तत्तियो[1] चेव । एवं अप्पाबहुअं गदं । जहा ट्ठिदिउदीरणाए भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च कदा तहा एत्थ वि ट्ठिदिउदए कायव्वा । एवं मूलपयडिट्ठिदिउदओ समत्तो ।

एत्तो उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ— तत्थ अट्ठपदं पुव्वं व कायव्वं । जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि पमाणाणुगमो कायव्वो । णवरि उदयट्ठिदीए अब्भहियं । जहण्णट्ठिदिउदयपमाणाणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-सादासादवेदणीय-लोभसंजलण-तिण्णिवेद-सम्मत्त-मिच्छत्त-आउचदुक्क-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-जसकित्ति-सुभगादेज्ज-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी एगसमयकालो ।

असंख्यातगुणीका वेदन करता है। नाम व गोत्रकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, शेष कर्मोंका वह अवेदक है। मोहनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक तथा शेष कर्मोंकी नियमसे असंख्यातगुणी अजघन्य स्थितिका वेदक होता है । इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा—जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी उसे करना चाहिये । जघन्य स्थितिउदयमें अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा— आठों ही कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदय उतना ही है अर्थात् समान है । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिका कथन जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदय समाप्त हुआ ।

यहां उत्तरप्रकृतिस्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है— उसमें अर्थपद पहिलेके ही समान करना चाहिये । जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थिति-उदयमें भी प्रमाणानुगम करना चाहिये । विशेष इतना है कि उदयस्थितिमें अधिक है । जघन्य स्थितिके उदयका प्रमाणनुगम कहते हैं। वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, संज्वलनलोभ, तीन वेद, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार आयु कर्म, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिका उदय एक समय कालवाली एक स्थिति मात्र है । संज्वलनक्रोध,

---

१ अ-काप्रत्योः 'तत्तिया' इति पाठः ।

कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णट्ठिदिउदओ दोण्णिट्ठिदीओ। जट्ठिदिउदओ आवलिया समयाहिया। सेसाणं कम्माणं जहा जहण्णट्ठिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवमद्धाछेदो। समत्तो।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणिओगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि कायव्वाणि। जहण्णट्ठिदिउदीरणादो जं किंचि णाणत्तं पि सामित्तादो साधेदूण कायव्वं। भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढिउदओ च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदो तहा ट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवं ट्ठिदिउदओ समत्तो।

एत्तो अणुभागउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि। तत्थ मूलपयडिअणुभागउदए चउव्वीस अणियोगद्दाराणि परूविय पुणो भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिउदओ समत्तो भवदि। एत्तो उत्तरपयडिअणुभागुदए तत्थ पमाणाणुगमो जहा अणुभागुदीरणाए परूविदो तहा एत्थ वि परूवेयव्वो। पच्चयपरूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा त्ति एदेहि अणिओगद्दारेहि अणुभागपरूवणं काऊण तदो सामित्तं जहा अणुभागउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि जहण्णसामित्ते णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-

---

मान और मायाकी जघन्य स्थितिका उदय दो स्थिति मात्र होता है। जस्थितिउदय एक समय अधिक आवली मात्र होता है। शेष कर्मोंके प्रमाणानुगमका कथन जैसे जघन्य स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही जघन्य स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिदयमें भी करना चाहिये। यहां जघन्य स्थितिउदीरणाकी अपेक्षा जो कुछ विशेषता है उसे भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदय जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार स्थिति-उदय समाप्त हुआ।

यहां अनुभाग उदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय। उनमेंसे मूलप्रकृतिअनुभागउदयमें चौबीस अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर देनेपर मूलप्रकृतिअनुभागउदय समाप्त हो जाता है। यहां उत्तरप्रकृति-अनुभागउदयमें उनमेंसे प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा जैसे अनुभागउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। प्रत्ययप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा अनुभागकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां अनुभागउदयमें भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि जघन्य स्वामित्वमें कुछ विशेषता है, उसे कहते हैं। यथा—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, तीन वेद, संज्वलन-

तिण्णिवेद-लोहसंजलण-पंचअंतराइयाणं जहण्णओ अणुभागउदओ कस्स ? जो एदेसिं कम्माणं जहण्णअणुभागउदीरओ होदूण तदो आवलियाए अदिक्कंताए सो चेव जहण्णाणुभागवेदओ होदि । एवं जहण्णाणुभागुदीरणासामित्तादो जहण्णाणुभागउदयस्स सामित्तस्स णाणत्तं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढि त्ति एदेहि अणियोगद्दारेहि अणुभागउदीरणादो अणुभागउदयस्स णाणत्ताभावादो जहा एदेहि अणियोगद्दारेहि अणुभागउदीरणा परूविदा तहा अणुभागउदओ परूवेयव्वो । एवमणुभागउदओ समत्तो ।

एत्तो पदेसउदओ दुविहो मूलपयडिपदेसउदओ उत्तरपयडिपदेसउदओ चेदि । तत्थ मूलपयडिपदेसउदओ सव्वाणिओणद्दारेहि जाणिऊण परूवेयव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । सामित्तं जाणावणट्ठं इमाओ एत्थ दस गुणसेडीओ परूवेदव्वाओ । तं जहा—

सम्मत्तुप्पत्तीए सावय विरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ ५ ॥
खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा भवे असंखेज्जा ।
तव्विवरीओ कालो संखेज्जगुणाए सेडीए[1] ॥ ६ ॥

एदाहि दोहि गाहाहि दसण्णं गुणसेडीणं परूवणं णिक्खेवं च परूवेदूण तदो

लोभ और पांच अन्तराय, इनका जघन्य अनुभागउदय किसके होता है ? जो जीव इन कर्मोंका जघन्य अनुभागउदीरक होकर तत्पश्चात् एक आवलीको विताता है वही उक्त आवलीके वीतनेपर उनके जघन्य अनुभागका वेदक होता है । इस प्रकार जघन्य अनुभागउदीरणाके स्वामीकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदयके स्वामीमें विशेषता है । एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष, अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि; इन अनुयोगद्वारोंमें अनुभागउदीरणाकी अपेक्षा चूंकि अनुभागउदयमें कोई भेद नहीं है अत एव इन अनुयोगद्वारोंके द्वारा जैसे अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही अनुभागउदयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागउदय समाप्त हुआ ।

यहां प्रदेशउदय दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिप्रदेशउदय और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदय । उनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । स्वामित्वके ज्ञापनार्थ यहां इन दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—

सम्यक्त्वोत्पत्ति, श्रावक, विरत (संयत), अनन्तकर्मांश (अन्तानुबन्धिविसंयोजक), दर्शनमोहक्षपक, कपायोपशामक, उपशान्तकपाय, क्षपक, क्षोणमोह और जिन; इनके क्रमशः उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जरा होती है । किन्तु इस निर्जराका काल संख्यातगुणित श्रेणि रूपसे विपरीत है । जैसे—जिन भगवान्की गुणश्रेणिनिर्जराका जितना काल है उससे क्षीणकपायको गुणश्रेणिनिर्जराका काल संख्यातगुणा है, इत्यादि ॥ ५–६ ॥

इन दो गाथाओंके द्वारा दस गुणश्रेणियोंको प्ररूपणा और निक्षेपकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् जो

---

१ ष. खं. पु. १२ पृ. ७८.

जाओ गुणसेडीओ अण्णभवं संकामंति ताओ वत्तइस्सामो। तं जहा— उवसमसम्मत्तगुणसेडी संजदासंजदगुणसेडी अधापमत्तगुणसेडी एदाओ तिण्णिगुणसेडीओ अप्पसत्थमरणेण वि मदस्स परभवे दिसंति। सेसासु गुणसेडीसु झीणासु अप्पअत्थमरणं भवे[1]। एत्तो सामित्तं कायव्वं। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सपदेसउदओ कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ मणुस्सो गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं चरित्तमोहक्खवणाए उवट्ठिदो तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। ओहिणाण-ओहिदंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चेव। णवरि जस्स ओहिलंभो णत्थि तस्स उक्कस्सं सामित्तं दादव्वं। णिद्दा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स उवसंतकसायस्स। थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? दोण्णिगुणसेडिसीसगगुणिद[2]कम्मंसियस्स।

सादासादाणं उक्कस्सपदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स। मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स दोगुण-

गुणश्रेणियां अन्य भवमें संक्रमणको प्राप्त होती हैं उनको बतलाते हैं। यथा— उपशमसम्यक्त्व गुणश्रेणि, संयतासंयत गुणश्रेणि और अधःप्रमत्त गुणश्रेणि; ये तीन गुणश्रेणियां अप्रशस्त मरणसे भी मृत्युको प्राप्त हुए जीवके परभवमें दिखती हैं। शेष गुणश्रेणियोंके क्षीण होनेपर अप्रशस्त मरण होता है।

यहां स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय किसके है? जो गुणितकर्मांशिक मनुष्य गर्भसे लेकर आठ वर्षोंमें संयमको प्राप्त हुआ है तथा उस अवस्थामें अन्तर्मुहूर्त रहकर सर्वलघु कालमें चरित्रमोहनीयके क्षपणमें उद्यत हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण तथा चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके भी उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान है। विशेष इतना है कि जिसके अवधिलब्धि नहीं है उसके उनका उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिये। निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह गुणितकर्मांशिक उपशान्तकषायके होता है। स्त्यानगृद्धि आदि तीनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह दो गुणश्रेणिशीर्षक गुणितकर्मांशिकके होता है।

साता और असाता वेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक जीव अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह दो गुणश्रेणिशीर्षवाले गुणितकर्मांशिकके होता है।

१ क. प्र. ५, १०. २मप्रतिपाठोऽयम्। अप्रतौ 'सीसगुणिद', काप्रतौ 'सीसयस्स गुणिद', ताप्रतौ 'सीस [यस्स-] गुणिद' इति पाठः।

सेडिसीसयस्स । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स उदिण्णसंजमासंजम-संजमगुणसेडिसीसयस्स । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । अट्ठण्णं पि कसायाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स अंतोमुहुत्त-मुववण्णस्स जाधे गुणसेडिसीसयमुदिण्णं[1] ताधे उक्कस्सओ उदओ[2] । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयमुदयमागदं ताधे उक्कस्सओ उदओ । अपज्जत्तपाओग्गजहण्णिया हस्स-रदिवेदगद्धा थोवा । जेण कालेण गुणसेडिसीसगमुदयसेदि सो कालो संखेज्जगुणो[3] । उक्कस्सिया हस्स-रदिवेद-गद्धा संखेज्जगुणा । एदेण कारणेण जस्स हस्स-रदीणमुक्कस्सओ उदओ तस्स चेव अरदि-सोगाणं पि उक्कस्सओ उदओ कायव्वो । अथवा छण्णमेदासिं हस्सादियाणं उक्कस्सओ पदेसुदओ चरिमसमयअपुव्वकरणखवयस्स । तिण्णं वेदाणं उक्कस्सओ उदओ कस्स ? चरिमसमयउदए वट्टमाणस्स खवयस्स गुणिदकम्मंसियस्स । तिण्णं संजलणाण-

---

सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह संयमासंयम और संयम गुणश्रेणिशीर्षके उदय युक्त गुणितकर्मांशिकके होता है । सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो अन्तिम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह है ऐसे गुणितकर्मांशिक जीवके सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । आठों ही कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें वर्तमान रहकर मरणको प्राप्त होता हुआ देव उत्पन्न हुआ है उसके उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्तमें जब गुणश्रेणिशीर्षक उदीर्ण होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें मरणको प्राप्त होकर देव उत्पन्न हुआ है उसके जब अन्तिम गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य और रतिका अपर्याप्त योग्य जघन्य वेदककाल स्तोक है । जिस कालमें गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है वह संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट हास्य-रतिवेदककाल संख्यातगुणा है । इस कारण जिसके हास्य व रतिका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है उसके ही अरति और शोकका भी उत्कृष्ट उदय करना चाहिये । अथवा इन हास्यादि छह प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होता है । तीन वेदोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

---

१ अप्रतौ 'गुणसेडीए सीसय-', का-ताप्रत्योः 'गुणसेडीसीसय-' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्स-ओदइओ' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'असंखेज्जगुणो' इति पाठः ।

मुक्कस्सओ उदओ कस्स ? सग-सगउदएण खवगसेडिं चडिय सगचरिमोदए वट्टमाणस्स। लोभसंजलणस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? खवगस्स गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमय-सरागस्स।

णिरयाउअस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? सण्णिणा उक्कस्संजोगेण उक्कस्सियाए बंधगद्धाए उक्कस्सआबाधाए दससहस्साणि जेण आउअं णिबद्धं जहण्णियाए ट्ठिदीए कद्णिसेगुक्कस्सपदं तस्स पढमसमयणेरइयस्स उक्कस्सओ उदओ। देवाउअस्स णिरयाउ-भंगो। मणुस्स-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? उक्कस्सियाए बंधगद्धाए तप्पाओग्गेण उक्कस्सजोगेण च आउअं बंधिदूण कमेण कालं करिय तिपलिदोवमिएसु उववण्णो सव्वलहुं आउअं पभिण्णो सव्वजहण्णगं जीविदव्वं मोत्तूण सेसं ओवट्टिदं, जम्हि समए ओवट्टिज्जमाणमोवट्टिदं तत्थ उक्कस्सओ पदेसउदओ तिरिक्ख-मणुस्साउआणं।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? जो संजदासंजदो सव्वुक्कस्सविसोहीए गुणसेडिणिज्जरं कुणमाणो संजमं पडिवज्जिय संजमगुणसेडिणिज्जरं कादुं पयट्टो[3] तत्थ

तीन संज्वलन कषायोंका उत्कृष्ट उदय किसके होता है ? अपने अपने उदयके साथ क्षपकश्रेणि चढ़कर अपने उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। संज्वलनलोभका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सरागी क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? उत्कृष्ट योग युक्त जिस संज्ञी जीवने उत्कृष्ट बन्धककालमें उत्कृष्ट आबाधाके साथ दस हजार वर्ष मात्र आयुको बांधकर जघन्य स्थितिके निषेका उत्कृष्ट पद किया है ऐसे उस प्रथम समयवर्ती नारकीके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उत्कृष्ट बन्धककालमें तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा आयुको बांधकर क्रमसे मृत्युको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसने सर्व-लघु कालमें आयुको प्रभेद कर सर्वजघन्य जीवितव्य (अन्तर्मुहूर्त मात्र) को छोड़कर शेषका अप-वर्तन किया है उसके जिस समयमें अपवर्त्यमान आयु अपवर्तित हो चुकती है उस समयमें तिर्यंच आयु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

नरकगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिके द्वारा गुणश्रेणिनिर्जराको करनेवाला जो संयतासंयत जीव संयमको प्राप्त होकर संयमगुणश्रेणिनिर्जराको

१ अ-काप्रत्योः 'सण्णियासउक्कस्स-' इति पाठः। २ अद्धा-जोगुक्कोसो बंधित्ता भोगभुमिगेसु लहुं। सव्वप्प-जीवियं वज्जइत्तु ओवट्टिया दोण्हं॥ क. प्र. ५, १६. अद्ध त्ति- उत्कृष्टे बन्धकाले उत्कृष्टे च योगे वर्तमानो भोगभूमिगेसु तिर्यक्षु मनुष्येषु वा विषये कश्चित्तिर्यगायुः कश्चिन्मनुष्यायुः उत्कृष्टं त्रिपल्योपमस्थितिकं बध्वा लघु शीघ्रं च मृत्वा त्रिपल्योपमायुष्केष्वेकस्तिर्यक्ष्वपरो मनुष्येषु मध्ये समुत्पन्नः तत्र च सर्वाल्पजीवितमन्तर्मुहूर्तप्रमाणं वर्जयित्वाऽन्तर्मुहूर्तमेकं धृत्वेत्यर्थः, शेषमशेषमपि (तौ द्वावपि) स्व-स्वायुरपवर्तनाकरणेनापवर्तयतः। ततो-ऽपवर्तनानन्तरं प्रथमसमये तयोस्तिर्यङ्-मनुष्ययोर्यथासंख्यं तिर्यङ्-मनुष्यायुषोरुत्कृष्टः प्रदेशोदयः। मलय. ३ ताप्रतौ 'पविट्ठो' इति पाठः।

अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउअं बंधिय सम्मत्तं घेत्तूण पुणो दंसणमोहणीयं खइय अंतोमुहुत्तस्सुवरि संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीसु उदयमागच्छमाणासु णेरइएसु उववण्णो, तस्स णिरयगइणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ। तिरिक्खगदिणामाए णिरयगदिभंगो। मणुसगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयभवसिद्धियस्स। देवगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेडिसीसयस्स से काले उदओ होहिदि त्ति मदस्स देवेसुप्पज्जिय पढमसमयदेवस्स उक्कस्सओ पदेसुदओ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो[1]। आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? पमत्तसंजदस्स उट्ठाविदआहारसरीरस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स जाधे गुणसेडिसीसयं उदयं असंपत्तं ताधे तेसिं उक्कस्सओ पदेसउदओ,[2] णत्थि अण्णा गुणसेडी।

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-

---

करनेके लिये प्रवृत्त हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो नारकायुको बांधकर व सम्यक्त्वको ग्रहण कर पुनः दर्शनमोहका क्षय करके अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणियोंके उदयमें आनेपर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके नरकगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा नरकगति नामकर्मके समान है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। देवगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? अनन्तर कालमें जिसके प्रथम गुणश्रेणिशीर्षकका उदय होगा, इस स्थितिमें वर्तमान जो उपशान्तकषाय मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन और संघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन व संघातका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है? जिसने आहारकशरीरको उत्पादित किया है तथा जो तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त है ऐसे प्रमत्तसंयत जीवके जब गुणिश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त नहीं होता तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है, अन्य गुणश्रेणि नहीं होती।

औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीरबन्धन एवं संघात, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,

---

१ उवसंतपढमगुणसेढीए निद्दादुगस्स तस्सेव। पावइ सीसगमुदयं ति जाय देवस्स सुरनवगे॥ क. प्र. ५, १२. × × × तथा तस्यैवोपशान्तकषायस्यात्मीयप्रथमगुणश्रेणीशीर्षकोदयमनन्तरसमये प्राप्स्यतीति तस्मिन् पाश्चात्ये समये जाते देवस्य, ततः प्रथमगुणश्रेणीशिरसि वर्तमानस्य सुरनवकस्य वैक्रियिकसप्तक-देवद्विकरूपस्योत्कृष्टः प्रदेशोदयः। मलय. २ आहारग-उज्जोयाणुत्तरतणु अप्पमत्तस्स॥ क. प्र. ५, १८.

पसत्थापसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणमुक्कस्सओ पदेस-उदओ कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठिय-संजदस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताधे पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ । णिरयाणुपुव्वीए णिरयगइभंगो । तिरिक्खाणुपुव्वीए तिरिक्खगइभंगो । देवाणुपुव्वीए देवगइभंगो । मणुसाणुपुव्वीए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण मणुस्सेसु विग्गहं कादूणुववण्णस्स ।

उज्जोवणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो संजदो उत्तरसरीरं विउव्विदो अप्पमत्तभावं गदो तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । आदावणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ मदो बीइंदिएसु बीइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण एइंदियत्तं गदो, तत्थ वि सव्वलहुअं एइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण बादरपुढवी-जीवेसु उववण्णो तस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ[1] । उस्सासस्स

प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण; इन नामकर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होता है। शेष पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और अनन्तानुबन्धिविसंयोजन रूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके स्थित संयतके जब तीनों ही गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उन पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है। नारकानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । तिर्यगानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यग्गतिके समान है। देवानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। मनुष्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपण स्वरूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके मनुष्योंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवके उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो संयत जीव उत्तर शरीरकी विक्रिया करके अप्रमत्त अवस्थाको प्राप्त हुआ है उसके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। आतप नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक मरणको प्राप्त होकर द्वीन्द्रियोंमें द्वीन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके एकेन्द्रियपनेको प्राप्त हुआ है, वहां भी सर्वलघु कालमें एकेन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तकके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। उच्छ्वासका

१ बेइंदिय थावरगो कम्मं काऊण तस्समं खिप्पं । आयावस्स उ तव्वेइ पढमसमयम्मि वट्टंतो ॥ क. प्र. ५, १९. गुणितकर्मांशः पंचेन्द्रियः सम्यग्दृष्टिर्जातः, ततः सम्यक्त्वनिमित्तां गुणश्रेणिं कृतवान् । ततस्तस्या गुणश्रेणीतः प्रतिपतितो मिथ्यात्वं गतः । गत्वा च द्वीन्द्रियमध्ये समुत्पन्नः । तत्र च द्वीन्द्रियप्रायोग्यां स्थितिं मुक्त्वा शेषां सर्वामप्यपवर्तयति । ततस्ततोऽपि मृत्वा एकेन्द्रियो जातः । तत्रैकेन्द्रियसमां स्थितिं करोति । शीघ्रमेव च शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः, तस्य तद्वेदिन आतपवेदिन खरबादरपृथ्वीकायिकस्य शरीरपर्याप्त्यनन्तरं प्रथमसमये

अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउअं बंधिय सम्मत्तं घेत्तूण पुणो दंसणमोहणीयं खइय अंतोमुहुत्तस्सुवरि संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीसु उदयमागच्छमाणासु णेरइएसु उववण्णो, तस्स णिरयगइणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ। तिरिक्खगदिणामाए णिरयगदिभंगो। मणुसगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स। देवगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेडिसीसयस्स से काले उदओ होहिदि त्ति मदस्स देवेसुप्पज्जिय पढमसमयदेवस्स उक्कस्सओ पदेसुदओ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो[1]। आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? पमत्तसंजदस्स उट्ठाविदआहारसरीरस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स जाधे गुणसेडिसीसयं उदयं असंपत्तं ताधे तेसिं उक्कस्सओ पदेसउदओ,[2] णत्थि अण्णा गुणसेडी।

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-

---

करनेके लिये प्रवृत्त हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो नारकायुको बांधकर व सम्यक्त्वको ग्रहण कर पुनः दर्शनमोहका क्षय करके अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणियोंके उदयमें आनेपर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके नरकगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा नरकगति नामकर्मके समान है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। देवगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? अनन्तर कालमें जिसके प्रथम गुणश्रेणिशीर्षकका उदय होगा, इस स्थितिमें वर्तमान जो उपशान्तकषाय मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन और संघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन व संघातका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? जिसने आहारकशरीरको उत्पादित किया है तथा जो तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त है ऐसे प्रमत्तसंयत जीवके जब गुणिश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त नहीं होता तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है, अन्य गुणश्रेणि नहीं होती।

औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीरबन्धन एवं संघात, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,

---

१ उवसंतपढमगुणसेढीए निद्दादुगस्स तस्सेव। पावइ सीसगमुदयंति जाय देवस्स सुरनवगे॥ क. प्र. ५, १२. ××× तथा तस्यैवोपशान्तकषायस्यात्मीयप्रथमगुणश्रेणीशीर्षकोदयमनन्तरसमये प्राप्स्यतीति तस्मिन् पाश्चात्ये समये जाते देवस्य, ततः प्रथमगुणश्रेणीशिरसि वर्तमानस्य सुरनवकस्य वैक्रियिकसप्तक-देवद्विकरूपस्योत्कृष्टः प्रदेशोदयः। मलय. २ आहारग-उज्जोयाणुत्तरतणु अप्पमत्तस्स॥ क. प्र. ५, १८.

पसत्थापसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणमुक्कस्सओ पदेस-उदओ कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठिय-संजदस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताधे पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ । णिरयाणुपुव्वीए णिरयगइभंगो । तिरिक्खाणुपुव्वीए तिरिक्खगइभंगो । देवाणुपुव्वीए देवगइभंगो । मणुसाणुपुव्वीए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण मणुस्सेसु विग्गहं कादूणुववण्णस्स ।

उज्जोवणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो संजदो उत्तरसरीरं विउव्विदो अप्पमत्तभावं गदो तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । आदावणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ मदो बीइंदिएसु बीइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण एइंदियत्तं गदो, तत्थ वि सव्वलहुअं एइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण बादरपुढवी-जीवेसु उववण्णो तस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ[1] । उस्सासस्स

प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण; इन नामकर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होता है। शेष पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और अनन्तानु-बन्धिविसंयोजन रूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके स्थित संयतके जब तीनों ही गुणश्रेणि-शीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उन पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है। नारकानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यगानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यग्गतिके समान है। देवानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। मनुष्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमा-संयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपण स्वरूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके मनुष्यांमें विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवके उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो संयत जीव उत्तर शरीरकी विक्रिया करके अप्रमत्त अवस्थाको प्राप्त हुआ है उसके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। आतप नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक मरणको प्राप्त होकर द्वीन्द्रियोंमें द्वीन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके एकेन्द्रियपनेको प्राप्त हुआ है, वहां भी सर्वलघु कालमें एकेन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तकके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। उच्छ्वासका

---

१ वेइंदिय थावरगो कम्मं काऊण तस्समं खिप्पं । आयावस्स उ तव्वेइ पढमसमयम्मि वट्टंतो ॥ क. प्र. ५, १९. गुणितकर्मांशः पंचेन्द्रियः सम्यग्दृष्टिर्जातः, ततः सम्यक्त्वनिमित्तां गुणश्रेणिं कृतवान् । ततस्तस्या गुण-श्रेणीतः प्रतिपतितो मिथ्यात्वं गतः । गत्वा च द्वीन्द्रियमध्ये समुत्पन्नः । तत्र च द्वीन्द्रियप्रायोग्यां स्थितिं मुक्त्वा शेषां सर्वामप्यपवर्तयति । ततस्ततोऽपि मृत्वा एकेन्द्रियो जातः । तत्रैकेन्द्रियसमां स्थितिं करोति । शीघ्रमेव च शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः, तस्य तद्वेदिन आतपवेदिन खरबादरपृथ्वीकायिकस्य शरीरपर्याप्त्यनन्तरं प्रथमसमये

उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारयस्स । सुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयवचिजोगणिरोहकारयस्स ।

पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स[1] । सव्वेकम्माणं पि[2] जम्हि जम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति ण भणिदं तम्हि तम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति वत्तव्वं । चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजमगुणसेडीओ एगट्ठं कादूण अप्पिदेसुप्पण्णस्स । अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवगगुण-सेडिसीसयाणि[3] तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठियस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि उदयमागदाणि ताधे उक्कस्सओ पदेसउदओ ।

पंचण्णमंतराइयाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयछदुमत्थस्स । तित्थयरणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स । एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णसामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो

उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती उच्छ्वासनिरोधकके होता है। सुस्वर और दुस्वरका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती वचनयोग-निरोधकके होता है ?

पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। सभी कर्मोंके जहां जहां 'गुणितकर्मांशिक' नहीं कहा है वहां वहां 'गुणितकर्मांशिक' कहना चाहिये। चार जाति नामकर्म, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियोंको एकत्र करके विवक्षित जीवोंमें उत्पन्न हुए जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है। अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपक; इन तीनों ही गुणश्रेणिशीर्षकोंको एकत्र करके स्थित जीवके जब गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है। तीर्थंकर नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणित-कर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां जघन्य स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा— मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय

आतपनाम्नः उत्कृष्टः प्रदेशोदयः । एकेन्द्रियो द्वीन्द्रियस्थितिं झटित्येव स्वयोग्यां करोति, न त्रीन्द्रियादिस्थिति-मिति द्वीन्द्रियग्रहणम् । मलय. १ अ-काप्रत्योः 'भवसिद्धियसव्व' इति पाठः । २ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् । ३ ताप्रतौ '-संजमगुणसेडीओ-दंसणमोहणीयक्खवगसीसयाणि' इति पाठः ।

सुहुमणिगोदजीवेसु कम्मट्ठिदिमच्छिदाउओ सव्वेहि आवासएहि अभवसिद्धियपाओग्ग-जहण्णयं काऊण तदो संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण एइंदिएसु सुहुमेसु गदो, तत्थ य असंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि अच्छिदूण मणुस्सेसु आगदो पुव्वकोडिं[1] संजममणुपालेदूण अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो दसवास-सहस्सिएसु देवेसु उववण्णो पुणो तत्थ सम्मत्तं घेत्तूण आउअमणुपालिय अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो वियट्ठिदाओ ट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो एइंदिएसु गदो तस्स पढमसमयस्स मदिआवरणस्स जहण्णगो पदेसउदओ। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो[2]। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स? जो मदिआवरणस्स अपच्छिमे[3] संजमभवग्गहणे वट्टमाणगो सो चेव अपरिवट्टिदेण सम्मत्तेण वेमाणिएसु उववण्णो मिच्छत्तं गदो अंतोकोडाकोडीदो तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ पबद्धाओ जाधे उक्क० ट्ठिदी आवलियपबद्धा ताधे ओहि-णाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ[4]। णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेस-

किसके होता है? जो सूक्ष्म निगोद जीवोंमें कर्मस्थिति मात्र सूक्ष्म निगोदकी आयुके साथ रहकर सब आवासों द्वारा अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य करके, तत्पश्चात् संयमासंयम और संयमको बहुत वार प्राप्त करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें गया है और वहां असंख्यात हजार वर्ष रहकर मनुष्योंमें आया है, यहां पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर दस हजार वर्ष मात्र आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, पुनः वहां सम्यक्त्वको ग्रहणकर आयुको पालकर उसके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्व-को प्राप्त होकर स्थितियोंका विकर्षण करता हुआ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें पहुंचा है उसके प्रथम समयमें मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्यय-ज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधि-दर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? जो मतिज्ञानावरणके अन्तिम संयमभव-ग्रहणमें वर्तमान है वही अपरिवर्तित सम्यक्त्वके साथ वैमानिक देवोंमें उत्पन्न होकर मिथ्यात्व-को प्राप्त हो अन्तःकोड़ाकोड़िसे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंको बांधता है जब उत्कृष्ट स्थिति आवली समयप्रबद्ध मात्र होती है तब उसके अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है। निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? जो जीव

१ अ-काप्रत्योः 'पुव्वकोडी' इति पाठः। २ पगयं तु खवियकम्मे जहन्नसामी जहन्नदेवठिइ। भिन्नमुहुत्ते सेसे मिच्छत्तगतो अतिकिलिट्ठो॥ कालगएगिंदियगो पढमे समये व मइ-सुयावरणे। केवलदुग-मणपज्जव-चक्खु-अचक्खूण आवरणा॥ क. प्र. ५, २०-२१. ३ का-ताप्रत्योः 'अपच्छिम' इति पाठः। ४ ओहीणसंजमाओ देवत्तगए गयस्स मिच्छत्तं। उक्कोसट्ठिइबंधे विकड्डणा आलिगं गंतुं॥ क. प्र. ५, २२. ओहीण त्ति– क्षपितकर्मांशः संयमं प्रतिपन्नः समुत्पन्नावधि-ज्ञानदर्शनोऽप्रतिपतितावधिज्ञानदर्शन एव देवो जातः, तत्र चान्तर्मुहूर्ते गते मिथ्यात्वं प्रतिपन्नः। ततो मिथ्यात्वप्रत्ययेनोत्कृष्टां स्थितिं बद्धुमारभते,

उदओ कस्स? जो ओहिणाणावरणस्स जहण्णपदेसवेदओ तस्स चेव जाधे उक्कस्सट्ठिदिबंध-गद्धा पुण्णा ताधे जो उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पडिभग्गो संतो णिद्दं पयलं[1] वा पवेदयदि तस्स णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेसउदओ[2]। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णओ पदेसुदओ कस्स? जो मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ दिट्ठो सो चेव जाधे पज्जत्तिं गदो [ताधे] तस्स एइंदियपज्जत्तीए पढमसमयपज्जत्तयस्स थीणगिद्धितियं वेदयमाणस्स जहण्णओ पदेसउदओ[3]। सादासादाणं ओहिणाणावरणभंगो।

मिच्छत्तस्स जहण्णगो पदेसउदओ कस्स? उदीरणउदयादो[4] उवरि आवलियं गदस्स। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तस्स य मिच्छत्तभंगो[5]। अणंताणुबंधीणं जहण्हगो पदेसउदओ कस्स? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णसंतकम्मं कादूण सम्मत्तं संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण पुणो विसंजोइदं संजुत्तं कादूण वेछावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदो, तस्स आवलियमिच्छाइट्ठिस्स अणंताणु-

---

अवधिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक है उसीका जब स्थितिबन्धककाल पूर्ण होता है तब जो उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे प्रतिभग्न होकर निद्रा अथवा प्रचलाका वेदन करता है उसके निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? जिसके मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय कहा गया है वही जब पर्याप्तिको प्राप्त होता है [तब] एकेन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें उसके स्त्यानगृद्धित्रिकका वेदन करते हुए उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। साता और असाता वेदनीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है।

मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? उदीरणाउदयसे ऊपर आवलीको प्राप्त हुए जीवके मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय होता है। सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? अभव्यसिद्धिकके योग्य जघन्य सत्कर्मको करके; सम्यक्त्व, संयमासंयम और संयमको बहुत बार प्राप्त करके; चार बार कषायोंको उपशमाकर, फिरसे भी विसंयोजित संयुक्त करके (अनन्तानुबन्धी कषायोंको बांधकर) दो छ्यासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वको पालकर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस आवली कालवर्ती मिथ्यादृष्टिके अनन्तानुबन्धी कषायों-

---

प्रभूतं च दलिकं विकर्षयति उद्वर्तयतीत्यर्थः। तत आवलिकां गत्वाऽतिक्रम्य बन्धावलिकायामतीतायामित्यर्थः, अवध्योरवधिज्ञानावरणावधिदर्शनावरणयोर्जघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. १ताप्रतौ 'णिद्दा-पयले' इति पाठः। २ निद्रा-प्रचलयोरपि तथैव। केवलमुत्कृष्टस्थितिबन्धात् प्रतिभग्नस्य प्रतिपतितस्य निद्रा-प्रचलयोरनुभवितुं लग्नस्य चेति द्रष्टव्यम्। उत्कृष्टस्थितिबन्धो हि अतिशयेन संक्लिष्टस्य भवति, न चातिसंक्लेशे वर्तमानस्य निद्रोदयसम्भवः। तत उक्तं उत्कृष्टस्थिबन्धात्प्रतिभग्नस्येति। क. प्र. ५, २३. (मलय.). ३ निद्रानिद्रा-दयोऽपि तिस्रः प्रकृतयो जघन्यप्रदेशोदयविषये मतिज्ञानावरणवद्भावनीयाः। नवरमिन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्तस्य प्रथमसमये इति द्रष्टव्यम्, ततोऽनन्तरसमये उदीरणाया सम्भवेन जघन्यप्रदेशोदयसम्भवात्, क. प्र. ५, २४. (मलय.). ४ताप्रतौ 'उदीरणाउदयादो' इति पाठः। ५ दंसणमोहे तिविहे उदीरणुदये उ आलिगं गंतुं। क. प्र. ५, २५.

बंधीणं जहण्णओ पदेसउदओ[1]। अट्ठण्णं कसायाणं चदुण्णं संजलणाणं पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो उवसंतकसाओ मदो देवो जादो तस्स आवलियतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ[2]। अरदि-सोगाणं जहण्णओ पदेस-उदओ कस्स ? एदासिं पयडीणं जहा ओहिणाणावरणस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा। इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जाव अपच्छिमसंजमभवग्गहणे त्ति ताव जहा मदिआवरणस्स परूविदं तहा परूवेयव्वं। तदो अपच्छिमे संजमभवग्गहणे देसूणपुव्व-कोडिं संजममणुपालेदूण सव्वजहण्णए जीविदसेसे मिच्छत्तं गदो, तदो देवीसु उववण्णो, उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण अंतोकोडाकोडिबंधादो पण्णारससागरोवम-कोडाकोडीओ पवद्धाओ, तदो ताए देवीए जाधे पण्णारससागरोवमकोडाकोडिट्ठिदी पवद्धा तदो[3] बंधावलियचरिमसमए इत्थवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ[4]। णवुंसयवेदस्स मदिआवरणभंगो।

का जघन्य प्रदेश उदय होता है। आठ कषाय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उपशान्तकषाय मर करके देव हुआ है उस आवली कालवर्ती तद्भवस्थके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। अरति और शोक-का जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा जैसे अवधिज्ञानावरणके सम्बन्धमें की गयी है वैसे करना चाहिये। स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अन्तिम संयमभवग्रहण तक जैसे मतिज्ञानावरणके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां प्ररूपणा करना चाहिये। तत्पश्चात् अपश्चिम संयमभवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर जीवितके सबसे जघन्य शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् देवियों-में उत्पन्न हुआ, वहां उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तःकोड़ाकोड़ि मात्र बन्धकी अपेक्षा पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण बन्ध किया, पश्चात् उक्त देवीके द्वारा जब पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र स्थिति बांधी जाती है तब बन्धावलीके अन्तिम समयमें स्त्रीवेद-का जघन्य प्रदेश उदय होता है। नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

---

१ चउरुवसमित्तु पच्छा संजोइय दीहकालसम्मत्ता। मिच्छत्तगए आवलिगाए संजोयणाणं तु ॥ क. प्र. ५, २६. २ सत्तरसण्ह वि एवं उवसमइत्ता गए देवं ॥ क. प्र. ५, २५. तथाऽनन्तानुबन्धिवर्जद्वादशकषाय-पुरुषवेद-हास्य-रति-भय-जुगुप्सारूपाः सप्तदश प्रकृतीरुपशमय्य देवलोकं गतस्य एवमेवेति उदीरणोदयचरमसमये तासां सप्तदशप्रकृतीना जघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. ३ ताप्रतौ '-कोडाकोडीओ पबद्धाओ ट्ठिदीओ तदो' इति पाठः। ४ इत्थीए संजमभवे सव्वनिरुद्धम्मि गंतु मिच्छत्तं। देवीए लहुमिच्छी जेट्ठठिइ आलिगं गंतुं ॥ क. प्र. ५, २७. × × × × इयमत्र भावना— क्षपितकर्मांशा काचित् स्त्री देशोनां पूर्वकोटिं यावत्संयम-मनुपाल्यान्तर्मुहूर्ते आयुषोऽवशेषे मिथ्यात्वं गत्वा अनन्तरभवे देवी समुत्पन्ना, शीघ्रमेव च पर्याप्ता। तत उत्कृष्टे संक्लेशे वर्तमाना स्त्रीवेदस्योत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, पूर्वबद्धां चोद्वर्तयति। तत उत्कृष्टबन्धारम्भात् परत आवलिकायाश्चरमसमये तस्याः स्त्रीवेदस्य जघन्यः प्रदेशोदयो भवति। मलय.

णिरयाउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णेहि जोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णियाए बंधगद्धाए आउअं पबद्धं, हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो[1] तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो सव्वमहंतं[2]असादोदए वट्टमाणस्स तस्स चरिमसमयणेरइयस्स[3] जहण्णपदेसउदओ । मणुस्साउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णजोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णबंधगद्धाए मणुस्साउअं पबद्धं हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो तिपलिदोवमाउट्ठिदिओ मणुस्सो जादो, असादोदया सव्वबहुआ सव्वचिरं[4] सादोदया वि मंदाणुभागा, तस्स तिपलिदोवमियस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ । तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो । देवाउअस्स वि मणुसाउअभंगो । णवरि देवेसु तेत्तीसंसागरोवमिएसु उववण्णस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स वत्तव्वं[5] ।

णिरयगइणामाए जाव दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो । तदो दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णेण पुणो सम्मत्तं लद्धं, अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोइदं, अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो विकड्ढिदाओ[6] ट्ठिदीओ मदो एइंदिएसु उववण्णो, तत्तो

नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें नारक आयुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर मरणको प्राप्त हो जो तेतीस सागरोपम आयुवाले नारकियोंमें उत्पन्न होता हुआ सबसे महान् असाता वेदनीयके उदयमें वर्तमान है ऐसे नारकीके अन्तिम समयमें नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है । मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें मनुष्यायुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर जो मरणको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, जिसके असातोदय सबमें बहुत व सर्वचिर काल रहनेवाले तथा सातोदय भी मन्द अनुभागवाले हैं; उस तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है । तिर्यगायुके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । देवायुकी भी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । विशेष इतना है कि तेतीस सागरोपम आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुए उसके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें कहना चाहिये ।

नरकगति नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होने' तक मतिज्ञानावरणके समान है । तत्पश्चात् दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होकर फिरसे सम्यक्त्वको प्राप्त हो जिसने अनन्तानुबन्धिचतुष्कका विसंयोजन किया है, अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हो स्थितियोंको विकर्षित करके मरकर

---

१ ताप्रतौ 'तदो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'महत्त' इति पाठः । ३ अ-ताप्रत्योः 'चारिसमए णेरइयस्स' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'सव्वचिरं०' इति पाठः । ५ अप्पद्धा-जोगचियाणाऊणुक्कस्सगठिईणंते । उवरि थोवनिसेगे चिरतिव्वासायवेईणं ॥ क. प्र. ५, २८. ६ ताप्रतौ 'विओकड्डिदाओ' इति पाठः ।

मदो असण्णीसु उववण्णो, तत्तो अंतोमुहुत्तेण णेरइओ जादो, तस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स णिरयगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ[1]। तिरिक्खगइणामाए मदिआवरण-भंगो। णवरि इगितीसवेदएसु उववज्जावेदव्वो। मणुसगइणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। तदो एइंदियभवग्गहणादो मणुस्सो जादो, सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ। देवगदिणामाए ओहिणाणा-वरणभंगो। णवरि जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे उत्तरसरीरं विउव्विदो, उज्जोवणामाए वेदओ, तस्स देवगदिणामाए जहण्णओ पदेसुदओ[2]।

वेउव्वियसरीरस्स[3] मदिआवरणभंगो। णवरि सो एइंदिओ सण्णितिरिक्खो होदूण उज्जोवुदएण उत्तरं विउव्विदो, जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे जहण्णपदेसुदओ। ओरा-लियसरीरणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। पुणो एइंदिएहिंतो तसेसु उववज्जावेयव्वो जेसु उववण्णो तीसण्णं पयडीणं वेदओ होदि। तदो जाधे तीसं वेद-यदि ताधे ओरालियसरीरस्स जहण्णओ पदेसुदओ। चदुजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-

---

एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमेंसे मरकर असंज्ञियोंमें उत्पन्न हुआ है, पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें नारकी हुआ है, उसके सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेपर नरकगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुका वेदन करनेवाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। मनुष्यगति नामकर्मकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' तक मतिज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रिय भवग्रहणसे मनुष्य उत्पन्न हुआ, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ, उसके मनुष्यगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि जब स्थितियां विकर्षित की जाती हैं तब उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मका वेदक होता है, तब उसके देवगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि वह एकेन्द्रिय जीव संज्ञी तिर्यंच होकर उद्योतके उदयके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करता है, वह जब स्थितियोंको विकर्षित करता है तब उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। औदारिक शरीर नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' पर्यन्त मति-ज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रियोंमेंसे त्रसोंमें उत्पन्न कराना चाहिये, जिनमें उत्पन्न होकर तीस प्रकृतियोंका वेदक होता है। पश्चात् जब वह तीसका वेदन करता है तब उसके औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेश उदय होता है। चार जातियां, तैजस व कार्मण शरीर, तैजस

---

१ संजोयणा विजोजिय देवभवजहन्नगे अइनिरुद्धे। बंधिय उक्कस्सठिईं गंतूणेगिंदिया सन्नी ॥ सव्वलहुं नरयगए निरयगई तम्मि सव्वपज्जत्ते। क. प्र. ५, २९-३०. २ देवगई ओहिसमा नवरिं उज्जोववेयगो ताहे। क. प्र. ५, ३१. ३ अ-काप्रत्योः 'वेउव्वियसत्तयस्स' इति पाठः।

कम्मइयसरीरबंधण-संघाद- छसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोव - उस्सास- पसत्थापसत्थविहायगइ -तस-बादर-पज्जत्त -पत्तेयसरीर- थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति -णिमिणणामाणं ओरालियसरीरभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं जहण्णउदओ कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णयं कादूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण अपच्छिमे भवग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेऊण आहारएण उत्तरसरीरं विउव्विदो सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स जहण्णओ पदेसउदओ ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? पढमसमयतब्भवत्थस्स । आदावणामाए जहण्णओ उदओ कस्स ? मदिआवरणस्स खविदकम्मंसियविहाणेण आगंतूण जो आदावणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पढमसमयपज्जत्तयदस्स जहण्णगो पदेसउदओ । एइंदिय-थावर-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो । णवरि एइंदिय-थावराणं सव्वपज्जत्तयदो ।

सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ सो तम्हि भवे खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण सुहुमेइंदिएसु पज्जत्तएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो, तस्स पढमसमए सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ । साहारणणामाए

व कार्मण शरीरों सम्बन्धी बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और निर्माण; इन नामकर्मोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकशरीरबन्धन व संघातका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य [सत्कर्म] को करके, चार बार कषायोंको उपशमा कर अन्तिम भवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन कर आहारकशरीररूपमें उत्तर शरीरकी विक्रिया करके जो सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके होता है । आतप नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? मतिज्ञानावरण सम्बन्धी क्षपितकर्मांशिकके विधानसे आकर जो आतप नामकर्मके वेदकोंमें उत्पन्न होकर आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तके उसका जघन्य प्रदेश उदय होता है। एकेन्द्रिय, स्थावर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय और स्थावरका जघन्य प्रदेश उदय सर्व पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए जीवके होता है।

सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक उस भवमें क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उसके प्रथम समयमें सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है।

जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ खुद्दाभवग्गहणं जीविऊण मदो साहारणकाइएसु उज्जोवणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पज्जत्तयदस्स पढमसमए साहारणसरीरणामाए जहण्णओ पदेसउदओ। तित्थयरणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण बंधिय सव्वुक्कस्सियाहि गुणसेडिणिज्जराहि गालिय केवलणाणमुप्पाइय सजोगिपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णगो पदेसउदओ। उच्चागोद-पंचंतराइयाणं ओहिणाणावरणभंगो। एवं सामित्तं समत्तं।

एत्तो एयजीवेण कालो अंतरं णाणजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो चेदि अणियोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वाणि।

एत्तो अप्पाबहुअं। ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ— मिच्छत्तस्स पदेसुदओ थोवो। सम्मामिच्छत्तस्स विसेसाहिओ। पयलापयलाए संखेज्जगुणो। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहिओ। थीणगिद्धीए विसेसा०। अणंताणुबंधीसु अण्णदरस्स विसे०। अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो। पच्चक्खाणावरणिज्ज० विसे०। पयलाए असंखे० गुणो। णिद्दाए विसे०। सम्मत्ते असंखे० गुणो। केवलणाणावरणे संखे० गुणो। केवलदंसणावरणे विसे०। देवाउअस्स अणंतगुणो। णिरयाउअस्स विसे०। मणुस्साउअस्स संखे० गुणो। तिरिक्खाउअस्स-

---

साधारण नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मके वेदक साधारण-कायिकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्तक हुआ है उसके पर्याप्तक होनेके प्रथम समय-में साधारणशरीर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तीर्थंकर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे उसे बांधकर व सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिनिर्जराओंके द्वारा गलाकर केवलज्ञानको उत्पन्न कर सयोगकेवलीके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके तीर्थंकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेश उदय होता है। उच्चगोत्र और पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञाना-वरणके समान है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। उसमें ओघ उत्कृष्ट प्रदेश उदयका दण्डक— मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। प्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रचलाका असंख्यातगुणा है। निद्राका विशेष अधिक है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। देवायुका अनन्तगुणा है। नारकायुका विशेष अधिक है। मनुष्यायुका संख्यातगुणा है। तिर्यगायुका विशेष अधिक

विसे० । आहारसरीरणामाए असंखे० गुणो । णिरयगइणामाए असंखे० गुणो । तिरिक्खगइणामाए विसे० । अजसगित्तीए विसे० । णीचागोदस्स संखे० गुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । देवगइणामाए संखे० गुणो । दुगुंछाए असंखे० गुणो । भय० तत्तियो चेव । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदि० विसे० । इत्थिवेदे[1] असंखे० गुणो । णवुंसयवेदे[1] विसेसा० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंलणाए असंखे० गुणो । माणसंजलणाए असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसेसाहिओ । कम्मइयसरीर० विसे० । मणुसगई० असंखे० गुणो । दाणंतराइयस्स असंखे० गुणो । लाहंतराइयस्स विसेसा० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइयस्स विसेसा० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपज्जवणाणावर० विसे० । ओहिदंसणावर० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खुदंसणावर० विसे० । चक्खुदंस० विसे० । जसगित्तिणामाए विसेसा० । उच्चागोदस्स विसे० । लोभसंजलण० विसे० । सादासादाणं विसे० । ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्तस्स थोवो । पयलाए संखेज्ज-

---

है । आहारकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । नरकगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गति नामकर्मका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । वैक्रियकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । देवगति नामकर्मका संख्यातगुणा है । जगुप्साका असंख्यातगुणा है । भयका उतना मात्र ही है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका असंख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्ति नामकर्मका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । ओघ-उत्कृष्ट-प्रदेश-उदयदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

---

१ अ-काप्रत्योः 'वेदो' इति पाठः ।

गुणो । णिद्दाए विसे० । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो। केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंसणावरण० विसेसा० । अपच्चक्खाणाव० विसे० । पच्चक्खाणावरण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । णिरयाउ० अणंतगुणो समयपवद्धस्स संखे० भागो० । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणावर० विसे० । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइयसरीर० विसे० । णिरयगई० संखे० गुणो । अजसकित्ति० विसेसा० । णवुंसयवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स० विसे० । सोग० विसे० । रदि० विसे० । अरदि० विसेसा० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । [चक्खु० विसे० ।] संजलणकसाय० अण्णदर० विसे० । णीचागोद० विसे० । साद० विसे० । असाद० विसे० । एवं णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए उक्कस्सओ सम्मामिच्छत्तस्स पदेसउदओ थोवो । पयलाए संखे० गुणो । णिद्दाए विसेसा० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० ।

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धीका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । नारकायुका अनन्तगुणा है जो समयप्रवद्धके संख्यातवें भाग प्रमाण है । अवधिज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजस शरीरका विशेष अधिक है । कार्मण शरीरका विशेष अधिक है । नरकगतिका संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । [चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है ।] संज्वलनकषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशउदय समाप्त हुआ ।

तिर्यग्गतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है ।

मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंसणाव० विसे० । अपच्चक्खाणावर० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । सम्मत्त० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । अजसगित्ति० असंखे० गुणो । इत्थि-णवुंसयवेद० संखे० गुणो । उच्चागोद० संखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगदि० संखे० गुणो० । जसगित्ति० विसे० । पुरिसवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसेसा० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपज्जव० विसेसाहिओ । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाए अण्णदरिस्से विसे० । णीचागोद० विसे० । सादासाद० दो वि तुल्ला विसे० । एवं तिरिक्खगईए उक्कस्संदडओ समत्तो ।

तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सपदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते[1] थोवो । पयलाए संखे० गुणो । णिद्दाए विसेसाहिओ । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीण-

स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कषायोंमेंसे अन्यतरका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । स्त्री व नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय व जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कषायोंमेंसे अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीय दोनोंका ही तुल्य व विशेष अधिक है । इस प्रकार तिर्यग्गतिमें उत्कृष्ट दण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यंच योनिमतियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'सम्मामिच्छत्तादो', ताप्रतौ 'सम्मामिच्छत्तादो (तस्स)' इति पाठः ।

गिद्धीए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो० । अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्तीणं उदओ तुल्लो विसेसाहिओ । इत्थिवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । उच्च-णीच० उदओ तुल्लो विसे० । सादासादाणं विसे० । तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगईए उक्कस्सओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते विसे० । पयलापयला० संखे० गुणो । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । अणंताणुबंधीणं

विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरण विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । उच्च व नीच गोत्रका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । तिर्यंच योनिमतियोंमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें

---

१ ताप्रतौ 'अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । केवलदंसण०' इति पाठः ।

विसे० । अपच्चक्खाणकसाएसु असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाएसु विसे० । पयलाए असंखे० गुणो । णिद्दाए विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । मणुस्साउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । आहारसरीरस्स विसे० । अजसकित्तीए असंखे० गुणो । णीचागोदे संखे० गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदीसु विसे० । इत्थिवेद० असंखे० गुणो । णवुंसयवेद० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंजलणाए असंखे० गुणो । माण० असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालियसरीरणामाए असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगइ० असंखे० गुणो । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतरा० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । जसकित्ति० विसे० । उच्चागोदे विसे० । लोहसंजलणाए विसे० । सादासादाणं विसे० । एवं मणुसगदीए उक्कस्सपदेसउदओ समत्तो ।

देवगदीए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते थोवो । पयलाए संखे० गुणो ।

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । आहारशरीरका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । भय और जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तैजस-शरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । कार्मणशरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय समाप्त हुआ ।

देवगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

णिद्दाए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । अपच्चक्खाण-कसाए असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाए विसे० । केवलणाण० असंखे० गुणो । केवल-दंसण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणाव० विसे० । अजसगित्ति० असंखे० गुणो । इत्थिवेद० संखे० गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । सोग० विसे० । हस्स विसे० । अरदि० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोहसंजलणाए असंखे० गुणो । माणस्स असंखे० गुणो । मायस्स असंखे० गुणो । लोभस्स असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगई० संखे० गुणो । जसगित्ति० विसे० । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतराइय० विसे०[1] । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । उच्चागोद० विसेसाहिओ । असाद० विसे० । साद० विसे० । एवं देवगदीए उक्कस्सओ पदेसुदय-दंडओ समत्तो ।

असण्णीसु उक्कस्सओ पदेसुदओ पयलाए थोवो । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायमें अन्यतरका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । देवायुका अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । भय व जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । शोकका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । संज्वलनलोभका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । देवगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार देवगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञियोंमें प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचला-

---

१ अप्रतौ 'संखे० गुणो' इति पाठः ।

विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसेसा० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणुबंधि० विसे० । णिरयगई० अणंतगुणो । देवगई० विसे० । मणुसगई० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । णिरयाउ० विसे० । मणुसाउ० संखे० गुणो । उच्चागोद० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० संखे० गुणो । णिरय-देव-मणुसगईणं देव-णिरय-मणुस्साउ-आणमुच्चागोदस्स य कधमसण्णीसुदओ ? ण, असण्णिपच्छायदाणं णेरइयादीणमुवयारेण असण्णित्तब्भुवगमादो । मणुसगइपदेसोदयादो देवाउआदीणं पदेसोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, विगलिंदिए मोत्तूण पयदअसण्णिपंचिंदिएसु चेव संचिददव्वग्गहणे तदविरोहादो । मणुस्साउअउक्कस्सोदयादो उच्चागोद-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं[3] ? ण, बंधगद्धाए असंखेज्जगुणत्तेण च आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स अंतोमुहुत्तत्तमसिद्धं, एदम्हादो चेव सुत्तादो तस्स तब्भावसिद्धीदो ।

प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण-चतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नरकगतिका अनन्तगुणा है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है । नारकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका संख्यातगुणा है ।

शंका— नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, देवायु, नारकायु, मनुष्यायु और उच्चगोत्रका उदय असंज्ञी जीवोंमें कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए नारकी आदिकोंको उपचारसे असंज्ञी स्वीकार किया गया है ।

शंका— मनुष्यगतिके प्रदेशोदयकी अपेक्षा देवायु आदिकोंका प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विकलेन्द्रियोंको छोड़कर प्रकृत असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें ही संचित द्रव्यका ग्रहण करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— मनुष्यायुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयसे उच्चगोत्र और तिर्यंचआयुका उत्कृष्ट प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे है ?

समाधान— नहीं, बन्धककालके असंख्यातगुणे होनेसे भी आवलीके असंख्यातवें भागके अन्तर्मुहूर्तता असिद्ध है, इसी सूत्रसे ही उसके असंख्यातगुणत्व सिद्ध है ।

---

१ अप्रतौ 'णिरयगई०' इति पाठः । २ अप्रतौ 'णेरयदीण', काप्रतौ 'णिरयादीण', ताप्रतौ 'णेरयादीण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'असंखेगुणत्तं' इति पाठः ।

सव्वमेदं होदु णाम, ण उच्चागोदादो तिरिक्खाउअस्स संखेज्जगुणत्तं; संखेज्जा-वलियमेत्तुच्चागोदसमयपबद्धेसु दिवड्ढगुणहाणीए छिण्णेसु एगसमयबद्धस्स असंखे० भागुवलंभादो संखेज्जावलियछिण्णतिरिक्खाउअम्हि समयपबद्धस्स संखेज्जदिभागत्तुव-लंभादो। ण च उव्वेलणाचरिमफालिदव्वे वि गहिदे संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे, तिस्से पलिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो। जदि असण्णीसु उच्चागोदस्स उक्कस्ससंचयं करिय वाउक्काइएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तुव्वेल्लणाए संखेज्जावलियमेत्तट्ठिदिं ठविय असण्णीसु-प्पज्जिय उच्चागोदोदइल्लेसु[1]प्पज्जदि तो एदं घडदे। ण च उव्वेल्लणकालो जहण्णओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो अत्थि, एइंदिएहि आढत्त[2]ट्ठिदिखंडयाणमायामस्स पलिदोवमस्स असंखे० भागणियमुवलंभादो त्ति ? ण, सयलसुदविसयावगमे पयडि-जीवभेदेण णाणाभेद-भिण्णे असंते एदं ण होदि त्ति वोत्तुमसक्कियत्तादो। तम्हा सुत्ताणुसारिणा सुत्ताविरुद्धं वक्खाणमवलंबेयव्वं।

ओरालिय० संखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसा०। अण्णदरवेदे विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। [3]भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। विरि-

शंका— यह सब वैसा हो, किन्तु उच्चगोत्रकी अपेक्षा तिर्यंच आयुके संख्यातगुणत्व सम्भव नहीं है; क्योंकि, संख्यात आवलियों मात्र उच्चगोत्रके समयप्रबद्धोंमें डेढ़ गुणहानिका भाग देनेपर एक समयप्रबद्धका असंख्यातवां भाग पाया जाता है, तथा संख्यात आवलियोंसे भाजित तिर्यंच आयुमें समयप्रबद्धका संख्यातवां भाग पाया जाता है। यदि कहा जाय कि उद्वेलनाकी अन्तिम फालिके द्रव्यको ग्रहण करनेपर तिर्यंच आयुके संख्यातगुणत्व बन सकता है, तो यह भी ठीक नहीं है; क्योंकि वह (फालि) पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। यदि असंज्ञी जीवोंमें उच्चगोत्रके उत्कृष्ट संचयको करके फिर वायुकायिक जीवोंमें उत्पन्न होकर अन्त-र्मुहूर्त उद्वेलना द्वारा संख्यात आवली मात्र स्थितिको स्थापित कर असंज्ञियोंमें उत्पन्न होकर उच्च-गोत्रके उदय युक्त जीवोंमें उत्पन्न होता है तो यह घटित हो सकता है, परन्तु उद्वेलनाका काल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त मात्र नहीं है; क्योंकि, एकेन्द्रियोंके द्वारा प्रारम्भ किये गये स्थितिकाण्डकोंके आयामके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होनेका नियम पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि प्रकृतियों और जीवोंके भेदसे नाना भेदोंको प्राप्त हुए समस्त श्रुतविषयक ज्ञानके न होनेपर 'यह नहीं हो सकता' ऐसा कहना शक्य नहीं है। इस कारण सूत्रका अनुसरण करनेवाले प्राणीको सूत्रसे अविरुद्ध व्याख्यानका अवलम्बन करना चाहिये।

तिर्यंच आयुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशोदय संख्यातगुणा है। उससे तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। अन्यतर वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है।

१ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोदइल्लेसु-' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'आदत्त' इति पाठः। ३ का-ताप्रत्योर्नोप-लभ्यते वाक्यमिदम्।

यंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाणं अण्णयरस्स विसे० । णीचागोद० विसे० । सादासाद० विसेसाहिओ । एवमसण्णीसुक्कस्सपदेसुदय-दंडओ समत्तो ।

एत्तो जहण्णगो– जहण्णपदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणु-बंधि० असंखे० गुणो । पयलापयला० असंखे० गुणो । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीण-गिद्धी० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । केवलदंसण० विसे० । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० विसे० । हस्स० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० विसे० । संजलणस्स अण्णदरस्स विसे० । ओहिणाण० असंखे० गुणो । ओहिदंसण० विसे० । णिरयाउ० असंखे० गुणो । णेदं जुज्जदे, एइंदियसमयपबद्धमेत्तओहिदंसणावरण-जहण्णुदयादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदएगसमयपबद्धमेत्तणिरयाउअजहण्णुदयस्स

भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य प्रदेशोदय दण्डक अधिकार प्राप्त है— वह जघन्य प्रदेशोदय मिथ्यात्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्या-नावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलाका असंख्यात-गुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जुगुप्साका अनन्तगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्य-तरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नारकायुका असंख्यातगुणा है ।

शंका— यह योग्य नहीं है, क्योंकि एकेन्द्रियके समयप्रबद्ध मात्र जो अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेशोदय है उसकी अपेक्षा अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित एक समयप्रबद्ध

असंखेज्जगुणत्तविरोहादो ? ण, ओकड्डुक्कड्डणाए विणा अवट्ठिदट्ठिदिपदेससंतकम्मे विवक्खिदे दिवड्ढगुणहाणिभागहारुववत्तीए। ण च एसो अत्थो पारमत्थिओ, ओकड्डुक्कड्डणाहि हेट्ठुवरि पक्खित्ते पदेसग्गणिसेगस्स असंखेज्जलोगभागहारे संते विरोहाभावादो। तम्हा उभयत्थ जदि वि भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो तो वि थोवबहुत्तं सुत्तबलेण अवगंतव्वं।

देवाउ० विसे०। तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो। मणुस्साउ० विसे०। ओरालिय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। वेउव्विय० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० दो वि तुल्ला विसे०। देवगइ० विसे०। मणुसगइ० विसे०। णिरयगइ० विसे०। सोग० संखे० गुणो। अरदि० विसे०। इत्थिवेद० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। विरियंतरा० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिआवरण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चागोदे विसे०। णीचागोदे विसे०। सादासादेसु विसे०। एवमोघजहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो।

मात्र नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयके असंख्यातगुणे होनेमें विरोध है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि अपकर्षण-उत्कर्षणके विना अवस्थित स्थितिवाले प्रदेशसत्कर्मकी विवक्षा होनेपर डेढ़ गुणहानि भागहार बन जाता है। परन्तु यह अर्थ पारमार्थिक नहीं है, क्योंकि, अपकर्षण-उत्कर्षण द्वारा नीचे ऊपर प्रक्षेप करनेपर प्रदेशाग्र सम्बन्धी निषेकका असंख्यात लोक भागहार होनेमें कोई विरोध नहीं है। इस कारण दोनों स्थानोंमें यद्यपि भागहार अंगुलका असंख्यातवां भाग है तो भी उनमें सूत्रबलसे स्तोकता व अधिकता समझनी चाहिये।

नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयसे देवायुका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है। तिर्यंच आयुका असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुका विशेष अधिक है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजस शरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्ति दोनोंका भी तुल्य विशेष अधिक है। देवगतिका विशेष अधिक है। मनुष्यगतिका विशेष अधिक है। नरकगतिका विशेष अधिक है। शोकका संख्यातगुणा है। अरतिका विशेष अधिक है। स्त्रीवेदका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ जघन्य प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ।

णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असं० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणा० असंखे० गुणो। केवलदंसणा० विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाणावरण० अणंतगुणो। ओहिदंसणावरण० विसे०। णिरयाउ० असंखे० गुणो। वेउव्विय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसेसा०। णिरयगइ० संखे० गुणो। अजसकित्ति० विसे०। दुगुंछा० संखे० गुणो। भय० विसे०। सोग० विसे०। हस्स० विसे०। अरदि० विसे०। रदि० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतरा० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुद-णाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खुदं० विसेसा०। चक्खुदं० विसे०। संज-लण० विसे०। णीचागोद० विसे०। असाद० विसे०। साद० विसेसाहिओ। एवं णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

तिरिक्खगईए जहण्णगो पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्ममिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे०

नरकगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। नारकायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। नरकगतिका संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेषअधिक है। शोकका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। अरतिका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्यय-ज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। असातावेद-नीयका विशेष अधिक है। सातावेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंचगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यात-गुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा

गुणो। पयलाए विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धी० विसे०। केवलदं० विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाण० अणंतगुणो। ओहिदंस० विसे०। तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो। ओरालिय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। वेउ० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे०। दुगुंछाए संखेज्जगुणो। भये विसे०। हस्स० विसे०। सोगे[1] विसे०। रदि-अरदीसु विसे०। णवुंसयवेदे विसे०। इत्थि-पुरिसवेदे विसे०। दाणंतराइय० विसेसा०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। वीरियंतराइय० विसेसा०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। संजलण० विसे०। णीचागोद० विसे०। उच्चागोद० विसेसा०, खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सण्णीसुप्पज्जिय संजमासंजमं घेत्तूण पुणो मिच्छत्तं पडिवज्जिय गुणसेडीओ गालिय पुणो वि संजमासंजमं पडिवज्जिय आवलियसंजदासंजदस्स उदयट्ठिदिग्गहणादो। सादासादाणं

है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। शोकका विशेष अधिक है। रति और अरतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। स्त्री और पुरुष वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिकस्वरूपसे आकर, संज्ञियोंमें उत्पन्न होकर, संयमासंयमको ग्रहणकर, फिर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, गुणश्रेणियोंको गलाकर, फिरसे भी संयमासंयमको प्राप्त होकर आवली मात्र संयतासंयतकी उदयस्थिति यहां ग्रहण की गयी है। उच्चगोत्रके जघन्य प्रदेशोयसे साता व असाता वेदनीयका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है। इस प्रकार

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अप्रतौ 'दुगुंछाए० विसे० सोगे०', काप्रतौ 'दुगुंछाए विसेसं गए सोगे०', ताप्रतं 'दुगुंछाए संखेज्जगुणो। सोगे' इति पाठः।

विसेसाहिओ । एवं तिरिक्खगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंस० विसे० । मणुस्साउअ० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । वेउ० विसे० । तेया० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगईए संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसाहियो । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसे० । अण्णदरवेदे तुल्लो विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । मदिआवरणे विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्च-णीच० विसे० । सादासाद० विसे० । आहारसरीर० असंखे० गुणो । तित्थयर० असंखे० गुणो । एवं मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

तिर्यंचगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निन्द्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका तुल्य विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । ऊंच व नीच गोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । आहारशरीरका असंख्यातगुणा है । तीर्थंकरप्रकृतिका असंख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणे असंखे० गुणो। पच्चक्खाणे विसेसा०। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणावरणे असंखे० गुणो। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। केवलदंस० विसे०। दुगुंछाए अणंतगुणो। भय० विसे०। हस्स० विसे०। रदि० विसे०। पुरिसवेदे० विसे०। संजलणाए अण्णदर० विसे०। ओहिणाण० असंखे० गुणो। ओहिदंसण० विसे०। देवाउ० असंखे० गुणो। वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। देवगइ० असंखे० गुणो। जसकित्तीए विसे०। अजसकित्तीए विसे०। सोगे संखे० गुणो। अरदि० विसे०। इत्थिवेद० विसे०। दाणंतरा० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदि० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चागोदे विसे०। सादासाद० तुल्लो विसेसाहिओ। एवं देवगईए जहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो।

असण्णीसु जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो सासणपच्छायदं पडुच्च उदीरणोदओ त्ति। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणा० असंखे० गुणो। पयला०

देवगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। जुगुप्साका अनन्तगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। पुरुषवेदका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। देवायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। देवगतिका असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिका विशेष अधिक है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। शोकका संख्यातगुणा है। अरतिका विशेष अधिक है। स्त्रीवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असाता वेदनीयका तुल्य विशेष अधिक है। इस प्रकार देवगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

असंज्ञी जीवोंमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है, यह सासादन गुणस्थानसे पीछे मिथ्यात्वमें आये हुए जीवकी अपेक्षा उदीरणोदय स्वरूप है। अनन्तानुवन्धिचतुष्कमें

विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । णिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० विसेसा० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । मणुसाउ० विसेसा० । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसेसाहिओ । कम्मइय० विसे० । वेउव्विय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे० । मणुसगई० विसे० । देवगई० विसे० । णिरयगई० विसे० । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसेसा० । अण्णदरवेदे विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाणा० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदि० विसेसा० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाए विसे० । णीचागोदे० विसे० । उच्चागोदे विसे० । सादासादाणं विसेसा० । एवमसण्णिपंचिंदिएसु जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

एत्तो भुजगारपदेसउदओ । तत्थ अट्ठपदं— जमेण्हिं पदेसग्गमुदिण्णं तत्तो

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नारकायुका अनन्तगुणा है । देवायुका विशेष अधिक है । तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । नरगतिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

यहां भुजाकार प्रदेशोदयका अधिकार है । इसमें अर्थपद कहा जाता है— इस समय

अणंतरउवरिमसमए बहुपदेसग्गे उदिदे एसो भुजगारो णाम। जमेण्हिपदेसग्गमुदिदं अणंतरउवरिमसमए तत्तो थोवदरे पदेसग्गे उदयमागदे एसो अप्पदरउदओ णाम। तत्तिए तत्तिए चेव पदेसग्गे उदयमागदे अवट्ठिदउदओ णाम। अणंतरादीदसमए उदएण विणा एण्णिमुदयमागदे एसो अवत्तव्वउदओ णाम। एदेण अट्ठपदेण सामित्तं। तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदओ कस्स ? अण्णदरस्स। एवं सव्वकम्माणं। णवरि जासिं पयडीणमवत्तव्वमत्थि तं[1] जाणिय वत्तव्वं।

एयजीवेण कालो। तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगारउदओ केवचिरं कालादो होदि ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदरउदओ केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदगो केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं मदिआवरणभंगो।

अचक्खु ओहि-केवलदंसणावरणाणं पि मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदगो केवचिरं० ? जह० एगसमओ,उक्क० संखेज्जा समया। भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं० ?

जो प्रदेशाग्र उदयको प्राप्त है उससे अनन्तर आगेके समयमें बहुत प्रदेशाग्रके उदित होनेपर यह भुजाकार प्रदेशोदय कहा जाता है। जो इस समय प्रदेशाग्र उदित है उससे अनन्तर आगेके समयमें स्तोकतर प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर यह अल्पतर प्रदेशोदय कहलाता है। उतने उतने मात्र प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर अवस्थित प्रदेशोदय कहलाता है। अनन्तर वीते हुए समयमें उदयके विना इस समय उदयको प्राप्त होनेपर यह अवक्तव्य उदय कहा जाता है। इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदय किसके होता है ? वह अन्यतर जीवके होता है। इसी प्रकारसे सब सव कर्मोंके सम्बन्धमें स्वामित्वका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि जिन प्रकृतियोंका अवक्तव्य प्रदेशोदय है उसका कथन जानकर करना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी भी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्राका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। उसका भुजाकार और अल्पतर वेदक कितने काल

---

१ ताप्रतौ 'मत्थित्तं' इति पाठः।

जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तो। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयपयडीणं। सोलस-कसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो। सादस्स भुजगार-अप्पदरउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा[1]। अवट्ठिदउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० संखे० समया। असादस्स भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया।

सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सम्मत्त० भुजगारवेदग० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। तिण्णं पि वेदाणं मदिआवरणभंगो। णिरयाउअस्स अप्पदर-अवत्तव्वपदाणि अत्थि, सेसपदाणि णत्थि। तेण तत्थ कालो सुगमो। मणुस्साउअस्स भुजगारवेदओ[2] जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० विसेसाहिओ, गोवुच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीहत्तादो। अवट्ठिदवेदगो जह० एगसमओ, उक्क० अट्ठसमया। मणुस्साउअस्स अप्पदरउदओ जह०

रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है। साता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास रहता है। उसका अवस्थित उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। असाता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है।

सम्यग्मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छयासठ सागरोपम मात्र होता है। मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। तीनों भी वेदोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। नारकायुके अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद हैं, शेष पद नहीं हैं। इस कारण उसके विषयमें कालप्ररूपणा सुगम है। मनुष्यायुका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्त विशेष अधिक काल तक रहता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी गोपुच्छरचना अन्तर्मुहूर्त दीर्घ होती है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय मात्र रहता है। मनुष्यायु-

१ अप्रतौ 'उक्क० अंतोमुहुत्तं छम्मासा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'भुजगारउदओ' इति पाठः।

एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि समऊणाणि। तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो। देवाउअस्स णिरयाउअभंगो।

णिरयगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। मणुसगइ-तिरिक्खगइ-देवगइणामाणं णिरयगइभंगो।

ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं मदिआवरणभंगो। आहारसरीरस्स णिद्दाए भंगो। समचउरससंठाण-वज्जरिसहणारायणसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-उवघाद-परघाद-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो। चदुसंठाण-पंचसंघडणाणं भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। अवट्ठिदं सुगमं। हुंडसंठाण-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो। उज्जोवणामाए भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं भुजगारो अप्पदरो वा उक्क० अंतोमुहुत्तं। सेसं सुगमं। एसुवदेसो णागहत्थिखमणाणं[1]।

का अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तीन पल्योपम मात्र रहता है। तिर्यंच आयुकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है। देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है।

नरकगति नामकर्मका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय रहता है। मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है।

औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। आहारशरीरकी प्ररूपणा निद्राके समान है। समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। चार संस्थान और पांच संहननोंका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र रहता है। उनके अवस्थित उदयकी प्ररूपणा सुगम है। हुण्डकसंस्थान और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। उद्योत नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंका भुजाकार और अल्पतर उदय उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। शेष प्ररूपणा सुगम है। यह उपदेश नागहस्ती श्रमणका है।

---

१ अ-काप्रत्योः 'खवगाणं', ताप्रतौ 'खवणाणं' इति पाठः।

अण्णेणं[1] उपएसेण मदिआवरणस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि सव्वट्ठे[2]। अप्पदरवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि णेरइयस्स[3] संकिलेसेण। सुद मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चदुण्णं दंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। असादस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अप्पदर० पलिदो० असंखेज्जदिभागो। णिरयगइणामाए भुजगारवेदओ अप्पदरवेदओ वा तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। णिरयगइणामाए अप्पदरवेदयकालस्स साहणं[4] वुच्चदे। तं जहा— णिसेयगुणहाणिट्ठाणाणंतरं थोवं। जोगट्ठाणेसु जीवगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि। मणुसगइणामाए तिरिक्खगइणामाए च भुजगारो अप्पदरो[5] च तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। देवगइणामाए भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो०देसूणाणि। ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं पढमसंघडणस्स मणुसगइभंगो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो। सव्वासिं धुवबंधपयडीणं परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं च देवगइभंगो। अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं णिरयगइभंगो। उज्जोवणामाए ओरालियसरीरभंगो। उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरण-

अन्य उपदेशके अनुसार मतिज्ञानावरणके भुजाकार वेदकका काल सर्वार्थसिद्धिमें कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसके अल्पतर वेदकका काल नारकीके संक्लेशके कारण संख्यात वर्ष अधिक तेतीस सागरोपम मात्र है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। आसातावेदनीयके भुजाकार वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है। उसके अल्पतर वेदकका काल पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। नरकगति नामकर्मके भुजाकारवेदक व अल्पतर वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति नामकर्मके अल्पतर वेदकके कालका साधन कहा जाता है। वह इस प्रकार है— निषेकगुणहानिस्थानोंका अन्तर स्तोक है। योगस्थानोंमें जीवगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्म और तिर्यंचगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तीन पल्योपम काल मात्र रहता है। देवगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। औदारिकशरीर व उसके आंगोपांग, बन्धन और संघातका तथा प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरआंगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी तथा परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा भी देवगतिके समान है। अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान

१ अप्रतौ 'अणेण' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'देसूणाणि। सव्वट्ठे' इति पाठः ३ ताप्रतौ 'वस्सब्भहियाणि। णेरइयस्स' इति पाठः। ४ मप्रतौ 'साहूणं' इति पाठः। ५ अ-काप्रत्योः 'भुजगारअप्पदरो' इति पाठः।

भंगो। णीचागोदस्स भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। एदम्हि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि दो उवदेसा, पढमेण चेव उवदेसेण[1] ताणि णेयव्वाणि।

एयजीवेण अंतरं[2] पवाइज्जंतेण उवएसेण वत्तइस्सामो। तं जहा— णाणावरणस्स भुजगारवेदयंतरं अप्पदरवेदयंतरं वा जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अणंतकालं। चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णाणावरणभंगो। सव्वकम्माणमवट्ठियवेदयंतरस्स वि णाणावरणभंगो। सेसाणं कम्माणं भुजगार-अप्पदरवेदयंतरं पगदिउदयादो भुजगारकालादो[3] च साधेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि कालो अंतरं सण्णियासो च एत्थ कायव्वो।

एत्तो अप्पाबहुअं। तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदरवेदया अणंतगुणा। भुजगारवेदया संखेज्जगुणा। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा। अप्पदरवेदया असंखे० गुणा। भुजगारवेदया संखे०

है। उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। नीचगोत्रका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। इस उपदेशमें जिन कर्मोंका कथन नहीं किया गया है उन कर्मोंके विषयमें दो उपदेश नहीं हैं, उनको प्रथम ही उपदेशके अनुसार ले जाना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा प्रवाहस्वरूपसे आये हुए उपदेशके अनुसार की जाती है। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणके भुजाकारवेदक और अल्पतरवेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। उसके अवस्थित-वेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है। चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सब कर्मोंके अवस्थितवेदकके अन्तरकालकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। शेषकर्मोंके भुजाकार व अल्पतर वेदकोंके अन्तरकालका कथन प्रकृतिउदय और भुजाकारकालसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर और संनिकर्षका भी कथन यहांपर करना चाहिये।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्राके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं।

---

१ ताप्रतौ 'चेव [दो] उवदेसेण' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अंतरे' इति पाठः। ३ प्रतिषु '-कालो' इति पाठः।

गुणा । पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो । मिच्छत्तस्स अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । सम्मत्तस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । भुजगारवेदया संखे० गुणा[1] । अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिद० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । णवुंसयवेदस्स[2] मिच्छत्तभंगो । इत्थि-पुरिसवेदाणं अवट्ठिदवेदया थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेसा० ।

देव-णेरइयाउआणं अवत्तव्ववेदया थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । मणुसाउअस्स[3] अवट्ठिद[4]० थोवा । अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर-वेदया संखे[5]० गुणा । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया अणंतगुणा । भुजगारवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

णिरयगइणामाए अवट्ठिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए अवत्तव्व० थोवा । अवट्ठिद० अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । मणुसगइणामाए अवट्ठिद०

भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है । मिथ्यात्वके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकार-वेदक, संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । मनुष्यायुके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असं-ख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । तिर्यंचआयुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यंचगति नामकर्मके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार-

१ सत्कर्मपंजिकायां 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णवुंसयवेदयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'असंखे० गुणा ।......। मणुसाउअस्स' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोद०', ताप्रतौ 'उच्चागोद० (अवट्ठिद०) इति पाठः । ५ सत्कर्मपंजिकायां 'असं०' इति पाठः ।

थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसे०। भुजगार० असंखे० गुणा। देवगदिणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-परघाद-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्तीणं अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाणाणं देवगइभंगो।

जाओ पयडीओ धुवबंधीओ ताणमवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदर० अणंतगुणा। भुजगार० संखे० गुणा। असंपत्तसेवट्ट० अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। चदुण्णं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। णिरयाणुपुव्वीणामाए अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। अवत्तव्व० विसे०। एवं देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए। मणुस्साणुपुव्वीणामाए अवट्ठिय० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० विसे०। अप्पदर० विसेसा०। एवं तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए। णवरि भुजगार० अणंतगुणा।

आदाव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरणामाणं अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्त० असंखे०

वेदक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। औदारिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, साधारण, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर और समचतुरस्रसंस्थानकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

जो प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं उनके अविस्थतवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। असंप्राप्तासृपाटिकासंहननके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजारवेदक असंख्यातगुणे हैं। चार संस्थानों और पांच संहननोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। नारकानुपूर्वीके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा करना चाहिये। मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा है। विशेष इतना है कि उसके भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं।

आतप, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वर नामकर्मोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं।

गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्खगइभंगो। अपज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० संखे० गुणा। सुस्सरणामाए अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। पज्जत्त-णामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्प-दर० संखे० गुणा।

ट्ठिदीणं[1] बंधेण ओकड्डुक्कड्डणाए [च] पदेसुदयस्स वड्ढी हाणी वा होदि, एदेण हेदुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसं[2] अप्पाबहुअं भवदि। तं जहा– णिरयगइणामाए थोवा अवट्ठिय०। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा[3]। भुजगार० असंखे०[4] गुणा। एदेण अणुमाणेण मग्गिदूण[5] सव्वकम्माणं णेयव्वं। एदं पुणो हेदुणा अप्पाबहुअं ण पवाइज्जदि[6]। एवं पदेसभुजगारो समत्तो।

एत्तो पदणिक्खेवो– मदिणाणावरणस्स उक्क० वड्ढी कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ अप्पाए सम्मत्तद्धाए संजमद्धाए च सव्वलहुं चरिमसमयछदुमत्थो जादो तस्स चरिम-

---

अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। अपर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यात-गुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं। सुस्वर नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्य-वेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। पर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं।

स्थितियोंके बन्ध, अपकर्षण और उत्कर्षणसे प्रदेशोदयकी वृद्धि और हानि होती है; इस हेतुसे प्रदेशोदय सम्बन्धी भुजाकारके विषयमें अन्य प्रकार अल्पबहुत्व होता है। यथा— नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। इस अनुमानसे खोजकर सब कर्मोंके उक्त अल्पबहुत्वको ले जाना चाहिये। परन्तु यह हेतुप्ररूपित अल्पबहुत्व परम्परागत नहीं है। इस प्रकार प्रदेशभुजाकार समाप्त हुआ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणाकी जाती है— मतिज्ञानावरण की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो गुणितकर्मांशिक जीव अल्प सम्यक्त्वकालमें और अल्प संयमकालमें शीघ्र ही अन्तिम

---

१ ताप्रतौ 'संखे० गुणा। गुणट्ठिदीणं' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'भुजगारण्णारिसं', ताप्रतौ 'भुज-गार० अण्णारिसं' इति पाठः। ३ अप्रतौ नास्तीदं वाक्यम्। ४ सत्कर्मपंजिकायां तु 'संखे०' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'मज्झिदूण' इति पाठः। सत्कर्मपंजिकायामेतस्य स्थाने 'अणुमाणेऊण' इत्येतत्पदमुपलभ्यते। ६ प्रतिषु 'पाविज्जदि', सत्कर्मपंजिकायां तु 'पवाइज्जदि' इति पाठः।

समयछदुमत्थस्स पढमसमयओहिलद्धस्स उक्क० मदिआवरणस्स पदेसुदयवड्ढी। कुदो? ओहिणाणवुड्ढीए अणहिमुहस्स[1] गुणसेडिपदेसगुणगारादो तदहिमुहगुणसेडिपदेसगुणगारस्स असंखे० गुणत्तादो। कधमेदं णव्वदे? सुत्तण्णहाणुववत्तीदो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पुण झीयमाणोहिक्खओवसमाणं[2] तत्तो तग्गुणयारवड्ढी असंखे० गुणा।

एवं सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु[3]-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च वत्तव्वं। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? चरिमसमयछदुमत्थस्स, जस्स पढमसमयणट्ठा ओही, तस्स। णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? उवसंतकसायस्स जाधे सगपढमसमयगुणसेडिसीसयं पवेदेदि[4] तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो होदूण से काले सव्वविसुद्धो जादो तस्स सव्वविसुद्धस्स जं गुणसेडिसीसयं तम्हि उदयमागदे जो थीणगिद्धितियस्स अण्णदरिस्से पयडीए पढमसमयवेदगो तस्स

समयवर्ती छद्मस्थ हुआ है उस प्रथम समयवर्ती अवधिलब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके मतिज्ञानावरण सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशोदयवृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि जो जीव अवधिज्ञानकी वृद्धिके अभिमुख नहीं है उसके गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकारकी अपेक्षा तदभिमुख जीवका गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकार असंख्यातगुणा होता है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— वह सूत्रकी अन्यथानुपत्तिसे जाना जाता है।

परन्तु हीयमान अवधिक्षयोपशम युक्त अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उक्त गुणकारवृद्धि उससे असंख्यातगुणी है।

इसी प्रकार (मतिज्ञानावरणके समान) श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिके स्वामीका कथन करना चाहिये।

अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके अवधिलब्धि नष्ट होनेके प्रथम समयमें होती है। निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह उपशान्तकषाय जीवके होती है, जब वह अपने प्रथम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिशीर्षका वेदन करता है, तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो अधःप्रवृत्तसंयत जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त होकर अनन्तर कालमें सर्वविशुद्धिको प्राप्त होता है उस सर्वविशुद्ध जीवका जो गुणश्रेणिशीर्ष है उसके उदयको प्राप्त होनेपर जो स्त्यानगृद्धि आदि तीनमेंसे अन्यतर प्रकृतिका प्रथम समयवर्ती वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट

१ अप्रतौ 'अणहिमाहस्स', काप्रतौ 'अणहिप्पायस्स', ताप्रतौ 'अणहिमा (मु) हस्स' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'ओहिणाणोहिदंसणावर [णा०] णं पुण ज्झीयमाणेहि खओवसमाणं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'केवलणाणावर [णा] णं चक्खु' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'वेदेदि' इति पाठः।

उक्क० वड्ढी।

चदुण्णं णाणावरणीयाणं तिण्णं दंसणावरणीयाणं उक्क० हाणी कस्स ? जो पढमसमयउवसंतकसाओ मदो संतो से काले देवो[1] जादो तस्स अंतोमुहुत्तदेवस्स जाधे गुणसेडिसीसयं पढमसमयणिज्जिण्णं ताधे उक्क० हाणी। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० हाणी कस्स ? परिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयं णिज्जरिज्जमाणं णिज्जिण्णं ताधे तस्स उक्क० हाणी। णवरि पढमसमयउप्पण्णओहिणाणस्से त्ति वत्तव्वं।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीयाणमुक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो तप्पाओग्गमज्झिमपरिणामुक्कस्सविसोहिं गदो से काले वि तारिसिं विसोहिं गदो जहा पलिदो० असंखे० भागपडिभागब्भहिया गुणसेडी जादो, जाधे एदाणि गुणसेडिसीसयाणि पवेदेदि ताधे तस्स उक्कस्समवट्ठाणं। एवं सेसाणं पि कम्माणं उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सामित्तं जाणिऊण वत्तव्वं।

जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च सव्वकम्माणमेक्को पदेसो अण्णदरस्स भवे। णवरि देवणिरयाउअं-तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वं।

वृद्धि होती है।

चार ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो प्रथम समयवर्ती उपशान्तकषाय जीव मरकर अनन्तर कालमें देव हो जाता है उस अन्तर्मुहूर्तवर्ती देवका गुणश्रेणिशीर्ष जब प्रथम समय निर्जराप्राप्त होता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? श्रेणिसे गिरते हुए सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका जब निर्जीर्यमाण अन्तिम गुणश्रेणिशीर्ष निर्जीर्ण हो चुकता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, यह कहना चाहिये।

पांच ज्ञानावरणीय और नौ दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त संयत जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे तत्प्रायोग्य मध्यम परिणाम रूप उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है व अनन्तर कालमें भी वैसी विशुद्धिको प्राप्त होता है जिससे गुणश्रेणि पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अधिक हो जाती है, जब वह इन गुणश्रेणिशीर्षकोंका वेदन करता है तब उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि व अवस्थानके स्वामित्वका जानकर कथन करना चाहिये।

सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान एक प्रदेश स्वरूप होकर अन्यतर जीवके होते हैं। विशेष इतना है कि देवायु, नारकायु और तीर्थंकर नामकर्मको छोड़कर यह कथन करना चाहिये।

---

१ अप्रतौ 'मदो संते से काले देवे' इति पाठः।

एत्तो अप्पाबहुअं— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्कस्सिया हाणी असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा। णिद्दा-पयलाणं पि उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्क० हाणी असं० गुणा। वड्ढी असंखेज्जगुणा। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असं० गुणा। हाणी विसेसा०। अट्ठण्णं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं णाणावरणभंगो। सम्मामिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो। देव-णिरयाउआणं उक्क० हाणी कस्स? दसवस्ससहस्साउट्ठिदीएसु देव-णेरइएसु उववण्णस्स दुसमयतब्भवत्थस्स। वड्ढी अवट्ठाणं वा णत्थि। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्समवमट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी विसेसाहिया। तिण्णं गइणामाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसे०। मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। ओरालियसरीरणामाए मणुसगइभंगो। तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। वेउव्विय-आहार

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रा व प्रचलाका भी उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। सम्यक्त्व, नौ नोकषाय और चार संज्वलन कषायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिसे युक्त देवों व नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है। उनकी वृद्धि व अवस्थान नहीं हैं। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। तीन गति नामकर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। औदारिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। तैजसशरीर, कार्मणशरीर, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि

सरीर-पंचसंघडण-चदुआणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसे०।

देव-णिरयाउअ-तित्थयरवज्जाणं सव्वकम्माणं पि जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तुल्लाणि, एगपदेसपमाणत्तादो। तित्थयरणामाए जह० हाणी अधापमत्तकेवलिगुणसेडिसीसएसु उदयमागदेसु। जह० वड्ढी दुसमयकेवलिस्स। तदो हाणी थोवा। जह० वड्ढी असंखे० गुणा। अवट्ठाणं जहण्णमुक्कस्सं वा णत्थि। तित्थयरणामाए जह० हाणी थोवा। उक्क० हाणी विसेसा०। जह० वड्ढी असंखे० गुणा। उक्क० वड्ढी असंखे० गुणा। एवं पदणिक्खेवो समत्तो। एत्तो वड्ढिउदए अप्पाबहुए कदे तदो उदए त्ति अणियोगद्दारं समत्तं होदि।

असंख्यातगुणी है। वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, पांच संहनन, चार आनुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है।

देवायु, नारकायु और तीर्थंकर प्रकृतियोंको छोड़कर सभी कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तुल्य हैं; क्योंकि, वे एक प्रदेश प्रमाण हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य हानि अधःप्रवृत्त केवली गुणश्रेणिशीर्षकोंके उदयप्राप्त होनेपर होती है। उसकी जघन्य वृद्धि द्वितीय समयवर्ती केवलीके होती है। इस कारण उसकी हानि स्तोक है और जघन्य वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है। उसका जघन्य व उत्कृष्ट अवस्थान नहीं है। तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है। उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है। जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ। यहां वृद्धिउदय विषयक अल्पबहुत्वके करनेपर उदय-अनुयोगद्वार समाप्त होता है।

उदयानुयोगद्वार समाप्त हुआ।



परिशिष्ट

संतकम्मपंजिया

.... ।

वोच्छामि संतकम्मे पंचि (जि) यरूवेण विवरणं सुमहत्थं ॥ १ ॥

महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ (इ) चउव्वीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदि-वेदणा त्ति जाणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्मि, पुणो प [पस्स-कम्म-पयडि-बंधण त्ति] चत्तारिअणिओगद्दारेसु तत्थ बंध-बंधणिज्जाणामाणियोगेहि सह वग्गणाखंडम्मि, पुणो बंधविधाणणामाणियोगद्दारो महाबंधम्मि, पुणो बंधगाणियोगो खुद्दाबंधम्मि च सप्पवंचेण परूविदाणि । पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसाणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि । तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुत्थयेण पंजियसरूवेण भणिस्सामो । तं जहा—

तथ पढमाणिओगद्दारस्स णिबंधण [स्स] परूवणा सुगमा । णवरि तस्स णिक्खेओ छव्विहसरूवेण परूविदो । तत्थ तदियस्स दव्वणिक्खेवस्स सरूवपरूवणट्ठं आइरियो एवमाह—

जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स सहाओ दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिबंधणमिदि । पृ० २.

एदस्सत्थो उच्चदे— जं दव्वमिदि उत्ते जीव-पोग्गल-धम्माधम्मागास-कालभेदेण छव्विहेसु दव्वेसु जस्स जस्स दव्वस्स परिणमणणिबंधणं विवक्खिदं तं तं घेत्तूण तस्स तस्स दव्वस्स जाणि दव्वाणि अस्सिऊण परिणमदि त्ति परिणमविहाणं उत्तं । तं जहा— तत्थ ताव जीवदव्वस्स पोग्गलदव्वमवलंबिय पज्जायेसु परिणमणविहाणं उच्चदे— जीवदव्वं दुविहं संसारिजीवो मुक्खो (क्को) चेदि । तत्थ मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहि परिणदसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोग्गलविवाइसरूवकम्मपोग्गले बंधिऊण पच्छा तेहिंतो पुव्वुत्तचउव्विहफलसरूवपज्जायं अणेयभेयभिण्णं संसरंतो जीवो परिसदि त्ति एदेसिं पज्जायाणं परिणमणं पोग्गलणिबंधणं होदि । पुणो मुक्कजीवस्स एवंविधणिबंधणं णत्थि, किंतु सत्थाणेण पज्जायंतरं गच्छदि । पुणो "जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो" इदि एदस्सत्थो— एत्थ जीवदव्वस्स सहावो णाण-दंसणाणि । पुणो दुविहजीवाणं णाणसहावो विवक्खिदजीवेहिंतो वदिरित्तजीव-पोग्गलादिसव्वदव्वाणं परिच्छेदणसरूवेण पज्जायंतरगमणणिबंधणं होदि । एवं दंसणं पि वत्तव्वं । तं पि कुदो ? विवक्खिदजीवेहिंतो वदिरित्तजीव-पोग्गलादिबाहिरदव्वेसु णिबंधस्स सरूवपरिच्छेदणे णिबद्धत्तादो ।

पुणो जीवदव्वस्स धम्मत्थिकायादो परिणमणविहाणं उच्चदे । तं जहा— संसारे भमंतजीवाणं आणुपुव्विकम्मोदय-विहायगदिकम्मोदयवसेण मुक्कमारणंतियवसेण च गदिपज्जायेण परिणदाणं गमणस्स संभवो पुणो कम्मविरहिदजीवाणं उड्ढगमणपरिणामसंभवो च धम्मत्थिकायस्स सहावसहायसरूवणिमित्तभेदेण होदि । तं कथं जाणिज्जदे ? पुह पुह पज्जायपरिणदसंसारिजीवाणं पुह पुह खेत्तसु णिवंधणतिविहसरूवगमणाणं हेदुत्तादो धम्मत्थियविरहिदखेत्तेसु पुव्वुत्तचउव्विहसरूवगमणाभावादो च ।

पुणो अधम्मत्थियकायमस्सिय जीवदव्वस्स परिणमणविहाणं उच्चदे— थावरणामकम्मोदयवसेण मारणंतियविरहिदतस-थावरकम्मोदयवसेण आणुपुव्विकम्मोदयविरहिदतस-थावरणामकम्मोदयवसेण मंदाणुभागोदयविहायगदिकम्मवसेण परवसा(सी)भूदसंसारिजीवाणं पुणो णिम्मूलकम्मकलंकविरहिदसिद्धजीवाणं च ट्ठिदिपज्जायेण परिणमदि।..

मिच्छत्तपुरिसस्स दिव्वसयणासण-छायादीणि अच्छणणिमित्ताणि होंति तहा चेव पुणो कादव्वमस्सिय जि..

णिवंधणं धम्मत्थियकायो त्ति।

सद्दव्व (आगासदव्व) मस्सिदूण जीवणिवंधणं उच्चदे— संसारि-मुक्कजीवाणं सग-सगोगाहणपमाणम्मि ट्ठिदसग-सगसव्वपदेसु विवक्खिदजीवेहिंतो पुह पुह अणंताणंतसुहुमजीवाण तत्थ पायोग्गोगाहणसहिदाणंताणंतासंखेज्जबादरजीवाणं कम्ममलविरहिदाणंतसिद्धजीवाणं च ओगासं दादूण ट्ठिदाणमागासदव्वमवट्ठाणसरूवेण णिवंधणं होदि।

पुणो एत्तो पोग्गलदव्वमस्सिय णिबंधणत्थो उच्चदे। तं जहा— तत्थ ताव जीवदव्वमस्सिय उच्चदे— संसारिजीवो णोकम्मसरूवेण णाणापयारेण पुव्वगल (पुग्गल) दव्वे गहिऊण गंध-धूव-दीव-वत्थाभरण-घड-पड-थंभाउह-पासादादिपज्जायंतरसरूवं कुणदि त्ति एदस्स एदेसु पज्जायेसु गमणस्स जीवो चेव णिवंधणं होदि। पुणो मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगपच्चयेहि कम्मसरूवेण गहिदपोग्गलाणं तक्खणे चेव अणंतगुणसत्तिसहिदवण्ण-गंध-रस-फासादिपज्जायगमणं जीवणिवंधणेण होदि। पुणो पोग्गलस्स पोग्गलंतरं पि णिवंधणं होदि। जहा जलवरिसणे सुक्कमट्टियस्स अद्ध (अद्द) भावादिदंसणादो। पुणो पोग्गलसहाओ णाम रूव-रस-गंध-फासा तु संसारिजीवम्मि सुह-दुक्खफलपायणम्मि पडिबद्धा होंति। केसिं पि खेत्तेसु कालेसु वि सहावपडिबद्धा होंति।

पुणो धम्मदव्वमस्सिय पुग्गलदव्वस्स परिणमणं उच्चदे। तं जहा— पुग्गलदव्वाणं लहुगगुणं वा गुरुगगुणं वा अगुरुगलहुगगुणं वा वत्तावत्तसरूवाणेयपज्जायपरिणदाणं सग-परपयोगेण गमणपज्जायं होदि। तेसिं णियमिदाणियमिदखेत्तेसु गमणं गमणणिमित्तधम्मदव्वेण होदि त्ति तेसिं पोग्गलाणं गमणपज्जायस्स तण्णिवंधणं होदि।

पुणो अधम्मदव्वमस्सिय उच्चदे। तं जहा— गुरुगगुणपज्जायपरिणदाणं अगुरुगलहुगगुणपरिणदाणं च पुग्गलाणं ट्ठिदिपज्जायपरिणदाणं अहवा पयोगवसेण ट्ठिदिपज्जायपरिणदाणं च ट्ठिदी अधम्मदव्वस्स सहावणिवंधणं होदि। पुणो कालागासदव्वाणि अस्सिय पुग्गलदव्वस्स परिणमणविहाणं जहा जीवदव्वमस्सिय उत्तं तहा वत्तव्वं।

पुणो धम्मदव्वस्स सेसदव्वाणि अस्सिऊण णिवंधणत्थो उच्चदे। तं जहा— "जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सियूण परिणमदि" त्ति एदस्सत्थे भण्णमाणे ताव जीव-पोग्गलेहिंतो एदस्स धम्मदव्वस्स दव्वंतरणिवंधणं परिणामंतरगमणं ण वत्तव्वं, तत्थ तस्सरूवेण गमणासंभवादो। पुणो सहावणिवंधणपरिणामो अत्थि। तं कथं ? जीव-पोग्गलाणमणेयपज्जायपरिणदाणं भेदेण णियदाणियदसरूवाणं गमणाणं णिवंधणं धम्मत्थियदव्वस्स सहावो, तं चेव तस्स सहावस्स पज्जायंतरगमणं, तं चेव तस्स दव्वस्स पज्जायंतरगमणं होदि त्ति वत्तव्वं। पुणो अधम्मदव्वमागासदव्वं च अस्सिय णिवंधणं उच्चदे— घणलोगमेत्ताधम्मदव्वपदेसाणं मुत्तामुत्तदव्वावगाहे(हि)दाणं ? अवट्ठाणावगाहणपज्जायपरिणामो अधम्मत्थिय-आगासदव्वाणं णिवंधणेण होदि। पुणो धम्मदव्वस्स कालदव्व-

मस्सिय णिबंधणं उच्चदे— धम्मदव्वपदेसाणं अगुरुगलहुगादिगुणाणं अविभागपलिच्छेदंतरगमणं कालदव्वणिबंधणं होदि ।

पुणो अधम्मदव्वस्स पज्जायंतरगमणणिबंधणं "जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूणे त्ति" एदं परूवणं णत्थि । पुणो सहावपरूवणमत्थि । तं उच्चदे— जीव-पुग्गलदव्वाणमगमणपज्जायपरिणदाणमवट्ठाणस्स अधम्मदव्वस्स सहाओ जेण सहाओ होदि तेण अधम्मदव्वस्स ट्ठिदिकरणपज्जायपरिणामणिबंधणमेदेहि दव्वेहि होदि । पुणो अधम्मदव्वस्स धम्मदव्वेहिंतो णिबंधणपरूवणं णत्थि । कुदो ? सहावदो । गदिलक्खणेण धम्मदव्वेण एदस्स अगुरुलहुगादिपज्जायंतरेसु गमणं होदि त्ति एदम्हादो एदस्स णिबंधणमत्थि त्ति किं ण उच्चदे ? ण, तस्स कालणिबंधणत्तादो । पुणो अधम्मदव्वस्स कालदव्वमस्सिय णिबंधणं उच्चदे— अधम्मदव्वस्स अगुरुगलहुगादिगुणाणमविभागपलिच्छेदंतरेसु गमणं कालदव्वसहावणिबंधणं । पुणो एदस्स सहावणिबंधणं लोगागासमेत्तकालदव्वपदेसाणमणेगदव्वमवगाहिदाणमवट्ठाणं होदि । पुणो आगासदव्वमवलंबियूण अधम्मदव्वस्स दव्वणिबंधणं णत्थि । पुणो एदस्स सहावणिबंधणमवगाहिदाणेयदव्वाणं आगासपदेसाणं अवट्ठाणकरणपज्जाए होदि । पुणो एत्थ ट्ठिदअधम्मदव्वं अलोगागासपदेसाणमवट्ठाणणिबंधणं होदि ।

पुणो कालदव्वस्स णिबंधणं उच्चदे— लोगमेत्तकालाणूणं दव्वंतरपडिबद्धणिबंधणं णत्थि । कुदो ? सहावदो चेव तहाणुवलंभादो । पुणो कालदव्वस्स सहावणिबंधणं जीव-पोग्गल-धम्माधम्मागासदव्वाणमत्थ-वंजणपज्जायेसु गच्छंताणं सहायसरूवेणं णिबंधणं होदि जहा कुंभगारहेट्ठिमसिलो व्व । णवरि अलोगागासस्स पज्जायंतरगमणं एत्थ ट्ठियकालो चेव करेदि । तं कथं ? दूरट्ठियसूरबिंबेण पउमविंदाणं विकसणं व कडुयपत्थरेण लोहकड्ढणं व तहेवोवलंभादो ।

पुणो आगासदव्वस्स सरूवणिबंधणं उच्चदे— एदस्स दव्वंतरपडिबद्धस्स णिबंधणं णत्थि । अहवा एवं वा अत्थि त्ति वत्तव्वं । तं जहा— जीव-पुग्गलदव्वाणं गमणागमणच्छणपज्जायपरिणदाणमणंताणंतमुत्तदव्वाणमवगाहंताणमणेयपयारेण अच्छणादिपज्जाएहि आगासदव्वस्स पज्जायंतरगमणणिबंधणं होदि त्ति । पुणो सहावणिबंधणं पि एवं चेव । णवरि आगासदव्वस्स सहावं चेव पहाणं कादूण वत्तव्वं । एवं धम्माधम्म-कालदव्वाणि च अस्सियूण दव्वणिबंधणं सहावणिबंधणं च सग-सगपडिबद्धपायोग्गेण जाणिय वत्तव्वाणि । णवरि आलोगागासस्स अवगाहणलक्खणसत्ती चेव, ण वत्ती; तत्तो गाहिज्जमाणदव्वाणमभावादो ।

संपहि पक्कमाहियारस्स उक्कस्सपक्कमदव्वस्स उत्तप्पाबहुगम्मि विवरणं कस्सामो । तं जहा—

अपच्चक्खाणमाणस्स उक्कस्सपक्कमदव्वं थोवं । पृ० ३६.

कुदो ? उक्कस्सजोगि-सण्णि-मिच्छाइट्ठिणा सत्तविहबंधयेण बद्धमोहणीयउक्कस्सदव्वमेगसमयपबद्धस्स सत्तमभागो किंचूणो होदि त्ति तं देसघादिफद्दयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाओ देसघादिफद्दयसव्वकम्माणं समाणादो विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थेणुप्पण्णाणंतरासिणा खंडेदूणेक्कखंडं किंचूणं घेत्तव्वं ।

एत्थ चोदगो भणदि— एवं घेप्पमाणे सव्वघादिफद्दयादिवग्गणादो अणंतगुणहाणिफद्दयवग्गणाओ गंतूण मिच्छत्तादिफद्दयवग्गणाए ट्ठिदत्तादो मिच्छत्तदव्वेण सेससव्वघादीणं

दव्वादो अणंतगुणहीणेग होदव्वं। ण च एवं, तत्तो एदस्स विसेसाहियस्स दंसणादो। तदो तप्पाओग्गाणंतरूवेहि खंडिदेगखंडं सव्वघादिदव्वं होदि त्ति घेत्तव्वमिदि ? ण, एवं घेप्पमाणे सम्मत्तदेसघादिफद्दयवग्गणाणमणंतगुणसहिदाणं रचणं कादूण तस्स चरिमवग्गणादो तदणंतरुवरिमवग्गणप्पहुडिरचिदाणं सम्मामिच्छत्तफद्दय-वग्गणदव्वाणमणंतगुणेहि हीणेण होदव्वं। एवं सम्मामिच्छत्तदव्वादो मिच्छत्तदव्वेण अणंत-गुणहीणेण होदव्वं। ण च एवं, सम्मत्तदव्वादो तेसिं दव्वाणमसंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणकमेण अद्ध(व)ट्ठाणादो। बंधपयडीणं एस कमो, ण संताणमिति चे-- ण, एवं संते मिच्छत्तस्सादिफद्दयादि-वग्गणादो हेट्ठिमसव्वघादि-देसघादिफद्दयाणं अण्णपयडिसंबंधीणं अस्सिऊण उत्तदोसो ण संभवदि तो वि संभवमिच्छिज्जयमाणे सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि अस्सिदूण उत्तदोसो संभवदि, दोण्हमण्ण-पयडिसंबंधेण तदुवरुवरिं तेसिं रचणाणं संबंधित्तणेण च समाणत्तादो। तदो सादिरेयमिच्छत्त-दव्वं घेत्तूण सेससव्वघादिकम्माणं जहण्णवग्गणादो अणंतगुणहाणिमेत्तद्धाणं गंतूण ट्ठिदतेसिं वग्गणेहि सह मिच्छत्तस्सादिवग्गणस्सेगपरमाणुगदाणुभागो जेण सरिसं होदि तेण कारणेण तदणुभागवसेण मिच्छत्तं अप्पणो आदिवग्गणप्पहुडिरचिदे दोसो णत्थि त्ति सिद्धं।

पुणो पुव्विल्लकिंचूणगहिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण घादिदूण एयखंडमवणिय सेसबहुखंडं मिच्छत्त-सोलसकसाया इदि सत्तारसपयडीहिं खंडिय सत्तारसट्ठाणेसु ठविय पुणो पुव्वगहिदेगखंडं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदूणेगखंडरहिदबहुखंडे पढमपुंजे पक्खिविय सेसेयखंडं एदेण विधाणेण सेसपुंजेसु सेसं पक्खिवियव्वं जाव सत्तारसमपुंजे त्ति। णवरि सत्तारसमपुंजे एगभागो पक्खिवियव्वो।

पुणो केइं एवं भणंति— आवलियाए असंखेज्जदिमभागे [खंडणभागहारो] ण होदि, किंतु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं खंडणभागहारमिदि भणंति। तदो उवदेसं लद्धूण दोण्हमेक्क-दरणिण्णवो कायव्वो। पुणो एवमुप्पण्णपुंजेसु सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणमाणे उक्कस्सदव्वं जादं। कुदो ? तत्थंतिमपुंज[प]माणत्तादो।

कोहे॰ विसेसाहियं। पृ॰ ३६.

कुदो ? पयडिविसेसेण।

मायाए॰ विसेसाहियं। लोहे॰ विसेसाहियं। पच्चक्खाणमाणे॰ विसेसाहियं। कोहे॰ विसेसाहियं। माया॰ विसेसाहियं। लोहे॰ विसेसाहियं। पृ॰ ३६.

पुणो माण(?)संजलण-कोह-माण-माया-लोहाणं कमेणत्थ विसेसाहिया होंति। कथमउत्तसंजलण-चउक्काणं एत्थुद्देसे विहंजणं होदि त्ति जाणिज्जदे ? ण, अणुभागमाहप्पादो। तं कथं ? पच्चक्खा-णाणुभागादो एदस्स अणुभागस्स अणंतगुणत्तादो णज्जदे। पुणो ताणि एत्थ ण गहिदाणि। कुदो ? उवरिमदेसघादिदव्वेसु पवेसिदत्तादो। णवरि वज्झमाणणोकसायसव्वघादिदव्वाणि एत्थुद्देसे पविट्ठाणि। कुदो ? दोण्हं एगभागत्तादो।

अणंताणुबंधिमाणे॰ विसेसाहियं। कोहे॰ विसेसाहियं। माया॰ विसेसाहियं। लोहे विसेसाहियं। [मिच्छत्ते विसेसाहियं।] केवलदंस॰ विसेसाहियं। पृ॰ ३६.

एत्थ चोदगो भणदि— चउणाणावरण-तिण्णिदंसणावरण--चउसंजलण-णवणोकसायाणं अणंतरोवणिदा (धा) अणुभागवग्गणासु तुम्मेहिं विभंजिदकमेण णेदुं ण सक्किज्जदे। कुदो ? एदे (दा) सिं पयडीणं सग-सगादिवग्गणादो अणंतभागहीणकमेण देसघादिफद्दयवग्गणाणं

चरिमवग्गणे त्ति गंतूण सव्वघादिफद्दयादिवग्गणादिम्मि संखेज्जभागहाणीयो संखेज्जगुणहाणीयो जादाओ त्ति अणंतरोवणिधा तत्थ णट्ठा त्ति । तदो एवंविहविभंजणं ण घडदि त्ति ? ण एस दोसो । कथं ? मूलपयडिट्ठिदीसु मोहणीयस्सादिणिसेयादो असंखेज्जभागहीणकमेण अणंतरोवणिधा गंतूणेयवारं संखेज्जगुणं होदूण पुणो वि संखेज्जभागहीणकमेण गंतूण णोकसायट्ठिदीसु थक्कासु संखेज्जभागहीणं जादं । तदो णोकसायट्ठिदीसु थक्कासु अणंतगुणहीणत्तदंसणादो, पुणो णाणावरण-दंसणावरण-मोहणीयमंतराइयाणं मूलपयडीणं बंधवग्गणासु अणंतभागहीणसरूवेण अणंतरोव-णिधा गंतूण पुणो हीणाणुभागयडीणं वग्गणासु ट्ठिदासु तत्थाणंतरोवणिधाए विणासुवलंभादो च । तदो जत्थ जत्थ अविरोधो तत्थ तत्थ तप्पदेसं मोत्तूण पुणो उवरि वि अणंतरोवणिधा भवदि । कुदो ? मूलुत्तरपयडीण अणंतरोवणिधासमाणत्तादो ।

पुणो एत्थ चोदगो भणदि— एदमप्पाबहुगं ण घडदे । कुदो ? एदेसिं पयडीणं उत्तुक्कस्स-सामित्तेण सह विरुद्धत्तादो । कथं सामित्तेण सह विरुद्धमप्पाबहुगमिदि चे उच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवमणंताणुबंधिमाणे० । कुदो ? सासणसम्मादिट्ठिम्मि बज्झमाणमणंताणुबंधम्मि अबज्ज (ज्झ) माणमिच्छत्तदव्वं गच्छदि त्ति । कुदो ? मोहणीयुक्कस्ससव्वघादिदव्वं पुव्वं व सत्तारसेसु विभंजिय ट्ठियस्स पंचमभागत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । मोहे० विसे० । मिच्छत्ते० विसे० पयडिविसेसेण । अपच्चक्खाणमाणे० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? असंजद० बंधुक्कस्सदव्वं पुव्वं व बड्ढ (बज्झ) माणबारसकसायेसु विभंजिदत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे विसे० । पचलापचला० विसे० संखेज्जदिभा० । कुदो ? मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि बद्धुक्कस्स दव्वं पुव्वं व विभंजिदे णवमभागत्तादो । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए० विसे० । पच्चक्खाण-माणे० विसे० संखेज्ज० । कुदो ? संजदासंजदबद्धुक्कस्सदव्वं पुव्वं व भज्जमाणट्ठपयडीसु विभंजिदत्तादो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे० विसे० । पयला० विसे० संखेज्जदि० । कुदो ? सम्मामिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठीहिं बद्धुक्कस्सदव्वस (स्स) छब्भागत्तादो । णिद्दा विसे० । केवलणाण० विसे० संखेज्जदिभागेण । कुदो ? छव्विह० णाणावरणदव्वस्स अणंतिमभागस्स पंचमभागत्तादो ।

एत्थ आइरियदेसियो भणदि— पुव्विल्लदेसघादिफद्दयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णब्भत्तरासीदो तत्तो अणंतगुणहीणेत्थतणदेसघादिफद्दयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णब्भत्तरासी अणंतगुणहीणो तस्स एत्थ भागहारोवलंभादो केवलणाणावरणदव्वेण अणंतगुणहीणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, पुव्विल्लदेसघादिफद्दयवग्गणरचणुद्देसमुल्लंघिय पुव्विल्लसव्वघादिफद्दयुद्देसे चेव एत्थतणसव्वघादिफद्दयरचणुवलंभादो । पुव्विल्लण्णोण्ण-ब्भत्थरासी चेव एत्थ वि भागहारोवलंभादो ।

पुणो केवलदंसणावरणं विसे० । पृ० ३६.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? छव्विहबंधगस्स दंसणावरणदव्वस्स अणंतिमभागस्स चउत्थ-भागत्तादो । कथं देसघादिबंधणकरणेण णट्ठचक्खु-अचक्खु-ओहिदंसणावरणसव्वघादिदव्वाणं एत्थ विभंजणमिदि चे— ण, बज्झमाणकेवलणाण-केवलदंसणावरणाणं पुव्विल्लभागहारपडिभागेण दव्वाणि होंति त्ति । अहवा दोण्हं पि समाणा होंति त्ति वा वसव्वमेदमविरुद्धमप्पाबहुगमिदि । ण एस दोसो । कुदो ? वीसण्णं सव्वघादिपयडीणं जहासरूवेण उक्कस्ससामित्ताणुरूवं अप्पाबहुगमेत्त (त्थ) ण विवक्खिदं होदि । तं कथमेवं परूविदविधाणागमविरुद्धत्तादो । तुम्हेहिं परूविधं (दं) कथं सामित्तविरोधं ण भवे ? ण, एत्थ एदेसिं पयडीणं मिच्छाइट्ठिणा बद्धुक्कस्सदव्वं घेत्तूण परूविदत्तादो विरोधो णत्थि ।

अहा(ह)वा एदेसिं पयडीणं जहासरूवसामित्तमस्सियूण एदं चेवप्पाबहुगं एवं साहेयव्वं । तं जहा— मिच्छाइट्ठिणा बद्धुक्कस्सदव्वं पुव्विल्लविभंजणम्हि चेव मिच्छत्ताणंताणुवंधीणमुक्कस्सं होदि । किमट्ठं सासणेण बद्धाणंताणुबंधीणं दव्वमस्सियूणुक्कस्ससामित्तमणंताणुवंधीणं ण उच्चदे ? दोसु वि गुणट्ठाणेसु एदस्स समाणपक्कमदव्वत्तादो ।

अहवा एवं वा विहंजणविहाणं वत्तव्वं । तं जहा— मिच्छाइट्ठिम्मि वद्धुक्कस्समोहणीयदव्वं आवलि० असं०भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदे बहुखंडाणि सत्तारसभागं कादव्वाणि । किमट्ठं बज्झमाणवावीसपयडीयो भागहारो ण दिज्जदे ? ण, संजलणचउक्कभागेसु णोकसायभागाणं संपवेसुवलंभादो । एवं कादूण पुव्वं व सेसेयखंडं पक्खिविय सत्तारसेसु ठाणेसु ठिदेसु सगसगादिवग्गणप्पहुडिवग्गणरचणं कादूण णेदव्वं जाव सग-सगंतिमवग्गणे त्ति । णवरि अपच्चक्खाणमाण-कोह-माया-लोह-पच्चक्खाणमाण-कोह-माया-लोह-संजलणमाण-कोह-माया-लोहाणंताणुबंधिमाणकोह-माया-लोह-मिच्छत्ताणं कमेणुक्कस्सवंधवग्गणाओ थक्कंति । पुणो देसघादिसंबंधिसव्वपंतीओ एगट्ठे कदे देसघादिमोहणीयदव्वं होदि । पुणो सव्वघादिसंबंधीणं सत्तारसपयडीणं दव्वाणि वग्गणाणुसारीणि मिच्छत्तादिसत्तारसपयडीणं होंति । तत्थ मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणं उक्कस्सोणि होंति । पुणो असंजदसम्मादिट्ठीण बद्धुक्कस्सदव्वस्स विभंजणविहाणे भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिम्मि पुव्वविभजिददव्वम्मि मिच्छत्तदव्वं घेत्तूण देसघादिम्मि पक्खिविय अणंताणुबंधिचउक्काणं दव्वं घेत्तूण पुव्विल्लाणंतरूवेण खंडिय तत्थ बहुखंडाणि देसघादीसु पक्खिविय सेसेयखंडं आवलि० असंखे० भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदबहुखंडाणि बारसखंडाणि कादूण सेसेयखंडे पुव्वविहाणेण पक्खित्तेसुप्पण्णबारसपुंजाणि घेत्तूण मिच्छाइट्ठिम्मि पुव्वं विभंजिदेसु गहिदसेसबारसपुंजेसु संजलणादीसु कमेण पक्खित्तेसु विभंजिदं होदि । एत्थ पुणो अपच्चक्खाणचउक्काणं उक्कस्सं होदि, एत्थतणपुव्विल्लपयडिविसेसादो । संपहि पक्खित्तदव्वमणंतगुणहीणं होदि त्ति पुव्विल्लविसेसाहियकमो चेव अणंताणुबंधिमाणादीणं एदेहिंतो होदि ।

एदं विभंजणं होदि त्ति कथं णव्वदे ? ण, सम्माइट्ठिपरिणामेसु सव्वघादिदव्वाचट्ठाणादो । तं कथं परिच्छिज्जदे ? ण, पमत्तापमत्तसंजदेसु संजलणाणं सव्वघादिदव्वाणं णिम्मूलोवट्टणदंसणादो ।

पुणो संजदासंजदेसु वि एदेण कमेण अट्ठकसायाणं विभंजणविहाणं जाणिय वत्तव्वं । पुणो दंसणावरणे भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीहिं बद्धुक्कस्सदंसणावरणदव्वे पुव्वं व विभंजिदे थीणगिद्धितियाणमुक्कस्सं होदि । पुणो सम्मामिच्छाइट्ठि-सम्माइट्ठीहि बद्धुक्कस्सदव्वे पुव्वं विभंजिदपयारेणेत्थ पायोग्गं जाणिय विभंजिदे पयला-णिद्दाणमुक्कस्सदव्वं होदि । पुणो सुहुमसांपराइयेसु बद्धदंसणावरणदव्वस्साणंतिमभागं वेसदवावण्णरूवेहि खंडिय चउव्वीसखंडेसु अणंतभागब्भहियपमाणेसु गहिदेसु ताणि केवलदंसणावरणुक्कस्सदव्वं होदि । सेसट्ठावीस-वेसदखंडाणि देसूणाणि देसघादिसरूवेण परिणमंति त्ति ताणि तम्मि पक्खिविदव्वाणि । कथमेदं परिच्छिज्जदे ? चक्खु-अचक्खु-ओहिदंसणावरणाणमेत्थ भज्झ(ज्ज)माणाणं पुव्वमेव णट्ठसव्वघादिबंधत्तादो । तेसिं एत्थ भागो णत्थि त्ति भज्झ(ज्ज)माणस्स वि सुट्ठुदव्वोवट्टणादो (?) । पुणो एत्थ पुव्वं व विससे(विसे)साहियकमो होदि त्ति वत्तव्वो ।

पुणो एत्थ बद्धणाणावरणदव्वविभंजणे कीरमाणे तत्थतणदव्वस्स अणंतिमभागं पंचतीसखंडाणि कादूण छखंडेसु अणंतभागव्वहिदे(ए)सु गहिदेसु ताणि केवलणाणावरणभागो होदि । सेसकिंचूणुगुतीसखंडाणि देसघादिसरूवेण परिणमंति । कुदो ? देसघादिबंधणकरणट्ठाणे चउणाणा-

वरणं (वरणाणं) णट्ठसव्वघादिबंधत्तादो। केवलणाणावरणमेक्कं चेव सव्वघाइसरूवेण वज्झइ, तस्स विसुद्ठुसव्वघादिदव्वोवट्टणादो। एसो अत्थो उक्कस्ससामित्ताणुसारिकरणट्ठं इट्ठेण परूविदो। अत्थदो पुण पुव्विल्लो चेव पहाणमिदि गेण्हिदव्वं। कुदो ? एत्थ णाण-दंसणावरणाणं छव्विहबंधगुक्कस्सदव्वाणि मिच्छाइट्ठिबंधुक्कस्सदव्वाणुसारीए ओवट्टणादो।

आहारसरीरपक्क० मणंतगुणं। पृ० ३६.

कुदो ? सत्तविहबंधगुक्कस्सदव्वस्स छव्वीसदिमभागस्स चउब्भागत्तादो। तं पि कुदो ? अपमत्तापुव्वकरणसंजदाणं तीसबंधएण बद्धुक्कस्सणामकम्मसमयपबद्धं विभंजमाणे तहोवलंभादो। कथं विभंजिज्जदि ? उच्चदे— सव्वुक्कस्ससमयपबद्धमावलियाए असं० भागेण खंडेदूणेगखंडरहिद-बहुखंडाणि बज्झमाणतीसपयडीसु चत्तारि सरीराणि एगभागं दोण्णि अंगोवंगाणि एगभागं लहंति त्ति छप्पयडीओ अवणिय सेसचउवीसपयडीसु दोपयडिसंखे पक्खित्ते छव्वीसाओ होंति। तेहिं खंडिय छव्वीसट्ठाणेसु ठविय सेसेयखंडं पुव्वविहाणेण पक्खिवियव्वं जाव चरिम-खंडादो पड(ढ)मखंडे त्ति। तत्थ पढमखंडो गदिभागो होदि, बिदियखंडं जादिभागो विसेसा-हिओ होदि, एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव णिमिणो त्ति। पुणो एत्थ विसेसाहियं होदि त्ति कथं णव्वदे ? तिरिक्खगदीदो उवरि अजसकित्ती विसेसाहिया त्ति उत्तप्पा-बहुगादो। पुणो तत्थ सरीरभागं घेत्तूण आवलि० असं० भागेण खंडेदूणेगखंडरहिदबहुखंडाणि चत्तारिखंडाणि कादूण सेसकिरियं पुव्वं व कदे तत्थ सव्वत्थोवं वेगुव्विय०। आहारसरी० विसे०। तेज० विसे०। कम्म० विसे०। पुणो एत्थतणआहारसरीरं उक्कस्सं होदि। एवमुवरि वि विभंजविहाणं जाणिय वत्तव्वं।

पुणो **वेगुव्वियसरीर० विसे०। पृ० ३६.**

संखेज्जादिभागेण। कुदो ? उक्कस्ससमयपबद्धस्स सत्तमभागस्स छव्वीसदिमभागस्स तिभागत्तादो।

ओरालिय० विसे०। पृ० ३६.

संखे० भागेण। कुदो ? समयपबद्धस्स सत्त० एक्कवीसदिमभागस्स तिभागत्तादो।

तेज० विसे०। कम्म० विसे०। पृ० ३७.

कुदो ? पयडिविसेसेण। आहारसरीरंगोवंग० विसे० संखेज्ज०। कुदो ? समयपबद्धस्स सत्तम० छव्वीसदिम० दुभागत्तादो। एदीए पयडीए अउत्तमप्पाबहुगं कथमेत्थ परूविज्जदे ? ण, उत्तप्पाबहुगेण सूचिदत्तादो।

पुणो मज्झिमचउसंठाणाणं आदिल्लपंज(पंच)संघडणाणं तित्थयरस्स च पक्कम० विसे० संखे०। कुदो ? समय० सत्तमभा० सत्तावीसदिमभागत्तादो। णवरि पुव्विल्लादो चउसंठाणाणि सरिसाणि होऊण विसे०। पंच संघडणाणि सरिसाणि होदूण विसे०। तदो तित्थयरं वि ० पयडिविसेसेण।

पुणो **णिरयगदी देवगदी विसे०** [मू० संखेज्जगुणं]**। पृ० ३७.**

संखेज्ज०। कुदो ? समयपबद्धसत्तमभागस्स छव्वीसदिमभागत्तादो। कथमेत्थ विभंजणं करिदे ? अट्ठावीसपयडिबंधम्मि पुव्वं व विभंजणकिरियमकुणंतेण कीरदे। एत्थ सूचिददसपयडीणं अप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा— समचउरं० विसेस०। वेगुव्वियसरीरंगोवंगं विसे०। णिरयगदि-देवगदिपाओग्गा० सरिसं होऊण विसे०। पसत्थापसत्थविहा० सरिस० विसे०।

सुभग० विसे० । सुस्सर-दुस्सर० सरिसं० विसे० । आदेज्ज० विसे० पगदिविसेसेण । कुदो ? सह विभंजिदत्तादो । पुणो वि सूचिदाणं उच्चदे— आदाव-उज्जोवाणं दोण्हं सरिस० विसे० संखे० । कुदो ? समयपबद्धस्स सत्तम० चउवीसदिमभागत्तादो ।

पुणो **मणुसगदि० विसे०** । पृ० ३७.

कुदो ? समयप० सत्तम० तेवीस० भागत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीणं अप्पाबहुगं०— विगलिंदिय-सगलिंदियजादीओ सरिसाओ० विसे० । ओरालियंगोवंग० विसे० । असंपत्त० विसे० । मणुसाणु०विसे० । परघाद० विसे० । उस्सास० विसे० । तस० विसे० । पज्जत्त० विसे० । थिर० विसे० । सुभ० विसे० । एदाओ सव्वाओ पयडीओ पयडिविसेसेण विसेसाहियाओ । कुदो ? सह विभंजिदत्तादो ।

पुणो **तिरिक्खगदि० विसे०** । पृ० ३७.

संखे० । कुदो ? समयप० सत्तमप०(भा०)एक्कवीसदिमभागत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीणं अप्पाबहुगमुच्चदे— एइंदि० विसे० । हुंडसंठाण० विसे० । वण्णसामण्णं० विसे० । गंधसामण्णं० विसे० । रससामण्णं० विसे० । फाससामण्णं० विसे० । तिरिक्खगइपा० विसे० । अगुरु० विसे० । उवघाद० विसे० । थावर० विसे० । बादर-सुहुमाणं पक्कमं सरिसं विसे० । अपज्जत्त० विसे० । पत्तेग-साधारणाणं पक्क० सरिस० विसे० । अथिर० विसे० । असुह० विसे० । दूभग० विसे० । अणादे० विसे० । एदासिं सव्वासिं पयडीणं पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ।

पुणो **अजसकित्ति० विसे०** । पृ० ३७.

एदेणप्पाबहुगपदेण जाणिज्जदि णामकम्मपयडीणं पयडिपरिवाडीए विसेसाहियं होदि त्ति । पुणो एदेण सूचिदपयडीणमप्पाबहुगमुच्चदे— णिमिण० विसे० ।

पुणो **दुगुंछाए संखेज्जगुणं** । पृ०३७.

कुदो ? समय० सत्त० दुभागस्स० पंचमभागत्तादो ।

भय० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । अरदि-रदीणं० विसे० । इत्थि-णउंस० सरिस० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण । णवुंसयवेदादो मिच्छत्तदव्वस्स संखेज्जदिभागपडिभागलद्धसासणसम्मा-इट्ठिम्मि वज्झमाणइत्थिवेददव्वं विसेसाहियं कथं ण भवे ? ण, वेदभागेसु मिच्छत्तदव्वपडिभागं ण गच्छदि त्ति । कथमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेव अप्पाबहुगादो ।

दाणंतराइयं संखे० गुणं । पृ० ३७.

कुदो ? छव्विहबंधगेण बद्धंतराइयदव्वस्स पंचमभागत्तादो ।

लाभंत० विसे० । भोगांत० विसे० । परिभो० विसे० । वीरिया० विसे० ।

पयडिविसेसेण एदेसिं पयडीणं पयडिपरिवाडीए विसेसाहियं जादं ।

कोधसंज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? समय० सत्तम० चउत्थभागत्तादो ।

मणपज्ज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? छब्भागस्स चउत्थभागत्तादो ।

ओहिणा० विसे० । सुदणा० विसे० । मदिणाण० विसे० । पृ० ३७.

माणसंज० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? समय० सत्तम० तदियभाग० ।

ओहिदं० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्जदिभागेण । कुदो ? समय० छब्भाग० तदियभागत्तादो ।

अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण ।

पुरिस० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? सत्तम० दुभाग० ।

माया०संज० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण ।

चत्तारिआउआणि० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? अट्ठमभागत्तादो ।

णीचागोद० विसे० । पृ० ३७.

कुदो ? सत्त० ।

लोहसंजल० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण ।

असादवेद० विसे० । जसकित्ति-उच्चागोदाणं सरिसं० विसे० । पृ० ३७.

संखेज्ज० । कुदो ? छट्ठभागत्तादो ।

सादवे० विसे० । पृ० ३७.

पयडिविसेसेण । पुणो वीससव्ववादीणं पणुवीसदेसघादीणं सादासाद०-चत्तारिआउगाणं णीचुच्चागोदाणं पुणो एक्कारसणामपयडीणं सगसेसछप्पण्णबद्धं(बंध)पयडिसूचयाणमिदि चउसट्ठिपयडीणं अप्पाबहुगं गंथयारेहिं परूविदं । अम्हेहि पुणो सूचिदपयडीणमप्पाबहुगं गंथउत्तप्पाबहुगबलेण परूविदं । कुदो ? वीसुत्तरसयबंधपयडीओ इदि विवक्खादो । तं पि कुदो ? पंचबंधण-पंचसंघादाणं पयडि-ट्ठिदि-अणुभागेहिं पंचसरीरेहिं सरिसाणं पुणो पदेसबंधेण किंचि विसरिसाणं सरीरेसु दव्वट्ठियणयेण पवेसिय संखा अवणिदा । पुणो वण्ण-रस-गंध-फासाणं दव्वट्ठियणयेण सामण्णरूवेण एत्थ गहणादो । तेसिं संखम्मि चत्तारि-एगचत्तारि-सत्त चेव संखाणि अवणिदा । पुणो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि च अबद्ध(अबंध)पयडीओ चेव, संतम्हि उप्पण्णत्तादो । ताओ दो वि अवणिदाओ । एवं सव्वाओ अट्ठावीस पयडीओ अबद्ध (अबंध) पयडीओ इदि सव्वपयडीसु अवणिदत्तादो ।

पुणो छादाल-सयपयडीओ बंधपयडीओ इदि विवक्खाए सूचिदप्पाबहुगं उच्चदे — सव्वघादिकम्माणमप्पाबहुगं पुव्वं व परूविय पुणो केवलणाणावरणादो वण्ण-गंध-रस-फासाणं सामण्णभागे घेत्तूण सग-सगुत्तरपयडीणं पुव्वं व विभंजिदम्मि तत्थ कक्खड० अणंतगुणं । णवरि पयडिट्ठाणमस्सियूण पुव्वुत्तभागहारेसु बंधणसंघादाणमिदि दोण्णिभागहारसंखाओ पवेसियव्वाओ । मउगं विसे० । गुरुगं विसे० । लहुगं विसे० । णिद्धं विसे० । लुक्खं विसे० । सीदं

विसे० । वुसुणं विसे० पयडिविसेसेण । किण्ण० विसे० संखेज्ज० । लीण० (णील०) विसे० । रुहिर० विसे० । हलि० विसे० । सेद० विसे० । तित्त० विसे० । कुदो ? सामण्णमूलभागाहियत्तादो । कडुग० विसे० । कसाय० विसे० । आंवल०(अंविल०)विसे० । महुर० विसे० । आहार० विसे० । आहारसरीरवंधण० विसे० । आहारसरीरसंघाद० विसे० । वेगुव्वियसरीर० विसे० । वेगुव्वियसरीरवंधण० विसे० । वेगुव्वियसरीरसंघाद० विसे० । ओरालिय० विसे० । तेज० विसे० । कम्मइयसरी० विसे० । ओरालियवंध० विसे० । तेजइगसरीरवंधण० विसे० । कम्मइयवंधण० विसे० । ओरालियसंघाद० विसे० । तेजइयसंघाद० विसे० । कम्मइयसंघाद० विसे० । तत्तो आहारसरीरंगोवंगं० विसे० । सुरभिगंध० विसे० । दुरभिगंध विसे० । एत्तो चउसंठाणादिउवरिमपदाणि सव्वाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि ।

पुणो गंथालावाणं चउसट्ठिपयडीणं गंथे सूचिदवीसुत्तरसयपयडीणं उच्चारणाणं छादालसयपयडीणं उच्चारणाणं च कमेणेदाणि तिण्णि वि संदिट्ठीओ होंति—

| स ३२८ ७ ख ५१७ | स ३२८ ७ ख ९१७ | ०००००००००००० | स ३२ ७ ख ९ | ००००० | स ३२ ७ ख ५ | स ३२ ७२६४ |

आहारस० वेगुव्वियसरीर | स ३२ ७२६३ | स ३२ ७२१३ | ओरालियं । तेजयिगं । कम्मइगं | स ३२ ७२६ |

नरक-देव- | स ३२ ७२६ | मणुस- | स ३२ ७२३ | तिरिक्खगदि | स ३२ ७२१ | स ३२ ७२१ | अजसकित्ति | स ३२ ७१० |

दुगुच्छ । ० भय । ० हस्स । ० सोग । ० अरदि-रदि । इत्थि-णउंसय० | स ३२ ६५ | दाणंतराय० ।

लाभं । ० भोगं । ० उपभोगं । ० वीरियं | स ३२ ७४ | कोधसंजलणं | स ३२ ६४ | मणपज्जव ।

ओधिणाणं । ० सुदणाणं । मदिणाणं | स ३२ ७३ | माणसंजलण | स ३२ ६३ | ओधिदंसणं । ० अचक्खु-

दंसणं । चक्खुदंसणं | स ३२ ७२ | पुरिसवेदं । ० मायासंजलणं । | स ३२ ८ | चत्तारिआउगं | स ३२ ७ | नीचागोदं

| स ३२ ७ | लोभसंज लं | स ३२ ७ | असातं | स ३२ ७ | जसकित्ति-उच्चागोदाणं | स ३२ ६ | साता-

वेदणीय गंथालावं | स ३२८ ७ ख ९१७ | ०००००००००००० | स ३२ ७ ख ९ | ००००० | स ३२ ७ ख ५ | स ३२ ७२६४ |

| स ३२ ७२६३ | स ३२ ७२१३ | ०० | स ३२ ७२६२ | स ३२ ७२७ | चउसंठाणाणं । ० पंचसंघडणाणं । तित्थयराणं

| स ३२ ७२६ | णरक-देवगदि-समचदुर | स ३२ ७२६ | वेगुव्वियंगोवंग । णरक-देवाणुपुव्वी । ० पसत्था-

पसत्थगइ । ० सुभगं । ० सुस्सर-दुस्सरं । ० आदेज्जं | स ३२ ७२४ | आदाउज्जोवं | स ३२ ७२३ |

मणुसगदि । ० विगलिंदिय-सगलिंदियाणि । ० ओरालियंगोवंगं । ० मणुस्साणुपुव्वी । ० परघाद । ० उस्सासं । ० तस-पज्जत्तं । ० थिरं । ० सुभं | स ३२ ७२१ | तिरिक्खदि । ००००००००००००००००००

स ३२/७२१ अजसगित्ति | स ३२/७२१ | णिमिण | स ३२/७१० | दुगुञ्छ । उवरि पुव्वं व । एसा वीसुत्तर [सय] पयडीणं उच्चारणसंदिट्ठी | स ३२८/७ ख ६१७ | ०००००००००००० | स ३२/७ ख ९ | ००००० | स ३२/७ ख ५ | स ३२/५२३८ | ००००००० | स ३२/५२३५ | ०००० | स ३२/७२३५ | ०००० | स ३२/७२८४ | ०० | स ३२/७२८३ | स ३२/७२८३ | स ३२/७२८३ | स ३२/७२३३ | ०० | स ३२/७२३३ | ०० | स ३२/७२३३ | ०० | स ३२/७२८३ | स ३२/७२३२ | ० | णवरि चउसंठाणादीणं पुव्वं व । एसा छादाल-सयपयडीणं संदिट्ठी ।

एत्तो पयडीसु जहण्णपक्कमदव्वाणं अप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा—

सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदव्वं । पृ० ३७.

कुदो ? सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स उप्पण्णपढमसमयजहण्णुववादेणागयसमयपवद्ध-सत्तकम्माणं विभंजिदे तत्थ मोहणीयलद्धदव्वं पुव्वं व अणंतखंडं कादूण किंचूणेगखंडं घेत्तूण पुव्वं व सत्तारसपयडीणं विभंजिदेसु तत्थंतिमपमाणं अपच्चक्खाणमाणदव्वं होदि । तदो

कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोहे० विसे० । पृ० ३७.

एत्थो (एत्तो) संजलणमाण-कोह-माया-लोहसव्वघादिदव्वं वज्झमाणपंचणोकसायसव्व-घादिदव्वसहागदं एत्थेव विसेसाहियकमेण ठिदं पुव्वं व देसघादिदव्वेसु पवेसिदव्वं ।

पुणो अणंताणु० माणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । मिच्छत्ते० विसे० । पृ० ३८.

एदाओ सव्वपयडीओ पयडिविसेसेण विसेसाहियाओ ।

केवलदंसण० दव्वं विसे० । पृ० ३८.

संखेज्ज० । एत्थ पुव्वं व विभंजिदे पुव्वुत्तसमयपवद्धस्स सत्तरूवेणाहादा(हदा)णंतरूवेण भजिदस्स णवमभागोवलंभादो ।

पचल० पक्क० विसे० । णिद्दा० विसे० । पचलापचला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलणाण० विसे० । पृ० ३८.

संखेज्जदि० । कुदो ? समय० सत्तम० अणंतिमभागस्स पंचभागोवलंभादो । पुणो एदेसिं वीसण्णं सव्वघादीणं जहण्णुक्कस्सप्पाबहुगालावो मिच्छाइट्ठिम्मि वंध(वद्ध)जहण्णुक्कस्सदव्वं घेत्तूण भणिदमिति सिद्धं ।

पुणो ओरालियस्स० दव्वमणंतगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? तस्सेव सुहुमेइंदियसमयपवद्धस्स सत्तमभागस्स अट्ठावीसदिमभागस्स तिभागत्तादो । तं पि कुदो ? वज्झमाणदेसघादीणं पुव्वं व वज्झमाणअघादीणं भागहारोवलंभादो ।

तेज० विसे० । कम्म० विसे० । तिरिक्खग० संखेज्जगुणं । पृ० ३८.

कुदो ? तिभागाभावादो । एदेण सूचिदपयडीणं अप्पाबहुगं उच्चदे— विगलिंदिय-सगलिं-दियजादीणं० सरिसं० विसे० । छस्संठाणाणि सरिसाणि विसे० । ओरालियगोवंग० विसे० छस्संघड० विसे० । वण्ण० विसे० । गंध० विसे० । रस० विसे० । फास० विसे० । तिरिक्ख-

गइआणु० विसे०। अगुरुगलहुग० विसे०। उवघाद० विसे०। परघाद० विसे०। उस्सास० विसे०। उज्जोव० विसे०। दोविहायगदि० विसे०। तस० विसे०। बादर० विसे०। पज्जत्त० विसे०। पत्तेग० विसे०। थिराथिर० सरिस० विसे०। सुभासुभ० सरिस० विसे०। सुभग-दूभग० सरिस० विसे०। सुस्सर-दुस्सर० सरिस० विसे०। आदेज्जाणादेज्ज० सरिस० विसे०। एदेसिं पयडीणं पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि जाणिदाणि। कुदो? एदासिं तेदालीसपयडीणं जहासंभवेण सह वज्झमाणत्तुवलंभादो।

जसाजस० सरिस० विसे०। पृ० ३८.

एदेण सूचिदणिमिण० विसे०।

पुणो मणुसगदि० विसे०। पृ० ३८.

संखेज्जदिभागेण। कुदो? पुव्विल्लसमयपबद्धस्स सत्तम० सत्तवीसदिम०। एदेण सूचिदपयडीणं अप्पाबहुग०—मणुसाणु० विसे०। एइंदिय० विसे० संखेज्ज०। कुदो? सत्त० चउव्वीस०। आदाव० विसे०। थावर० विसे०। सुहुम० विसे० संखेज्ज०। कुदो? सत्त० तेवीसदिमभा०। अपज्ज० विसे०। साधारण० विसे०।

पुणो दुगुंछा० विसे० संखेज्जगुणं। पृ० ३८.

कुदो? सत्तम० दसमभागत्तादो।

भय० विसे०। हस्स-सोगाणं० विसे०। रदि-अरदीणं० विसे०। इत्थि-पुरिस-णपुंसक० विसे०। माणसंज० विसे०। पृ० ३८.

संखेज्जदिभा०। कुदो? सत्तम० दुभागस्स चउत्थभागत्तादो।

कोहे० विसे०। माया० विसे०। लोहे० विसे०। दाणंतराय० विसे०। पृ० ३८.

संखेज्ज०। कुदो? सत्तमभा० पंचमभागत्तादो।

लाहांत० विसे०। भोगांत विसे०। उपभोग० विसे०। वीरिय० विसे०। मणप० विसे०। पृ० ३८.

संखेज्ज०। कुदो? सत्त० चउब्भागत्तादो।

ओहि० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंस० विसे०।

संखेज्ज० कुदो? सत्तम० तिभागत्तादो।

अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्च-णीचागोदाणं संखेज्जगु०। पृ० ३८.

कुदो? समय० सत्तमभागत्तादो।

सादासाद० पक्क० विसे०। पृ० ३८.

पयडिविसेसेण।

वेगुव्वियसरीर० असंखेज्जगुणं। पृ० ३८.

कुदो? एइंदियउववादजोगादो असंखेज्जगुणसण्णिपंचिंदियपज्जत्तुववादजहण्णजोगेण असंजदसम्माइट्ठिणा बद्धसमयप० सत्तम० सत्तावीसदिमभागत्तादो। एत्थ सूचिदप्पाबहुगं उच्चदे— तित्थयर० संखेज्जगुणं। कुदो? देवेसुप्पण्णपढमसमये होदि त्ति।

देवगदि० विसे० [मू० संखेज्जगुणं]। पृ० ३८.

संखेज्जदिभागेण। कुदो? दो(?)तित्थयरबंधस्स मणुस्सेसुप्पण्णस्स होदि त्ति। वेगुव्विय-अंगोवंग० विसे०। देवगदि० पा० विसे० पयडिविसे०। कुदो? तेण सह बंधत्तादो।

मणुस्स-तिरिक्खाउग०' असंखेज्जगुणं। पृ० ३८.

कुदो? सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं जहण्णुववादजोगादो सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तजहण्ण-परिणामजोगेण असंखेज्जगुणेणागदत्तादो।

पुणो णिरयगदि० दव्वं असंखेज्जगुणं [मू० असंखेज्जगु०]। पृ० ३८.

कुदो? असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताजहण्णपरिणामजोगेणागददव्वस्स सत्तम० चउवीस०। एत्थ सूचिदणिरयगइपा० विसे०।

पुणो णिरय-देवाउग० संखेज्जगु० [मू० असंखेज्ज०]। पृ० ३८.

कुदो? अट्ठमभागत्तादो।

आहारसरीर० असंखेज्जगुणं। पृ० ३८.

कुदो? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामेणागददव्वस्स सत्तावीसदिमभागस्स चउत्थभागत्तादो। एत्थ सूचिदाहारसरीरंगोवंग० संखेज्ज०। पुणो छादालसयपयडीणं अप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं।

तेसिं तिण्णं पि संदिट्ठी— | स ८ / ७ ख ९१७ | ०००००००००००० | स ००००० / ७ ख ९ | स / ७ ख ५ | स / ७२८३ | ओरालियसरीरं। ० तेजइयसरीरं। ० कम्मइगं | स / ७२८ | तिरिक्खगदि | स / ७२८ | जस-अजसकित्ति | स / ७२७ | मणुसगदिं | स / ७१० | दुगुंछं। ० भयं। ० हस्स-सोगं। ० रदि-अरदि-इत्थि-पुरिस-णपुंसक | स / ७८ | माणसंजलणं। ० कोधं। ० मायं। ० लोभं। | स / ७५ | दाणं। ० लाभं। ० भोगं। ० परिभोगं। ० वीरियं | स / ७४ | मण०। ० ओधि। ० सुद। ० मदिणाणाणं | स / ७३ | ओधिदंसणं। ० अचक्खु। ० चक्खु | स / ७ | उच्च-णीचागोदं | स / ७ | सादासाद | स २ / ७२७३ | वेगुव्विय-सरीरं | स २ / ७२७ | देवगदि | स २२ / ८ | तिरिक्ख-मणुस्साउग | स २२२ / ७२६ | नरकगदि | स २२२२ / ८ | देव-णिरयाउगं | स २२२२ ख / ७२७४ | आहारसरीरं गंथालावं | स ८ / ७ ख ९१७ | ०००००००००००० | स ००००० / ७ ख ९ | स / ७ ख ५ | स / ७२८ | ३। ओरालियसरीरं तेजइग। ० कम्मइग | स / ७१२८ | तिरिक्खगदि। ० विगलिंदिय-सगलिंदिय-छसंठाणाणं। ० ओरालियंगोवंग०। छस्संघडणं। ० वण्णं। ० गंधं। ० रसं। ० फासं। ० तिरिक्खाणु० अगुरु०। ० लहुगं। ० उवघादं। ० परघादं। ० उस्सासं। ० उज्जोवं। ० दोविहायगइ। ० तस। ० बादर। ० पज्जत्तं। ० पत्तेगं। ० थिराथिरं। ० सुभासुभं। ० सुभग-दूभगं। ० सुस्सर-दुस्सरं। ० आदेज्जाणादेज्ज। | स / ७२८ | जसाजसगित्ति।

० णिमिणं। | स ७२७ | मणुस्सगदि । ० मणुसाणुपुव्वी | स ७२४ | एइंदियं । ० आदावं । ० थावरं | स ७२३ | सुहुमं । ० अपज्जत्त । ० साधारणं | स ७१० | दुगुंछा । ० भयं । ० हस्स-सोगं । ०रदि-अरदि । ० इत्थि-पुरिस-णउंसगं | स ७८ | माणसंजलण । ० कोधं । ० मायं । ० लोहं । | स ७५ | दाणं । ० लाभं । ० भोगं । ० परिभोगं । ० वीरियं । | स ७४ | मण । ० ओधि । ० सुदं । ० मदि | स ७३ | ओधिदंसणं । ० अचक्खु । ० चक्खु | स ७ | उच्चा-णीचागोदं | स ७ | सादासादं | स २ ७२७३ | वेगुव्विय | स २ ७२८ | तित्थयर | स २ ७२७ | देवगदि । ० वेगुव्वियंगोवंग-देवगदिपाओग्ग | स २२ ८ | तिरिक्ख-मणुस्साउ | स २२२ ७२६ | णरकगति-तप्पाओग्ग | स २२२ ८ | णिरय-देवाउ | स २२२२ ७२२४ | आहारं | स २२२२ ७२७२ | अंगोवंग। वीसुत्तरसयपयडीणमुच्चारणं | स ८००००००००००० ७ ख ९१७ | | स ००००० ७ ख ९ | स ७ ख ५ | स ७३० | ८००००००० | स ०००० ७३०१५ | स ०००० ७३०१५ | स ३ ७३०१५ | ओरालिय-सरीरं तेजइगं कम्मइगं | स ७३०३ | ओरालियसरीरबंधणं । ० तेजइगबंधणं । ० कम्मइगं । | स ७३०१५ | ओरालियसंघादं । ० तेजइगं कम्मइगं । | स ७३०३ | उवरितिरिक्खगदिआदीणं पुव्वं व । एसो छादाल-सयपयडीणं आलावो ।

पुणो ट्ठिदि-अणुभागेसु पक्कमिदकम्मदव्वस्स अप्पाबहुगं गंथसिद्धं सुगममिदि तमपरूविय पुणो ठिदिणिसेयपडि पक्कमिदाणुभागस्सप्पाबहुगं णिक्खेवाइरियेण एवं परूविदं— समयाधिकाबाह-ट्ठिदीए ठिदणिसेयस्स अणुभागो थोवो। पुणो तत्तो तदणंतरउवरिमठिदीए णिसेयस्सणुभागो अणंतगुणो। एवं तत्तो उवरिमुवरिमठिदीणं ट्ठिदणिसेयाणं अणुभागा अणंतगुणाणंतगुणकमेण गच्छंति जा उप्पादिदुक्कस्सट्ठिदिणिसेयस्स अणुभागो त्ति ।

एदस्स कारणं किंचि वत्तइस्सामो । तं जहा— ट्ठिदिअणुभागाणं बंधस्स कारणं कसायोदय-जणिदपरिणामो चेव । स च परिणामो णाण-दंसणलक्खणस्स जीवस्स कम्मकलएण पत्तप्पसरूवस्स सव्ववत्थुपरिच्छित्तीए सह जादाणंतसुहस्स तिविहकेवलिरूवस्स उवसंत-खीणकसायरूवस्स च साहा-वियो वीदरागपरिणामो होदि । तं च विणासियअणादिकम्मसंबंधं जीवस्स कसायोदयो मिच्छत्तो-दयसहिदो णोइंदियणाणोवजोगजुत्तपंचिंदिये वावारसहियो अणागारोवजोगसहिदो वा असंखेज्ज-लोगमेत्तसराग-दोस-मोहपरिणामभेदमुप्पाएदि । तं कथं ? मिच्छत्तं चदुण्हं कसायचउक्काणं तिण्णं वेदाणं दोण्हं जुगलाणं भय-दुगुंछाणं पुह-पुहाणं जुगलाणं उदयाणमणुदयाणमिदि कमेण मोहकुलं ठविय अक्खसंचारेण उदयवियप्पेसु उप्पाइदेसु छण्णउदिमेत्तुदये वियप्पा होंति । पुणो तत्तियमेत्त-ट्ठाणे कसाय-णोकसायोदयपयडिसमूहस्स अणुभागमेगेगपंत्तीए ठविय तत्थतणबंधुक्कस्साणुभागस्स अणंताणुबंधिलोभ-माया-कोह-माणपयडीणं कमेणेक्केक्काणं चउवीसभेदभिण्णपंतीणमुक्कस्साणुभागे-हिंतो कमेणाणंतगुणहीणाणि संजलणलोभ-माया-कोह-माणाण बंधेण जादाणुभागा होंति । तेहिंतो

कमेणाणंतगुणहीणा पच्चक्खाणलोह-माया-कोह-माणाणमणुभागा होंति। तेहिंतो अपच्चक्खाणलोह-माया-कोह-माणाणं च अणंतगुणहीणा होंति। पुणो तेहिंतो जहण्णाइच्छावणमेत्तं हेट्ठा ओसरिय ट्ठिदाणुभागोदयो सग-सगपढमकसायोदयो होदि। कुदो? उदयाणुसारी उदीरणा होदि त्ति गुरूवदेसादो।

उक्कस्साणुभागादो संजलण-णोकसायाणं आदिवग्गणा त्ति एगपंतीए अभिण्ण……… दत्तादो……णोकसायोदयाणि मिच्छत्तोदयसहिदाणि णोइंदियणाणोवजोगजुत्तपंचिंदिएहि सह वीदरागभावं णासिय अदीव विवरि(री)दतमभावमुप्पादेंति त्ति ते संकिलेस्सा इदि भणिज्जंति। तं कथं णव्वदे? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तामिच्छाइट्ठी सव्वसंकिलिट्ठो उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि त्ति आरिसादो। तहिंतो कमेण छव्विहहाणीए पुव्वुत्तकमेण संकिलेसा असंखेज्जलोगमेत्ता असादादि-अप्पसत्त (त्थ) परावत्तणपयडिबंधकारणा होंति। पुणो तेहिंतो हेट्ठा केसिं पि जीवाणं पुव्वुत्त-कारणसामग्गीए वीदरागभावं णासिय अदीय(व)विवरि(री)यभावमुप्पाययंति। तदो तेसिं परिमाणाणं (णामाणं) कमेण संकिलेस-विसोहि त्ति सण्णा। एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि गच्छंति। पुणो तत्तो परं अणंताणुबंधीणं उदयविरहिदअसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेसट्ठाणाणि आवलियकालपडिबद्धाणि होंति। पुणो तत्तो परं अणंताणुबंधीणमुदयसहिदाणि पाओग्गकारण-समवेदाणि संकिलेस-विसोधिणिबंधणाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि होंति। कहिं पि सुभाणि असंखेज्जलोगमेत्तविसोहिट्ठाणाणि च पुणो कहिं पि सुक्क (संकि)लेसट्ठाणाणि असंखेज्जलोग-मेत्ताणि होंति। पुणो मिच्छत्तविरहिदाणि सासणसम्मादिट्ठि- [म्हि] मिच्छत्ताणंताणुबंधि-विरहिदाणि सम्मामिच्छाइट्ठी (ट्ठि-) असंजदसम्माइट्ठीसु, पुणो तेहिं सहापच्चक्खाणविरहिदाणि संजदासंजदम्मि, पुणो पुव्वुत्तेहिं सह पच्चक्खाणविरहिदाणि वि पमत्तसंजदम्मि पुह पुह संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि होंति। पुणो अप्पमत्त-अपूव-(अपुव्व)करणसुद्धिसंजदेसु विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि होंति। पुणो अणियट्टिम्मि उभयसेढीसु सवेदिचरिमसमयो त्ति पुव्वफद्दयपडिबद्धट्ठाणाणि बारसपंतीसु पुह पुह अंतोमुहुत्ताणि होंति। णवरि उवसमसेढीए चरिमसमयअणियट्टिपज्जवसाणं जाव पुव्वफद्दयपडिबद्धट्ठाणाणि होंति। पुणो तत्तो परं खवग-सेढीए अपुव्वफद्दयवग्गण-बादरकिट्टि-सुहुमकिट्टिपडिबद्धट्ठाणाणि कमेण चदु-चदु-तिग-दुग-एग-पंतीसु अंतोमुहुत्तमेत्ताणि होंति। पुणो एवमुप्पण्णाणि एत्तियमेत्ताणि सव्वपरिणामट्ठाणाणि होंति। णवरि मिच्छत्तसहगदचरिमसंकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठि-असण्णि-पंचिंदिएसु चउरिंदिएसु तीइंदिएसु बीइंदिएसु एइंदिए (य) जीवेसु च उप्पण्णेसु कमेण णोइंदिय-सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय [-तुगिंदिय] णाणगदा, एग-दो-तिण्णि चत्तारि-पंच-सहायविरहिदत्तादो। अप्पप्पकसायोदयट्ठाणाणि पुह पुह असंखेज्जलोगमेत्ताणि। ताणि संकिलेस-विसोहिणामधेयेसु पविट्ठाणि होंति। पुणो एवमुप्पण्णचउक्कसायपडिबद्धछण्णउदिपंतीयो सग-सगपाओग्गट्ठाणे पविसिय एगपंती कायव्वा। एवमुप्पाइदकसायोदयट्ठाणेसु उक्कस्सट्ठिदिबंधमादिं कादूण समयूणादिकमेण अंतोकोडाकोडिमेत्तधुवट्ठिदिबंधो त्ति पुह पुह असंखेज्जलोगमेत्ताणि कसायो-दयट्ठाणाणि संकिलेसणामधेयाणि विसेसहीणाणि कमेण होंति। णवरि विसोहिणामधेयकसायो-दयट्ठाणाणि सादुक्कस्सट्ठिदिबंधपायोग्गप्पहुडिविसेसाहियकमेण गच्छंति जाव सगधुवट्ठिदि त्ति।

पुणो तत्तो हेट्ठिमट्ठिदिवियप्पेसु वि मिच्छा०-सासण०-सम्मामिच्छा०-असंजद०-संजदा-संजद०-पमत्तापमत्त० अपुव्वेसु लब्भमाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि होंति। णवरि मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजद पमत्तापमत्तसंजदगुणट्ठाणेसु अधापवत्त-अपुव्वाणियट्टिकरणाणि

कीरमाणेसु जं तत्थाणियट्टिकरणाणि वंदण(?)ठिदिवंधेसु अंतोमुहुत्तमेत्तकसायोदयट्ठाणाणि होंति। णवरि जत्थ संखेज्जभागहीण-संखे० गुणहीण-असंखेज्जगुणहीणेसु [] णियमेण ठिदिवंधोसरणेण ठिदिवंवेसु जादेसु तत्थ तेसिमंतरालणिसेयाणं वत्ति(त्त)ठिदिवंधाणं (वंधा ण) संति। किंतु अण्णठिदिवंधेहि सह अव्वत्तठिदिवंधत्तणेण। तेसिं कारणभूदकसायोदयट्ठाणाणि पुव्वुप्पाइदट्ठाणेसु उप्पण्णाणि संति, किंतु तेसिं वत्तिसरूवोदया ण संति। अण्णकसायोदयब्भंतरेसु पवेसिय उदयं देंति त्ति। णवरि असंखेज्जगुणहीणठिदिवंधोसरणमणियट्टिम्मि चेव संभवदि। पुणो एवमुप्पण्णकसायोदयट्ठाणेसु उक्कस्सठिदिवंधहेदुभूदाणि कसायोदयट्ठाणाणि सहायसव्वपेक्खाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि होंति।

जदि एवं[तो]तेहि उक्कस्सट्ठिदिम्मि वज्झमाणम्मि तत्थ वद्धसमयपवद्धपरमाणूणं सव्वेसिंमुक्कस्सट्ठिदिवंधसंभवे संते कथं तस्स समयपवद्धस्सब्भंतरपरमाणूणं समयूणादिट्ठिदिवंधाणं संभवो ? ण एस दोसो। कथं ? उक्कस्सकसायोदयस्स आदिवग्गणआदिप(फ)द्दयप्पहुडिं असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्ठाणाणं अभिण्णसरूवेण एगपंतीए रचणा कायव्वा जा उक्कस्सप(फ)द्दयउक्कस्सवग्गणे त्ति। एदाणि सव्वाणि एक्कसमये ण उदयं करेंति। पुणो तत्थ उक्कस्सवग्गणप्पहुडि हेट्ठिमाणं असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्ठाणाणं वग्गणेहि उक्कस्सट्ठिदिं वंधदि। तत्तो हेट्ठिमाणं असंखेज्जलोगमेत्तकसायोदयट्ठाणाणं वग्गणेहि समऊणट्ठिदिं वंधदि। एवं हेट्ठा वि जाणियूण कसायोदयट्ठाणाणि वत्तव्वाणि जाव सगसमयाहियावाहा त्ति। पुणो एवं समयूण-दुसमयूणादिट्ठिदीयो अवलंविय णेदव्वं जाव सवेदिचरिमसमयकसायोदयो त्ति। एवं वंधे समयाधिकआवाहापज्जवसाणसव्वट्ठिदीयो वि उप्पण्णाओ होंति।

पुणो तत्थ हेट्ठिमट्ठिदीयो किण्ण बज्झंति ? ण, अपुव्वप(फ)द्दयवग्गणकिट्टिसरूवेण णोकसायोदयविरहिदकसायोदयेण च उप्पण्ण(ज्ज)माणकज्जाणं मिच्छत्त-णोकसायोदयसहिदतिव्वकसायोदएण संभवाभावादो। तेसिं संभवाभावे कथं आवाहखंडयेणूणउक्कस्सट्ठिदिवंधपहुडि हेट्ठिमट्ठिदिवंधट्ठाणाणं उक्कस्सावाधप्पहुडि समयूणादिकमेण जावंतोमुहुत्तमेत्ताओ ठिदीयो त्ति पढमणिसेयाणमुवलंभणियमो ? तेसिं ठिदीणमुप्पत्तीए णियमस्स अण्णं कारणमत्थि। तं कथं ? उक्कस्सादिट्ठिदिट्ठाणेसु पत्तेयं पत्तेयं असंखेज्जलोगमेत्तभिण्णमभिण्णसरूवकसायोदयट्ठाणाणि संति। तेसिं ट्ठिदिं पडिट्ठिदिं पडि ट्ठिदाणं पुह पुह अणुकड्ढि(कड्ढि)अद्धाणमेत्तखंडगदाणं विसेसाहियकमेण गदाणं तत्तु(त्थु)क्कस्सखंडं मोत्तूण सेसखंडेहि समयूणुक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि समऊणावाहाखंडयेणूणुक्कस्सट्ठिदि त्ति एगेगखंडपरिहीणेहि वज्झमाणट्ठिदीयो होंति।

एदेहि चेव उवरिमुवरिमट्ठिदीयो किमट्ठं ण वज्झंति समाणट्ठिदिवंधकारणेसु सव्वेसु संतेसु ? ण एस दोसो। एत्थ तस्स कारणं उच्चदे— मिच्छत्ततिव्वोदएण अदीवमण्णाणसरूवणोइंदिय-पंचिंदियणाणासहाएण उक्कस्सखंडप्पहुडि सव्वखंडेहि उक्कस्सट्ठिदिं वंधदि। पुणो उक्कस्सखंडं मोत्तूण सेसखंडेहि मंदसरूवेहि परिणदपुव्वुत्तकारणसहाएहिं समयूणट्ठिदिं वंधदि त्ति। एवमेगेगखंडेणूणसेसासेसखंडेहि पुव्वुत्तकारणाणं मंद-मंदादिकमेहि जुत्तेहि ऊणट्ठिदीयो वद्धं(ज्झं)ति जाव समयूणावाहखंडमेत्तचरिमहेट्ठिमट्ठिदि त्ति। तदो हेट्ठिमट्ठिदीयो ण वज्झंति। कुदो ? कारणाणं तत्तियमेत्तकज्जुप्पायणसत्तीदो, अधियकज्जुप्पायणसत्तीए अभावादो। पुणो हेट्ठिम-हेट्ठिमअणुकड्ढि(कड्ढि)वियप्पेसु एवं चेव कारणं वत्तव्वं जाव अणुकट्टिसंभवो अत्थि ताव। पुणो तत्तो हेट्ठिमाणं उवरिमेगेगेणावाधखंडएणूणजादपदेसट्ठिदीओ अवलंविय आवाहाए एगेगट्ठिदीओ होंति पुव्वुत्तकारणवसेण। कथं मिच्छत्तोदय-णोइंदिय-पंचिंदियणाणसहाएण

कसायोदयेण एवंविहकज्जमुप्पज्जदि त्ति णज्ज(व्व)दे ? दस-णत्रपुव्वधारिजीवस्स झाणमुप्पज्जदि त्ति **आरिसादो** णिम्मलणाणेण विसं.ही होदि त्ति णव्वदे। तदो समयूणादिहेट्ठिमट्ठिदीओ उप्पज्जंति त्ति सिद्धं। पुणो जाणि जाणि वग्गणप(फ)दयाणि पुह पुह पुव्विल्लट्ठिदिकज्जाणि करेंति ताणि ताणि कारणसामग्गीए करेंति त्ति गेण्हिदव्वाणि।

पुणो अणुक्कड्डिपरिणामे समाणे संते वि अणुभागाणं सरिसं णत्थि। कुदो? उवरिमट्ठिदिम्मि बज्झमाणे तस्संबंधिट्ठिदिबंधज्झवसाणाणं संबंधिअणुभागं बंधदि, तक्काले अणुक्कड्डिपरिणामेहि हेट्ठिमट्ठिदीणं पुह पुह बंधाभावादो। पुव्वं व पुव्विल्लकसायोदयस्स वग्गणादिभेदेण हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदीसु बज्झमाणेसु बंधज्झवसाणसंबंधिअणुभागं बंधंति। तदो चेव उवरिमादो हेट्ठिम-हेट्ठिमाणंतगुणहीणाणंतगुणसरूवेण अणुभागा जादा। पुणो हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदीयो बज्झमाणकाले उवरिम-उवरिमठिदीओ ण बज्झंति त्ति वा अणुक्कड्डिअणुभागा ण संति। पुणो उक्कस्सट्ठिदिबंधकाले उक्कस्साणुभागं बंधदि। पुणो तक्काले समयूणट्ठिदिसंबंधिवग्गण-फद्दयठाणेहि उत्तेहि अणंतगुणहीणं बंधदि। एवं ठिदिअणुसारेण अणुभागा अणंतगुणहीणसरूवेण बज्झंति त्ति **णिक्खेवारियवयणं** सिद्धं। कुदो? ठिदिबंधज्झवसाणेसु अणुभागबंधज्झवसाणाणि अवस्सं संति त्ति अभिप्पायेण। किंतु अणुभागवग्गणाणं एत्थ अणंतरोवणिधा असंखे० ट्ठाणेसु असंखे० भागहीणेण, संखे० ट्ठाणेसु संखेज्जभागहीणेण, एक्कम्मि ट्ठाणे संखेज्जगुणहीणेण, अहवा असंखेज्जेसु ट्ठाणेसु अणंतगुण-अणंतगुणहीणेण खलितं (क्खलिदं) होदूण गच्छदि। कुदो एवं? जत्थ पढमादिणिसेयवग्गणाओ थक्कंति तत्थ असंखेज्जभागहीणेणंतरदि जाव संखेज्जा णिसेया अवसेसा त्ति। तदो संखेज्जभागहीणेणंतरदि। चरिमणिसेयें संखेज्जगुणेणंतरदि। जदि पुण अभावणिसेयाणं दव्वाणि सग-सगचरिमवग्गणाए णिक्खिविज्जंति तो अणंतगुण-अणंतगुणेणंतरिदूण गच्छदि। णेदं पि, सुत्तविरुद्धत्तादो।

सेसाइरियाणमभिप्पायेण पढमादिणिसेएसु पक्कमिदणुभागो समयाधिकाबाहप्पहुडि उक्कस्सट्ठिदि त्ति ट्ठिदणिसेयाणं संबंधीयो सव्वत्थ सरिसो। तस्स किंचि कारणं वत्तइस्सामो। तं जहा— उक्कस्सट्ठिदिसंबंधियसमयपबद्धम्मि समयूणादिट्ठिदीणं संभवे कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। पुणो उक्कस्सट्ठिदिबंधहेदुभूदुक्कस्सकसायोदए असंखेज्जलोयभेदभिण्णाणि अणुभागबंधज्झवसाणाणि होंति। पुणो तत्थतणुक्कस्साणुभागबंधज्झवसाणादो उक्कस्साट्ठिदि(स्सठिदि)संबंधिअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि छव्विहहाणीहिं असंखे० लोगमेत्तट्ठाणाणि गंतूण समयूणट्ठिदिसंबंधिअणुभागबंधज्जवसाणट्ठाणाणि असंखे० लोगमेत्ताणि होंति। एवं दुसमयूणादिट्ठिसंबंधीणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि पुह पुह अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि गच्छंति जाव जहण्णट्ठिदिसंबंधिजहण्णाणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति। एदाणि पुणो उक्कस्साणुभागबंधज्झवसाणं सव्वहेट्ठिमट्ठाणाणि अवगाहिय एगपंतीए ट्ठिदत्तादो अभिण्णरूवेण एगं होदि त्ति। तेण बज्झमाणसमयपबद्धस्स उक्कस्साणुभागुक्कस्सवग्गणप्पहुडि जहण्णवग्गणे त्ति बद्धाओ तदो सव्वट्ठिदीसु ट्ठिदणिसेयाणं अभिण्णपरिणामत्तादो सरिसाणुभागो होदि। समयूणादिट्ठिदीणं अणुभागबंधज्झवसाणाणं तत्थ संभवो णत्थि, तत्थ तेसिं भिण्णपरिणामाणमेगसमए संभवाभावादो। तदो सव्वणिसेयट्ठिदीसु उक्कस्साणुभागो त्ति सिद्धं। पुणो एत्थ वग्गणाणमणंतरोवणिधा संभवदि, सुभपयडीणं उक्कस्साणुभागसंतस्स कालपमाणपरूवणा वि संभवदि। एवं पक्कमणियोगो गदो।

उवक्कमो चउव्विहो— बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि। ×××× तत्थ बंधणोवक्कमो चउव्विहो पयडि-ट्ठिदि-अणुभागप्पदेसबंधणोवक्कमणभेदेण। ×××× पुणो एदेसिं चउण्हं पि बंधणोवक्कमाणं अत्थो जहा संतकम्मपाहुडम्मि उत्तो तहा वत्तव्वो। पृ० ४२.

संतकम्मपाहुडं णाम तं कध(द)मं? महाकम्मपयडिपाहुडस्स चउवीसमणियोगद्दारेसु विदियाहियारो वेदणा णाम। तस्स सोलसअणियोगद्दारेसु चउत्थ-छट्ठम-सत्तमाणियोगद्दाराणि दव्व-काल-भावविहाणणामधेयाणि। पुणो तहा महाकम्मपयडिपाहुडस्स पंचमो पयडी णामहियारो। तत्थ चत्तारि अणियोगद्दाराणि अट्ठकम्माणं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-प्पदेससत्ताणि परूविय सूचिदुत्तरपयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-प्पदेससत्तत्तादो। एदाणि सत्त (संत) कम्मपाहुडं णाम। मोहणीयं पडुच्च कसायपाहुडं पि होदि।

पुणो उदीरणोवक्कमो पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-प्पदेसउदीरणोवक्कमणभेदेणचउव्विहो। तत्थ पयडिउदीरणोवक्कमो दुविहो मूलुत्तरपयडिउदीरणोवक्कणभेदेण। ×××× तत्थ मूलपयडिउदीरणोवक्कमो दुविहो— एगेगपयडिउदीरणोवक्कमो पयडिट्ठाणोदीरणोवक्कमो चेदि। पृ० ४३.

तत्थ एगेगपयडिउदीरणोवक्कमणम्मि सामित्तपरूवणं सुगमं। एगजीवकालपरूवणं पि सुगमं। णवरि आउगस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ दोसमयो वा त्ति परूविदो। तं कथं? एगसमयाधिकावलियमेत्तं वा धुव(दु)समयाधिकावलियमेत्तं वा आउगे सेसे अपमत्तो (त्ते) पमत्तगुणट्ठाणं गदे होदि। एदस्स अत्थो तत्थ गंथे आइरियाणमभिप्पायंतरमिदि मुत्तकंठं भणिदो। तदो वियप्पट्ठो इदि ण भाणिदव्वो। जदि वियप्पट्ठो भणिज्जदि तो एगसमयाधिकमावलियं वा दुसमयाधिकमावलियं वा एवं तिसमयाधिकमावलियं वा आदिं कादूण णेदव्वं जाव आवलियूणपमत्तजहण्णद्धेणब्भहियआवलिया त्ति भणेज्ज। ण च एवं भणिदं, तदो अभिप्पायंतरमिदि सिद्धं। पुणो एदाए परूवणाए पमत्तगुणट्ठाणकालो समयाधिकावलियमेत्तो वा दुसमयाधिकावलियमेत्तो वा होदि त्ति सिद्धं।

एवं संते एदं जीवट्ठाणस्स कालाहियारेण उत्तपमत्तजहण्णकालेण अ······ सह विरुज्झदे। एदं पि अंतोमुहुत्तमिदि चे— ण, तत्थ संखेज्जावलिमेत्तकालो अंतोमुहुत्तमिदि परूवणोवलंभादो। तं पि कथं णव्वदे? एदेण कसायपाहुडगाहासुत्तेण [क० पा० १५–१७] संजदाणं जहण्णद्धा अंतोमुहुत्तमिदि परूवयेण तं। जहा—

आवलियमणायारे चक्खिंदिय-सोद-घाण-जिब्भाए।
मण-वयण-काय-फासे अवाय-ईहा-सुदुस्सासे ॥ १ ॥
केवलदंसण-णाणे कसायसुक्केक्कए पुधत्ते य।
पडिवादुवसामेंतय खवेंतए संपराए य ॥ २ ॥
माणद्धा कोहद्धा मायद्धा तह य चेव लोहद्धा।
खुद्दभवग्गहणं पि य [पुण] किट्टीकरणं च बोद्धव्वा ॥ ३ ॥ इदि

एत्त (त्थ) तणतदियगाहाए उत्तखुद्दाभवग्गहणं संखेज्जावलियमिदि उत्तत्तादो, सासणसम्मादिट्ठिअद्धादो खुद्दाभवग्गहणं संखेज्जगुणमिदि परूवयसुत्तादो, आइरियाणं संखेज्जावलिय-

यंतोमुहुत्तमिदि तदुप्पायिय परूवयवियप्पदंसणादो च स णव्वदे। "तत्तो किट्टिकरणद्धा दुगुणा। तत्तो अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा। तत्तो अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा। तत्तो अप्पमत्ताद्धा संखेज्ज-गुणा। तत्तो पमत्ताद्धा दुगुणा।" इदि आइरियेहिं परूविदत्तादो, पुणो मिच्छत्ताद्धा सम्मा-मिच्छत्तद्धा सम्मत्तद्धा असंजमद्धा संजमासंजमद्धा संजमद्धा इदि छण्णं पि अद्धाणं जहण्णकालो समाणो होदूण अंतोमुहुत्तपमाणमिदि परूवणाए विरोहोवलंभादो च। सच्चं विरोहो चेव, किंतु अभिप्पायंतरेण परूविज्जमाणे विरोधो णत्थि। कुदो? पमत्तापमत्तसंजदाणं वाघादविसए उवसमसेढीणं व एगसमयोवलंभादो। पुणो णिव्वाघादविसयम्मि एदेसिं संजदाणं अंतोमुहुत्तद्धा परूविदा। तं कथं? असंजदो संजदासंजदो वा संजमं पडिवज्जिय संजमद्धाए अंतोमुहुत्तकालं पमत्तापमत्तद्धा परावत्तणसरूवेण छण्णं पुणो दीहाउएण संजदेण पमत्तापमत्तद्धासरूवेण छण्णं च णिच्चयेण अंतोमुहुत्तं होदि।

(पृ० ४६)

पुणो एगजीवंतरपरूवणं पि सुगमं। णवरि वेदणीयकम्मस्स उदीरणंतरं एगसमयमिदि परूविदं। तेण जाणिज्जदि अपमत्तकालो वाघादविसयो एगसमयो होदि, णिव्वाघादविसयो अंतोमुहुत्तो त्ति।

पुणो णाणाजीवभंगविचय-कालंतरप्पाबहुगाणि सुगमाणि। पुणो पयडिट्ठाणउदीरणा दुविहा— अब्भो(अव्वो)गाढउदीरणा भुजगारपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ अव्वोघा (गा)ढ-पयडिउदीरणम्मि समुक्कित्तण-सामित्त-एगजीवकालंतर-णाणाजीवभंगविचयादीणं अप्पाबहु-गाणियोगद्दारपज्जवसाणाणं परूवणा सुगमा। पुणो भुजगारट्ठाणुदीरणाए सामित्त-कालंतर-णाणा-जीवभंगविचयादीणि अप्पाबहुगपज्जवसाणाणि भुजगारेण सूचिदपदणिक्खेव-वड्ढीणं कमेण तिण्णि तेरसाणियोगद्दाराणि च सुगमाणि।

(पृ० ५४-५५)

पुणो उत्तरपयडीणं एगेगपयडिदीरणाए सामित्तपरूवणा सुगमा। णवरि थीणगिद्धितियाणं उदीरणासामित्तस्स जो इंदियपज्जत्तयदुसमयप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ताव ते पाओग्गा होंति। णवरि विगुव्वणाहिमुहचरिमावलियपमत्तसंजदे मोत्तूण। पुणो आहारसरीरं उट्ठाविदपमत्तो विगुव्वणमुट्ठाविदतिरिक्ख-मणुस्सो असंखेज्जवस्साउगतिरिक्ख-मणुस्सो देव-णेरयिगे च अणु-दीरगो इदि। किमट्ठं एसो णियमो करिदे पंचविधणिद्दादिदंसणावरणस्स?

तेहि किं चक्खुदंसणं पच्छाइज्जदि किं अचक्खुदंसणं पच्छाइज्जदि किं ओहिदंसणं पच्छाइज्जदि किं तिण्णि वि दंसणाणि पच्छाइज्जंति आहो किं ताणि ण पच्छाइज्जंति? किं चादो जइ ताणि पच्छाइज्झं(ज्जं)ति तो तिण्णि वि दंसणा-वरणाणि तक्काले णिप्प(प्फ)लाणि होंति, एदाणं कज्जाणं अण्णेहि कीरमाणत्तादो। अह ण पच्छाइज्जंति तो दंसणावरणे एदाणि ण पडि(ढि)ज्जंतु, ताणं अण्णकज्जस्साणुवलंभादो त्ति? ण एस दोसो, दंसणावरणब्भंतरे तेसिं पादे(ढ)ण्णहाणुववत्तीदो ताणि तत्थ कज्जं करेंति त्ति जाणिज्जदि। तं जहा— तिविहाणि वि दंसणाणि पत्तेयं पत्तेयं दुविहाणि खओवमगददंसण-उवजोग-गददंसणमिदि। तत्थ खओवसमगददंसणाणि तिण्णि वि तिहि दंसणावरणीएहिं पच्छाइज्जंति, उवजोगगददंसणाणि पुणो कहिं पि पंचविहणिद्दाहि पच्छाइज्जंति। कथमेदं णव्वदे? अद्धुवोदयत्तादो दंसणावरणत्तण्णहाणुववत्तीदो च। तदो थीणगिद्धितियाणं उदीरणाओ तिण्णं पि दंसणाणं सुद्ध-त्तोवजोगं पच्छादेत्ति(देंति)। पच्छादेंतो वि णिम्मूलं पच्छादेंति। कुदो? मिच्छत्तोदयं व सव्व-

घादित्तादो। सो च सुद्धत्तोवजोगो इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होदि त्ति तप्पडि(तं पडि)सामित्तं दिण्णं। पुणो एदाओ पच्छालि(दि)ददंसणोवजोगं पुव्वं क(का)ऊणुप्पज्जमाणणाणोवजोगसुद्धिं पि णासेंति। ण च णिम्मूलं विणासेंति, तहा जीवस्सभावप्पसंगादो। पुणो णिद्दा-पयलाणमुदीरणाओ वत्तावत्तदंसणोवजोगं सव्वत्थ जायमाणं कहिं पि कहिं पि पच्छादेंति। पच्छादेंता वि दंसणोवयोगसुद्धिं पच्छादेंति, ण णिम्मूलं पच्छादेंति। तथा सति कथं सव्वघादिमिदि चे— ण, सव्वाघादिसम्मामिच्छत्तोदयो व्व संपुण्णत्तघादणं पडि सव्वघादिदत्तादो। एवं संते णिद्दा-पयलाणं परावत्तोदयाणं उदीरणाकाला दिवसो(सा)दयो दिस्समाणा उवलंभंति। कुदो ? दोण्हं उवजोगाणं तत्थ उवलंभादो। कथमेदं णव्वदे ? झाणकाले वि णिद्दा-पयलाणं उदीरणसंभउवलंभादो।

पुणो किमट्ठं थीणतियाणं उदीरणा अप्पमत्तसंजदेसु तिविहकारणाणुप्पण्णाहारट्ठिदी(रिद्धि)-एसु पमत्तेसु विगुव्वणमुट्ठाविदेसु असंखेज्जवस्साउगतिरिक्ख-मणुस्सेसु देव-णेरइएसु च णत्थि ? ण, णाणेण वहिरंगत्थोवजोगेण कसाय(?)मंदकसाएणुप्पण्णविसोहीए जादअप्पमत्त-पमत्तविगुव्वणाहारट्ठिदी(रिद्धी)सु तदत्थित्तविरोहादो, असंखेज्जवस्साउगतिरिक्ख-मणुस्सेसु सव्वहा सुहीसु सुहवहुलदेवेसु दुक्खवहुलणारएसु च तदत्थित्तविरोहादो। एदेसिमेसा णत्थि त्ति परूवएसु तं पि अत्थि। तं कथं ? तिकरणपरिणामाणं विसोहिसरूवाणं पारंभणियमा सुदोवजोगो जागारो त्ति परूवयाणमुवलंभादो। पुणो विगुव्वणाहाररिद्धिउट्ठावणाहिमुहाणं चरिमावलिम्मि वि उदीरणा णत्थि चेव। कुदो ? तेण उप्पज्जमाणकारणपयत्तेण।

पुणो सादासादवेदणीय-मणुसाउगाणं च मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ताव उदीरणा होदि, उवरि णत्थि त्ति। कुदो णियमो ? उच्चदे— दाण-लाभ-भोगोपभोग-वीरियंतरायाणं खओवसमविसेसमाहप्पेण वाहिरब्भंतरवत्थुपज्जायाणं पंचिंदिय-णोइंदियाणं पल्हादकरणसमत्थाणं संपादणेणुप्पण्णं जीवस्स जं सुहं तं सादावेदणीयस्स फलं। पुणो तेसिं चेव खओवसमविसेसहाणीए वाहिरब्भंतरे(र)वत्थुपज्जयाणं इंदियपल्हादकरणसमत्थाणं संपादणविगमेहि जीवस्स जमुप्पण्णं दुक्खं तं असादवेदणीयफलं। एवंविहदोण्हं कम्माणं फलाणि रागिस्स दोसिस्स होंति। कुदो ? परिणामायत्तादो। अप्पमत्तादि-उवरिमगुणट्ठाणजीवाणं तिव्वविसोहिपरिणदाणं चित्तसंतोसमसंतोसं च काउं तेसिं दोण्हं फलाणं सामत्थियाभावादो। कुदो ? तेसु उवजोगे जादे झाणाणुववत्तीदो तत्थ तेसिमुदयाण फलं णिप्फलं जादं। पुणो उदयस्स फलविरोहिजादविसोहि(ही) उदयाणुसारिउदीरणस्स विरोही किण्ण भवे ? भवदि चेव। तदो चेव कारणादो ओकड्डिदपरमाणूणं उदयावलियब्भंतरे पवेसिदुं ण दिण्णं।

एवं णवणोकसाय-चदुसंजलणोदय-उदीरणाणं पुव्वं फलाभावो वत्तव्वो। तेसिमुदीरणा एवं संते तत्थ किं ण पलि(डि)सेहिज्जदि ? ण, तेसिमुदय-उदीरणाण फलाणि सादासादोदएसु उप्पज्जंति। तत्थुप्पण्णोदीरणकज्जं ण परिणामाणं विरोहित्तं जादं। पुणो असादस्स उदीरणेण वि सवेदणरत्तक्खयादिदुक्खसरूवेण तिव्व-तिव्वतमादिसंकिलेसाविणाभाविणा आउगस्स कदलीघादो उप्पज्जदि। पुणो असादस्स उदीरणेण सामण्णदुक्खसरूवेण मंद-मंदतमादिसंकिलेसाविणाभाविणा तिव्व(मंद)-मंदतमादिउदीरणा होंति। पुणो सादस्स उदीरणाए सुहसरूवाए मंद-मंदतमविसोहीए मंद-मंदतमउदीरणाओ होंति। पुणो अप्पमत्तादीणं तिव्वविसोहीए तदो चेव कारणादो णिम्मूलउदीरणा णट्ठा। पुणो

आहारदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओव(म)कोट्ठाए।
सादिदरुदीरणाए हवदि दु आहारसण्णा य ॥ ४ ॥ [गो. जी. १३४]

इदि किमट्ठं उदय-उदीरणाणं एगरूवो(वे)अणुभागे संते उदीरणाए आहारसण्णा होदि त्ति णियमो? उच्चदे— उदयो दुविहो ट्ठिदिक्खयोदय-त्थिउक्कोदयभेदेण। तत्थ त्थिउक्कोदयफलं सगसरूवेण णत्थि त्ति णिफलं जादं। पुणो ट्ठिदिखयोदयफलं सगसरूवफलत्तादो सफलं। तस्स उदयाणुरूवउदीरणा वि होदि। ण बिदियमुदयाणुरूवा, तदो दो वि अविणाभावियो इदि एत्थ कट्टु तस्स पहाणत्तं दिण्णं।

(पृ० ५९)

पुणो उवघादणामस्स उदीरणा सरीरगहिदपढमसमयप्पहुडि होदि त्ति। कुदो एस णियमो? ण, अमुत्तस्स जीवस्स अणादिकम्मसंबंधेण मुत्तत्तमुवगयस्स कम्मइयसरीरोदय-संबंधेण पुणो अदीव सुहुमत्तमुवगयस्स तदो चेव बाधावज्जिदस्स पुणो णोकम्मसरीरोदय-संबंधेण बाधासहगदं तस्स सरीरं जादं। तदो तथ उवघादकम्मस्स उदीरणा होदि त्ति सामित्तं दिण्णं। तस्स फलं वत्तावत्तसरूवेण वाद-पइत्त-सेम्हादिबाधाओ? उवचिदावयवपरेहिं घादहेदु-भूदपोग्गलोवचओ होदि।

पुणो परघादणामस्स उदीरणा सरीरपज्जत्तयदस्स होदि त्ति। कुदो एस णियमो? ण, पज्जत्तावयवेहि परघाहेदुभूदपोग्गलोवचयाणं एत्थ दिस्समाणत्तादो। पुणो

उस्सासणामस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमयो त्ति उदीरणा। णवरि आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो संतो सजोगो उदीरेदि इदि। पृ० ५९.

एदस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा— एत्थ जाव सजोगिकेवलिचरिमसमयो ताउस्सासमु-दीरेदि त्ति उत्ते उस्सासणिरोहं करेंतकेवलिचरिमसमयो जाव तावेदस्सुस्सास्सुदीणा जीवपदेसाणं परिप्फंदमुस्सासरूवं च करेदि। तत्तो परं ते दोण्णि वि कज्जाणि करेदुमसत्था होदूण तत्थ फलं सगरूवेण पदेसणिज्जरं ण करेदि त्ति वत्तव्वं। एवं भासाकम्मुदीरणाफलं पि वत्तव्वं। पुणो केवलिसमुग्घादं करेंतकेवलिस्स कवाड-पदर-लोगपूरणासु ट्ठिदस्स उदयं णागच्छंतपयडीणमेवं चेव कमो होदि त्ति जाणिय वत्तव्वो। तेसिमंतदीवय त्ति वा घेत्तव्वं।

पुणो उस्सासणामस्स उदीरणा आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदमिच्छाइट्ठिप्पहुडि सजोगि-केवलि त्ति। कुदो एसो णियमो? ण, जीवविवाइसुहपयडिउस्सासस्स उदीरणा जीवपदेसपरिप्फंदस्स कारणं होदूण तत्थ पदेसपरिप्फंदयम्मि तप्पदेसट्ठियकम्म-णोकम्माणं विस्सासपरमाणूणं वत्तावत्त-सरूवेण गालणं करेदि त्ति जाणावणट्ठं णियमो कदो। मारणंतियादिकिरियाहि जीवपदेस-परिप्फंदणिवंधणाहि विणा संतट्ठियजीवाणं पदेसपरिप्फंदो होदि त्ति कथं णव्वदे? ण, सिया ठिया सिया अट्ठिया सिया ट्ठियाट्ठिया त्ति आरिसादो। पुणो पदेसपरिप्फंदो विस्सासपरम-णूणं गालणं करेदि त्ति कुदो णव्वदे? ण, दंड-कवाड-[पदर-]लोगपूरणेसु जादजीवपदेस-परिप्फंदो जहा असंखेज्जगुणसेढीए कम्मणिज्जरणहेदू जादो तहा एत्थ वि होदि त्ति णव्वदे। कथं वीयराएहिं कदकज्जेण सरागेहिं कदकज्जस्स समाणत्तं? ण, विस्सासपरमाणुगालणादो कम्म-परमाणुगालणाणं समाणत्ताभावादो। कथं वत्तसरूवेण गालणं? उस्सासादिवादसरूवेण खेदमुप्पाइय गलंतविस्सासपरमाणूणं पाससरूवेणुवलंभादो। एदं खेदो इदि कुदो णव्वदे? सुही(हि)देवेसु चिरकालेणुस्सासोवलंभादो कम्म-णोकम्माणं सम्मिस्सिदविस्सासपरमाणूणं फलत्तादो वा।

पुणो एवंविहपरिप्फंदो तसकम्मोदीरणाए होदि त्ति चे— ण, तसेसु पदेसपरिप्फंदणियमे संते थावरजीवपदेसपरिप्फंदाभावो पसज्जदे। ण च एवं, तत्थ वि पदेसपरिप्फंदुवलंभादो। तदो तसकम्मोदीरणाए ठाणचलणादि(दी)होदि त्ति घेत्तव्वं। जदि एवं[तो]उस्सासोदएहिं पदेस-

परिप्फंदणियमे संते उस्सासोदीरणाविरहिदजीवाणं जीवपदेसाणं परिप्फंदो कथं होदि त्ति चे— ण, पोग्गलविवाइसरीरकम्मोदएण तेणुप्पाइदणोकम्मोदयेण तेहिं ससुप्पाइदपज्जत्तणिप्पत्तीए च इदि तिहिं वि कारणेहिं जीवपदेसाणं परिप्फंदेणस्स तत्थ उस्सासोदीरणादिट्ठचरसेसु वि उवलंभादो। तं कथं उवलब्भदि [त्ति] चे उच्चदे— विग्गहगदि(इ)म्मि ट्ठिदचोदसजीवसमासाणं कम्मइगसरीरोदीरणा होदि। तीए उदीरणाए सह जेसिं जीवसमासाणं उदीरणापाओग्गणामपयडीओ होंति तासिं पयडीणमुदीरणाए सहकारिकारणत्तेणुप्पाइदसग-सगपायोग्गजीवसमासाणं जहण्णपदेसपरिप्फंदो होदि। पुणो तत्थो(त्तो)कमेण जावो(ओ)जावो(ओ)जीवसमासपडिबद्धपयडिउदीरणाओ जाद(दा)ओ तासिं तासिं पयडीणं जादिविसेसेणुप्पाइदजोगवड्ढिणिबंधणजीवपदेसाणं परिप्फंदेणुत्तरं होदूण चोद्दसपंतीओ गच्छंति जाव सग-सगजीवसमासाणं रिजुगदीए उप्पण्णाणं जहण्णपदेसपरिप्फंदो होदि त्ति। पुणो वि वड्ढीहिं उत्तरं होदूण गच्छंति जाव सग-सगपंतीणमुक्कस्सजीवपदेसपरिप्फंदो त्ति। पुणो एदे उववादजोगट्ठाणणिबंधणपदेसपरिप्फंदणाणि। पुणो एदाणमेगपंतीए रचणा अप्पाबहुगाणि च जहा उववादजोगट्ठाणे उत्ताणि तहा वत्तव्वाणि।

पुणो चोद्दसजीवसमासाणं विग्गहगदीए उप्पण्णाणं बिदियसमये सग-सगजाइपडिबद्धपयडिउदीरणासहकारिकारणत्तणेण सहिदसरीरकम्मुदीरणाए सग-सगजीवपदेसपडिबद्धजहण्णपदेसपरिप्फंदा उप्पज्जंति। णवरि पुव्विल्लेहिंतो बहुगाओ होंति। पुणो तत्तो वड्ढीहिं उत्तरा होदूण गच्छंति जाव रिजुगदीए उप्पण्णाणं बिदियसमए सरीरकम्म-णोकम्मुदीरणाहिं सहकारिपयडिउदीरणावेक्खाहिं उप्पाइदजहण्णपदेसपरिप्फंदो त्ति। एवं एत्तो उवरी वि वड्ढीहिं वड्ढाविय णेदव्वा जाव चोद्दसपंतीणं सग-सगुक्कस्सपदेसपरिप्फंदो त्ति। एदे एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणणिबंधणा, एदाणं पुण रचणादी च अप्पाबहुगाणि च एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणेसु उत्तकमेण वत्तव्वाणि। पुणो सत्ता जीवसमासेसु सग-सगाउगबंधपरिणामेणुप्पाइदसग-सगजीवसमासपडिबद्धपयडिअणुभागवड्ढिउदीरणेहिं पुणो सत्त-पज्जत्ताजीवसमासाणं आहारपज्जत्तीए पज्जत्तयदम्मि पुव्वं व सग-सगजादीए पडिबद्धपयडीणं उदीरणाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उप्पाइद-सग-सगजाईए जहण्णपदेसपरिप्फंदं होदि। पुणो तत्तो पुव्वं व चोद्दसपंतीयो वड्ढिउत्तरं कादूण णेदव्वं जाव सग-सगपंतीए उक्कस्सपदेसपरिप्फंदो त्ति। णवरि सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणपज्जत्तीए भासापज्जत्तीए मणपज्जत्तीए पज्जत्तयदट्ठाणेसु पुह पुह पदेसपरिप्फंदो बहुगो होदि त्ति गेहिण(गेण्हि)दव्वं। पुणो आउगबंधपरिणामेणुप्पाइदसत्त-अपज्जत्ताजीवसमासपदेसपरिप्फंदप्पहुडि उक्कस्सपदेसपरिप्फंदो त्ति एदाणि परिणामजोगट्ठाणा(ण)णिबंधणाणि। एदाणं रचणाणं अप्पाबहुगाणं सरूवपरिणामजोगट्ठाणाणं वत्तव्वं। पुणो उत्तासव्वपदेसपरिप्फंदाणं रचणाणं अप्पाबहुगं सव्वजोगट्ठाणेसु उत्तकमेण वत्तव्वं।

पुणो एवमुप्पण्णपदेसपरिप्फंदेणुप्पाइदजीवपदेसाणं कम्मादाणसत्ती जोगं णाम। ण च एस सत्ती कम्माणं खओवसमेण खएण वा जादा, किंतु कम्माणमुदएणुप्पण्णा। तदो चेव कारणादो कम्मादाणसत्ती जादा। तेसिं सत्तीणं उववादेयंताणुवड्ढि-परिणामजोगट्ठाणणामधेयमिदि गुणाणुसारिणामाणि जादाणि। पुणो उस्सास-भासापज्जत्तीहि पज्जत्तयदम्मि कमेण उस्सास-भासकम्मुदएण पुणो मणपज्जत्तीए मणपज्जत्तयदे च जीवपदेसाणं बहुगो परिप्फंदो होदि त्ति कथं णव्वदे? जोगणिरोधकेवलिम्मि मण-वचिजोगाणं च उस्सास-कायजोगाणं च बहुगादो अप्पप्पकमेण गदाण णिरोधण्णहाणुववत्तीदो णव्वदे। तोक्खइ पंचिंदियादि तत्थ संभवंतपयडीणं

पदेसपरिप्फंदणिबंधणाणं तेसिं णिरोधो किण्ण कीरदे ? ण, परिप्फंदस्स उपादाणकारणसरीरोदयादो तेसिमुदीरणाणं पुव्वं विणासाभावादो। सरीरोदए णट्ठे तेसिं परिप्फंदसहकारिकारणाणं तेसिमुदीरणेहिंतो परिप्फंदुप्पायणसत्तीए अभावादो।

(पृ० ६०)

पुणो जसकित्तीए बादरेइंदियपज्जत्तप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सिया उदीरया, उवरि सजोगिकेवलि त्ति णियमा उदीरया। णवरि अजसकित्तिवेदयमाणमिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णे णियमा जासकित्तिं वेदयंति त्ति। किमट्ठमेस णियमो कदो ? उच्चदे— जसस्स कित्तणं जसकित्तणं। तं च जसं दुविहं व(वा)वहारियं पारमत्थियं चेदि। तत्थ वावहारियं जसं धम्मं दाणं सच्चं सौचं(सउचं)उदारं अभिमाणं णिब्भयंता-(यत्ता)दिगुणाणि सम(म्म)त्तरहिहाणि अविसिट्ठलोयजणपूजणिज्जाणि जदा तदा होदि। पुणो ते चेव गुणाणि सम्मत्तसहिदाणि होदूण जदा विसिट्ठजणपूजणीयं संजमासंजम-संजमाणं आविब्भावं करेंति तदा पारमत्थियं जसं होदि। तदो तत्थ णियमं, सेसेसु भयणिज्जत्तं भणिदं।

(पृ० ६०)

पुणो सुभगादेज्जपयडीणं सण्णिपंचिंदिय-गब्भजमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सिया उदीरया, उवरि सजोगिकेवलि त्ति णियमा उदीरया। देवा देवी[ओ]च णियमा उदीरया इदि। कुदो णियमो ? ण, सम्मुच्छिमेसु णवुंसकवेदेसु सुभगादेज्जाणं संभवाभावादो। जदि संभवाभावो तो सम्मुच्छिमतिरिक्खेसु कथं संजमासंजमाणं उवलंभो ? ण, संजमासंजमगुणणिबंधणसुभगादेज्जाणमुवलंभादो। पुणो गब्भोवक्कंतियत्थी-पुरिसवेदेसु असंजदेसु सिया उदीरणा। णवरि दूभगणादेज्जवेदयाणं मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं पुव्वं व संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णेसु तेसिं उदीरणाणं णियमुवलंभादो।

(पृ० ६१)

पुणो दुस्सर-सुस्सराणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं बीइंदिय-सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताउदीरगो होदि त्ति। कुदो णव्वदे ? ण, जीवविवाइसुहासुहसरकम्मोदएण भासापज्जत्तिणिप्पत्तिसहाएण जीवपदेसाणं महापरिप्फंदं कुणदि। तेण परिप्फंदेण भासावग्गणसरूवस्स विस्सासपरमाणूणं कहिं पि कहिं पि काले मण-वचि-कायजोगेसु अण्णदरजोगपरिणदो होदूण भासाउप्पत्तीए वचिजोगपरिणमणवेलाए गहिदूणट्ठारसदेसभास-सत्तदस-(सद)कुभाससरूवेण परिणमाविय तक्खणे गालणं कुव्वंति त्ति णियमो कदो। तदो चेव तप्पहुडि वचिजोगणिबंधणजोगपरिप्फंदो वि पाओग्गो होदि त्ति सिद्धं। पुणो मणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स मणपज्जत्तिसरूवेण णिप्पण्णणोकम्मोदएहि जीवपदेसपरिप्फंदं महदमुप्पज्जदि। तदो चेव एत्थुद्देसे सव्वुक्कस्सपरिणामजोगसंभवो होदि। तदो एत्तो प्पहुडि तिण्णि वि जोगाणं संभवो होदि तहा उवजोगं च।

पुणो एगजीवकालाणियोगद्दारपरूवणा सुगमा।

णवरि णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो। कुदो ? अद्धुवोदयत्तादो। पृ० ६१.

इदि कारणं भणिदं। अद्धुवोदयं णाम किं ? कारणणिरवेक्खेण उदीरणकालस्स अवट्ठाणं एगसमयादिअंतोमुहुत्तमेत्तुवलंभादो। अहवा, कारणसहाय(या)वेक्खाए एदेसिमुदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो होदि। तं कथं ? एदाणमुदीरगजीवो पुण एदेसिमुदीरगो होदूण एगसमयं

दिट्ठं, विदियसमए सुदस्स अपज्जत्तकाले वि णट्ठ दुदीरणत्तादो। एवं विसमय-तिसमयादि-अंतोमुहुत्तकालावट्ठाणं सकारणावेक्खाए वि वत्तव्वं। एवं संते मिच्छत्त-णउंसयवेद-इत्थिवेदादि केसिं पि पयडीणं अंतोमुहुत्तमेगसमयादिं(समयमादिं)कादूण[जाव]सग-सगुक्कस्सकालो त्ति उदीरणाणुवलंभादो एदेसिमद्धुवोदयत्तं पावदे ? ण, एगसमयादिअंतोमुहुत्तमेत्तकालावट्ठाणस्सेव अद्धुवोदयविवक्खादो।

पुणो सादस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो। पृ० ६२.

कथं ? मरणेण गुणपरावत्तणेण कारणणिरवेक्खद्धुवोदएण च इदि तिविहपयारेणेगसमयं लब्भदि। तं कथं ? सादस्स अणुदीरगो संतो पुणो उदीरयविदियसमए णिरयगदिं गदो, असादुदीरगो जादो। एदं कारणावेक्खाए एगसमयो जादो। अहवा, पमत्तादिहेट्ठिमगुणट्ठाण-ट्ठियो असादुदीरगो सादमुदीरिय विदियसमए अप्पमत्तो जादो, जादे णट्ठ(ट्ठा)उदीरणा त्ति एगसमयो जादो गुणपरावत्तीयो। अहवा, गदिं पडुच्च सादस्सुदीरणमद्धुवोदयात्तादो एगसमयं वत्तव्वं। तं कथं ? उच्चदे— सादस्सुदीरणंतरं गदिं पडुच्च भण्णमाणे दुविहमुवदेसं होदि। तत्थेक्कुवदेसेण मणुसगदीए सादस्सुदीरणंतरं एगसमयमिदि गंथे परूविदत्तादो अंतरभूदेग-समयं सादुदीरणकालो होदि त्ति णव्वदे। अण्णेक्कुवदेसेण णिरय-तिरिय-मणुसगदीए एग-समयं वत्तव्वं। तत्थ असादस्सेगसमययंतरपरूवणादो सादस्सुदीरणं एगसमयं होदि, तत्थे-दस्स अद्धुवोदयत्तादो। एदेसिं दोण्हमुवदेसेसु कधमविसिट्ठमिदि चे— णेवं जाणिज्जदे, तं सुदकेवली जाणिज्जदि। किंतु पढमंतरपरूवणाए विदियंतरपरूवणं अत्थविवरणमिदि मम मइणा पडिभासदि।

उक्कस्सेण छम्मासं। पृ० ६२.

कुदो सादस्सुदीरणकालस्सुक्कस्सेण छम्मासणियमो ? उच्चदे — इंदियसुहावेक्खाए संसारिजीवेसु सुही देवा चेव, तत्थ वि सदर-सहस्सारदेवा चेव अदीव सुही होंति। कुदो ? तत्तो उवरिमकप्पट्ठियदेवाणं सुक्कलेस्सियाणं वीयरायसुहाणुरत्ताणं सादोदएण जाददिव्वसुहा-भावादो, पुणो हेट्ठिमकप्पट्ठियदेवाणं तारिसपुण्णाभावादो। तदो तत्थ सदर-सहस्सारइंदा चेव सुही होंति। तदो इंदाणं पुण्णम(मा)हप्पेण जाददाण-लाभ-भोगोवभोग-वीरियंतरायकम्माणं खओवसमिय(समा)सव्विंदियाणं पल्हादकरणसमत्थाणं दव्वपज्जायाणं संपादणं करेंति। कथं जीवविवाइकम्माणि वाहिरवत्थुसंपादणं करेंति ? ण कम्मोदएण एदाओ जादाओ, किंतु तेसिं खओवसमेण जादाओ होंति।

पुणो तत्थ दव्वं दुविहं सचित्तमचित्तमिदि। तत्थ सचित्तसंपादिददव्वमवट्ठाणं होदि कथं ? पदिं(डिं)द-समाणिग-तेत्तीससंखातायतीस-लोगपाल-पारिसदेव-अंगरक्ख-सत्ताणीग-किब्भिस-पदाति-अट्ठमहादेवी-सेससव्वदेवी-सेससव्वदेवसमूहं तित्थयरसंतकम्मियत्तादो सगकप्पादो तत्तो हेट्ठिम-उवरिमदेवाणं पूजाणिमित्तमागदाणमिदि। पुणो अचेदणाणमेगं, विगुव्वणादिपज्जायाणं एगं, एवं सव्वाणि सट्ठिसंखाणि होंति। एदाणि एगेगसमयोवसमयपडिवद्धाणि उप्पादिदाणि होंति। तं कथं ? एदेसिं संतोस-दाणादीणं उवलंभादो एदेसिं आगमणलाभादो पुणो एदेसिं पासे केइ केइं पयारएण एगवारेण संतोसमुप्पाइज्जमाणत्तादो एदेसिं पासे जेसिं जेसिं पयारेहि उप्पण्णसंतोसं पुण्णो पुणो तेसिं तेसिं पयारेहिं उप्पज्जमाणत्तादो दाणादिसत्तीणं उवलंभादो च। पुणो एदाणि पंचविहखओवसमेण गुणिदाणि तिण्णिसयाणि होंति। एदाणि एक्केक्किंदियाणं पल्हादयंति

त्ति छहि इंदिएहि गुणिदे अट्ठारससयं होदि। ताणि मण-वचि-कायाणं पुह पुह संतोसं करेंति त्ति तिगुणिदे चउवण्णसयं दोदि। पुणो एदाणि णाण-दंसणोवजोगेण वि लब्भंति त्ति ताणं परावत्तणसंखेज्जवारं अणुसंधाणं होदि त्ति संखेज्जरूवेहि गुणिदव्वाणि। पुणो एदाणमेक्केक्काणं कालो मुहुत्तस्स असंखेज्जदिभागो होदि त्ति तेहि गुणिदे तेसिं सव्वकालसमूहो होदि। पुणो ताणि मुहुत्ते कदे चउवण्णसयमुहुत्ताणि होदि। ताणि णवसएहिं भागे हिदे छम्मासाणि लब्भंति त्ति णियमो कदो। एत्तो उवरिमेदेसिं संधाणं ण लब्भदि त्ति कुदो णव्वदे? एदम्हादो चेव आरिसवयणादो। एदं परूवणमुदाहरणमेत्तं छम्माससाधणट्ठं परूविदं। तदो एवं चेव होदि त्ति णाग्गहो कायव्वो।

अहवा, सट्ठिसंखं एवं वत्तव्वं। तं जहा—सदर-सहस्सारइंदो होदूण उप्पण्णस्स सादोदय-णियमो अपज्जत्तद्धमंतोमुहुत्तेण समाणिय १ अवधिणाणेण अंतोमुहुत्तकालं परिणा(ण)मिय २ तत्थ पुव्वट्ठियदेवेहिं पुण्णपहकहणेण अंतोमुहुत्तं गमिय ३ एवं अभिसेयकरणेण ४ जिणाहिसेयकरणेण ५ पसाहणगहणेण ६ तस्स पट्टबंधकरणेण ७ तम्मि ओलग्गंतट्ठिदपदिं(डिं)दस्स संतोसकरणेण ८ एवं सामाणिअस्स ९ तायत्तीसदेवाणं पुह पुह पीदिमुप्पायंतेण ४२ एवं लोगपाल ४३ पारिसदेव ४४ अंगरक्ख ४५ आभियोग ४६ किब्भिस ४७ पदाति ४८ अट्ठमहादेवीपमुहदेवी ५६ तित्थयर-संतकम्ममाहप्पेणाकड्ढिदसगकप्पादो हेट्ठिम-उवरिमकप्पदेवाणं पूजाकरणमागदाणं ५७ आभरण-सहिदसगदेहाणं ५८ अचित्तदव्वाणं ५९ विउव्वणादिपज्जायाणं च ६० इदि सट्ठिसंखाणि उप्पज्जंति। एत्तो उवरिमकिरियं पुव्वं व वत्तव्वं। एवमण्णेहि वि पयारेहि जाणिय वत्तव्वं। एवं हस्स-रदीणं पि वत्तव्वं।

पुणो **असादस्सुदीरणाए जहण्णकालो एगसमयो**। पृ० ६२.

कथं? मरणेण गुणपरावत्तणेण कारणणिरवेक्खाणमद्धुवोदएण इदि तिविहपयारेण लब्भदि। तं कथं? असादस्स वेदगो तिरिक्ख-मणुस्सो होदूण बिदियसमए देवलोगं गदस्स होदि, तत्थ सादावेदणीयोदयणियमादो। अहवा, असादस्स वेदगो मणुस्सो वेदगो होदूण बिदियसमए अप्पमत्तगुणं गदो। तत्थ उदीरणाणट्ठत्तादो होदि। अहवा, देवगदीए असादमद्धुवोदयत्तादो एग-समयं वत्तव्वं। तं कथं? गदिं पडुच्च अंतरपरूवणाए परूविदत्तादो।

पुणो असादस्सुक्कस्सुदीरणाए कालो तेत्तीसं सागरोवमं साधि(दि)रेयं होदि। कुदो? पाविट्ठजीवाणं अंतराययकम्मोदएण इंदियदुक्खुप्पादयदव्वपज्जायाणं संपादणाणुवसंधाणकालस्स तेत्तियमेत्तपमाणाणमुवलंभादो।

(पृ० ६२)

पुणो अणंताबंधिकोह-माण-माया-लोहाणं उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो। कुदो? एदेसिमवेदगो वेदगो होदूण बिदियसमये सम्मामिच्छत्तं सम्मत्तं संजमासंजमं संजमं च पडिवण्णे णट्ठुदीरणत्तादो। एवमपच्चक्खाणाणं च वत्तव्वं। णवरि संजमासंजमं संजमं च पडिवज्जावेयव्वं। एवं पच्चक्खाणाणं च। णवरि संजमं पडिवज्जावेयव्वं। अहवा मरणेण वि वाघादेण वि संभवं जाणिय वत्तव्वं। पुणो संजलणाणं एगसमयं मरणेण वि वाघादेण वि संभवं जाणिय वत्तव्वं।

पुणो **णीचागोदस्सुदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो**। पृ० ६७.

कुदो? णीचागोदवेदगो अपच्चक्खाणं पच्चक्खाणं च पडिवण्णे उत्तरसरीरं विउव्विदे च

उच्चागोदस्स उदीरणं होदि । पुणो ते कमेण सासणगुणं पडिवण्णे व(वा) मूलसरीरं पविट्ठे व(वा) एगसमयं दिट्ठं । विदियसमए कालं कादूण पडिवक्खोदये उप्पण्णस्स होदि ।

पुणो उच्चागोदस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो । पृ० ६७.

कथं ? पुव्वमवेदगो उत्तरसरीरं विगुव्विदे उच्चागोदवेदगो जादो । जादविदियसमए मूलसरीरं पविट्ठस्स वा मुदस्स वा होदि ।

(पृ० ६८)

पुणो अंतराणुगमो सुगमो । णवरि सादस्सुदीरणंतरं गदिं पडुच्च जहण्णुक्कस्सं अंतोमुहुत्तमिदि भणिदं । **एदमंगाभिप्पायं अण्णेक्काभिप्पायेण** णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदीए जहण्णुक्कस्संमंतोमुहुत्तं देवगदीए जहण्णमेगसमयं उक्कस्समंतोमुहुत्तं । पुणो असादस्संतरं गदिं पडुच्च भण्णमाणे मणुसगदीए जहण्णमेगसमयं, अद्धुवोदयत्तादो । उक्कस्समंतोमुहुत्तं ।.................

(पृ० ६८)

एण णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदीएसु च जहण्णेणेगसमयो, उक्कस्सेणंतोमुहुत्तो । देवगदीए जहण्णुक्कस्संमंतोमुहुत्तं । कुदो ? सदर-सहस्सारेस्सु(सु)प्पण्णस्स इंदस्स पढमसमयप्पहुडि सादस्सुदीरणकालस्स छम्मासणियमादो । अण्णहा उक्कस्संतरं छम्मासं होदि । एदाणं दोण्हमभिप्पायाणं पुव्वं व कारणं वत्तव्वं ।

पुणो भय-दुगुंछाणं अंतरं जहण्णेणेगसमयमुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । कथमेग [समओ ? चरिम] समयणियट्टिभयवेदगो से काले उवसामयअणियट्टिगुणं पविट्ठो अवेदगो जादो । तदो से काले वेदगो देवो जादो होदि त्ति गंथे भणिदं । एदेण जाणिज्जदि एदमद्धुवोदयं ण होदि त्ति । पृ० ६९.

(पृ० ७०)

पुणो छस्संठाणाणं एगसमयमंतरं विग्गहे वा विउव्वणाए वा जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ७१)

पुणो पत्तेग-साधारणाणं एगसमयियं विग्गहे चेव वत्तव्वं । दूभगाणादेज्ज-अजसगित्तिणीचागोदाणमेगसमयं विगुव्वणाए वत्तव्वं । पुणो सुभगादेज्ज-जसगित्ति-उच्चागोदाणं विगुव्वणाए वा एदेसिं पडिवक्खोदयसंजुदो जीवो संजमासंजमं पडिवज्जिय पुणो सासणगुणे पडिवण्णे वा विदियसमए कालं कादूण एदेसिं उदएसु उप्पण्णे एगसमयो होदि ।

(पृ० ७२-७३)

पुणो णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमो सुगमो । णवरि चउण्हमाउगाणं उदीरयाणमणुदीरयाण णियमा अत्थि । तं कुदो इदि उत्ते उच्चदे— आउगं दुप्पयारं परभवियबद्धाउगं भुंजमाणाउगं चेदि । तत्थ भुंजमाणआउगं दुविहं उदीरिज्जमाणमणुदीरिज्जमाणमिदि । तत्थ उदीरिज्जमाणबद्धपरभवियाउगाणं चउण्हं पि पुणो मणुस्स-तिरिक्खाउगाणं अणुदीरिज्जमाणाणं च संतकम्मेण णियमेण अत्थि त्ति णियमो कदो । देव-णेरइयाउगाणं अणुदीरिज्जमाणं(माणाणं)भयणिज्जत्तमत्थि । तमप्पहाणं । तो वि ताणि विवक्खिज्जमाणे तिण्णि भंगा वत्तव्वा, तहा कहिं वि पुत्थए दिट्ठत्तादो ।

पुणो णाणाजीवकालाणुगमो सुगमो । णवरि सम्मामिच्छत्तुदीरणेसु णाणाजीवाणं जहण्णकालो थोवो त्ति उत्ते तमंतोमुहुत्तमिदि घेत्तव्वं । २७ । तस्सेउ(वु)क्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणो त्ति

उत्ते पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तस्स उवसमसम्मादिट्ठिउक्कस्सरासिपमाणस्स असंखेज्जदिभागपमाणमिदि घेत्तव्वं । तं चेदं | प २७२२ | । एदाणि दो वि वयणाइं सुगमाणि । पुणो णाणाजीवउक्कस्सकालो असंखेज्जगुणो । इदि | प २७२२ | कथमेदं परिच्छिज्जदे ? ण, वेदगसम्मत्तपाओग्गमिच्छाइट्ठीदो वा वेदगसम्माइट्ठीदो वा कदाचि उवसमसम्मादिट्ठीणं संभवे संते तेसिं उवसमसम्मादिट्ठीदो वा सम्मामिच्छत्तगहणट्ठमंतोमुहुत्तमंतरिय एगादिएगुत्तरकमेण जीवा णिस्सरंति जाव सम्मामिच्छत्तुक्कस्सदव्वं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं तिसु वि पंतीसु पत्तो त्ति । णवरि एगसमयादिअंतोमुहुत्तमेत्तंतरं पि संभवदि । किंतु एत्थतणुक्कस्संतरं गहिदं । पुणो एगसमयादुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालस्स संभवे संते एत्थतणुक्कस्सुवक्कमणकालवियप्पं पडिगहिदं । पुणो ताणि परावत्तणसरूवेण णिस्सरिदूण सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जंति । पुणो एगादिएगुत्तरवड्ढिकमेण सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णवाराणि वि तेत्तियाणि चेव होंति । तदो एदाणि वाराणि तेरासिएण अंतोमुहुत्तेण गुणिदे णाणाजीवउक्कस्सकालं सगजीवदव्वपमाणादो असंखेज्जगुणमेत्तपमाणं होदि त्ति संदेहाभावादो । तं चेदं | प २७ २७२२२ |

पुणो णाणाजीवउक्कस्संतरं असंखेज्जगुणमिदि । कुदो ? वेदगसम्मत्तपाओग्गमिच्छाइट्ठिरासीदो एगादिएगुत्तरकमेण ण वेदगसम्मत्तरासिं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्तजीवा णिस्सरिदूण वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति । पुणो **आयाणुसारी वयो होदि त्ति णायादो** सम्मत्तादो तेत्तियमेत्ताणि णिस्सरिदूण मिच्छत्तं पडिवज्जंति । णवरि दो वि पंतीओ एगादेगुत्तरकमेण जाव सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिपमाणं ताव पत्ता त्ति । एदाणि कमेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त (?) पुणो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं साधरणाणि होंति । पुणो एत्थतणसम्मत्त-मिच्छत्तपाओग्गजीवाणि सम्मामिच्छत्तगहणपाओग्गजीवसंखादो उवरिमसंखेहिं णिस्सरिदूण ट्ठिदजीवेहिं सह परावत्तणसरूवेहि ण बहुवारं पल्लट्ठिय सम्मत्त-मिच्छत्तपडिवज्जणवारकालाणि ताणि होंति त्ति । तदो पडिवज्जणवारं तेरासिएण अंतोमुहुत्तेण गुणिदे सम्मामिच्छत्तविरहिदवेदगसम्मत्त-मिच्छत्ताणं कालाणि होंति । तदो ताणि तस्संतरपमाणं होंति । पुणो पुव्वुत्तकालादो एदमसंखेज्जगुणपमाणत्तादो | प २७ २३३ | ।

(पृ० ७४)

पुणो अंतराणुगमो सुगमो । सण्णिकासाणुगमो वि सुगमो ।

णवरि सत्थाणसण्णिकासेसु **वण्ण-गंध-रसफासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरेंतो सेसाणं सिया उदीरयो विरोहाभावादो,** इदि गंथे भणिदं ।

(पृ० ७९)

एदेण अण्णदरउदीरणे संते सेसाणं उदीरणं पडिसेहापडिसेहाभावेण किमट्ठं जाणाविदं ? उच्चदे— वण्ण-गंध-रस-फासणामकम्माणि स(सा)मण्णावेक्खाए धुवोदयाणि । पुणो तेसिं विसेसावेक्खाए वण्ण-गंध-रसकम्मेसु पुह पुह सग-सगभेदेसु एगेगं पि उदीरिज्जदि, पुणो सग-सगसेसपयडीणं एगादिसंजोगेण वि उदीरिज्जंति । एवमुदीरणसव्ववियप्पाणिकमेण एक्कत्तीसाणि तिण्णि एक्कत्तीसाणि होंति त्ति जाणविदं । पुणो वि फासस्स चत्तारि जुगलाणि होंति त्ति तत्थ एगेगजुगलस्स पुह पुह जोइज्जमाणे एगेगपयडीणं वा दोपयडीणं वा संजोगेहि

उदीरेंति त्ति तिण्णि उदीरणभंगाणि होंति त्ति। अहवा चत्तारिजुगलाणं संजोगेण सोलसाणि उदीरणभंगाणि होंति त्ति वा जाणाविदं। ण केवलमेदं वयणमेत्तं चेव, किंतु सुहुमदिट्ठीए जोइज्जमाणे एग-दु-तिसंजोगादिपयडीणमुदीरणाणं एग-दु-ति-चउ-पंचिंदियजादीसु दिस्सदि, जहा देवाणं तित्थयरकुमाराणं च सुरभिगंधो णेरइएसु दुरभिगंधो आगमभेदेण दिस्सदि।

णेदं सण्णिकासं घडदे। कुदो ? अणुभागुदीरणाए एगजीवकालाणुगमेण सह विरुद्धत्तादो। तं कथं ? पसत्थवण्ण-गंध-रसाणं णिद्धुण्णाणमुक्कस्साणुभागाणं उदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमयो। कुदो ? सजोगिचरिमसमए उक्कस्साणुभागउदीरणं जादं। तदो अणुक्कस्साणुभागस्स उदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो इदि उत्तं। पुणो मउग-लहुगाण-मुक्कस्साणुभागुदीरणकालो केवचिरं ? जहण्णेणेगसमयमुक्कस्सेण वेसमयमिदि उत्तं। तं कुदो ? आहाररिद्धीए जादत्तादो। अणुक्कस्साणुभागस्सुदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादि-सपज्जवसिदो इदि परूविदं। पुणो काल-णील-तित्त-कडुग-दुगंध-सीदुल्लु-(दल्हु)क्खाणं जहण्णाणुभागस्सुदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेणेगसमयो। कुदो ? सजोगिचरिमसमये जहण्णाणुभागुदीरणं जादत्तादो। अजहण्णाणुभागुदीरणकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो च। पुणो कक्खड-गरुवाणं जहण्णाणुभागुदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेणेगस[म]-यो। कुदो ? मत्थे(मंथे)जहण्णुदीरणं जादत्तादो। अजहण्णाणुभागुदीरणकालो अण्णादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो इदि परूविदं। पुणो एदेहि वय-णेहिं वण्ण-गंध-रस-फासाणं सग-सगभेदेसु अण्णदरस्स एगमुदीरिज्जमाणे सेसाणि णियमेणु-प्पज्जंति त्ति सिद्धं। तदो एदेसिं धुवोदएण होदव्वमिदि सिद्धं। विरुद्धं चेव तोक्खहि। कथं विरुद्धाणं दोण्हं परूवणा करिदे ?

ण, भिण्णाभिप्पायत्तादो। तं कथं ? पंचसरीरणामकम्माणि पोग्गलविवाई चेव। तदो सग-सगोदयएण णोकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयाणं च आगमणं करेंति। पुणो विस्सासोव-चयसहगदणोकम्मपरमाणूणं बंधण-संघादगुणे पोग्गलविवाई(इ)बंधण-संघादणामकम्माणि करेंति। विस्सासोवचयाणि वि करेंति त्ति कुदो णव्वदे ? तेसिं बंधण-संघादगुणाणमण्णहाणुव-वत्तीदो। पुणो ओरालियसरीरविस्सासोवचयणोकम्मपरमाणूणं चेव संठाणंगोवंग-संघडणाणं जादिवसेणाणेयभेदभिण्णणिबंधणाणं पोग्गलविवाइसंठाणंगोवंग-संघडणणामकम्माणि णिप्पज्जण-वावारं करेंति। पुणो वेउव्वियआहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयाणं संठाणंगो-वंगणामकम्माणि पुव्वं व जोग्गसंठाणंगोवंगाणं वावारं करेंति। पुणो तेजा-कम्मइयाणं णोकम्म-परमाणूणं सविस्सासोवचयाणं संठाणादिसरूवुप्पायणवावारमेदाणि ण करेंति। पुणो पोग्गल-विवाइवण्ण-गंध-रस-फासकम्माणि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्स-सोवचयाणं जादिपडिबद्धाणं वण्ण-गंध-रस-फासाणं पुव्वुत्तकमेणुप्पायणं करेंति। पुणो तेजा-कम्मइयसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं जहासंभवेण पंचवण्ण दोगंध-पंचरस-अट्ठ-फासाणं णिप्पत्तीए सव्वकालं करेंति। कुदो एदं णव्वदे ? विग्गहे वि तदुदयाणं अत्थित्त-दंसणादो। तम्हा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं वण्ण-गंध-रस-फाससरूवफलाणि कम्मेणुप्पाइदाणि। जोयियसण्णिकासपरूवणा कदा, पुणो तेजा-कम्मइयसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं वण्ण-गंध-रस फासफलदायिकम्मावेक्खाए कालाणियोगद्दारो परूविदो। तदो ण दोसो त्ति सिद्धं। तदो अभिप्पायंतरमिदि वत्तव्वं।

कथं विग्गहावत्थाए कम्मयियसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं पंचवण्ण-

संजुत्ताणं धवलत्तं ? ण, कम्माणं विस्ससोवचएणवगाहिदाणं धवलत्तुवलंभादो। कथं सरीर-गहिदपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमपज्जत्तकाले सरीरस्स कवोदवण्णणियमो ? ण, तेजा-कम्मइयसरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्ससोवचयाणं संजुत्तकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचएण सहिदसेससरीरणोकम्मपरमाणूणं सविस्सासोवचयेण संपुण्णत्ताभावादो। संपुण्णत्ते जादे सग-सगोदयसरूवं उप्पायं(एं)ति त्ति।

(पृ० ८०)

पुणो अप्पाबहुगाणुगमो सुगमो। णवरि **थीणगिद्धीए उदीरया थोवा। णिद्दाणिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा। पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा। णिद्दाए उदीरया संखेज्ज-गुणा। पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा। सेसचउण्हं पि दंसणावरणीयाणं उदीरया सरिसा संखेज्जगुणा** त्ति भणिदे एत्थ संखेज्जगुणस्स कारणं उदीरणद्धाविसेसेणाणुगंतव्वं। (पृ० ८०)

तं पि कथं ? उच्चदे — थीणगिद्धीए उदीरणं दंसणोवजोगं पच्छादिय किं व(?) कसाओ व्व विवरीदणाणुप्पायणा करेदि, तदो सिथिलफलत्तादो तस्स उदीरणत्थो(द्धो)थोवा जादो। पुणो णिद्दाणिद्दाए तिव्वाणुभागादएण दंसणोवजोगं पच्छादिय अट्ठ(व्व)त्ततमं णाणोवजोगं करेदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा। पुणो पयलापयलाए णिद्दाणिद्दाणुभागादो मंदाणुभागाए दंसणं पच्छादिय अव्वत्ततरं णाणोवजोगं करेदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा। पुणो णिद्दाए पुव्वि-ल्लादो मंदाणुभागाए दंसणस्स अंसं ण णासंतो दंसणं पच्छादयदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा। पुणो तत्तो पयलाए मंदाणुभागाए दंसणस्स अंसं ण णासंतो तत्तो त्थोवयरं पच्छादयदि त्ति तदद्धा संखेज्जगुणा जादा। पुणो सेसं चदुण्हं पि दंसणाणं(दंसणावरणीयाणं)उदीरणद्धा दोण्ह-मुवजोगाणं परावत्तणसरूवेण........दमिदि संखेज्जगुणं जादं।

(पृ० ८१)

पुणो एत्तो ट्ठाणपरूवणदाए सव्वो पवंचो सुगमो।

(पृ० ८८)

णवरि णामकम्मस्स ट्ठाणपरूवणदाए एइंदियस्स आदाउज्जोवोदयविरहिदुदयट्ठाणाणि एक्क-वीस-चउव्वीस-पंचवीस-छव्वीसट्ठाणाणि होंति। आदाउज्जोवोदयसहिदाणमेक्कवीस-चउव्वीस-छव्वीस-सत्तावीसट्ठाणाणि होंति। एदेसिं पयडीणं परूवणा....................................
सिं कमेणुदीरणभंगाणि एत्तियाणि— | ५ | ९ | ५ | ५ | २ | २ | ४ | ४ | । पुणो विउव्वण-मुट्ठाविय एइंदिएसु विगुव्वणप्पयमोरालियसरीरं चेवे त्ति एदेहिंतो पुधभूदट्ठाणाणि णत्थि त्ति एत्ति-याणं चेव परूवणा कदा।

पुणो एयजीवकालाणुगमेण वेउव्वियसरीरस्स एइंदिएसु वि उदीरणासामित्तं दिण्णं। तदो एइंदिएसु अण्णाणि ट्ठाणाणि संभवंति त्ति णव्वदे। तं कथं ? वेउव्वियमुट्ठाविदएइंदिएसु पुव्विल्लचउव्वीस-पंचवीस-च्छव्वीसुदीरणट्ठाणेसु पुणो चउवीस-छव्वीस-सत्तावीसुदीरणट्ठाणेसु च ओरालियमवणिय वेउव्वियसरीरं पक्खिविय ट्ठाणपरूवणा पयडियेदेण वत्तव्वा। णवरि आदाव-सुहुम-पज्जत्त-साधारण-जसकित्तिणामाणि एत्थ णत्थि त्ति वत्तव्वं। तदो चेव कारणादो कमेण भंगाणि एत्तियाणि | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ।

(पृ० ९२)

पुणो पंचिंदियतिरिक्खाणं एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसपयडि-

उदीरणट्ठाणाणं उज्जोवस्सणुदय-उदयसरूवेण पयडिपरूवणा गंथसिद्धा चेव। एदेसिं ट्ठाणाणमु- ज्जोवरहिद-सहिदाणमुदीरणभंगाणि कमेण एत्तियाणि होंति |९|२८९|५७६|५७६|११५२| ८|२८८|५७६|५७६|२७६|११५२| ।

पुणो उदीरणकालाणुगमबलेण विगुव्वणमुट्ठाविदस्स पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदछव्वीसादि- ट्ठाणेसु उज्जोवोदयरहिद-सहिदाणमोरालियदुगं संघडणं च अवणिय वेउव्वियदुगं पक्खिविय पयडिट्ठाणाण परूवणा कायव्वा। तेसिं कमेणुदीरणभंगाणि एत्तियाणि होंति |४८|९६|- ९६|१९२|४८|९६|९६|१९२| ।

(पृ० ९३)

एत्थ मणुस्सगदिस्सुदीरणट्ठाणाणि एक्कवीस-पंचवीसादिएक्कत्तीसट्ठाणे त्ति अट्ठ ट्ठाणाणि होंति। पुणो सामण्णमणुस्सेसु विसेसमणुस्स-विसेसविसेसमणुस्साणं च उदीरणट्ठाणाणि। पुणो सामण्णमणुस्साणं विगुव्वणुट्ठाविदेणुप्पण्णट्ठाणेहिं पयडिभेदेण सह गदेहिमुवरिम- ट्ठिदिसामित्तबलेण वत्तव्वं। पुणो सामण्णमणुस्साणं अविउव्वणा-विगुव्वणाणमुदीरणट्ठाण- भंगाणि कमेणेदाणि |९|२८९|५७६|५७६|११५२|४८|९६|९६|१९२| ।

(पृ० ९६)

पुणो देवगदीए पंच उदीरणट्ठाणाणि। पुणो विउव्वणमुज्जोवेण सह उट्ठाविदस्स अट्ठा- वीस-एगूणतीसमेत्तट्ठाणेहिं सह वत्तव्वं।

(पृ० १००)

पुणो ट्ठिदिउदीरणाए मूलुत्तरट्ठिदिअद्धच्छेदो सुगमो।

(पृ० १०४)

उक्कस्सउदीरणासामित्तं पि सुगमं। णवरि सुहुमापज्जत्त-साहारणाणं उक्कस्सट्ठिदि- उदीरगो को होदि ? जो वीससागरोवमकोडाकोडीओ बंधिऊण पडिभग्गो संतो अप्पिद- पयडीओ बंधिय उक्कस्सट्ठिदिं पडिच्छिय तत्तं(त्थं)तोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं सुहुमापज्जत्त- साधारणसरीरेसुप्पण्णपढमसमयतब्भवत्थो उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ त्ति भणिदं। पृ० १०९.

एत्तु(त्थु)क्कस्सट्ठिदिं पडिच्छिय अंतोमुहुत्तच्छणणियमो। कुदो ? उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसेण सह मुदतिरिक्ख-मणुस्साणं णिरएसुप्पत्तिणियमादो। तदो संकिलेसादो पडिभग्गो होदूणंतो- मुहुत्तमच्छिय मदो(दे)चेव एदेसिमुप्पत्तिसंभवो होदि त्ति जाणावणट्ठं णियमो कदो।

(पृ० ११०)

पुणो जहण्णट्ठिदिउदीरणा सुगमा।

णवरि तिरिक्खगदिणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? जो तेउकायिओ वाउ- कायिओ वा हदसमुप्पत्तियकमेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण सण्णि- पंचिंदिएसुववण्णो, उववण्णपढमसमए चेव मणुसगदिबंधगो जादो, तं सव्वचिरं बंधिदूण तदो तिरिक्खगइ बंधतस्सावलियकालं बंधमाणस्स इदि। पृ० ११४.

एत्थ तेउ-वाउकायिएसु चेव कुदो हदसमुप्पत्तिणियमो ? ण, अण्णकायिएसु हदसमुप्पत्तियं

त्तियं कादूण संतस्स हेट्ठा विसोहीए बंधमाणे मणुसगइं सुहपयडिं अदीव णोवट्टंतो बंधदि, मणुसगइं बज्झ(बंध)माणो सण्णिपंचिंदियतिरिक्खेसु ण उप्पज्जंति त्ति वा जाणावणट्ठं; जदि उप्पज्जंति त्ति विवक्खा अत्थि तो सद्धसण्णिपंचिंदिएसु मणुसगदिबंधगद्धादो एइंदियसण्णिपंचिंदिएसु मणुसगदिबंधगद्धा थोवा, तं गालिज्जमाणे जहण्णट्ठिदी ण होदि त्ति जाणावणट्ठं वा । कथं तेउ-वाउकाइएहिंतो सेसतिरिक्खेसुप्पण्णाणं पढमसमयादिअंतोमुहुत्तकालब्भंतरे मणुसगदिबंधसंभवो ? ण, गंथे तस्स परिहारं दिण्णत्तादो ।

पुणो वगेव्वियंगोवंगस्स णिरयगदिभंगो इदि । पृ० ११६.

कुदो णियमो ? ण, असण्णिपंचिंदिएहिंतो देवेसुप्पण्णमाउआदो णिरएसुप्पण्णमाउगं विसेसाहियं, देवगदिणामकम्स्स हदसमुप्पत्तियट्ठिदीदो णिरयगदिणामकम्माणं वेगुव्वियंगोवंगाणं हदसमुप्पत्तियट्ठिदीयो बहुगाओ इदि जाणावणट्ठं ।

(पृ० ११९.)

पुणो उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालपरूवणा सुगमा । णवरि दंसणावरणपञ्च(पंच)यस्स अणुक्कस्सुदीरणकालो जहण्णेणेगसमओ इदि । कुदो ? ण, अणुक्कस्समुदीरिय विदियसमए मुदस्स वा विदियसमए उक्कस्सट्ठिदिमुदीरिदे वा होदि त्ति जाणाविदं ।

पुणो उवघाद-परघादुस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-तस-पत्तेयसरीर-दूभग-अणादेज-दुस्सर[णामाणं] णीचागोदस्स य उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । पृ० १२३.

सुगममेदं ।

अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ । पृ० १२३.

कुदो ? उच्चदे— उवघाद-पत्तेयसरीराणं पुव्वमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदूण अणुक्कस्समेगसमयमुदीर(रि)य कालं काऊण विग्गहगदस्स । एवं परघादुस्सास-अप्पसत्थविहायगदीणं । णवरि कालगदस्से त्ति भाणिदव्वं । पुणो दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुत्तरं विगुव्विदस्स वत्तव्वं । णवरि तसणामाए अंतोमुहुत्तमिदि भाणिदव्वं । तं कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्समिच्छाइट्ठिणो तसणामं णिरयगदिसंजुत्तं उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय पुणो उक्कस्सट्ठिदिमुदीरिय पडिभग्गो होदूण संखेज्जावलियमेत्तकाले गदे चेव उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि थावरेसु च उप्पज्जदि त्ति वा णियमादो ।

(पृ० १२५.)

पुणो जहण्णट्ठिदीए उदीरणकालपरूवणा सुगमा ।

(पृ० १२९.)

णवरि परघादणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमयमिदि उत्ते उत्तरसरीरं विगुव्विय पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स एगसमयं दिट्ठं विदियसमए कालं कादूण अणुदीरगो जादो त्ति वत्तव्वं ।

(पृ० १३०.)

पुणो उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं सुगमं ।

(पृ० १३७.)

जहण्णट्ठिदिउदीरणं [तरं] पि सुगमं ।

(पृ० १३८.)

णवरि वेगुव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरस्स जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

भागो इदि उत्तं । तं किमट्ठं ? उच्चदे— तेउ-वाउकाइएसु हदसमुप्पत्तियं काऊण वेगुव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिं करिय विगुव्वणमुट्ठविय चिरकालेण मूलसरीरं पविस्संतचरिमसमए जहण्णट्ठिदि-उदीरणं होदि । पुणो ते असण्णिपंचिंदिएसुप्पज्जिय वेगुव्वियसरीरं बंधिय पुणो वि तेउ-वाउकायिएसुप्पज्जिय हदसमुप्पत्तियं करेंतस्स तेत्तियमेत्तंतरकालुवलंभादो । पुणो एदेण जाणिज्जदि ओरालिय-सरीर(रं) विगुव्वणप्पयं ण होदि त्ति ।

(पृ० १३९.)

पुणो णाणाजीवभंगविचयाणुगमो दुविहो उक्कस्सए जहण्णए चेदि । ते (तं) दुविहं पि सुगमं ।

(पृ० १४१.)

णाणाजीवकालंतराणुगमं पि सुगमं । संणिकासं पि सुगमं ।

(पृ० १४७.)

उक्कस्सट्ठिदिउदीरणप्पाबहुगं पि सुगमं ।

(पृ० १४८.)

पुणो जहण्णट्ठिदिउदीरणप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा— तत्थ ताव जहण्णट्ठिदिउदीरणप्पाबहुगावगमणट्ठं परावत्त·········माणपयडीणं बंधगद्धाप्पाबहुगं उच्चदे— जहण्णबंधगद्धा देवगदि-आदिसत्तरसण्णं पयडीणं थोवं | २ | । आउचउक्काणं संखेज्जगुणं | ४ | । आउआणं चेव उक्कस्स संखेज्जगुणं | ८ | । देवगदि संखेज्जगुणं | १६ | । उच्चागोदं संखेज्जगुणं | ३२ | । मणुसगदीए संखेज्ज-गुणं | ६४ | । पुरिसवेदे संखेज्जगुणं | १२८ | । इत्थिवेदे संखेज्जगुणं | २५६ | । सादं-हस्स-रदि-जसकित्ति संखेज्जगुणं | ५१२ | । तिरिक्खगदि संखेज्जगुणं | १०२४ | । णिरयगदि संखेज्जगुणं | २९९२ | । असादावेदणीय-सोग-अरदि-अजसकित्ति विसेसाहिया । | ३५८४ | । णउंसकवेदे विसेसाहिया | ३७१२ | । णीचागोदे विसेसाहिया | ४०६४ | । परावत्तमाणपयडिबंधसमासो एसो | ४०९६ | । पुंवेदबंधगद्धा ५) । इत्थिवेदबंधगद्धा ११/४ । णउंसकवेदबंधगद्धा १० । भोगभूमीसु पुंवेदबंधगद्धा ३५/८ । इत्थिवेदबंधगद्धा ७७/८ । अथवा पुरिसवेदबंधगद्धा ४ । इत्थिवेदबंधगद्धा १० । हस्स-रदिबंध-गद्धा ३ । अरदि-सोगबंध० ११ । तसबंधगद्धा १४ । थावरबंधगद्धा ५६ । एवं बंधगद्धाप्पाबहुगं जहाजोग्गं जोजिय पयदजहण्णट्ठिदिअप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा—

पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेद-चत्तारिआउगं पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा त्थोवा । पृ० १४८.

कुदो ? एगट्ठिदित्तादो ।

जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? समयाधियावलियपमाणत्तादो ।

मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? संखेज्जावलियपमाणत्तादो । पुणो एदेहिं सूचिदपयडीणं समाणासमाणट्ठिदीणं मज्झे ताव समाणट्ठिदिपयडीओ उच्चदे । तं जहा— पंचिंदिय-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघादाणं छस्संठाणाणं ओरालियंगोवंग-वज्जरिसहसहड(संहडण-)वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुग-उवघाद-परघाद-दोविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-णिमिण-तित्थ-यरमिदि एदेसिं पणतीससंखा एक्कावण्णं वा पयडीओ होंति । एदेसिमप्पाबहुगं पुव्विल्लेहि सह वत्तव्वं ।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४८.

आवलियमेत्तेण । पुणो सूचिदपयडीणं असामण्णट्ठिदीए सहिदाणमप्पाबहुगं उच्चदे— उस्सासस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । कुदो ? सजोगिचरिमसमयादो हेट्ठा संखेज्जट्ठिदिखंडयमेत्तद्धाणं उदीरणं णट्ठत्तादो । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पुणो वि सूचिदसुस्सर-दुस्सराणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा । कुदो ? तत्तो हेट्ठा पुव्वं व ओदरिदस्स उदीरणं णट्ठत्तादो । जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया ।

वेगुव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा । पृ० १४८.

कुदो ? पल्लासंखेज्जदिभागूणसागरोवम-वे-सत्तभागमेत्तमेइंदियाणं सेसपयडिबंधट्ठिदिसमाणाणमुव्वेल्लणट्ठिदिगहिदत्तादो ।

जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदि० विसेसाहिया ।

कुदो ? अणुव्वेल्लिज्जमाणपयडित्तादो । पुणो एदेण सूचिददूभगाणादेज्जपयडीणं अजसगित्तीए समाणप्पाबहुगं होदि त्ति वत्तव्वं ।

जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । तिरिक्खगदीए जहण्णट्ठिदि० विसेसाहिया ।

कुदो ? हदसमुप्पत्तिए कदे तेउ-वाउकाइयपच्छायदसण्णिपंचिंदिएण मणुसगदिबंधेण मणुसगदिबंधं गालिऊण ट्ठिदतिरिक्खगदिस्स जहण्णट्ठिदीदो तत्थतणजसगित्तिबंधगद्धं पुव्विल्लबंधगद्धादो बहुगं गालिऊण ट्ठिदिबंधगद्धादो अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदीए पमाणं थोवत्तादो ।

जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । पुणो णीचागोदजहण्णट्ठिदिउदी० विसेसाहिया ।

कुदो ? मणुसगदिबंधगद्धादो उच्चागोदबंधगद्धाए थोवाए गालिऊण ट्ठिदत्तादो ।

जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । पृ० १४८.

पुणो एत्थ सूचिदपयडीओ उच्चदे । तं जहा— थावर-सुहुम-साधारणसरीराणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? थावरकाइयेसु चेव गालिदपडिवक्खबंधगद्धादो । जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । अपज्जत्तट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? सुट्ठु अप्पसत्थत्तादो । जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । पुणो तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए जहण्णिया ट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । कुदो ? अगालिदबंधगद्धादो । जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया । मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वीए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । कुदो ? पसत्थपयडित्तादो । जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४८.

कुदो ? हदसमुप्पत्तीएणुप्पण्णसागरोवम-ति-सत्तमभागपमाणस्स किंचूणस्स गालियसण्णीणमसादबंधगद्धादो ।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया ।

कुदो ? हदसमुप्पत्तियट्ठिदिम्मि गालिदसण्णिसादबंधगद्धत्तादो ।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । पुणो पंचण्णं दंसणावरणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया । पृ० १४८.

कुदो ? अगालिदट्ठिदिबंधगद्धत्तादो । कधं णिद्दा-पयलाणं पयडिसामित्तेण णाणावरणेण समाणाणं थीणगिद्धीए सह जहण्णट्ठिदिउदीरणप्पाबहुगं उत्तं ? ण, णिद्दा-पयलाणं उदीरणम्मि

दुविहो उवदेसो। तत्थेक्कोवएसो— खीणकसायावलियवज्जसेससव्वे च(छ)दुमत्थाण संभवो। अण्णेक्केणोवएसेण सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदविदियसमयप्पहुडिथीणगिद्धितियाणं व होदि। णवरि देव-णेरइय-भोगभूमिजमणुव-तिरिक्खाणं विगुव्वणमुट्ठाविदमणुसाणं तिरिक्खाणं आहारद्धीएसु च वारणा णत्थि। तत्थ बिदियोवएसेणेदं परूविदं। उवरिमचउगइअप्पाबहुगमिदि अवलंबिदं।

पुणो हस्स-रदीणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा। विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। बारसकसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तजहण्णट्ठिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पुणो देवगदीए जहण्णट्ठिदिउदीरया (णा) संखेज्जगुणा। पृ० १४८.

कुदो ? हदसमुप्पत्तियसंतकम्मियअसण्णिपंचिंदियपच्छायदतप्पाओग्गुक्कस्सदेवाउगचरिमसमयट्ठिदित्तादो।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। देवगइपाओग्गाणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पृ० १४९.

कुदो ? उप्पण्णविदियसमयम्मि ट्ठिददेवस्स ट्ठिदित्तादो।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। णिरयगदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया।

कुदो ? हदसमुप्पत्तियअसण्णिपच्छायददेवगदस्स जहण्णट्ठिदिसंतादो पुणो हदसमुप्पत्तियणिरयगदिस्स जहण्णट्ठिदिसंतं विसेसाहियं, अप्पसत्थत्तादो। केत्तियमेत्तेण विसेसाहियं ? एत्थतणदेवाउगेहिंतो णिरयाउगं विसेसाहियं। तत्तो एदं अब्भहिय त्ति घेत्तव्वं। कथमेदं परिच्छिज्जदे ? एदम्हादो चेवप्पाबहुगादो परिच्छिज्जदे। एत्थ सूचिदवेगुव्वियंगोवंगं पि एदेण सरिसं ति वत्तव्वं। कधमेदं णव्वदे ? ण, जहण्णट्ठिदिसामित्तेण दोण्हं समाणसामित्तादो।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पृ० १४९.

सुगमं

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पृ० १४९.

सुगमं

आहारसरीरजहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। पृ० १४९.

सुगमेदं (सुगममेदं)। एदेण सूचिदतदंगोवंगस्स वि एत्थेव वत्तव्वं।

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पृ० १४९.

पुणो णिरयगदीए जहण्णप्पाबहुगं सुगमं। णवरि गंथुत्तपयडीओ अवणिय सेसोदइल्लसूचिदचउव्वीसपयडीणमप्पाबहुगं जम्मि जम्मि उद्देसे संभवदि तम्मि तम्मि उद्देसे जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० १५०.)

किमट्ठमेत्त (त्थ) णिद्दा-पयलाण जहण्णट्ठिदिउदीरणा सव्वप्पाबहुगपदेहिंतो बहुगं जादं ? ण, तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंजुत्ता खइयसम्माइट्ठीणं णिरएसुप्पज्जिय तप्पाओग्गुक्कस्सणिरयाउग-चरिमसमए ट्ठिदस्संतोकोडाकोडिमेत्तट्ठिदीए गहणादो। तं पि कुदो ? सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्त-काले एदेसिमुदीरणा णात्थि त्ति अभिप्पाएण तत्थतणजहण्णट्ठिदी ण गहिदा। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स वि बंधट्ठिदीदो संतट्ठिदी बहुगी होदि। सा पुण गालिदउक्कस्साउगपमाणादो णेरइयचरिमसमए वट्टमाणखइयसम्मादिट्ठिट्ठिदीदो सगुक्कस्साउगपमाणेणब्भहियत्तादो ण गहिदा। पुणो पज्जत्ताणं जहण्णट्ठिदीदो खइयसम्मादिट्ठीण जहण्णट्ठिदी संखेज्जगुणा होदि त्ति गहिदा।

(पृ० १५०–५२)

पुणो तिरिक्खगदीए तिरिक्खजोणिणिए च अप्पाबहुगं सुगमं। णवरि सूचिदणाम-कम्मपयडीणमप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० १५४)

पुणो मणुसगदीए अप्पाबहुगं जाणियूण वत्तव्वं जाव सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदी-रणं पत्ता त्ति। णवरि सूचिदपयडीणमप्पाबहुगं पि जाणिय वत्तव्वं। पुणो तत्तो **दंसणावरण-पच्च(पंच)यस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा त्ति। पृ० १५४.**

कुदो ? चत्तारिवारमुवसमसेढिं चडिय तेत्तीसाउगदेवेसुप्पज्जिय अधट्ठिदीयो गालिय पच्छा मणुस्सेसुप्पज्जिय खइयसम्माइट्ठी होऊणंतोमुहुत्तेण खवगसेढिं(ढि-)चढणपाओग्गो होहदि त्ति ट्ठिदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणं जादं। तदो

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। आहारसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा।

कुदो ? दोण्हं समाणसामित्ते संते वि विसोहिणा अप्पसत्थाणं कम्माणं ट्ठिदिसंत बहुगं घादिज्जदि, पसत्थाणं थोवं घादिज्जदि त्ति णायादो संखेज्जगुणं जादं। पुणो

जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पुणो वेगुव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसे-साहिया। पृ० १५४.

कुदो ? समाणसामित्ते संते वि खवगसेढिचडणपाओग्गकालादो हेट्ठा पुव्वमेव अंतोमुहुत्त-काले विगुव्वणपाओग्गे विगुव्वणमुट्ठाविय पच्छा तत्तो उवरि अंतोमुहुत्तकालेण आहारसरीर-मुट्ठाविदत्तादो अंतोमुहुत्तेण विसेसाहियं जादं। पुणो देवगदीए अप्पाबहुगं सूचिदपयडीए सह जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० १५७)

पुणो भुजगारुदीरणाए सामित्तपरूवणा सुगमा। तस्स कालाणुगमं पि सुगमं।

(पृ० १५८)

णवरि **पंचदंसणावरणाणं उदीरणकालो जहण्णेणेगसमओ।**

सुगममेदं।

उक्कस्सेण णव समया। पृ० १५८.

तं कथं ? उच्चदे— ठिदीए भुजगारस्स कारणं दुविहं अद्धाखयं संकिलेसखयं चेदि। तत्थ अद्धाखयं णाम एगट्ठिदिबंधकालो एगसमयमादिं कादूण जाउक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तं होदि।

तेसिं खओ अद्धाखओ णाम। एदमेगसमयमादिं कादूण जाव आबाधाखंडयमेत्तसमयाणं ट्ठिदिबंध-सरूवेण वड्ढीए हाणीए वा कारणं होदि। एवं संते कधं तिकरणपरिणामपरिणदकाले अंतोमुहुत्त-परिणदमेत्तट्ठिदिबंधकालणियमो ? ण, भिण्णजादित्तादो। अहवा, एगट्ठिदिबंधकालो जह-ण्णुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं चेव। तथा सदि कथमेगसमयादिट्ठिदिबंधकाल(ला)णं संभवो ? ण, मिच्छत्तुदीरणसहिदअण्णोण्णपज्जयभेदेण बंधगद्धाखयसंभवादो एक्कसमयादिकालो संभवदि।

पुणो वि विवक्खिदट्ठिदीए असंखेज्जलोगमेत्तकसायपरिणामेसु तत्थ जं परिणदाणं परिणामिज्ज-माणं खओ संकिलेसखवो णाम। एदम्मि ट्ठिदिबंधउड्ढीए हाणीए एगसमययादिं कादूण जाव संखेज्जगुणपमाणट्ठिदीए कारणं होदि त्ति तत्थ अद्धाखए जादे संकिलेसखवो ण होदि। कुदो ? तत्थ अणुकड्ढिपरिणामाणमुवलंभादो। पुणो संकिलेसखए जादे अवस्समद्धाखवो होदि। कुदो ? विवक्खिद-ट्ठिदीए सव्वपरिणामखये संते तस्स बंधट्ठिदीए बंधइयं होदि त्ति णायादो। एवं संते विवक्खिद-पयडीदो सेसट्ठपयडीओ एगेगवारं कमेण अद्धाक्खएण वड्ढियूण बंधिय आवलियमेत्तकाले गदे कमेण विवक्खिदपयडिम्मि संकामिय पुणो सव्वपयडीणमद्धाक्खयाविणाभाविसंकिलेसखए जादे णव भुजगारुदीरणसमया होंति त्ति एत्थ विवक्खिदं। कधं एदाए पुणो अद्धाक्खयेण वड्ढी ण गहिदा ? दोसमयेसु अणुसंधाणेण एगपयडीए अद्धाक्खओ ण होदि त्ति ण गहिदा। कधमेदं णव्वदे। एदम्हादो चेव आरिसादो। अण्णहा पुण विवक्खिदपयडीए सेसट्ठपयडीओ पुव्वं व अद्धाक्खएग वड्ढियूण बंधिय संकामिय पुणो विवक्खिदपयडीए अद्धाखएण वड्ढिय सव्वपयडीणं अद्धाखएण सह संकिलेसखये वड्ढिदे भुजगारुदीरणसमया दस होंति। एदं पुव्विल्लणियमेण कधं ण विरोहो ? ण, एत्थ एवंविहअद्धाखयाणं दोण्हं समए अणुसंधाणउड्ढी ण दोसो त्ति विवक्खिदत्तादो।

अत्थदो दस समया त्ति उत्तं। तं सुगमं।

पुणो **णवणोकसायाणं भुजगारुदीरणकालो जहण्णेणेगसमयो। पृ० १५८.**

सुगममेदं।

उक्कस्सेण अट्ठावीस समया। पृ० १५८.

तं कथं ? उच्चदे— सोलसकसायाणि कमेण अद्धाखयेण वड्ढियूण बज्झमाणे सोलस समया हवंति। पुणो ट्ठिदिबंधगद्धाखयेण वड्ढिदूण बंधपुव्विल्लसोलसपयडीणं मज्झे चरिम-पयडिं मोत्तूण सेसपण्णारसपयडीसु अण्णदरदसपयडीओ वड्ढिदूण बंधिदे सेसकसाएसु तप्पा-ओग्गट्ठिदिबंधगद्धाए परिणमिय बंधेसु(बद्धेसु)दस समया लब्भंति। पुणो बंधावलियकाले गदे विवक्खिदणोकसायस्सुवरि जहाकमेण पुव्वुत्तासोलस-दसकसायट्ठिदीयो संकामिय सण्णीसु एगविग्गहं कादूणुप्पज्जिय उप्पण्णपढमसमए असण्णिपडिभागिगं ट्ठिदिं बंधिय सरीरगहिदपढम-समए सण्णिपडिभागिगट्ठिदिं बंधिऊण पुणो उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि छव्वीससमयूणावलिय-कालं बोलाविय पुव्वुत्तट्ठिदीसु कमेणुदीरिज्जमाणिगासु विवक्खिदणोकसायस्स भुजगारट्ठिदिउदी-रणसमया अट्ठावीसा लब्भंति।

पुणो ट्ठिदिबंधगद्धासु अणेयपयारेहिं लब्भमाणासु भुजगारसमया अट्ठावीसेहिंतो बहुगा किण्ण होदि त्ति उत्ते— ण, सहावदो चेव। जहा किंचूणपुव्वकोडिमेत्तसंचयणिमित्तकाले संतो (ते)वि सजोगिभडारयस्स तक्कालसंचओ ण लहदि तहा एत्थ वि अट्ठावीससमयपमाणादो अहिय-समया ण तक्कालसंचयेण लब्भंति त्ति उत्तं होइ। अहवा णोकसायाणं सगसगुक्कस्सट्ठिदिबंधादो उक्कस्सठिदिबंधादो च हेट्ठिमट्ठिदिबंधभाणकसाय-णोकसायबंध-संतेहिंतो जादिवसेण एइंदिसु

कारणवसेण सामग्गीए कसाय-णोकसाया पुव्वुत्तणोकसायट्ठिदिबंधसंतादो वड्ढिदूण बंधं लहंति। जहा पुरदो भण्णमाणउच्चागोदट्ठिदिबंधो व्व इदि अहिप्पाएण उत्तं।

पुणो एदेणहिप्पाएण अट्ठावीसभुजगारसमयाणं पउत्ती उच्चदे। तं जहा— विवक्खिदणोकम्मट्ठिदिबंधसंतादो हेट्ठा सेसट्ठणोकसाय-सोलसकसायाणं ट्ठिदिं बंधमाणो जो जीवो सो विवक्खिदणोकसायट्ठिदिबंधसंतादो उवरि सेसट्ठणोकसाए सोलसकसाए च कमेण अद्धाक्खयेण वड्ढियूण बंधिय बंधावलियं बोलाविय विवक्खिदणोकसायस्सुवरि जहाकमेण संकामिय विवक्खिदणोकसायं पि अद्धाखएण वड्ढियूण बंधिय पुणो संकिलेसखयेण सव्वेसिं पि कसाय-णोकसायाणं ट्ठिदीए वड्ढियूण बंधिय कालं काऊण एगविग्गहेण सण्णीसुप्पज्जिय असण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय छव्वीससमयूणावलियमेत्तकालमदिच्छिदूण विवक्खिदणोकसायट्ठिदिं कमेणोकड्ढिदूण उदीरेमाणस्स अट्ठावीस भुजगारुदीरणकाला लब्भंति।

अत्थदो पुण एगूणवीस समया। पृ० १५८.

कुदो? कसायट्ठिदिबंधादो समाणकाले बज्झमाणणोकसायट्ठिदिसव्वकालं दुगुणहीणं बंधदि त्ति णायादो। तेसिं भुजगारसमयाणं उप्पत्तिविहाणमेवं वत्तव्वं। तं जहा— सोलसकसाए अद्धाक्खएण वड्ढिदूण बंधिय पुणो तदणंतरसमए संकिलेसक्खएण सव्वे वि कसाए एक्कसराहेण वड्ढिदूण बंधिय बंधावलियं बोलाविय विवक्खिदणोकसायस्सुवरि ताणं कसायाणं ट्ठिदीयो कमेण संकामिय तदणंतरसमए एगविग्गहं काऊण सण्णीसुप्पज्जिय विग्गहगदीए असण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय सत्तारससमएहि सोलससमएहि अद्धक्खयेण णिरंतरं वड्ढिदूण बंधंतो तदणंतरसमए संकिलेसक्खएण वड्ढिदूण बंधेदि त्ति अहिप्पाएण लब्भदि।

पुणो **णीचुच्चागोदाणं भुजगारुदीरणकालो जहण्णेणेगसमयो। पृ० १५९.**

सुगममेदं।

उक्कस्सेण पंचसमओ। पृ० १५९.

तं कधं? उच्चागोदस्सुक्कस्सट्ठिदिबंधादो हेट्ठिमतप्पाओग्गट्ठिदिबंधसंतसंजुत्तणीचागोदस्सुवरि वड्ढिदूण ठिदउच्चागोदस्स ठिदिसंतं संकामिय तदणंतरसमए णीचागोदं अद्धाक्खएण तप्पाओग्गठिदिं उच्चागोदसंतस्सुवरि वड्ढिदूण बंधिय पुणो संकिलेसक्खएण तत्तो उवरि वड्ढिदूणुप्पज्जिय सण्णीसु एगविग्गहेण विग्गहगदीए असण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय सरीरगहिदपढमसमए सण्णिपडिभागट्ठिदिं बंधिय दुसमयूणावलियमेत्तकालं बोलाविय पुणो पुव्वुत्तट्ठिदीसु उदीरिज्जमाणासु णीचागोदस्स पंच भुजगारसमया लब्भंति। एवं उच्चागोदस्स वि पंच भुजगारसमया चिंतिया वत्तव्वा।

अत्थदो दोण्हं पि चत्तारि समया। पृ० १५९.

तं च सुगमं।

पुणो **मिच्छत्तस्स अप्पदरुदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ। पृ० १५९.**

सुगममेदं।

उक्कस्सेण पदिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। पृ० १५९.

कुदो? एइंदिएसु हदसमुप्पत्तियकरणकालग्गहणादो। तं पि कुदो? भुजगारप्पदरावट्ठिद-

पदाणि तिण्णि वि जम्मि मग्गणाए संभवंति तम्मि उत्तमेदं । अण्णहा एक्कत्तीससागरोवमाणि सादिरेयाणि संकिलेसियकालं उवरिमगेवेज्जदेवेसु मिच्छस्सुक्कस्सपदरुदीरणकालो लब्भइ । सो च एत्थ ण विवक्खियो ।

(पृ० १६२)

पुणो अप्पाबहुगाणुगमो सुगमो । णवरि **सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारुदीरया** त्ति उत्ते एवं वत्तव्वं । तं जहा— थीणगिद्धितियस्स ताव अणुदीरगासंभवे सुहुमेइंदिया देवा णेरइया भोगभूमिजतिरिक्खा मणुस्सा बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्ता तसकाइयलद्धिअपज्जत्ता च पुणो एदे सव्वे वि एक्कदो मिलिदे सुहुमेइंदियरासिपमाणादो सादिरेयमेत्ता होत्ति (होंति) । ते वि णिद्दा-पयलाणं चेव उदीरणपाओग्गा होंति । तदो तं रासिं | १३८ / ९ | । सव्वत्थोवा णिद्दा-पयलाणमुदीरणद्धा |२७ | २| अणुदीरणद्धा संखेज्जगुणा |२७ | ४| । पुणो एदासिं दोण्हमद्धाणं समासेण |२७|५| भागं घेत्तूण लद्धं णिद्दा-पयलाणं उदीरणद्धाए गुणिदे सुहुमेइंदियरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । तस्स पमाणमेदं |१२८ / ९५| । पुणो सव्वत्थोवा णिद्दाए उदीरणद्धा । पयलाए उदीर[ण]द्धा संखेज्जगुणा त्ति । एदासिं दोण्हमद्धासमासेणेदस्स रासिस्स भागं घेत्तूण णिद्दुदीरणाए गुणिए पुव्वुत्तसंखेज्जदिभागरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । सो च एसो|१३८| । एदस्सुवरि बादरेइंदियपज्जत्तरासि(सिं)कम्मभूमिजतिरिक्ख-मणुस्सपज्जत्तरासिं च एक्क|८५५| दो काढूण एदस्स रासिस्स सव्वत्थोवा णिद्दापंचयस्स उदीरणद्धा, अणुदीरणद्धा संखेज्जगुणा त्ति । एदेसिं दोण्हमद्धाणं समासेण भागं घेत्तूण लद्धं णिद्दापच्च(पंच)यस्स उदीरणद्धाहि गुणिदे वज्झमाणरासिस्स संखेज्जदिभागो होदि । तस्स पमाणमेदं | १३ / ९७५ | ।

सव्वत्थोवा थीणगिद्धीए उदीरणद्धा । णिद्दाणिद्दाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । पयलापयलाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । णिद्दाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा । पयलाए उदीरणद्धा संखेज्जगुणा त्ति | २७२५६ / २७६४ / २७१६ / २७४ / २७१ | । एदासिं पंचण्हमद्धाण समासेण |२७,३४२| एत्तियमेत्तेण पुव्वुत्तभागं घेत्तूण णिद्दुदीरणद्धाए गुणिय पुव्वाणिदणिद्दुदीरणरासिस्सुवरि एक्कदो कदरासिं पक्खित्ते सव्वो णिद्दीरएरारासी णिद्दुदीरगरासी एत्तियो होदि |१३८ / ९५५| ।

पुणो सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारुदीरणद्धा । अवट्ठिदउदीरणद्धा असंखेज्जगुणा |२७| । अप्पदरद्धा संखेज्जगुणा त्ति |२७४| । एदासिं तिण्हमद्धाणं समासेण एत्तिएण | २ / २७५ | पुव्वुत्तणिद्दुदीरणरासिं भागं घेत्तूण लद्धं पुव्वुत्तभुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाहि गुणिदे भुजगारावट्ठिदप्पदररासयो आगच्छंति ।

पुणो एत्थ **सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारुदीरया** त्ति । (पृ० १६२.)

अप्पाबहुगपदेण एत्ता(त्था)णिदभुजगाररासी[सु] गहिदेसु | १३८।३ / ९५५२७५ | । पुणो **अवत्तव्वुदीरया संखेज्जगुणा** त्ति (पृ० १६२) भणिदे णिद्दुदीरगसव्वजीवाणं णिद्दीरणसव्वद्धाए भागे हिदे भागलद्धमेत्ता त्ति वत्तव्वं । तं चेदं | १३८ / ९५५२७ | । एत्थ दुसमयसंचिदभुजगाररासीदो एगसमयसंचिदअवत्तव्वरासी कधं संखेज्जगुणा ? ण एस दोसो, भुजगाररासि आगमणट्ठं णिद्दीरणरासिस्स भागहारत्तेण ठविदउक्कस्सभागहारावट्ठिद-

अप्पदरद्धाणं समासदो अवत्तव्वरासिआगमणट्ठं णिद्दुदीरगरासिस्स भुजगारत्तणेण ट्ठविदजहण्ण-णिद्दुदीरणद्धाए संखेज्जगुणहीणत्तादो। कुदो एवं घेप्पदे ? अवत्तव्वरासिस्स उक्कस्सभाव-पदुप्पायणट्ठं अवट्ठिदपदरासीणं उक्कस्सभावपदुप्पायणट्ठं च। एवं च संते अवत्तव्वपुव्वभुज-गाररासी किण्ण घेप्पदे ? ण, सव्वे अवत्तव्वं करेंतजीवा भुजगारं चेव कुणंति त्ति णियमाभावादो। एवं चेव घेप्पदि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेवप्पाबहुगादो।

(पृ० १६२)

पुणो उवरिम-दो-पदाणि सुगमाणि।

एवमसादमरदि-सोगाणं वत्तव्वं। णवरि एत्थ सादासादाणं उदीरणद्धाणाणं भुजगारादि-पदाणं उदीरणद्धाणाणं च कमेणेसा संदिट्ठी

२७४	२७	४
२०	२७	
	२	

। सेसे किरियं जाणिय वत्तव्वं।

पुणो **इत्थि-पुरिस-वेदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरगा** (पृ० १६२) त्ति उत्ते संखेज्जयस्साउगदेवित्थि-पुरिसवेदरासीओ संखेज्जवस्साउगब्भंतरउवक्कमणकालेणोवट्टिदे इत्थि-पुरिसवेदेसुप्पज्जमाणरासीयो आगच्छंति। पुणो एदासु इत्थिवेदेहिंतो इत्थिवेदेसुप्पज्जमाण-पुरिसवेदेहिंतो पुरिसवेदेसुप्पज्जमाणा अवत्तव्वं ण करेंति त्ति तेसिमवणयणट्ठं किंचूणीकदासु इत्थि-पुरिसवेदवत्तव्वुदीरगरासीयो होंति। तेसिं पमाणमेदं

=३२	=४६
४६	४६
५७	५७
३३	३३
२७	२७

।

तदो **भुजगारुदीरगा संखेज्जगुणा**। पृ० १६३.

तं कुदो ? इत्थि-पुरिसवेदरासिं भुजगारावट्ठिदप्पदरद्धेहि कमेण वेसमयावलियाए असंखेज्जदिभागं, तत्तो संखेज्जगुणमेत्ताणमेत्तियाणं

२४
२
२

पक्खेवसंखेवेहि भजिय सग-संगसंभवेहि गुणिदमेत्ता त्ति गेण्हिदव्वं। कथं भुजगारादीणमेवमद्धाणाणि होंति त्ति णव्वदे ? मज्झिमद्धाणाणं विवक्खादो उच्चागोदादि उवरि उच्चमाण-पंयडीणमप्पाबहुगण्णहाणुववत्तीदो च णव्वदे। अहवा, एइंदिय-विगलिंदिएसु अद्धाक्खएण संकिलेसक्खवणविग्गहे वा सरीरगहिदे च वड्ढदि त्ति भुजगारसंचयकालो चत्तारिसमया होंति चउग्गुणं वत्तव्वं।

पुणो **णिरयगदिणामाए सव्वत्थोवा भुजगारुदीरया**। पृ० १६३.

कुदो ? भुजगारट्ठिदिबंधया पंचिंदियपज्जत्ततिरिक्खेहिंतो णिरएसुप्पण्णपढमावलियमेत्त-काले ट्ठिदजीवस्स दोसमयसंचयगहणादो।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६३.

त्ति भणिदे भुजगारावट्ठिदप्पदरट्ठिदिबंधयाणं पंचिंदियतिरिक्खजीवाणमेत्तु(त्थु)प्पण्णाणं गहणादो।

अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा त्ति (पृ० १६३) उत्ते आवलियकालब्भंतरसंचय-गहणादो।

अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६३.

कुदो ? सव्वणेरइयरासिगहणादो। तं पि कुदो णव्वदे ? णिरएसुप्पज्जमाणतिरिक्खाणं वेसमए गालिय संखेज्जावलियमेत्तभुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाणं गहणादो। णेरइएसु सत्थाणे चेव णिरयगदिणामाए भुजगारावट्ठिदप्पदररासीओ किं ण गहिदाओ ? ण, णेरइएसु णिरयगदि-णामाए वंधाभावेण भुजगारावट्ठिदप्पदरपदाणं संभवाभावादो।

पुणो **तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए सव्वत्थोवा भुजगारुदीरगे त्ति** उत्तं। पृ० १६३.

कुदो ? तिरिक्खभुजगाररासीए सगाउएण खंडिदेयखंडस्स तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेव-णेरइय-मणुस्सेहि सादिरेयस्स गहणादो ।

अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६३.

कुदो ? अवट्ठिदट्ठिदिबंधगतिरिक्खरासिं सगाउएण खंडिदेयखंडस्स सादिरेयस्स गहणादो ।

अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६३.

कुदो ? भुजगारावट्ठिदप्पदररासिसमूहं सगाउएण खंडिय विसेसाहियकयमेत्तत्तादो ।

अप्पदरउदीरया विसेसाहिया । पृ० १६३.

कुदो ? अप्पदरट्ठिदिबंधयतिरिक्खरासिं सगाउएण खंडिय दोसंचयगहणट्ठं दुगुणि(य)-सादिरेयकयपमाणत्तादो । कुदो सादिरेयत्तं ? दुगुणिदरासिस्स गुणगारभूदअप्पदरद्धं गुणिय हेट्ठिमभागहारभूदभुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाणं समूहेणोवट्टिदे किंचूणदोरूवमेत्तगुणगारुवलंभादो ।

पुणो **उवघाद-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-तस-बादर-सुहुम - पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-सुहदुहपंचय-उच्चागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । पृ० १६३.**

एत्थ सुहदुहपंचए त्ति उत्ते सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्तीणं गहणं कायव्वं । एदेसिं पयडीणमवत्तव्वउदीरयाणं कुदो त्थोवत्तं ? सग-सगउदीरणाए सुलहकालेण भजिदसग-सगुदीरण-पाओग्गजीवगहणादो । णवरि आदावुज्जोव-दोविहायगदि-सुहदुहपंचय-उच्चागोदाणं सग-सगुवक्कमणकालेण खंडिदसग-सगरासिमेत्तं होदि ।

(पृ० १६४)

पुणो उवरिमभुजगारादिपदाणि सुगमाणि । णवरि आदावुज्जोवादीणं भुजगारादिपदाणं अद्धाओ कमेण वेसमयाओ, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ, तत्तो संखेज्जगुणमेत्ताओ च गहेयव्वाओ; अण्णहा एदेसिं पयडीणं णिरयगदिभंगप्पसंगादो ।

पुणो जत्थ जत्थ णामपयडीणमवत्तव्वउदीरगादो भुजगारुदीरगा संखेज्जगुणा त्ति उत्तं तत्थ तत्थ असंखेज्जमेत्ताणुपुव्वीपयडीसु संखेज्जसहस्समेत्तपयडीयो कमेण भुजगारट्ठिदिं बंधाविय विवक्खिदपयडीए उवरि बंधावलियाधि(दि)क्कंतं जहाकमेण संकामिय संकमणावलियाधि(दि)-क्कंतं कमेणुदीरेमाणस्स संखेज्जसहस्समेत्ता गुणगारभूदभुजगारसमया लब्भंति ।

(पृ० १६४)

पुणो पदणिक्खेवाणुगमो सुगमो । वड्ढिअणियोगद्दारस्स तेरसअणियोगद्दारसहगदस्स परूवणा सुगमा । णवरि तत्थप्पाबहुगम्मि अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—

पंचणाणावरणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया (पृ० १६४.) त्ति उत्तं ।

तं कथं ? खवगसेढीए असंखेज्जगुणहाणिउदीरणं करेंतजीवाणमट्ठसमयाणं गहणादो ।

पुणो **संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६४.**

कुदो ? सण्णिपंचिंदिएहिंतो आगंतूण एइंदिय-विगलिंदिय-असण्णिपंचिंदिएसु चउ-पंचिंदिय (?) तत्थ संखेज्जवारं संखेज्जगुणं करेंति त्ति । एदं पि कुदो णव्वदे ? उच्चदे — सण्णि-

संखेज्जवस्साउगउवक्कमणकालेण संखेज्जवस्साउगसण्णिजीवे खंडिदेगखंडं सादिरेयं तत्तो निस्सरंतजीवा होंति, तस्स असंखेज्जा भागा इगि-विगलिंदिय-असण्णीसुप्पज्जमाणजीवा होंति। पुणो उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि तिविहसरूवट्ठिदिखंडयपडिबद्धअंतोमुहुत्तसंचयगहणट्ठं तत्थतणउवक्कमणकालेण उप्पज्जमाणजीवा गुणिज्जंति।

किमट्ठमंतोमुहुत्तकालब्भंतरे चेव संचयं घेप्पदि ? ण, तप्पाओग्गसण्णिपंचिंदियपज्जत्तसत्थाणट्ठिदमिच्छाइट्ठि उक्कस्सट्ठिदिबंधेणुप्पण्णुक्कस्सट्ठिदिसंतं तिविहसरूवट्ठिदिखंडयघादेणंतोमुहुत्तकालेण तप्पाओग्गंतोकोडाकोडिमेत्तं जहण्णट्ठिदिसंतं ट्ठवेदि। पुणो तं जहण्णमंतोकोडाकोडिट्ठिदिसंतं तेत्तिएण कालेण ट्ठिदिबंधउड्ढीए उक्कस्सट्ठिदिसंतं करेदि त्ति आइरियाणमुवदेसो अत्थि। तदो सत्थाणसण्णिजीवेसु जहा तिविहसरूवेण ट्ठिदिखंडयघादणियमो अत्थि तहा एइंदियादिसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तमेत्तकालब्भंतरे संभवंति त्ति आइरियाणमभिप्पायो जाणाविय तदो तप्पाओग्गुक्कस्सट्ठिदिसंतं संखेज्जगुणहाणिखंडयघादेण पहाणीभूदेण अंतोमुहुत्तकालेण अंतोकोडाकोडिट्ठिदिसंतकरणं संभवदि त्ति अंतोमुहुत्तकालब्भंतरसंचयगहणं कदं।

पुणो सव्वत्थोवा संखेज्जगुणहाणिखंडयसलागाओ, संखेज्जभागहाणिखंडयसलागाओ संखेज्जगुणाओ, असंखेज्जभागहाणिखंडयसलागाओ संखेज्जगुणाओ त्ति एदासिं तिण्हं सलागाणं पक्खेवे संखेवेण पुव्वुत्तंतोमुहुत्तसूचिदरासिभागं घेत्तूण लद्धं संखेज्जगुणहाणिखंडयसलागाहि गुणिदे संखेज्जगुणहाणिउदीरगरासी होदि। तस्सेसा संदिट्ठी | २७ १ / ४६५५२७७२१२७ |। णवरि एगुवक्कमणखंडयकालपमाणं आवलियं सगच्छेदणएहि खंडिय- मेत्तो त्ति घेत्तव्व। अहवा इगि-विगलिंदिय-असण्णीसु सत्थाणेण संखेज्जगुहाणी णत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण सण्णिपंचिंदियपज्जत्तरासिभुजगारावट्ठिदअप्पदरद्धाणं समूहेहिं भजिय सग-सगद्धाहि गुणिय तत्थ भुजगाररासिं संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढीणं वा ट्ठाणं समूहेण भजिय तत्थ सग-सगवारेहि गुणिय तत्थ संखेज्जगुणवड्ढीहिं संखेज्जगुणहाणीयो सरिसा त्ति एदं वड्ढि-हाणि त्ति ट्ठविय पुणो उक्कीरणद्धा विसेसब्भंतरउवक्कमणकालेहि गुणिदे संखेज्जगुणहाणिउदीरगा होंति। तस्स ट्ठवणा | =२२७२ / ४६५२७५२१ |।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरगा संखेज्जगुणा। पृ० १६४.

कुदो ? बि-ति-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं सग-सगपाओग्गुक्कस्सट्ठिदिबंधसमाणट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जभागहाणिखंडे घादेण(खंडयघादेण)पुव्वं व अंतोमुहुत्तकालेण सग-सगपाओग्गजहण्णट्ठिदिसंताणि करेंति। पुणो तं जहण्णट्ठिदिसंतं पुव्वं व अंतोमुहुत्तकालेण तप्पाओग्गट्ठिदिबंधउड्ढीए उक्कस्सट्ठिदिसंतमुप्पायंति। एत्थ वि तण्णियमो अत्थि, पुव्वं व तसपज्जत्तरासि सगुवक्कमणकालेण खंडिदेगखंडमेत्तं एइंदिएसुप्पज्जिय तत्थ वि पुव्विल्लखंडयघादणियमो संभवदि त्ति। तदो संखेज्जभागहाणिखंडयघादेण तत्थ बि-ति-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णीणं पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं होदि। तत्तो हेट्ठा उव्वेलणपारंभो होदि। पुणो तक्कालब्भंतरुवक्कमणकालेण तक्कालसंचयागमणट्ठं गुणिय पुणो जहण्णुक्कस्सुक्कीरणद्धाविसेसब्भंतरुवक्कमणकालेण भजिदे संखेज्जभागहाणिउदीरया होंति। तेसिं संदिट्ठी— | =२२७ / ४२७७७५२७ / ५ |। अथवा संखेज्जगुणहाणिउदीरयाणं व संखेज्जभागहाणिउदीरयाणं च सत्थाणे चेव वत्तव्वं। तस्स ट्ठवणा | =२२७ / ४२७७५ / ५ |।

पुणो संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६४.

कुदो ? उच्चदे— तसरासिमंतोमुहुत्तब्भंतरुवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडमेत्ता भरंतजीवा होंति। तेसिं पि असंखेज्जा भागा एइंदिएसुप्पज्जिय तत्तं(त्थं)तोमुहुत्ते काले गदे हदसमुप्पत्तियं पारंभिय ट्ठिदिं घादिज्जमाणे जम्मि जम्मि घादिदसेससंतेण सह तसेसुप्पण्णे संते असंखेज्जभागवड्ढि-विसओ होदि। तम्मि तण्णिबंधणट्ठिदीणं घादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालो त्थोवो। पुणो जम्मि जम्मि घादिदसेसट्ठिदीहि सह णिस्सरिय तसेसुप्पण्णेसु संखेज्जभागवड्ढिट्ठिदी होदि, तम्मि तण्णिबंधण-ट्ठिदिघादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालो तत्तो संखेज्जगुणो होदि। पुणो जम्मि जम्मि घादिदसेस-ट्ठिदीहि सह पुव्वं व णिस्सरिय तसेसुप्पण्णे संते संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणं होदि, तम्मि तण्णिबंधण-ट्ठिदिघादेणुप्पण्णहदसमुप्पत्तियकालं पच्छिल्लाणंतरकालादो विसेसहीणं होदि।

पुणो अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे जदि आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तुवक्कमणकालं लब्भदि तो पुव्वुत्ततिविहहदसमुप्पत्तियकाले किं लभामो त्ति तेरासिए कदे तिप्पयाराणमुवक्कमणकालो कमेण लब्भदि। पुणो ताणि तिण्णि वि कालाणि एगपंतीए रचिय पुणो वि तत्थ सग-सगपंतीए पमाणं पुहपुह ट्ठविय जिणदिट्ठसंखेज्जरूवेहि खंडिदे सग-सगेगगुणहाणीणं अद्धाणमुप्पज्जदि। पुणो पुव्विल्ल-समयपंतीणं पढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमयो त्ति ताव जीवाणमवट्ठिदकमो उच्चदे। तं जहा— तसजीवेहिंतो एइंदिएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तकाले गदे हदसमुप्पत्तियं पारभदि। पारद्धे संते तं दोगुणहाणीए खंडिदेसु विसेसो आगच्छदि। तं दोगुणहाणीए गुणिदे पढमसमयट्ठिदजीवा होंति। तं पडिरासिं ट्ठविय विसेसे अवणिदे बिदियसमयणिसेयं होदि। पुणो तं पडिरासिं ट्ठविय एगविसेसमवणिदे तदियसमयणिसेयं होदि। एवं विसेसहीणं विसेसहीणं होदूण कमेण रचिद-समयं पडि णिसेयो(या) आगच्छंति जाव एगगुणहाणिमेत्तद्धाणेसु रचिदसमएसु गदो त्ति। पुणो पढमणिसेयादो एगमद्धं होदि एवमुवरुवरि जाणिय वत्तव्वं जाव संखेज्जभागवड्ढिउदीरणसमयहद-समुप्पत्तियकालपढमसमयो त्ति। तमादिमणिसेयादो संखेज्जगुणहीणं होदि। पुणो तं तत्थतण-दोगुणहाणीए खंडिय विसेसमुप्पाइय पुणो दोगुणहाणीए गुणिय तत्थतणपढमणिसेयमुप्पाइय पुणो तत्तो उवरिमणिसेयाणं रचिदसमयं पडि पुव्वं व विसेसहीणविसेसहीणकमेण णेदव्वं जाव संखेज्जगुणवड्ढिविसयहदसमुप्पत्तियकालपढमणिसेयो त्ति। एदं णिसेयं संखेज्जभागवड्ढिणिबंधण-हदसमुप्पत्तियकालपढमणिसेयादो संखेज्जगुणहीणं होदि।

पुणो एत्थ वि दोगुणहाणीयो ट्ठविय पुव्वं वरचिदसमएसु णिसेयाणि उप्पाइय णेदव्वाणि जाव हदसमुप्पत्तिएण णिप्पण्णकालचरिमसमयादो अणंतरस्स अणुव्वेल्लिज्जमाणकालपढमसमयो त्ति। पुणो एदं णिसेयं पुव्वं व पुव्विल्लपढमसमयणिसेयादो संखेज्जगुणहीणो त्ति वत्तव्वं। पुणो एवं ट्ठिदितिप्पयाराणं हदसमुप्पत्तियकालपडिबद्धणिसेएसु सव्वेसु वि पुह पुह एगेगविसेसा एइंदिएहिंतो णिस्सरिय तसेसुप्पज्जंति त्ति। तदो ताणि तिणि वि हदसमुप्पत्तियकालपडिबंधा-(बद्धा)णि पुह पुह मेलाविदे संखेज्जगुणहीणकमेणेइंदियादो णिस्सरंति। ताणि संदिट्ठीए एत्तियाणि होंति

=	=	
४३	४३७	४३७७
३	३	३

।

पुणो तिविहेसु हदसमुप्पत्तियकालपडिबद्धणिसेएसु समयं पडि समयं पडि पुह पुह आदिणिसेयं पविसरंति। चरिमणिसेया पुण पुव्विल्ला णिस्सरियूण गच्छंति, अण्णा अपुव्वा पविसंति। तदो ते सव्वे मेलाविदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसग-सगपढमणिसेया धुवरूवेण सव्वकालं होंति त्ति

गेण्हियव्वं। कथमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेवप्पाबहुगवयणादो णव्वदे। पुणो एवं ट्ठिदहद-समुप्पत्तियजीवेसु तसेसुप्पण्णेसु संखेज्जगुणवड्ढिं करेंतत्थ जीवा एत्थ होंति त्ति गेण्हियव्वं। तस्ससंदिट्ठी [=४२७७ / ३]।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा [मू० असंखेज्जगुणा]। पृ० १६४.

कुदो ? संखेज्जभागवड्ढिविसयहदसमुप्पत्तियकालम्मि ट्ठिदिपुव्विल्लकमेण वहुधा एइंदियादो अविणट्ठतससंसकारादो पुव्वं व णिस्सरिय तसेसुप्पज्जमाणरासी संखेज्जभावड्ढिं करेंति त्ति गेण्हिदव्वमिदि उत्तं होदि। तं चेत्तियं [२= / ४३७ / ३]।

पुणो उवरिमतिण्णिपदाणि सुगमाणि। अहवा ट्ठिदिखंडयं दुविहपयारं लच्छियूण ट्ठिदतसजीवे एइंदिएसुप्पण्णे मोत्तूण सेसे एइंदिएसु संखेज्जभागहाणी णत्थि त्ति अभिप्पायेण सत्थाणेण सण्णीसु संखेज्जगणहाणिउदीरयाणं संखेज्जभागहाणिउदीरयाणं पमाणं एवं वत्तव्वं। तं जहा— तत्थ सण्णिपंचिंदियपज्जत्तजीवा पहाणा त्ति कट्टु तं रासिं ट्ठविय अवट्ठिदिसंतादो हेट्ठिमट्ठिदिबंधंतसादासादबंधगजीवा(थि)संखसवणिय पुणो भुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाणाणं पक्खेवाणं संखेवेहिं भजिय भुजगारपक्खेवेण गुणिय पुणो वट्टमाणसमए जीवेहिं संकिलेसक्खएण संखेज्जगुणवड्ढिपरिणामपरिणदा ते थोवा, तत्तो संखेज्ज-भावड्ढिउदीरणणिबंधणपरिणामपरिणदा संखेज्जगुणा, तत्तो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणणिबंधण-परिणामपरिणदा ते संखेज्जगुणा होंति। तेहिं पक्खेवसंखेवेहिं भजिय तेहिं चेव पक्खेवेहि गुणिदे सग-सगरासयो आगच्छंति। पुणो तत्थ संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढिउदीरयाणं दुप्पडिरासिं पुह पुह ट्ठविय जहण्णुक्कस्सुक्कीरणद्धाविसेसब्भंतरुवक्कमणकालेण भजिदे दोण्हं हाणिउदीरया होंति। तेसिं ट्ठवणा [=२२ / ४६५२२५२१३७] [२ २ ४ / ४६५२७५२१३७] पुणो संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढिउदीरया। एत्तो उवरि- पुव्वं व वत्तव्वं।

अहवा एत्थतणसंखेज्जगुणवड्ढी संखेज्जभागवड्ढी च घेत्तव्वाओ। उवरिमपदाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि। अहवा वाराणि धरिय आणेदव्वाओ। तं जहा— पुव्वाणिदभुजगाररासिं ठविय पुणो सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणवाराओ, संखेज्जभागवड्ढिउदीरणवारओ संखेज्जगुणाओ, असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणवाराओ संखेज्जगुणाओ इदि। एदेहिं पक्खेव-संखेवेहिं भजिय सग-सग-पक्खेवेहिं गुणिय पुणो संखेज्जगुणहाणि-संखेज्जभागहाणिउदीरया सग-सगवड्ढिउदीरएहिं अणु-सरिसाओ होंति त्ति कारणं। एदेसिं ट्ठवणा एत्तिया [= २ २ / ४६५२७५२१] [= २ २ ४ / ४६५२७५२१]। एत्तो उवरिम-पदाणं किरिया पुव्वं व जाणिय वत्तव्वं।

पुणो णिद्दाए वेदगो ट्ठिदिघादं ण करेदि। (पृ० १६५)

त्ति उत्ते एत्थ ट्ठिदिघादं णाम संखेज्जभागहाणीए णिबंधणट्ठिदीणं संखेज्जगुणहाणीए णिबंधणट्ठिदीणं च घादो ट्ठिदिघादो णाम। ताणि णिद्दोदए णत्थि त्ति उत्तं होदि। किमट्ठं ते तत्थ णत्थि ? पुव्वुत्तदुविहपयारखंडयघादणिबंधणतिव्वविसोहीणं णिद्दोदयेण संभवंति त्ति। पुणो एदं खवगुवसमसेडीए णिद्दाए उदए णत्थि त्ति भणंताभिप्पाएण उत्तं, अण्णहा जहण्णाणुभाग-उदीरणासामित्तेण विरोहप्पसंगादो।

पुणो असंखेज्जभागहाणिणिबंधणट्ठिदिखंडयघादो अत्थि त्ति(तं ?) कुदो णव्वदे ? हदसमु-प्पत्तियं करेंतट्ठिदएइंदिएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेसु णिद्दुदीरणाए पडिसेहा-

भावादो, णिद्दुदीरणाए संभवे संते तत्थ हृदसमुप्पत्तियकिरियपडिसेहाणुवलंभादो च ।

पुणो **ट्ठिदिबंधं बंधदि** । पृ० १६५.

त्ति उत्ते तिव्वसंकिलेसणिबंधणभुजगारप्पदरावट्ठिदट्ठिदिबंधं मोत्तूण सेसपरिणामणिबंधण-भुजगारप्पदरावट्ठिदसरूवट्ठिदिं संतस्स तिविहसरूववड्ढिणिबंधणं णिद्दुदीरणाए संभवदि त्ति उत्तं होदि । तं कुदो णव्वदे ? ण, तेसिं णिबंधणमंदसंकिलेसाणं णिद्दुदीरणाए संभवोवलंभादो । पुणो बज्झमाणट्ठिदिपमाणपरूवणट्ठं वड्ढीणं संभवविहाणपरूवणट्ठं च उत्तरगंथमाह—

पुणो **असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झादो संखेज्जगुणहीणो** त्ति । पृ० १६५.

एदस्सत्थो उच्चदे— असादस्स चउट्ठाणजवमज्झमज्झिमजीवणिसेयट्ठिदट्ठिदीदो संखेज्जगुण-हीणं होदूण ट्ठिदअसादबिट्ठाणियजवमज्झणिबंधणट्ठिदिबंधाणि बंधदि त्ति उत्तं होदि । णवरि एदेण वयणेण असादबिट्ठाणियजवमज्झमज्झिमणिसेयादो हेट्ठा गुणहाणीए असंखेज्जभागमेत्तमोसरियूण ट्ठिदअसादट्ठिदिसंतादो समाणट्ठिदिबंधट्ठिदजीवणिसेयप्पहुडि जाव जवमज्झादो उवरि वि गुणहाणीए असंखेज्जभागमेत्ताणं असादबिट्ठाणजवमज्झट्ठिदीणं बज्झंतरिदो असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढिणिबंधणाणं उवरिमट्ठिदीयो बंधंति । तत्तो उवरिमट्ठिदीयो बंधंतो असंखेज्ज-भागवड्ढिबंधणट्ठिदीयो बंधंति, ण संखेज्जभागवड्ढिणिबंधणट्ठिदीयो बंधदि । कुदो ? तत्तो उवरिमट्ठिदिबंधणिबंधणपरिणामविवेगसहायसुहसरूवणिद्दोदयम्मि ण संभवंति । तत्तो उवरिमट्ठिदिबंधाणि असादस्स णत्थि त्ति णव्वदे ।

एत्थ चोदगो भणदि— असादचउट्ठाणजवमज्झादो हेट्ठिमट्ठाणाणि सागरोवमसदपुधत्त-मेत्ताणि । पुणो तस्स तिट्ठाणजवमज्झस्स हेट्ठुवरिमट्ठाणाणि कमेण सागरोवमपुधत्तं २ चेव । एवं बिट्ठाणियाणं पि । एवं संते एदेसिं समूहं पि सागरोवमसदपुधत्तं चेव होदि । होंतो वि धुवट्ठिदीए संखेज्जभागमेत्ताणि होंति । पुणो ताणि धुवट्ठिदिम्मि संजोइदे सादिरेयं होदि ताणि चेवावणिदे कथं संखेज्जगुणहीणं होदि त्ति ? ण, असादचउट्ठाणजवमज्झादो हेट्ठिमट्ठाणाणि वि इच्छाणिद्देसेण संखेज्जसागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि त्ति गंथकत्ताराभिप्पायेण गहिदत्तादो ।

पुणो **अंतोकोडाकोडीए हेट्ठादो** त्ति । पृ० १६५.

एदमेव संबंधेयव्वं— सादं बंधंतो तप्पाओग्गुक्कस्संतोकोडाकोडीए हेट्ठदो चेव ट्ठिदिबंधं बंधदि, ण उवरिममिदि ।

पुणो **बंधंतो सादस्स तिट्ठाणिय-चउट्ठाणियं ण बंधदि** त्ति । पृ० १६५.

एदस्सत्थो— णिद्दस्सुदीरणाए विवेगविरहिदाए तिव्वविसोही ण संभवदि त्ति एदेण असा-दस्स धुवट्ठिदिसंतादो हेट्ठिमाणि जाणि सादस्स बिट्ठाणियाणं ट्ठिदीयो ताणि ण बंधदि त्ति एदं पि सूचिदं । कधमेदं णव्वदे ? णिद्दोदएण संतस्स हेट्ठिमट्ठिदिबंधकारणविसोहीए(ओ)मिच्छाइट्ठिस्स ण होंति त्ति ।

पुणो **सादस्स दुट्ठाणिया ण(-णि) बज्झदि** । पृ० १६५.

एदस्सत्थो उच्चदे— सादस्स बिट्ठाणियजवमज्झाणि मज्झिमविसोहिणिबंधणतिविहवड्ढि-सरूवेण बज्झदि त्ति उत्तं होदि ।

पुणो **एदं णिद्दाट्ठिदिउदीरणवड्ढिअप्पाबहुगस्स सहाणं (साहणं) भणिदं** । पृ० १६५.

एदं सुगमं । कथमसादस्स ट्ठिदिबंधे असंखेज्जभागवड्ढि संखेज्जभागवड्ढीए बिट्ठाणिय-जवमज्झब्भंतरे चेव सादस्स ट्ठिदिबंधे तिविहसरूववड्ढीए सगबिट्ठाणियजवमज्झब्भंतरे चेव होदि त्ति परूवणादो ।

अप्पाबहुगं । तं जहा— सव्वत्थोवा णिद्दाए संखेज्जभागवड्ढिउदीरया । पृ० १६५.

कुदो ? असादस्स बिट्ठाणियजवमज्झमज्झिमणिसेयादो हेट्ठा उवरिं च गुणहाणीए असंखेज्ज-भागमेत्तणिसेयट्ठिदीसु ट्ठिदणिद्दुदीरयजीवो तस्स सव्वट्ठाणियजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता होदि । तत्थ जदि बिट्ठाणियजवमज्झजीवपमाणं जाणिज्जदि । णवरि एत्थ ताव जवमज्झजीव-पमाणं चेव ण जाणिज्जदि । पुणो तस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवपमाणं सुतरामेव जाणिज्जदि । तं पुणो एत्थुद्देसे सादासादाणं तिण्णं जवमज्झाणं जीवणिसेयरचणं अप्पाबहुगसाहणट्ठं वत्त-इस्सामो । तं जहा—

सव्वत्थोवा सादबंधगा |२७| । असादबंधगद्धा संखेज्जगुणा |२७४| । पुणो एदासिं दोण्हं अद्धाणं पक्खेवसंखेवेणेत्तियमेत्तेण |३७५| सण्णिपंचिंदियपज्जत्तारासिमोवट्टिय अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिय सरिसगुणगार-भागहाराणं अवणयणे कदे सादासादाण बंधरासीयो होंति । तेसिमेसा ट्ठवणा $\frac{=}{४६५५}$ $\frac{=}{४६५५}$ । पुणो एत्थ सव्वत्थोवा असादबिट्ठाणजवमज्झजोवा |१| । तिट्ठाण चउट्ठाण-जीवा संखेज्जगुणा ४ । पुणो एदेसिं दोण्हं पक्खेवसंखेवेणेत्तियमेत्तेण ५ पुव्वाणिद-असाधबंधगरासिमोवट्टिय अप्पप्पणो पक्खेवेहि गुणिदे बिट्ठाणजवमज्झ-तिट्ठाणजवमज्झजीवा होंति । तेसिमेसा ट्ठवणा $\frac{=\ ४}{४६५५५}$ $\frac{=\ ४४}{४६५५५}$ । पुणो एदं तिट्ठाण-चउट्ठाणजवमज्झजीवाणं पमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण खंडेदूणेगखंडं पुह ट्ठविय बहुखंडाणि सरिसवेपुंजे करिय अवणिदेयखंडं पढमपुंजे पक्खित्ते तिट्ठाणजवमज्झजीवपमाणं होदि । बिदियपुंजा(जो)वि चउट्ठाणजवमज्झजीवपमाणं होदि । तेसिं ट्ठवणा $\frac{=\ ४४\ १०}{४६५५५९२}$ $\frac{=\ ४४\ ८}{४६५५५९२}$ ।

पुणो एत्थ ताव बिट्ठाणियजवमज्झजीवाणं जवमज्झागारेण णिसेगरचणं भणिस्सामो । तं जहा— एदे सव्वे वि बिट्ठाणियजवमज्झजीवा जवमज्झमज्झिमणिसेयपमाणेण कदे तिण्णिगुण-हाणिमेत्ता जवमज्झमज्झिमणिसेया होंति त्ति तीहि गुणहाणीहि एदेसिं जीवाणं भागे हिदे जव-मज्झमज्झिमजीवणिसेयपमाणं होइ । पुणो जवमज्झहेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्त-रासिणा भागे हिदे जवमज्झजहण्णट्ठिदिपडिबद्धजीवपमाणं होइ । पुणो गुणहाणिं विरलिय जवमज्झजहण्णट्ठिदिपडिबद्धजीवपमाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगविसेसपमाणं पावदि । तत्थ पढमरूवद(ध)रिदं घेत्तूण पडिरासिदजवमज्झजहण्णट्ठाणजीवपमाणम्हि पक्खित्ते बिदियट्ठिदिपडिबद्धट्ठाणजीवपमाणं होदि । तं पि पडिरासिय बिदियरूवधरिदे पक्खित्ते तदिय-ट्ठाणजीवपमाणं होदि । एवमुप्पण्णुप्पण्णरासिं पडिरासिं करिय तदियादिरूवधरिदाणि पक्खिविय णेदव्वं जाव सयलरूवधरिदाणि णिट्ठिदाणि त्ति । एवं कदे पढमगुणहाणिं वोलाविय बिदियगुणहाणिआदिणिसेगो त्ति रचणा जादा । पुणो तिस्से चेव अवट्ठिदविरलणाए बिदिय-गुणहाणिपढमणिसेयपमाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बिदियगुणहाणिपडिबद्धपक्खेव-पमाणं पढमगुण[हाणि]पक्खेवपमाणादो दुगुणमेत्तं होदूण पावदि । तदो बिदियगुणहाणिपढम-णिसेयं पडिरासिय विरलणाए पढमरूवधरिदं पक्खित्ते बिदियगुणहाणिबिदियणिसेयपमाणं पावदि । तं पि पडिरासिय बिदियरूपधरिदे पक्खित्ते तदियणिसेयं होदि । एवमुप्पण्णुप्पण्णणिसेगे पडिरासिय तदियादिसव्वविरलणरूवधरिदपक्खेवरूवाणि जहाकमेण पक्खित्ते बिदियगुणहाणिं वोलियूण तदियगुणहाणिपढमणिसेया त्ति सव्वणिसेगाणं रचणा समुप्पण्णा भवदि । पुणो एदेणु-वायेण उवरिमसव्वगुणहाणीणं णिसेयरचणा अव्वामोहेण कायव्वा जाव जवमज्झमज्झिमणिसेगं पत्ता त्ति ।

पुणो जवमज्झादो उवरि णिसेगरचणे कीरमाणे दोगुणहाणीओ विरलिय जवमज्झमज्झिम-

णिसेगस्स समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि जवमज्झउवरिमपढमगुणहाणिपक्खेवं पावदि । पुणो जवमज्झमज्झिमणिसेगं पडिरासिय विरलणपढमरूवधरिदे अवणिदे तदणंतर-उवरिमणिसेगो होइ । तं पि पडिरासिय विरलणबिदियरूवधरिदे अवणिदे तदियणिसेगो होइ । एवमुप्पण्णुप्पण्णरासिं पडिरासिय विरलणतदियादिरूवधरिदाणि अवणेदव्वाणि जाव विरलणाए अद्धं गदं ति । ताहे जवमज्झउवरिमपढमगुणहाणिपढमणिसेगो उप्पण्णो । पुणो गुणहाणिमेत्तउव्व-रिदविरलणाए उवरिं ट्ठिदरूवाणि अच्छिय अणादेयविरलणरूवेसु दिण्णेसु सव्वविरलणाए जव-मज्झपक्खेवस्स अद्धपमाणं पावदि ।

पुणो बिदियगुणहाणिपढमणिसेयं पडिरासिय विरलणाए पढमरूवधरिदे अवणिदे बिदियगुणहाणिबिदियणिसेगो उप्पज्जेज्ज । तं पि पडिरासिय विरलणबिदियरूवधरिदे (अवणिदे) तदियणिसेगो होइ । एवमुप्पण्णुप्पण्णरासिं पडिरासिय तदियादिविरलणारूवधरि-दाणि अवणेदव्वाणि जाव विरलणाए अद्धमेत्तं गदा त्ति । ताहे बिदियगुणहाणिं वोलियूण तदिय-गुणहाणीए पढमणिसेगो उप्पज्जदि । एवं तदियगुणहाणिप्पहुडि जाव चरिमगुणहाणि त्ति उवरिमसव्वगुणहाणीणं णिसेगरचणा जाणिदूण कायव्वा । तदो तिट्ठाणिय-चउट्ठाणियजवमज्झाणं पि एदेण कमेण अप्पप्पणो पडिबद्धजीवरासिं णिरुंभिय णिसेगरचणा कायव्वा ।

सादस्स वि एवं चेव जवमज्झणिसेगपरूवणा कायव्वा । णवरि चउट्ठाणिय-तिट्ठाणिय-बिट्ठाणियजवमज्झसरूवेण उवरुवरि परूवणा कयव्वा । जीवरासिविभंजणमेवं कायव्वं । तं जहा— सव्वत्थोवा सादस्स चउट्ठाणबंधया जीवा |१| । तिट्ठाणबंधया जीवा संखेज्जसंखेज्जगुणा |४| । बिट्ठाणबंधया जीवा संखेज्जगुणा |१६| । एदेसिं तिण्हं पक्खेवाणं संखेवेण सादबंधगरासिमोव-ट्टिय लद्धमप्पप्पणो पक्खेवेहिं गुणिदे जहाकमेण चउट्टाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणबंध[य]जीवा होंति । एदेसिं तिण्हं पि जवमज्झजीवाणं जवमज्झागारेण णिसेगरचणं जहा असादस्स परूविदं तहा वत्तव्वं । पुणो पच्छा सादासादपडिबद्धछण्णं जवमज्झाणं संदिट्ठियादिरचणं सव्वं कालविहाणम्मि उत्तकमेण वत्तव्वं ।

पुणो एवमाणिदसादबिट्ठाणियजवमज्झजीवरासिं पुध ट्ठविय असादबिट्ठाणियजीवरासिं तिण्णिगुणहाणीहिमोवट्टिदे जवमज्झमज्झिमजीवणिसेयपमाणं होदि । एदम्हादो हेट्ठा उवरि च गुणहाणीए असंखेज्जभागमेत्तजीवणिसेगाणमागमणट्ठं गुणहाणीए असंखेज्जदिभागेण किंचू-णेण जवमज्झमज्झिमजीवणिसेगं गुणिदे एत्थतणणिदुदीरयभुजगारप्पदरावट्ठिदरासिपमाणं होदि । तस्सेसा संदिट्ठी $\frac{४}{४६५५५३३}$ । पुणो सव्वत्थोवा भुजगारुदीरणद्धा |२| । अवट्ठिदउदीरणद्धा असंखेज्जगुणा |२७| । अप्पदरुदीरणद्धा संखेज्जगुणात्ति |२७४| । एदासिं तिण्हमद्धाणं पक्खेव-संखेवेणेत्तियमेत्तेण |२७५| । पुव्वाणिदरासिं भागं घेत्तूण अप्पप्पणो पक्खेहिंगुणिदे भुजगारा-वट्ठिदप्पदररासयो हवंति । तेसिमेसा ट्ठवणा $\frac{= ४}{४६५५५३२}$ $\frac{२२}{२२५}$ $\frac{= २७ ४}{४६५५५३०}$ $\frac{२}{२७५}$ $\frac{= २७४४}{४६५५५३३}$ $\frac{२}{२७५}$ ।

पुणो भुजगाररासिं ठविय तस्स सव्वत्थोवाओ संखेज्जभागवड्ढिउदीरणवाराओ । संखेज्जभागवड्ढिउदीरणवारा[ओ]संखेज्जगुण(णा)ओ |४| । एदेसिं पक्खेवसंखेवेण भागं घेत्तूण लद्धं दुप्पडिरासिं करिय अप्पप्पणो पक्खेवेहिं गुणिदे तत्थेगभागो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया होंति । तेणेदे उवरि उच्चमाणअप्पाबहुगपदेहिंतो थोवो त्ति सुभणिदं । तेसिं पमाणमेदं $\frac{= ४}{४६५५५३२}$ $\frac{२२}{२७५५}$ ।

पुणो सव्वत्थोवा भुजगारबंधगद्धा |२|। अवट्ठिद० |२७|। अप्पदर० |४/२७|। एदेसिं तिण्णं पक्खेव-संखेवेणेत्तियमेत्तेण |=/२७५| तस्स पुह ट्ठविदरासिस्स भागं घेत्तूण लद्धमप्पणो पक्खेवद्धाहिं गुणिदे भुजगारादिरासयो होंति। तेसिमेसा ट्ठवणा |= १६ २२/४६५५२१२७५|२७ १६ २०/४६५५२१२७५|=२२४२६२२/४६५५२१२७५|। पुणो एत्थतणभुजगाररासिं तप्पाओग्गं(ग्ग-) असंखेज्ज-रूवेहिं खंडिदे वहुखंडाणि संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया होंति। कुदो? मंदविसोहिणा जादत्तादो। तेसिं संदिट्ठी |= ५ १६२२०/४६४५२१२७५६| पुणो सेसेगखंडं पि संखेज्जरूवेहि खंडिय तस्स बहुखंडाणि संखेज्ज-भागवड्ढि- उदीरया होंति। सेसेगखंडं पि असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया होंति। कथमेदेसिं थोवत्तं? ण, णिद्दोदएण सुहसरूवपरिणयजीवेहि सादविट्ठाणियजवमज्झट्ठिदीयो बंधमाणेहिं परिणदपरिणामा जेण मंदविसोहीयो भणंति तेण कारणेण सादस्स तिट्ठाण-चउट्ठाणाणि णिद्दोदएण बज्झंति, तेसिं तिव्वविसोहीए बज्झमाणत्तादो। अदो चेव कारणादो संखेज्जगुण-वड्ढिपाओग्गउवरिममंदविसोहीहिंतो हेट्ठिमसुद्ध-सुद्धतरपरिणामाणबंधणाणं दो वड्ढीयो करेंत-जीवाणं अदीव त्थोवत्तं जादं। कथमेदं णव्वदे? अप्पाबहुगसाहणपरूवणादो अप्पाबहुगादो च। तेसिं दोण्हं पि संदिट्ठी |= १६ २ २ ४/४६५५२१२७५९५|= १६ २२/४४५५२१२७५९५|।

एदमणेणावहारिय अप्पाबहुगं(ग)सुत्ता[व]यारो भणदि। तं जहा—

सव्वत्थोवा संखेज्जभागवड्ढिउदीरया। संखेज्जगुणवा(व)ड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६५.

सुगमं। अण्णत्थ सव्वत्थ वि संखेज्जभागवड्ढिउदीरएहिंतो संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणहीणा त्ति उत्तं। कथमेत्थ तेहिंतो असंखेज्जगुणा जादा? ण, सुहसरूवणिद्दोदय-सहगदवंधजोग्गविसोहिपरिणामेसु परिणमिय साद(दं) बंधमाणाणं गहणादो।

(पृ० १६५)

पुणो उवरिमअसंखेज्जभागवड्ढि-अवत्तव्व-अवट्ठिदप्पदरादीणं उदीरणप्पावहुगपदाणि सुगमाणि।

पुणो **मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। पृ० १६६.**

कुदो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो। तं कथं णव्वदे? आवलि० असंखेज्ज-भागमेत्तअप्पणो उवक्कमणकालेहिं उववट्ठिद(ओवट्टिद)सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदरासीणं समूहस्स पमत्तसंजदरासीए संखेज्जदिभागाहियस्स सह गहणादो।

पुणो **संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६६.**

कुदो? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं सत्थाणेण ट्ठिदाणं संखेज्जगुणहाणिं करेंताणं इह गहणादो। तं कधं? सण्णिपंचिंदियरासिं ट्ठविय |४६५| एदं भुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाहि एत्तिय-मेत्ताहिं |२/२७५| भागं घेत्तूण लद्धमप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे भुजगारादिरासयो होंति। तेसिमेसा ट्ठवणा |= २ २/४६५२७५|=२७ २/४६५२७५|=२७४२/४६५२७५|।

पुणो सत्थाणे सण्णिपंचिंदियपज्जत्तजीवाणं संखेज्जगुणहाणिखंडयवाराओ थोवाओ |१|। संखेज्जभागहाणिखंडयवाराओ संखेज्जगुणाओ |४|। असंखेज्जभागहाणिखंडयवाराओ संखेज्ज-

गुणाओ त्ति [१६]। एदासिं तिण्हं वारसलागाणं पक्खेव-संखेवेण पुव्वाणिदभुजगाररासिं भागं घेत्तूण लद्धमप्पप्पणो सलागाहिं गुणिदे तिण्णि वि रासओ होंति। तेसिमेसा ट्ठवणा |= २ २ / ४६५२७५२१ | = २ २ ४ / ४६५२७५२१ | = २ २ २६ / ४६५२७५२१|। पुणो एत्थ संखेज्जगुणहाणिखंडयघादं करेंतजीव(वा) संखेज्जगुणहाणिउदीरयो(या) त्ति घेत्तव्वं। तेसिं पमाणमेदं |= २ २ १ / ४६५२७५२१|। पुणो पदरस्स संखेज्जदिभागमेत्त(त्ता)एस रासी पुव्वुत्तपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तावत्तव्वुदीरगरासीदो असंखेज्जगुणा त्ति णत्थि संदेहो।

पुणो **संखेज्जभागहाणिउदीरया[अ]संखेज्जगुणा**। पृ० १६६.

कुदो? सत्थाणट्ठिदसकसाइयपज्जत्तापज्जत्तरासिम्मि संखज्जभागहाणिं कुणंतजीवाणं पहाणभावेणब्भुवगमादो। तं कथं? भुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाहिं स(सा)मण्णतसरासिं भागं घेत्तूण लद्धमप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे भुजगारादिरासयो होंति। पुणो सव्वत्थोवाओ संखेज्जभागहाणिखंडयसलागाओ [१]। असंखेज्जभागहाणिखंडयवादसलागाओ संखेज्जगुणाओ त्ति [४]। एदासिं सलागाणं पक्खेव-संखेवेण पुव्वाणिदभुजगाररासिं भागं घेत्तूण लद्धमप्पप्पणो सलागाहि गुणिदे संखेज्जभागहाणि-असंखेज्जभागहाणिरासीओ होंति। तेसिमेसा ट्ठवणा |= २ २ / ४२७५५ / ३२ | = २ २ ४ / ४२७५५ / ४३२|। पुणो एत्थ पढमरासि(सी) संखेज्जभागहाणिउदीरगरासिपमाणं होंति त्ति घेत्तव्वं। पुणो एसो रासी पुव्वुत्तसण्णिपज्जत्तरासिस्स असंखेज्जभागमेत्त-संखेज्जगुणहाणिं(णि-)उदीरगरासीदो असंखेज्जगुणो त्ति णत्थि एत्थ संदेहो। जदि एवं घेप्पदि तो णाणावरणादीणं पि एसत्थो किं ण परूविदो? ण, तत्थ वि एसत्थो परूवेदव्वो।

(पृ० १६६)

तदो उवरिमप्पाबहुगपदाणि जाणिय पुव्वं व वत्तव्वाणि।

पुणो **सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया**। पृ० १६६.

कुदो? दंसणमोहक्खवयसंखेज्जजीवगहणादो।

पुणो **अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा**। पृ० १६६.

कुदो? वेदगसम्मत्तस्स ट्ठिदीदो समउत्तरं वद्धमिच्छत्तट्ठिदीए घादेणुप्पण्णसंतट्ठिदीए वा धरिय ट्ठिदजीवाणं सम्मत्ते पडिवण्णे अवट्ठिदउदीरया होंति। तदो तेण सरूवेण सम्मत्तं पडिवज्जमाणाणं असंखेज्जवियप्पाणं असंखेज्जपमाणाणं मज्झे ताव मिच्छत्तमवट्ठिदीए समाणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तट्ठिदीहि सह सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवपमाणं ताव उच्चदे। तं जहा— अंतोमुहुत्तब्भंतरे जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागं उवक्कमणकालं लब्भदि तो असंखे० आवलिय-मेत्तसम्माइट्ठिसंचयकालब्भंतरे किं लभामो त्ति तेरासिएणाणिदावलियाए असंखेज्जदिभागेण वेदगसम्मादिट्ठिरासिं खंडिदे तत्थेगखंडं मिच्छत्तं गच्छमाणजीवपमाणं होदि। ते च मिच्छत्तं गंतूणंतोमुहुत्तकालमुव्वेल्लणाए अप्पाओग्गा होदूण अच्छमाणे कहिं संखेज्जगुणहाणीए कहिं संखेज्जभागहाणीए कहिं असंखेज्जभागहाणीए च ट्ठिदिखंडयाणि अच्छिऊण सम्मत्ते पडिवण्णे तिविहहाणीए सम्मत्तस्स उदीरया होंति। पुणो सत्थाणेण मिच्छाइट्ठिणा तिविहकम्माणं तिविह-हाणीए ट्ठिदिखंडए घादिय सम्मत्ते पडिवण्णे अवट्ठिदउदीरया होंति।

पुणो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ट्ठिदीहिंतो मिच्छत्तट्ठिदिं तिविहसरूवेण वड्ढियूण बंधिय ट्ठिदो संतो सम्मत्ते पडिवण्णे तिविहवड्ढिसरूवेण सम्मत्तस्सुदीरया होंति। एवं अंतोमुहुत्ते काले गदे उव्वेल्लणकिरियं पारभदि। पुणो पारभिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण कालेण पुव्विल्ल-घादिदसेसाणमंतोकोडाकोडिआदिट्ठिदीए उव्वेल्लिज्जंति। तं जहा— पलिदोवमद्धच्छेदणयस्स

असंखेज्जदिभागमेत्तुव्वेल्लणट्ठिदिखंडएण अंतोमुहुत्तद्ध(ब्भ)हिएण ताव सम्मत्तमवट्ठिदिमेव अवट्ठिय अंतोमुहुत्तेण गुणिदे उव्वेल्लणकालो एत्तियो होज्ज | अ २७ |। पुणो एदं उव्वेल्लणखंडयपमाणं | छे २७ | इदि परूवयगंथेण सह विरुज्झदि। | छे २ | पल्लासंखेज्जदिभागमेत्तं उव्वेल्लणखंडयं | प २ | किंतु गंथंतराभिप्पायमिदि परूवेदव्वं।

पुणो एदम्मि काले सम्मत्तादो मिच्छत्तमुवक्कमिय उव्वेल्लिज्जमाणजीवपमाणमाणिज्जंते। तं जहा— अंतोमुहुत्तकाले जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवक्कमणकालो लब्भदि तो पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिएणाणिदे एत्तियमुवक्कमणकालं होदि | अ छे २ २ |। पुणो एदं तेरासिएणेगसमयउवक्कमंतपल्लासंखेज्जदिभागेण गुणिदे एत्तियं होदि | प २२२ | अ छे२२ |। एदमंतोकोडाकोडिमेत्तट्ठिदिवियव्वे(प्पे)हिं भागे हिदे तत्थ लद्धमेत्तामेगेग-ट्ठिदीए ट्ठिदजीवा होंति। ते चेत्तिया | प २२२ | छे २२ |। पुणो एत्तिया चेव मिच्छत्तधुवट्ठिदीए समाणसम्मत्तट्ठिदीए ट्ठिदजीवा होंति। पुणो उव्वेलणकिरिय-मप······ध अंतोमुहुत्तकालेण संचिदमिच्छाइट्ठिजीवा एत्तिया होंति | प २२२ | २७ |। पुणो एदेहिं जीवेहि असुण्णं होदूण ट्ठिदट्ठिदिपमाणं उक्कस्सेण एत्थ संचिदजीव-पमाणमेत्तं होदि। एदमसा[म]ण्णसरूवं चेव। पुणो सरिसट्ठिदीए ट्ठिदजीवा सामण्णा णाम। ते एत्थ णत्थि। पुणो दोसामण्णट्ठिदीए संते सेसा दुरूऊणमसामण्णा ट्ठिदी होदि। पुणो सामण्णट्ठिदीए एगेगुत्तरं कादूण वड्ढावियमसामण्णट्ठिदीयो एगेगहीणं करिय णेदव्वं जाव सामण्णट्ठिदि(दी)तप्पाओग्गु-क्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। ते च केत्तिया? धुवट्ठिदीए ट्ठिदजीवसंखादो थोवमेत्ता होंति। तं कुदो णव्वदे? ण, तत्तु(त्थु)व्वेल्लणट्ठिदजीवसंखादो एत्थतणजीवसंखाए त्थोवत्तादो पुणो तत्थतणट्ठिदिसंताणं बहुत्तुवलंभादो। तदो तत्थतणजीवसंखं अप्पाबहुगेण असंखेज्जरूवेण खंडिद-मेत्तं होंति। पुणो ········ ण ट्ठिदीए ट्ठिदजीवेण सादिरेयं करिय पुणो एदं पुव्वाणिदुवक्कमण-कालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं अवट्ठिदउदीरया होंति। तं चेदं | प २२२ | छे २ २२ |

पुणो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६६.

कुदो? उच्चदे—धुवट्ठिदीदो हेट्ठिमट्ठिदीसु ट्ठिदासेसजीवा मज्झे ट्ठविय तेरासियमेवं कायव्वं-पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालेण जदि हेट्ठिमट्ठिदीसु ट्ठिदजीवपमाणं लब्भदि तो धुवट्ठिदीए असंखेज्जभाग-वड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीणं विसयभूदधुवट्ठिदीए जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेग-खंडस्स उव्वेल्लणकालेण धुवट्ठिदीए अद्धस्स उव्वेल्लणकालेण पुणो धुवट्ठिदीए उव्वेलणकालेण च पुह पुह किं लभामो त्ति तेरासियं काऊण आणिदे सग-सगविसयरासयो आगच्छंति। तेसिं पमाणमेदाणि | प २ ख | अ छे१६ २२ | | प २२२ | अ छे २ २ | | प २२२ | अ छे २२ |। पुणो एदाणि तप्पाओग्गुवक्कमणकालेण पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागेण भागे हिदे सम्मत्तं पडिवज्जमाणतिविहवड्ढि-सरूवेण रासयो होंति। णवरि संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढीणं एत्थ संखेज्जगुणं कायव्वं। तं किमट्ठं? ण, धुवट्ठिदीए अब्भंतरट्ठिदीयो ताओ धरिय धुव-ट्ठिदीए उवरिमट्ठिदिवियप्पाओ अवलंभि(त्रि)य एदेसिं दोण्हं जोइज्जमाणे बहुविसयोवलंभादो, पुणो एत्थ असंखेज्जवड्ढिविसयजीवाणं गहणादो | प २२२ | अ छे २२ | १६२ |।

पुणो संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६६.

कुदो ? एत्थ पुव्वुत्तासंखेज्जगुणवड्ढिविसयजीवगहणादो ।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? पुव्वुत्तरासिगहणादो | प अ ७७ / ३२३ छे २२ / २२ | ।

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जभागच्छेदणेहि उवज्जिद(ओवट्टिद) सम्मत्तपवेसणरासिपमाणत्तादो । पृ० १६६.

तं पि कुदो ? उच्चदे । तं जहा— अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे आवलियं सगच्छेदणएहिं भजिय-मेत्तविवक्खिदसावलियाए असंखेज्जदिभागमुवक्कमणकालं लब्भदि तो असंखेज्जावलिय-मेत्तअसंजदसम्मादिट्ठिरासिस्स संचयकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिएण गुणिय आणिदे एत्तियं होदि |२२ / छे| । पुणो एदेण सम्मत्तरासिं खंडिदे मिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासी आगच्छदि । ते चेत्तिया होदि त्ति |प छे / २२|२| । इदं मिच्छादिट्ठिरासिं भुजगारावट्ठिदप्पदरबंधगद्धासमूहेण भजिय सग-सगपक्खे[वे]-हिं गुणिदे मिच्छत्तस्स तिविहपयारट्ठिदिवड्ढिपरिणदजीवा होंति ।

पुणो एदेहिंतो सम्मत्तं पडिवज्जिय सम्मत्तस्स तिविहट्ठिदिवड्ढिं काऊण किं ण गहिदो ? ण, तहा परिणयजीवाणमदीव दुल्लहत्तादो । तं पि कुदो णव्वदे ? ण, संकिलेसेण परिणमियूण ट्ठिदिवड्ढिं बंधिय तप्परिणयसंकिलेसखयेण पुणो अणंतरमविस्समिय विसोहीए परिणमंताणं अदीव दुल्लहत्तादो । पुणो विसोहिं परिणमिय मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ट्ठिदिखंडय-घादेण घादिज्जमाणजीवा बहुधा होंति । तदो तत्थ भुजगाररासिं संखेज्जगुणवड्ढियादीणं वार-सलागाणं पक्खेव-संखेवेहिं भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिदे सग-सगरासयो आगच्छंति । पुणो तत्थ लद्धसंखेज्जगुणवड्ढीणं अणुसारी संखेज्जगुणहाणिउदीरया होंति । तं रासिं ट्ठविय अणु-व्वेल्लिज्जमाणंतोमुहुत्तकालब्भंतरुवक्कमणकालेणेत्तिएण |२७ / छे| संचयगहणट्ठं गुणिदे एत्तियं होदि |प २२ २७ / छे२३२७५२१छे| ।

पुणो एत्थ सरिसगुणगार-भागहारे अवणिदे एत्तियं होदि त्ति गंथे उत्तं |प / 2२३छे / छे ७| ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मत्तपवेसय-सव्व-रासीणं गहणादो । पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा (मू० असंखेज्जगुणा) । (पृ० १६६)

कुदो ? वेदगसम्मत्तपविट्ठंतोमुहुत्तमुहुत्त(?)कालब्भंतरे विसोहिपरिणामेण संखेज्जवारं संखेज्जभागहाणिं करेंति त्ति । तदो अवत्तव्वुदीरयरासिं ट्ठविय अंतोमुहुत्तब्भंतरुवक्कमणकालेणेत्तिय-मेत्तेण |२७ / छे| गुणिदे एत्तियं होदि |प २७ / 2 २2 छे / छे| ।

पुणो असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६६.

कुदो ? वेदगसम्मत्तुदीरयसव्वजीवगहणादो |प / a| ।

पुणो इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । पृ० १६७.

कुदो ? खवगुवसामगसंखेज्जजीवगहणादो ।

पुणो अवत्तव्वुदीरया असंखे०गुणा । पृ० १६७.

कुदो ? इत्थिवेदसंखेज्जवस्साउगरासिं ठविय संखेज्जवस्साउगब्भंतरुवक्कमणकालेण खंडिदे तत्थेगखंडं संखेज्जवस्साउगइत्थिवेदेसुप्पज्जमाणजीवा होंति। पुणो एदं तिरिक्खित्थिरासिं सगासंखेज्जदिभागेण सादिरेयमप्पणो पमाणेणेगसलागं करिय एदेण पमाणेण पुरिसवेदेणब्भहिय-पंचिंदियपज्जत्तणउंसयवेदरासिसंखेज्जसलागं होदि त्ति एदाणं(सिं) सलागाणं पक्खेव-संखेवेण भागं घेत्तूण संखेज्जसलागाहिं गुणिय असंखेज्जवस्साउगब्भंतरअवत्तव्वइत्थिरासीहिं सादिरेयं करिय पमाणत्तादो। तं चेदं | = ८ / ४६५८११०२२७९ |।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरयं(या) संखेज्जगुणं(णा)। पृ० १६७.

कुदो ? अवत्तव्वुदीरयाणं असंखेज्जाणि भागाणि असण्णीहिंतो देवीसुप्पज्जमाणा होंति। ते चेउप्पण्णसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे संखेज्जवारं संखेज्जगुणवड्ढिं करिय सहिं संखेज्ज-भागवड्ढिं करेंति। पुणो एदेण कमेण संखेज्जभागवड्ढी वि संखेज्जवारं करेंति त्ति। णवरि सण्णि-पंचिंदियपज्जत्तएसु इत्थिवेदरासि(सी)सत्थाणेण संखेज्जभागवड्ढिं करेंता वि राद्धि(अत्थि), ते च थोवा होंति। तदो ते एत्थ पहाणा ण होंति। तदो सादिरेयं करिय घेत्तव्वं। ते चेत्तिया | = ० ८४ / ४६५८११०२७८ |।

पुणो संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कथं सव्वत्थ संखेज्जभागवड्ढिउदीरयादो संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणहीणा होंता ते एत्थ संखेज्जगुणा जादा ? ण, असण्णिपंचिंदियपज्जत्तेहिंतो देवीसुप्पण्णंतोमुहुत्तकालेसु एगवारं संखेज्जभागवड्ढिं करिय बहुवारं संखेज्जगुणवड्ढिं करेंति त्ति पुव्वं उत्तत्तादो। ते च पुण सादिरेयं करिय गेण्हिदव्वं। ते चेत्तियं | = ० ८४४ / ४६५८११०९२७ |।

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? सत्थाणट्ठिदसण्णित्थिवेदरासिं भुजगारावट्ठिदप्पदरबंधगद्धासमूहेण भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिय पुणो तत्थ भुजगाररासिं संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभाग-वड्ढिवाराणं समूहेण भजिय सग-सगवाराणं पक्खेवेहिं गुणिदे सग-सगपडिबद्धवड्ढिउदीरणरासयो आगच्छंति। तत्थ संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढिउदीरयरासओ ठविय अंतोमुहुत्तुक्कीरणद्धाविसे-सब्भंतरुवक्कमणकालेण गुणिदे कमेण संखेज्जगुणहाणि-संखेज्जभागहाणिउदीरया उप्पज्जंति। तं कथं ? विसोहियद्धादो संकिलेसद्धा संखेज्जगुणा। तदो संकिलेसद्धाए तिविहवड्ढीणं संचयं कादूण एगवारेण विसोहिवाराए तिविहहाणीए करेंति त्ति। पुणो तत्थ संखेज्जगुणहाणिउदीरया एत्तिया होंति | = ३२२ २३७ / ४६५३३२७५२१ | पुणो एत्थ भागहारगदविसेसो जाणियव्वो। एत्थावलियपढमवग्गमूल-मुवक्कमणकालं होदि।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? सत्थाणट्ठिदसण्णिपंचिंदियपज्जत्तरासिस्स संखेज्जभागवड्ढिरासिं पुव्वं व ठविय पुव्वं व उवक्कमणकालमाणिय गुणिदेणुप्पण्णेत्तियमेत्तरासिगहणादो | = ३२ २ ०४२७ / ४६५३३२७५२१ |। अहवा, पुव्वुत्तसंखेज्जगुणवड्ढिउदीरयवारादो पुव्वुत्तकमेण संखेज्जगुणहाणिउदीरयवारा संखेज्जगुणा,

तत्तो संखेज्जभागहाणिउदीरणवारा संखेज्जगुणा, असंखेज्जभागहाणिउदीरणवारा संखेज्जगुणा त्ति । एदमत्थपदं धरिय पुव्वं व संखेज्जवस्साउगं च धरिय आणेदव्वं ।

पुणो असंखेज्जभागवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? असंखेज्जभागवड्ढिं बहुवारं करिय सहिं(सइं) संखेज्जभागवड्ढिं संखेज्जवस्साउगेसुप्पण्णंतोमुहुत्तकालम्मि करेंति त्ति घेत्तव्वं । तस्स पमाणमेत्तियं [= ० ३२४४८ / ४६५८११०३३२७९] ।

पुणो अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सव्वित्थिवेदरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो [= ३ २२२२ ७ / ४६५३३२७५] ।

पुणो असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सव्वित्थिवेदरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो [= ३२२२७४ / ४६५३३२७५] ।

पुणो णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया । पृ० १६७.

सुगममेदं ।

संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? सण्णिपंचिंदिएण संखेज्जगुणहाणीए खंडयं अच्छिछयूणेइंदिएसुप्पज्जिय उक्कीरणद्धाविसेसंतोमुहुत्तकालम्मि संचिदत्तादो [= ० २२ २७ / ४६५८११०२७५२१७७७] । अहवा सत्थाणट्ठिदसण्णिपंचिंदियपज्जत्तणवुंसयवेदतिरिक्खेण सव्वविसुद्धेणसंखेज्जगुणहाणिखंडयं घालियूण ट्ठिदजीवाणं गहणं कायव्वं [= ० २२ / ४६५३२४१०७७७पु2२७५२१] ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? संखेज्जवस्साउगपुरुसित्थिवेदगरासिं ट्ठविय संखेज्जवस्साउगब्भंतरुवक्कमणकालेण खंडिदेगखंडस्स सादिरेयअसंखेज्जभागपमाणत्तादो [= १० २१ / ४६५८१०२७७२] ।

पुणो संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६७.

कुदो ? असण्णिपंचिंदिय-बि-ति-चउरिंदियसण्णिपंचिंदिएसु च संखेज्जभागहाणीणं संभवुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे ? एदे पंचविहउत्ततसरासीसु पज्जत्तरासिं भुजगारावट्ठिदप्पदरद्धाहिं आवलियाए असंखेज्जभागपडिबद्धं वा(हिं)पक्खेवसंखेवेहिं भजिय सग-सगद्धाहि गुणिय पुव्वं व आणिदत्तादो [= २२ / ४2५५ / ५] । अहवा तेसिं पज्जत्तापज्जत्तजीवेसु संखेज्जभागहाणिमंतोमुहुत्तद्धाहि पुव्वं व आणिदे एत्तियं होदि [= २२ / ४२७५५ / 2] । णवरि एत्थ भागहारगदविसेसो जाणियव्वो ।

पुणो तिरिक्ख-मणुस्साउगाणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वाणि ।

तत्थ ताव तिरिक्खाउवस्स उच्चदे । तं जहा—तिरिक्खाउवस्स सव्वत्थोवा संखेज्जगुणहाणिउदीरया । कुदो ? संखेज्जगुणहाणिउदीरणाए णिमित्तभूदपरिणामाणमईव दुल्लहत्तादो, पुणो

तेसिं पमाणं सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागत्तादो $\frac{१३}{22}$। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो ? तग्घादकरणपरिणामाणं सुलहत्तुवलंभादो $\frac{१३}{2}$ अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो ? तिरिक्खरासिमंतोमुहुत्तेण खंडिदेगखंडपमाणत्तादो $\frac{१२}{२७}$। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो ? किंचूणतिरिक्खरासिगहणादो $\frac{१३२१}{२७}$। एवं मणुस्साउगस्स जाणिय वत्तव्वं।

पुणो णिरयगदीए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया। पृ० १६७.

कुदो ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्ततिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं णिरएसुप्पज्जमाणाणं चरिमावलियकालब्भंतरे संखेज्जगुणवड्ढीयो बंधिय णिरएसुप्पण्णाणं समयूणपढमावलियकालब्भंतरे संचयगहणादो। कथं थोवत्तं ? ण, सण्णिपंचिंदियपज्जत्ततिरिक्खा संखेज्जगुणवड्ढिं करेंति। तदो सण्णिपंचिंदिएहिंतो उप्पज्जमाणकारणाणुसारी त्थोवा होंति त्ति। ते चेत्तिया होंति

२ प 2२७५ 2९	2 २१2७७७

।

पुणो संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? णेरइएसुप्पण्णपढमसमयप्पहुडि संखेज्जावलियमेत्तकालब्भंतरे सइं संखेज्जगुणहाणिं करिय बहुवारं संखेज्जभागहाणिं करेंति। एवं करेंतेण बहुवा संखेज्जगुणहाणिवारा जादे त्ति। तेसिं ट्ठवणा

२४2७ प 2२७५२१2७७ 2

।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? पुव्वुत्तकमेणेदस्स सुलहत्तुवलंभादो, तत्तु(त्थु)प्पण्णासण्णीणं संखेज्जभागहाणी णत्थि त्ति कारणादो। ते चेत्तिया

२2७४१ प 2२७२५२१2७७ 2

।

संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खाणं संखेज्जभागवड्ढिं ट्ठिदिं बंधिय णिरएसुप्पण्णाणं गहणादो। ते चेत्तिया $\frac{-\ \ २२\ २७}{२७५५2७७}$।

असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६७.

कुदो ? सुलहत्तादो $\frac{-२२२४2७७}{२७५५2७७}$।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ. १६८.

कुदो ? उप्पण्णपढमसमयसव्वजीवाणं गहणादो, ते च अप्पदर-अवट्ठिदपहाणत्तादो एत्तिया $\frac{-2}{2७७}$।

अवट्ठिदउदीरया संखेज्जगुणा। पृ. १६८.

कुदो ? असण्णिपंचिंदियाणं अवट्ठिदबंधगाणं णिरएसुप्पण्णाणमावलियकालब्भंतरे संचिदाणं गहणादो $\frac{-२२२७2७}{२७५2७७}$।

असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६८.

कुदो ? किंचूणसव्वणेरइयरासिग्गहणादो $|-२|$।

(पृ० १६८)

ओरालियसरीरस्सप्पाबहुगपरूवणा सुगमा। णवरि संखेज्जगुणहाणिउदीरगेहिंतो **संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा त्ति** उत्ते सण्णिपंचिंदियकम्मभूमितिरिक्खरासीहिंतो असण्णिपंचिंदियरासीणं असंखेज्जगुणकारणत्तादो होंति त्ति जाणिज्जदि। पुणो देवेसु दुविह-सरूवखंडयं अच्छिय एइंदिएसुप्पण्णाणं घेत्तूण संखेज्जगुणहाणिउदीरगेहिंतो संखेज्जभागहाणि-उदीरया संखेज्जगुणा त्ति किं ण परूविदं ? (ण,)सत्थाणखंडयविवक्खादो, अण्णहा तहा चेव होंति। अहवा तेसिं अही(दी)व थोव[त्त]विवक्खादो वा। सेसाणि सुगमाणि।

पुणो समचउरससंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जभागहाणिउदीरया। पृ० १६९.

कुदो ? खवगे पडुच्च।

[संखेज्ज०]गुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६९.

कुदो ? विगुव्वणमुट्ठावेंतपंचिंदियतिरिक्खाणं असंखेज्जभागमेत्ताणं संखेज्जगुणहाणिखंडय-घादकारणविसुद्धपरिणामेण परिणदाणमेत्थ एत्तियमेत्ताणं चेव उवलंभादो त्ति विप्पण्णंतरे[1] उत्तत्तादो गुरुवदेसादो च [26 प 2]। अथवा, वीससागरोवमट्ठिदिं वंधिय सगसेसणामपयडीहिंतो समचउरससंठा-णम्मि संकामिदे तस्सुक्कस्सट्ठिदिसंतं होदि। तारिससण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं पमाणं ट्ठिदि-भुजगारं तक्खरेंत(?)सण्णिपंचिंदियपज्जत्तजीवरासिं उवक्कमणकालेण खंडिदेगखंडमेत्तट्ठिदिसंकमेंत-जीवसंखं होदि। पुणो एदेहि जीवेहि सगुक्कस्सट्ठिदिवंधादो अहियसंतं लहुं बहुअं च घादेदि त्ति तेसिं ट्ठवणा | = २ २ / ४६५७५२१२७७ |। किमट्ठं सत्थाणवड्ढिमस्सियूण संखेज्जगुणहाणिपरूवणा ण कदा ? ण, तेसिं अही(दी)व दुल्लहत्तादो।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६९.

कुदो ? सत्थाणट्ठिदसण्णिपज्जत्तजीवरासिं समचउरसंठाणट्ठिदिसंतादो भुजगारट्ठिदिवंधं वड्ढिवारेहिं भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिय छस्संठाणाणं समचउरसंठाणादिक्कमेण संखेज्ज-गुणाणं वंधगद्धासमूहेण भजिय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिदे तत्थ लद्धं समचउरसंठाणाणं एत्तियं संखं होदि | = २ २ ४ / ४६५२७५२११३६५ |। किमट्ठं परपयडीणं पलिच्छेदणेण संखेज्जभागवड्ढी ण कीरदे ? ण, तेसि अदीव थोवत्तादो।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० १६९.

कुदो ? देवेसुप्पण्णसव्वजीवाणं सादिरेयमेत्ताणं गहणादो | = ० / ४६५८११०२७७ |।

संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। पृ० १६९.

कुदो ? असण्णिपच्छायदसण्णिजीवेसुप्पण्णपढमसमयप्पहुडि संखेज्जवारं संखेज्जगुण-वड्ढिउदीरणं करेंतजीवा होंति। तेसिं ट्ठवणा | = ४ / ४६५८११०२७७ |।

पुणो संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा।

पुव्वुत्तजीवा चेव सइं संखेज्जगुणवड्ढिं करिय असइं संखेज्जभागहाणिं करेंति त्ति तेसिं ट्ठवणा | = ० ४४ / ४६५८११०२७७ |।

---

1 मप्रतितः संशोधितोऽयं पाठः, प्रतौ तु 'उप्पण्णंतरे' इति पाठोऽस्ति।

असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं | ० ४४ / ४६५८११०2७७ / ० | । पुणो उवरिमपदाणि सुगमाणि । पुणो **णग्गोद(ह)परिमंडल-सरीरसंठाणस्स सव्वत्थोवा [अ]संखेज्जगुणहाणिउदीरया । पृ० १६९.**

सुगममेदं ।

अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तकम्मभूमियजीवाणं असण्णिपंचिंदियजीवाणं अण्णसंठाणट्ठियाणं एइंदिय-विगलिंदियाणं णग्गोदपरिमंडलसंठाणेसु सण्णि-असण्णीसुप्पण्णाणं पढमसमए गहणादो । तं चेसा | = ४६५३२४१०७७७ प2७७ / ० | । एत्थ सण्णिजीवा चेव पह(हा)णा, असण्णिपंचिंदिएसु हुंडसंठाणा चेव बहुवा होंति त्ति गुरूवदेसादो ।

संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

णग्गोदपरिमंडलसंठाणउदयसंजुदअसण्णीहिंतो तदुदयसंजुदसण्णी संखेज्जगुणा । कुदो ? तत्थ सण्णीसुप्पण्णंतोमुहुत्तकालब्भंतरे असण्णी बहुवारं संखेज्जगुणवड्ढिं करिय सइं संखेज्जभागवड्ढिं करेंति । एदेण कमेण संखेज्जभागवड्ढी वि संखेज्जवारं लब्भंति त्ति । असण्णीसु वि संखेज्जभागवड्ढी लब्भंति । ते वि तत्थ पक्खित्तमेत्ता होंति । ते चेसा | ४ / ४६५३२४१०७७७प22७७ / ० | ।

संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो | = ४४ / ४६५३२४१०७७७प2७७ / ० 2 | ।

संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? संखेज्जगुणवड्ढिवारेहिंतो संखेज्जगुहाणिवारा संखेज्जगुणा त्ति । अहवा सत्थाणेण संखेज्जगुणवड्ढिं करेंतजीवा दुविय पुणो जहण्णुक्कस्सुक्कीरणद्धाविसेसब्भंतरुवक्कमणकालेण-गुणिदमेत्तत्तादो वा | ४४४ / ४६५३२४१०७७७प२७७ / ० 2 | ।

संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

सुगममेदं । कुदो ? पुव्वं परूविदकमत्तादो ।

पुणो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । पृ० १६९.

कुदो ? सण्णीसुप्पण्णंतोमुहुत्तकालब्भंतरे असण्णीसु संखेज्जवारं असंखेज्जभागवड्ढिं करिय सइं संखेज्जभागहाणिं करेंति त्ति । उवरिम-दो-पा(प)दाणि सुगमाणि ।

पुणो **णिरयगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीणं सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया । पृ० १७०.**

कुदो ? सण्णिपंचिंदियएण संखेज्जगुणट्ठिदिं बंधिय तेसु दोसु वि गदीसु दोविग्गहेणुप्पण्णाणं विदियसमए होंति त्ति । तेसिं संदिट्ठी | −२२२ / प २७५२१2७७ / 2 | = ० २२ / ४६५८११०प२७५२१2७७ / 2 | ।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? असण्णिपंचिंदियपज्जत्तेण संखेज्जभागवड्ढि करिय णिरय-देवेसुप्पण्णाणं विदियसमए होंति त्ति । ते चेदाओ

−२२	= २ २
२७०५५२७२	४६५२११०२७५५२७७ ०

।

पुणो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया[अ]संखेज्जगुणा[1] हेदुणा । पृ० १७०.

तं कथं ? जे मंदपरिणामा जीवा ते बहुवा, तिव्वपरिणामा जीवा त त्थोवा होंति त्ति । पुणो जवमज्झपरूवणावलंभि(वि)य जोइज्जमाणे असंखेज्जगुणत्तं, णायो[व]गदत्तादो ।

उवदेसेण पुणा(पुण)संखेज्जगुणा । पृ० १७०.

तं कथं ? सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिवारा, संखेज्जभागवड्ढिवारा संखेज्जगुणा, असंखेज्जभागवड्ढिवारा संखेज्जगुणे त्ति उवदेसादो ।

अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

सुगममेदं ।

असंखेज्जभागहाणिउदीरया[2] संखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? अद्धासमासेण भजियसगपक्खेवेण गुणिय पुणो उवक्कमणकालंभजियपमाणत्तादो ।

अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया । पृ० १७०.

कुदो ? वड्ढिअवट्ठिदउदीरएहि अहियत्तदंसणादो ।

पुणो तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया । पृ० १७०.

कुदो ? सण्णिपंचिंदिएण संखेज्जगुणवड्ढिबंधं काऊण एइंदिएसुप्पज्जिदस्स होदि त्ति । तं चेदं

= ० २२
४६५२११०२७५२१२७७

।

पुणो संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० १७०.

कुदो ? विगलिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्तजीवाणि (?) संखेज्जभागवड्ढि काऊण एइंदिएसुप्पण्णे होदि । ते(तं)चेदं

−२२
४२७५५२७७
2

। एत्तो उवरिमपदाणि सुगमाणि । णवरि अवत्तव्वउदीरगेहिंतो असंखेज्जभागहाणिउदीरया दुसमयसंचिदत्तादो विसेसाहियं जादो(दा) त्ति वत्तव्वं ।

(पृ० १७०)

अणुभागउदीरणपरूवणाए मूलपयडिपरूवणा सुगमा । पुणो उत्तारपयडिपरूवणाए चउवीस अणियोगद्दाराणि होंति त्ति । तेसिं परूवणा सुगमा । णवरि तत्थ घादिसण्णपरूवणाए **आभिणिबोहियणाणावरणीय-सुदणाणावरणीयाणं उक्कस्साणुभागउदीरणा सव्वघादा (पृ० १७१)** त्ति परूविदं ।

णेदं घडदे । तं जहा— सव्वं घादेदि त्ति सव्वघादी णाम, आभिणिबोहिय-

1 मूलग्रन्थे 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

2 मूलग्रन्थे 'संखेज्जभागहाणिउदीरया' इति पाठः ।

सुदणाणावरणाणं णत्थि। कुदो? एदेसिं दोण्हं उक्कस्सुदीरणं सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं सव्व-संकिलिट्ठाणं होदि त्ति **सामित्ते** भणित्तादो। एवं भणिदे किमट्ठं जादमिदि चे ण, सण्णि-पंचिंदियपज्जत्तेसु पंचिंदिय-णोइंदियाणं खओवसममत्थि, तेसिमेगदराणं उवजोगे वि दिस्सदि। एवं संते एदेसिं उक्कस्साणुभागउदीरणं देसघादी होदि। एवं संते पुव्वावरविरोहो होदि? ण, एदस्सत्थो एवं भणिज्जदि— दोण्हमावरणाणं उक्कस्साणुभागाणं सव्वघादणसत्ती पंचिंदियजादि-कम्मोदएण पडिहयं होदूण णट्ठा, णट्ठे वि सव्वघादित्तं ण णस्सदि। जहा अग्गिस्स दहणगुणमंतोसह-पहावेण पच्छादिदे संते वि अग्गिस्स दहणगुणं ण णस्सदि, तहा चेव एत्थ वि।

सम्मामिच्छत्तस्सेव सव्वघादित्तं किं ण उत्तं? ण, एवं संते अणुक्कस्ससव्वस्स वि सव्वघादित्तं पावदि। पुणो अणुक्कस्सुदीरणा एदेण कमेण सव्वघादी होदूण गच्छदि जाव ओधि-मणपज्जवणाणावरणाणं सव्वघादिजहण्णाणुभागेण अणुसरिसं जादे त्ति। तत्तो परं देसघादी होदि। णवरि एत्थ अणुक्कस्सुदीरणा देसघादि-सव्वघादि त्ति उत्तकम्म(म)स्स अत्थं एवं होदि। तं जहा— कम्मेहि अवहरिज्जमाणगुणाणं दिस्समाणत्तादो अणुक्कस्सुदीरणं देसघादी होदूण गच्छदि जाव लद्धिअक्खरं ण पावदि ताव। पुणो पत्ते य सव्वघादित्तं होदि, खओवसम-पहाणत्तेण विवक्खिदत्तादो त्ति। एदमत्थं जाणाविदं। अणुभागाणं कमो पुव्विल्लो चेव।

पुणो **अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुक्कस्सुदीरणं देसघादि त्ति**। पृ० १७१.

कथमेदं घडदे? कधं ण घडदे? उच्चदे— मिच्छत्तासंजम-कसायसरूवपरिणामपच्चइयस्स णाणाणुसारिदंसणं पच्छा[द]यंतस्स अचक्खुदंसणावरणस्स मदिणाणावरणपरूवणाए समाणेण होदव्वमिदि? ण, जमणुभागुदीरणं जम्मि पडिवक्खं सव्वं घादयदि तमणुभागं तं पडुच्च उक्कस्सं सव्वघादित्तं च होदि। एत्थ पुण तं णत्थि। कुदो? सण्णिपंचिंदिएण बद्धुक्कस्साणु-भागं तं चेवुदीरिज्जमाणे खओवसमविसेसेण पंचिंदियोदएण पडिहयं होदूण अणंतगुणहीण-सरूवेण उदयावलियं पविसदि, मदिणाणावरणं व थिरं ण होदि। पुणो जादिवसेण खओव-समहाणीए च एदस्सणुभागउदीरणा वड्ढदि जाव सुहुमेइंदियजीवस्स लद्धियक्खरखओवसमे त्ति। णवरि जम्मि जम्मि जादिम्मि तम्मि पडिबद्धपरिणामपच्चएणुक्कस्सं होदि, वहिरंतरंगुवओगाणं छदुमत्थेसु समाणत्ताभावादो कज्जस्स त्थोवबहुत्तादो कारणस्स वहुत्त(त्तं)त्थोवत्तं च ण जाणिज्जदि त्ति दोण्हं सरिसपरूवणा ण होदि त्ति सिद्धं।

पुणो **चक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागस्सुदीरणा सव्वघादि** (पृ० १७१) त्ति उत्ते एदस्सत्थं सव्वं घादेदि त्ति सव्वघादि त्ति गेण्हिदव्वं। कधं? तीइंदियस्स तत्थतण-सव्वसंकिलिट्ठणिबंधणपच्चएण परिणदस्स उदीरिज्जमाणचक्खुदंसणावरणेण णासिदचक्खुदंसणा-वरणखओवसमत्तादो सव्वघादि होदि त्ति। पुणो सण्णीसु किमट्ठमुक्कस्ससामित्तं ण दिण्णं? ण, एदस्स पंचिंदिय-चउरिंदिएसु खओवसमजादिवसेण च अणंतगुणहाणिसरूवेण अणुभागाणमुदया-वलियाए पवेसुवलंभादो।

पुणो **सादासाद-आउचउक्क-सव्वणाम-[उच्च-]णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागउदीरणा घादियाघादीणं पडिभागिया**[1] इदि उत्तं। पृ० १७१.

---

[1] मूलग्रन्थे त्वेवंविधोऽस्ति पाठः— सादासादाउचउक्कस्स सव्वणामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादिपडिभागो।

तं कथं ? घादिकम्माणि दुविधाणि होंति देसघादि सव्वघादि त्ति। तत्थ लता-दारु-अट्ठि-सेलसमाणफद्दयाणि सव्वाणि वा लता-दारुसमाणस्सणंतिमभागाणि वा जेसिमत्थि तेसिं देसघादि त्ति सण्णा। जेसिं दारुगसमाणस्साणंतिमभागप्पहुडि उवरिमफद्दयाणि अत्थि तेसिं सव्वघादि त्ति सण्णा। एदाणं लदादिसव्वफद्दयाणि आदिवग्गणप्पहुडिसव्वफद्दयाणं आदि(अवि)-भागपलिच्छेदसंखाए पुव्वुत्ते उत्तर(?)सदमेत्ताणं अघादिपयडीणमादि(मवि)भागपलिच्छेदसंखासमाणा होंति, ण गुणणे त्ति उत्तं होदि। जहा तुलाए तोलिज्जमाणदव्वावसेसं व।

(पृ० १७२)

पुणो पच्चयपरूवणाए तिविहपच्चया होंति परिणामपच्चया भवपच्चया तदुभयपच्चया चेदि। तत्थ चउदालपयडीणं अणुभागुदीरणट्ठाणाणं वड्ढि-हाणीए केसिं केसिं चापुव्वपयडीणमुदयस्सुप्पादणे उप्पण्णपयडीणं अणुभागुदीरणवड्ढि-हाणीए केसिं पयडीणं अवट्ठिदाणुभागुदीरणाए च कारणभूदाणि जादिकम्मोदयसव्वपेक्खाणि मिच्छत्तासंजम-कसायजणिदपरिणाम-(मा) सरागसंजमपरिणामा वीदरागपरिणामा च परिणामपच्चया णाम। एदेहि परिणामेहि जदि (जाओ) उदीरिज्जंति ताओ परिणामपच्चइयाओ |४४||। पुणो बावण्णपयडीणं अणुभागाणं वड्ढि-हाणीए कारणभूदसामण्णभवा णारय-तिरिय-मणुस-देवभवेसु णियमिदेग-दो वा भवा परिणामसव्वपेक्खा वा असव्वपेक्खा वा जाणि ताणि भवपच्चइयाणि होंति। पुणो बावण्णपयडीणं कहिं कहिं अणुभागाणं वड्ढि-हाणिउदीरणाए भवाणि चेव कारणाणि होंति, कहिं कहिं परिणामाणि कारणाणि जाणि ताणि तदुभयपच्चया। एदाणं सब्भावं गंथस्सुवरि वत्तव्वं।

(पृ० १७४)

पुणो ट्ठाणपरूवणदाए चउट्ठाण-तिट्ठाण-बिट्ठाण-एगट्ठाणुदीरणपयडीणं संखा णव होंति। पुणो चउट्ठाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणुदीरणपयडीणं संखा चउणउदी होंति। बिट्ठाणेगट्ठाणुदीरणपयडीओ दस संखा होंति। बिट्ठाणुदीरणपयडीणं संखा चउतीसाणि होंति। एगा चउट्ठाणिया। एदेसिमत्थो सुगमो। णवरि

चक्खुदंसण-अचक्खुदंसणाणमुदयो जस्स वि एक्कमक्खरमत्थि तस्स णियमा एगट्ठाणिया उदीरणा। पृ० १७५.

त्ति उत्ते एदस्सत्थो— चक्खु-वचक्खुदंसणाणमुदएण खओवसमेण वा उवजोगो जस्स पमत्तापमत्तादीणं एगक्खरसंबंधियो जइ संपुण्णमत्थि तस्स जीवस्स एदेसिमुदीरणा एगट्ठाणिया होंति, ण इदरेसु। कथमेदं णव्वदे ? ण, भवणवासियदेवाणं जहण्णप्पबहुगम्मि बिट्ठाणियसम्मत्ताणुभागादो चक्खु-वचक्खुदंसणावरणाणुभागमणंतगुणा त्ति उत्तत्तादो।

(पृ० १७६)

पुणो सामित्तं सुगमं।

(पृ० १९१)

एगजीवकालपरूवणं पि सुगमं। णवरि जहण्णाणुभागोदीरणकालपरूवणाए (पृ० १९४.) **णिद्दा-पयलाणं जह० एगसमयो** त्ति उत्तं। कथं ? एत्थुवसमसेढीए एदेसिमुदयो अत्थित्ताभिप्पाएण उवसंतकसाए एगसमयमुदीरिय बिदियसमए देवलोयं गयस्स होदि त्ति। पुणो उक्कस्संतोमुहुत्तं। कुदो ? परिणामपच्चइयाणमेदेसिं अवट्ठिदपरिणामेणुवसंतकसाएणुदिट्ठत्तादो।

पुणो **थीणगिद्धितियाणं जहण्णेणेगं वा दो वा समया (पृ० १९४.)** त्ति उत्तं। तं कथं ? एदाणि जहण्णाणुभागुदीरणपाओग्गविसोहीणं काले णिद्दावत्थाए एग-दोण्णिसमयं होंति त्ति।

(पृ० १९९)

पुणो अंतरं पि सुगमं। णवरि मणुस्साणुपुव्वीए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं वासपुधत्तमिदि उत्तं[1] (पृ० २००)। [तं] कथं ? तिपलिदोवमिएसु मणुस्सेसु दोविग्गहं कादूण उप्पज्जिय दोसु समएसु उक्कस्समुदीर(रि)य तिसमयप्पहुडि अंतरिय पज्जत्तीओ समाणिय अवमिच्छु-(च्चु)णा चुदो, पुणो वासपुधत्ताउगमणुस्सेसुप्पज्जिय कमेण तत्थाउक्खएण मदो तिपलिदो-वमिगेसु विग्गहेणुववण्णो। लद्धमंतरं। जादत्तादो (?)। कधं भोगभूमीणं कदलीघादस्स संभवो ? सच्चं संभवो णत्थि त्ति **आइरिया** परूवयंति। किंतु एदं **केइमाइरियाणमभि-प्पायंतरेण** आउवघादपरिणामा संभवंति त्ति तं जाणाविदं।

पुणो **अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं[जह०] खुद्दाभवग्गहणं समऊणं** त्ति उत्तं (पृ० २००)।

कुदो ? णिगोदेसुप्पण्णपढमसमए उक्कस्सुदीरणं जादे त्ति।

पुणो **उक्कस्संतरं असंखेज्जा लोगा। पृ० २००.**

कुदो ? पुढविकायादिसु भवं(मं)ताणं तण्णिबंधणपरिणामाभावादो, सुहुमणिगोदेसु तस्स णिबंधणपरिणामाणं चेव बहुत्तुवलंभादो वा।

(पृ० २०३, २०५, २०८, २१०.)

पुणो णाणाजीव[भंगविचय-] कालंतर-सण्णियासाणं परूवणा सुगमा। णवरि जहण्णसण्णियासे **ओहिणाणावरणजहण्णाणुभागमुदीरंतो मदि-सुदणाणावरणाणं सिया जहण्णं वा अजहण्णं वा उदीरेदि। जदि अजहण्णं तो णियमा अणंतगुणं** उदीरयदि त्ति उत्तं। पृ० २१४.

एदस्सत्थो एवं वत्तव्वो— लद्धिअक्खरप्पहुडि जावेगक्खरसुदणाणखओवसमं पावदि ताव सुदणाणक्खओवसमो छवड्ढिकमेण ट्ठिदो। तत्तो परमक्खरवड्ढीए खओवसमं गंतूण सयलसुदणाण-खओवसमपमाणं पावदि। पुणो तेसिं संबंधिसुदणाणावरणस्स अणुभागट्ठाणउदीरणा वि कमेण छव्विहहाणीए एइंदियसमं(संबं)धीसु गंतूण बेइंदियसमं(संबं)धीसु एइंदिएहिंतो अणंतगुणेसु खओवसमिएसु पडिबद्धअणुभागउदीरणम्मि एइंदियादो अणंतगुणहीणं होदूण छव्विहहाणीए बेइंदिएसु गच्छदि। एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदिएसु वि वत्तव्वं जावेगक्खर-सुदणाणे त्ति। तत्तो परमणुभागुदीरणमणंतगुणहाणीए गंतूण जहण्णाणुभागुदीरणं जादे त्ति।

(पृ० २१६)

पुणो अप्पाबहुगपरूवणम्मि किंचि अत्थं भणिस्सामो। तं जहा— तत्थ उक्कस्सप्पाबहुगं भण्णमाणे **सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयस्स उदीरणा। पृ० २१६.**

कुदो ? उवसामयसुहुमसांपराइएण जं बंधा(बद्धा)णुभागं तेत्तीससागरोवमाउगदेवेसु भवपच्चयेण उदीरिदत्तादो। कथं बहुत्तं णव्वदे ? जीवविवागित्तादो सजोगिपज्जवसाणबंध-

---

[1] मूलग्रन्थपाठस्त्वेवंविधोऽस्ति— मणुसाणुपुव्वीए तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। उक्कस्सं तिण्णं पि एइंदियट्ठिदी। पृ० २००-२०१.

संभवेण विसिट्ठत्तादो सुहमुप्पाययसुहपयडित्तादो च ।

पुणो **जसगित्ति-उच्चागोदाणं उक्क० उदीरणा अणंतगुणहीणा ।** पृ० २१६.

कुदो ? उवसामगसुहुमसांपराइगेण बद्धसादाणुभागादो खवगसुहुमसांपराइगेण बद्धजसगित्तिउच्चागोदाणमणंतगुणहीणत्तादो तदो चेव जीवविवाई सुहपयडी होदूण गुणं पडुच्च परिणामपच्चयादिविसेसेण सजोगिम्मि उदीरिदे थोवं जादं ।

पुणो **कम्मइयमणंतगुणहीणं ।** पृ० २१६.

कुदो ? अपुव्वखवगम्मि बद्धुक्कस्साणुभागपोग्गलविवाइकम्मइयस्स परिणामपच्चएण सजोगिम्मि उदीरिदत्तादो । पुणो एत्थ सूचिदपयडीणमणुमाणेणप्पाबहुगं उच्चदे– कम्मइयबंधण-संघादाणं दोण्हं |२| पयडीणमुदीरणा कम्मइयेण समाणा भवंति । पुणो सुभग-सुस्सरादेज्ज-तित्थयरमिदि चत्तारिपयडीणं |४| उदीरणा कम्मइयेण समाणं वा अधियं वा होदि त्ति वत्तव्वं । पुणो अपुव्वखवगेण वज्झमाणत्तणेण जीवविवाइत्तणेण सुहपयडित्तणेण परिणामपच्चयेण सजोगिम्मि उदीरिदत्तादो । विसेसं जाणिय वत्तव्वं । पुणो रत्त-पीद-सेद-सुगंध-कसायंबिल-महुर-णिदु(द्ध)ण्णअगुरुगलहुग-थिर-सुभ-णिमिणमिदि तेरसपयडीणं |१३| उदीरणा पोग्गलविवाइत्तणेण सुहपयडित्तणेण बज्झमाणगुणट्ठाणाणमेयत्तणेण परिणामपच्चयत्तणेण कम्मइयेण समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं । सूचिदं गदं ।

पुणो **तेजइग० अणंतगुणहीणं ।** पृ० २१६.

कुदो ? दो वि पोग्गलविवाइत्तादिकारणेहि समाणत्ते वि किंतु तेजइगादो कम्मइगमणंतगुणाणुबंधेण सव्वकम्माणमाधारत्तणेण च अधियं जादे त्ति वत्तव्वं । पुणो सूचिदपयडीयो तव्बंधण-संहा(घा)दा दो वि |२| तेजइगेण समाणाओ होंति ।

पुणो **आहारसरीर० अणंतगुणहीणं ।** पृ० २१६.

कुदो ? तेजइगाणुभागबंधादो उवसमसेढीए बंधा(बद्धा)णुभागमणंतगुणहीणं होदूण पोग्गलविवाइ-परिणामपच्चएण समाणं होदूण पमत्तेणुदीरिदत्तादो थोवं जादं । पुणो सूचिद-पयडीयो तव्बंधण-संघादंगोवंगओ तिण्णिपयडीणं |३| उदीरणा आहारसरीरपमाणओ समाणाओ होंति । पुणो वि समचउरसरीरसंठाण-महुग-लहुग-परघाद-पसत्थविहायगदि-पत्तेगसरीरमिदि छप्पयडीणं |६| उवसमसेढीए बंधा(बद्धा)णुभागपोग्गलविवाइत्तणेण परिणामपच्चएण पमत्तेण आहारसरीरेण सह उदीरिदत्तादो आहारसरीरेण सरिसं वा हीणं वा होदि त्ति जाणिय वत्तव्वं । खवगसेढीए बंधा(बद्धा)णुभागं सजोगिम्मि उदीरिज्जमाणं किं ण घेप्पदे ? ण, भवपच्चइयाणमेदेसिं तत्थुदीरणं थोवं होदि त्ति ण घेप्पदे । णवरि आहारसरीरेण सह पसत्थविहायगदी सरिसं वा अहियं वा होदि त्ति वत्तव्वं । कुदो ? जीवविवाइत्तादो । सूचिदं गदं ।

पुणो **वेगुव्वियसरीरमणंतगुणहीणं ।** पृ० २१६.

कुदो ? एदेण सूचिदवेगुव्वियबंधण-संघादंगोवंगमिदि तिण्णिपयडीहिं |३| सह अप्पुव्वुवसामगेण बद्धाणुभागादो पसत्थगुणपयडिभेदेण अणंतगुणहीणेण तम्मि बंध(बद्ध)वेगुव्वियसरीरपोग्गलविवाइपरिणामपच्चएण उदीरिदत्तादो भवपच्चएण तेतीससागरोवमाउअदेवेण वे(?) उदीरिदत्तादो वा । पुणो सूचिदुस्सास-तस-बादर-पज्जत्ताणमिदि चत्तारिपयडीणं |४| उदीरणा वेउव्विएण बंधादिकारणेहिं सरिसत्ते संते वि एगंतभवपच्चइयत्तादो समाणं वा हीणं वा

होदि त्ति वत्तव्वं। पुणो वि सूचिंदउज्जोवणामाए० अणंतगुणहीणा। कुदो ? मिच्छाइट्ठिणा बद्धाणुभागं पमत्तसंजदेणुदीरिदत्तादो।

मिच्छत्तस्स० उदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.

कुदो ? वेगुव्वियसरीरबंधुक्कस्साणुभागादो उक्कस्ससंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिणा बद्धुक्कस्स-मिच्छत्ताणुभागस्स अणंतगुणहीणत्तादो सव्वदव्वपडिबद्धस्स असुहपयडिस्स परिणामपच्चएणुदीरिदे वि थोवं चेव जादं।

पुणो **केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-असादवेदणीयाणं उदीरणा अणंतगुण-हीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? उक्कस्ससंकिलिट्ठादिकारणेहि मिच्छत्तेण समाणाणि होदूण मिच्छत्ताणुभागबंधादो एदेसिं तिण्हं पि बंधा(बद्धा)णुभागाणंतगुणहीणं होदूण ट्ठिदउदीरिदत्तादो। मिच्छत्तेण जहाणंत-संसारं होदि तहा एदेहिंतो अणंतसंसारं ण होदि त्ति अप्पसत्तिजुत्तो त्ति जाणिज्जदे च।

पुणो **अणंताणुबंधीणमण्णदरुदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? जीवलक्खणणाणपडिबंधयादो अप्पाणम्मि णिबंध(णिबद्ध)चरित्तपरिणामपडि-बद्धयस्स थोवत्तं णाइयत्तादो।

पुणो **संजलणेसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? सम्मत्त-देस-सयलखओवसमचारित्तपडिबंधयादो तम्मिमणुप्पाइय उवसम-खइयचारित्तपडिबद्ध(बंध)यस्स थोवत्तं णायसिद्धत्तादो।

पुणो **पच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? अप्पसत्थपयडिविसेसेण अप्पाणुभागबंधित्तादो खओवसमचारित्तपडिबद्ध(बंध)-यत्तादो च अप्पसत्थविहायं जादमिति।

पुणो **अपच्चक्खाणावरणेसु वि अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? खओवसमचारित्तावरणादो देसचारित्तावरणस्स थोवत्तं णायादो।

पुणो **मदिणाणावरणस्स अणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? पुव्विल्लपयडिस्स उत्तसामग्गीहिं सह एत्थ वि बंधंतो वि तेहिंतो अणंत-गुणहीणा अणुभागा बंधा(बद्धा)। तदो सव्वदव्वपज्जयाणं देसघादिपडिबद्धमणुभागमुदीरयंतो वि थोवं जादं।

पुणो **सुदणाणावरणीयस्स अणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा। पृ० २१६.**

कुदो ? मदिपुव्वं सुदणाणुप्पत्तीदो, दोण्हं समाणसंखे जादे वि कारणजादमाहप्पेण मदिणाणमधियं इदरमप्पं जादं। तदो तेसिमावरणाणं पि तदणुसारीयो होंति त्ति।

पुणो **ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरण० अणु० उदी० अणंतगुणहीणं। पृ० २१७.**

कुदो ? सुदणाणावरणाणुभागबंधादो अणंतगुणहीणाणुभागबंधत्तादो सेसासेससव्व-पयारेण दो वि समाणे संते वि रूविदव्वपडिबद्धत्तणेण च अणंतगुणहीणं जादे त्ति वा वत्तव्वं।

पुणो **मणपज्जवणा० अणंतगुणहीणं। पृ० २१७.**

कुदो ? एदं पि रूविदव्वविसयं चेव, किंतु एदं तत्तो अप्पविसयत्तं आगमेण सिद्धो त्ति अणुभागुदीरणं पि तदणुसारी होदि त्ति।

पुणो **णउंसयवेदस्स अणु० उदी० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.**

कुदो ? णाणसत्तिपच्चा(च्छा)दयअणुभागादो चारित्तस्स पच्छादयमाणाणुभागस्स थोवत्तं णायगदत्तादो । एत्थ सूचिदपयडीणं काल-णील-दुगंध-तित्त-कडुग-सीद-लुक्ख-उवघाद-अथिरासुभाणमिदि दसपयडीणं | १० | परिणामपच्चएणुदीरिज्जमाणाणमेदेसिं णउंसयुदीरणाए समाणुदीरणकारणे संते वि पोग्गलविवाइत्तणेण अप्पं जादमिदि वत्तव्वं । पुणो हुंडसंठाण० अणु० उदी० अणंतगुणहीणं होदि । एदमेगं | १ | पोग्गलविवाइ-भवपच्चयित्तादो । सूचिदं गदं ।

पुणो **थीणगिद्धिउदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.**

कुदो ? इट्टावागग्गिसमाणसंतावमुप्पाययणउंसयवेदाणुभागादो दंसणखओवसमं मोत्तूण दंसणोवजोगं थोवकालं पच्छादयंतस्स उदयावलियमणंतगुणहीणेण पविस्समाणस्स अणुभागुदीरणस्स बंध-संतेहि वि थोवं जादं ।

पुणो **अरदि० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.**

कुदो ? थीणगिद्धिअणुभागादो दंसणोवजोगं विणासिय अवत्तव्वजीवगुणमविणासयादो अणंतगुणहीणाणुभागस्स चारित्तपरिणामम्मि अरदिं उप्पादयअरदिअणुभागस्स थोवत्तं णायसिद्धत्तादो ।

पुणो **सोगस्स अणु० उदी० अणंतगुणही० । पृ० २१७.**

कुदो ? चारित्तविसएसु इंदियविसएसु अरदिउप्पाययअरदिअणुभागादो इट्ठजणविगमेण इट्ठविसयविगमेण च अरदिपुव्वं सोगमुप्पाययसोगाणुभागं थोवत्तादो ।

पुणो **भयं० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.**

कुदो ? दो वि परावत्तणोदएण समाणत्ते संते सोगाणुभागुदीरणकालादो भयाणुभागुदीरण-कालमसंखेज्जगुणहीणं जादे तस्संबंधी संते वि अणंतगुणहीणं होदि त्ति णव्वदे ।

पुणो **दुगुंछाए उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.**

कुदो ? भयादो उप्पज्जमाणदुक्खादो दुगुंछाए उप्पज्जमाण(णं) किलच्छापुव्वं व दुक्खमप्पमिदि पयडिविसेसेण थोवं जादं ।

पुणो **णिद्दाणिद्दाए० उदीरणाणंतगुणहीणा । पृ० २१७.**

कुदो ? दुक्खुप्पाययादो दुगुंछाणुभागादो दुक्खभावेण दंसणोवजोगमप्पं पच्छादयंतस्स अणुभागस्स थोवत्तणायसिद्धत्तादो ।

पुणो **पयलापयलाए० अणंतगुणहीणं । पुणो णिद्दाए० अणंतगुणहीणा । पुणो पयलाए० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.**

एदाणि तिण्णि वि अप्पाबहुगपदाणि सुगमाणि पयडिविसेसावेक्खाए थोवथोवाणि जादाणि त्ति ।

पुणो **अजसगित्ति-णीचागोदाणं० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.**

कुदो ? दंसणोवजोगपच्छादण(य)पचलादो उवजोगपुव्वमाणोदएण परिणदजीवस्स अजसगित्ति-णीचागोदाणुभागं दुक्खमुप्पादयत्तादो थोवं जादं । एत्थ सूचिदप्पसत्थविहायगदि-दूभग-दुस्सर-अणादेज्जमिदि चत्तारिपयडीणं | ४ | उदीरणाए पुव्वुत्तदोण्हं पयडीणमुदीरणाए एयंतरभवपच्चयादिकारणसामग्गीए समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं, एगदरस्स णिण्णय-करणोवायाभावादो ।

पुणो णिरयगदीए० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? अजसगित्ति-णीचागोदाणुभागबंधादो अणंतगुणहीणस्सेदस्स बंधस्स णिरयमेत्त-कज्जस्स अप्पत्तसिद्धीए ।

देवगदीए० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं कम्मइयाणुभागबंधादो अणंतगुणाणुभागबंधदेवगदिउदीरणं णिरयगदीदो अणंत-गुणहीणं जादं ? ण, भवपच्चइयेण दो वि सामण्णे संते संकिलेस-मज्झिमपरिणामेणुदीरणकय-विसेसत्तादो ।

पुणो रदीए० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? पंचाणुत्तर-सदरसहस्सारदेवेसु कमेण सामित्तसंभवादो सुभपयडीणमणुभागादो असुहपयडीणमणुभागस्स थोवत्तं णायगदत्तादो ।

हस्सस्स उक्क० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? देसघादि-अघादिपयडीणं परिणामपच्चइय-भवपच्चइयाणं कयपयडिविसेसत्तादो ।

[1]णिरयाउगस्सुदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? सुहासुहपयडिविसेसादो मिच्छाइट्ठिणा बद्धाणुभागत्तादो वा अप्पं जादं ।

पुणो मणुसगदीए उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं बंधेण णिरयगदिअणुभागादो अणंतगुणभूदकेवलणाणावरणभागादो अणंतगुणस्स मणुसगदिउदीरणा अणंतगुणहीणं जादं ? ण, भवपच्चइएण जादिवसेण विट्ठाणाणुभागुदीरणं जादत्तादो ।

पुणो एत्थ सूचिदपंचिंदिय-वज्जरिसहसंघडणाणं दोण्हं पयडीणं |२| उदीरणा मणुसगदि-उदीरणाए समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं, भवपच्चयादिसमाणकारणोवलंभादो ।

ओरालियसरीर० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कथं मणुसगदिअणुभागबंधादो अणंतगुणहीणबंधाणुभागस्सेदस्स अदीव थोवत्तं ? जादिवसेण सुभतरपयडिविसेसेण विट्ठाणियउदीरणाजादत्तादो । एत्थ सूचिदतव्वंधण-संघादंगो-वंगमिदि तिण्हं पयडीणं |३| उदीरणा सरिसादो सरिसा त्ति वत्तव्वं ।

मणुस्साउगं अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? सम्मादिट्ठिओरालियसरीराणुभागादो मिच्छादिट्ठिणा बद्धमणुस्साउगमणंतगुण-हीणं होदि त्ति ।

तिरिक्खाउग० उदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? सुभतर-सुभपयडिविसेसादो ।

पुणो इत्थिवेदस्स० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? अप्पसत्थत्तादो कम्मभूमियतिरिक्खेसु भवपच्चइएण उदीरिदत्तादो ।

पुरिसवेदस्स० उदीरणा अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? तत्तो एदस्स अदीव अप्पसत्तिजुत्ताणुभागत्तादो ।

---

१ मूलग्रन्थेऽतः प्राक् 'देवाउ० अणं० गु० हीणा' इत्येतदधिकं वाक्यं समुपलभ्यते ।

पुणो तिरिक्खगदीए० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? समाणसामित्ते संते वि देसघादि-अघादिपयडिविसेसणादो । पुणो एत्थ सूचिद-कक्क(क्ख)ड-गरुवाणं दोण्हं |२| पयडीणमुदीरणा अणंतगुणहीणा । कुदो ? एयंतभवपच्चइयत्तादो । पुणो वि सूचिदमज्झिमचउसंठाण-पंचंतिमसंहडणाणमिदि |९| णवपयडीणं उदीरणा तत्तो समाणं वा हीणं वा होदि त्ति वत्तव्वं, भवपच्चइयादिकारणेहि समाणत्तादो । पुणो कमेण णिरय-देव-मणुस-तिरिक्खाणुपुव्वी इदि चत्तारि |४| वि अणंतगुणहीणाणि होंति त्ति वत्तव्वाणि । तत्तो चउरिंदियजादी |१| अणंतगुणहीणं जादिवसेण होदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो चक्खुदंसण० उदीरणमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो सुदणाणावरणबंधाणुभागादो अणंतगुणभूदचक्खुदंसणस्स बंधाणुभागं तिरिक्खगदीदो अणंतगुणहीणं जादं ? ण, चक्खुददंसणावरणखओवसमजुत्तजीवस्स तक्खयोवसममाहप्पेण उदयावलियं पविस्समाणाणुभागं अग्गीए दाविदपिंछोक्ख(पिंडो व्व)अदीव ओहट्टदि त्ति तं थोवं जादं जइ वि तक्खयोवसमविरहिदतीइंदिएण उदीरिदअणुभागमुक्कस्स जादं तो वि तं थोवं जादिवसेण जादं । पुणो सूचिदपयडि तीइंदियकम्म चक्खुदंसणेण सरिसं । तत्तो बेइंदियमणंतगुणहीणं । तत्तो आदावमणंतगुणहीणं । तत्तो एइंदिया(य-)थावराणि सरिसाणि अणंतगुणाणि । तत्तो कमेण सुहुम-साहारण-अपज्जत्ता च हीणाओ होंति त्ति वत्तव्वं । एवं एत्थ अट्ठ पयडीयो होंति |८| ।

पुणो सम्मामिच्छत्तुक्क० उदी० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? मिच्छत्तजहण्णाणुभागादो चक्खुदंसणावरणमणंतगुणमुदीरेदि, सम्मामिच्छत्तं पुण तत्तो अणंतगुणहीणं सव्वघादु(सव्वदा उ-)दीरेदि त्ति ।

पुणो दाणंतराइय० अणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? खओवसमपयडीणं जम्मि जादिम्मि खओवसमो वड्ढदि तम्मि जादिम्मि अणुभागो वड्ढदि । णवरि मदि-सुदावरणं मोत्तूण तदो एइंदिएसु उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो वि देसघादिविट्ठाणियाणुभागं चेव जादत्तादो ।

पुणो लाभंतराइयमणंतगुणहीणं । भोगांतराइयमणंतगुणहीणं । परिभोगांतराइयमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? दाण-लाभ-भोग-परिभोगाणं माहप्पाणि विचारिज्जमाणे संसारिजीवेसु कमेण थोव-थोवमाहप्पदंसणादो । तदो तदणुसारिपयडी वि होंति त्ति वत्तव्वं ।

पुणो अचक्खुदंसणस्स० अणंतगुणहीणा । पृ० २१७.

कुदो ? परिभोगांतराइय-अचक्खुदंसणावरणाणि दो वि सुहुमेइंदिएसुप्पण्णपढमसमए लद्धियक्खरं जादं तो वि पयडिविसेसेणप्पं जादं ।

पुणो वीरियांतराइयमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? पयडिविसेसेण थोवं जादं । अहवा दंसणं जीवस्स लक्खणभूदं, वीरियस्स तदभावादो अप्पं जादं । तदो तदणुसारि तेसिं··· धि कम्मं पि होदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो वेदगसम्मत्तमणंतगुणहीणं । पृ० २१७.

कुदो ? देसघादिप्फद्दयाणं सम्मादिट्ठीहिं उदीरिदत्तादो ।

पुणो णिरयगदीए एक्कवंचासपयडीणं उत्तप्पाबहुगेण सूचिदेक्कत्तीसपयडीणं, पुणो तिरिक्खगदीए एगूणसट्ठिपयडीणं उत्तप्पाहुगेण सूचिदपंचहत्तरिपयडीणं, पुणो मणुसगदीसु सट्ठिपयडीणं उत्तप्पाबहुगेण सूचिदसत्तसट्ठिपयडीणं, देवगदीसुत्तचउवण्णपयडीणमप्पाबहुगेण सूचिदबत्तीसप्पाबहुगेण च परिणाम-भवपच्चइयादिकारणेहि जासिं जम्मि जम्मि पयडीए संबंधमत्थि तम्मि तम्मि तेसिं तेसिं पवेसिय वत्तव्वाओ। णवरि भगदीसु सुभपयडीणं अणुभागाणं वड्ढीए कारणं असुभपयडीए(णं) ओवट्ठ(ट्ट)णाए च कारणं, पुणो असुभगदीसु एदेसिं विवज्जासाणं च कारणं, ओधिणाण-ओधिदंसणावरणाणं खओवसमसहगदगदीसु ओवट्टणमिदरगदीसु वड्ढीए च कारणं जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० २२६)

पुणो जहण्णाणुभागउदीरणप्पाबहुगम्मि लोभसंजलणप्पहुडि जाव णवुंसगवेदत्तावेग(वेदं तावेग) ट्ठाणियाणं, मणपज्जवणाणावरणप्पहुडिबिट्ठाणियाणं जाव मिच्छत्ता त्ति ताव कारणं सुगमं।

तत्तो **ओरालिय० अणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? सुहत्तादो।

वेगुव्विय० अणंतगुणा। पृ० २२७.

कुदो ? तत्तो वेगुव्वियं होदूण ट्ठिदो वि सुहयरत्तादो अणंतगुणं जादं। एवं उवरि वि णेदव्वं जाव तिरिक्खगदीदो णिरयगदि अणंतगुणं जादे त्ति।

एत्थ तिरिक्खगदीदो णिरयगदिसंतमणंतगुणं चेव कारणं तो वि भवपच्चइयसंबंधिअंतरंगकारणसण्णिहाणबलेण तहाभावविरोहादो। तदो उवरि देवगदि त्ति वत्तव्वं, सुगमकारणत्तादो। णवरि पुव्वुत्तप्पाबहुगेसु गुणट्ठाणाणमघादि-घादिकम्माणं परिणामपच्चयाणं सुहासुहपयडीणं च गयविसेसेण जाणिय वत्तव्वं।

तदो **णीचागोदाणं अजसगित्तीए च अणंतगुणा। पृ० २२७.**

कुदो ? संतबहुत्तादो।

पुणो **असादमणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो।

पुणो **उच्चागोदमणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? जदि वि संतं थोवं तो वि असादमेइंदियादिसु सव्वत्थमुदीरेदि, उच्चागोदाणं पुण पंचिंदिएसु चेव उदीरेदि त्ति अणंतगुणं जादं।

पुणो **जसगित्ति० अणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? सत्ता(संता)णुसारित्तणेण जादं।

पुणो **सादमणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो।

पुणो **णिरयाउगमणंतगुणं। देवाउगमणंतगुणं। पृ० २२७.**

कुदो ? संतबहुत्तावेक्खत्तादो। एवमोघपरूवणा गदा।

तदो अणंतरमादेसपरूवणं गदीसु ओघं चेव अणुमाणिय वत्तव्वं।

पुणो भुजगारपरूवणा सुगमा । पृ० २३१.

पुणो वि अप्पाबहुगम्मि (पृ० २३६) किंचि अत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

आभिणिबोहिय० अवट्ठिदउदीरया थोवा । पृ० २३६.

कुदो ? एवं वेदगसव्वजीवरासिस्सासंखेज्जलोगमेत्तपडिभागियत्तादो । तं कुदो ? अणुदीरणकालभजिदवेदगरासिस्स अवट्ठिदउदीरणकालगुणिदमेत्तत्तादो ।

अप्पदरउदी० असंखेजगुणा । पृ० २३६.

कुदो ? विसोहिअद्धाए ट्ठिदकिंचूणदुभागमेत्तसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

पुणो भुजगारुदीरणा विसेसाहिया । पृ० २३६.

कुदो ? संकिलेसाए संचिदूणट्ठिदजीवरासिस्स सादिरेयदुभागपमाणत्तादो । केत्तियमेत्तेण सादिरेयं ? संखेज्जभागमेत्तेण । तेसिं ट्ठवणा ।

१३१५ / ९
१३४ / ९
१३७ / ≡2

एवं सुदणाणावरणादिसत्तपयडीणं वत्तव्वं । पृ० २३६.

तदो **दंसणावरणीयं-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसायाणं सव्वत्थोवमवट्ठिदउदीरया । पृ० २३६.**

सुगममेदं ।

अवत्तव्वउदी० असंखेज्जगुणा । पृ० २३६.

कुदो ? अंतोमुहुत्तपडिभागियत्तादो । तदो उवरिमदोपा(प)दाणि (पृ० २३६) सुगमाणि ।

पुणो उवरि उच्चमाणपयडीणं अप्पाबहुगाणि सुगमाणि ।

पुणो पदणिक्खेवाणं परूवणा सुगमा (पृ० २३७) । णवरि जहण्णवड्ढिसामित्ते (पृ० २४४) **वेगुव्वियजहण्णाणुभागुदीरणवड्ढी कस्स ? बादरवाउजीवस्स बहुसमयं उत्तरं विगुव्विदस्से त्ति** (पृ० २४८) उत्तं ।

किमट्ठं दुसमउत्तरविगुव्विदस्स ण दिज्जदे, जहण्णवड्ढि तम्मि चेव दिस्समाणत्तादो ? सच्चमेवं होदि, किंतु बहुसमयं विगुव्वियस्स मंदपरिणामत्तादो एत्थतणदुसमयवड्ढि घेत्तव्वं ति उत्तत्तादो । एवं अणुभागुदीरणा गदा ।

पुणो एदस्सु(पदेसु)दीरणाए (पृ० २५३) मूलपयडिउदीरणपरूवणा सुगमा ।

(पृ० २५३)

उत्तरपयडिउदीरणाए उक्कस्ससामित्तं परूविदसुत्ते पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सम्मत्त-चउसंजलण-तिण्णिवेद-मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-छस्संठाणाणं ओरालियंगोवंग-वज्जरिसहादितिण्णिसंघडण-पंचवण्ण-दोगंध-पंचरस-अट्ठफास-अगुरुगलहुगचउक्क-दोविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं उक्कस्सुदीरणदव्वं असंखेज्जसमयपबद्धपमाणमिदि घेत्तव्वं । सेसाणं पयडीणमसंखेज्जलोगतप्पडिभागियं उदीरणदव्वमिदि वत्तव्वं । एवं उदीरिददव्वं चेव पहाणभावेण भणिदमण्णहा ओहिणाणं ओहिदंसणावरणं व उदयगोउच्छसहिदुदीरणदव्वग्गहणं पावदि । तं कथं ? एदेसिं दोण्हमुक्कस्सुदीरणमोहिलाभे ण होदि त्ति उत्तं[1] । तस्स कारणं भणिदं ।

---

1 मूलग्रन्थे 'णवरि विणा ओहिलंभेण' इति पाठोऽस्ति ।

पमत्तापमत्तद्धासु ओहिणाणसहेदु(जु)क्कस्सविसोहीहि ओकड्डिय सुहुमीकय[उदय]-गोउच्छत्तादो इदि। पृ० २५३.

एदस्सत्थो— ओकड्डिददव्वं परिणामयत्तं (यं, तं) पहाणं ण कदं, संतगोउच्छं चेव पहाणं कदं। एवं संते सव्वेसिं कम्माणं आउचउक्कमादउज्जोववज्जाणं सेसाणमसंखेज्जसमयपबद्धुदीरणं पावेदि। कुदो ? अप्पसत्थमरणेण सव्वेसिं कम्माणं गुणसेढिउदयदंसणादो।

(पृ० २६०)

पुणो भुजगारपरूवणा सुगमा। णवरि अप्पाबहुगम्मि किंचियत्थं भणिस्सामो। तं जहा—

मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा इदि उत्तं। पृ० २६१.

तं कधं ? असंखेज्जलोगपरिणामपडिभागियत्तादो। कथं तिण्णमद्धाणं समासपडिभागियमिदि ण घेप्पदे ? ण, तहा घेप्पमाणे सादादिपरावत्तोदये पयडीणं पुरदो भण्णमाणप्पाबहुगाणं विघडणादो।

भुजगारुदीरया असंखेज्जगुणा। पृ० २६१.

कुदो ? मदिआवरणवेदगसव्वरासिस्स किंचूणदुभामेत्तादो। तं पि कुदो ? विसोधिअद्धा वि संचिदत्तादो।

पुणो अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। पृ० २६१.

कुदो ? एदस्स पाओग्गसव्वजीवरासिस्स सादिरेयदुभागत्तादो। एदं पि संकिलेसद्धासंचिदमिदि घेत्तव्वं। तेसिं ठवणा

१३≡2५
≡2 ९
१३ ४
≡ 2९
१३७
≡ 2

।

पुणो पचण्हं दंसणावरणाणं एवं चेव वत्तव्वं। णवरि अवट्ठिदउदीरया थोवा। अवत्तव्वउदीरया असं०गुणा। पृ० २६१.

उवरि दो पदाणि पुव्वं व

व	१२७ / ५≡2	१३ / २७	१३४ / ५९	१३५ / ५९

, एदं गंथे उत्तं।

अथवा अवत्तव्वउदीरया थोवा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो ? अवट्ठिद-भुजगारप्पदरअद्धाओ कमेण सत्तसमय(या) आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तत्तो संखेज्जभागुत्तरा ओध-(द-)रिय पुव्वं व पुह पुह पंचणिद्दोदयजीवरासिपमाणम्मि आणिय तिविहरासिं ठविय पुणो सग-सगसव्वद्धाहि पुह पुह पंचणिद्दुदीरणरासिओवट्टिदे अवत्तव्वउदीरया होंति, ते पुव्विल्लरासीणं पुह पुह हेट्ठा ठविय जोइदे तहोवलंभादो। ते चेदे

१२२५ / ७२९
१३२४ / ७२९
१३७ ७ / ७२९
१३ / ७२७

। कथमेत्थ अवट्ठिदउदीरयाणं मग्गणट्ठं असंखेज्जलोगपडिभागो ण लद्धो ? ण, णिद्दोदएण परवसीभदाणं मंदपरिमाणं तारिसणियमस्सेदेसिं कम्माणमभावादो।

पुणो सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा अवट्ठिदउदीरया। पृ० २६१.

कुदो ? असंखेज्जलोगपडिभागियतप्पाओग्गासंखेज्जभागहारस्स वेदगसम्मादिट्ठिरासिम्मि उवलंभादो।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा इदि। पृ० २६२.

कुदो ? सगुवक्कमणकालेणोवड्डि(ट्टि)दवेदगसम्मत्तरासिपमाणत्तादो।

उवरिमदोपदाणि पुव्वं व। णवरि भुजगारपदमुवरि कादव्वं। कुदो ? सम्मादिट्ठीसु

संकिलेसद्धादो विसोहिअद्धाए विसेसाहियत्तुवलंभादो । तेसिं संदिट्ठी	प१ २५ 22९	।
पुणो सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा ।		अवत्तव्वउदीरया
असंखेज्जगुणा । पृ० २६२.	प २४ ३३ १९	
सुगममेदं ।		
पुणो भुजगारउदी० अप्पदरउदी० तुल्ला असंखेज्ज-	प'' ३३९	गुणा । पृ० २६२.
कुदो सरिसत्तं ? मिच्छत्त-सम्मत्तपरिणामाणं मज्झे ट्ठिद-स्सेदस्सुवलंभादो, तदो तत्थ ट्ठिददोण्हं किरियापरिणदजीवाणं	प३ ३२३	परिणामाणं परिणाम-सरिसत्तुवलंभादो ।

(पृ० २६२)

पुणो सादासाद-सोलसकसायादिपरूविदेगत्तरियपयडीणमवट्ठिदउदीरया थोवा ।

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तंतरकालस्स भागहारत्तुवलंभादो ।

पुणो अवत्तव्वउदीरया असंखे०गुणा । पृ० २६३.

कुदो ? सग-सगपाओग्गंतोमुहुत्तावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तं वा उवक्कमणकालपडि-भागियत्तादो ।

उवरिमदोपदाणि (पृ० २६३) सुगमाणि । कथं परावत्तोदयपयडीणं अवट्ठिदपमाण-संखेज्जलोगमेत्तंतरं संभवो ? ण, परावत्तोदयाणं उदयाणुदयसरूवट्ठिदाणमवट्ठिदपदाणं चेवंतरविवक्खादो ।

पुणो मिच्छत्तादिपरूविदट्ठपयडीणं णामस्स धुवोदयबारसपयडीणं (पृ० २६३) अप्पाबहुगाणि सुगमाणि ।

पुणो चउण्णमाउगाणमवट्ठिदा० थोवा । अवत्तव्वउदी० असंखेज्जगुणा । अप्प-दरउदीर० असंखे०गुणा । भुजगारउदी० विसेसाहिया । पृ० २६३.

एदेसिमत्थो सुगमो ।

केण कारणेण आउगाणं भुजगार० बहुवा ? पृ० २६३.

एदिस्से पुच्छाए अत्थो उच्चदे— मिच्छाइट्ठिम्मि उदीरिज्जमाणसव्वकम्माणमाउगवज्जाणं भुजगारुदीरगादो अप्पदरुदीरगा विसेसाहिया जादा । आउगाणं पुण अप्पदरादो भुजगारा बहुवा केण कारणेण जादा इदि पुच्छिदं होदि । पुणो तस्स उत्तरमाह—

जे असादा अपज्जत्ता ते असादोदएण बहुवयरवदे त्ति (बहुवयरा वड्ढंति) । जे साद(सादा) अप[ज्ज]त्ता ते बहुवयरा सादोदएण परिहायंति, थोवयरा वड्ढंति त्ति ।

एदस्सत्थो उच्चदे— जे जीवा असादा असादसंकिलेसपरिणदा अपज्जत्त(त्ता) पज्जत्तीहिं असंपुण्णा होदूण ट्ठिदा मज्झिमसंकिलेसपरिणदा ते जीवा असादोदएण दुक्खाणुभवणरूवेण ट्ठिदा बहुवयरा बहुजीवा वड्ढंति आउगस्स भुजगारं कुव्वंति । पुणो एदेण उवरिमसादोदयपरूवणम्मि थोवा वड्ढंति त्ति उत्तवयणेण सूचिदत्थो उच्चदे— थोवा जीवा विसोहिपरिणदा असादोदय-मज्झिमविसोहिपरिणद(दा) अपज्जत्ता च अप्पदरं कुव्वंति त्ति । पुणो जे जीवा साद(दा) विसोहिपरिणाममज्झिमविसोहिपरिणद(दा) अपज्जत्ता च ते जीवा बहुयरा बहुधा(वा) जीवा सादोदएण सुहाणुभवणरूवेण ट्ठिदा परिहायंति— अप्पदरं कुव्वंति, थोवयरा वड्ढंति— थोवा जीवा संकिलेसपरिणद(दा) अपज्जत्ता च भुजगारं कुव्वंति त्ति भणिदं होदि ।

एदस्स भावत्थो— असादोदयम्मि विसोहिअद्धादो संकिलेसद्धा सादिरेया, सादोदयम्मि विसोधिअद्धादो संकिलेसद्धा विसेसहीणा। चरिमावलियाए आउवउदीरणा णत्थि त्ति संकिलेस-भागाउवउदीरया होंति, तेसिं पि संखेज्जा भागा असादोदइल्ला होंति, संखेज्जदिभागो सादोदइल्ला होंति। अपज्जत्तद्धादो संखेज्जगुणाओ पज्जत्तद्धाओ होंति। अपज्जत्तगहणं मज्झिमविसोहि-संकिलेसाणं च गहणट्ठं उवलक्खणं भणिदं। पुणो तत्थ तिरिक्खाउगस्स उत्तचउव्विहरासिपंतीणं संदिट्ठी एसो(सा)—

१३८७७५ ९७७९ भ	१३८७५ भ ७७५	१३८७५ अ ९७७९	१३८५ अ ९७७२	१३८७४५ ९७९
१३८७७४ ९७७९ अ	१३८७४ अ ९७७९	१३८७४ भ ९७७९	१३८४ भ ९७७९	१३८७४ ९७९
१३८७७ ९७७२७	१३८७ ९७७२७	१३८७ ९७७२७	१३८ ९७७२७	१३८ ९२७
१३८७७ ९७७≡2	१३८७ ९७७≡2	१३८७ ९७७≡2	१३८ ९७७≡2	१३८ ९=2

एदेण कारणेण आउवाणं अप्पदरउदीरगादो भुजगारा बहुवा जादा। एवं सेसतिण्णमाउगाणं संदिट्ठी वत्तव्वं(व्वा)।

पुणो चउण्णमाणुपुव्वीणं अवट्ठिदउदी० थोवा। पृ० २६३.

कुदो ? दोसमयसंचिदरासिस्स तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवो वा [1]असंखेज्जलोगो वा भागहारोवलंभादो।

भुजगार० असंखेज्जगुणा। पृ० २६३.

कुदो ? दोसमयसंचिदरासिस्स किंचूणदुभागत्तादो।

अवत्तव्व० विसेसाहिया। पृ० २६३.

कुदो ? एगसम-[य] संचिदरासिपमाणत्तादो।

अप्पदर० विसेसाहिया। पृ० २६३.

कुदो ? दुसमयसंचिदरासिस्स सादिरेयदुभागत्तादो।

एत्थ चोदगो भणदि— एदमप्पाबहुगं तिरिक्खाणुपुव्वीए चेव घडदे, ण सेसाणं। कुदो ? पुव्वुत्तप्पाबहुगं तिविग्गहेण विणा ण घडदि त्ति ? ण, तिण्णं विग्गहाणं सव्वेसिमाणुपुव्वीणं अत्थित्ताभिप्पाएण उत्तत्तादो। अण्णहा सेसं(सेस-) तिण्णमाणुपुव्वीणं अवत्तव्वउदीरया अप्पदर-उदीरयाणं उवरि विसेसाहियं होज्ज। पुणो आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयराणं च परूवणा सुगमा। (पृ० २६४)

पुणो पदणिक्खेवस्स परूवणा सुगमा। णवरि अप्पाबहुगम्मि (पृ० २७१) किंचि अत्थं भणिस्सामो। तं जहा—

गदिआवरणस्स उक्कस्सहाणि(णी)अवट्ठाणं दो वि सरिसाणि थोवाणि। पृ० २७१.

कुदो ? उवसंतकसाएण उदीरिददव्वम्मि पुणो देवेसुप्पण्णदेवेसुदीरिदतत्थतणदव्वे अवणिदे सेसमुदीरणविरहियदव्वं हाणी अवट्ठाणं च होदि। तं चेदं | स ३२१२३ / ७४ ओ 22 |।

उक्कस्सिया वड्ढी असंखेज्जगुणा। पृ० २७१.

---

१ मप्रतितः संशोधितोऽयं पाठोऽस्ति। तत्संशोधनात् प्राक् स एवंविध आसीत्— दोसमयसंचिदरासिस्स किंचूणदुभागत्तादो। तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवो ओ वा......।

कुदो ? समयाहियावलियखीणकसाएणुदीरिदकिंचूणदव्वगहणादो | स ३२१२३१ / ७४ ओ 22 | । एवं सुदणाणावरणादिपरूविदे ऊणासीदिपयडीणं |७९| सग-सगपाओग्गदव्व-पडिबद्धप्पाबहुगं वत्तव्वं ।

पुणो **असादस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि सरिसाणि थोवाणि ।**

कुदो ? सत्थाणपमत्तसंजदेणुक्कस्सविसोहीण(हिणा) उदीरिददव्वं किंचूणीकदउदीरण-विरहिददव्वपमाणत्तादो । तं चेदं | स ३२१२४२ / ७५ ओ 2 ≡ २४२ | ।

उक्कस्सिया वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७१.

कुदो ? अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणमेत्तवड्ढिदव्वगहणादो | स ३२१२४2 / ७५ ओ ≡ 2४ | ।

पुणो **दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्सिया वड्ढी थोवा । पृ० २७१.**

कुदो ? सट्ठाणट्ठिदपमत्तसंजदेण विसोहीहि उदीरिदेत्तिय | स ३२१२ / ७ ख ९2 ≡ 2४ | मेत्तदव्व-गहणादो ।

पुणो **हाणी अवट्ठाणं च दो व तुल्लाणि विसेसाहियाणि । पृ० २७१.**

कुदो ? तप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलेसेणुदीरिददव्वेणेत्तिएण | स ३२१२ / ७ ख ९ ओ ≡ 22४ | तप्पाओग्गजहण्णविसोहीहि उदीरिददव्वादो एत्तियमेत्तादो | स ३२१२ / ७ ख ९ ओ 2 ≡ 2४ | असंखेज्जगुणहीणेण परिहीणपुव्विल्लतप्पाओग्गुक्कस्सविसोहीहिं उदी-रिदेत्तियमेत्तपमाणत्तादो— | स ३२१२ / ७ ख ९ ओ 2 ≡ 2४ | ।

पुणो **सादस्स हाणी अवट्ठाणं च थोवाणि । पृ० २७१.**

कुदो ? अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणदव्वपमाणत्तादो । केत्तिएणूणं ? तेण चेव पमत्तेण देवेसुप्पण्णपढमसमएणुदीरिददव्वमेत्तेण । तं चक्खुस्स दव्वमेत्तियं | स ३२१२ / ७५ ओ 2 ≡ 22४ | पुणो **वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७१.**

कुदो ? खवगसेढिपाओग्गअप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तेणुदीरिदकिंचूणदव्वमेत्तत्तादो । तं चेदं | स ३२१२ / ७५ ओ 2 ≡ 2४ | ।

पुणो **इत्थि-णउंसयवेद-अरदि-सोगाणं सव्वत्थोवं अवट्ठाणं । पृ० २७१.**

कुदो ? सत्थाणसंजदेणुक्कस्सविसो[ही]हिमुदीरिददव्वगहणादो ।

पुणो **हाणी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.**

कुदो ? उवसमसेढीए ओदरमाणेण पढमसमयवेदगेणुदीरिदकिंचूणदव्वपमाणत्तादो !

वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? खवगसेढीए चरिमसमयवेदगेणुदीरिदकिंचूणदव्वत्तादो ।

पुणो **आउगाणं वड्ढी थोवा । पृ० २७२.**

कुदो ? सग-सगगदीणं उक्कस्साणुभागवड्ढिं करेमाणेणुदीरिदसग-सगाउगदव्वाणं किंचूण-मेत्ताणं गहणादो ।

पुणो हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । पृ० २७२.

कुदो ? सग-सगगदीणं उक्कस्साणुभागुदीरणं हाणी(-दीरणहाणि) कदेणुदीरिदकिंचूणदव्व-पमाणत्तादो

स ३२२७
८ ज24

।

पुणो तिण्णं गदीणं चउण्णं जादीणं च परूवणा सुगमा । पृ० २७२.

पुणो मणुसगदि-ओरालियसरीरादीणं सत्तरसपयडीणं **वेउव्वियसरीरादि**चोद्दसपयडीणं च परूवणा सुगमा । ३१ । । पृ० २७२.

पुणो चउण्णमाणुपुव्वीणं उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च थोवा । पृ० २७२.

कुदो ? पढमविग्गहे तप्पाओग्गविसोहीए उदीरिददव्वम्मि बिदियविग्गहे तप्पाओग्ग-संकिलेसेणुदीरिदजहण्णदव्वेणूणीकयमेत्तत्तादो । एत्थ तिण्णमाणुपुव्वीणं अवट्ठाणं तिण्णि-विग्गहेण विणा ण संभवदि त्ति अभिप्पाएण वत्तव्वं ।

वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? कदकरणिज्जाण बिदियविग्गहम्मि उदीरिदकिंचूणदव्वगहणादो । तं पि कुदो ? जाव समयाहियावलियकदकरणिज्जो ताव असंखेज्जगुणदव्वमोकड्डुदि त्ति । तेसिं चउण्णं पि कमेण ट्ठवणा एसा—

स ३२१२३	स ३२१२३	स ३२१२३	स ३२१२३
७२६ ओ ≡ 2४	७२३ ओ ≡ 2४	७२३ ओ ≡ 2४	७२६ ओ ≡ 2४
स ३२१२	स ३२१२	स ३२१२	स ३२१२
७२६ ओ ≡ 2४	७२३ ओ ≡ 2४	७२७३ ≡ 2४	७२६७ ≡ 2४

पुणो उवसमसेढिम्मि उदयसंभवंतसंहद(ड)णाणं अवट्ठाणं थोवं । पृ० २७२.

कुदो सत्थाणसंजदम्मि उक्कस्सवड्ढिं कुदो (?)? ण, बिदियसमयावट्ठिद(दं) करेंतस्स उक्कस्स-दव्वगहणादो । किमट्ठमुवसंतकसायम्मि ण घेप्पदि ? ण, जम्मि वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि संभवंति तम्मि चेव अवट्ठाणगहणमिदि अभिप्पायादो ।

पुणो हाणी असंखेज्जगुणा ।

कुदो ? ओदरमाणुवसंतकसाएण सुहुमसांपराइए जादेणुदीरिददव्वम्मि हाणिदव्वं मोत्तूण उदीरिज्जमाणदव्वं चेव गहणादो ।

वड्ढी असंखेज्जगुणा ।

कुदो ? उवसंतेणुदीरिज्जमाणदव्वम्मि वड्ढिदव्वस्सेव गहणादो ।

पुणो सेसाणं हाणी थोवा । पृ० २७२.

कुदो ? सेसं (सेस-)तिण्णं संघा(घ)डणाणं सत्थाणसंजदम्मि उक्कस्सहाणिगहणादो ।

पुणो वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि विसेसाहियाणि[1] । पृ० २७२.

---

१ मूलग्रन्थपाठस्त्वत्रैवंविधोऽस्ति— उवसमसेढिम्हि उदयसंभवसंघडणाणं वड्ढी अवट्ठाणं थोवं । हाणी विसे० । सेसाणं संघडणाणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च विसे० ।

कुदो ? उक्कस्सहाणीए णिबंधणं होदूण ट्ठिदहेट्ठिमपरिणामादो अणंतगुणहीणपरिणामे ट्ठाइदूण उक्कस्सवड्ढीए वड्ढिदूण उदीरिदत्तादो विसेसाहियं जादं ।

पुणो अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं (अणादेज्ज-णीचागोदाणं) उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च थोवाणि । पृ० २७२.

कुदो ? सत्थाण विसोहीए ट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठीहिं उदीरिदुक्कस्सदव्वत्तादो ।

पुणो वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० २७२.

कुदो ? दंसणमोहक्खवणम्मि उदीरिदुक्कस्सदव्वगहणादो, अहवा अप्पमत्ताहिमुहाणं चरिमसमए उदीरिददव्वगहणादो ।

पुणो वड्ढिउदीरणप्पाबहुगम्मि (पृ० २७४) किंचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा इदि **। पृ० २७४.**

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्ताणं असमाणपदेसुदीरणणिबंधणाणं सादासादबंधकारणपरिणामाणं छवड्ढिकमेण ट्ठिदाणं रचणं कादूण पुणो तेहिं सव्वजीवरासिपमाणं एत्थ पाओग्गाणं भागे हिदे एगेगपरिणामम्मि ट्ठिदजीवा थोरुच्चएण आगच्छंति । पुणो तत्थ एगपरिणामट्ठिदजीवे ताव धरिय आणिज्जमाणे अवट्ठिदुदीरणविसयो एगपरिणामो १ होदि । पुणो तप्परिणामप्पहुडि एगखंडयं दुरूवाहियखंडेण गुणिदमेत्तपरिणामट्ठाणाणि असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणविसयाणि होंति ४६ । पुणो तत्तो उवरि तमद्धाणं रूवाहियं करिय जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स तिण्णिचउब्भागेण गुणिदमेत्ताणं संखेज्जदिभागवड्ढिउदीरणविसयं होदि $\frac{४६१६३}{४}$ । पुणो तत्तो उवरि एदमद्धाणं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स रूऊणछेदणेहि गुणिदमेत्तपमाणं संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणविसयं होदि $\frac{४६१६३ \text{ छे}}{४१}$ । पुणो तत्तो उवरि हेट्ठिमसयलद्धाणेणूणविवक्खिदेगपरिणामादो असंखेज्जगुणवड्ढिकारणत्तेण वड्ढिदुक्कस्सट्ठाणाणमसंखेज्जलोगमेत्ताणं असंखेज्जगुणवड्ढिविसयद्धाणं पमाणं होदि ≡३ ।

पुणो एदेसिमद्धाणाणं पक्खेवसंखेवेण एगपरिणामट्ठिदजीवस्स अद्धं किंचूणविसोहिपरिणदमंदसादिरेयं संकिलेसपरिणदमिदि । तदो (ते दो) वि रासयो पुह पुह ट्ठविय भागे हिदे तत्थ लद्धं पुह पुह पंचट्ठाणेसु पडिरासिं ठविय सग-सगपक्खेवेहिं गुणिदे सग-सगविसयरासयो आगच्छंति । तेसिं सदिट्ठी

१३≡2५ ≡2≡2९	१३≡2४ ९≡2≡2
१३५४६१६३ छे ≡2≡2९४	१३४४६१६३ छे ९≡2≡2४
१३४६१६३५ ≡2≡2९४	१३४६१६३४ ९≡2≡2४
१३४६५ ≡2≡2९	१३४६४ ९≡2≡
१३१५ ≡2≡2९	१३१४ ९≡2≡2

एदाणि तेरासिएण असंखेज्जलोगेहि गुणिदे सव्वपरिणामेसु ट्ठिदअवट्ठिदादिउदीरया होंति । तत्थ दोसु पंतीसु ट्ठिदअवट्ठिदं मेलाविय हेट्ठा ट्ठविय पुणो तदुवरिमरासिमाहप्पेण कमेण ट्ठविय अप्पाबहुगं भणणमाणे अवट्ठिदउदीरया थोवा जादा त्ति ।

पुणो असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । पृ० २७४.

कुदो ? विसयगुणगारमाहप्पादो ।

असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया। पृ० २७४.

गुणगारमाहप्पे दोण्हं सरिसत्ते संते गुणिज्जमाणरासिमाहप्पादो ।

एवं संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया ।

संखेज्जगुणवड्डिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणिउदीरया विसेसाहिया । असंखेज्ज-गुणवड्डिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जगुणहाणिउदीरया विसेसाहिया इदि । पृ० २७४.

एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

पुणो केसु वि पुत्थएसु **मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा, असंखेज्जभागवड्डि-असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया, संखेज्जभागवड्डि-संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । संखेज्जगुणवड्डि-संखेज्जगुणहाणिउदीरया विसेसाहिया । असंखेज्जगुणवड्डि-असंखेज्जगुणहाणिउदीरया विसेसाहिया** त्ति भणिदं ।

कथं एदस्सत्थो उच्चदे ? एवमुच्चदे—असंखेज्जभागवड्डिसद्दस्संतोट्ठिद अदीयो विहंतादिस्स ट्ठिदा (?) तदो तम्मि आदिं ट्ठविय तेसु सूचिदक्खराणि एवं भ(भा)णिदव्वाणि 'उदीरगा असंखेज्जगुणा' इदि । एवं सखेज्जभागवड्डि-संखेज्जगुणवड्डि-असंखेज्जगुणवड्डिसद्दाणं अंतो-आदिल्लच्छणं ट्ठविय तेण सूचिदाणि उदीरणसद्दपुव्वाणि कमेण संखेज्जगुणं असंखेज्जगुणमिदि घेत्तव्वं । उवरिमपदाणि सुगमाणि । एवं भण्णमाणे अत्थो घडदे ।

एदस्स एसो चेव अत्थो होदि त्ति कुदो णव्वदे ? ण, जहासरूवेण अत्थे भण्णमाणे पुव्वावरविरोहो होदि त्ति । तं कथं ? उच्चदे—

जेसिं कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेसिमप्पाबहुगं—

अवट्ठिदादो विसेसाहियं पुव्वं व भाणिय णेयव्वं जाव संखेज्जगुणहीण(हाणि)उदीरया विसेसाहिया त्ति ताव ।

तत्तो अव्वत्तव्वं असंखेज्ज गुणं । तत्तो असंखेज्जगुणवड्डि-असंखेज्जगुणहाणि-उदीरया विसेसाहिया त्ति भणिदं ।।पृ० २७४.

एत्थ संखेज्जगुणहाणिउदीरएहिंतो विसेसाहियाणं अवत्तव्वादो विसेसाहियाणं असंखेज्ज-गुणवड्डि-हाणिउदीरयाणं कथमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे ? ण, जदि असंखेज्जगुणत्तमेत्थ जुज्जदि तो पुव्विल्लम्मि किमट्ठं विसेसाहियत्तं भणिदं, दोण्हमप्पाबहुगपंतीणं समाणत्तं सदिस्स(-त्तस्स दिस्स) मागत्तादो । एवं पुव्वावरविरोधो अण्णेहि वि पयारेहि आणिज्जमाणे दोसा चेव पुव्वावरेण-दिस्सदि ।

पुणो **एवं सव्वकम्माणं कायव्वमिदि (पृ० २७४)** उत्ते चउणाणावरण-चउदंसणा-वरण-तेजा-कम्मइय - तव्वंधण- संघाद-पंचवण्ण - दोगंध-पंचरस-अट्ठफास-अगुरुगलहुग-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण-पंचंतराइयाणं वत्तव्वं । एत्तो उवरिमपयडीणमप्पाबहुगाणि सुगमाणि । एवं पदेसुदीरणा गदा ।

(पृ० २७५)

पुणो उवसामणोवक्कमो सगभेदगदो सुगमो । णवरि पयडिउवसामयअप्पाबहुगम्मि (२७९) किंचियत्थं भणिस्सामो । तं जहा—

सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया । पृ० २७९.

कुदो ? वासपुधत्तमंतरिय संखेज्जाणमुवसामयजीवाणं पमाणं लब्भदि तो पलिदोवमच्छेद-णयस्स असंखेज्जदिभागेणोवड्डि(ट्टि)दपलिदोवममेत्तुव्वेल्लणकालम्मि किं लभामो त्ति तेरासिएण

आणिदे एत्तियमेत्तं जादत्तादो । | प ७ / छे २७७ / 2 २७७ |

पुणो सम्मत्तुवसामया | प ७ / छे २७७ / 2 २७७ | **असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.**

कुदो ? अंतोमुहुत्तमंतरिय पल्लद्धच्छेदणयस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा वा सामण्णपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा वा लब्भदि तो पुव्वुत्तुव्वेल्लणकालादो असंखेज्ज[दिभाग]मेत्तुव्वेल्लणकालम्हि किं लभामो त्ति तेरासिएण लद्धुव्वेल्लणजा(जी)वा सम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठिजीवा च होंति त्ति । ते चेदा | प / छे २७ छे / 2३२७७22 | । अहवा | प / छे २७ | प / 22२७७ 22 | ।

सम्मामिच्छस्स उवसामगा | प / छे २७ छे / 2३२७७22 | **विसेसा-** | प / छे २७ | प / 22२७७ 22 | **हिया । पृ० २७९.**

कुदो ? उव्वेल्लणकालविसेसाहियत्तादो ।

मणुसाउगस्स उवसामगा असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.

कुदो ? सामण्णमणुसरासीए सगसंखेज्जदिभागेण अण्णगदीए ट्ठिदजीवाणं मणुसाउगबंधेण अहियत्तादो | १३७ / ≡७ | ।

पुणो णिरयाउवस्स उवसामया असंखेज्जगुणा । देवाउवस्स उवसामया असंखेज्जगुणा । पृ० २७९.

सुगमाणि एदाणि । कुदो ? पुव्वुत्तकारणत्तादो ।

पुणो देवगदिउवसामया संखेज्जगुणा । पृ० २७९.

कुदो ? पंचिंदियपज्जत्तजीवाणं देवगदिबंधेण सत्तुप्पाययपाओग्गाणं गहणादो | = / ४ / ० | । किमट्ठमुव्वेल्लंतरिदजीवा एत्तो असंखेज्जगुणा ण गहिदा ? ण, विवक्खावसत्तादो; अण्णहा असंखेज्जगुणा चेव होंति | = / ४ / 2 | ।

पुणो णिरयगदीए उव- | = / ४ / 2 | **सामगा विसेसाहिया । पृ० २७९.**

कुदो ? अपुव्वबंधट्ठिदजीवमेत्तेणहियउव्वेलणकालेणुव्वेल्लंतजीवमेत्तेण वा ।

पुणो वेगुव्वियसरीरणामाए उवसामगा विसेसाहिया । पृ० २७९.

कुदो ? अपुव्वदेवगदिबंधगजीवमेत्तेण । उवरिमपदाणि सुगमाणि ।

(पृ० २८२)

पुणो विपरिणामाणुवक्कमो सुगमो । एवमुवक्कमो गदो ।

उदयाणियोगद्दारं (पृ० २८५)

पुणो उदयाणियोगद्दारे पयडिउदीरयो (उदयो) सुगमो । णवरि उत्तरपयडीसु पवाइज्जंतोव**एसेणहस्स-रदिउदीरगेहिंतो सादवेदगा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जजीवमेत्तेणे त्ति । पृ० २८८.**

एदं सुगमं ।

अण्णेण उवदेसेण सादवेदगेहिंतो हस्स-रदिवेदगा विसेसाहिया असंखेज्जभागमेत्तेण । पृ० २८८.

एदं पि सुगमं, आइरियाणमुवदेसत्तादो । जुत्तीए वा— ण केवलं उवदेसेण विसेसा-

हियत्तं, किंतु जुत्तीए **विसेसाहियत्तं** असंखेज्जभागाहियत्तं **णव्वदे** जाणाविज्जदे ।

तं जहा— सव्वो आउगवेदगो[1] इदि उत्ते जीवा दुविहा घादाउवा अघादाउआ चेदि । तत्थ घादाउगाणं पमाणं सव्वाउगपरिणामट्ठाणेण भजिदसव्वजीवरासी सव्वपरिणामट्ठाणाणमसंखेज्जभागमेत्तघादपरिणामट्ठाणेहिं गुणिदमेत्तं होदि । तं चेत्तिया | १३ / ≡2 | । सेसा अघादाउवा । ते चेत्तिया | १३≡2 / ≡2 | ।

पुणो घादकारण-माउट्ठिदि (दिं)भणदि—

णियमा असादवेदगो इदि । पृ० २८८.

एदस्सत्थो उच्चदे— अघादाउओ णिच्चएण असादवेदगो चेव होदि त्ति । कुदो ? असादेण विणा घादाउगस्स घादाभावादो । किमसादं णाम ? दुक्खं । तं च दुविहं सरीरगदं परिणामगदं चेव । तत्थ सरीरगदं बादरजीवाणं पाओग्गाणं सत्थग्गि-जलासणिआदीहि सरीरपिंडेणुप्पण्णदुक्खं । परिणामगदं बादर-सुहुमजीवाणं उवघादादिकम्माणं तिव्वाणुभागोदय-सहाएणुप्पण्णसंकिलेसपरिणामाणं परिणामगद(दं) दुक्खं । तदो दुविहअसादेण घादो संभवदि त्ति उत्तं होदि ।

पुणो **हस्स-रदीसु भज्जं । पृ० २८८.**

एदस्सत्थो— आउवघादकाले हस्स-रदीणं उदयो भयणिज्जो होदि त्ति । कुदो ? काउलेस्सियजीवाणं केइ मरणम्मि मरणकंखा, एवं हस्स-रदीणमुदयमुवलंभादो । तदो घादाउगजीवसंखं ट्ठविय हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं वेदगद्धासमूहेण भजिय सग-सगपक्खेवेण गुणिदे दुविहरासी समुवलब्भदे । ते चेदाणि | १३ / ≡२५ | १८४ / ≡२५ | । पुणो अद्धासंखेज्जगुणविवक्खादो अघादाउगरासिं सादासादेसु विभज्जिदेसु तत्थ जेत्तिया सादवेदगा तेत्तिया हस्स-रदिवेदगा होंति । पुणो तत्थ जेत्तिया असादवेदगा तत्तिया अरदि-सोगवेदगा होंति ।

तेण सादवेदगेहिंतो हस्स-रदिवेदगा असंखेज्जदिभागेण विसेसाहिया[2] जादा । **पृ० २८८.**

तत्थ सादवेदया संदिट्ठियाए एत्तिया | १३≡2 / ≡२५ | । हस्स-रदिवेदया एत्तिया | १३≡2 / ≡२५ | १३ / ≡२५ | ।

(पृ० २८९)

पुणो ट्ठिदिउदीरयो (उदयो)वि सुगमो । णवरि जहण्णट्ठिदिवेदयकालम्मि **णाम-गोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं कालादो [होंति] ? जहण्णुक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । णवरि वेदणीयस्स जहण्णेणेगसमयो, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा (पृ० २९१)** इदि उत्ते एत्थ एगसमयं णाम पमत्तो चेव असंखेज्जट्ठिदिवेदगो अप्पमत्तो होदूण एगट्ठिदिवेदगो जादो, जादविदियसमए देवो जादो । एवं एगसमयो लद्धो । ण सेसेसु हेट्ठिमगुणट्ठाणेहिंतो पडिवण्णो एगसमयो होदि ।

पुणो अणुभागोदयपरूवणा (पृ० २९५) सुगमा ।

पुणो पदेसुदयसामित्तपरूवणा(पृ० २९६)सुगमा । णवरि उक्कस्ससामित्तम्हि **पंचण्हं संहडणाणं**

---

१ मूलग्रन्थे 'आउअघादओ' इति पाठोऽस्ति ।

२ मूलग्रन्थे 'हस्स-रदिवेदया असंखेज्जा भागा विसेसा०' इति पाठोऽस्ति ।

उक्कस्सपदेसोदयो कस्स ? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढीयो तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठिदिसंजदस्स जाहे पुव्वुत्तगुणसेढिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताहे पंचण्हं संहडणाणं उक्कस्सो पदेसोदयो इदि भणिदं। पृ० ३०१.

एदेण पंचण्हं संहडणाणमुदइल्लाणं जीवाणं दंसणमोहक्खवणसत्ती णत्थि त्ति भणिदं होदि।

पुणो वज्जणारायणकायणाणमुदइल्लाणं(?)पि उवसमसेढिचडणसंभवं णत्थि त्ति जाणाविदं। जदि एवं [तो] पुव्वावरविरोही(हो) किं ण भवे ? ण वा भवे, गंथांतरमाइरियाणमभिप्पायाणं सूचयत्तादो। तं कथं ? अभिप्पायं उच्चदे– एदेसिमुदयो पोग्गलविवागं करेदि। ते पोग्गला जीवाणं राग-दोसाणमुप्पायणणिमित्तसत्तिमुप्पादयंति। जहा वाहिरपोग्गलाणं सत्ते विपप्पो तहा उवसमसेढीए राग-दोसमुप्पाएदुं ण सक्किज्जदि त्ति। तदो तप्फलाभ(भा)वावेक्खाए उदयो उवसमसेढीए णत्थि त्ति सूचिदं। इदरगंथेसु पदेसणिज्जरामेत्त विवक्खिय भणिदं। अहवा, उवसमसेढिचडणसत्ती एदेसिं णत्थि त्ति एदमभिप्पायमिदि भ(भा)णिदव्वं।

(पृ० ३०२, ३०९)

पुणो जहण्णसामित्त-कालंतर-भंगविचय-णाणाजीवकालंतर-सण्णियासाणि सुगमाणि।

पुणो अप्पाबहुगमिदि उक्कस्सपदेसुदयदंडयो उच्चदे। तं जहा—

मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसुदयो थोवा(वो)। पृ० ३०९.

कुदो ? उदारिज्जमाणुक्कस्सदव्वेणब्भहियगुणिदकम्मंसियउक्कस्सजहाणिसेगगोउच्छेण संजुद(त्त) संजदमासंजम-संजमगुणसेढिसीसयाणं दोण्हं एगीभूदं होदूण उदयमागदाणं गहणादो। तस्स ट्ठवणा | स ३२१६६४ / ७ख१७ओप८५ |। किमट्ठं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं गुणसेढिसीसयाणं आगमणट्ठं तिगुणं ण सक्किज्जदे ? ण, तेसिं गुणसेढीणं एदस्स असंखेज्जदिभागमेत्तस्स एत्थ सादिरेयकयत्तादो।

पुणो सम्मामिच्छत्तुक्कस्सं विसेसाहियं। पृ० ३०९.

कुदो ? दुविहसंजमगुणसेढिसीसएहिं उक्कस्सगुणिदकम्मंसियजहाणिसेगगोउच्छाहियदोण्हं कम्माणं समाणे संते पुणो मिच्छत्तुदीरणदव्वादो सम्मामिच्छत्तुदीरणदव्वं परिणामवसेण असंखेज्जगुणं जादमिदि विसेसाहियं जादं। कुदो सेसदव्वाणं सरिसत्तं ? सम्मामिच्छत्तगुणसेढिसीसयदव्वाणं जहा— गोउच्छाणं एत्थ थिउक्कस्संकमेणागदत्तादो। तस्स संदिट्ठी | स ३२१६६४ / ७ ख १७ओ प 2५ |।

पुणो पयलापयलाए संखेज्जगुणं। पृ० ३०९.

कुदो ? पुव्विल्लदुविहगुणसेढिसीसयाणि उक्कस्सगुणिदकम्मंसिया जहाणिसेयसहिदपमत्तेणुदीरिज्जमाणदव्वसंजुदाणि होदूण सेसचउण्णं णिद्दाणं गुणसेढिसीसयदव्वाणं समूहस्स पंचमभागं थिउक्कस्संकमेण संकंतं पलि(डि)च्छियूण उदयमागददव्वं घेत्तूणुक्कस्सुदयं जादत्तादो। तस्स ट्ठवणा— | स ३२१२६४ / ७ ख५ओ प25 |। को गुणगारो ? वेपंचभागेण सादिरेयतिण्णिरूवाणि।

णिद्दा- णिद्दाए विसेसाहिया(यो)। पृ० ३०९.

कुदो ? पुव्विल्लेण सव्वहा(?)पयारेण समाणे संते वि पुव्विल्लस्सुदीरिज्जमाणदव्वादो एदस्सुदीरिज्जमाणदव्वं बहुवं, तदो विसेसाहियं जादं। तं कुदो ? पयडिविसेसादो विसोहिविसेसदव्वस्स हीणत्तादो। तत्थ पयडिविसेसो णाम दव्वाहियत्तं। पुणो पयलापयलाए मंदाणु-

भागेणुप्पण्णणिद्दा अप्पा, तदो तत्थतणविसोहीदो णिद्दाणिद्दाए तिव्वाणुभागेणुप्पण्णणिद्दम्मि विसोही अप्पं होदि । तदो पुव्विल्लादो उदीरिददव्वादो एदम्हादो उदीरिज्जमाणदव्वं विसेसहीणं होदि । तो वि पयडिविसेसेणब्भहियत्तादो उदीरिददव्वादो हीणपमाणं थोवमिदि तमेत्थ पहाणं जादं ।

पुणो **थीणगिद्धीए विसेसाहियं । पृ० ३०९.**

कुदो ? पुव्वुत्तकारणेण विसेसाहियत्तं एत्थ वि संभवादो ।

पुणो **अणंताणुबंधिचउक्काणं अण्णदरं विसेसाहियं । पृ० ३०९.**

कुदो ? एत्थ पुव्विल्लदुविहगुणसेढिसीसयाहि गुणिदकम्मंसिएसुक्कस्स जहाणिसेगगोउच्छेण उदीरिज्जमाणदव्वेण च अहियं होदूण अण्णदरसेसाणंताणुबंधिकसायतिगाणं दव्वा णत्थि उक्कस्सं कमेण(दव्वाण थिउक्कसंकमेण) संक(कं)ताणं मेलावणट्ठं च गुणिदमेत्तत्तादो । तं चेदं| स ३२१२६४४ / ७ख१७ओ प५ |। केत्तियमेत्तेण विसेसाहियं ? वेत्तिभागब्भहियपंचरूवेण खंडिदेयखंड मेत्तेण ।

पुणो एत्थ चउण्णं कसायाणं वेदिज्जमाणदव्वाणं सरिसत्तेण जाणिज्जदि चउण्णं कसायाण ओकड्डिददव्वम्मि असंखेज्जलोगपडिभागं घेत्तूणेगट्ठं करिय वेदिज्जमाणकसाएसु उदीरिज्जदि त्ति ।

पुणो **पच्च(अपच्च)क्खाणावरणचउक्काणं अण्णदरउदो० असंखेज्जगुणा । पृ० ३०९.**

कुदो ? गुणिदकम्मंसियस्स विसंजोइदअणंताणुबंधिचउक्कदव्वस्स बारसमभागं पडिच्छिद-अण्णदरकसायस्स उवसमसेढिं चढिय से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो होदूण तस्संतोमुहुत्तु-प्पण्णस्सुवसामगगुणसेढिसीसएहिं सहगददुविहसंजमगुणसेढिसीसयदव्वं गुणिदकम्मंसिय-णिसेयदव्वं उदीरिददव्वं च एगट्ठं कदे अण्णदरवेदिज्जमाणकसायदव्वं सेसण्णदरतिण्हं कसायाणं थिउक्कसंकमेण दव्वमेलावणट्ठं चउग्गुणकदमेत्तमुक्कस्सुदयदव्वं होदि त्ति। तस्स संदिट्ठी

| स ३२१२६४४ / ७ ख१२ओ २८५ |

पच्चक्खाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? मूलदव्वविसेसाहियत्तादो । गुणसेढिसीसयदव्वाणि समाणं होदूण जहाणिसेय-गोउच्छादो उदीरिददव्वाणि एदस्स अहियाणि होदि त्ति विसेसाहियं जादं ।

पुणो **पयलाए असंखेज्जगुणं । पृ० ३०९.**

कुदो ? उवरि उवसंतकसायस्स पढमगुणसेढिसीसएहि सहागदपुव्वुत्तदुविहगुणसेढिसीस-यदव्वं सेसचउण्णं णिद्दाणं थिउक्कसंकमदव्वसमूहस्स पंचमकालं(?)पलि(डि)च्छिय सगदव्वेणु-दीरिददव्वेण सहिदमेत्तमुदयमागदत्तादो । तं चेदं | स ३२१२६४ / ७५५ओ २८५ / 22 |।

पुणो **णिद्दाए० विसेसाहिया । पृ० ३०९.**

कुदो ? पुव्वं व पयडिविसेसेण ।

सम्मत्ते असंखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कथमेदं घडदे ? उवसंतकसायगुणसेढिदव्वादो दंसणमोहक्खवणगुणसेढिदव्वस्स असंखेज्जगुणं । तं कुदो ? एक्कारसगुणसेढीणं परूवयगाहाए सह विरोहप्पसंगादो । ण सव्व-दव्वाणमसंखेज्जभागमोकड्डिय णिम्मिदेक्कारसगुणसेढीणं चेव एसा गाहा उत्ता, ण पुण सव्व-दव्वेण णिम्मिद केसिं पि गुणसेढीणं चरिमणिसेयम्मि उत्ता; तहा सदि संतप्पाबहुअसमाण-मेदेसिमप्पाबहुगं पावेदि । एत्थ पुण सव्वदव्वाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डिऊण णिम्मियगुणसेढि-

दव्वादो सव्वदव्वं घेत्तूण णिम्मिदगुणसेढीए चरिमणिसेयस्स असंखेज्जगुणत्तं विचारिज्जमाणे णायसिद्धं सुघडमिदि उत्तं । तं चेदं | स ३२१३६४ / ७ ख १७८५ | । को गुणगारो ? असंखेज्जगुणमेत्तोक्कड्डुक्कड्डुणभागहारो | ओ २५ / १७ | ।

केवलणाणावरणं संखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? खीणकसाएण केवलणाणावरणसव्वदव्वं घेत्तूण कयगुणसेढिसीसयचरिमणिसेगगहणादो । को गुणगारो ? वेपंचभागब्भहियतिण्णि रूवाणि । ते चेत्तिया | स ३२१२६४ / ७५५८५ | । केवलणाणावरणणिसेयस्स चउब्भागमेत्तं ओधिणाणीणं ओधिणाणावरणणिसेगे- हिंतो आगच्छमाणं पलिच्छियाहियगुणगारं किं ण उत्तं ? ण, तहा सदि(ए)णिरयगदीसु अपच्चक्खाणावरणस्सुवरि केवलदंसणावरणं विसेसाहियं पावदि । ण चेदं । तदो एदस्स एत्थ वयाणुसारी आयो त्ति गेण्णिदव्वं ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? अणियट्टिगुणट्ठाणम्मि थीणगिद्धितिगस्स चउब्भागं सव्वसंकमेणागच्छमाणं पलिच्छिय खीणकसायचरिमसमए णिद्दा-पयलाणं चरिमणिसेयचउब्भागं पडिच्छिदसगचरिमगुणसेढिसीसयपमाणत्तादो । केत्तियमेत्तेण विसेसाहियं ? चउब्भागमेत्तेण | स ३२१२६४ / ७ख ४८५ | ।

देवाउगमणंतगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएण उक्कस्सवंधगद्धाए उक्कस्साबाहं कादूण दसवस्ससहस्सट्ठिदिदेवाउगं बंधिय णिसेयरयणं कदपढमणिसेयगहणादो अघादित्तादो अणंतगुणं जादं । तस्स ट्ठवणा | स ३२२७७१६ / ८२७७७१६९ | ।

पुणो णिरयाउगं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? देवाउगेण समाणसामित्ते संते वि एदस्साहियब्भंतरे देवाउगस्स आबाहब्भंतरसंकिलेसवारेण जायमाणोवलंभणादो अहियसंकिलेसवारेण बहुवमोवलंभणं जादमिदि ।

पुणो मणुस्साउगं संखेज्जगुणं । पृ० ३०९.

कुदो ? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स तप्पाओग्गुक्कसजोगिस्स उक्कस्सबंधगद्धाए जहण्णाबाहं करिय तिपलिदोवमाउगं बंधिय कमेण तत्थुप्पज्जिय सव्वलहुमाउगं सव्वजहण्णपाओग्गजीव(वि) दव्वं मोत्तूण घादिय तत्थ कदलीघादस्स पढमणिसेयोदयदव्वगहणादो । तं कुदो ? भोगभूमीए कदलीघादमत्थि त्ति अभिप्पाएण । तं चेदं | स ३२२७७१६ / ८२७७७१६ | । पुणो भोगभूमीए आउगस्स घादं णत्थि त्ति भणंताइरियाणं अभिप्पाएण पुव्वं बद्धजलचराउओ जलचरेसुप्पज्जिय जलचराउवं पुव्वं व घादिय तत्थ कदलीघादस्स पढमगोउच्छदव्वं गहेदव्वं ।

तिरिक्खाउगं विसेसाहियं । पृ० ३०९.

कुदो ? एत्थ पुव्वं व दुविहपयारेणुक्कस्सदव्वं होदि त्ति वत्तव्वं । किंतु परिणामविसेसे अप्पणो[व]लंभवहुत्ते विसेसाहियं जादं ।

पुणो एत्थ सूचिदस्स आदावस्सुक्कस्सोदयदव्वं संखेज्जगुणं । कुदो ? णामस्स गुणिदकम्मंसियो बीइंदिएसुप्पज्जिय सगट्ठिदिसंतसमाणेण ट्ठिदिं लहुं घादिदूण ट्ठविय एइंदियसुप्पज्जिय तत्थ वि ट्ठिदीयो घादिय पुढविकाइएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्ते गदे संते आदाउदयमागच्छदि, तस्स पढमसमयमुदयमागददव्वपमाणत्तादो । एदस्स पमाणं एगसमयपबद्धस्स सत्तमभागस्स चउव्वीस-

भागमेत्त(त्तं) बंधण-संघादेण सह छव्वीसभागमेत्तं वा होदि। तेसिं ट्ठवणा | स ३२/७२४ | स ३२/७२४ |।

आहारसरीरमसंखेज्जगुणं। पृ० ३१०.

गुणिदकम्मंसियजहाणिसेयसहिदसंजमगुणसेढिसीसयस्स णामकम्मणिबंधस्स तेवीसभागस्स वा पंचवीसभागस्स वा तिभागत्तादो | स ३२१२६४/७२३३ ओ 2५ | स ३२१२६४/७२५३ ओ2८५ |। पुणो एदेण सूचिदतब्बंधण-संघादाणं दोण्हमेवं चेव वत्तव्वं। णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहिया होंति। पुणो वि सूचिदआहारसरीरंगोवंगं संखे० गुणं। कुदो ? एत्थ वि विभंजणं पुव्वं व होदि। णवरि तिभागं णत्थि। तदो चेव कारणादो संखेज्जगुणं जादं। पुणो सूचिदउज्जोवणामाए उक्क० विसेसाहिया। कुदो ? उत्तरविगुव्विदपमत्तसंजदम्मि उज्जोवोदए जादे संते पच्छा अप्पमत्तभावं गदम्मि संजमगुणसेढिसीसे दव्वस्स णामसंबंधियस्स छव्वीसभागस्स वा अट्ठावीसभागस्स वा पमाणत्तादो। पुणो पच्छय(?)विसेसेण विसेसाहियं। पुणो सूचिदसाधारणसरीरं विसेसाहियं संखेज्जदिभागेण। कुदो ? दोण्हं संजमगुणसेढिसीसयाणं णामसंबंधीणं बावीसभागस्स वा चउवीसभागस्स वा होंति त्ति | स ३२१२९४/७२२ ओ2८५ | स ३२१२६४/७२४ ओ2८५ |। पुणो केत्तियमेत्तेणधिया ? साद्धपंचरूवेण वा छरूवेहि वा खंडिदेगखंडमेत्तेण।

पुणो एइंदियादिचत्तारिजादि-थावर-सुहुम-पज्जत्तमिदि सत्त पयडीओ विसेसाहियाओ संखेज्जदिभागेण। कुदो ? पुव्वुत्तणामस्स दुविहगुणसेढिसीसयस्स एत्थ वि वीसं बावीसभागं वा होदि त्ति। णवरि एत्थ चत्तारि जादीयो एक्केक्केण सरिसाओ होंति। तदो सेसाणि विसेसाहियाणि त्ति जाणिय वत्तव्वं। तेसिं ट्ठवणा | स ३२१२६४/७२० ओ 2८५ | स ३२१२६४/७२२2८५ |।

पुणो वि अंतिमपंचसंहडणाणि असंखेज्जगुणाणि। कुदो ? दुविहसंजमगुणसेढिसीसएणब्भहियमणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढिसीसयाणि त्ति तिण्णि वि एगट्ठं काऊण णामकम्मसंबंधीणं अट्ठावीसेण वा तीसेण वा भजिदमेत्तं होदि त्ति। ट्ठवणा | स ३२२१२६४/७२८ ओ 2८५ | स ३२२१६४/७३० ओ 2८५ |। किमट्ठं दंसणमोहक्खवणगुणसेढी ण घेप्पदे ? ण, तं खवण- (तक्खवण-)सत्ती एदेसिं संहडणाणं उदयसहिदजीवाणं णत्थि त्ति अभिप्पायादो। बिदिय-तदियमिदि दोण्हं संघडणाणं उवसंतकसायगुणसेढी किं ण गहिदा ? ण, दंसणमोहक्खवणासत्तिविरहिदाणं उवसमसेढिचडणसत्तीणं संभवविरोहो होदि त्ति अभिप्पाएण। जदि एवं[तो]अणंतरादिक्कंतउदीरणट्ठाणपरूवणाए ण मियूणेण(?)च विरोहो किं ण भवे ? होदि विरोहो, गंथंतराभिप्पाएण दोण्हं पि गहणं कायव्वं इदि पुव्वं चेव परिहारं दिण्णत्तादो। एत्थ सूचिदाओ सत्तारस पयडीओ होंति |१७|।

पुणो णिरयगदिणामाए० असंखेज्जगुणा। पृ० ३१०.

कुदो ? संजमासंजम-संजमगुणसेढीयो कमेण करिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउगं बंधिय पुणो वि सम्मत्तं लहुं घेत्तूण दंसणमोहं खविय तिण्णि वि गुणसेढिसीसयमेगट्ठं करिय णिरएसु विग्गहं कादूणुप्पण्णपढमसमए उदिण्णणामकम्मं सव्वदव्वस्स वीसदिभागस्स बावीसदिमभागस्स पमाणं होदि त्ति। तेसिमंकाणि | स ३२१२६४/७२० ख 2८५ | स ३२१२६४/१२२ ओ 2८५ |। कथं मिच्छत्तेणच्छणं णिरयाउगबंधणं सम्मत्तेणच्छणं अणंताणुबंधिविसंजोयणं दंसणमोहक्खवणमिदि पंचण्णं अद्धाणं समूहादो दोण्हं गुणसेढिअद्धाणप्पाबहुगमिदि णव्वदे ? सामित्तपरूवणादो। पुणो सूचिदणिरयगदिपाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया। कुदो ? सव्वपयारेण पुव्विल्लेण समाणं होदूण पयडिविसेसेण बहुगं जादत्तादो।

पुणो तिरिक्खगदिणामाए विसेसाहिया । पृ० ३१०.

कुदो ? पुव्वपयडीए समाणसामित्ते संते वि णिरयगदिसंतादो एदस्स संतमसंखेज्जगुणं । जेण तदो तत्तो ओक्कड्डिय उदीरिज्जमाणमसंखेज्जगुणं जादमिदि विसेसाहियं जादं । सूचिद-तिरिक्ख[गदि]पाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया पयडिविसेसेण । पुणो वि सूचिददूभग-अणादेज्जाणि कमेण विसेसाहियाणि होंति । कुदो ? एदेसिं तिविहगुणसेढिसीसयादिदव्वेहिं समाणे संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं । एत्थ सूचिदतिण्णिपयडीयो होंति ।

अजसगित्ती विसेसाहिया । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण सेससव्वपयारेण समाणत्तादो ।

णीचागोदस्स संखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

कुदो ? गोदकम्मस्स तिविहगुणसेढिसीसयदव्वाणं सादिरेयजहाणिसेयगोउच्छेणहियाणं गहणादो । ट्ठवणा | स ३२१२६४ / ७ ओ २८५ | । को गुणगारो ? वीसरूवाणि बावीसरूवाणि वा होंति ।

पुणो वेगुव्वियसरीरणामाए असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.

कुदो ? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेढिसीसयं सादिरेयमेत्तं, देवेण वेगुव्वियसरीररूवेण वेदिज्जमाणपमाणत्तादो । तं च केत्तिया ? उवसंतकसाएण णामकम्मस्स कयगुणसेढिसीसयव्वस्स तेवीसभागस्स वा पंचवीसभागस्स वा तिभागत्तादो । तं चेदं | स ३२१२६४ / ७२३३ ओ २८५ | स ३२१२६४ / ७२५३ ओ २८५ | । पुणो सूचिदतव्बंधण-संघादाणं दो वि कमेण विसेसाहियाणि पयडिविसेसेण । वेगुव्वियंगोवंग० संखेज्जगुणं । कुदो ? एदस्स दव्वपमाणे पुव्विल्लेण समाणे संते वि एत्थ तिभागाभावादो संखेज्जगुणं जादं । पुणो वि सूचिददेवगदिणामाए विसेसाहियं[1] । कुदो ? वीसदिमभागत्तादो । देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी विसेसाहिया पयडिविसेसेण ।

दुगुंछाए असंखेज्जगुणं । भयं तेत्तियं चेव । पृ० ३१०.

कथमेदं घडदे, उवसंतकसायगुणसेढिदव्वादो अणियट्टिउवसामयस्स से काले अंतरं काहिदि त्ति कालं कादूण देवेसुप्पण्णस्स जहण्णहस्स-रदिवेदगकालं बोलेदूण उदिण्णगुणसेढि-सीसयदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तविरोहादो ? सच्चं विरोहो चेव, किंतु तं घेप्पमाणे देवगदीए एदेहिंतो असंखेज्जगुणं होदि । तदो तं सामित्तं मोत्तूण बिदियपयारसामित्तमस्सिय एदमप्पा-बहुगं उत्तमिदि तं घडदे । तं जहा— अपुव्वखवगस्स चरिमसमए उदयमागददव्वगहणादो तं सामित्तमस्सियूण एदमप्पाबहुगं परूविदमिदि णव्वदे ।

किमट्ठं दुप्पयारसामित्तमण्णोण्णविरोधं परूविदं ? **अभिप्पायंतरपयासणट्ठं** परूविदत्तादो । तं जहा— उदिण्णपरमाणुणा उप्पण्णभय-दुगुंछपरिणामफलं अवेक्खिय पड(ढ)मिल्लं उत्तं । बिदियाहिप्पायं पुण परमाणुणिज्जरमेत्तमवेक्खिय उत्तं । एदेण पुण राग-दोस-मोहुप्पाययकम्माणमुदयो खवगुवसमसेढीसु णिज्जरमेत्ताणिदट्ठाणं तेसिं फलमवेक्खिय उत्तमिदि घेत्तव्वं । तत्थ दुगुंछा-दव्वपमाणं भयगुणसेढिसीसयदव्वं दुगुणं सादिरेयमेत्तं होदि । भयं तेत्तियं चेवे त्ति उत्ते दो वि अण्णोण्णम्मि त्थिउक्कसंकमेण संकमिदत्तादो । किमट्ठं पयडिविसेसेण विसेसाहियं ण जादं ? ण, दोण्णमोक्कड्डिददव्वाणं असंखेज्जलोगपडिबद्धमेगट्ठं करिय उदयावलियब्भंतरे संछुहिदत्तादो समाणं जादमिदि उत्तं । एवं अण्णेसु वि पयडीसु संभवं जाणिय वत्तव्वं । तस्स ट्ठवणा

---

[1] मूलग्रन्थे 'देवगइणामाए संखे० गुणो' इत्येतद्वाक्यं तदङ्गभूतमेव समुपलभ्यते ।

स ३२१२६४२
७१० ओ २८५
2222

हस्स-सोग० विसेसाहिया। पृ० ३१०

केत्तियमेत्तेण? दुभागमेत्तेण। कुदो? हस्सस्सुवरि सोगं सोगस्सुवरि हस्सं थिउक्कस्संकमेण संकमदि, पुणो तम्मि भय-दुगंछा दो वि थिउक्केण संकमिदे जादत्तादो। सेसं पुव्वं व। तं चेदं

स ३२१२६४२
७१०ओ२८५
2222

अरदि-रदी विसेसाहिया। पृ० ३१०.

कुदो? रदीए उवरि अरदी, अरदीए उवरि रदीयो थिउक्कसंकमेण संकमिय तम्मि भय-दुगुंछा वि अक्कमेण संकमिय उदीरियदव्वेण सहिदे कदे जं दव्वं तं पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं।

इत्थिवेदे असंखेज्जगुणं। पृ० ३१०.

कुदो? इत्थिवेदचरिमसमयअणियट्टिगुणसेढिगोउच्छादीणं गहणादो।

णउंसयवेदो विसेसाहिओ। पृ० ३१०.

कुदो? पयडिविसेसेण। को पयडिविसेसो णाम? उच्चदे—इच्छिदिच्छिदपयडीयो ओकड्डिय गुणसेढिसरूवेण वा इदरसरूवेण इदि दुविहपयारेण संछुहमाणो जहाणिसेगगोउच्छेण तत्थ जं जं थोवं तं तं बहुगम्मि सोहिदे सेसं तदुदयदव्वादो बहुवं वा थोवं वा होदि, तं पयडिविसेसं णाम। एत्थ पुण इत्थिवेदगदव्वादो णउंसकवेददव्वं संखेज्जगुणं संतदव्वेण जादे वि ओकड्डिदूण गुणसेढिकददव्वं दोण्हं सरिसं संते वि गोउच्छविसेसेणहियं जादं, इदर[धा]दुविहपयारउदीरणाभावादो। एदमत्थमुवरि वि सव्वत्थ संभवं जाणिय वत्तव्वं।

पुरिसवेद० असंखेज्जगुणं। पृ० ३१०.

एत्तो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण उप्पण्णअणियट्टिगुणसेढिगोउच्छादो।

कोधसंजलणाए० असंखेज्जगुणं। माणसंजलणाए असंखेज्जगुणं। मायासंजलण० असंखेज्जगुणं। पृ० ३१०.

सुगमं। णवरि संतदव्वस्स थोवबहुत्तं अणवेक्खिय ओकड्डियूण करेंतगुणसेढिपरिणामविसेसमवेक्खिय पयट्टदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ पुण सूचिदपयडीसु दुस्सरमादी० असंखेज्जगुणा। कुदो? वचिजोगणिरोहकारयचरिमसमयसजोगीहि वेदिज्जमाणदव्वगहणादो। तस्स पमाणं णामकम्मस्स गुणसेढिदव्वस्स अट्ठावीसभागं वा तीसभागं वा होदि त्ति। सुस्सर० विसेसाहिया पयडिविसेसेण। उस्सास० असंखेज्जगुणा। कुदो? अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूणुस्सासणिरोहादो। एत्थ वेदिज्जमाणपयडिसंखाविसेसो जाणिदव्वो। एत्थ सूचिदाओ तिण्णि।

पुणो ओरालियसरीर० असंखेज्जगुणा। पृ० ३१०.

कुदो? सजोगिकेवलिस्स चरिमसमयम्मि उदयणामकम्मगुणसेढिस्स विगू(गु)णचालीसभागस्स वा इगिदालीसभागस्स वा तिभागत्तादो। तं कथं? अणियट्टिगुणट्ठाणम्मि तिरिक्खगदिसंबंधितेरसपयडीओ खविदाणि, ताणि सव्वसंकमेण जसगित्तीए उवरि संकमिदं। तेणेत्थ वि संभवंतट्ठावीसपयडीसु तिण्णिसरीरं जसगित्तिं च अवणिय पुणो सेसपयडिम्हि सरीरणिमित्तमेगं जसगित्तिणिमित्तचोद्दसं च पक्खेवं कायव्वं। कदे उत्तपढमभागहारं

होदि । तम्हि बंधण-संघादं पक्खित्ते इदरभागहारपमाणं होदि ? कथं तमेत्थ पलिच्छिदपयडि-मेत्तभागं लहदि त्ति णव्वदे ? ण, तेत्तियमेत्त तेसिं संजोगेण तस्स माहप्प उप्पण्णत्तादो ।

तेजइगसरीरं विसेसाहियं । कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

एदाणि सुगमाणि पयडिविसेसावेक्खाणि । पुणो सूचिद तेसिं बंधण-संघादाणं छप्पयडीणं सग-सगट्ठाणेसु कमेण विसेसाहियाणि होंति । तेसिं कारणं सुगमं |६| । पुणो वि सूचिदछसंठाणाणि ओरालियंगोवंग-वज्जरिसहसंहडण-पंचवण्ण-दोगंध-पंचरस-अट्ठफास-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-दोविहायगदि-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिणणामाणि संखेज्जगुणाणि होदूण एदाणि कमेण विसेसाहियाणि होंति । णवरि वण्ण-गंध-रस-फासभेदे अस्सियूण भण्णमाणे वण्ण-गंध-रस-फासभागाणि अस्सियूण एगूणचालीसभागस्स वा इगिदालीसभागस्स वा भागपडिबद्धगुणसेढिदव्वाणि ठविय सग-सगभेदेहिं भागे हिदे सग-सगपयडीणमुदयदव्वाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि होंति, जहा तहा विभंजिदत्तादो ।

पुणो एदाणि अप्पाबहुगपंतीए आणिज्जमाणाए उस्सासणामादो पढमफासमसंखेज्जगुणं । तत्तो उवरि सग-सगट्ठाणे कमेण विसेसाहियाणि । तत्तो पढमवण्णं संखेज्जभागुत्तरं, [उवरिम-] पयडीयो पयडिविसेसेण विसेसाहियाओ । एवं रसं पि कमेण विसेसाहियं । तत्तो ओरालियसरीरं संखेज्जभागुत्तरं । पुणो तेजइगं विसेसाहियं । [कम्मइगं विसेसाहियं ।] तेसिं बंधण-संघादछक्काणि विसेसाहियकमेण बोलिय तत्तो पढमगंधं संखेज्जभागुत्तरं, इदरगंधं पयडिविसेसेण अहियं होदि त्ति वत्तव्वं । एत्थ सूचिदसव्वपयडीयो एगूणचालीसाओ |३९| ।

पुणो **मणुसगदी असंखेज्जगुणा । पृ० ३१०.**

कुदो ? अजोगिचरिमसमयसीसयस्स वावीसभागत्तादो । तं पि कुदो ? मणुसगदिआदि-अट्ठ पयडीओ एगेगभागं लहंति, जसगित्ती चोद्दसभागं लहंति त्ति । ते सव्वे पक्खेवे मेलिदे बावीसं होदि, तेहिं भजिदगुणसेढिदव्वत्तादो । पुणो एदेण सूचिदपंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभगादेज्ज-तित्थयराणमिदि सत्त पयडीओ कमेण विसेसाहियाओ होंति । णवरि तित्थयरं मणुसगदीदो संखेज्जभागहीणं होदि । कुदो ? तेवीसभागत्तादो ।

दाणंतराइयं संखेज्जगुणं । पृ० ३१०.

कुदो ? सव्वुक्कस्ससंचयस्स किंचूणकयपमाणत्तादो । तं चेदं | स ३२१२ 2 / ७५२ | । को गुणगारो ? वेपंचभागेणब्भहियचत्तारि रूवाणि ।

लाभंतराइगं विसेसाहियं । भोगांतराइगं विसेसाहियं । परिभोगांतराइगं विसेसाहियं । वीरियंतराइगं विसेसाहियं[1] । पृ० ३१०.

कुदो ? पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तादो ।

ओहिणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? खयोवसमविरहिदखीणकसायम्मि सव्वुक्कस्ससंचयं किंचूणमेत्तमुदिण्णत्तादो । तस्स ठवणा | स ३२१२ 2 / ७४२ | । केत्तियमेत्तेणहियं ? चउब्भागमेत्तेण ।

मणपज्जवणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१०.

कुदो ? ओधिणाणावरणगुणसेढिदव्वं उदयावलियं पविस्समाणं जहाणिसेगगोउच्छपमाणं

१ मूलग्रन्थे तु 'असंखे० गुणो' इति पाठोऽस्ति ।

मोत्तूण सेसा संखेज्जा भागा तिविहदेसघादिणाणावरणेसु संकमंति त्ति, एत्थ पुण तिभागाहियं जादं। तं चेदं ७ ।

ओहि- | स ३२१२५ / ७३२ | दंसणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३१०.

कुदो? पयडिविसेसेण।

सुदणाणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३१०.

कुदो? ओधिणाणावरणखओवसमे संते तस्सुदयावलियं पविस्समाणगुणसेढिदव्वस्स असंखेज्जभागं पडिसेढि, सेसा संखेज्जा भागा मदि-सुद-मणपज्जवणाणावरणेसु थिउक्कसंकमेण संकमदि त्ति दोण्हं पि अंकविण्णासेण समाणं होदूण एदं पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं।

किमट्ठं केवलणाणावरणे ण संकमदि? ण; तत्थ वि संकमदि। किंतु तं तत्थ अणंतिम-भागत्तादो अप्पहाणमिदि उत्तं। तं कुदो णव्वदे? हेट्ठिल्लाणमप्पाबहुगाणं उत्तकमाणं अण्णहा विघडणादो। ठवणा | स ३२१२५ 2 / ७३ 2 |।

मदिणाणा- वरणं विसेसाहियं। पृ० ३१०.

कुदो? पयडिविसेसेण।

अचक्खुदंसणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३१०.

कुदो? ओहिदंसणावरणखओवसमे संते तस्स गुणसेढिदव्वं उदयावलियं पविस्समाणं पुव्वं व संखेज्जा भागा अचक्खुदंसणेसु संकमदि, सेसेगभागं पविसदि त्ति। पुणो एत्थ संखेज्ज-भागुत्तरं जादं | स ३२१२ ख / ७२३ |।

पुणो चक्खुदंसणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३१०.

कुदो? पयडिविसेसेण।

जसगित्तिणामाए विसेसा०। पृ० ३१०.

कुदो? णामकम्मुक्कस्सगुणसेढिदव्वस्स बावीसभागस्स चोद्दसगुणकिंचूणसेत्तपमाणत्तादो। तं केत्तियमे[त्ते]णहिया? बेत्तिभागेणब्भहियतिरूवेण खंडिदेगखंडमेत्तेण। तस्स ठ्ठवणा | स ३२१२१४५ / ७२२ 2 |।

उच्चागोद० विसेसाहिया। पृ० ३१०.

केत्तियमेत्तेण? तिण्णिचउब्भागेणब्भहियएगरूवेण | १ ३ / 4 | खंडिदेगखंडमेत्तेण | स ३२१२ 2 / ७2 |।

लोभसंजल० विसेसाहियं पयडिविसेसेण। पृ० ३१०.

सादासादाणि सरिसाणि विसेसाहियाणि[1]। पृ० ३१०.

कुदो? पयडिविसेसेण। एवमोघुक्कस्सप्पाबहुगं गदं।

पुणो णिरयगदीए उक्कस्सप्पाबहुगं उच्चदे—

उक्कस्सपदेसोदयो सम्मामिच्छत्तेण (सम्मामिच्छत्ते) थोवो। पृ० ३१०.

कुदो? गुणिदकम्मंसियणेरइयो अंतोमुहुत्तावसेसे उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय पच्छा सम्मामिच्छत्तं गंतूणावलियमेत्तकालं गदस्स उदिण्णगुणिदकम्मंसियस्स उक्कस्सणिसेयगोउच्छ-पमाणत्तादो। तं चेदं | स ३२ / ७ ख ७७ |।

पयला० संखेज्जगुणा। पृ० ३१०.

---

१ मूलग्रन्थे तु 'सादासादाणं विसे०' इत्येवंविधः पाठोऽस्ति।

कुदो ? सो चेव गुणिदकम्मंसियो णिद्दोदयगोउच्छाए उवरि सेसणिद्दाचउक्काणं उदयगोउच्छाणं पंचमभागं पलिच्छणपयडिअणुसारेण विसेसाहियेण थिउक्कसंकंतेण(संक्रमेण) संकमदि त्ति पक्खित्ते एत्तियं जादत्तादो | स ३२ / ७ ख ५ | सेसणिद्दाचउक्काणं अणंतिमभागं सव्वघादीसु संकमदि । सेसबहुभागं देसघादीसु संकमदि त्ति वयणेण विरोहो कथं ण भवे ? ण भवे । कुदो ? देसघादीणमेस संकमणियमुवलंभादो, ण सव्वघादीणमेस णियमो । जदि एवं तो पक्ख(क्ख)मम्मि किमट्ठं ण उत्तं ? ण, बंधोदयाणमेगसहवत्ताभावादो ।

णिद्दाए० विसेसाहिया । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

मिच्छत्तस्स असंखे० गुणं । पृ० ३११.

कुदो ? उदीरणदव्वेण सादिरेयतप्पाओग्गुक्कस्सणिसेगेण अब्भहियदुविहसंजमगुणसेढिदव्वस्स अपज्जत्तकाले उदीरणदव्वस्स गहणादो । तं चेदं | स ३२१२६४ / ७ ख १७ओ २८५ | ।

अणंताणुबंधीणं संखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? सादिरेयदुविहसंजमणसेढिसीसयदव्वं सगेगकसायपडिबद्धं ठ्ठविय सगसेसतिविहकसाय-दुविहगुणसेढिदव्वं मेलावणट्ठं चउहिं गुणिदमपज्जत्तकाले उदिण्णदव्वगहणादो । तस्स संदिट्ठी | स ३२१२६४४ / ७ ख १७ ओ २८५ | ।

केवलणाणावरणं असंखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? सादिरेयदुविहसंजमगुणसेडिसीसयदव्वेणब्भहियदंसणमोहक्खवणगुणसेढिदव्वाणं अपज्जत्तकाले उदिण्णाणं गहणादो । तं चेदं | स ३२१२६४ / ७ ख ओ २८५ | ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? चउब्भागमेत्तेण ? कुदो ? पुव्वुत्तसादिरेयमेत्ततिविहगुणसेढिसीसयपमाणकेवलदंसणावरणस्सुवरि पंचण्हं णिद्दाणं तिविहगुणसेढिसीसयदव्वाणं समूहस्स चउब्भागं थिउक्कसंकमणसंकमिदत्तादो । तं चेदं | स ३२१२६४ / ७ ख ओ प ८५४ / 22 | ।

अपच्चक्खाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जभागमेत्तेण । कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिम्मि अणंताणुबंधिविसंजोयणाए अणंताणुबंधिचउक्कदव्वस्स बारसमभागं पलिच्छिदकसायदव्वस्स दंसणमोहं खविदस्स पुव्वुत्तविविहगुणसेढिसीसयदव्वं सगसेसकसायतिविहगुणसेढिसीसयदव्वागमणट्ठं चउरूवगुणिदमेत्तपमाणत्तादो । कथं(?)अणंताणुबंधीणमणंतिमभागं सव्वघादीसु, बहुभागं देसघादीसु संकमदि त्ति वयणेण विरोहो किं ण भवे ? ण, तब्बंधदव्वपडिबद्धा णियमं संतदव्वं हीणं संभवदि त्ति उत्तुत्तरत्तादो । एदेण अप्पाबहुगेण ओहिदंसणावरणखओवसमजीवो तस्स दव्वं केवलदंसणावरणे थिउक्कसंकमेण थोवं संकमदि त्ति जाणाविदं, अण्णहा अप्पाबहुगं(ग-)विवज्जासं होज्ज । तस्स ट्ठवणा | स ३२१२४६४ / ७ ख १७३ ओ २८५ | ।

पच्चक्खाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? एत्थ पुव्वुत्तकमो सव्वो चेव संभवदि, किंतु पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं ।

सम्मत्त० असंखेज्जगुणा । पृ० ३११.

कुदो ? दंसणमोहणीयसव्वदव्वेण कदकरणिज्जचरिमगुणसेढिसीसयगोउच्छगहणादो

| स ३२१२६४ ७ ख १७३ ओ २८५ | ।

णिरयाउगसणंतगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? ओघम्मि उत्तकमेणुप्पण्णउदयगोउच्छस्स समयपबद्धं संखेज्जदिभागमेत्तस्स अधादिकम्मदव्वगहणादो । तं चेदं | स ३२ ८७ | ।

ओहिणाणवरणं संखेज्ज- गुणं । पृ० ३११.

कुदो ? संपुण्णसगसमयपबद्धपमाणत्तादो । किमट्ठं गुणसेढिगोउच्छा ण घेप्पदे ? ण, ओहिणाणावरणखओवसमजुत्तजीवेसु खओवसमगदीसुप्पज्जणाहिमुहेसु च उदयायं(उदयं)पविस्समाणसादिरेयगुणसेढिगोउच्छाए जहाणिसेगगोउच्छा चेव पविस्सदि, सेसगुणसेढिगोउच्छा पुण सजादीए उवरि थिउक्कसंकमेण विभंजिय संकमंति त्ति ण गहिदा। कथं एस णियमो ? ण, एदस्स कम्मस्स खओवसमो परमाणोदयबहुत्तमणुभागोदयबहुत्तं च ण सहदि त्ति, सेसाणं कम्माणं खओवसम(मा) अणुभागबहुत्तं चेव ण सहंति त्ति सहावगुणो चेवे त्ति आइरियोवएसादो । एदं समसंकममिदि किण्ण उत्तं ? ण, एगगोउच्छसंकमणियमाए थिउक्कसंकमववएसादो । तं चेदं | स ३२ ७४ | ।

ओहिदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? एदस्स वि तिण्णिणियमे संते वि पयडिविसेसेण संखेज्जदिभागेणहियं जादत्तादो | ३२ ७३ | । पुणो सूचिदपरघादं असंखेज्जगुणं । कुदो ? अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढिगहणादो । तेसिं दुप्पयारेण विभंजणेसुप्पण्णंकाणं एसा ट्ठवणा | स ३२१२६४ ७२७ ओ २८५ / 2 | स ३२१२६४ ७२९ ओ २८५ / 2 | । पुणो उस्सास-दुस्सराणि वि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि होंति ।

वेगुव्वियसरीरमसंखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? पुव्वुत्ततिप्पयारगुणसेढिसीसयदव्वस्स पुव्वं व दुप्पयारेण विभंजिदस्स णिरएसुप्पज्जिय सरीरगहिदस्स तेवीस-पंचवीसमभागस्स तिभागत्तादो । तं चेदं | स ३२१२६४ ७२३ओ२८५ / 22 | स ३२१२६४ ७२५३ओ२८५ / 22 | ।

पुणो सूचिदतव्बंधण-संघादाणं पि एवं चेव विभंजणं । णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहिया ।

तेजइगं विसेसाहियं । पृ० ३११.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण । कुदो ? विग्गहं करिय णिरएसुप्पण्णस्स तिविहगुणसेढिसीसयदव्वस्स वीस-बावीसभागस्स दुभागपमाणत्तादो । तस्स ट्ठवणा | स ३२१२६४ ७२०२ओ २८५ / 22 | -

| स ३२१२६४ ७२२२ ओ २८५ / 22 | ।

कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

पुणो सूचिदतेसिं बंधण-संघादाणं चउण्णं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पयडिविसेसेण

विसेसाहिया होंति । पुणो सूचिदहुंडसंठाण-वेगुव्वियसरीरंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीराणं कम्मइगादो संखेज्जगुणं अहोदूण विसेसाहियाणि होंति ।

णिरयगदी संखेज्जगुणा । पृ० ३११.

कुदो ? पुव्विल्लेण समाण सामित्ते संते वि एत्थ दुभागाभावादो । पुव्विल्लसूचिदपयडीहिंतो विसेसाहियं । पुणो सूचिदपंचिंदियजादि-वण्णचउक्क-अगुरुलहुग-णिरयगदिपाओग्गाणुपुव्वी-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दूभगणादेज्जाणं उक्कस्सपदेसुदयो कमेण विसेसाहिया होंति । पुणो वण्ण-गंध-रस-फासाणं भेदवियप्पं जाणिय वत्तव्वं । अप्पाबहुगाणि य पुणो ट्ठवेयव्वं ।

अजसगित्ती विसेसाहिया । पृ० ३११.

कुदो ? एदस्स पुव्विल्लेण समाणसामित्ते संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं ।

तत्थंकट्ठवणा पयडिवि-	स ३२१२६४ ७२० ओ २८५ 22	स ३२१२६४ ७२२ ओ २८५ 22	। एत्थ सूचिदणिमिणं विसेसाहियं सेसेण ।

णउंसक० संखेज्जगुणं । पृ० ३११.

कुदो ? तिण्णं वेदाणं गुणसेढिसीसयदव्वस्स एगट्ठं कादूण गहणादो । कथं दोरूवस्स संखेज्जगुणत्तं ? ण, एदं मोहणीयपडिबद्धदव्वत्तादो सादिरेय-दुगुणं होदि त्ति उत्तं ।

स ३२१२६४ ७१० ओ २८५ 22	।

दाणंतराइयं विसेसाहियं । पृ० ३११.

कुदो ? अंतराइयमूलपयडिदव्वादो मोहणीयमूलपयडि[दव्वं]विसेसाहियमिदि एदं विसेसाहियं जादं । अण्णहा संखेज्जगुणं दिस्समाणं होज्ज । तं चेदं

स ३२१२६४ ७१ ओ २८५ 22

। अहवा एवं वा वत्तव्वं । तं जहा— मोहणीयस्स देसघादिसंबंधिएगगुणसेढिगोउच्छं कसाय-णोकसाएसु विभंजिय पुणो वि णोकसायदव्वं पंचणोकसाएसु विभजिदे तत्थ पढमं बहुभागं, तं चेदं दव्वं होदि । पुणो अंतराइयसंबंधिएगगुणसेढिगोउच्छं पुव्विल्लादो विसेसहीणं पंचतराइगेसु विभंजिदे तत्थंतिमं सव्वत्थोवं दाणांतराइयद राइय)दव्वं होदि । तदो तं पुव्विल्ल-वेदभागं एदम्मि सोधिदे एदं जादे त्ति विसेसाहियं जादं । तेसिं ट्ठवणा

स ३२१२६४८८ ७७२८५९२९५ 22	स ३२१२६४८८ ७ओ २८५९२९९ 22	स ३२१२६४८ ७ ओ २८५९५ 22	स ३२१२६४ ७ ओ २८५९९९९९ 22	।

लाहांतराइयं विसेसाहियं । भोगांतराइयं विसेसाहियं । परिभोगांतराइयं विसेसाहियं । वीरियांत० विसेसाहियं । पृ० ३११.

एदाणि पयडिविसेसावेक्खाणि ।

भय-दुगुंछाणि विसेसाहियाणि । पृ० ३११.

कुदो ? भय-दुगुंछाणं अण्णोण्णस्सुवरि अण्णोण्णथिउक्कसंकमेण संकंते उक्कस्सदव्वं जादत्तादो । दुगुंछादो भयं पयडिविसेसेण विसेसाहियं दिस्समाणं कथं सरीरसत्थं(सरिसत्तं)? ण, भएणुदीरिज्जमाणदव्वम्हि दुगुंछस्स ओकड्डियदव्वम्हि दुगुंछाउदीरिज्जमाणदव्वमेत्तं घेत्तूण पक्खिविय भयं उदीरिदे एवं दुगुंछाउदीरिददव्वपमाणं परूवेदव्वं । तदो दोण्हं उदीरणदव्वं सरिसं चेव होदि त्ति सिद्धं । एवं सग-सगजादिपडिबद्धकसायचउक्काणं सरीरसत्तं(सरिसत्तं) वत्तव्वं । एवं संते हस्सादो सोगं, सोगादो रदी, रदीदो अरदीणं विसेसाहियं । तं कथं घडदे ? ण, उत्तेदाणं

चेव एरिसणियमो, ण सेसाणं। कथमेदं णव्वदे? एदम्हादो चेवारिसादो। तेसिं ट्ठवणा

स ३२१२६४२ ७१० ओ २८५ 22

। वीरियंतराइएण समाणं दिस्समाणस्सेदाणं कथं विसेसाहियत्तं? ण, मोहभागत्तादो।

हस्स० विसेसाहिया। पृ० ३११.

कुदो? ओघम्मि उत्तकारणत्तादो। सुगममेदं। तस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४२ ७१० ओ २८५ 22

।

सोगं विसेसाहियं। पृ० ३११.

कुदो? पयडिविसेसेण।

रदीए विसेसाहियं। अरदीए विसेसाहियं। पृ० ३११.

एदाणि पुव्विल्लसंकेतबलेण सुगमाणि होंति।

मणपज्जवणाणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३११.

कुदो? पुव्वुत्तकमेण ओहिणाणावरणगुणसेढिसीयदव्वस्स तिभागं पलिच्छिदत्तादो। तेसिं ट्ठवणा

स ३२१२६४ ७३ओ२८५ 22

।

सुदणाणावरणं विसेसाहियं। मदिणाणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३११.

एदाणि सुगमाणि। कुदो? ओहिदंसणावरणसीसयदव्वस्स दुभागं पुव्वुत्तकमेण पलिच्छिदत्तादो। तं चेदं

स ३२१२६४ ७२ओ ८५ 22

।

चक्खुदंसण० विसेसाहियं। पृ० ३११.

सुगमेदं।

संजलणकसायं[1] अण्णदरं विसेसाहियं। पृ० ३११.

कुदो? विवक्खिदकसायस्स तिविहगुणसेढिसीसयदव्वं चउहिं गुणिएणुप्पण्णरासिसमाणत्तादो। किंतु मोहणीयदव्वमिदि विसेसाहियं जादं

स ३२१२६४४ ७८ ओ २८५ 22

।

णीचागोदं विसेसाहियं। पृ० ३११.

कुदो? गोदुक्कस्सगुणसेढिसीसयदव्वपमाणत्तादो मोहदुभागत्तादो विसेसाहियं जादं

स ३२१२६४ ७ ओ २८५ 22

।

सादं विसेसाहियं। पृ० ३११.

कुदो? पयडिविसेसेण।

असादं विसेसाहियं। पृ० ३११.

पयडिविसेसेण, णिरयगदीए असादं बहुगं उदीरिदे त्ति वा। एवं णिरयगदीए उक्कस्सप्पाबहुगं गदं।

(पृ० ३११)

पुणो तिरिक्खगदीए अप्पाबहुगपरूवणा सुगमा। णवरि सम्मामिच्छत्त-पयला-णिद्दा-पयलापयला-णिद्दाणिद्दा-थीणगिद्धिपयडीणं तिरिक्खसंजदासंजदसंजमासंजमगुणसेढी गेण्हिदव्वा। मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेढी गहेयव्वं। केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरण-सम्मत्तस्स च दंसणमोहक्खवणगुणसेढीयो

---

1 मूलग्रन्थपाठस्त्वेवंविधोऽस्ति— मदिणाणावरण० विसे०। अचक्खु० विसे०। संजलणकसाय०।

घेत्तव्वाओ। तिरिक्खाउअस्स पुव्वं व तदुविहपयारेणुप्पण्णसमयपबद्धस्स संखेज्जदिभागं वत्तव्वं। वेगुव्वियसरीरस्स विगुव्वणमुट्ठाविदसंजदासंजदतिरिक्खस्स संजमासंजमगुणसेढिं भाणिदव्वं। अजसगित्ति-इत्थि-णवुंसयवेद-उच्चागोदाणं अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेढिं गहिदूण वत्तव्वं।

कथं तिरिक्खेसु उच्चागोदस्स संभवो? ण, पग्गहेण पग्गहिदस्स होदि त्ति पुव्वमेव परूविदत्तादो।

ओरालिय-तेजा - कम्मइयसरीर-तिरिक्खगदि-जसगित्ति-पुरिसवेदाणं [दाण-]लाभ - भोग-परिभोग-वीरियंतराइय-भय-दुगुंछ-हस्स-सोग-रदि-अरदि-ओहिणाणावरण-मणपज्जवणाणावरण-ओहिदंसणावरण - सुदणाणावरण-मदिणाणावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-संजलण०-णीचा-गोद०-सादासादाणं दुविहसंजमगुणसेढि-कदकरणिज्जगुणसेढीए सह तिण्णिगुणसेढीयो होंति त्ति वत्तव्वं। णवरि ओहिणाणावरण०-मणपज्जवणाण०-ओहिदंसणा० सुदणाणावरणाणं इदि एत्थ ताव एदेसिं चउण्णं पयडीणं विभंजणकमो उच्चदे—

दंसणावरणस्स देसघादिउदयगोउच्छं पुव्वुत्ततिविहगुणसेढिपमाणं तिण्णं देसघादिपय-डीणं यथासंभवं विभंजिदे तत्थंतिमं ओहिदंसणावरणदव्वं होदि। पुणो ओहिणाणावरणखओव-समजुत्तजीवस्स णाणावरणदेसघादिउदयं करेंतपुव्वुत्ततिविहगुणसेढिगोउच्छं समयपबद्धपरिहीणं मदि-सुद-मणपज्जवणाणावरणेसु जहाकमं विभंजिदे तत्थंतिमं मणपज्जवणाणावरणं(ण-) भागं होदि। तदा ओहिणाणावरणादो चउण्णं पयडीणं विभंजणेसुप्पण्णभेदो मणपज्जवणाणावरणं विसेसाहियं जादं। तत्तो ओहिदंसणावरणं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? समयपबद्धस्स तिभागमेत्तेण। तत्तो सुदणाणावरणं विसेसाहियं पयडिविसेसेण। सुगमाणि।

णवरि एत्थ तिरिक्खाणं सादासादाणं दोण्हं सरिसत्तणं अप्पज्जत्तकाले सुह-दुक्खाणि तिरिक्खगदीए साधारणा त्ति कारणं वत्तव्वं। अहवा भय-दुगुंछाणं वत्तव्वं। पुणो सूचिद-पयडीणं णामस्स तेसिं दुप्पयारभागहारसरूवं वा जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० ३१२)

पुणो तिरिक्खजोणिणीए एवं चेव वत्तव्वं। णवरि सम्मामिच्छत्तप्पहुडि जाव थीणगिद्धि त्ति तिरिक्खीण कदसंजमासंजमगुणसेढीयो, मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेढीयो। पुणो सम्मामिच्छत्तप्पहुडि जाव सादासादे त्ति पयडीणं अणंताणुबंधीणं विसंजोजणगुणसेढीयो होदि त्ति वत्तव्वं। णवरि वेगुव्वियसरीर-संजमासंजमगुणसेढी होदि त्ति भाणिदव्वं।

(पृ० ३१३)

पुणो मणुसगदीए संभवंतपयडीणं ओघभंगो चेव। णवरि मिच्छत्तप्पहुडि जाव अणंताणु-बंधिचउक्के त्ति दुविहसंजमगुणसेढिसीसयं, अपच्चक्खाणावर० पच्चक्खाणावर० दुविहसंजमगुण-सेढि-दंसणमोहक्खवणगुणसेढि त्ति तिण्णं गुणसेढीणं, पयला-णिद्दाणं उवसंतगुणसेढीणं, केवल-णाणावरणाणं केवलदंसणावरणाणं खीणकसायगुणसेढीणं, पुणो अघादीणं मणुस्साउगस्स पुव्वं व दुविहपयारे उप्पण्णगोउच्छं, वेगुव्विय-आहारसरीराणं संजमगुणसेढीणं, अजसगित्ति-णीचा-गोदाणं दंसणमोहक्खवणगुणसेढिसहिददुविहसंजमगुणसेढीणं, छण्णोकसायाणं अपुव्वखवगस्स चरिमसमयम्मि उदयगदगुणसेढीणं, इत्थि-णवुंसय-पुरिसवेद-कोध-माण-मायासंजलणाणं अणियट्टि-गुणसेढीणं उदिण्णाणमुवरुवरि ट्ठिदाणं, ओरालियसरीरप्पहुडि जाव सादासादे त्ति पयडीण-मोघपरूविदगुणसेढीणं च गहणं कायव्वं। एत्थ सूचिदपयडीणं सव्वाणं कारणं पुव्वं व जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० ३१४)

पुणो देवगदीए अप्पाबहुगपरूवणा सुगमा। णवरि सम्मामिच्छत्त-पयला-णिद्दाणं गुणिदकम्मंसियगोउच्छा, मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं दुविहसंजमगुणसेढिगोउच्छं, अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणावरण(-वरणाणं) अंतरकरणदुचरिमसमयअणियट्टिम्मि कदगुणसेढिसीसयगोउच्छं, केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण० उवसंतकसायस्स उक्कस्सगुणसेढिगोउच्छं, सम्मत्त-देवाउग-ओहिणाणावरण-ओहिदंसणा[वरणा]णं ओघकारणसिद्धगोउच्छाणं, अजसगित्ति-इत्थिवेदाणं अणंताणुबंधिविसंजोजणगुणसेढिगोउच्छं, छण्णोकसायाणमंतरकरणदुचरिमसमयअणियट्टीणं कदगुणसेढीणं, पुणो पुरिसवेद० जाव सादासादे त्ति ताव पयडीणं कमेण अणियट्टिसुहुमसांपराइय-उवसंतकसायाणं कदगुणसेढिगोउच्छाणं संभवं जाणिय वत्तव्वं। णवरि देवगदीए असादादो सादं विसेसाहियं त्ति भाण(भणि)दस्सेदस्स कारणं देवगदीए सुहपयडिबद्धसादोदयं विसेसाहिए[-ण] अहियं होदि त्ति वत्तव्वं। पुणो सूचिदणामपयडीणं तेसिं भागहारसरूवेण दुप्पयारेण पवेसिज्जमाणपयडीणं च जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० ३१५)

असण्णीसु अप्पाबहुगपरूवणं सुगमं। णवरि पंचविहणिद्दाणं गुणिदकम्मंसियस्स एगगोउच्छमुवरिमपयडीणं दुविहसंजमगुणसेढिगोउच्छाणं गहणं कायव्वं। णवरि उवचारोदयणिबंधणं णिरय-मणुस-देवगदीणं णिरय-मणुस-देवाऊणं उच्चागोदाणं च उदयगोउच्छपमाणं उच्चदे। तं जहा— तिण्णं गदीणं पुह पुह संखेज्जावलियमेत्तसमयपबद्धाणं वंधगद्धावसेण देव-मणुस-णिरयगदीणं कमेण संखेज्जगुणाणं दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदेगखंडमेत्ताणि होंति। पुणो तिण्णमाउगाणं असण्णिसंबंधीणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवंधगद्धेण गुणिदसमयपबद्धाणं सग-सगजहण्णाउगेण खंडिदेयखंडमेत्ताणं सादिरेयाणं, उच्चागोदस्स संखेज्जावलियमेत्तसमयपबद्धाणं अंतोमुहुत्तुव्वेल्लणकालेणुप्पण्णंतोमुहुत्तचरिमफालीए खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं होदि त्ति वत्तव्वं। कथमेदं णव्वदे? एदमेव अत्थं गंथपरूवणाए सिद्धत्तादो णव्वदे। एत्थ सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं। एवमुक्कस्सप्पाबहुगपरूवणा गदा।

(पृ० ३१८)

एत्तो जहण्णपदेसुदयप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा—

जहण्णुदयो मिच्छत्ते थोवो। पृ० ३१८.

कुदो? उवसमसम्मादिट्ठितप्पाओग्गुक्कस्ससंकिलेसेण मिच्छत्तं गदपढमसमए ओकड्डिऊण असंखेज्जलोगपडिभागियदव्वं घेत्तूणुदयसमयप्पहुडि आवलियमेत्तकालं विसेसेसहीणं(ण) कमेण रचिय तदुवरिमणिसेगे असंखेज्जगुणं पक्खिविय तदुवरि विसेसहीणं(ण-)कमेण संच्छुहिय आवलियं गदस्स उदिण्णदव्वगहणादो। तं पि कुदो? तत्थतणगोउच्छविसेसादो समयं पडि अणंतगुणसंकिलेसेणुदीरिज्जमाणदव्वमसंखेज्जगुणहीणं होदि त्ति उवदेसमुवलंभिय उत्तत्तादो। तस्स संदिट्ठी

स ३२३
७ ख ओ 24

।

सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं। पृ० ३१८.

कुदो? एत्थ पुव्वं व सव्वकिरियसंभवादो। कथं? मिच्छत्तदव्वादो असंखेज्जगुणहीणमेत्तसम्मामिच्छत्तदव्वेहिंतो उदीरिज्जमाणदव्वमसंखेज्जगुणं होदि। उवसमसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छत्तं गेण्हमाणसमये मिच्छत्तपडिवज्जमाणसंकिलेसादो अणंतगुणहीणेण तप्पाओग्गसंकिलेसेण दंसणमोहणीयमोकड्डमाणो मिच्छत्तोकड्डणभागहारादो असंखेज्जगुणहीणेणोकड्डिदूणुदयावलिय-

बाहिरे ट्ठविय पुणो असंखेज्जलोगपडिभागियमुदयावलियब्भंतरे रचिदे त्ति । केत्तियो भागहारस्स गुणहीणपमाणो ? गुणसंकमणभागहारादो असंखेज्जगुणो ।

अह्वा, तिविहदंसणमोहणीयमोकड्डिय उदयावलियबाहिरे सग-सगसरूवेण रचिय पुणो वि तिविहदंसणमोहणीयदव्वाणमसंखेज्जलोगलोग(मसंखेज्जलोग)पडिभागीणं गहियमेगट्ठं करिय सम्मामिच्छत्तसरूवेण उदयावलियब्भंतरे रचिदो त्ति वत्तव्वं। कथमेवं रचिदो त्ति णव्वदे ? अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकोह-माण-माया-लोहाणं पुह पुह सग-सगचउक्काणं सरिसत्तण्णहाणुववत्तीदो णव्वदे । तस्स संदिट्ठी

स २१२
७ ख गु० ओ ≡ २४ / 2

।

सम्मत्ते असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? पुव्वुत्तदुविहकारणमेत्थ वि संभवादो । किंतु पुव्विल्लं संकिलेसं एसा विसोहि त्ति दव्वमसंखेज्जगुणं ओकड्डिदि त्ति वत्तव्वं । तं चेदं

२१२
७ ओ ख गु = २४ / 22

।

[अ]पच्चक्खाणाणं अण्णदरमसंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंसियो उवसंतकसायो देवलोगं गदो संतो तत्तो ओकड्डिय उदयावलियबाहिरे रचिय पुणो तत्थ असंखेज्जलोगपडिभागियगहिददव्वं उदयावलियब्भंतरे रचियूणावलियं गदस्स जहण्णोदयं जादत्तादो । एदेण चउण्णकसायाणं सरिसत्तणं भणमाणेण णव्वदि[1] चउण्णं कसायाणं असंखेज्जलोगपडिभागिगं एगट्ठं कादूण रचेदि त्ति ।

पच्चक्खाणावर० विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? एत्थ वि पुव्वुत्तासेसकारणे संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं । एदेण खवगुवसमसेढिपरिणामाणं व सेसपरिणामाणि दव्वविसेसमणवेक्खियूणोकड्डदि त्ति वत्तव्वं ।

पुणो अणंताणुबंधीणं अण्णदरं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंसिया(यो) सम्मत्तं पडिवज्जिय अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोइय पुणो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तेण सम्मत्तं घेत्तूण बेच्छावट्ठिसागरोवमं सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं पडिवज्जिय आवलियं गदस्स जहण्णोदयणिसेयं जादत्तादो । तं चेदं

स 2
७ ख १७ उ अ ६६२ / २७।२७

।

पयलापयला० असंखेज्जगुणा । पृ० ३१८.

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? खविदकम्मंसियस्स पच्छिमदेवेहिंतो एइंदिसुप्पज्जिय सरीरपज्जत्तिं समाणिदस्स पचलापचलस्स उदयमागच्छमाणसमाणगोउच्छाए उवरि सेसअसंखेज्जदिभागं विभंजणभागहारमिदि विवक्खाभिप्पाएण विभंजिदमिदि जादसमाणपुंजेसु पक्खित्तेसु सेसस्स असंखेज्जभागाणि अत्थि, ताणि कमेण थीणगिद्धि-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-णिद्दा-पयला-चक्खु-वचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणे त्ति असंखेज्जगुणहीणाणि होंति । तत्थ सेसणिद्दाचउक्केसु पक्खित्तदव्वाणं असंखेज्जभागाणि पक्खिविय तम्मि पंचण्णं गुणसंकमण गददव्वमवणिदे सेसमुदयगदणिसेगपमाणं होदि त्ति । तस्स ट्ठवणा

स २
७ ख ५

।

णिद्दाणिद्दा० विसेसाहिया । पृ० ३१८.

णिद्दाणिद्दाये विभंजणम्हि उप्पण्णसमाणधणम्मि सेसणिद्दाचउक्काणं तस्संबंधिसमाण-

---

१ हस्तलिखितप्रतौ 'भणमाणे ण णव्वदि ?' इत्येवंविधोऽत्र पाठः प्राप्यते ।

धणाणं पंचमभागं पक्खिविय ताणं पक्खित्तचउण्णं पक्खेवाणं असंखेज्जभागा च पक्खित्ते पुव्विल्लेहि पक्खित्तदव्वादो विसेसाहियं होदि । तम्मि पंचणिद्दाणं गुणसंकमेण गददव्वं परिहीणे कदे उदयगदगोउच्छपमाणं जादत्तादो । ते केत्तियेणहियं ? पयडिविसेसमेत्तेण । तस्स ट्ठवणा | ख / ७ ख ५ | ।

थीणगिद्धी विसेसाहिया । पृ० ३१८.

एत्थ वि पुव्वं व विसेसाहियत्तं वत्तव्वं ।

केवलणाणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? पक्कमम्मि पुव्विल्लाहिप्पाएण विभंजिदम्मि केवलणाणावरणसमाणधणादो थीणगिद्धीए समाणधणमेगरूवचउब्भागब्भहियदुरूवेण खंडिदेयखंडपरिहीणं होदि । सेसणिद्दाचउक्काणं समाणधणाणं पंचमभागं पक्खित्ते केवलणाणावरणस्स समाणधणेण सरिसं जादं । पुणो केवलणाणावरणस्स समाणधणम्मि पक्खित्तपगडिविसेसादो थीणगिद्धिम्मि पक्खित्तपयडिविसेसं सेसणिद्दाचउक्कम्मि पक्खि[त्त]पगडिविसेसाणं असंखेज्जभागसहिदं असंखेज्जं होदि । कुदो ? विभंजणकमेण तहोवलंभादो । पुणो तम्मि पंचण्णं गुणसंकमेण गददव्वमवणिदे जं सेसं तं केवलणाणावरणसमाणधणम्मि पक्खित्तविसेसादो अप्पमिदि केवलणाणावरणं विसेसाहियं जादं ।

पयला विसेसाहिया । पृ० ३१८.

कुदो ? खविदकम्मंसियो वेमाणियदेवेसुप्पज्जिय पज्जत्तीयो समाणिय उक्कस्सट्ठिदीसु उक्कड्डिय आवलियं गदस्स सेसणिद्दाचउक्काणं सादिरेयपंचमभागं पलि(डि)च्छिदसगेगणिसेगत्तादो । कथं पक्कमम्मि(पयलम्मि) थीणगिद्धीदो विसेसहीणं (?) विसेसाहियकेवलणाणावरणादो विसेसाहियं जादं ? ण, पयलस्स समाणधणम्मि पुव्वं व सेसणिद्दाचउक्काणं समाणधणाणं पंचमभागं पक्खित्ते केवलणाणावरणसमाणधणेणसरिसं जादं । पुणो केवलणाणावरणम्मि पक्खित्तविसेसादो पयलम्मि पक्खित्तविसेसं सेसणिद्दाचउक्काणं पक्खेवाणं असंखेज्जभागसहिदं थीणगिद्धिपक्खेवसमाणं जादत्तादो असंखेज्जगुण(णं) जादं ति तम्मि पंचण्णं गुणसंकमेण गदं दव्वं सोहिय पुण थीणगिद्धितियादो आगदगुणसंकमदव्वस्स संखेज्जभागं पक्खित्ते केवलणाणावरणादो विसेसाहियं जादं ।

णिद्दा विसेसाहिया । पृ० ३१८.

कुदो ? पुव्विल्लकिरियादो जोइज्जमाणे पयडिविसेसेण अहियं जादत्तादो ।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

कुदो ? पुव्विल्लम्हि पाओग्गकिरियं णिद्दाए केवलदंसणावरणाए कदे तत्थ केवलदंसणावरणं थोवं जादं । जादे पंचविहणिद्दाहिंतो आगदगुणसंकमदव्वं पक्खित्ते विसेसाहियं पच्छा जादं । तं चेइंदिएसुप्पज्जिय सरीरगहिदस्स णिद्दा-पयलाणं एक्कदरेण सह वेदिज्जमाणे होदि त्ति वत्तव्वं ।

दुगुंछा अणंतगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? उवसंतकसायो देवेसुप्पज्जियूणावलियकालं गदस्स असंखेज्जलोगपडिभागियणिसेयगोउच्छगहणादो । एदं पुण देसघादित्तादो अणंतगुणं जादं । तं चेदं | स 2१२१६ / ७१० ओ ≡ 2४१६ | ।

भयं विसेसाहियं । हस्सं विसेसाहियं । रदि० विसेसाहियं । पुरिसवेदं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

एदाणि सुगमाणि, पयडिविसेसाहियत्तादो ।

संजलणाए विसेसाहिया । पृ० ३१८.

केत्तियमेत्तेण ? चउब्भागमेत्तेण । तं चेदं | स २१२१६ / ७८ ओ ≡ 2४१६ | ।

ओहिणाणावरणं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । कुदो ? खविदकम्मंसियो वेमाणियदेवेसुप्पज्जिय उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय तम्मि उक्कड्डिय आवलियं गदस्स जहण्णगोउच्छं होदि त्ति । तस्स पमाणं ओकड्डुक्कड्डुणवसेण परपयडिसंकमवसेण उक्कस्सट्ठिदिबंधम्मि उक्कस्सणिसेयादो असंखेज्जगुणहीणं होदूण ओहिणाणावरणखओवसमजुत्तजीवस्स उदयावलियं पवेसिय उदयसरूवेण ट्ठिदणिसेयपमाणं होदि । तस्स संदिट्ठी | स 2 / ७४६३०० 2 / ९ |

ओहिदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३१८.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण । तं चेदं | स 2 / ७३६३००2 / ९ | ।

णिरयाउगमसंखेज्जगुणं । पृ० ३१८.

कुदो ? सत्तमपुढविणेरइयाणं असादोदयसहगदाणं चरिमसमयगोउच्छगहणादो । | स 2२७ / ८६३०० | ।

देवाउगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? सुहपयडित्तादो । सादबहुलाणं ओलंबणबहुत्तादो ।

तिरिक्खाउगं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१९.

कुदो ? तिपलिदोवमस्स चरिमगोउच्छगहणादो । को गुणगारो ? तिपलिदोवमादो उवरिमतेत्तीससागरोवमणाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णब्भत्थरासी । तं चेदं | स 22२६ / ८६३००९ | ।

मणुसाउगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? ओलंबणदव्वस्स अप्पत्तादो ।

ओरालियसरीरं असंखेज्जगुणं । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो एइंदियो सण्णिपंचिंदिएसुप्पज्जिय छप्पज्जत्तीहिं पज्जत्तयदो होदूणेक्कत्तीसं वेदयमाणो उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय तत्थुक्कड्डिय आवलियं गदस्स जहण्णदव्वं जादत्तादो । तं चेदं | स 2 / १२९२ |

तेजइगं विसेसाहियं । कम्मइगं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? पयडिविसेसेण । पुणो सूचिदतव्बंधण-संघादाणं अप्पाबहुगकमं जाणियूण वत्तव्वं ।

वेउव्वियसरीरं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो एइंदियो सण्णिपंचिंदिएसुप्पज्जिय पज्जत्तीयो समाणिय उज्जोवोदएणुत्तरसरीरं विगुव्विय उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय तम्मि उक्कड्डिदस्स जहण्णं होदि त्ति | स । ३ / ७२८३ | । केत्तिएण विसेसाहियं ? संखेज्जभागेण । पुणो एत्थ सूचिदतव्बंधण-संघादाणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

आहारसरीरं विसेसाहियं[1] संखेज्जदिभा०। एत्थ विभंजणकमं दुप्पयारं वत्तव्वं। एदस्सत्थविभंजणकमं जाणिय वत्तव्वं। पुणो सूचिदतव्बंधण-संघादाणं पि जाणिय विसेसाहिय-कमेण वत्तव्वं। तं चेदं | स 2 / ७२७३ |।

तिरिक्खगदी संखेज्जगुणं। पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकमंसियसण्णिस्स इगितीसोदयस्स उक्कस्सट्ठिदीए उक्कड्डिय आवलियकालं गदस्स जहण्णं जादत्तादो | स 2 / ७२८३ |। को गुणगारो ? सादिरेयदोरूवाणि।

पुणो सूचिदविगलिंदिय-पंचिंदियजादीणं छस्संठाणाणं ओरालियंगोवंग-छस्संघडण-वण्ण-चउक्क-अगुरुगलहुगचउक्कं-दोविहाय[गइ-]-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर - थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्जाणं एवं चेव वत्तव्वं। णवरि कमेण विसेसाहियपयडीणं सरिसपयडीणं च जाणिय वत्तव्वं। तत्थेक्कस्स ट्ठवणा | स 2 / ७२६ |। कुदो सरिसत्तं ? ण, भय-दुगुंछाणं व सरिसंतो (सत्तो)वलंभादो। पयडिविसेसेण पुणो विसेसाहियं जादं | स 2 / ७२६ |।

जसगित्ति-अजसगित्ती दो वि समाणा विसेसाहिया पयडिविसेसेण। पृ० ३१९.

पुणो एदेण सूचिदणिमिणं विसेसाहियं।

देवगदी विसेसाहिया। पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण। कुदो ? खविदकम्मंसियो देवलोए उप्पज्जिय उक्कस्सट्ठिदिबंधस्सुवरि परपयडीसु उक्कड्डिय आवलियकालं गदं तस्स समए उज्जोवेण सह विगुव्विदुत्तरसरीरस्स जहण्णं जादत्तादो। तं चेदं | स 2 / ७२८ | सूचिदवेगुव्वियंगोवंग विसेसाहिया।

पुणो **मणुसगदी विसेसाहिया।** पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो मणुस्सेसुप्पज्जिय पज्जत्तिं समाणिय उक्कस्सट्ठिदीए उक्कड्डिदस्स जहण्णं होदि त्ति। तं चेदं | स 2 / ७२८ |। कथं विसेसाहियत्तं ? ण, देवगदिम्मि तिरिक्खगदि-थावरसंजुत्त-ट्ठिदिबंधसंकिलेसादो मणुसगदिसंजुत्तपण्णारससागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिबंधसंकिलेस-मणंतगुणहीणत्तादो उक्कड्डिदपयडिविसेससंतादो देवगदीए संघडणादो आगच्छमागदव्वं पक्खिविय उज्जोवादो मणुसगदीए आगच्छमाणदव्वं विसेसाहियं ति च विसेसाहियं जादं।

णिरयगदी विसेसाहिया। पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण | स 2 / ७२७ |। पुणो सूचिदेइंदियादाव-थावर-साधारणाणं विसेसाहियं | स 2 / ७२५ |। सुहुमं तत्तो विसेसाहियं | स 2 / ७२४ |। अपज्जत्त विसेसाहिया। आणुपुव्वी-चउक्काणि सरिसाणि विसेसाहियाणि। | स 2 / ७२० |। एत्थ किंचि संभवंतं विसेसाहियं जाणिय वत्तव्वं। सूचिदं गदं।

पुणो **सोगो संखेज्जगुणो।** पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो देवलोगे उप्पज्जिय उक्कस्सट्ठिदिबंधम्मि उक्कड्डियावलियं गंतूण पलि(डि)च्छिदहस्सस्स थिउक्कगोउच्छसहगदसगेगगोउच्छपमाणत्तादो। तस्स संदिट्ठी | स 2 / ७२० |।

१ वाक्यमिदं नोपलभ्यते मूलग्रन्थे।

अरदी विसेसाहिया । पृ० ३१९.

कुदो ? सरिससामित्ते संते वि पयडिविसेसेण विसेसाहिया जादा ।

इत्थिवेदं विसे० । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो पंचिंदियो देवेसुप्पज्जिय पच्छा पण्णारससागरोवमकोडाकोडिट्ठिदि(दिं) बंधिय उक्कड्डिदस्स मंदसंकिलेसादो पयडिविसेसादो च विसेसाहियं । तं चेदं | स 2 / ७१० | । एदं तिवेदोदयगोच्छपमाणं होदि ।

णउंसयवेदं विसेसा० । पृ० ३१९.

कुदो ? खविदकम्मंसियो देवो एइंदिएसुप्पज्जिय पढमसमए जादे जहण्णोदयगहणादो । पयडिविसेसेण विसेसाहियं जादं | स 2 / ७१० | ।

दाणंतराइयं विसे० । | स 2 / ७१० | **पृ० ३१९.**

कथं संदिट्ठीए संखेज्जगुणं दिस्समाणं विसेसाहियं जादं ? ण मोहणीयभागादो अंतराइयभागस्स तहाविहणियमे विरोहाभावादो | स 2 / ७५ | ।

लाभांतराइगं विसेसा० । | स 2 / ७५ | **भोगांतराइगं विसेसाहियं । परिभोगांतराइगं विसेसा० । वीरियंतराइगं विसेसा० । पृ० ३१९.**

सुगममेदाणि पयडिविसेसकारणावेक्खाणि ।

मणपज्जवणाणावरणं विसे० । पृ० ३१९.

कुदो ? समाणसामित्ते संते विभज्जमाणभागहारविसेसत्तादो | स 2 / ७४ | ।

सुदणाणावरणं विसे० । मदिणाणावरणं विसे० । पृ० ३१९.

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

अचक्खुदंसणावरणं विसे० । पृ० ३१९.

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जदिभागमेत्तेण | स 2 / ७३ | ।

चक्खुदंसणाणावरणं विसे० । | स 2 / ७३ | **पृ० ३१९.**

कुदो ? पयडिविसेसेण ।

उच्चागोदं विसेसा० । पृ० ३१९.

कथं संखेज्जगुणं दिस्समाणं विसेसाहियं होज्ज ? सच्चमेवं चेव, किंतु खविदकम्मंसियो चरिमेइंदियवारपरिभमणकालम्मि तेउ-वाउकाइएसुप्पज्जिय उच्चागोदं एदेण गंथेण उत्तसरूवेणंतोमुहुत्तेणुव्वेल्लिय सण्णीसुप्पज्जिय मणुसम्मि संजममणुपालिय मिच्छत्तं गंतूण देवेसुप्पज्जिय उक्कस्सट्ठिदीए उक्कड्डिदम्मि उच्चागोदस्स एगसमयपबद्धस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु णिसेगेसु | २८ / ७ अ १७ / २७ | बंधगद्धाणुसारी णीचागोदस्स णिसेगस्स समयपबद्धस्स अद्धं सादिरेगमेत्तं संकम(मि)दत्तादो । तं चेदं | स २९ / ७१७ / स २८ / ७अ१७ / २७ | कथमेदं णव्वदे ? मिच्छादिट्ठिस्स विसोधिअद्धादो संकिलेसद्धस्स सादिरेयमिदि एत्थ परूविदत्तादो । तेसिमद्धाणं संदिट्ठी | २२९ / २७८ |

णीचागोदस्स विसेसा० पयडिविसेसेण | स । २९ ७१७ | । पृ० ३१९.

सादासादं विसेसाहियं । पृ० ३१९.

एदाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि । | स २८ 2 अ १७ २७ | पुणो वि एत्थ सूचिदतित्थयरमसंखेज्जगुणं, खविदकम्मंसियसजोगिपढमसमयउदयणिसेगगहणादो । तं चेदं | स २१२ ७ ओ प २९ २२ | । एवं [ओघ] जहण्णप्पाबहुगं गदं ।

(पृ० ३२०)

णिरयगदीए जहण्णपदेसुदयस्सप्पाबहुअं भण्णमाणे मिच्छत्तप्पहुडि जाव अणंताणुबंधिकसायो त्ति ताव परूवणो सुगमो । कुदो ? ओघम्मि उत्तकारणाणं एत्थ वि संभवादो । णवरि अणंताणुबंधीणं च वयाणुसारी आयो त्ति भणंताणमभिप्पाएण बेछावट्ठिसागरोवमं सम्मत्तसम्म(म्मा)मिच्छत्तं च अणुपालिय मिच्छत्तं गंतूण णिरएसुप्पण्णाणं सगचउक्कगोउच्छसमूहम्मि वत्तव्वं । तस्स ट्ठवणा | स २४ ७ ख ओ अ ६६२ २७२७ | । अण्णहा खविदकम्मंसियो णिरएसुप्पज्जिय तेत्तीससागरोवमं किंचूणं सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदस्स जहण्णउदयो होदि त्ति वत्तव्वं ।

तत्तो **केवलदंसणावरणं असंखेज्जगुणं । पृ० ३२०.**

सुगममेदं | स 2 ७ख ५ | ।

केवलदंसणावरणं विसे० । पृ० ३२०.

कुदो ? रिजुगदीए णिरएसुप्पण्णपढमसमए णिद्दा-पयलाणं उदये अत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण पढमसमए वत्तव्वं । अथवा सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होदि त्ति वत्तव्वं । तस्स ट्ठवणा | स 2 ७ख ५ | । कुदो विसेसाहि [य]त्तं ? ण, दोण्णं च परूवणाए विचारिज्जमाणासु तहोवलंभादो ।

पयला विसेसा । ०पृ० ३२०.

कथं ओघम्मि णिद्दोदएहिंतो विसेसाहियत्तादो (विसेसाहियं) केवलदंसणावरणं णिद्देहिंतो विसेसहीणपचलादो एत्थुद्देसे विसेसहीणं जादं ? उच्चदे—खविदकम्मंसियो चरिमवारमुवसमसेढि(ढिं) चडिय हेट्ठा ओदरिय मिच्छत्तं गंतूण देवसुप्पज्जिय पुणो एइंदियं गंतूण तत्थ पाओग्गकालं भमिय तसेसुप्पज्जिय णिरयाउगबंधपाओग्गकालादो हेट्ठिमसंकिलेस-विसोहिजादोकड्ड(ड्ड)क्कड्डणपरपयडिसंकमवसेण विवक्खिदणिसेयमप्पं करिय णिरएसुप्पण्णाणं पढमसमए णिद्दा-पयलाणं एक्कदरउदीरयं होदि त्ति वा । अहवा पज्जत्तिं समाणिय उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय तम्मि उक्कड्डिय आवलियं गदम्मि पचलाए उदयमागच्छमाणगोउच्छम्मि पुव्वं व सेसणिद्दाचउक्काणं समाणधणाणं पंचमभागं तेसिं पक्खेवाणं पुह पुह संखेज्जभागा च पक्खित्तमेत्तं जहण्णुदयणिसेयत्तादो । केवलदंसणावरणस्स पुणो एवं चेव । णवरि पक्खेवाणं असंखेज्जे भागे पक्खिविय सेसेगं पक्खित्तमिदि । किमट्ठमेवं उवसमसेढिमचडिदस्स सामित्तं ण उत्तं ? ण विवक्खिदोदयणिद्दागोउच्छाए थिउक्कसंकमवसेण उवसमसेढिचडिदाणं समाणगोउच्छं दिस्सदि, किंतु चडिदाणं ओकड्डणवसेण हीणमागच्छदि त्ति एवं चेव गहेदव्वं ।

(पृ० ३२०)

पुणो अपच्चक्खाणावरणप्पहुडि भयोदय त्ति ताव परूवणा सुगमा, ओघकारणात्तादो।

तत्तो **सोगं विसे०। हस्सं विसेसा०। पृ० ३२०.**

कथं हस्सादो पयडिविसेसेणब्भहियं सोगो एत्थ तत्तो हीणं जादं ? ण, सोगमुप्पण्णपढमसमए हस्सस्स थिउक्कसंकमदव्वं पलि(डि)च्छिय जहण्णं जादं, हस्सं पुणो तत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण णवकबंधगोउच्छं खविदकम्मंसियणिसेयविसेसादो असंखेज्जगुणत्तेण सहगदसोग(गं) थिउक्कसंकमेण परिणामविसेसेणुदीरिददव्वेण सह जहण्णं जादत्तादो विसेसाहियं जादं। कुदो ? विसेसेण जादहियदव्वादो एदेण सरूवेणहियदव्वमसंखे० गुणमिदि।

अरदी विसेसा०। रदी विसेसा०। पृ० ३२०.

एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं।

पुणो एत्थो उवरि (एत्थोवरि) णवुंसयवेदगप्पहुडि जाव असादवेदणिय त्ति ताव सुगमं।

तत्तो **सादावेदणीयं विसेसा०। पृ० ३२०.**

कथं असादत्तादो संखेज्जगुणहीणसंतस्स सादावेदणीयस्स विसेसाहियत्तं ? ण, एत्थ वि तत्तु(त्थु)प्पण्णंतोमुहुत्तकालेण सादावेदणीयमुदयं होदि त्ति हस्स-सोगाणं व पयडिविसेसाहियदव्वादो बंधगोउच्छदव्वं असंखेज्जगुणमिदि कारणसंभवादो। पुणो सूचिदपयडीणमप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० ३२०)

पुणो तिरिक्खगदीए जहण्णपदेसुदयस्सप्पाबहुगं भण्णमाणे मिच्छत्तप्पहुडि जाव केवलणाणावरणे त्ति ताव सुगमं। कुदो ? ओघकारणाणमेत्त(त्थ) वि संभवादो। णवरि अणंताणुबंधीणं दुप्पयारं(र)परूवणाए तत्थ आयाणुसारी वयो ण होदि त्ति अभिप्पाएण तिपलिदोवमआउगतिरिक्खस्स सम्मत्तं पडिवण्णस्स अंते अंतोमुहुत्तकालसेस(से)मिच्छत्तं गदस्स जहण्णं होदि त्ति वत्तव्वं।

पुणो **पचला विसेसा०। णिद्दा विसेसा०। पचलापचला विसेसा०। णिद्दाणिद्दा विसेसा०। थीणगिद्धी विसेसाहिया। पृ० ३२१.**

सुगममेदाणि। कुदो ? वुच्चदे— ओघम्मि णिद्दा-पयलाणं अपुव्वकरणम्मि थीणगिद्धितियादो आगदगुणसंकमदव्वस्स भागहारं पगदिविसेसागमणणिमित्तभूद(दं) पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागादो हीणमेत्ताहिप्पाएण उत्तं। एत्थ पुण पयडिविसेसभागहारादो असंखेज्जगुणाभिप्पाएण विवक्खिदमिदि पयडिविसेसेण अहियं होदि त्ति।

केवलदंसणावरणं विसेसाहियं। पृ० ३२१.

कुदो ? सुहुमसांपराइयम्मि एदस्सुवरि आगदगुणसंकमदव्वस्स भागहारादो पगदिविसेसागमणणिमित्तभूदपलिदोवमस्स असंखेज्जभागमसंखेज्जमिदि भागहारगदविसेसावेक्खाए विसेसाहियं होदि त्ति। पुणो सेससव्वकिरियं पुव्वं व वत्तव्वं।

पुणो एत्तो उवरि जाव सादासादे त्ति ताव सुगमं। कुदो ? किंचिविसेसाणुविद्धकारणाणि पुव्वुत्तकारणेहि समाणत्तादो। पुणो सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं।

(पृ० ३२२)

पुणो मणुसगदीए जहण्णपदेसुदए भण्णमाणे मिच्छत्तप्पहुडि जाव तित्थयरे त्ति ताव सुगमं । कुदो ? केसिं केसिमोघम्मि उत्तकारणं संभदि, केसिं पि तिरिक्खगदीए उत्तकारणं संभवदि, केसिं केसिं पि किंचिविसेसाणुविद्धमत्थवसेण जाणिज्जदि त्ति वा । सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३२३)

पुणो देवगदीए जहण्णपदेसुदयो मिच्छत्तप्पहुडि जाव पचले त्ति ताव सुगमं ।

तत्तो **णिद्दा विसेसाहिया । केवलदंसणावरणं विसेसाहियं । पृ० ३२३.**

एत्थ कारणं पुव्विल्लं चेव णिरवसेसं चिंतिय वत्तव्वं । एत्थ उवरि जाणिय वत्तव्वं सादासादे त्ति । णवरि सादासादाणं सरिसत्तस्स कारणं उच्चदे— दोण्हं पि वेदणीयाणं अण्णोण्णस्सुवरि अण्णोण्णस्स थिउक्कसंकमेण दोण्हं पि सरिसं होदूण पुणो सादोदए असादोदए संते वि दोसु वि उक्कस्सत(त्त)प्पाओग्गसंकिलेसाणं समाणत्तादो उदीरणदव्वं, पुणो दोण्हं पयडीण-मोकड्डिददव्वम्हि असंखेज्जलोगपडिभागियदव्वं, घेत्तूणेगट्ठं करिय उदीरणेण पक्खित्तपमाण-त्तादो । कथं सादासादोदयकालसंकिलेसाणं समाणत्तं ? ण, पमत्तसंजदाणं सादासादोदयसंकिले-साणं समाणत्तं; अप्पमत्तसंजदाणं सादासादो[द]याणं विसोहीणं सरिसत्तदंसणादो छम्मासकाल-सादोदयसहिददेवाणं संकिलेसदंसणादो तेत्तीससागरोवमअसादोदयणेरइयम्मि विसोहिदंसणादो । तदो सादासादोदयपडिबद्धाणि विसोहि-संकिलेसाणि होंति त्ति दोण्हमुदयकालब्भंतरे पाओग्ग-संकिलेसा सरिसा लभं(ब्भं)ति त्ति । सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं ।

(पृ० ३२३)

पुणो असण्णीसु जहण्णपदेसुदयस्सप्पाबहुगं भण्णमाणे—

मिच्छत्तस्स जहण्णपदेसुदयो सव्वत्थोवो । पृ० ३२३.

कुदो ? खविदकम्मंसियो सम्मत्तं घेत्तूण वेच्छावट्ठिसागरोवमाणि भमिय पच्छा मिच्छत्तं गंतूण असण्णिस्स आउगं बंधिय तम्मि उप्पण्णपढमसमए जहण्णोदयं जादे त्ति । तस्स ट्ठवणा | स 2 / ७ ख १७ उ ६६२ | ।

अणंताणुबंधीसु अण्णदरस्स जह० असंखे०गुणा । पृ० ३२३.

कुदो ? खविदकम्मंसिओ सम्मत्तं पडिवज्जिय अणंताणुबंधिं विसंजोजिय पुणो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तमच्छिय आउगं बंधिय असण्णीसुप्पण्णस्स जहण्णं होदि त्ति । एदमायाणुसारी वयो ण होदि त्ति अभिप्पाएण उत्तं, अण्णहा अप्पाबहुगं(ग-) विवज्जासदासं(विवज्जासं) होज्ज । तस्स ट्ठवणा | स 2 / ७ ख १७ अ / २७ | ।

केवलणाणावरणमसंखेज्जगुणं । पृ० ३२३.

कुदो ? अधापवत्तभागहाराभावादो | स 2 / ७ ख५ | । पुणो एत्तो उवरि जाव पच्चक्खाणे त्ति ताव सुगमं ।

पुणो तत्तो उवरि **उवचारणिबंधणणिरयाउगं अणंतगुणं । पृ० ३२४.**

कुदो ? जहण्णबंधगद्धाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणिरयाउवट्ठिदिं बंधिय णिरए-सुप्पज्जिय तिण्णि वि संकिलेसबहुलेणाउगं गमियस्स तस्स चरिमगोउच्छस्स गहणादो । तस्स

ठ्ठवणा | स 2२७ / ८६३०० | ।

देवाउगं विसे० । पृ० ३२४.

कुदो ? एत्थ वि पुव्वुत्तकारणे संते वि परिणामवसेण ओलंबणदव्वं एत्थुप्पत्तादो, णिरयाउगट्ठिदिबंधादो देवाउगट्ठिदिबंधं विसेसहीणं होदि त्ति वा ।

पुणो **तिरिक्खाउगं संखेज्जगुणं** । पृ० ३२४.

कुदो ? पुव्वं व जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहिं पुव्वकोडिमेत्ततिरिक्खाउगट्ठिदिं बंधिय तिरिक्खेसुप्पण्णस्स चरिमगोउच्छगहणादो । तं चेदं | स 2२७१६ / ८पू१७ | ।
एवमुवरि वि जाणिय वत्तव्वं जाव जसाजसगित्ति त्ति ।

तत्तो उवरि उवचारिय**मणुसगदी विसेसा०** । पृ० ३२४.

कुदो ? मणुसगदिस्स उदयगोउच्छम्मि सेसणामकम्माणं तत्थ संभवंताणं थिउक्कसंकमेणागदजहण्णदव्वेण सह गहणादो । तं चेदं | स 2 / ७२८ | ।
पुणो उवचारिय**देवगदीए उदयो विसेसाहियो** । पृ० ३२४.

कुदो ? खविदकम्मंसियो असण्णी देवगदिं वंधंतो संखेज्जावलियमेत्तसमयपबद्धस्स संचयं करिय देवेसुप्पज्जिय पज्जत्तिं समाणिय पुणो उज्जोवेण सह विगुव्विय उक्कस्सट्ठिदिं बंधिय तम्मि उक्कड्डिदव्वस्स तस्स जहण्णं होदि त्ति। तस्स ठ्ठवणा | स 2 / ७२८ | । कथं पुव्विल्लेण संदिट्ठीए समाणस्सा(ए) विसेसाहियत्तं ? ण, परिणामविसेसेण उदीरिज्जमाणदव्वविसेसादो बंधगोउच्छविसेसादो थिउक्कसंकमेणागच्छमाणपयडिविसेसादो होदि त्ति पुव्वमेव परूविदत्तादो । पुणो सूचिदपयडीणं पि जाणिय वत्तव्वं । पदेसुदयप्पाबहुगपरूवणा गदा ।

(पृ० ३२४)

पुणो भुजगारपदेसुदयपरूवणासव्वाहियारा सुगमा । णवरि एगजीवपरूवणाहियारम्मि **मदिणाणावरणस्स भुजगारोदयो केवचिरं कालादो [होदि] ? जहण्णेणेगसमयमिदि** उत्तं । पृ० ३२५.

तं सुगमं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो इदि उत्तं । पृ० ३२५.[1]

तस्सत्थविवरणं कस्सामो । तं जहा— एइंदियस्स गुणिदकम्मंसियस्स हदसमुप्पत्तियं करेंतस्स अस्सिय उत्तकालं संभवदि । एवमप्पदरस्स वि वत्तव्वं । णवरि सुहुमेइंदियहदसमुप्पत्तियखविदकम्मंसियं पडुच्च वत्तव्वं । कुदो ? संतस्स थोवविवक्खावसेण अहवा पंचिंदिए सत्थाणेण भुजगारप्पदरकालो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि(त्ति) वत्तव्वं । तं जहा—

तत्थ ताव भुजगारं उच्चदे— जहाणिसेयं ओकड्डुक्कड्डणणिसेयं बंधणिसेयाणं समूहसरूव वेदिज्जमाणअगुणसेढिगोउच्छादो तदणंतरवेदिज्जमाणअगुणसेढिगोउच्छाए ओक्कड्डणगोउच्छं बंधगोउच्छमिदि दुविहमाया(य)दव्वं होदि । पुणो उक्कड्डणगोउच्छस्स संतगोउच्छविसेसमिदि दुविहं वयदव्वं होदि । पुणो तत्थ विसोहिकाले उक्कड्डणगोउच्छादो ओक्कड्डणगोउच्छा चउव्विहवड्ढीए वड्ढिदा होंति । संकिलेसकाले पुणो तत्थ वि[व]ज्जासो होदि । पुणो वेदिज्जमाणबंधगोउच्छादो तदणंतरवेदिज्जमाणबंधगोउच्छा चउव्विहवड्ढीए वड्ढिदा होंति । कुदो ? पुव्विल्लुदय-

---

१ मूलग्रन्थे तु 'असंखे०गुणो' इति पाठोऽस्ति ।

गोउच्छगुणगारभूदजोगादो संपहियगोउच्छजोगगुणगारो चउव्विहवड्ढीए हाणीए ट्ठिदो, तेहिंतो बंधदव्वस्स एत्थ वड्ढिदंसणादो। किंतु संतगोउच्छविसेसादो एत्तियमेत्तादो | स 2 / १६ | एदं बंध-गोउच्छं चउव्विहवड्ढीए हाणीए वा ट्ठिदं होदि। पुणो तत्थ विसोहिकाले भुजगारोदयो चेव होदि। कुदो ? तत्थतणोकड्डुणेण जादणिसेयम्मि उक्कड्डुणणिसेयं सोहिदे तत्थ जादविसेसादो चउव्विहवड्ढि-हाणीए जादजोगणिबंधणसमयपबद्धणिसेयस्स सहिदादो। पुणो सत्त(संत)गोउच्छविसेसं थोवमिदि संकिलेसकाले वि भुजगारं संभवदि। कथं ? मंदसंकिलेसस्स एदस्स जादोक्कड्डुणम्मि णिसेयं (-ड्डुणणिसेयं) उक्कड्डुणणिसेयम्मि सोहिदे तत्थ विसेसादो संतगोउच्छविसेससहिदादो पुव्वं व जोगविसेसेण जादबंधणिसेयमहियगोउच्छसेसं जादमिदि। एवंविहाणेण संसारे केइ-केइजीवाणं भुजगारकालाणुसंधाणं पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्तं होदि त्ति उत्तं होदि। जहा सासणसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालाणुसंधाणं पुणो तव्विवरीदकमेण-णुसंधाणेण अप्पदरवेदयकालं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं होदि त्ति वत्तव्वं।

अहवा खविदकम्मंसिओ वा तप्पाओग्गखविद-गुणिदघोलमाणो वा एइंदिये आगंतूण णिर-एसुप्पज्जिय तस्सुदयणिसेयजोगगुणगारादो तसाणं उववादजोगं मोत्तूण सेसजोगा एत्थ परिणा-मिज्जम(मा)णा असंखे० गुणा होंति। एदेहिंतो बंधदव्वेणागदणिसेगेहिंतो उदयगोउच्छविसेसा असं-खेज्जगुणहीणं होंति त्ति। तदो प्पहुडि भुजगाराणि चेव होदूण गच्छंति त्ति ताव (जाव)पल्लस्स असं-खे० भागकालो त्ति। तत्तो अब्भहियकालं किं ण लब्भदे ? ण, खविद-गुणिदघोलमाणाणं दोण्हं पि सेसेणुव्वरिददव्वादो बंधगोउच्छदव्वं एत्तियमेत्तकालब्भहियं होदि त्तिगुरूवदेसत्तादो। बंधदव्वविवक्खाए एत्तियं चेव कालं होदि मणुसअपज्जत्ताणं व।

एवमप्पदरस्स वि वत्तव्वं। णवरि गुणिदकम्मंसियो वा तप्पाओग्गखविद-गुणिदघोलमाणो वा णेरइएसुप्पण्णस्स उदयणिसेयजोगगुणगारो जीवजवमज्झादो हेट्ठिमाणंतरम्मि ट्ठिदएगजीवगुण-हाणिअब्भंतरम्हि ट्ठिदजोगेसु अण्णदरेगजोगपमाणं होदि त्ति विवक्खिय पुणो तत्तो हेट्ठिम-जोगट्ठाणेसु परावत्तिय बंधमाणस्स गुणिद-खविदघोलमाणओक्कड्डुक्कड्डुणाण विसेसिददव्वाणं पुव्वं व अप्पहाणादो अप्पदरकालं पलिदोवमस्स असंखे० भागं लब्भदि ति वत्तव्वं।

पुणो अवट्ठिदवेदया० जहण्णेणेयसमयं, उक्कस्सेण संखेज्जसमया। पृ० ३२५.

कुदो ? ओक्कड्डुणगोउच्छं संतगोउच्छविसेससहिदं पुणो ओक्कड्डुणगोउच्छेण बंधगोउच्छ-सहिदेण सरिसं होदूण वेदिज्जमाणकालं संखेज्जसमयं होदि त्ति **गुरूवदेसादो।**

एवं सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं वत्तव्वं। पुणो णिद्दाए भुजगारवेदयकालो अप्पदरवेदयकालो जहण्णेणेगसमयं, उक्कस्से-णंतोमुहुत्तकालं। कुदो ? वेदिज्जमाणगोउच्छादो अणंतरवेदिज्जमाणाणं गोउच्छाणं विचारणं पुव्वं व। तदो भुजगारप्पदरकालपमाणं णिद्दावेदयकालपमाणं चेव होदि त्ति पुव्वं व वत्तव्वं।

पुणो अवट्ठिदवेदयं जहण्णेणेगसमयं, उक्कस्सेण संखेज्जसमयं। पृ० ३२५.

एदस्सत्थं पुव्वं व वत्तव्वं।

एवं सेसणिद्दाचउक्काणं सोलसकसायाणं हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं भय-दुगुंछाणं वत्तव्वं (पृ० ३२६)। किमट्ठं हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं कमेण छम्मासं, पलिदोवमस्स असंखे० भागमेत्तकालं ण लब्भदे ? ण लब्भदे, एदेसिं वेदयकालब्भंतरे भय-दुगुंछाणं अवेदगो होदूण ट्ठिदो

संतो जदि ताणि पुणो वेदयदि[तो] तेसिं वेदयपढमसमए अप्पदरं अधस्सं(अवस्सं) वेदयदि । पुणो एदेसिं वेदयकाले भय-दुगुंछाणं वेदगो संतो जदि पच्छा अवेदगो होदि तो अवेदगपढमसमए अधस्स (अवस्सं) भुजगारं होदि । तदो भय-दुगुंछाणं वेदगावेदगकालब्भंतरे भुजगारप्पदरकालणुसंधाणं-किरियं पुव्वं व वत्तव्वं ।

सादासादाणं भुजगारप्पदरवेदयकालसाहणपरूवणं पुव्वं परूवेदव्वं। पुणो सम्मामिच्छत्तस्स वि तिप्पयाराणं कालपरूवणं जाणिय परूवेदव्वं, सुगमत्तादो ।

सम्मत्तस्स भुजगारवेदयकालं जहण्णेणेगसमयं । पृ० ३२६.

कुदो ? मिच्छत्तस्स णवगबंधगोउच्छमस्सियूण लब्भदि त्ति ।

उक्कस्समंतोमुहुत्तं । पृ० ३२६.

कुदो ? अणंताणुबंधि विसंजदो ण किरियादिविसोहीए तदुवलंभादो (?) ।

अप्पदरवेदयकालो जहण्णेणेगसमयो । पृ० ३२६.

कुदो ? मिच्छत्तस्स णवगबंधमस्सियूण । पुणो उक्कस्सपरूवणा सुगमा ।

मिच्छत्तस्स भुजगारप्पदरवेदयकालं जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिदि (पृ० ३२६) उत्तस्सेदस्सत्थो उच्चदे—

णवगबंधणिसेयमस्सियूण जहण्णकालो वत्तव्वो । अ(उ)क्कस्सं पुणो विसोहिकालस्स ओकड्डुक्कड्डणाणं विसेसिददव्वदो संकिलेसकालस्स ओकड्डिदुकड्डिदाणं विसेसिददव्वादो च बंधगोउच्छ-संतगोउच्छविसेसाणि च अवस्सं जोइज्जमाणे थोवं होदि त्ति णियममवगंमिय (गम्मिय) उत्तं । तं कथं ? ओक्कड्डुक्कड्डणभागहारस्स असंखे० भागवड्ढिभागहारो उक्कस्सेण ओकड्डुक्कड्डणभागहारादो थोवो होदूण असंखे० गुणहीणो होदि त्ति अभिप्पाएण उत्तं । तस्स ट्ठवणा | ओ ओ / 2 2 | । तदो विसोहिकालमेत्तं भुजगारं संकिलेसकालमेत्तं अप्पदरं होदि त्ति उक्कस्सकाल- मंतोमुहुत्तमिदि परूविदं । पुणो बंधगोउच्छ-संतगोउच्छविसेसं च भुजगारप्पदराणं उवयारकारणाणि होंति त्ति परूविदं । एदं मिच्छत्तपरूवणमुवलक्खणं कादूण एदेणभिप्पाएण सेसकम्माणं परूविदमिदि जाणाविदं ।

पुणो मिच्छत्तस्स पलिदोवमस्स असंखे० भागकालं पुव्विल्लाभिप्पाएण लब्भदि कुदो ? तत्तो(त्थो)क्कड्डुक्कड्डुणभागहारस्स असंखे० भागवड्ढिणिमित्तभागहारो मज्झिमपडिवत्तीए ओक्कड्डुक्कड्डुणभागहारेण गुणहाणिं खंडिदेगखंडं रूऊणेण गुणिदमेत्तं लब्भदि त्ति । तस्स ट्ठवणा | ओ / गु ओ / ओ | । एदं ओक्कड्डुक्कड्डुणभागहारम्मि पक्खित्ते एत्तियं होदि | 2 a / गु ओ ओ / ओ | । एदमादिं कादूणुवरि वि असंखे० भागवड्ढिविसयो वत्तव्वो ।

(पृ० ३२६)

पुणो तिण्हं वेदाणं परूवणा सुगमा । णिरय-देवाउआणं परूवणं पि (पृ० ३२६) सुगमं ।

मणुस्साउगस्स भुजगारवेदयो जहण्णेणेगसमयो । पृ० ३२६.

कुदो ? कदलीघादपढमगोउच्छाए उदिण्णे होदि त्ति ।

उक्कस्संतोमुहुत्तं, विसेसाहियगोउच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीह-

---

१ मूलग्रन्थे तु 'विसेसाहिओ गोवुच्छरयणाए'(अ), 'विसे० गोवुच्छरयणाए'(का), 'विसेसाहिया, गोवुच्छरयणाए' (ता०) च पाठोऽस्ति ।

त्तादो। एदस्सत्थो उच्चदे। तं जहा— मणुस्साउगं घादयमाणो जहण्णेण एगसमएण घादयदि, पुणो अजहण्णेण विसमएण, तिसमएण एवं समयुत्तरकमेणेकस्संतोमुहुत्तकालमाउवघादसंकिलेस-परिणामेण परिणमिय पदेसमोकड्डियूण आउअजहाणिसेयगोउच्छविसेसादो अब्भहियगोउच्छु-दयमावलियबाहिरगोउच्छाए संछुहिय तत्तो उवरि विसेसहीणकमेण संछुहदि जावमावलियं ण पत्तो त्ति। एवं समयं पडि समयं पडि संछुहंतो गच्छदि जावुक्कस्सेणुक्क[स्स]घादपरिणदंतोमुहुत्त-काले त्ति। पुणो तत्तियमेत्तकालं भुजगारसरूवेण वेदिय पच्छा एगसमएण कदलीघादं करेदि त्ति उत्तं होदि।

एवं तिरिक्खाउगस्स वि वत्तव्वं। पुणो एस कमो णिरय-देवाउआणं णत्थि। कुदो? तत्थ आउगघादपरिणामाणमसंभवादो। ओकड्डियूण विसेसाहियगोउच्छरयणा णत्थि त्ति उत्तं होदि।

पुणो अवट्ठिदवेदयकालो जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्समट्ठसमयं। पृ० ३२६.

कुदो? आउगघादपरिणामकालब्भंतरे अवट्ठिदोदयणिबंधणपरिणामाणं एगसमयं कादूणुक्कस्सेणट्ठसमयपडिद्धाणं उवलंभादो।

पुणो अप्पदरवेदयकालो जहण्णेण एगसमयो। पृ० ३२६.

कुदो? घादपरिणामकालब्भंतरे एगसमयमुवलंभादो।

उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवम(मं)समयूणं। पृ० ३२७.

सुगममेदं। पुणो एत्तो उवरि णिरयगदिप्पहुडि जाव साधारणपयडि त्ति परूवणा सुगमा। कुदो? विवेगबुद्धीणं पुव्विल्लसंकेदबलेण अवगमुवलंभादो।

एसो णागहत्थिखवणाणं उवदेसो। अण्णेण उवदेसेण मदिआवरणस्स भुजगारवदय-कालो तेत्तीससागरोवमाणि देसूणाणि। पृ० ३२७.

कुदो? सव्वट्ठसिद्धिम्मि तेत्तीससागरोवमाउम्मि उपज्जिय पज्जत्तिं समाणस्स पुव्वं व बंधेहि ओकड्डुक्कड्डणणिसेगेहि गोउच्छविसेसेहिं च अहवा जोगपरावत्तीहिं णिसेगविसेसेहिं पुव्वं व किरिएसु अणुसंधारणकालस्स कदे देसूणतेत्तीससागरोवममेत्तकालं होदि त्ति अभिप्पायादो।

पुणो अप्पदरवेदयकालो तेत्तीससागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि। पृ० ३२८.

कुदो? गुणिकम्मंसियो सण्णी मिच्छाइट्ठी सत्तमपुढवीसु आउगं बंधिय पुणो तत्तो प्पहुडि पुव्वं व भुजगारकिरियं कालाणुसंधाणं करेंतसत्तमपुढविणेरइएसुप्पज्जिय पज्जत्तापज्जत्तेसु तत्थ वि कालाणुसंधाणं तेत्तीसं सागरोवमं कादूण णिस्सरियस्स तदुवलंभादो।

एवं सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चउण्हं दंसणावरणाणं च वत्तव्वं। असादस्स भुजगारवेदयकालो तेत्तीससागरोवमाणि देसूणाणि। पृ० ३२८.

कुदो? सत्तमपुढविणेरइयस्स मिच्छाइट्ठिस्स पुव्विल्लकिरिएण पुव्वं व अणुसंधाणं कदे तेत्तियमेत्तकालुवलंभादो।

अप्पदरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। पृ० ३२८.

कुदो? सत्तमपुढविणेरइसम्माइट्ठिस्स मज्झिमविसोहिं-संकिलेसस्स खविदकम्मंसियस्स पुव्वं व अणुसंधाणे कदे तत्तियमेत्तकालुवलंभादो।

णिरयगदिणामाए भुजगारवेदगो अप्पदरवेदगो [वा] तेत्तीससागरोवमाणि

देसूणाणि । पृ० ३२८.

कुदो ? दुस्सरणामकम्मोदयमागदकालादो हेट्ठिमकालपरिहीणतेत्तीससागरोवमाणि धरिय पुव्वं व अणुसंधाणं कदे तेत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

पुणो अप्पदरकालसाहणट्ठं उत्तरगंथमाह—

णिरयगदिणामाए अप्पदरकालसाहणं उच्चदे । तं पि जहा(तं जहा) णिसेयगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवमिदि । पृ० ३२८.

तं कथं ? कम्मणिसेयस्स गुणहाणिट्ठाणंतरं पलिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो थोवं जादं । किमट्ठमेदं उच्चदे ? कम्मणिसेयस्स विसेसागमणट्ठं एदम्हादो दुगुणं णिसेगभागहारं होदि । तदो तेण वेदिज्जमाणगोउच्छं भागे हिदे तदणंतरवेदिज्जमाणगोउच्छस्स हाणिया-(हाणी आ)गच्छदि त्ति जाणावणट्ठं । एदस्स वि जाणावणे किं पयोजणं ? भुजगारप्पदरकालसाहणणिमित्तं पुव्वं व परूविदं एदमवलंबिय परूविदमिदि जाणाविय एवं (दं)विहाणं सत्थस्स उवरि जत्थ जत्थ संभवो तत्थ तत्थ सव्वत्थ परूवेदव्वमिदि जाणावणे पओजणत्तादो ।

जोगट्ठाणेसु जीवगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं[1] । पृ० ३२८.

कुदो ? सेढीए असंखेज्जभागमेत्तपढमजोगगुणहाणिट्ठाणस्स असंखे० भागपमाणत्तादो । एदस्स परूवणा एत्थ कमट्ठं उच्चदे ? ण, अणेयभयारोदयगोउच्छेसु विवक्खिदुदयणिसेयगोउच्छस्स गुणगारभूदजोगेहिंतो तत्तो हेट्ठा एगजीवगुणहाणिअद्धाणादो असंखे० गुणजोगट्ठाणाणि विवक्खिदजोगट्ठाणपक्खेवभागहारस्स चउब्भागमेत्ताणि ओदरियूणट्ठिदजोगेहि परिणमिय जोगस्स चउव्विहवड्ढि-हाणीहिं बंधमाणस्स अप्पदरं होदि, तत्तो उवरिमजोगट्ठाणेहिं चउव्विहवड्ढि-हाणिजोगेहिं परिणमिय बंधमाणस्स भुजगारं च होदि त्ति जाणावणट्ठं । एवं बद्धदव्वं पहाणं कादूण भणिय पुणो एदेण ओकड्डुक्कड्डुणदव्वविसेसं पि अस्सिऊण परूवेदव्वमिदि सूचिदमिदि पुव्विल्लपरूवणं पि गंथसिद्धं इदि वत्तव्वं ।

पुणो मणुसगदि० पहुडिवेगुव्वियसरीरे त्ति एक्कारसपयडीणमवबंधो(मबंधो)दयएगूणतीस पयडीणं, परघादुस्सासप्पहुडितेरससुहपयडीणं, उज्जोवप्पहुडि णीचागोदे त्ति चत्तारिपयडीणं च परूवणा सुगमत्तादो(सुगमा, तदो) तप्परूवणं चिंतिय वत्तव्वं । पुणो एगजीवस्संतर-णाणाजीवकालंतर-सण्णियासाणं च परूवणा सुगमत्तादो (सुगमा, तदो) ण किंचि वत्तव्वं ।

एत्तो अप्पाबहुगं भणिस्सामो । तं जहा—

मदिणाणावरणस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३२९.

कुदो ? जहण्णएइंदियपदेसुदयट्ठाणं तत्तप्पाओग्गुक्कस्सेइंदियपदेसुदयट्ठाणम्मि सोहिय सेसम्मि रूवपक्खित्तमेत्तपदेसोदयट्ठाणवियप्पेण तप्पाओग्गएगसमयपबद्धमेत्तेण तप्पाओग्गमिच्छादिट्ठिरासिं भागे हिदे लद्धमेत्तपमाणत्तादो । अहवा भुजगारप्पदरकालणुसंधाणं अणंतकालं गंतूण अवट्ठिदं होदि त्ति तेसिं समूहेण मिच्छादिट्ठिरासिं भागे हिदे आगच्छदि त्ति वत्तव्वं । तस्स ट्ठवणा $\frac{13}{स 2}$ । ओकड्डुक्कड्डणपरिणामेहि जोगवसेहिं च अवट्ठिदोदयं लब्भदि त्ति असंखेज्जलोग- भागहारं किण्ण परूविदं ? ण, उवरि अण्णेण उवदेसेण अप्पाबहुगं भण्णमाणम्मि एदमत्थं भणिज्जमाणत्तादो ।

---

१ मूलग्रन्थे 'हाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि' इति पाठोस्ति ।

अप्पदरवेदया अणंतगुणा । पृ० ३२९.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणेइंदियलद्धि-णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं उदयगोउच्छादो अणंतर-वेदिज्जमाणगोउच्छाणं हीणपमाणादो णवगबंधेणुदयं पविस्समाणगोउच्छं असंखेज्जगुणहीणं होदि त्ति अप्पदरोदयं अपज्जत्तजीवे होदि त्ति । लद्धि-णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं पुण पज्जत्ताणं उदय-णिसेगजोगादो हेट्ठिमजोगेसु पुव्वं व वट्ट(ट्ट)माणजीवाणं च गहणादो । तस्स ट्ठवणा | १३४४ ५५५ १३ ४ ५५ १३ ५ | । ओकड्डुक्कड्डणविसेसमस्सिदूण भुजगारप्पदरं किण्ण परूविदं ? ण, खविद-गुणिदघोलमाण-जीवाणं ओकड्डुक्कड्डणविसेसगोउच्छादो थोवा होदि त्ति पुणो बंधगोउच्छादो अधिय-ओकड्डुक्कड्डणविसेसा ते अईव थोवादो ण परूविदं । अहवा एदमत्थमुवरिमभिक्खा-(क्खा)एण उच्चिज्जमाणे ण परूविदं ।

भुजगारवेदया संखेज्जगुणा । पृ० ३२९.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणणिव्वत्तिअपज्जत्तजीवाणं उदयगदगोउच्छादो उवरिसजोग-ट्ठाणेसु चउव्विहवड्ढि-हाणीए अच्छणकालादो भुजगारकारणादो तत्तो हेट्ठिमजोगट्ठाणेसु चउव्विहवड्ढि-हाणीए अच्छणकालो संखेज्जगुणहीणो त्ति तदो णिव्वत्तिपज्जत्तरासीए संखेज्जा भागा भुजगाररासी होदि त्ति गहिदत्तादो। तस्स ट्ठवणा | १३४४ ५५५ | ।

एवं चउणाणावरण-चउदंसणावरणाणं वत्तव्वं । एवं चेव पंचण्हं णिद्दाणं सादासाद-सोलसकसायाणं छण्णोकसायाणं । णवरि अवट्ठिदपदादो उवरि अवत्तव्वपदमणंतगुणे त्ति भणिय तत्तो अप्पदरं असंखे० गुणं, भुजगारं संखेज्जगुणं । ताणि पुव्वं व जाणिय वत्तव्वाणि[१] । एवं मिच्छत्तस्स वि वत्तव्वं । णवरि अवत्तव्वं हेट्ठिल्लपदं कायव्वं ।

सम्मत्तस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.

कुदो ? अणंतिमभाग-पलि(डि)भागाणुसारिपमाणत्तादो ।

भुजगारवेदया असंखेज्जगुणा[२] । पृ० ३३०.

कुदो ? अणंताणुबंधि विसंजोजयंतस्स दंसणमोहणीयं खवेंतस्स एयंताणुवड्ढिपरिणद-संजदासंजद-पमत्तापमत्तसंजदस्स सत्थाणविसुद्धविसोहिपरिणदअसंजदसम्मादिट्ठि-देस-सयल-संजदाणं च गहणादो ।

अवत्तव्ववेदया असंखेज्जगुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? मिच्छत्तस्स सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तपच्छायदवेदगसम्मत्तपडिवण्णगपढम-समयजीवाणं गहणादो ।

अप्परदरवेदया असं०गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? सयलवेदयसम्माइट्ठीणं पुव्वुत्तेहिं वदिरित्ताणं गहणादो । तेसिं ट्ठवणा

प 2 / ३३	प / ३३	प / ३३३	प / ३३३३

।

एवं सम्मामिच्छत्तस्स वि वत्तव्वं । णवरि सम्मत्त-संजदासंजद-संजदएयंताणुवड्ढिगुणसेढि-सहिदाणं सत्थाणविसुद्धपरिणामेहि कदगुणसेढिसहगदाणं मिच्छाइट्ठीणं च सम्मामिच्छत्तं पडि-वण्णगजीवे सत्थाणविसुद्धसम्मामिच्छत्तजीवे च अस्सिय वत्तव्वं ।

१ दृष्टव्योऽस्त्यत्र मूलग्रन्थभागः । २ मूलग्रन्थे 'संखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति ।

णउंसयवेदस्स मिच्छस्स(त्त)भंगो । पृ० ३३०.

तस्स ट्ठवणा

१३४४४
५५५
१३४४
५५५
१३
स 2

।

इत्थि-पुरिसवेदाणं अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.

कुदो ? अणंतिमभागाणुसारिपडिभागियत्तादो थोवं जादं ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? उवक्कमणकाल-पडिभागियत्तादो ।

= ०
४६५८११०६ 2७
०

अप्पदरवेदया असं०गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? देवेहिंतो एइंदिएसुप्पज्जिय तत्थ प्पा(तप्पा)ओग्गकालसंचिदजीवेहिंतो लहुं णिस्सरिय असण्णित्थि-पुरिसवेदेसुप्पण्णाणं पुव्वकोडिकालसंचिदाणं अप्पदरं चेव होदि । कुदो ? तत्थ उदयणिसेगस्स गुणगारभूदविवक्खिदजीवजवमज्झादो जोगट्ठाणादीणं हेट्ठदो असण्णिस्स उक्कस्सजोगसंभवादो

=
४६५२२४० 2
१०

। पुणो असण्णिपंचिंदियइत्थि-पुरिसवेदयजीवा इत्थि-पुरिसवेददेवेसुप्पज्जिय तत्थ गुणहाणिमेत्तअसंखेज्जवस्साउगदेवेहिंतो तत्थ सेसाउगम्मि देवि-देवाणं विवक्खिदजीवजवमज्झादीणं हेट्ठिमअप्पदरणिबंधणजोगट्ठिदजीवेहिंतो उवरिमभुजगारणिबंधणजोगट्ठाणट्ठिदजीवा विसेसाहिया होंति, तत्थप्पदरणिबंधणजीवाणं पुव्विल्लजीवेहि सहगदाणं गहणादो ।

४६५५३५३२४१०° प ८
2 १७

। अहवा तेसिं जीवरासिं ट्ठविय अप्पदरणिबंधणजोगपरावत्तणकालादो भुजगारणिबंधणजोगपरावत्तणकालो विसेसाहिओ त्ति तेसिं कालाणं पक्खेवसंखेवेण भजिय सग-सगपक्खेवेण गुणिदरासिं पुव्विल्लरासिम्हि पक्खिविय पुणो सण्णिपच्छादएण (पच्छायदेण) संचिदइत्थि-पुरिसवेदरासीणं अप्पदरम्मि पक्खित्तमेत्तत्तादो ।

पुणो ? **भुजगारवेदया विसे० । पृ० ३३०.**

कुदो ? एइंदिएहिंतो असण्णि-सण्णि-इत्थि-पुरिसवेदेसुप्पज्जिय संचिदाणं पुणो एदेहिंतो देवेसुप्पज्जिय पुव्वुत्तगुणहाणिमेत्तअसंखेज्जवस्साउगसंचिदाणं पुणो तदुवरिमपवेसपुव्वुत्तभुजगारजीवाणं सण्णिपच्छ(च्छा)यदसण्णिदाणं भुजगाराणं एगट्ठकदमेत्तत्तादो । तेसिं ट्ठवणा एक्कस्स

=	३२	९
४६५	३३	१७
=	३२	८
४६ ५	३३	१७
=	३२	०
४६ ५८११०	३३	२८
=	३२	
४६५	≡३३	22

। देव-णेरइयाउआणं परूवणा सुगमा ।

मणुस्साउगस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३०.

कुदो ? घादिपरिणामपरिणमणकालब्भंतरे अणंतपडिभागाणुसारियवट्ठिदजीवाणं उवलंभादो ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? उवक्कमणकालभजियसगरासिपमाणं सत्थाणेणुप्पण्णरासिमवणयणट्ठं किंचूणकयमेत्तत्तादो ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३०.

कुदो ? घादपरिणामपारंभप्पहुडि अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे संचिदत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा[1] । पृ० ३३०.

---

१ मूलग्रन्थे 'संखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति ।

कुदो ? घादपरिणामट्ठिदजीवादो घादावादाउअपरिणामट्ठिदजीवाणं असं० गुणत्तं णाय-सिद्धत्तादो। पुणो भुजागारकालादो अप्पदरकालो संखेज्जगुणो त्ति विवक्खाए संखेज्जगुणं होदि त्ति वत्तव्वं। किंतु तमेत्थविवक्खिदं। तेसिं ट्ठवणा | १३22 | १३2७ | १ ३ 2७ | १ ३ 2 21 |। तिरिक्खाउअस्स परूवणापवंचो सुगमो।

णिरयगदीए अवट्ठिदवेदया थोवा। पृ० ३३०.

सुगममेदं। कुदो ? पुव्वुत्तकारणसंभवादो।

अप्पदरवेदया असं०गुणा। पृ० ३३०.

[कुदो ?] सण्णिपंचिंदिएहिंतो णिरएसुप्पज्जिय तत्थ अपज्जत्तकाले संचिदजीवाणं च गहणादो।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा। पृ० ३३०.

कुदो ? असण्णि-सण्णिपच्छायदपढमसमयट्ठिदजीवरासिगहणादो।

भुजगारवेदया असंखे० गुणा। पृ० ३३०

कुदो ? असण्णिपच्छायदविदियादिसमए णेरइयाणं संखेज्जवस्साउगसंचिदाणं गहणादो। तेसिं ट्ठवणा

| । २ । |
| — २ |
| 2 ७ |
| — — |
| प 2 |
| — 2 |
| ३३३ |

। तिरिक्खगदिपरूवणा सुगमा।

मणुसगदीए अवट्ठिदवेदया थोवा। पृ०३३०.

सुगममेदं।

अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा। पृ० ३३१.

कुदो ? उवक्कमणकालेण खंडिदेयखंडपमाणत्तादो।

अप्पदरवेदया विसे०[1]। पृ० ३३१.

कुदो ? मणुस्सेसुप्पण्णजीवाणं पलिदोवमस्स असं० भागेण खंडिदेसु तत्थ बहुभागा एइंदिय-विगलिंदिय-असण्णिपंचिंदिएहिंतो आगदाणि होंति, एगभागो सण्णिपंचिंदिएहिंतो आगदो। तत्थ सण्णीहिंतो आगदा ते अप्पदरं करेंति त्ति तेसिमंतोमुहुत्तकालसंचयमाणिय ट्ठविय— | 2 ७ / १३ 2७ प / 2 | पुणो सेसजीवेहिंतो आगदजीवाणं असंखे० भागं रिजुगदीए उप्पज्जंति | १३2७ प प / 2 2 |। पुणो ते भुजगारं करेंति त्ति तत्थ जे बहुगा ते एग-वेविग्गहं काऊण उप्पज्जंति। ते च सरीरगहिदसमए अप्पदरं करेंति। तदो तेसिं वेसमयसंचिदम्मि एत्तियमेत्तम्मि | १३७७पपप१प१२ / 2 2 | पुव्विल्लट्ठविदरासिं आणिय पक्खित्तमेत्तपमाणत्तादो। ते चेत्तिया |१३|।

देवगदीए अवट्ठिदवेदया थोवा। पृ० ३३१.

सुगममेदं, बहुसो उत्तत्तादो।

अवत्तव्ववेदया असंखेज्जगुणा। पृ० ३३१.

कुदो ? वाणवेंतरदेवाणं सगुवक्कमणकालेण खंडिदेगखंडं सादिरेयपमाणत्तादो।

अप्पदरवेदया असं० गुणा। पृ० ३३१.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणाणं उदयणिसेयगोउच्छाणं जोगगुणगारजीवजवमज्झजोगं

---

१ मूलग्रन्थेऽस्मात्पदादग्रे 'भुजगार० असंखे० गुणा' इत्येतदपि पदमुपलभ्यते।

तस्समं वा अप्पदरं वा जोगमिदि विवक्खिदं, तदो जीवजवमज्झादो हेट्ठिमजीवाणं अपदरवेदयाणं गहणादो ।

भुजगारवेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? जीवजवमज्झविवक्खिदा उदयजोगादो उवरिमजोगजीवाणं गहणादो ।

= ४६५≡22	= ४६५≡८१० 2 ७७	= ८ ४६५≡१७	= ९ ४६५≡१७

।

एइंदियजादीए | १० | तिरिक्खगदिभंगो । विगलिंदिय-पंचिंदियजादीणं मणुसगदिभंगो ।

ओरालियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-परघादुज्जोवुस्सास-बादर-सुहुम-साहारण-जसगित्ति-अजसगित्तिबारसपयडीणं अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं । णवरि किंचि जीवरासिगदसंखविसेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? अंतोमुहुत्तभजिदसगवेदगजीवरासिपमाणत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । भुजगारवेदया संखेज्जगुणा । पृ० ३३१.

एदाणि दो वि पदाणि सुगमाणि । कुदो ? मदिणाणावरणभंगत्तादो । तत्थेक्कोरालियस्स ट्ठवणा

ट्ठवणा	१३२७४४ ३ ५ ७ ५
सुगमा ।	१३२७४ ३ ५ २७५
परूवणा	१३२७४ ३ २७५।२७४
पृ० ३३१	१३२७४ ३ १७५ स २१

।

वेगुव्वियसरीर-तब्बंधण-संघाद-समचउरससरीरसंठाणाणं परूवणा सुगमा । तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

= ९   ४६५१७
= ८   ४६५१७

। तेजा-कम्मइगादीए उणतीसपयडीणं उव(धुव-)बंधोदयाणं सुगमा ।

असंपत्तसेवट्टसरीरसंहडण० अवट्ठिदवेदया थोवा ।

=   ४६५८११०२७
=   ४६५ 22

सुगममे ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? देवेहिंतो एइंदिएसुप्पज्जिय तत्थ तप्पाओग्गसंकिलेसेण सूचिदं तत्तो लहुं णिस्सरिय विगल-सगलिंदिएसुप्पण्णाणं जीवाणं सादिरेयाणं अप्पदरं करेंताणं गहणादो ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? एइंदिएहिंतो सेससंहडणोदयजीवेहिंतो विग्गहम्मि ट्ठिदअसंघडणजीवेहिंतो च आगंतूण असंपत्तसंघडणोदयसंजुत्तजीवेसुप्पण्णेगसमयजीवगहणादो ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? एइंदिएहिंतो आगंतूण तसअपज्जत्तेसुप्पण्णाणं भुजगारं चेव होदि । णवरि सण्णीहिंतो एइंदिएसुप्पज्जियसंचिदजीवेहिंतो उप्पण्णे मोत्तूण पुणो तम्मि पज्जत्तेसु भुजगारं करेंतरासिं पक्खविय गेण्हिदत्तादो । तेसिं ट्ठवणा

=2 १   ४2   2

।

पुणो चउसंठाण-पंचसंहडणाणं अवट्ठिदवेदया थोवा । ० ३३१.

कुदो ? सग-सगपयडिवेदय—सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयाणं अणंतिमभागाणुसारिपडिभागियत्तादो ।

=४2७
2

अवत्तव्ववेदया असं०गुणा । पृ० ३३१.

=४६५८११:२७
=४ 22
2

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु सग-सगपयडिवेदएसुप्पण्णपढमसमयजीवाणं गहणादो । तेसिं पडिभागो उवक्कमणकालो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा[1] । पृ० ३३१.

कुदो ? एदाओ असण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु बहुवा संभवति । पुणो तत्थ जीवजवमज्झं णत्थि, तदो सव्वजोगट्ठाणेसु जीवा सरिसअच्छणं लभंति त्ति । तदो एत्थ विवक्खिदमज्झिमोदयणिसेगगोउच्छजोगगुणगारादो हेट्ठिमट्ठाणाणं एत्थतणसव्वजोगट्ठाणाणं संखेज्जदिभागमेत्ताणं पुणो तेसिं ट्ठाणेसु ट्ठिदजीवाणं संखे० भागमेत्ताणि होंति, तम्मि सरिसं होदूण ट्ठिदजीवाणं गहणादो ।

णिरयाणुपुव्वीए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयगुणिदघोलमाणजोगट्ठाणेसु मज्झि[म]जोगमेत्तुदयणिसेगस्स गुणगारमिदि विवक्खिदत्तादो, तदो हेट्ठिमजोगट्ठाणेसु सव्वेसु सरिसं होदूण ट्ठिदअसण्णिजीवेहिंतो सण्णीणं पुण जीवजवमज्झहेट्ठिमजीवेहिंतो च आगदजीवाणं गहणादो ।

भुजगारवेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? असंण्णिपंचिंदियघोलमाणजोगट्ठाणेसु पुव्वविवक्खिदजोगादो उवरिमजोगेहिंतो जवमज्झस्सुवरिमजोगेहिंतो आगदजीवाणं च विदियविग्गहे ट्ठिद गहणादो ।

अवत्तव्ववेदगा विसेसाहिया । पृ० ३३१.

कुदो ? एगसमयेणुप्पण्णसव्वजीवरासिगहणादो ।

मणुसगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीणं[2] अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३१.

सुगममेदं ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणजीवाणं उदयगोउच्छाणेयपयारा लब्भंति, तत्थ ववक्खिदुदयगोउच्छस्स जोगगुणगारादो हेट्ठिमजोगट्ठाणेहिंतो असण्णिपंचिंदियजोगट्ठाणस्स संबंधीदो उवरिमजोगट्ठाणाणि किंचूणमिदि विवक्खिदं, तदो तत्थट्ठिदजीवेहिंतो आगदजीवाणं पुणो सण्णिपंचिंदियाणं जीवजवमज्झविवक्खिदत्तादो तत्तो उवरिमजोगजीवेहिंतो च आगदजीवसहिदाणं दोसमयसंचिदाणं गहणादो ।

अवत्तव्ववेदया विसे० । पृ० ३३१.

कुदो ? विग्गहं करिय एगसमएणुप्पण्णजीवाणं गहणादो ।

अप्पदरवेदया विसे० । पृ० ३३१.

---

१ मूलग्रन्थेऽस्मात्पदादग्रे 'भुजगार० संखे० गुणा' इत्येतदपि पदमुवलभ्यते ।

२ मूलग्रन्थे देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीप्ररूपणा नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्व्या समाना दर्शिता ।

कुदो ? पुव्वुत्तदुपयारजीवाणं उदयणिसेयस्स जोगगुणगारादो हेट्ठिमजोगट्ठाणट्ठिदजीवेहिंतो आगदाणं दोसमयसंचयगहणादो । एवंविहविवक्खा होदि त्ति कुदो णव्वदे ? तिण्णिविग्गहे अस्सिऊण भण्णमाणेण इमेण आरिसादो । पुणो दोण्णिविग्गहे अस्सियूण णिरयगदिभंगो होदि । पुणो णिरयगदीए तिण्णिविग्गहे विवक्खिदे एदं चेव तत्थ वि वत्तव्वं । एत्थ मणुस्साणुपुव्वीए

ट्ठवणा	⌒ २ / १३९७१७	।
विग्गह-	१३२७ / – २२।८ / १३२७१७ / १३२७२	पुणो तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए एवं चेव वत्तव्वं, तत्थ वि तिण्णिसंभवादो ।

णवरि भुजगारवेदया अणंत० होंति त्ति वत्तव्वं । पृ० ३३१.

आदावमप्पसत्थविहायगदि-दुस्सराणमवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३१

कुदो ? अणंतिमभागपडिभागियत्तादो दुल्लहं होदि त्ति।

अवत्तव्ववेदया असं०गुणा । पृ० ३३१.

कुदो ? उवक्कमणकालभजिदसगरासिपमाणत्तादो ।

अप्पद० वेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? बादरपुढविपज्जत्तविगलिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं संभवजोगट्ठाणाणं मज्झे विवक्खिदोदयणिसेगस्स जोगगुणगारादो हेट्ठिमसंखेज्जदिमभागट्ठाणेसु सरिसं होदूण ट्ठिदजीवाणं गहणादो ।

भुजगारवेदया संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उवरिमसंखेज्जभागजोगट्ठाणेसु ट्ठिदजीवाणं गहणादो ।

थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं परूवणा तिरिक्खगदिभंगो । पृ० ३३२.

सुगममेदं ।

अपज्जत्तणामकम्माए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्थुप्पण्णाणं पज्जत्तजीवाणं तत्थतणजहण्णाउवकालब्भंतरे संचिदाणं अणंतिमभागगहणादो ।

अवत्तव्ववेदया अणंत० । पृ० ३३२.

कुदो ? अंतोमुहुत्तभजिदसगरासिपमाणमेत्तपज्जत्तरासीदो आगदत्तादो ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? पज्जत्तजीवे भुजगारोदयणिबंधणसमयपबद्धाणि बंधिय अपज्जत्तेसुप्पज्जिय आबाधमेत्तकालब्भंतरे भुजगारं करेंतजीवाणं सगपरिणामजोगट्ठाणेसु भुजगारं करेंतजीवाणं च गहिदत्तादो ।

अप्पदरवेदया संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? पुव्वुत्तजीवे सेससव्वअपज्जत्तजीवगहणादो ।

सुस्सरणामाए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

सुगममेदं ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उवक्कमणकालभजिदसगरासिपमाणत्तादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? सण्णीणं जीवजवमज्झादो हेट्ठा संखेज्जजीवगुणहाणीए ओदरिय ट्ठिदजोगमुदयगोउच्चस्स गुणगारं गुणिदघोलमाणं विवक्खिदत्तादो तत्तो हेट्ठिमजीवाणं गहणं । तं पि असण्णीसु सुस्सरं णत्थि त्ति ।

भुजगारवेदया सं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्तो उवरिमजीवाणं गहणादो ।

पज्जत्तणामकम्माए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? णिव्वित्तिपज्जत्ताणं अणंतिमभागत्तादो [१३४४/५५स2] ।

अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? सगरासिमंतोमुहुत्तेण खंडिदेगखंडपमाणं अपज्जत्तेहिंतो आगदत्तादो [१३४/५२७] ।

भुजगारवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणजीवाणं विवक्खिदोदयणिसेयस्स गुणगारभूदजोगादो हेट्ठिमट्ठाणादो उवरिमट्ठाणाणि संखे० गुणहीणाणि होदि त्ति पुणो तत्थ सव्वत्थ सरिस होदूण ट्ठिदसव्वजीवाणं गहणादो [१३४/५५] ।

अप्पदरवेदया संखे० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? तत्थ विवक्खिदजोगादो हेट्ठिमपरिणामजोगट्ठाणेसु एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणं अवट्ठिदजीवाणं च गहणादो ।

पुणो एत्थ जोगट्ठाणेसु अण्णदरमज्झिमजोगट्ठाणाणं विवक्खाए अवलंबणं कादूणेदमप्पाबहुगं भणिदं । कथमेदं(वं)विहविवक्खा जोगट्ठाणेसु होदि त्ति ? ण, उक्कस्सदव्वपरूवण(णे) उक्कस्सजोग-तस्संबंधिजीवाणं, जहण्णदव्वपरूवणे जहण्णजोगं(ग-) तस्संबंधिजीवाणं च जहा विवक्खा, ण तहा अजहण्णाणुक्कस्सदव्वाणं परूवणे दुप्पयारं(र)घोलमाणजीवपडिवद्धाणेयपयारा लब्भदि त्ति अभिप्पाएण अणेयपयारजोगट्ठाणाणि तत्थ पडिवद्धजीवादि(दी) परूविदा, तदो णव्वदे ।

पुणो ट्ठिदिबंधेण ओक्कड्डुक्कड्डणेण च पदेसवड्ढि-हाणी होदि त्ति एदेण हेदुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसमप्पावहुगं भवदि इदि । पृ० ३३२.

एदस्सत्थो सुगमो । कुदो ? ट्ठिदिबंधवड्ढीए णिसेयस्स सुहुमट्ठिदिबंधहाणीए णिसेयस्स थूलत्तं । पुणो विसोहीए ओक्कड्डणवहुत्त (त्तं) उक्कड्डणाए थोवत्तं, संकिलेसेण पुणो उक्कड्डणाए बहुत्तं ओक्कड्डणाए थोवत्तं च होदि त्ति जाणाविदं ।

तं जहा— णिरयगइणामाए अवट्ठिदवेदया थोवा । पृ० ३३२.

कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणाणं ओक्कड्डुक्कड्डणपरिणामवसेण बंधवसेण च असं० लोगपडिभागियतप्पाओग्गभागहारो होदि त्ति ।

अवत्तव्ववेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? उप्पण्णपढमसमयसयलजीवाणं गहणादो ।

अप्पदरवेदया असं० गुणा । पृ० ३३२.

कुदो ? गुणिदकम्मंसियमिच्छादिट्ठीणं विसोहिकालादो संकिलेसकालो संखे० गुणो, पुणो खविदकम्मंसियाणं तं विवज्जासो (तव्विवज्जासो) होदि; ताणि दुल्लहाणि। पुणो सुलहाणं खविद-गुणिदघोलमाणाणं दुक्खाभिभूदाणं विसोहिकालादो संकिलेसकालं संखे० गुणहीणं होदि त्ति, तत्थ संजदजीवाणं गहणादो।

भुजगारवेदया संखे० गुणो (णा[1])। पृ० ३३२.

कुदो ? पुव्वजम्मम्मि कयअण्ण(णु)ट्ठाणेण दयेण ? णिंदण-गरहणादिसुप्पण्णमज्झिमविसोहिकालम्मि संचिदबहूणं जीवाणं गहणादो।

पुणो पुव्विल्लप्पाबहुगम्मि अवट्ठिदं थोवं, अप्पदरमसं० गुणं, अवत्तव्वं संखे० गुणं, भुजगारं संखे० गुणमिदि भणिदं। तदो तत्तो एदस्स भेदो जाणियव्वो।

एदेण अणुमाणेण अणुमाणेऊण[2] सव्वकम्माणं णेदव्वं। पृ० ३३२.

एदस्सत्थो उच्चदे सूचिदसरूवेण। तं जहा— मदिणाणावरणस्स अवट्ठिदा थोवा। कुदो ? असंखे० लोगपडिभागियत्तादो। अप्पदरवेदया असं० गुणा। कुदो ? खविद-गुणिदघोलमाणाणं संकिलेसेण संचिदत्तादो। भुजगारवेदया संखे० गुणा। कुदो ? तेसिं विसोहिकालेण संचिदत्तादो। एवं सव्वकम्माणमप्पाबहुगं अ(त)प्पाओग्गसरूवेण जाणिय वत्तव्वं।

एदं पुणो हेदुणा अप्पावहुगं ण पवाइज्जदि।[3] पृ० ३३२.

एदस्सत्थो सुगमो।

एवं पदेसभुजगारो गदो[4]। पृ० ३३२.

(पृ० ३३२)

पदणिक्खेवपरूवणपबंधो सुगमो। णवरि जहण्णपदणिक्खेवम्मि **जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च सव्वकम्माणमेगपदेसो[5]। णवरि देव-णिरयाउग-तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वमिदि। पृ० ३३४.**

एत्थेदस्सत्थविवरणं कस्सामो। तं जहा— विवक्खिदवट्टमाणोदयगुणसेढिगोउच्छादो तदणंतरसमए वेदिज्जमाणगोउच्छरचण(णा-) कमेण एगविसेसं ण (-विसेसेण) हीणं होदि। तम्हि ण पमाणं बंधदव्वस्स पढमगोउच्छाए पडिपूरिदं होदि, पडिपूरिदे समाणं होदि। एवं सरिसत्ते संभवे संते पुणो तम्मि ओक्कड्डुक्कड्डुणवसेण एगपरमाणुवड्ढि-हाणिअवट्ठाणं(ण)संभवे विरोहो णत्थि त्ति आइरियाणं सम्मदत्तादो एगपरमाणूणं वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सव्वकम्माणं वत्तव्वमिदि उत्तं। णवरि देव-णिरयाउआणं समयपबद्धं संखे० भागहाणी चरिच-(म-)दुचरिमगोउच्छविसेसम्मि गहेदव्वं। तित्थयरस्स पुण हाणीए (हाणी) एगगोउच्छविसेसो वड्ढी पुण बिदियसमयकेवलिस्स गुणसेढिगोउच्छं होदि त्ति एदाणि मोत्तूण तदो सेसाणं वत्तव्वमिदि उत्तं।

पुणो के वि एगपदेसे इदि उत्ते जोगवसेण जहण्णेण वड्ढिदव्वमेगपक्खेवमेत्तं एगपदेसमिदि भणिय एदं वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं जहण्णं होदि त्ति भवे यस्सियूण भणंति। तं पि जाणिय वत्तव्वं।

---

१ मूलग्रन्थे 'असंखे० गुणा' इति पाठोऽस्ति। २ मूलग्रन्थेऽस्य स्थाने 'मग्गिदूण' इति पाठोऽस्ति। ३ मूलग्रन्थे 'पाविज्जदि' इति पाठः। ४ मूलग्रन्थे 'गदो' इत्येतस्य स्थाने 'समत्तो' इति पाठः ५ मूलग्रन्थेऽतोऽग्रे 'अण्णदरस्स भवे' इत्येतावानधिकः पाठः प्राप्यते।

पुणो अप्पाबहुगमिदि किंचियत्थं भणिस्सामो। तं जहा—

पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं उक्कस्सं अवट्ठाणं थोवं। पृ० ३३५.

कुदो? अप्पमत्तसंजदस्स सत्थाणट्ठिदस्स तप्पाओग्गमंदविसोहिणा ओक्कड्डियूण गुणसेढिं करेंतेण पुव्विल्लगुणसेढिसीसयादो असं० गुणं करिय पुणो वि तदणंतरसमए पुव्विल्ल-ओकड्डणदव्वादो असं० भागब्भहियदव्वोक्कड्डणणिबंधणपरिणामेणोकड्डियूण पुव्विल्लगुणसेढिसीसएण समाणगुणसेढिसीसयं करिय अथवा बंधदव्ववसेण गोउच्छविसेसेणहिएण कदेण समाणं होदि। पुणो वि अंतोमुहुत्तकाल(लं) तप्पाओग्गसंचयं करिय पुणो ताणि कमेण वेदिज्जमाणे वड्डिपुव्वमवट्ठाणं असं० समयपबद्धमेत्ताणि होदि त्ति ताणि गहिदत्तादो। तत्थेक्कस्स मदिणाणावरणस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४५
७४ओ प ८५२
2 2

।

उक्कस्सिया हाणी असं० गुणा। पृ० ३३५.

कुदो? उवसंतकसाएण अण्णदरसमयट्ठिएण गुणसेढिं करिय देवेसुप्पज्जिय तत्थंतोमुहुत्तकालं गंतूण गुणसेढिसीसयं वेददि, तत्तो तम्मि तदणंतरजहाणिसेयगोउच्छमवणिदे तत्थ सेसमेत्तं गहिदत्तादो। तदेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४
७४ ओ प ८५
2 2

।

उक्कस्सवड्ढी असं० गुणा। पृ० ३३५.

कुदो? खीणकसायचरिमगुणसेढिसीसयदव्वं किंचूणमेत्तं गहिदत्तादो। तस्सेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४
७४८५

।

णिद्दा-पयलाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। पृ० ३३५.

कुदो? पुव्वं व अप्पमत्तसंजदेण कदगुणसेढिगोउच्छं वड्डिपुव्वमवट्ठाणं जादमिदि तग्गहणादो। तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४
७ ख ५ ओ प ८५
2 2

।

उक्कस्सिया हाणी असं० गुणा। पृ० ३३५.

कुदो? उवसंतकसाएण कदचरिमगुणसेढिसीसयं सुहुमसांपराइयम्मि वेदिज्जमाणीसु वेदिदम्मि तम्मि तदणंतरउवरिमगोउच्छमवणिदे तत्थ वेसम[य]पमाणत्तादो। तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४२
७ ख ५ ओ प ८५२
2 2

।

उक्कस्सिया वड्ढी असं० गुणा। पृ० ३३५.

कुदो? खीणकसायतिचरिमगुणसेढिगोउच्छं दुचरिमगुणसेढिगोउच्छम्मि सोहिदे सुद्धसेसपमाणत्तादो। तत्थेक्कस्स ट्ठवणा

स ३२१२६४
७ ख ९८५

।

पुणो तत्थ पुव्वुत्तुक्कस्ससामित्तविवक्खाए अप्पाबहुगं भण्णमाणे अवट्ठिदं थोवं। सु [ग]मेदं। वड्ढी असं० गुणा। कुदो? पढमसमए उवसंतकसाएण कदगुणसेढिसीसयं उवसंत-

कसायम्मि उदिण्णम्मि तम्मि तस्स हेट्ठिमगोउच्छमवणिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । हाणी विसे० । कुदो ? उवसंतकसायस्स चरिमगुणसेढिसीसयं सुहुमसांपराइयम्मि उदिण्णम्मि तम्मि तदणंतर-गोउच्छमवणिदे सेसपमाणत्तादो । तेसिं ट्ठवणा

स ३२१२६४ ७ ख ५ ओ प ८५	स ३२१२६४२ ७ ख ५ ओ प ८५ 222	स ३२१२६४2 ७ ख ५ ओ प ८५ 2 222

।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणं उक्कस्सं अवट्ठाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? अप्पमत्तसंजदेण पुव्वं व कदगुणसेढिणा सह पमत्तगुणं पडिवण्णे थीणगिद्धि-तियाणं, पुणो तेण पमत्तसंजमं पडिवण्णेण मिच्छत्तं पडिवण्णे मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणं च अवट्ठिदं होदि त्ति । पुणो तेसिं तिप्पयाराणं एसा ट्ठवणा—

स ३२१२६४४ ७ ख ५ ओ 2 ८५ 2	स ३२१२६४४ ७ ख १ ओ 2 ८५ 2	स ३२१२६४४ ७ ख १७ ओ 2 ८५ 2

।

उक्कस्सवड्ढी असंखे० गुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? अप्पमत्तसंजदेण तप्पाओग्गमंदविसोहिट्ठिदेण पुव्विल्लवट्ठाणकारणविसोहीदो अणंतगुणसत्थाणुक्कस्सविसोहिपरिणदेण कदगुणसेढिसीसयं पुव्वं व पुव्वुत्तगुणट्ठाणम्हि उदय-मागदम्मि तम्मि तस्स हेट्ठिमणिसेयं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । तेसिं ट्ठवणा—

स ३२१२६४ ७ ख ५ ओ 2 ८५ 22	स ३२१२६४ ७ ख १७ ओ 2 ८५ 22	स ३२१२६४४ ७ ख १७ ओ 2 ८५ 22

।

उक्कस्सिया हाणी विसे० । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वुत्तचरिमगुणसेढिगोउच्छम्मि तदुवरिमजहाणिसेयगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेस-पमाणत्तादो । तेसिं ट्ठवणा पुव्वं व ।

अट्ठण्णं कसायाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वं व अप्पमत्तसंजदेण कदगुणसेढिसीसएण सह संजदासंजद-असंजदसम्मा-दिट्ठिगुणाणि कमेण पडिवण्णे पच्चक्खाणापच्चक्खाणकसायाणमवट्ठिदं होदि त्ति । तेसिं ट्ठवणा

स ३२१२६४६ ७ ख १७ ओ 2 ८५ 2	स ३२१२६४१६ ७५१७ ओ 2 ८५ 2

।

वड्ढी असंखेज्जगुणा । पृ० ३३५.

कुदो ? अणियट्टिउवसामगो अंतरकरणमकरेंतचरिमसमए मदो देवो जादो, पुणो तत्तो अंतोमुहुत्तकालं गंतूण गुणसेढिसीसए उदिण्णे तम्मि दुचरिमगुणसेढिगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो । तस्स ट्ठवणा

स ३२१२ । ४८ । ४४ ७ ख १७ ओ 2 ८५ 22	स ३२१२४८ । ४४ ७ ख १७ ओ ८५३ 22

।

पुणो हाणी विसेसाहिया । पृ० ३३५.

कुदो ? अणंतरउत्तचरिमगुणसेढिसीसयदव्वेसु वेदिदम्मि तदणंतरवेदिज्जमाणजहाणिसेयगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो।

सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं णाणावरणभंगो। पृ० ३३५.

सुगममेदं। कुदो ? अप्पाबहुगुच्छा(च्चा)रणाए समाणत्तादो, णवरि दव्वविसेसो अत्थि तं वत्तइस्सामो। तं जहा— सम्मत्तस्स अवट्ठिददव्वं पुव्वं व। उक्कस्सहाणि(णी) अणंताणुबंधिविसंजोजणचरिमगुणसेढिसीसयदव्वम्मि तदणंतरजहाणिसेगगोउच्छं सोहिदे तत्थुवरिददव्वमेत्तं होदि। उक्कस्सवड्ढी पुण दंसणमोहक्खवगगुणसेढिसीसयचरिमणिसेयम्मि दुचरिमगुणसेढिगोउच्छं सोहिदे तत्थ सेसपमाणं होदि।

पुणो णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं अवट्ठिददव्वं पुव्वं व। हाणिदव्वं पुणो अणियट्टिकरणउवसामगस्स अंतरकरणं अकरेंताणं चरिमसमए मदो देवेसुप्पण्णाणं अंतोमुहुत्तकालचरिमसमए पुव्वं व वत्तव्वं। णवरि तिण्णिवेद-चउसंजलणाण सग-सगवेदाउगउवरिमसमयउवसामगो देवेसुप्पण्णाणं आवलियकालं गदम्मि वत्तव्वं। उक्कस्सवड्ढिदव्वं पुण खवगसेढीए जाणिय वत्तव्वं।

एदमप्पाबहुगं दव्वणिज्जरमेत्तमवेक्खिय उत्तं। पुणो पढ(द)मवेक्खिअवट्ठिदपरूवणं पुव्वं व थोवं होदि। वड्ढी असं० गुणा। हाणी विसे०। एदाणि दो वि पदाणि उव(सम)सेढीदो एसु(देवेसु) प्पण्णस्स होदि त्ति जाणिय वत्तव्वं।

सम्मामिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो। पृ० ३३५.

देव-णिरयाउगाणं परूवणा सुगमा, जोइज्जमाणे सुबोहत्तादो।

मणुस-तिरिक्खाउगाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। पृ० ३३५.

कुदो ? पुव्वकोडाउगं कदलीघादं करेंत एण्णिद ओकड्ढियूण उदयावलियबाहिरे गोउच्छाए आउगगोउच्छविसेसादो असं० भागं संछुहिय उवरि विसेसहीणकमेण संछुहदि जाव चरिमगोउच्छं आवलियमेत्तकालं ण पावदि त्ति। एवमंतोमुहुत्तमुक्कस्सघादपरिणाममेत्तकालं करेंतेण वड्ढिपुव्वमवट्ठिदं करेदि त्ति। तस्स ट्ठवणा

स ३२२७
ओ ८ घ

उक्कस्सहाणी असंखे० गुणा। पृ० ३३५.

कुदो ? तिपलिदोवमाउगस्स कदलीघादकदचरिमगोउच्छम्मि तदुवरिमतिपलिदोवमस्स पढमगोउच्छमण्णभवसंबंधिं सोहिदे सेसपमाणत्तादो।

उक्कस्सवड्ढी विसेसा०। पृ० ३३५.

कुदो ? तिपलिदोवमस्स कदलीघादेणुप्पण्णपढमगोउच्छम्मि तदणंतरहेट्ठिमगोउच्छं एगसमयं कदलीघादसंपरिणामसंबंधियमवणिदे तत्थ सेसपमाणत्तादो। एवं (एदं) भोगभूमीसु घादाउगमत्थि त्ति अभिप्पाएण उत्तं। पुणो तत्थ तण्णत्थि त्ति अभिप्पाएण पुव्वकोडाउवघादं चेवस्सिय एवं चेव हाणि-वड्ढीयो वत्तव्वाओ।

एत्तो गदियादिउवरिमपयडीणं अवट्ठिदादिपदाणं अप्पाबहुगं सुगमत्तादो अत्थो ण उच्चदे। कुदो ? अप्पमत्तसंजदगुणसेढीयो उवसामग-उवसंतगुणसेढीयो अजोगिगुणसेढीयो सजोगिस्स सत्थाणसमुग्घादगुणसेढीयो दंसणमोहक्खवणगुणसेढि-अणंताणुबंधिविसंजोजणगुणसेढीयो च जं जं जस्स पयडीणं संभवदि तं तं जोइय भण्णमाणे सुबोहत्तादो। णवरि आदावस्स भण्णमाणे

बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिअपज्जत्तद्धाणादो अप्पमत्तसंजद-संजदासंजदाणं कदगुणसेढिअद्धाणाणि मिच्छत्तं गंतूण आउगं बंधिय विस्समिदसेसकालं बहुगमिदि अहिप्पाएण वत्तव्वं, अण्णहा एदस्स वड्ढी थोवा। कुदो ? खविदकम्मंसियो आदाओदएण सहिदो सगपाओग्गुक्कस्सजोगेण बंधिददव्वस्स पढमणिसेयं किंचूणयपमाणत्तादो | स 2 / ७२४१२ | । हाणि-अवट्ठाणं असंखेज्जगुणं। कुदो ? गुणिदकम्मंसियस्स छव्विस्सोदयसहिद-पुढविकायस्स सत्तावीसोदए जादे हाणिदंसणादो। तदणंतरमवट्ठाणं पि बंधवसेण संभवदि त्ति | स 2२ / ७२४२५ | ।

॥ एवमुदयाणिओगद्दारं गदं ॥

॥ समाप्तोऽयमुद्ग्रंथः ॥

श्रीमन्माघनंदिसिद्धान्तदेवर्गे सत्कर्मदपंजियं श्रीमदुदयादित्यं बरेदं। मंगलमहः।

॥ श्री ॥

अस्यांत्यप्रशस्ति

॥ कन्नडकंदपद्यं ॥ जिनपदकमलमधुव्रत-।
मनुपमसत्पात्रदाननिरतं सम्यक्-॥
रत्ननिदानं कित्ते वधू
मनसिजनेने शांतिनाथनेसेदं धरेयोल

पुरजिदनुपमं चारुचारित्रनादु-। न्नुतधैर्यं सादिपर्यंतरदियनेनिसि पेंपिं गुणानीकदिं......
......................सद्भक्तियादेसदिं सत्कर्मदापंजियं विस्तरदि श्री माघनंदि-व्रतिगे बरेसिदं रागदिं शान्तिनाथं ॥ कदं पद्य ॥ उदविदमुददिं सत्कर्मदपंजिय ननुपमान निर्वाणसुख ॥ प्रदमं बरेइसि शांतं मदरहितं माघनंदियतिपतिगित्तं ॥

॥ इति शं ॥

॥ चिरं जयतु जिन शासनम् ॥